श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

(पांचवी रासि से छठी रासि तक)

जिल्द 3

भाई संतोख सिंह

भाषा विभाग, पंजाब

Shri Gur Patap Suraj Granth (Hindi)

Vol. III

by

Bhai Santokh Singh

Transliterated and Annotated *by*

Dr. Sita Ram Bahri

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

जिल्द 3

भाई संतोख सिंह

प्रकाशक :
भाषा विभाग, पंजाब,
पटियाला ।
प्रथम संस्करण :

मूल्य : 8-35 रुपये

मुद्रक :—
स्वैन प्रिंटिंग प्रैस,
अड्डा टाँडा, जालन्धर—1
द्वारा कण्ट्रोलर, प्रिंटिंग एवं स्टेशनरी विभाग,
पंजाब, चण्डीगढ़ ।

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ

जिल्द 3

प्राक्कथन

पंजाब को भारत की खड्ग भुजा कहा जाता है। यह ठीक भी है। किन्तु पंजाब को मात्र शक्ति एवं सम्पन्न प्रदेश कहना या समझना भ्रामक है। भारतीय साहित्य व संस्कृति के कोष को भी पंजाब ने जगमगाते रत्नों से भरा-पूरा है। भ्रान्ति का कारण काफ़ी हद तक तालमेल की कमी तथा हमारी परतन्त्रता थी। इन्हीं कारणों से भारतीय अपने साहित्य और संस्कृति से कट गए और पाश्चात्य साहित्य के अध्ययन और अनुसंधान को ही अपने जीवन की इति श्री मान बैठे। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् हमारी भाषाओं और साहित्य ने भी करवट ली और इस दशा में नवजागरण हुआ। इसका प्रभाव यह हुआ कि हम अपने प्रति जागरूक होकर उपने साहित्य और संस्कृति की ओर मुड़े। फलत: जहाँ देशीय भाषाओं में नव साहित्य का सृजन प्रारम्भ हुआ वहाँ हमारी दृष्टि उस भूले-बिसरे साहित्य की ओर भी गई जो किन्हीं कारणों से जनता के सम्मुख नहीं आ पाया था

भाषा विभाग, पंजाब ने ऐसे साहित्य को प्रकाश में लाने का बीड़ा उठाया है और अब तक कई दुर्लभ ग्रंथ यथा गुरु नानक प्रकाश, कथा हीर रांझणि की, पंचनद, ज्ञान त्रिवेणी इत्यादि हिन्दी जगत् को भेंट कर चुका है।

प्रस्तुत ग्रंथ 'श्री गुर प्रताप सूरज' एक महान् रचना है। कवि चूड़ामणि भाई संतोख सिंह जी ने इस अपूर्व काव्य ग्रंथ का सृजन बीस वर्ष की निरन्तर साहित्य साधना के पश्चात् किया। कवि का जन्म गाँव नूरही, तहसील तरनतारन, ज़िला अमृतसर में भाई देवा सिंह जी के घर 1785 ई० में हुआ। भाई देवा सिंह जी, जिन्हें अपने काम-धंधे के लिए प्राय: अमृतसर आना पड़ता था, ने अपने सुपुत्र संतोख सिंह की शिक्षा-दीक्षा का भार ज्ञानी संत सिंह जी के हाथों सौंप दिया। इनके यहाँ रह कर भाई संतोख सिंह ने गुरुमत विद्या, संस्कृत और ब्रजभाषा का गहन अध्ययन किया। लगभग दस वर्ष तक 'बूड़िए' गाँव में रहने के पश्चात् वे कुछ समय के लिए पटियाला दरबार में आ गए। मगर महाराज राम सिंह के यहाँ वे बहुत दिन टिक न सके। इसके पश्चात् वे श्री उदे सिंह, कैथल नरेश, के राज्य आश्रय में आ गए जहाँ उनको सादर रखा गया :—

उदे सिंह बड भूप बहादुर।
कवि बुलाए राखिउ ढिग सादर।

(गरब गंजनी)

और फिर 1829 से जीवन पर्यन्त अर्थात् अक्तूबर, 1845 तक वहीं दरबारी कवि रहे और इस काल में उन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की। इससे पूर्व वे नामकोश, गुरु नानक प्रकाश, गरब गंजनी, बाल्मीकि रामायण का काव्यानुवाद, आत्म पुराण आदि रचनाएँ लिख चुके थे।

वस्तुत: गुरु नानक प्रकाश भी "श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" का ही एक अंग है। गुरु नानक प्रकाश, जिसे पिछले वर्ष हम पाठकों के सम्मुख भेंट कर चुके हैं, में श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-वृत्त काव्य में लिखा गया है। भाई संतोख सिंह जी इसी प्रकार अन्य गुरुओं के जीवन काव्य लिखना चाहते थे। इसी आशा को फलीभूत करने के लिए उन्होंने गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ की रचना की। उन्होंने स्वयं लिखा है :—

श्री गुरु को इतिहास जगत महि, रलमिल रह्यो एक थल सम नाहि
जिम सकता महिं कंचन मिले, बीन डावला ले तिह भले,
तथा जगत ते मैं चुनि लेऊँ कथा समसत सु लिख कर देऊँ।
बानी सफल बरन के कारण, करिहौ सत गुरु सु जस उचारन।
जिम दधि बिखै घ्रित मिल रहै, करहि कथन नीके शुभ लहै,
तिम जग महि बाद बिवादु, गुरु जस संची दे अहिलादु।

(गु० प्र० सू० अंशु 5)

भाई संतोख सिंह जी ने गुरु-काव्य लिखने का बीड़ा उठाया। मगर यह कार्य कोई सरल नहीं था। गुरुओं के जीवन पर प्रकाश डालने के लिए उन्हें कोई भी प्रमाणिक सामग्री उपलब्ध न हुई। फिर भी उन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब, दशम ग्रंथ, वारां भाई गुरदास, बाले वाली जन्म साखी, पंज सौ साखी, भक्त माल, ज्ञान रत्नावली, महिमा प्रकाश आदि ग्रंथों का गहन अध्ययन तथा अनुशीलन किया। ऐतिहासिक तथ्यों को अपनी कल्पना एवं प्रतिभा का रंग चढ़ा कर इन्होंने अपने अद्भुत काव्य-भवन का निर्माण कर डाला।

इस बृहद् काव्य रचना का नाम उन्होंने गुरु प्रताप सूरज रखा था, इसलिए संपूर्ण कथानक को सूर्य की गति के आधार पर 12 राशियों, 6 ऋतुओं और 2 अयनों अर्थात् कुल बीस बड़े भागों में विभक्त किया है। पुन: सूर्य की किरणों के आधार पर अध्यायों को अंशुओं की संज्ञा प्रदान की गई है। इसलिए रचना के नामकरण तथा इसके रचना विधान में एक सुन्दर रूपक की कल्पना की गई है। सूर्य की भाँति गुरुओं का जीवन भी अंधकार को दूर करता है।

बारह राशियों में गुरु नानकोत्तर गुरुओं की जीवन गाथा है, छ: ऋतुओं और अयनों में संत सिपाही श्री दशमेश जी का जीवन वृत दिया गया है। इस संपूर्ण रचना के कुल 1150 अध्याय हैं जिनका विवरण निम्न अनुसार है :—

सूरज गुर प्रताप ते, बरनी द्वादश रासि,
अपट साच पातशाह के, बरनों वर गुण रास। (15)
दछणाइने उतराइणे, अयन बनैगे दोइ,
बदनत रितु जो खषट शुभ, तिम पर बरनन होइ (16)
प्रथम कही कविता रुचिर, श्री नानक प्रकाश,
पूरबारध उतरारध इम, बर बरने गुण लास। (17)
अब कलगीधर की कथा, खषट रुतन पर होइ,
गुरु प्रताप सूरज भयो, या ते सभ गति जोइ। (18)

(गु० प्र० रु० 1, अंशु 1)

केवल परिमाण और आकार की दृष्टि से देखें तो पंजाब के इस हिन्दी कवि की इस अद्वितीय रचना की तुलना में विश्व भर के किसी अन्य कवि की रचना नहीं ठहर पाती। पंजाब के प्रत्येक गुरुद्वारे में सायंकाल इस ग्रंथ की विधिवत् एवं नियमित कथा की जाती है।

भाई साहिब ब्रजभाषा के विद्वान् कवि होने के साथ-साथ, संस्कृत, पंजाबी तथा अन्य कई भाषाओं के महान् पण्डित थे। बाल्मीकि रामायण तथा आत्म पुराण जैसे संस्कृत ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद इसके ज्वलन्त उदाहरण कहे जा सकते हैं। यह तो गुरु प्रताप सूरज के प्रारम्भ में दिए गए, 'मंगलाचरण' से भी भली-भांति स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें भिन्न-भिन्न भारतीय भाषाओं पर कितना अधिकार प्राप्त था।

कवि की काव्य प्रतिभा को परखने के लिए हमारे पास उनके दो ग्रंथ हैं, गुरु नानक प्रकाश और गुरु प्रताप सूरज। इनमें ऐसा काव्य सौष्ठव है कि हर पंक्ति पर कवि की काव्य प्रतिभा को देखकर चकाचौंध हो जाना पड़ता है। भाव और भाषा दोनों की दृष्टि से ही ये अनुपम काव्यत्व के स्वामी ठहरते हैं।

सोहलवीं-सत्तारहवीं शती में हिन्दी साहित्य में भक्ति-भाव की काव्य रचना का बाहुल्य था। इस धारा के शिरोमणि कवि गोस्वामी तुलसीदास (1532—1625) और सूरदास (1473-1563) थे। गोस्वामी तुलसीदास जी और सूरदास के काव्य मृदुलता और मधुरता के लिए अद्वितीय हैं और लोक कल्याण की भावना से भी इनका काव्य ओत-प्रोत हैं। कुछ ऐसी ही बात चूड़ामणि भाई संतोख सिंह जी के समूचे काव्य-जगत के बारे भी कही जा सकती है। चाहे इनकी रचना भक्ति भावना प्रधान है फिर भी यह भक्ति काल के अन्तर्गत नहीं आती।

इस ग्रंथ के हिन्दी में प्रकाशित होने से आलोचक इसका तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे और अन्य हिन्दी कवियों के परिप्रेक्ष्य में पंजाब के इस मेधावी हिन्दी-सेवी का यथोचित स्थान निर्धारित कर पायेंगे। कवि ने इसमें पौराणिक शैली को अपनाया है। इस रचना को इसी दृष्टि से देखना उपयुक्त होगा। भाई संतोख सिंह का काव्य गुणों का गुलदस्ता है जिसकी महक के बारे में किसी समकालीन कवि ने लिखा है :—

कविता अपार है कि गुन को पहार है,
कि माधुरी आगार है, कि भाव कवि कोश हैं।
भूखन है कवि के कि दूखन हा कवि के,
बिदूखन के बीच भी प्रसिद्ध हरि दोष है।
बानी ही उतंग है सु अंक हीऊ रंग हैं,
अनग अंग भंग के बिसूत्रन निसेस है।
नानक अरथ जोऊ कीनो कली कल सोऊ,
नाम तो संतोख सिंह धीयवर कोश है।

प्रस्तुत ग्रंथ को आठ जिल्दों में प्रकाशित किया जा रहा है। तीसरी जिल्द का लिप्यन्तर डा० सीता राम बाहरी ने किया है। इसमें श्री गुरु अरजन देव जी के वैकुण्ठ गमन और श्री हरिगोबिंद के दुर्ग से निकलने तक के प्रसंग हैं। संज्ञा कोश तथा टीका भी पाठकों की सुविधा के लिए इसके साथ ही दे दिए गए हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी जगत् पंजाब के इस महा कवि की महान् रचना का भव्य स्वागत करेगा।

रजनीश कुमार
निदेशक,
भाषा विभाग, पंजाब

पटियाला
10 फरवरी, 1974

विषय सूची

अंशु	पृष्ठ संख्या
1. मंगलाचरण, श्री गुरु शाह पास जानि प्रसंग	2—6
2. चन्दू शाह को प्रसंग	7—10
3. चन्दू गहनि प्रसंग	11—14
4. सुधासर सुधि पठन प्रसंग	15—18
5. मजनूं प्रसंग	19—22
6. बेगमात प्रसंग	23—26
7. बेगमनि को प्रसंग	27—30
8. सुधासर आगवन प्रसंग	31—34
9. सुधासर प्रसंग	35—38
10. लवपुरि गुर आगवन प्रसंग	39—42
11. चन्दू म्रितक	43—45
12. लवपुरी	46—49
13. मिहरवान	50—53
14. मिहरवान को प्रसंग	54—57
15. तुरंग प्रसंग	58—61
16. काज़ी ते घोरा लेनि को प्रसंग	62—65
17. काज़ी को प्रसंग	66—69
18. काज़ी प्रसंग	70—73
19. काज़ी प्रसंग	74—77
20. मीआंमीर प्रसंग	78—81
21. कोलां को प्रसंग	82—85
22. सुधासर आवन	86—88
23. काज़ी प्रसंग	89—92
24. काज़ी प्रसंग	93—96

अंशु		पृष्ठ संख्या
25.	पातशाह ते काज़ी पुकार सुधि आवन	97—100
26.	ब्याह उतसव	101—104
27.	दुतिय ब्याह	105—108
28.	श्री नानक मते प्रसंग	109—112
29.	डरोली प्रसंग	113—115
30.	श्री गंगा गमन डरोली प्रसंग	116—119
31.	पैंदे खान प्रसंग	120—123
32.	करें ग्राम प्रसंग	124—127
33.	नानक मते आवनि प्रसंग	128—131
34.	सिद्धन प्रसंग	132—135
35.	श्री गुरु डरोली आगवन प्रसंग	136—139
36.	डरोली प्रसंग	140—143
37.	श्री बावा गुरदित्ता जन्म प्रसंग	144—148
38.	साईंदास प्रसंग	149—152
39.	सुधासर आगवन प्रसंग	153—156
40.	पैंदे खान प्रसंग	157—160
41.	सिक्खन प्रसंग	161—164
42.	सिक्खन प्रसंग	165—168
43.	सिक्खन प्रसंग	169—172
44.	सिक्खन प्रसंग	173—176
45.	सिक्खन प्रसंग	177—179
46.	सिक्खन प्रसंग	180—183
47.	कशमीर प्रेमनि सिक्खनी ब्रितान्त	184—187
48.	सतिगुर कशमीर प्रवेश करन	188—190
49.	कशमीर प्रसंग	191—194
50.	कशमीर प्रसंग	195—197
51.	तलवंडी प्रसंग	198—201
52.	श्री हरिगोविंद सगाई प्रसंग	202—205
53.	श्री गुरु आगमन प्रसंग	206—209
54.	पुत्र जनम प्रसंग	210—213

अंशु	पृष्ठ संख्या
55. श्री बाबा गुरदित्ता की सगाई प्रसंग	214—217
56. श्री अटल राइ उपजन प्रसंग	218—221
57. कौलां को प्रसंग	222—225
58. कोलसर प्रसंग	226—229
59. श्री गुरुदित्ता ब्याह प्रसंग	230—233
60. श्री गुरदित्ता ब्याह प्रसंग	234—237
61. मिहरे को प्रसंग	238—241
62. श्री गंगा प्रलोक-गमन	242—245
63. श्री तेगबहादर जनम	246—249
64. पैंदाखान प्रसंग	250—253
65. सिक्खनि प्रसंग	254—257
66. भाई ब्रिद्ध प्रसंग	258—260
रासि छठी	
1. मंगलाचरण, नारद प्रसंग	263—268
2. संगत प्रसंग	269—272
3. शिकार प्रसंग	273—276
4. बाज़ प्रसंग	277—280
5. शाहजहान सैना चढ़नि प्रसंग	281—284
6. जुद्ध प्रसंग	285—288
7. जुद्ध प्रसंग	289—292
8. जुद्ध प्रसंग	293—296
9. शमस खान भानू बध	297—301
10. अली मुहंमद, सिंघा प्रोहत बध	302—305
11. नंदा मिरज़ा बंग बध	306—311
12. चतर बीर हतन	312—316
13. जंग प्रसंग	317—322
14. दूत पठन प्रसंग	323—326
15. सुलतान बेग बद्ध प्रसंग	327—330
16. श्री हरिगोबिन्द जंग जीत	331—334

17. झबाल आवनि प्रसंग 335—338
18. गुरुसुता ब्याह को प्रसंग 339—342
19. शाहजहां रोस निवारण प्रसंग 343—346
20. गोइंदवाल आगवन प्रसंग 347—350
21. गोइंदवाल प्रसंग 351—354
22. श्री करतारपुर आगवन 355—358
23. केहरि हतन, कौला प्रति उपदेश 359—362
24. कौलां परलोक, पैंदा ब्याह 363—366
25. खान प्रसंग 367—370
26. श्री सतिगुर प्रसथान प्रसंग 371—374
27. श्री गुर नगर बनावन प्रसंग 375—378
29. घेरड़ को बकबाद 379—382
30. अबदुल खान सूबा अरुढन प्रसंग 383—386
31. अबदुलखान आगवन प्रसंग 387—390
32. जट्टू अर मुहंमद खान वध प्रसंग 391—394
33. बैरमखान अर मथरा सिक्ख बद्ध प्रसंग 395—399
34. बलवंड खान कल्याना सिख बध प्रसंग 400—405
35. इमाम बखश नानो बध प्रसंग 406—409
36. चन्दू सुत गहि के छोरनि प्रसंग 410—415
37. नबी बखश अर परसराम शकतू बद्ध प्रसंग 416—419
38. हल्ला करन प्रसंग 420—423
39. करीम बखश बद्ध प्रसंग 424—427
40. अबदुल खान रण आगमन प्रसंग 428—431
41. सुभटन बरनन प्रसंग 432—436
42. जंग प्रसंग 437—440
43. अबदल खान रतन चन्द करम चन्द बद्ध प्रसंग 441—444
44. लोथन नदी गेरनि प्रसंग 445—448
45. तुरंग संगत ल्यावन प्रसंग 449—452
46. तरंगन प्रसंग 453—456
47. भाई ब्रिद्ध प्रसंग 457—460

अंशु　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　पृष्ठ संख्या

48. ख्वाजे अते जानी सय्यद को प्रसंग 461—464
49. भाई ब्रिद्ध प्रसंग 465—468
50. संगति प्रसंग 469—472
51. भाई गढ़ीए प्रसंग 473—476
52. बिप्र प्रसंग 477—480
53. भाई बुड्ढे तन तजन प्रसंग 481—484
54. देसां जट्टी प्रसंग 485—488
55. श्री नानक देहुरे को प्रसंग 489—492
56. सुधासर आगवनि प्रसंग 493—496
57. धीरमल जनम अर अटलराइ खेलनि प्रसंग 497—500
58. श्री अटलराइ प्रलोक गमन प्रसंग 501—504
59. सुधासर मैं श्री गुर विराजमान 505—508
संज्ञा-कोष 509—518

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।
स्री वाहिगुरू जी की फतह ।

(अथ पंचम रासि कथनं)

अंशु १

श्री गुरु शाह पास जानि प्रसंग

१. संत अवतार (दसों गुरुओं का मंगल)

दोहरा

तार[1] लगी उर प्रेम की सिमरि नाम करतार ।
तारन को समरत्थ सो नमो संत अवतार ।। १ ।।

२. कवि-संकेत मर्यादा का मंगल

चित्रपदा छंद

सारसुती कर-बेणवती[2] ! शुभ देहु मती लखि सार असार ।
सार संभारि[3], करो प्रतिपार[4], उदार बडी, सुख दास दतार ।।
तारन-ईश्वर[5] पूरन श्री मुख बंदति अंम्रित-बाक उचारि ।
चारु बिलोचन साथ निहारि उतारति पार अपार संसार ।। २ ।।

३. इश्ट देव मंगल

स्वैया

तारनि गैन[6] गिनैं तु गिनैं सुख-सागर के गुन को कबि[7] पार न ।
पारनि जीवन को करता, जिसको जस वेद बदै सम चारनि[8] ।।
चारनि भेद लख्यो न गयो किसको न बिशै[9] अस रूप अकारन ।
कारन जो ब्रह्मंड अखंड निरंतरि आप रम्यो तम तार न ।। ३ ।।

४. इश्ट गुरू नानक देव का मंगल

तारे अनेक बिबेक-जहाज़ दे, खोलि दिये उर मोह कि तारे[10] ।
तारे[11] बिसाल पखंडि प्रचंडि जे, आगे अरे[12] तिन मान उतारे ।।

---

1. ताड़ी, लगातार ध्यान । 2. वीणापाणि, हाथ में वीणा रखने वाली । 3. सुधि लो । 4. प्रतिपालन । 5. नक्षत्र राज, तारों का स्वामी । 6. आकाश । 7. कभी । 8. चारणों और भाटों के समान । 9. विषय । 10. के ताले । 11. ताड़ना । 12. अड़े ।

तारे[1] बिलोचन ते दरसे उबरे सु असंख जथा नभ तारे ।
तारे तरे अरु मारे मरे गुरु नानक कीनि भए तम तारे[2] ॥ ४ ॥

५. इश्ट गुरू अंगद देव का मंगल

चौपई

बंद न होवहि शरन मुकंद[3] । कंद[4] अनंद तिहन-कुल-चंद ।
चंदन चरचिति[5] सुजस अमंद । मंदिर गुन गुर अंगदि बंदि[6] ॥ ५ ॥

६. इश्ट देव गुरू अमरदास का मंगल

पारनि करि सिक्खी बिसतारन । पारद[7] मन थिर किय बिसतारन ।
पाद[8] सुपरे करे निसतारन । रवि स्री अमर जियत निसतारनि[9] ॥ ६ ॥

७. इश्ट गुरू रामदास का मंगल

राम सिंह रावण हति करी[10] । राम[11] जथा राजनि म्रितु करी ।
राम[12] मघेसुर[13] दल हति डारा । राम दास गुर मोह बिदारा ॥ ७ ॥

८. इश्ट गुरू अर्जुन देव का मंगल

स्री अरजन बिच जंबू[14] दीप । भए प्रकाशक जिमि तम दीप ।
वाणी रची बेद ले सार । सार असार लखाइ संसार ॥ ८ ॥

९. इश्ट गुरू हरिगोविंद का मंगल

नेत्र बिसाल जथा अरविंद[15] । बली बिसाल जथा गोविंद[16] ।
गयान ध्यान जो ततिविंद[17] । सो सरूप श्री हरि गोविंद ॥ ९ ॥

१०. इश्ट गुरू हरिराइ जी का मंगल

सति संगति सेवति निशकाम । हरि[18] बिकार क्रोधादिक काम ।
पूरहिं[19] दास जि बांछति[20] काम । बंदों श्री हरिराइ निहकाम ॥ १० ॥

टिप्पण—किसी किसी प्रतिलिपि में एक चरण आरम्भ में अतिरिक्त मिलता है—
तारे तरे नहीं आप तरे सम पाहिन से गुर केवट तारे ।

1. आँखों की पुतलियाँ । 2. न्यून अधिक । 3. मुक्तिदाता । 4. बादल । 5. छिड़का हुआ । 6. वंदना । 7. पारे की तरह चंचल । 8. चरण । 9. रात के अन्धकार में ग्रसित लोगों का निस्तार किया । 10. हाथी । 11. परशुराम । 12. बलराम । 13. मगध देश का राजा, जरासंघ । 14. भारतवर्ष । 15. कमल । 16. विष्णु । 17. तत्त्ववेत्ता । 18. दूर करके । 19. पूरी करते हैं । 20. वांछित कामना ।

११. इश्ट गुरु हरिक्रिशन का मंगल

अरबला[1] लघु शकति बिसाल। बाल गुरू हरिक्रिशन रसाल।
बाल-सूर[2] लघु पिखि[3] जिम जाल। मोह तिमर तिम करति उजाल ॥ ११ ॥

१२. इश्ट गुरु तेग बहादर का मंगल

हिंदु लाज राखी बनि चादर। तुरक जुवासा[4] को वड बादर।
सिख सिमरति जितकित हुइ हादर[5]। नमो चरन गुर तेग बहादर ॥ १२ ॥

१३. इश्ट गुरु गोबिंद सिंह का मंगल

उदै तेज जग महिं सम सूर। दुशटनि के उपजावति सूर[6]।
हते शत्रुगन गहि करि सूर[7]। श्री गुरु गोबिंद सिंह बड सूर[8] ॥ १३ ॥

१४. दसों गुरुओं का सम्मिलित मंगल

दस सरूप को नमो हमारी। जिनहुं जननि[9] की दुबिधा टारी।
बरनों पंचम रासि अगारी। श्रोता सुनहु पाप-गन हारी ॥ १४ ॥

१५. नाम प्रिय गुरसिखों का मंगल

लाखहुं सतिगुर के सिख पूरे। अपन सरूप लख्यो जिन रूरे।
महां शकति धरि ब्रिध[10] ते आदि। बदन करौं धरहु अहिलाद ॥ १५ ॥
सगरो ग्रिथ संपूरन करो। परहिं बिघन-गन तिन को हरो।
शुभ मति उपजावो उर अंतर। बरनों सतिगुर सुजस निरंतर ॥ १६ ॥

दोहरा

सतिगुरू हरि गोविंद जी दुरग गुआलियर छोरि।
खां वज़ीर को संग लै गमने दिल्ली ओरि ॥ १७ ॥

चौपई

कारागि्रह ते न्रिप निकसाए। सो हरिदास[11] साथ गमनाए।
अधिक अनंदति करति उचारी 'धंन धंन गुरू पर-उपकारी ॥ १८ ॥
सुजसु उचारति जहिं कहिं गुरुको। चले आइ सभि दिल्ली पुरि को।
श्री हरि गोविंद मारग सारे। उलंघत कीनसि शीघ्र पधारे ॥ १९ ॥

---

1. अवस्था। 2. बाल सूर्य। 3. देखकर। 4. कांटेदार बूटी। 5. हाज़िर, विद्यमान। 6. सूल, शूल। 7. त्रिशूल। 8. शूरवीर। 9. दासजन। 10. बाबा बुड्ढा (1506—1631 ई०) जो गुरु नानक देव के शिष्य थे और जिन्होंने उनके पश्चात पांच गुरुओं को उत्तराधिकार सम्हालते समय तिलक लगाया था। 11. हरि के भक्त, गुरु हरिगोविंद के सेवक।

आइ टिके मजनूं असथाना। खां वज़ीर ढिग शाहु पयाना।
नंम्रि भयो बहु करी सलाम। बोलयो हज़रत ले इस नाम ॥ २० ॥
'करते रहे प्रतीखनि[1] तेरी। मुख प्रसंन दीखति इस बेरी।
गुरू संग आयो कै नांही। अभिलाखति[2] बहु चित के मांही' ॥ २१ ॥
सुनि वज़ीर खां बाक बखाना। 'मदद खुदाइ आपकी जाना।
हासल होइ मुराद तुहारी। आइ थिरी सतिगुर असवारी ॥ २२ ॥
मजनूं के इसथान सुहाए। सुधि दैबे हित मोहि पठाए।
जबि अवसर जोवहु बुलवावनि। धरि शरधा लिहु दरशन पावनि।' २३ ॥
सुनति शाहु हरख्यो तिह समैं। तरु कुमलावति मिलि जल जिमैं।
निज सिर ते अबि फरज़ उतारों। होहि न त्रास प्रसंनता धारों ॥ २४ ॥
कहति भयो 'इह अवसर आछो। आइ दरस गुर दें, उर बांछों।
करहु बंदगी आनहु जाइ। सादर मधुरे बाक्र अलाइ[3]' ॥ २५ ॥
सुनि वज़ीर खां गमन्यो ऐसे। छूटै सवेग धनुख सर[4] जैसे।
आगे सतिगुरु भए सुचेत। गुरु द्रोही के हतिबे हेतु ॥ २६ ॥
नमो करति निज अरज़ गुज़ारी। 'शाहु बंदगी हरखि उचारी।
सुनि करि रावर को अगवानू[5]। हुइ प्रसंन अतिशै रिपुदवनू[6] ॥ २७ ॥
अबि चाहति दरशन करि प्रेम। ज़ानी अधिक आपनी छेम ॥
मिहरवानगी करि गुरु आवें। जानि अवग्या नहीं रिसावें' ॥ २८ ॥
श्री गुरु सुनति बसत्र को धारे। गर महिं जामा पहिर सवारे।
अति सुंदर चीरा[7] सिर शोभा। ऊपर जिगा पिखति मन लोभा ॥ २९ ॥
ज़ेवर जबर[8] जवाहर जरे। अंग अंग प्रति शोभा धरे।
गहि दुकूल कट[9] को कसि करि कै। हय आरूढ, बाग कर धरिकै ॥ ३० ॥
खां वज़ीर चलि परयो अगारी। सिख कुछ संग गुरू असवारी।
नगर प्रवेशे चपल तुरंग। बल सो चलति शुभति दुति अंग ॥ ३१ ॥
फुरकति कबि[10] फांधति लघु छाल। रोकति सतिगुरु धीरज[11] नाल।
लोक बिलोकति सफल बिलोचन। मोचति चित ते गुर दिशि[12] सोचनि ॥ ३२ ॥
सुनि सुनि धाइ करति हैं बंदन। अवलोकति नर कशट-निकंदन।
सभि सिक्खनि मन भई वधाई। कैदिनि[3] दुरग महां दुखदाई ॥ ३३ ॥

---

1. प्रतीक्षा। 2. अभिलाषा। 3. आलाप करके, कह कर। 4. शर, तीर। 5. आगमन। 6. रिपुदमन (बादशाह)। 7. पगड़ी। 8. ज़बरजद नाम का कीमती पत्थर। 9. कटि, कमर। 10. कभी। 11. साथ। 12. गुरु की ओर देख कर। 13. कैदियों को।

जास प्रवेशनि तिस थल होइ। निकसनि की पुन आस न कोइ।
बिखम दुरग ते निकसे नाथ। लए बवंजा[1] कैदी साथ ॥ ३४ ॥
तुम बिन कौन करे अस काज ?। राख्यो बिरद गरीब-निवाज।
मरण प्रयंत कैंद जिन केरी। मुचहि न धन बल ते किस बेरी ॥ ३५ ॥
तिन पर क्रिपा धारि ले आए। सभि के पग बंधन कटवाए।
जग महि बडो सुजसु इहु लीना। वड उपकार न्रिपनि पर कीना ॥ ३६ ॥
नगर बिखै कीरति बहु थान। सति गुरू सुनति जाति निज कान।
गए दुरग के पौर प्रवेशे। ब्रिंद सुभट आयुध धरि बैसे ॥ ३७ ॥
कह्यो वज़ीर खांन सभि[2] साथ। खरे होइ संनमानहु नाथ।
पातिशाह के प्राननि दानी। इन ते आछो अपर न जानी ॥ ३८ ॥
सुनि सगरे हुइ खरे अगारी। करी सलाम नंम्रता धारी।
तहि ते गए बहुर गुरु आगे। जहां शाहु जुति नर बडि भागे ॥ ३९ ॥
हय ते उतरि चरन सों चाले। जहां कचहिरी थान बिसाले।
चामीकर[3] ते चित्रित घर हैं। कानन-मिरग लिखे पर धर[4] हैं ॥ ४० ॥
अनिक प्रकारनि फरश महाना। अलप बिसाल पौर जिह नाना।
गयो वज़ीर खांन सुधि दीनि। 'आए श्री सति गुरू प्रबीन'। ४१ ॥
सुनि चंदन चौकी डसिवाई। ऊपर सुजनी[5] सेत सुहाई।
जग उभराइ सु आइ अगाऊ। बंदति ले पहुचे तिस थाऊ ॥ ४२ ॥
रुचिरासन[6] पर बैठे जाइ। वंदन करी शाहु हरखाइ।
हुते जितिक नर तहां तमामू। हित आदर सभि कीनि सलामू ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रासे 'श्री गुरु शाह पास ज़ाति' प्रसंग बरननं नाम प्रथमो अंशु ॥ १ ॥

---

1. बावन, ५२। 2. सब। 3. स्वर्ण। 4. धरती पर। 5. सोज़न (सूई) फ़ारसी शब्द है सोज़नी सूई से काढ़ कपड़े को कहते हैं। 6. सुंदर गद्दी।

अंशु २

चंदू शाह को प्रसंग

दोहरा

करी सलाम तमाम नर भयो बहुत सनमान।
हाथ जोरि हज़रत भनै 'दिये प्रान तुम दान ॥ १ ॥

चौपई

मम हित दुरग बिखै सु प्रवेशे। करयो जाप तहिं प्रेम बिशेशे।
हम ते सभि अजोगता[1] भई। तऊ आपने करुना कई ॥ २ ॥
निस महिं त्रासति जबि मैं होवौं। दुइ दिशि दारुन शेरनि जोवौं।
तबि मैं सिमरन करौं तुमारा। हाज़र आनि देहु दीदारा ॥ ३ ॥
मम हित जाप करति हैं वैसे। तिन प्रताप ते दुख नहिं कैसे।
इम मन जानि धरौं मैं धीर। रच्छक[2] आप भए गुर पीर ॥ ४ ॥
श्री हरि गोबिंद सुनि करि कह्यो। गुर घर महिं निशचा जिन लह्यो।
शरधा धरहि शरनि को आइ। श्री नानक ह्वै क्यों न सहाइ ॥ ५ ॥
सति गुर घर सों मेल जु अहै। बडे तुमारे राखति रहे।
करि प्रसंन बर लेति भलेरे। गुरबर ते सुख लहे घनेरे ॥ ६ ॥
जथा मुकर[3] निरमल अति होवै। जस सुख करि तिस तिस महि जोवै।
केसर मलागीर[4] जिन लायो। रंग सुगंधति तथा दिखायो ॥ ७ ॥
जे कारस को लाइ बिशेखै। कारो बन्यो कुरूप सु देखै।
तिम सति गुर के मिलनि मझारे। खोटी भली भावना धारे ॥ ८ ॥
तैसो फल अवलोकहि सोइ। फल को भुगतहि लोकनि दोइ।
खोटी करि सिर धुनि पछुतावै। भली करहि सुख को नित पावै ॥ ९ ॥
रही आदि ते श्रधा तुमारे। क्यों सहाइता गुरू न धारें।
श्री मुख ते इम बाक कहंते। दाहन कर को उरध[5] उठंते ॥ १० ॥
कबहुं टिकावति ऊपर जानू[6]। वहुर करहिं चंचल दुतिवानू।
हुतो सिमरना हाथ कपूरी। रंग अजाइब छाड़ति रूरी[7] ॥ ११ ॥

---

1. अयोग्यता। 2. रक्षक। 3. दर्पण, शीशा। 4. मलय गिरि का चंदन। 5. ऊर्ध, ऊँचा। 6 घुटने। 7. सुंदर।

तिसहि दिखाइ फेरि मन लीना। देखति बोल्यो शाहु प्रबीना।
'अजब सिमरना जिस कर धारा। नहि आगे अस हमहु निहारा॥ १२॥
बहु कीमत को परहि दिखाई। दूर देश किन दीनि पठाई'।
सुनि गुर कह्यो' भले तुम जाना। दूर वलाइत ते सिख आना[1]॥ १३॥
भाउ रिदे धरि अरप्यो आइ। कह्यो राखीअहि हाथ बनाइ'।
भनहि शाहु 'अस मणका एक। मो कहु दीजै जलधि-बिबेक[2]॥ १४॥
तसबी[3] ऊपर करों इमाम[4]। तरे रहैं मणके जु तमाम।
वहु मोले मैं बीन मंगाए। दूर दूर ते सुंदर ल्याए॥ १५॥
तुम ते मणका लेवों जोइ। तिस महि गुन अवलोकहु दोइ।
जबि हेरौं मैं नैन उघारी। तुमहि चितारों रिदे मझारी॥ १६॥
दूजे त्रास नहीं मैं पावों। तुम कर को जबि अंग लगावों।
जिम रक्ख्यक[5] तुम बने हमारे। तिम कीजहि अबि ते प्रतिपारे'॥ १७॥
श्री गुर कह्यो 'सिमरना सारो। हम ते लिहु अपने कर धारो।
श्री नानक हैं सदा सहाइ। नाम लीए गन मिटैं बलाइ॥ १८॥
सति गुर शरधा जे उर धरे। पुन को सकहि त्रास को करे।
हज़रत हाथ जोरि करि कहे। इह तो तुमहिं मुमारख[6] रहे॥ १९॥
होहि सिमरने ते अधिकाइ। लेउं सु तसबी बिखै मिलाइ।
क्रिपा ठानि खोजे निज कोश। निकसहिं तहिं सो देहु अदोश !॥ २०॥
निशचे बनहि लेनि मुझ मनका। सिमरे भला होहि तन मनका।
सुनि सतिगुर तबि ज़िकर चलायो। चंदु दिवान जु तुमहिं बधायो॥ २१॥
तिसके सदन पठे गुरु बडे। तहिं ही निज शरीर को छडे।
तिन के गर महिं सुंदर माला। इन ते कीमति तांहि बिसाला॥ २२॥
सो चंदू के घर महिं रही। बाहर ज़ाहर कीनसि नहीं।
छलि करि आइसु पाइ तिहारी। करी अजोग अवग्या भारी॥ २३॥
अबि तिस ते माला निकसावहु। कैधौं मनका एक अनावहु[7]।
तुम ढिग नहिं सुधि पहुंचनि दीनि। अनिक फ़रेब बतावनि कीनि'॥ २४॥
समझयो शाहु सकल भिव पाइ[8]। 'चंदू खटाई कहति सुनाइ।
बडे गुरुन की कीनसि चारी। राखहि चोर देश महिं झारी[9]॥ २५॥
मैं सुनि करे हकारन जबै। आइ दरस गुरू दीनसि तबै।
संध्या भई गए निज डेरे। पुन मो कहु सुधि नहिं किस बेरे[10]॥ २६॥

---

1. लाया। 2. विवेक-सागर। 3. माला। 4 सुमेरु मनका। 5. रक्षक। 6. मुबारक। 7. मंगवाओ। 8. भेव, भेद। 9. समूह। 10. समय।

अबि तुमरी इह रीति सुनाई। लई बटोर चमूं समुदाई।
बैठे तखत बाक उचरैहैं। गुरू पिता को बदला लैहैं ॥ २७ ॥

इम सुनि कैं भ्रम उपज्यो मेरे। पठयो वज़ीर खान तुम डेरे।
क्रिपा धारि दरशन को दीना। नही बिकार आप मैं चीना ॥ २८ ॥

मुझ ते बदला किम तुम चाहो। मन भी नहीं पाप के माहो।
जिनहु कीनि तिन ते अबि लीजै। मैं निशपाप क्रिपा निज कीजैं ॥ २९ ॥

चतुर घटी इक दरशन करयो। पुन कुछ कह्यो न मैं उर धरयो।
श्री हरि गोविंद गिरा उचारी। 'छेरहु कहां ज़िकर अस भारी ॥ ३० ॥

इह लेखा दरगाह खुदाइ। तबि लैहैं जबि करि हैं न्याइ।
इहां न निबरैं बाकी महां। नरक सजाइ बनति है जहां ॥ ३१ ॥

संकट परहि ब्रिलाप[1] पुकारैं। नहीं सहाइक संग निहारैं।
अंतरजामी सभि किछु जानहिं। तिस ते कहां छपावनि ठानहिं।' ३२ ॥

अबि मनका मंगवावो सोइ। बडे गुरू के गर महिं जोइ'।
सुनि पतिशाहु त्रास उर पावा। पठि नर चंदू निकट बुलावा ॥ ३३ ॥

गुर कर बिखैं सिमरने दिशि को। करि शारत[2] भाख्यो बच तिसको।
'इन के सम मणका जो होइ। हम को आनि दीजीए सोइ ॥ ३४ ॥

सुनि चंदू कर जोरि उचारा। 'लीजहि इस ते कीमति भारा।
जाइ निकेत खोज मैं आनहुं। जिस महिं उजलता सुपछानहुं' ॥ ३५ ॥

सुनि हज़रत की आइसु गयो। जाइ सदन महिं प्रापति भयो।
'श्री अरजन के गर की माला। ल्याउ निकास' कह्यो 'इस काला' ॥ ३६ ॥

दास गयो जहिं दुशट खजाना। खोजति भए न प्रापति पाना[3]।
धरी हुती जिस थान मझारी। तहिं ते मूखक[4] काटि निकारी ॥ ३७ ॥

सभि मणके फोरनि करि डारे। परी किरच कुछ तहां निहारे।
आइ दास ने बात सुनाई। 'सो मूखक ने कतर गवाई ॥ ३८ ॥

साबत मनका एक न रह्यो। खोदी खुड[5] नहिं कैंसे लह्यो'।
सुनि चंदू कै चित बिसाला। कहिं ते प्रापति हुइ इस काला ॥ ३९ ॥

मणका इक देनो करि आयो। लखहि शाह, इन कूर[6] अलायो।
बिगर न जाइ बारता मेरी। पठे बजार दास तिस बेरी[7] ॥ ४० ॥

---

1. विलाप, दुहाई। 2 इशारत, संकेत। 3. हाथ में। 4. मूषक, चूहा।
5. बिल। 6. झूठा। 7. बार, उसी बार, उसी समय।

धनी बनक-गन निकटि पठाए। 'दिहु मनका मुल लिहु मन भाए'।
दिल्ली पुरि महिं नरगन फेरे। आनि आनि केतिक तहिं हेरे॥ ४१ ॥
गुरू सिमरने सम नहिं पावै। करहि शीघ्रता, बहुर पठावैं।
धनी नरनि कै निकट सिधारैं। घर जवाहरी फिरति निहारैं॥ ४२ ॥
जहि कहिं धाइ थके नर ब्रिंद। कितहुं न प्रापति तिन मानिंद[1]।
भयो शाह को शोक बिसाला। करति प्रतीखन भा चिरकाला॥ ४३ ॥
पठयो अपर नर 'ल्याउ हकारी। किम चंदू कहु लागि अबारी[2]।
अबि लौ क्यों नहिं आवनि कियो। क्यों न सदन ते ल्यावति भयो'॥ ४४ ॥
गयो दौर तिस केर अवासे। कह्यो शाहु को कीन प्रकाशे।
'करति शीघ्रता निकट हकारति। तुम किम बैठे चिंतन धारति'॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रासे 'चंदू शाहु को' प्रसंग बरननं नाम तृतीओ अंशु॥ २॥

---

1. समान, जैसा। 2. देर।

अंशु ३

चंदू गहिन प्रसंग

दोहरा

चंदू पीछे गुर कही 'सभि माला इस पास।
किितिक बरख बीते बहुर अबि ह्वै कै न अवास ॥ १ ॥

चौपई

तिस माला को मणका आवै। हम पछाण लैहैं दुति पावै।
जे इक ल्यावै लिहु सभि माला। नहि इस देश जु मोल बिसाला ॥ २ ॥
इस पापी ने सुधि न जनाई। करी अवग्या, उचित सजाई'।
सुनति शाहु कहि 'ल्यावनि देहू। जस आवहि तस परख करेहू ॥ ३ ॥
आगे सुनी पीर ते बाति। जिम इन करे कपट के घाति।
जे अपराधी अहै तुमारा। आप संभारहु ज्यों उर धारा ॥ ४ ॥
सीस हमारे फरज न रहै। जिम कीनो तिम फल को लहैं।
इम कहि नर पुन और पठायो। 'चंदू सदन क्यों बिलम[1] लगायो ॥ ५ ॥
आनहु शीघ्र' गयो तब धाइ। 'उठि दिवान' क्यों बैठयो आइ।
शाह याद करि बारंबारी। है कि नहीं, दिहु अरज़ गुज़ारी' ॥ ६ ॥
देख्यो नर जबि दुतिय पठायो। चिंता बसी त्रास कुछ पायो।
घर ते चल्यो शीघ्रता धरी। अटक बसत्र ते पगिया गिरी ॥ ७ ॥
सनमुख छींक बाम द्रिग फरका। जाति अचानक उर लगि धरका।
शाहु निकट तूरन चलि गयो। गुर बैठे दिखि दुख अति भयो ॥ ८ ॥
हाथ जोरि बोल्यो ढिग शाहू। 'मनके हुते मोरे घर मांहू।
रहै खोजि सो अबि नहिं पाए। पुन नर ब्रिंद बज़ार[2] पठाए ॥ ९ ॥
खोज रहे नहिं कितहूं पाए। सभि थल ते छूछे नर आए।
अबि जे देर करो दिन कोइ। आनहिं खोज नगर जिस होइ' ॥ १० ॥
इम कहि चंदू तूशन[3] होयो। शाहु बदन[4] गुरू को तबि जोयो।
रिस कुछ कह्यो 'पिखो इत कहां। प्रभु दरगाह एक सम जहां ॥ ११ ॥

---

1. विलम्ब। 2. बाज़ार। 3. चुप। 4. मुख।

बदला पित को लेवै तहां। नरक सज़ाइ पापीअनि महां।
कही पीर की इक उर बीच। करयो कुकरम जथा इह नीच ॥ १२ ॥
दुतीए गुरू कह्यो वहु बार। जान्यो निशचै करि निरधार।
बिना संदेह शाहु तबि कह्यो। 'चंदू अपराधी मन लह्यो ॥ १३ ॥
हमरे सीस दोश नहिं धरीअहि। किम दरगाह न बैर संभरीअहि।
इहां निबेरो बदला सारो। हम को आशिख[1] बचन उचारो ॥ १४ ॥
जे हमरी कुछ लखहु खुटाई। तौ हम कौ दिहु दंड बनाई।
नांहि त जांहि अवग्या करी। तिस ते लेहु बदला इस घरी ॥ १५ ॥
मम सिर ते अबि करज़ उतारहु। कहो निसंग बाति निरारहु'।
गुरू कह्यो 'बल पाइ तुमारा। जो करिहै अपराध उदारा ॥ १६ ॥
तिस के फल भागी तुम अहो। चलि दरगाह बिखैं किम कहो।
तहिं लेखा सभि लेना देना। होति सभिनि को किमहु मिटेना ॥ १७ ॥
निरबल बली रंक कै राऊ। इकसम ही सभि, बिखम[2] न काऊ'।
सुनि करि शाहु कह्यो गुर संग। 'हम नहिं जान्यो छल इस ढंग ॥ १८ ॥
पीर वज़ीर खान के आपि। सुधि दीनसि जिम कीनिसि पाप।
सुनि करि मै अबि होयो न्यारो। निज अपराधी गहहुं कि मारो ॥ १९ ॥
हम सहाइ जे इस की करें। तम दिशि ते[3] दोशिन को धरें।
आगा अपनि सुधारनि कारन। मिलहिं न हम इस' कीनि उचारनि ॥ २० ॥
'पाप करोरनि के सम पाप। कह्यो पीर ने मुझ सों आप।
जिस ते गोर[4] धूम निकसावै। इस बिन को अस पाप कमावै ॥ २१ ॥
मम मन मैं हुइ त्रास घनेरा। सुन अस पाप मूढ इस केरा'।
तबि चंदू बोल्यो 'मम चारी। किन कीनसि तुम निकट उचारी ॥ २२ ॥
कहे आप के मै लै गयो। कितिक दिवस महिं दुख उपजयो।
जिस ते त्याग्यो तिह ठां तन को। नहिं पुन लयो दंड धन गन को' ॥ २३ ॥
सुनति शाह ने गिरा उचारी। राखहि चोर, करी तैं चारी।
कहि कूरे[5] मम मन भरमायहु। तिन सों अधिक बैर उपजायहु ॥ २४ ॥
आरिफ कामल शकति बिसाला। सो किम ऐसी करहि कुचाला।
किय कुकरम जस, तस दुख भरें। हमहि लिपाइमान किम करें ॥ २५ ॥
बहुर कुटिल इम बाति बनाई। 'कहित देश महिं नर समुदाई।
तिनते सुनि मै तुमहि सुनाई। ले आइनु को लियो बुलाई' ॥ २६ ॥

---

1. आशिष, आशीर्वाद। 2. विषम। 3. दोष। 4. कब्र। 5. कपटी।

सुनति शाहु कोप्यो कहि बानी। 'रे मतिमंद न करहिं पछानी।
सरब जगत दरशन को जावै। धरहि उपाइन सीस निवावै ॥ २७ ॥
रोपि असंभव दोश बिसाला। सतिगुर के संग कीनि कुचाला।
अबि लौ छल की रचि चतुराई। डरति नहीं द्वै लोक सजाई ॥ २८ ॥
मम प्राननि के गुर रखवारे। परति बिघन-गन सगल निवारे।
तिनके साथ बैर तैं बांधा। प्रान हान सौ दीनसि बाधा' ॥ २९ ॥
इम कहि सतिगुर सों पुन कयो। 'इहु अपराधी निरनै लह्यो।
करहु संभारनि बदला लीजै। करयो कुकरम तथा फल दीजै ॥ ३० ॥
मिहरवानगी मो पर धरीअहि। पुनहि प्रलोक न बूझन करीअहि'।
सुनि श्री हरगोबिंद बिचारे। बिधीआ जेठा निकट हकारे ॥ ३१ ॥
कह्यो गहो अबि द्रिढ़ गुरद्रोही। अपनो बैर लेहु इहु द्रोही'।
सुनति शीघ्र ही गहि द्वै बाहूं। बहिर दुरग ते आन्यो ताहूं ॥ ३२ ॥
खरो करयो सिर पाग उतारी। गाढ़ी मुशकां दे तिस बारी।
कूर कुपत्ता[1] सद्रिश कुत्ता। काढि चरन ते मारयो जुत्ता ॥ ३३ ॥
जे उमराव सहाइक हुते। चल्यो न बसि चिंता चित जुते।
कहैं कितिक 'इह शाहु दिवान। किन जाटनि गहि लीनो पान ॥ ३४ ॥
भई शाहु की खफगी[2] कैसे। जिस ते करी दशा इस ऐसे'।
को आछो मानै को बुरो। नर समुदाइ आनि करि जुरो ॥ ३५ ॥
शाहु संग सतिगुरू बखाना। 'अब हम डेरे करहिं पयाना।
जो अपराधी बडो हमारा। दे करि अपनो दोश उतारा' ॥ ३६ ॥
जहांगीर कहि 'जिम मन भावै। करो आप, हम तिम सुख पावैं।
खुशी दीनि उठि बाहर आए। चढे तुरंग दुरग निकसाए ॥ ३७ ॥
पिखि जेठे को कह्यो रिसाइ। बिच बजार के इसको ल्याइ।
गुर सिक्खन संग हुकम उचारो। पनही पांच पांच इस मारो ॥ ३८ ॥
जूतनि की बरखा सिर होवै। सने सने आनहु सभि जोवैं।
इम कहि गुरू तुरंग चलायो। पाछे जेठादिक समुदायो ॥ ३९ ॥
नगन सीस चंदू को करि कै। डारी खाक मुशट भरि भरि कै।
हाथ बिखै पनही गहि लीने। जहां नरन के गन बहु चीने ॥ ४० ॥
तहां कहैं मुख ऊच पुकारि। 'इह गुर द्रोही कै सिर मारि'।
जो सतिगुरु को सिख कहावै। पनही पंच दुशट को लावं[3] ॥ ४१ ॥

---

1. बेइज्जत, नीच। 2. रोष। 3. लगावे।

जबि संगति महि सुध अस पाई। गहि चंदू की मुशक चढाई।
धाए मनहुं अनंद को लूटनि। गुरु द्रोही के सिर को कूटनि ॥ ४२ ॥
शाहु दिवान जानि कुछ डरैं। पनही हाथ छुपावनि करैं।
द्रिशटि बचाइ कि होहि पिछारी। बल ते करहिं जूत गन मारी ॥ ४३ ॥
आइ चौंर ते हरख करंते। सिर चंदू के जूत हनंते।
तबि जेठे ने कह्यो पुकारे। 'इस ते कहां त्रास अबि धारे।' ४४ ॥
सतिगुरु हुकम करहु इस मारें। सने सने इम चले वजारे।
देखहि लोक हजारों खरे। पहुंचे सिख मार सिर करे ॥ ४५ ॥
शमस सेत तन बैंस बिसाला। परहि मार नहि रहै संभाला।
पुरि की नारि अरूढ़ी[1] ऊचे। कौतक होवति जहां पहुचे ॥ ४६ ॥
करति बिलोकन नर गन नारी। को मारहि को देवति गारी।
को मुख ऊपर जूत बगावै[2]। को भरि मुशट खाक की पावै ॥ ४७ ॥
मुशकां दे करि पगीआ साथ। पीछे गही सु जेठे हाथ।
आगे कर्‌यो चलति पुरि मांहीं। भरयो पूर परख्यो नहि जाही ॥ ४८ ॥
दौरि दौरि बालक गन आवैं। अंजुल भरहिं खाक को पावै[3]।
'इह भरूवा गुरु-द्रोही महां। जाहि प्रवारति[4] बहु जहि कहां ॥ ४९ ॥
'हतनि पवित्र' कहहि नर कोई। 'इहु गुरु-द्रोही दोख न कोई।
इस प्रकार मारति ले गए। डेरे बिखै पहूचति भए ॥ ५० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे **'चंदू गहिन'** प्रसंग बरननं नाम त्रितीओ अंशु ॥ ३ ॥

1. चढ़ी। 2. फेंके। 3. डाले। 4. घेर कर रोकते हैं।

अंशु ४

सुधासर सुधि पठनि प्रसंग

दोहरा

'श्री गुरु हरि गोबिंद जी जस बिसाल को पाइ।
लियो बैर पित को भलो गह्यो दुशट दुखदाइ ॥ १ ॥

चौपई

'बड अपराध करयो जिन जैसे। दई सज़ाइ दीरघा तैसे।
इम होए बिन जे मरि जातो। करति कलंकति जस अवदातो[1] ॥ २ ॥
लियो न गयो बैर पित केरा। क्यों सुत जनमयो मंद बडेरा।
गुरू अवग्यक थिरता पावै। महां पातकी पाप कमावै ॥ ३ ॥
सतिगुर सुत अरु संगति केरा। कहिं[2] अपवाद अजान बडेरा।
श्री हरि गोबिंद अबि सभि केरी। राखि लई पत लाज घनेरी ॥ ४ ॥
उपजनि तिनको धंन महाना। करयो काज छत्रीनि सुजाना।
दावेदार रिदा अस जिनको। आयुध धरनि[3] धंन है तिनको ॥ ५ ॥
पूरब संतरूप गुर अहे। तिनको छिमा करनि ही चहे।
इह बड बीर सुबाहु बिसाला। बसहि बीर रस जहां सुखाला ॥ ६ ॥
मनहु सूरता रूप सुहावै। दरशन ते उतसाहु बधावे[4]।
सतिगुरु पित को शत्रू चंदू। जिन कीनसि अपराध बिलंदू ॥ ७ ॥
पूरि महिं फेरयो करि अस हाला। इह शुभ कारज कीनि विसाला'।
इम दिल्ली पुरि बिखै ब्रितंति। कहति परसपर लोक मिलंति ॥ ८ ॥
'हुतो पकरनो करन महान। शाह अगारी वध्यो दिवान।
सभि उमराव सहाइक जांही। ब्रिंद दरब किछु गिनती नाहीं ॥ ९ ॥
सगल जगत पर हुकम करंता। हतहि रहिति चित कै बखशंता।
रिशवत दे सभि को अपनावति। को चारी[5] को करनि न पावति ॥ १० ॥
बिन श्री हरि गोबिंद विशेख। कौन सकै इसकी दिशि देखि।
पातशाह ने किम पकरायो। हुतो पुरातन मुख्य बनायो' ॥ ११ ॥

---

1. उज्ज्वल। 2. कहते हैं। 3. धन्य। 4. बढावे। 5. चर्या, चुगली।

मिलि मिलि लोक करहिं इम बात। पूरि महि घर घर चंदु ब्रितांत।
सुनति सुजस गुर आवति डेरे। बंदन करहि सिक्ख हुइ नेरे॥ १२॥
आइ बिराजे निज इसथान। श्री सति गुरू रूप भगवान।
पठयो हुतो इक नर बड भोर। चमूं समेत ब्रिद्ध की ओर॥ १३॥
'हम पहुंचे पुरि यहिं अबि आइ। तुम भी मिलहु मोद उपजाइ'।
ब्रिध के सहत चमूं भट हरखे। पाइ ज़ीन हय पर तंग करखे[1]॥ १४॥
चढि धौंसा दे करि सभि सैन। सति गुर आइ बिलोके नैन।
शाह निकट ते जबि चलि आए। तबि ही ब्रिध-जुति भट समुदाए॥ १५॥
पद अरबिंदनि बंदन करि कै। दरस बिलोकति आनंद धरि कै।
ब्रिध-जुत सभि सनमान बिठाए। इतने महिं चंदू कहु ल्याए॥ १६॥
गुर प्रयंक पर थिरे निहारहिं। बार बार नर पनहीं मारहिं।
खाक सीस अरु मुख पर डारी। सूज्यो सिर पनही गन मारी॥ १७॥
मुशकें बांधी पगिया साथ। जेठे गहि राख्यो निज हाथ।
बड जैकार शबद तबि भयो। 'धंन गुरू बड रिपु गहि ल्यो'॥ १८॥
स्री हरि गोबिंद ऊच उचारा। 'इह कूकर है भउकन हारा।
जहां तुरंग समूह पछारी। इक लकरी तहिं गाडहु मारी॥ १६॥
जो राखहि कूकर चंडाल। दिहु मिलाइ इसको तिन नाल[2]।
कूकर सम दिहु खान रु[3] पाना। तिस लकरी सिउ बांध महाना॥ २०॥
जेतिक मानव हमरे संग। सभि को है अस हुकम अभंग।
पांच पांच पनही बल साथे। बड़े दुशट के हनियहि माथे'॥ २१॥
इम सुनि करि सैना नर सारे। निज निज वारी करति प्रहारे।
पनही हनति मूरछा पाई। धरे मौन सभि लहे सज़ाई॥ २२॥
लात प्रहार परे पर करही[4]। 'हत्यो दुशट बड' बाक उचररिहीं।
'मूरछति परयो' सुन्यो इम जबै। दयो हुकम गुर हतहु न अबै॥ २३॥
मरहि नही ज़ीवति इस राखो। बहु पुरि महिं फेरनि अभिलाखों।
स्वाननि साथ देहु तिह खाना। राखि बचावहु तन महिं प्राना॥ २४॥
सुनि जेठें मुशकां खुलिवाई। राखे ढिग बिठाइ तकराई।
'गहे शसत्र इक ठांढो रहै। अग्र बिलोचन के इस लहै'॥ २५॥
इत्यादिक कहि करि सभि बाति। देख आनि प्रविरती राति।
गुरू सहत करि खान रु पाना। टिके सगल नर निज निज थाना॥ २६॥

---

1. खीचे। 2. उन के साथ। 3. खान और पान, खान-पान। 4. परे परे करते थे।

सुपति जथा सुखु गुर अभिरामू। तजी नींद जबि जामनि[1] जामू।
सौचि शनान कीनि सुख पाए। थिरे अडोल समाधि लगाए॥ २७॥
आसा वार रबाबी गावैं। बहु रागनि के शबद सुनावैं।
रौणक अति होई सभि डेरे। जागति होति अनंद बडेरे॥ २८॥
भे इकत्र सभि नर जुरि आजि। सिख संगत अरु सैन समाज।
दिनकर उदै भयो जिस काला। बिकसे गुर द्रिग कमल बिसाला॥ २९॥
तजी समाधि बसत्र मंगवाए। पहिरि सरब सतिगुरू सुहाए।
बैठे बहिर लगाइ दिवान। बंदति सभि ब्रिध आदिक आनि॥ ३०॥
सिपर[2] खड़ग धरि गन भट आए। अति प्रमोद सभि कै उर छाए।
जुति हरि दास महीपति बावन। आइ करयो गुर दरशन पावन॥ ३१॥
बंदन करहिं चरन अरबिंदे। बैठि निकट बहु रिदे अनंदे।
मन मुख गुरद्रोही गहि बाधा। नीच चंडालनि के लहि बाधा॥ ३२॥
सतिगुर निकट ब्रिध ने भाषा। 'मात गंग के उर अभिलाखा'।
इति दिशि तुमरे महिं मन लागा। इक पुत्रा, दीरघ अनुरागा॥ ३३॥
प्रथम बिछुनो नंदन प्यारो। जननी की इम दशा बिचारो।
सुधि सभि लिखि भेजहु ततकाल। सुनि उपजहि उर मोद बिसाल'॥ ३४॥
श्री हरि गोविंद सुनि करि बानी। 'ब्रिध साहिब इह नीक बखानी।
लिखि करि पठहु तुरत हलकारा। करहि कराह जाइ दरबारा॥ ३५॥
पूरन सरब कामना होई। गह्यो मंदमति शत्रू जोई'।
आइसु पाइ ब्रिद्ध ततकाला। लिखि पत्री पठि शीघ्र बिसाला॥ ३६॥
श्री अम्रितसर जबि सुधि आई। सुनि गंगा[3] निज अंग न माई।
बारि बारि श्री नानक ध्यान। रिदे धारि जोरति जुग पान॥ ३७॥
सगल गुरनि को बंदन धारी। 'मम सुत के सद ही रखवारी।
दुरग कैदि को तहिं निकसाए। गुर द्रोही गहि जसु को पाए॥ ३८॥
सरब कठन सभि पूरन भई। चित चिंता अबि सगली छई[4]।
बड उतसाहु कीनि सभि भांती। सुत की सुधि सुन सीतल छाती॥ ३९॥
गन धंन दे कराह[5] करवायो। श्री हरि मंदर जाइ ब्रतायो।
बार बार बंदन को करती। त्रिय-गन आनि बधाई[6] करती॥ ४०॥
मंगत जन समुदाइ जि दीन। जथा उचित सभि को धन दीनि।
'जब के दुरग मझार प्रवेशे। तबि ते सुधि सुनि चित विशेशे॥ ४१॥

1. याम, एक पहर। 2. ढाल। 3. माता गंगा देवी। 4. क्षय हुइ, दूर हुई। 5. कड़ाह, हलवा। 6. बधाई के गीत गातीं।

सो बिनसी अति वध्यो[1] अनद। करी लायकी नंदन चंदु।
पित-बैरी को गह्यो बिलंद। जिस हित चितवति जतन जि ब्रिंद ॥ ४२ ॥
इम उतसाह सुधासर भए। सिख संगति सभिहिनि सुन लए।
गोइंदवाल आदि जे थान। जहिं कहि बिथरी, करति बखान ॥ ४३ ॥
बेदी त्रिहण सकल हरखाए[2]। श्री हरि गोबिंद को जसु गाए।
'अपनी करी प्रतग्या[3] पूरन। पित-द्रोही को कीनसि चूरन ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे '**सुधासर सुधि पठनि**' प्रसंग बरननं चतुरथ अंशु ॥ ४ ॥

1. बढ़ा, वृद्धि पाई। 2. हर्षित हुए। 3. प्रतिज्ञा।

अंशु ५

मजनूं प्रसंग

दोहरा

अबि श्रीं हरि गोबिंद की कथा सुनहु मन लाइ।
दिल्ली की संगति सकल भई प्रात इक थाइं।। १।।

चौपई

पंचाम्रित बहुते करिवाए। इकठे सिख दरशन को आए।
केतिक हेरनि चंदू हेतु। मानव आए तजे निकेत।। २।।
सतिगुर बैठे सभा मझारो। मानुख दर्शन करति हज़ारों।
आइ तिहावल हुइ अरदास। बरतावैं बैठे नर पास।। ३।।
मुख्य सिक्ख गुर के संग भाखें। 'आज भई पूरन अभिलाखै।
नांहित जबि की तजी सगाई। करति रह्यो बड दुशट खुटाई[1]।। ४।।
हेरि हेरि हिरदे पछुतावै। हमते भई उपाधि लखावै।
इसने कहे कुवाक प्रकाश। हम सुधि पठी सकल गुर पास।। ५।।
लिख्यो हमारो गुर ने माना। तज्यो साक कीनसि अपमाना।
तबि ते कुटिल दुशट निज बलते। करतो रह्यो अवग्या छलते।। ६।।
करे कुकरम महां अपराधा। तिनको फल संकट अबि लाधा।
आज निचिंत भए हम सारे। गहे गुरू-द्रोही हत्यारे'।। ७।।
श्री हरगोबिंद जी तबि कह्यो। 'श्री गुरू कर्यो जथा चित चह्यो।
इस पापी के सीस कलंक। दीनसि, सो फल कशट अतंक[2]।। ८।।
पांच पांच पनही गिनि मारो। देखि दुशट पुन सदन सिधारो।
सुनि गुर-हुकम गए सिख सारे। चंदू बंधन सहत निहारे।। ९।।
पनही हनहिं[3] सु बारो बारी। पुरि के नर तहि मिले हज़ारी।
मारति बहुर गिरयो धर मांही। लात प्रहारहि तन सुधि नाहीं।। १०।।
सुनि सतिगुरु ने सिक्ख हटाए। 'हितहु न, अबि इह नहि मरि जाए।
जाम[4] दिवस लौं संगति आई। करि करि दरशन सदन सिधाई।। ११।।

---

1. खोटापन। 2. आतंक, भय। 3. मारते थे। 4. धाम, एक पहर।

खान पान करिकै गुर पाछे। बैठे बहुर सुहावति आछे।
जहांगीर हुइ अनंद बिलंद[1]। आयहु गुर ढिग जुति नर ब्रिंद ॥ १२ ॥
गन उमराव संग जिस केरे। बसत्र विभूखन[2] मोल बडेरे।
जबर जवाहर कंचन जरे। सभिनि सरीर बिखे सुम धरे ॥ १३ ॥
नंदन, बनिता[3] चंदू जोइ। आने संग पकरि करि सोइ।
बैठयो शाह बंदना करि कै। बोल्यो मुख ते शरधा धरि कै ॥ १४ ॥
'करी अवग्या दुशट महानी। तिसकी इह बनिता गहि आनी।
पुत्र हुतो इक, सो इह आवा। दिहु सजाइ जैसे मन भावा ॥ १५ ॥
मम सिर दोश कहै नहिं कोई। कशट सहहिं अपराधी जोई।
श्री हरिगोबिंद करुना ठानी। बिगसि बदन ते गिरा बखानी ॥ १६ ॥
दशा चंदू की इनहि दिखावहु। बिन दोशी लख बहुर छुटावहु।
करे कुकरम भरहि दुख सोइ। त्याग दीजीए तिय सुत दोइ' ॥ १७ ॥
सुनि गुर ते तिन चंदु दिखायो। धर्यो बिहाल नहीं उकसायो।
कूकर अरु चंडालनि मांही। धोती बिना[4] अपर पट नांही ॥ १८ ॥
लिपटयो धूल संग तन सारो। तिय सुत देखि नैन जल डारो।
पुन[5] दे त्रास निकासनि करे। छूटति भाजे तूरन डरे ॥ १९ ॥
क्रिपा-सिंधु ने कहि छुटवाए। पुन बावन महिपाल बुलाए।
इक इक ढिग करि बूझनि कीना। 'कौन देश को, कहु किम छीना' ॥ २० ॥
सो नरेश सुनि देश बतावै। करी अवग्या को बखशावै।
सिरे-पाउ अरु चपल तुरंग। श्री हरि गोबिंद दे कर संग ॥ २१ ॥
राज तिलक कौ करि न्रिप माथे। बाहु गहाइ शाहु कै हाथे।
पुन सिख्या को भले सिखावैं। 'करहि अवग्या सो दुख पावैं ॥ २२ ॥
रहहु शाह के नित अनुसारी। बखश दियो तुमको इक वारी।
रुख लख जहांगीर गुर केरा। दिए राज तिनके तिस वेरा[6] ॥ २३ ॥
संग दिए उमराव विशेश। 'करों सथापनि जो जिस देश।
अबि के श्री सतिगुर की करुना। छुटे, न तुरत कैद महिं मरना' ॥ २४ ॥
गुरू शाहु दुनहुनि करि नमो। महिपालक गमने तिह समो।
जहि जहिं जाहिं सुजसु गुर करैं। सरधा अधिक रिदे महिं धरै ॥ २५ ॥

---

1. ऊंचा। 2. विभूषण। 3. वनिता, स्त्री। 4. धोती के अतिरिक्त। 5. पुनि, फिर। 6. उस वेला, उस समय।

श्री सतिगुर हरि गोबिंद चंदु। पसरी कीरति जौन्ह[1] मनिंद।
'धंन धंन' भाखति गे[2] देश। भे नरेश ले राज अशेश ॥ २६ ॥

रिदे यादि राख्यो उपदेश। सत्ति नाम को जपनि हमेश।
दुतीए रहहु शाहु-अनुसारी। करति भए तिम ही द्वै कारी ॥ २७ ॥

जहांगीर गुर के ढिग बैसे। बोलनि मिलनि कर्यो शुभ ऐसे।
करि प्रसं। गुर को सभि भांति। भयो शाहु तबि सीतल छाती ॥ २८ ॥

श्री मुख ते जिम जिम फुरमायो। तिम तिम करयो रिदे हरखायो।
हाथ जोरि करि बाक बखाना। 'उपकारी तुम क्रिपा-निधाना ॥ २९ ॥

निरनै करि महिमा अबि जानी। पीर महा ब्रिध[3] बहुर बखानी।
बडो त्रास ते मोहि बचायो। जबि सिमरौं हाजर दरसायो ॥ ३० ॥

नित राखे अपने मैं माने। त्रास कशट मेरे सभि हाने।
कहे आपके हउं अनुसारा। श्री गुर रहो मोरि रखवारा' ॥ ३१ ॥

श्री हरिगोबिंद कहि 'सुनि शाहू। शरधा धरहिं जि गुर-घर माहूं।
तिन को सदा सहाइक अहैं। आज आपनी को निरबहैं ॥ ३२ ॥

जानहिं, परयो आसरे आइ। जुग लोकनि महि बनहिं सहाइ।
श्री नानक अरु बाबर शाहू। प्रथम मेल भा आपस माहू ॥ ३३ ॥

तब ते सिदक धरति तुम रहे। करे प्रसंन भले बर लहे।
हमरी तुमरी संधि सदीवा। गुरू सहाइक सिक्खनि थीवा[4] ॥ ३४ ॥

इम कहि सुनि कै सीस निवायो। उठयो शाहु निज सदन सिधायो।
सतिगुर थिरे आपने डेरे। सुखा[5] पान कीनि तिस बेरे ॥ ३५ ॥

चढि तुरंग पर गमने सैल। तट तट जमना के चलि गैल[6]।
सने सने हेरति जल जाते। तीर हरितता सुंदर भांते ॥ ३६ ॥

दूर जाइ करि उतरि तुरंग। थिरे जहां केतिक नर संग।
नंदा संवेड़ा तिस ठौर। जेठा अमीआ हेहरि औरि ॥ ३७ ॥

निंझर हुतो रंधावा सोइ। अरु क्रिपाल जल्लू को जोइ।
सिख लंगाह, पिराणा धीर। सौचि शनाने सरब सरीर ॥ ३८ ॥

थिरे तीर पर पिखहिं प्रवाहू। श्यामल रंग तरंगनि ताहू।
गुर सों बूझनि कीनि पिराणे। 'मजनूं कौण भयो सभि जाणे ॥ ३९ ॥

---

1. चांदनी। 2. गये। 3. बहुत वृद्ध पीर (मियां मीर)। 4. हुआ। 5. भंग का विशेष नाम जो निहंग सिखों में प्रसिद्ध है। 6. साथ साथ।

जहां हमारो डेरा अहै। तिस को नाम थान सो कहैं।
सुनि करि श्री सतिगुरू नतावा। भयो प्रथम चिरकार बितावा ॥ ४० ॥
लैला हुती शाहु की तनीआ। रूपवती अतिशै तिन सुनीआ।
हेरति चितको प्रेम लगावा। अपर न सुधि मन तहां टिकावा ॥ ४१ ॥
लैला लवपुरि[1] विखै चितारति। राति दिवस इकरस ब्रिति धारति।
इक दिन चढ्यो संढनी मिल्यो। हुइ त्यार[2] दिल्ली पुरि चल्यो ॥ ४२ ॥
तिसको लाग्यो देनि संदेसा। कहति कहति इहु पंथ असेसा।
संग संढणी के चलि आयो। सुधि बिनु धरे बेग अस धायो ॥ ४३ ॥
दिल्ली बिखै आनि करि हेरी। लैली मिली जबहि इक बेरी।
कीनसि मजनूं साथ बखान। अब तूं खरो रहो इस थान ॥ ४४ ॥
मिलौ आइ करि मैं पुन तोही। रहो उडीकति[3] इस थल मोही।
इम कहि गई खरो इह रह्यो। लैला को सिमरति चित चह्यो ॥ ४५ ॥
ठाढे केतिक संमत बीते। नहीं देहि की सुधि कबि[4] लीते।
काशट सम शुशक्यो तन सारो। नहिं लैला कबि रिदे चितारो ॥ ४६ ॥
प्रेम शकति ते प्रान न गए। अधिक इकागरता मन लए।
शुशक खंड[5] मो लगि करि ठाढो। लैला प्रेम भयो द्रिग गाढो ॥ ४७ ॥
इक बाढी[6] तिस थल चलि आयो। जात्यो काठ कुठार चलायो।
लगयो देहि महि तबि सुधि पाई। कहु लैला ! तूं है अब आई ॥ ४८ ॥
प्रथम त्रास कर पुन तिस जाना। है मजनूं ठांढों इस थाना।
दई शाह को सुधि, सुनि डरिओ। लैला को भेजनि तबि करिओ ॥ ४९ ॥
जाइ दरस जबि अपनो दीनो। प्रेम रंग महिं सगरो भीनो।
सभि दिशि ते ब्रिति इकठी करिकै। लग्यो परमेशुर संग बिचरिकै ॥ ५० ॥
लैला दिशि ते प्रेम उखारा। प्रभु सों लगी ब्रिति इक सारा।
भयो संत पूरन इस थान'। इन सतिगुरु ने कीनि बखान ॥ ५१ ॥
सुन करि सिक्खनि लख्यो प्रसंग। पुन तिस थल ते चड़े तुरंग।
आनि बिराजे अपने डेरे। खान पान निस कर्यो बसेरे ॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे 'मजनूं' प्रसंग बरननं नामु पंचम अंशु ॥ ५ ॥

---

1. लाहौर। 2. तय्यार, तत्पर। 3. प्रतीक्षा करना। 4. कभी। 5. अर्थात् वृक्ष का सूखा तना। 6. बढई, लकड़ी काटने वाला।

अंशु ६

बेगमात प्रसंग

दोहरा

भयो दिवस पुन सति गुरू शाहु बुलाए पास ।
चढि तुरंग पहुँचे तबहि बैठे रुचिर अवास ।। १ ।।

चौपई

चंदन चौंकी चारु चुकोनी । सुजनी सेत छाद करि लोनी[1] ।
तिस ऊपर सनमान बिठाए । बंदहिं शाह सहत समुदाए ।। २ ।।
संतन पीरनि अनिक प्रसंग । कहे सुने हज़रत गुर संगि ।
बचन बिलास हुलासति करे । दहि दिसि रस बिसाल महिं ढरे ।। ३ ।।
पुन श्री हरि गोबिंद उचार्यो । 'गमन सुधासर हम चित धार्यो ।
कितिक मास बीते इत आए । पीछे सिख संगति अकुलाए' ।। ४ ।।
सुनति शाहु कहि 'मम अभिलाखा । पुरि कश्मीर चलों चित राखा ।
चलैं संग ही माझे[2] देश । दरस आप को होइ हमेश ।। ५ ।।
आज महूरत को दिखरावौं । नहीं बिलम[3] तित तुरत सिधावौं' ।
सतिगुर बैठे तबहि बुलायो । सोधि महूरत तांहि बतायो ।। ६ ।।
'त्रौदस[4] वीरवार है परसों । करहु पयाना तबि दिन बर[5] सों' ।
सुन्यो सभिनि कीनसि निज त्यारी[6] । जबि हजरत निशचै मति धारी ।। ७ ।।
श्री सतिगुर डेरे चलि आए । ब्रिध आदिक को कहि समुझाए ।
सुन्यो सुधासर[7] को जबि प्याना । सतिगुर के नर अनंद[8] महाना ।। ८ ।।
तब हरिदास पास चलि आयो । पद अरबिंदन पर लपटायो ।
तबि सतिगुरु बहु करना करी । रिदे अबिद्दया तिस की हरी ।। ९ ।।
सति नामु सिमरहु लिवलाई । मम मूरति धरि ध्यान बनाई ।
रहो गुआलियर महिं अब जाइ । दुहि लोकहि महिं बहु सुख पाइ ।। १० ।।

---

1 सुलोनी, सुंदर । 2. पंजाब का मध्य भाग, माझा । 3. विलम्ब । 4. १३ वीं । 5. वर, श्रेष्ठ । 6. तैयारी । 7. अमृतसर । 8. आनंद ।

संकट परे सिमरि उर सादर। तत छिनि हम होवैं तुव हादर।
अपर नरनि को सिक्खी दीजै। करि संगति मिलि गुरू जपीजै ॥ ११ ॥
जथा निकट अबि दरशन करैं। तथा महां फल संमत[1] धरैं।
सुनि उर प्रेम बिलोचन भरे। गुर बिछरन ते दुख बहु करे ॥ १२ ॥
दे गुर धीर बिदा करि दीनो। धरि उर मूरति ध्याना कीनो।
जीवत रह्यो सिमर तबि गुर को। अंत समै प्रापति सुर-पुरि को ॥ १३ ॥
बोल्यो जेठा 'चंदू मंद। बनिता इस आई अरु नंद[2]।
सो रावर ने कहि छुटवाए। चहयहि दुशट मूल बिनसाए ॥ १४ ॥
जग महिं नहिं इसकी जर[3] रहै। मरहि सजाइ नरककी लहै।
संकट भरहि जुगनि लगि पर्यो। अति कुकरम पापी ने कर्यो ॥ १५ ॥
तबि श्री हरि गोबिंद उचारा। 'भले पुरख की नहिं इह कारा।
क्या दारा पर करनि प्रहारि। छोर देति हैं, रिदे बिचारि ॥ १६ ॥
इस के सुत को पुन हम मारैं। रचहिं जुध जबि शासत्र प्रहारैं।
अबि त्यागनि ही बनहि बिचारो। बहुत तुरक ब्रिंदन जुति मारों' ॥ १७ ॥
श्री गुरि को सुनि करि प्रसथान। पुरि संगति दरसहि गन आनि।
अनिक उपाइन धरि धरि बंदहिं। पाइ मनोरथ होति अनंदहिं ॥ १८ ॥
सभहिनि को दीनो उपदेश। 'सति नाम को भजहु हमेश।
गुर को सेवहु जनम सुधारो। गुरमुख बनहु अत नहिं हारो ॥ १९ ॥
दिवस दुआदशी तिथी बिताई। त्रोदशमी महि कीनि चढाई।
अधिक धुनी धौंसा धुंकारा। तत छिन दल तिआर ह्वै सारा ॥ २० ॥
जहांगीर उत चढ़ि करि चाला। मानव चले हजारहुं नाला[4]।
तबि जैठा मन मांहि बिचारे। चंदू को गुर नहीं निहारैं ॥ २१ ॥
महां क्रिपालु सुभाउजि देखैं। नहीं छुराइ देइं अवरेखैं[5]।
चंडालनि कों सीख सिखाई। 'चंदू स्वानन साथ मिलाई ॥ २२ ॥
गुरु की द्रिशटि बचावति आवहु। डेरा दूर धरहु इस थावहुं।
इम कहि करि संगरी गर डारी। नर छोरे गन खल[6] रखवारी ॥ २३ ॥
आप मिल्यो गुरु के संग जाई। बजति निशान चलति अगुवाई।
दिन प्रति कूच मुकाम करंते। कबि कबि गुरु अरु शाहु मिलंते ॥ २४ ॥
अनिक खुशी की बातनि करते। कहि सुनि मिलि करि आनंद धरते।
जितिक गुरू चाहति मग चाले। तितो शाहु चहि चलहि सुखाले ॥ २५ ॥

---

1. वर्ष के पश्चात्। 2. बेटा। 3. जड़, मूल। 4. साथ। 5. देख कर। 6. मूर्ख।

इक दिन शाहु सग गुरु मिले। बचन बिलास बखाने भले।
बेगम के समीप सुभ डेरे। चिखन[1] झरोखे लगे घनेरे ॥ २६ ॥

मखमल ज़री झालरनि लरकी। चोब सु चांदी चामीकर[2] की।
हीरे मुकर सु मुकता लागे। जगमग चमतकार दुति जागे ॥ २७ ॥

तिन महिं फिरहिं बेगमा हेरति। हजरत की दिशि द्रिशटी प्रेरति।
इक दुइ नफर[3] निकट तहिं पेखे। पुनि श्री हरिगोबिंद जी देखे ॥ २८ ॥

मुखमंडल दीरघ जिस केरा। शमश[4] मनहु तम चहि ससि घेरा।
मंद मंद मुसकावति बोलति। जन त्रिदम[5] को संपट खोलति ॥ २९ ॥

हीरन पांति दंत बिच दीखे। बचन सुगन्धति सुधा सरीखे।
बहु त्रिसतारति बिलोचन बंके। कमल पांखुरी की करि संके ॥ ३० ॥

ज़ेवर जबर जवाहर जरे। पहिर सरीर बिभूखति करे।
गुर सुंदरता कहिं लगि कहौं। महि महिं किहठों[6] अपर न लहौं ॥ ३१ ॥

रूप बिलोकि बेगमा सारी। रीझ रही जनु मृगी बिचारी।
इक टक देखि रही सभि दारा। मनो जूए[7] मैं मन को हारा ॥ ३२ ॥

निकट झरोखे रहिगी ठांढी। प्रीत बिलोकनि की उर बाढी।
हटि नहि सकहिं चित्र सी खरी। अंग अंग महिं जिन दुति धरी ॥ ३३ ॥

जबि लगि गुरू शाहु ढिग खरे। इत उत नहीं बिलोकन करे।
पुन उठि गुरू बहिर को चाले। अवलोकति अकुलावति नाले[8] ॥ ३४ ॥

चित महि लगी चटपटी ऐसे। इन सो मिलिबो लहिं हम कैसे।
निकटि होइ जबि देखनि करैं। अति प्रमोद को हिरदे धरैं ॥ ३५ ॥

चितवति जतन अनेक प्रकारा। गन दासी महिं बाक उचारा।
'हज़रत निकट कौन इह आयो। मिलि बोलति चिरकाल बितायो ॥ ३६ ॥

दासी एक त्रिधा सभि जाने। सभि बेगम सों भेव[9] बखाने।
'श्री हरि गोबिंद इह गुर पीर। भए सहाइक शाहु सरीर ॥ ३७ ॥

दुरग गुआलियर बैठे जाइ। करे जाप लिय शाहु बचाइ।
केतिक मास बिते चलि आए। हज़रत मानहि सीस निवाए ॥ ३८ ॥

अनिक उपाइन अरपन करै। सहत प्रीति के शरधा धरे।
सुनि बेगम तबि रच्यो उपाइ। 'कहैं शाह सों 'पीर दिखाइ ॥ ३९ ॥

---

1. चिक, चिलमन। 2. स्वर्ण। 3. दास जन। 4. सूर्य की किरणों के समान दाढ़ी, श्मश्रु, मूछें। 5. विद्रुम। 6. किसी जगह। 7. जूआ। 8. साथ में। 9. भेद।

हम बी[1] बंदहिगी तिन चरन। जिन दरशन ते दुख-गन हरनि'।
गयो शाहु अपने रणवास। खान पान के करनि बिलास ॥ ४० ॥
तबि बेगम ने बात चलाई। 'पीर भए तुमरे जु सहाई।
दरशन ते अघ ओघनि हरता। सकट मैं सहाइ को करता ॥ ४१ ॥
है कि नहीं इन के संग दारा'। पुन हज़रत ने वाक उचारा।
'पूरब ही संतै मुझ ऐसे। तरुन अवसथा इनकी जैसे ॥ ४२ ॥
बिन इसत्री किम निसा बितावैं। जिनहुं देखि त्रिय धीर न पावैं।
रूप अनूपम म्रिदुल सुभाए। बोलति बदन-कमल बिकसाए ॥ ४३ ॥
करहु पीर को परखनि अबै। काम बसी हुइ कै नहिं कबै।
अपने तन को सभि शिंगारो। जाहु समीपी दरस निहारो ॥ ४४ ॥
करहु बिलोकन लोचन गति को। हुइ कै नहिं बिकार तबि चितको।
हम ते त्रिय बिन रह्यो न जाई। तिन कै तन ऊपर तरुनाई' ॥ ४५ ॥
सुनि बेगम मन भावति होई। हरख बिसाल बिखै सभि कोई।
'भई भोर जहिं होवहि डेरा। हम करिहैं दरशन गुर केरा' ॥ ४६ ॥
मसलति करि इम निसा बिताई। चित बेगम के अति खटकाई।
भई प्रभाति कूच करि डेरा। जाइ बिपासा[2] को जल हेरा ॥ ४७ ॥
पार उरार सिवर को घाला। जहिं कहिं तंबू लगे बिसाला।
गज बाजी अरु नर समुदाए। टिकि सभिहिनि बिसराम सु पाए ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे 'बेगमात' प्रसंग बरननं नाम खशटमो अंशु ॥ ६ ॥

---

1. भी। 2. व्यास नदी।

अंशु ७

बेगमनि को प्रसंग

दोहरा

पीर प्रीख्या[1] परखिबे जहांगीर कहि दीनि।
सभि वेगम मन भावति जानि हरख बड कीनि ॥ १ ॥

चौपई

को खोड़स बरखनि, को बीस। किस वेगम की वैस[2] पचीस।
करि शनान को प्रथम सरीर। पहिरे रंगदार बर चीर ॥ २ ॥
ज़ेवर जवर जवाहर जरे। मुकता गोल, आब बड खरे।
हीरनि को चामीकर चारू। चमकति चौसर-हार[3] उदारू ॥ ३ ॥
जो रजपूत नरेश-कुमारी। अधिक सरूपवती दुति सारी।
आंख पांखरी मनहुं सरोज। कट[4] जिन छीनी पीन उरोज ॥ ४ ॥
वीच पजामनि उरू जि मेले। गोल स-छीलक जनु जुग केले।
चलहि मराल चाल बर बाला। सगरे सुंदर अंग बिसाला ॥ ५ ॥
अंजन-जुति खंजन जनु नैन। कंजन मद-भंजन सर[5] मैन।
सभि जग बीन बीन जे आनी। क्या सुंदरता करैं बखानी ॥ ६ ॥
प्रेरी चली शाहु की सोइ। अस उपमा कबि के मन होइ।
उरबसि आदि मनहुं समुदाई। शिव के परखनि हेतु पठाई ॥ ७ ॥
कै नारद ढिग रंभा आदि। चली करन को वहु तप वादि।
प्रथम पठी दासी ने कह्यो। 'वेगमात तुम दरशन चह्यो ॥ ८ ॥
अंतर हुइ इकंत गुरु बैसे। परदे मंहि दरसहि त्रिय जैसे।
तिन को सिदक पूरी अहि धीर। दिहु दरशन आवैं जिम तीर ॥ ९ ॥
बिनै सुनी तिन की वहु जबै। हुइ इकंत बैठे गुर तबै।
सभि घट की लखि अंतरजामी। सुमति देनि इछ पूरन स्वामी ॥ १० ॥

---

1. परीक्षा। 2. अवस्था। 3. चार लड़ी वाला हार। 4. क्षीण कटि, पतली कमर। 5. मदन बाण, कामदेव के तीर।

डोरे आदिक जो असवारी। परदे महि हजरत की नारी।
उतरी आनि गुरू के द्वारे। गमनी निकटि अनंद को धारे॥ ११ ॥
बहु दीनार जवाहर ल्याई। प्रथम उपाइन धरि अगुवाई।
करि करि बंदन बैठी तीर। नारि छबीली गौर सरीर॥ १२ ॥
बदन उघारि अंचरा[1] टारै। इक टक गुरु को रूप निहारै।
भई बिबसि मोहत ह्वै रही। देखि दशा सतिगुरु तबि कही॥ १३ ॥
'प्रथम पुन को फल इह पायो। सुंदर रूप अनूप सुहायो।
सरब पदारथ भोगहु भले। जस इच्छहु तस तूरन[2] मिले॥ १४ ॥
पीर फकीरनि सेवा करीअहि। मन को प्रेम शाह महिं धरीअहि।
त्रीअनि को अमान इह अहे। पति बिन अपर पुरख नहि चहें॥ १५ ॥
सुनि करि सतिगुर को बच नीको। चहें उपावन मनमथ जीको।
'कहो पीर जी! साथ न दारा। तरुन बैस किम होति गुजारा॥ १६ ॥
रूप अनूपम सुंदर अहै। देखति कौन हरख नहिं लहै।
क्यों न बिलास करो मन भाए। बहुर तरुनता बैस न पाए॥ १७ ॥
अपर अनंद मनिंद[3] न इसके। दंपति रूप तरुनता जिसके।
निफल न कीजहि प्रिया बिहीन। जोग सरब सुख के तन चीन'॥ १८ ॥
श्री हरिगोबिंद सुनि करि कह्यो। 'नार भोग सभि जनमनि लह्यो।
एक समान सभिनि महिं अहै। सूकर कूकर सभि सुख लहैं॥ १९ ॥
इहु मानुख तन पाइ विशेश। सिमरनि करहि खुदाइ हमेश।
जनम अनेकनि को दुख खोवै। जिस ते मरन कशट नहिं जोवै॥ २० ॥
तरुनायन को सुख दिन चार। इस महिं प्रेम न करहि बिचार।
सुख जो अटल लेनि हित चाहै। सतिगुरु सेवहि सिमरि अलाहै[4]॥ २१ ॥
थोरे सुख हित बहुत न खोवै। सो बुधिवंत चतुर नर होवै।
तुम भी करि नित पति महिं प्रेम। सिमरि खुदाइ लहो सुभि छेम[5]'॥ २२ ॥
बेगम सुनहिं बसत्र को टारहिं। सुंदर अपने अंग दिखारहिं।
हाव भाव करि अनिक प्रकारी। देखहि रूप होति बलिहारी॥ २३ ॥
नारि सुभाव जि मदन उपावनि। सभि करि रही तहां रीझावनु।
गुर की द्रिशटि बिकार न भयो। सहिज सुभाव प्रथम जिम लह्यो॥ २४ ॥

---

1. अंचल सरकाती है। 2. तुरंत। 3. मानिंद, समान। 4. अल्लाह (प्रभु) को। 5. कुशल क्षेम।

पिखति कटाछनि बंके करि कै। उरज[1] दिखावति भुजा उसरि कै।
अपनी दुति दिखाइ करि हारी। नहिं सतिगुर किम भए बिकारी ॥ २५ ॥
कितिक काल बैठी ढिग रही। सुनी बाति मन भावति कही।
जोर न चल्यो जानि सभि लीनी। उठनि हेतु पुन मनशा[2] कीनी ॥ २६ ॥
जोरि हाथ पुन बंदन ठानी। 'साचे पीर' बेगमनि जानी।
जसु को करति चढी असुवारी। अंतर परदे जाइ उतारी ॥ २७ ॥
जहांगीर अंतहपुर आवा। थिर हुइ गुरू प्रसंग चलावा।
'गमनी आज पीर के तीर। किम देख्यो गंभीर सधीर ॥ २८ ॥
इंगति बोल बिलोकनि केरी। तुम समीप ते कहु किम हेरी।
मन बिकार जुति भयो कि नाही। बिन ब्रिय नहि लखीअति चित माहीं' ॥ २९ ॥
सुनि बेगम कर जोरति कह्यो। 'इन सम अपर नहीं हम लह्यो।
हाव भाव अंगनि दिखरावन। हम सभि कीनो मदन उपावन ॥ ३० ॥
हमरो करतब बायु मनिंद। रह्यो पीर मन मेर गिरिंद।
सहज सुभाइक प्रथम समाना। मधुर गिरा उपदेश बखाना ॥ ३१ ॥
पति महिं प्रेम कि नाम खुदाइ। सुनति हमरो मन बिरमाइ[3]।
बुरे बिशय लखि होति बिराग। यजदां[4] सिमरनि महिं अनुराग ॥ ३२ ॥
इहु सुंदरता इह तरुनाई। इह कद इह बल इह चतुराई।
सभि को पाइ कियो मन बसि में। नहिं दौरति कबिहूं किस रस मैं ॥ ३३ ॥
वंदनीय सभि जग के पीर। निशचै रख्यक तुमहिं सरीर।
सदा अदाब[5] करहु इन केरा। भला होहि जुग लोक घनेरा ॥ ३४ ॥
चित की जानति अंतरजामी। महां पुरख पूरन बड स्वामी।
नहीं अवग्या आप करीजै। सरब प्रकार प्रसंन रखीजै' ॥ ३५ ॥
सुनि कै शाहु कह्यो 'मैं जानौं। गादी श्री नानक की मानौं।
निस महिं सिमरे करी सहाइ। जुग शेरनि को हेरि हटाइ ॥ ३६ ॥
इक हकीम ने मुहि समुझायो। दुरग ग्वालियर ते बुलिवायो।
कैदी मरन प्रयंत ब्रिपाले। संग आपने दुरग निकाले ॥ ३७ ॥
छोरन उचित सुनहिं रिपु घोरे। इनके कहे तुरत सो छोरे।
चंदु दिवान इनहुं को बैरी। करी अवग्या बड गुर केरी ॥ ३८ ॥

---

1. उरोज, स्तन। 2. फा-इच्छा; सं० मनसा। 3. बरमाया, रिझा लिया। 4. ईश्वर। 5. आदाब; आदर।

करनि प्रसंन रिदे हित साथ। सो मैं पकर दीनि इन हाथ।
करबे लाइक हुती न जोइ। इन आदर हित कीनी सोइ॥ ३९॥
अबि जिम मम मन संसै भयो। सो भी निरनै करि पिखि लयो।
परख नमित्त करि तुमहि पठायो। इस ते कोप जि कुछ उपजायो॥ ४०॥
मिलों प्राति निज बिनै सुनावौ। भूल भई सगरी बखशावौं।
इत्यादिक सुनि कहि गुरु जस को। कर्‌यो अहार[1] अनेकनि रस को॥ ४१॥
परे जथा सुख निस कहि सोए। भई प्रात सभि जाग्रति होए।
रवि जिस काल उदै नहि भयो। शाहु त्यारि[2] ह्वै गुरु ढिग गयो॥ ४२॥
आगै किरतन होति सप्रेम। सुनहि एक चित प्रापति छेम।
सिक्खनि को लाग्यो दीवान। बीच बिराजहिं गुर भगवान॥ ४३॥
बैठयो बंदन करि के शाहू। सुन्यो शब्रद सुख लहि मन माहू।
आसा वार भोग तबि पर्‌यो। सुति श्री नानक को जस कर्‌यो॥ ४४॥
श्री हरि गोबिंद आदर कीनि। कह्यो बाक 'इह गुर पुरि चीनि।
दरशन करनि थान सभि केरा। होत पाक मन, पुंन घनेरा॥ ४५॥
श्री गुर अमरदास घर इहां। गोइंदवाल बसायो महां।
पिता तोहि जिन के ढिग आयो। ग्राम परगना तिन अरपायो'॥ ४६॥
सुनति शाहु कहि 'मोहि दिखावो। सभि अवगुण हमरे बखशावों।
इसी हेतु मैं रावरि पास। हित बखशावनि के करि आस'॥ ४७॥
सुनि सतिगुर ने बहु सनमाना। 'श्री नानक की क्रिपा महाना।
सनमुख गुर ग्रिह सो तुम रहे। यांते हम अपने मन[3] लहे॥ ४८॥
इस थल ते मारग हुइ न्यारो। तुम लवपुरि को इते सिधारो।
चहैं सुधासर हम अबि जायो। बिन देखे बहु काल बितायो'॥ ४९॥
सुनि करि शाहु कहै 'मै चालौं। करि दरशन पुन पंथ समालौं।
देखि सुधासर ले तुम संग। पुन गमनहिं लवपुरी उमंगि'॥ ५०॥
शरधा जानि शाहु की महां। हरि गोबिंद 'तथासतु' कहा।
गोइंदवाल दरस को करिबे। भए त्यार उर आनंद सरबे॥ ५१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रासे 'बेगमनि को प्रसंग' बरननं नाम सप्तमो अंशु॥ ७॥

---

1. आहार। 2. तैयार हो कर। 3. आपको हमने मन में अपना ही माना है।

अंशु ८

सुधासर आगवन प्रसंग

दोहरा

श्री हरि गोबिंद शाहु ले गमने गोइंदवाल ।
पार बिपासा ते उतरि संग लिए नर-जाल ॥ १ ॥

चौपई

प्रथम बावली जाइ शनाने । कीरति श्री गुर अमर बखाने ।
सभि मिलि भल्ले साहिबज़ादे । आए गुरु हेरनि अहिलादे ॥ २ ॥
शाहु सहत श्री हरि गोबिंद । अरपन कीनो दरब बिलंद[1] ।
म्रिदुल बखानि अधिक सनमाने । बहुर चुबारे देखनि प्याने ॥ ३ ॥
तहिं पूजा करि कै हटि आए । चढयो शाहु तबि बंब[2] बजाए ।
श्री हरिगोबिंद मिलि सभि साथा । बूझे, कही चंदु की गाथा ॥ ४ ॥
जथा जोग कहि सभि हरखाए । श्री गुर अमर अंस समुदाए ।
सभि ते ले आइसु गुर चले । पंथ तरन तारन के भले ॥ ५ ॥
डेरा आइ कर्‌यो निज थान । उतर्‌यो जहांगीर सुख मान ।
करि इशन न गुरू तत्रि तहां । पित सथान करि बदन महां ॥ ६ ॥
शाह आनि धन भेट चढाइ । बसे निसा बिसराम सु पाइ ।
भई प्रात करिकै इशनान । करी प्रणाम गुरू पित-थान ॥ ७ ॥
डेरा कूच शाहु जुति भयो । नगर सुधासर[3] के ढिग गयो ।
शाहु बिचारति बचन उचारा । 'गुरू नगर अबि निकटि निहारा ॥ ८ ॥
सैना ब्रिद मतंग तुरंग । नर अनगन[4] हैं मेरे संग ।
पुरी समीपन डेरा आछो । खेद न होइ इही चित वाछों ॥ ९ ॥
जाहु वज़ीर खान गुर पास । डेरा पुरि ते दूरहि बासि ।
हुइ उलंघ करि आगै हेरि । तित ही गमनै करति अखेरि ॥ १० ॥

---

1. बहुत, बुलंद-ऊँचा, वृंद=समूह । 2. नक्कारा । 3. अमृतसर । 4. अन्य गण, और व्यक्ति ।

डेरा हमरो तहिं करिवाइ। अपनी सैना निकटि टिकाइ।
बहुर सदन को आप सिधारो। भोर वनहिं आगमन हमारो'॥ ११॥
सुनति शाहु ते तूरन प्याना। श्री गुरु सों सभि जाइ बखाना।
'हजरत की मरज़ी इम अहै। तुमरी रिदैप्रसंनता चहै'॥ १२॥

सुनि श्री हरि गोविंद बखानी। 'आछी बात करी हम मानी।
दोइ कोस गुमटाले दिशि को। करहु निवास हरख जिस-किस[1] को॥ १३॥
सुनि करि गमन्यो जाइ बताई। 'तुमरी कही गुरू मन भाई'।
चली जाति हजरत असुवारी। कर्‌यो सिवर बर धरा निहारी॥ १४॥
आनि लगे तंबू समुदाए। गज बाजी सभि उतरि टिकाए।
कह्यो वज़ीर खान को शाहू। 'हमनो अबै पीर के पाहू॥ १५॥
कछुक दास दे करि संग जावैं। सदन आपने सभि सुख पावैं।
भई प्रात मैं दरशन करो। इस प्रकार अपनो मति धरों॥ १६॥
तू भी करहु संग गुरु प्याना। दरशन देखहु सगरे थाना।
हटि करि आई प्रात को जबै। हम गमनैं ले तुव संग तबै'॥ १७॥
हज़रत ते सुनि कै ततकाल। पहुंच्यो जहिं सति गुरू क्रिपाल।
कही शाहु की सगल सुनाई। अपने सदन बिराजो जाइ॥ १८॥
पंच सिख भाई ब्रिध संग। गुरू अरूढे चपल तुरंग।
पंथ सुधासर के तबि चाले। खां वज़ीर आयसि भा नाले॥ १९॥
जेठा भेज्यो हुतो अगारी। 'पंचाम्रित कीजहि बहु त्यारी[2]'।
उतसव अधिक गुरू पुरि मांही। हरखति मात पास चलि जांही॥ २०॥
बसत्र बिभूखन पहिरि नवीन। निज ढिग ते पंचाम्रित कीनि।
गूंदी किन फूलनि की माला। धूप धुखाइ सुगंधि बिसाला॥ २१॥
नगरी गरी मारजन[3] करि। करि छिरकाव धूर परहरी।
नौबत बजहि गुरू के पौर। पुरि प्रविशहिं सोढी सिरमौर॥ २२॥
कहैं चाव धरि करहिं प्रतीखनि। पिखहिं शीघ्र ही सुख लहिं ईखन[4]।
श्री गुरु चढि तुरंग पर आए। पुरि के चिन्ह द्रिशटि जबि पाए॥ २३॥
हय ते उतरि चरन सों चाले। बडिनि गुरू हित अदब बिसाले।
खां वजीर जबि गुरु दिशि हेरा। उतर चल्यो पग सों बिन देरा[5]॥ २४॥

---

1. सभ को। 2. तैयारी। 3. गली गली साफ़ की। 4. ईक्षण, आंखे। 5. बिना देर किए, अविलम्ब।

अपर सरब ही गमने पाई। घोरे संगि लीनि डुरिआई[1]।
प्रथम अकाल तखत गुरु आए। पंचाम्रित बहु करि कै ल्याए॥ २५॥
खरे करावनि को अरदास। हरखति हुइ कीनी गुर दासि।
पंच गुरुनि के ले करि नामू। तबि अरदास करी अभिरामू॥ २६॥
हाथ जोरि करि भेट चढाई। ध्यान धारि करि ग्रीव निवाई।
पुन गुरदास वंदना करि कै। मिल्यो सरब सो उर मुद धरि कै॥ २७॥
कुशल प्रशन सत गुर ने कर्‌यो। सरब हेरि सुख ताहि उचर्‌यो।
बहुर दरशनी पौर सिधारे। सनमुख होइ वंदना धारे॥ २८॥
हरि मंदिर महिं गए गुसाई। अधिक भाउ धरि ग्रीव निवाई।
तहिं वड्ढे अरदास उचारी। पंच गुरुनि ले नाम अगारी॥ २९॥
बहुर कराहु सभिनि वरतायो। अधिक प्रमोदिति लेकरि खायो।
उठि करि पुनहिं प्रक्रमा दीनि। थिरे अग्र अभिबंदन कीनि॥ ३०॥
पुन सतिगुरु पुरि महिं चलि आए। नर नारी उर अनंद वधाए।
धाइ धाइ देखनि को आवहिं। को सिर[2]-कोठनि पर दरसावहिं॥ ३१॥
को नर फूल माल ले मिलईं। अरपि उपाइन को संग चलईं।
को धरि भाउ चरन गहि आई। नंम्रि होइ को सीस लगाई॥ ३२॥
जथा जोग गुरु सभि सों कहिहीं। बूझि बूझि पुरि नर सुधि लहिहीं।
माता के मंदर को चाले। जिस के पुत्र सनेह विसाले॥ ३३॥
सुनि आगवन तनुज को गंगा। मेवहि[3] नहीं आपने अंगा।
श्री नानक को सिमरन करि करि। नमो करति सिर धरनी धरि धरि॥ ३४॥
त्रिय गन आनि वधाई देवति। भर्‌यो हरख उर सभि की लेवति।
प्रिय पुत्रा इम धरति हुलासू। जिम सुरतरू लहि रंक अवासू॥ ३५॥
दासी दास अनंद बिलंदे। अति उतसव को धारति त्रिंदे।
श्री हरि गोविंद पूरन चंद। पुरि सगरो सागर मानिंद॥ ३६॥
धाइ धाइ नर देखनि आवैं। मनहुं तरंग उतंग उठावैं।
आइ प्रवेशे जबि घर बीची। गंगा सम गंगा उठ बीची[4]॥ ३७॥
जथा तुरत की धेनु प्रसूता। पिख्यो सपूत महां मन पूता।
जाइ जननि को बंदन कीनि। मात उठाइ अंक भरि लीनि॥ ३८॥
सूंघति मसतक धन बहु वारति। देखि न त्रिपतै वदन निहारति।
लखहि आप को चित 'बड भागन'। लाइक पुत्र जान अनुरागन॥ ३९॥

---

1. बाग डोर। 2. चौबारों से, कोठों के सिरों से। 3. समाती।
4. वीचि, लहर।

'कहु सुत ! तनु कुशली[1]-जुति रह्यो। शाहु मिलनि कुछ आछो लह्यो।
तुम को चितवति निसदिन रही। बार बार नाना सुधि लही'॥ ४० ॥
श्री हरि गोबिंद सकल बताई। 'कारज भए सिद्ध समुदाई।
गुरु-द्रोही गहिवाइ चंडालनि। दई सज़ाइ समूह बिसालनि॥ ४१ ॥
मार खाइ अरु धरम न लहै। मरहि नरक महि संकट सहै।
श्री नानक जी भए सहाइ। राख्यो बिरद आपनो आइ'॥ ४२ ॥
इत्यादिक सभि गाथ सुनाए। उठे गुरू पुन बाहरि आए।
खां वजीर को कहि समुझायहु। 'शाहु समीप अबहि तुम जायहु॥ ४३ ॥
भोर होति इत को चलि आवहि। सुंदर हरि मंदिर दरसावहि।
सुनि गमन्यो ले आइसु[2] गुर की। जिस कै गाढी शरधा उर की॥ ४४ ॥
मिल्यो शाहु सों सकल सुनायो। 'गुर घर थिर ह्वै मोहि पठायो।
प्राति होति रावर भी दरसहु। गुर सथान पावन को परसहु'॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रासे 'सुधासर आगवन' प्रसंग बरननं नाम अश्टमो अंशु॥ ८॥

---

1. कुशलता-युक्त। 2. आज्ञा, आदेश।

अंशु ६

सुधासर प्रसंग

दोहरा

श्री गुरु हरिगोबिंद जी करि कै खान रु पान ।
सभि पुरि को आनंद दै बानी म्रिदुल बखानि ॥ १ ॥

चौपई

जथा जोग बोले सभि साथ । कुशल प्रशन करि कै गुर नाथ ।
महिल आपने जाइ सुहाए । तबि दमोदरी मोद बढाए ॥ २ ॥
बंदन करी बंदि कर तबै । देख्यो कंत महा दुति फबै ।
दासी गन सेवा सभि ठानी । सुपते सतिगुरु सेज महानी ॥ ३ ॥
जाम निसा ते जाग्रति होइ । सौचाचार करी सभि जोइ ।
करि शनान को लाइ धिआन । थिर करि ब्रिती लियो रस ग्यान ॥ ४ ॥
संगति सकल सुमज्जति ह्वै कै । सुनहिं करें किरतन सुख पै कै ।
जहिं कहिं पुरि महिं अरु हरिमंदरि । भजन होति इक सम प्रभु सुंदर ॥ ५ ॥
सूरज उदै भोग तबि परयो । सभिनि गुरु को दरशन करयो ।
जहांगीर के नर पुन आए । कहि पंचाम्रित बहु करिवाए ॥ ६ ॥
इतने बिखै आप चलि आयो । कहि सतिगुरु को संग मिलायो ।
प्रथम अकाल-तखत को आए । दरशन देखति सीस निवाए ॥ ७ ॥
तहिं निज करते धन अरपायो । करि अरदास कराहु ब्रतायो[1] ।
गुरू सहत हजरत मुद धारि । पुन गमने हेरनि दरबार ॥ ८ ॥
पौर दरशनी बंदन करे । गमने सनमुख अंतर बरे ।
पुल पर गे दरबार अगारी । करि प्रणाम को बरे मझारी ॥ ९ ॥
गाइं रबाबी शबद अखंड । इक सत्ता दूसर बलवंड ।
निकट ग्रिंथ साहिब बिध भाई । बैठे सिख संत समुदाई ॥ १० ॥
जबर जवाहर अरु दीनार । अरपन करि अरदास उचार ।
पंचाम्रित सभि महि बरतायो । दरशन करि हज़रत हरखायो ॥ ११ ॥

---

1. कड़ाह प्रसाद वितरण किया (बांटा) ।

बैठि शबद को सुनिबे लागा। जिनहु बिखै प्रभु को अनुरागा।
रीझ्यो राग परख करि तहां। दियो रबाबी को धन महां॥ १२॥
पुन उठि गुरु जुति बाहिर आए। थिरे अकाल-तखत हरखाए।
बहु-मोले सिरपाउ मंगाए। मिसरी आनति भे समुदाए॥ १३॥
श्री हरि गोविंद गहि निज हाथ। दियो शाहु को करुना साथ।
ले सिरपाउ गुर घर केरो। धरयो सीस पर भाउ घनेरो॥ १४॥
ऊपर संगि जेते उमराउ। सभि को सुंदर दे सिर-पाउ।
दीनि सितोपल[1] गुरू प्रसादि। सभिनि लीनि करि करि अहिलाद॥ १५॥
शाहु नफर जेतिक तिस थान। जथा जोग धन दीनि महान।
ले ले सकल करहि अभिबंदन। सुजसु करहिं गुर दोख निकंदन॥ १६॥
भन्यो शाहु ने 'सरब मकान। करिवावहु नीकी बिधि ठानि।
शाहु सदन ते लागै दरबा। पूजन थान बनावहु सरबा॥ १७॥
मुख ते आइसु करते रहो। बनहि तथा जैसे चित चहो।
गुरू कह्यो 'इहु सभि बन जैहै। जबि ही समो बननिको अैहै॥ १८॥
सतिगुरु के सिख प्रेमी जोइ। धन तन मन ते सेवहिं सोइ।
सने सने सुवरन के मंदर। अनिक प्रकारनि बनिहै सुंदर'॥ १९॥
गुरु मरजी हजरत ने जानी। मुख ते 'आछी बात' बखानी।
आइसु ले करि ठानि प्रणाम। चल्यो सराहति गुर के धाम॥ २०॥
निज डेरे महि पहुंच्यो जाई। बेगम मिली जबहि समुदाई।
बूझनि कीनि शाह 'कित गए'। 'गुर को दरस' बतावति भए॥ २१॥
कहति भई 'गुर की जे दारा। हम भी दरस लहैं सुख सारा'।
सुनति शाहु तबि आइसु दई। बेगम ब्रिंद त्यार तबि भई॥ २२॥
चढि गमनी परदे असुवारी। आइ गुरू की पुरी निहारी।
पूरब श्री हरि-मंदिर गई। दरस बिलोकति हरखति भई॥ २३॥
दरब अकोर धरी करि नमो। गुरु घर को चाली तिस समो।
मात गंग बड फरश कराए। बैठी बिच त्रीयन समुदाए॥ २४॥
निकट आपने नुखा[2] बिठाई। बसत्र बिभूखन सो छबि छाई।
प्रविशी बेगम सदन मझारी। गमनी आगै तजि असुवारी॥ २५॥
जेवर जरे जवाहर ब्रिंद। कंचन के गुन चारु बिलंद।
बसत्र जि इत्तनिनि पहिरनि गात। रेशम, प्रशम, बरन बहु भांति॥ २६॥

---

1. पतासे; सित + उपल = श्वेत औले। 2. स्नुषा = बहू।

धरि करि सभि शुभ गंग अगारी। गन बेगम तबि वंदन धारी।
गुरु जननी ने बहु सनमानी। हरखावति कहि माधुर बानी ।। २७ ।।
निकटि आपने सकल बिठाई। 'पतिव्रति धरम धरहु' सिख[1] गाई।
'पुत्र पौत्रगन ते सुख पावहु। पति की प्रीति रहै हरखावहु' ।। २८ ।।
हाथ जोरि पुन बूझनि लागी। 'गुरू भारजा को वडभागी।
हे माता! सो हमहि बतावो। तिसके सम को नहीं लखावों' ।। २९ ।।
सुनि गंगा कर संग बताई। 'इहु मम नुखा गुरनि घर आई'।
दीरघ नयना को तबि हेरा। कहैं कि 'धंन भाग[2] है तेरा' ।। ३० ।।
सुंदर महां सरूप छबीला। असि पति प्रापति भयो सुशीला'।
इसत्रिनि के सुभाव जिम होइ। कह अस वाक बूझ सभ सोइ ।। ३१ ।।
कितिक देर दरशन को कीनि। बहुर चलन को आइसु लीन।
तबि गंगा ने प्रेरी दासी। जरी बसत्र गन आने पासी ।। ३२ ।।
सभि बेगम को सादर दीने। गुरु प्रसादि लखि करि तिन लीने।
बंदन करति बहुर हरखाइ। उठि करि बेगम तबि समुदाइ ।। ३३ ।।
घर ते निकसि चढी असुवारी। पहुंची अपने सिवर मझारी।
निस महिं शाहु मिल्यो जबि आइ। गुरु को सदन सराहु सुनाइ ।। ३४ ।।
श्री अरजन सुत सदन सुहाए। सुमति जथा सुख निसा बिताए।
भई प्रभात शाहु ने चाहा। 'करहिं अखेर[3] ब्रित्त बन माहां ।। ३५ ।।
पठि वज़ीर खां गुरू बुलाए। गमन्यो बाहर संग मिलाए।
भांति भांति बन खेल अखेरा। हने जीव दे खेद घनेरा ।। ३५ ।।
करे बिलास अनेक प्रकारा। गुरु जुति हज़रत खेल शिकारा।
संध्या भई सु हटि करि आए। शाहु आपने सिवर सिधाए ।। ३७ ।।
सतिगुरु अपने सदन सिधारे। खान पान करि निसा गुजारे।
भई प्रात जबि शाहु सुजाना। करयो कूच लवपुरी[4] पयाना ।। ३८ ।।
किंच बेग अरु खान वज़ीर। जहांगीर बुलवाए तीर।
सकल बारता कहि समुझाई। 'पीर समीपी थिर हुइ थाई ।। ३९ ।।
इक दुइ दिन करि बास अवास। पुन चढाइ आनहु मम पास।
गुरु जोधा बहु, पर-उपकारी। न्यारो रहहि जि परहि बिगारी ।। ४० ।।
चमूं समीप अहै तरुनाई। हम ढिग रहिनौ अहै भलाई।
मैं भी कह्यो, आप चढि आइ। नितु तुम दोनहु बिनै सुनाइ ।। ४१ ।।

1. शिक्षा। 2. धन्य भाग्य। 3. शिकार, अहेर, आखेट। 4. लाहौर।

ज्यो क्यों करि लवपुरि ले आवहु। रहहु निकट गुर अबहि सिधावहु।
सैना संग आपने राखहु। बिना बिलम आवनि अभिलाखहु॥ ४२॥
सुनि दोनहु झुकि करी सलामूं। चल्यो शाह संग चमू तमामूं।
गज बाजनि के शबद उठंते। लवपुरि के सनमुख गमनंते॥ ४३॥
मग महि निस बसि पहुंच्यो जाई। उतरयो जाइ रिदे हरखाई।
किंच बेग अरु खान वजीर। कुछ सैना की लै संग भीर॥ ४४॥
चंदु सहत गुरु सैना भारी। तवि चढाइ निज संगि हकारी।
सकल सुधासर को चलि आए। पुरि ते वहिर सिवर उतराए॥ ४५॥
निकट सुधासर उतरे सारे। मज्जनि करहिं दरस को धारे।
खान पान की जे सुधि सारी। गुरु ग्रिहि ते पहुंच्यो हित धारी॥ ४६॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रासे 'सुधासर' प्रसंग बरननं नवम अंशु॥ ९॥

अंशु १०

लवपुरि गुर आगवन प्रसंग

दोहरा

श्री गुरु हरि गोबिंद जी बैठे लाइ दिवान ।
सकल चमू के भट मिले आयुध धरे महान ।। १ ।।

चौपई

सिख संगति बहु ब्रिंद मसंद । सभि मिलि आए अलप बिलंद ।
दरसहिं सतिगुर को सुख धरें । मनो कामना पूरन करें ।। २ ।।
खां वजीर तबि चलि करि आयो । संग सु किंच बेग को ल्यायो ।
शरधा प्रेम रिदे अधिकाइ । नमो करी बहु सीस निवाइ ।। ३ ।।
सादर सतिगुरु निकट बिठायो । कह्यो शाह को सकल सुनायो ।
सुनि हज़ूर ने धीरज दीना । 'लवपुरि चलै बिलंब बिहीना' ।। ४ ।।
इम कहि सुनि करि उर हरखाए । अपर अनेक प्रसंग चलाए ।
बैठे रहे गुरू चिरकाल । दरशन दे सिख करे निहाल ।। ५ ।।
बहुर प्रवेश महिल महिं भए । निज निज डेरे को सभि गए ।
ੴ धीआ जेठा हरख बिसाले । गर चंदू के संगरी[1] डाले ।। ६ ।।
हाथ चंडालनि के गहिवाई । आन्यो गुरु बजार के थाईं ।
दुरबल भयो सज़ाइन दीनि । जरा आरबल बडि बल हीन ।। ७ ।।
सिर मुख पर सुपैद भे बारे[2] । सभि मुंडवाइ मूत्र को डारे ।
इक बिराटका हाटि मंगावैं । पनही पंच बिठाइ लगावैं ।। ८ ।।
पुन दुकान दूजी ले जावैं । तिसी प्रकार तहां बैठावैं ।
पुरि के बारिक हुइ समुदाइ । हरख धारि सुनि आवति धाइ ।। ९ ।।
चंदु महंत बन्यो जनु नीका । मसतक चोट लगी जनु टीका ।
गर जूतन की माल बिसाला । त्रिणको चौर करहिं तिस काला ।। १० ।।
ब्रिंद बालके संग जु चेले । धूर मुशट जनु अलता मेले ।
मिलहिं बिलोकति पनही मारहिं । मनो भेट दे जनम सुधारहिं ।। ११ ।।

---

1. संगल, शृंखला, जंजीर । 2. बाल ।

अनिक प्रकारनि गारि[1] निकारति। सिसु चेले जनु सुजसु उचारति।
सगरे पुरि बज़ार महिं फेरा। जनु पूजा हित पावति फेरा॥ १२॥
देखि देखि बोलहिं सिख स्याने। 'इह गुर द्रोही मूढ महाने।
श्री हरि गोबिंद रिस करि भारी। गहनि प्रतग्या कठन उचारी॥ १३॥
करी सपथ-बड पातक होइ। सुनि करि निशचा करहि न कोइ।
बाल बैस ते भाखहिं आनि। किम इस गहहि जु शाहु दिवान॥ १४॥
जो सगरी अविनी को मालिक। तिस की कार इसी के तालिक[2]।
छल बल ते पूरन खल खोटा। जिसको हुकम न किनहूं होटा॥ १५॥
गह्यो जाइ किम औखिय बात। तऊ महां गुर द्रोही गाति।
तिशट सकहि नहि मूरख मानी। पाप बिसाल करहि इस हानी॥ १६॥
हुती प्रतीति न गहिबे थाहू। श्री सतिगुरु जोधा बडि बाहू।
करी प्रतग्या पूरन सारी। गहि मारयो पित शत्रु कुचारी॥ १७॥
दावा करनि धंन गुर केरा। इह गज मारयो मसत बडेरा।
इत्यादिक नर बात बनावें। श्री हरि गोबिंद को जस गावे॥ १८॥
कोठनि पर अरु पौरनि बीच। त्रियगन पिखि फिटकहि लखि नीच।
गुरु ग्रोही को हुइ अस हाल। मरि करि परिहै नरक बिसाल॥ १९॥
बहु सज़ाइ दे जाइ बिठावा। सम चंडालनि मेलि मिलावा।
खान पान तिंन ही सों करै। जूतनि सीस कशट को भरै॥ २०॥
इक दुइ दिन गुर सदन बिताए। खां वज़ीर बहु बिनै अलाए[3]।
भए त्यार लघपुरि को जाने। दरस करयो सभि गुरू सथाने॥ २१॥
जाइ मात को सीस निवावा। गरे लगाइ कंठ भर आवा।
प्रिय पुत्रा मुख देखि बिसाला। बिछुरन ते दुख लहि तिस काला॥ २२॥
श्री हरि गोबिंद धीरज दीनि। 'लवपुरि निकट आप के चीन।
नित सुधि प्रापति कुशल सरीर। यांते जानि लेहु निज तीर॥ २३॥
नमो करति निकसे पुन बाहर। सभि नर करुति चढन को आहर[4]।
कितिक चमूं निज नगर टिकाई। केतिक अपने संग चढाई॥ २४॥
सकल मसंदन निकट निहारि। सौंपी जथा जोग घर कारि।
चपल तुरंग बली पर चढे। धोंसा बज्यो अनंद उर बढे॥ २५॥
संग वज़ीर खान को लीनि। लवपुरि[5] पंथ पयानो कीनि।
जेठा करि चंदू तक राई। करे संगि कहि नह समुदाई॥ २६॥

---

1. गालियां देते हैं। 2. सत्ता-क्षेत्र में। 3. बोले। 4. प्रबन्ध। 5. उत्साह।

गह्यो चंडालनि मारग चाला। रिदे बिसूरति बहुत बिहाला।
'क्या मुझ साथ शाहु ने कर्यो। एक बार ही कहि परहर्यो' ॥ २७ ॥
निसा परी डेरा गुर कीनि। खान पान सुपते सुख लीनि।
दिवस आगले जाइ पहूंचे। पिखे नगर के मंदिर ऊंचे ॥ २८ ॥
रिदे बिचार सिवर को घाला। थान मुज़ंगी लख्यो निराला।
उतर परे गुर को सभि हेरा। निज निज मिसल कीन तहिं डेरा ॥ २९ ॥
इक सम बली तुरंग लगाए। उतरे सुभट तहां सुख पाए।
जाइ वज़ीर खान ततकाला। सुधि दीनी कहि शाहु बिसाला ॥ ३० ॥
'उतरे गुरू मुज़ंगीं आइ। पहुंचे अबहि हेर तुम भाइ'।
सुनि हज़रत आइसु तबि दीनि। 'सभि सुधि लीजहि गुरू प्रबीन ॥ ३१ ॥
सेवा करहु सरब ही रीति। बूझहु जाइ पासि सुधि नीति'।
सुनि वज़ीर खां हरखति होइ। करी तथा हज़रत कहि जोइ ॥ ३२ ॥
एक निसा करि कै गुरु बासा। भई प्रभाति बिसाल प्रकाशा।
पठयो सिख बहु करयो कराहू। गुरु थल हेरनि रिदे उमाहू ॥ ३३ ॥
जेठा आदिक लेकरि साथ। नगर प्रवेशे श्री गुरु नाथ।
सतिगुर रामदास जहिं जनमें। गमने प्रथम भाउ धरि मन में ॥ ३४ ॥
करि दरशन को सीस निवायो। कहि पंचाम्रित बहु बरतायो[1]।
सोढी कुल भूखन के थान। कितिक समें बैठे सुख मानि ॥ ३५ ॥
श्री गुरु रामदास ध्रम-साला। कीनि चिनावनि पुंन बिसाला।
पुन उठि तिस को दरशन करयो। थान बडनि को पिखि सुख भरयो ॥ ३६ ॥
बहुर बावली जहां बनाई। मज्जन कीनि तहां गुरु जाइ।
बहुत प्रसादि ब्रताइ[1] अनदे[2]। संगति सिक्ख मिले बहु ब्रिंदे ॥ ३७ ॥
पुन श्री हरि गोबिंद बखाना। 'जहां हमारे पित को थाना।
तन को त्याग बिकुंठ[3] सिधारे। तहिं लै चलहु सु पुंन[4] निहारे' ॥ ३८ ॥
तब जेठा लंगाह अगारी। ले तहि चले लोक संग झारी[5]।
जाइ सथान सु गुरू दिखावा। भयो प्रसंग सु सकल सुनावा ॥ ३९ ॥
'चंदु दुशट के घर ते आए। इह तट ऐरावती[6] नहाए।
जपु जी पाठ कीनि इकमन ते। पौढ पधारे निकसे तन ते ॥ ४० ॥

---

1. बांटा। 2. आनंदित हुए। 3. वैकुंठ। 4. पुण्य, पवित्रस्थान। 5. टोली, समूह। 6. रावी नदी।

सुनि सुनि लवपुरि की बड संगति । आन कर्यो उतसव करि पंगति ।
शब्द कीरतन फुल बिसाले । करि ससकार[1] भली विधि नाले ॥ ४१ ॥
श्री हरिगोबिंद सुन तिह सम्रो । सीस निवाइ जोरि करि नामो ।
करी प्रकरमा पुशप चढाए । पंचाम्रित तहिं ब्रिद ब्रताए ॥ ४२ ॥
निज करसों करि मजी थान । बच लंगाह संग कीनि बखान ।
'तू पित को प्रिय रहु इस थान । दीरक आदि सेव कहु ठानि ॥ ४३ ॥
जेशठ शुदी चौथ दिन मांही । दरशन करे कामना पाही ।
समै पाइ करि सुंदर बनै । दरशन ते पापनि-गन हनै ॥ ४४ ॥
सुनि लंगाह हरख को धारी । बैठ्यो बनि करि तहा पुजारी ।
करति रह्यो तिस थल की सेवा । पहुंचयो अंत निकट गुरदेवा ॥ ४५ ॥
इम दरशन परसन करि सारे । संग ब्रिंद नर गुरू सिधारे ।
डेरे बिखैं बिराजे जाइ । बैठे बडो दिवान लगाइ ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रासे 'लवपुरि गुर आगवन' प्रसंग वरननं नाम दसमों अंशु ॥ १० ॥

---

1. दाह संस्कार ।

अंशु ११

चंदू म्रितक

दोहरा

लवपुरि की संगत सकल स्याने सिक्ख महान् ।
भए एकत्र पवित्र ह्वै लीनि उपाइन पान ॥ १ ॥

चौपई

किनहुं पंचाम्रित करिवायो । बसत्र बिभूखन को सिख ल्यायो ।
मिलि सगरे सतिगुरु ढिग आए । धरहिं अकोरनि सीस निवाए ॥ २ ॥
बैठि गए दरशन को करिहीं । सुदर रूप हेरि मुद धरिहीं ।
तिन महुं जेतिक थे सिख स्याने । कर को जोरति बाक बखाने ॥ ३ ॥
'रावरि ने गुर द्रोही गह्यो । संगति सुनि अनंद बहु लह्यो ।
नहिं जीवति को छोरनि कीजै । दीरघ अपराधी लखि लीजै ॥ ४ ॥
जथा शकति हम जतन करे तवि । एक न चलनि दीनि बिरथे सवि ।
द्वार किवार असंजति करे । गुरु नहिं पिखनि दीए परहरे ॥ ५ ॥
जुग लोकनि इस नरक भुगावो । दे सजाइ इस प्रान वितावो ।
सुनि श्री मुख तै तबि फुरमायो । 'जिम इन कीनि तथा फल पायो ॥ ६ ॥
बड कशटनि को इह अधिकारी । अपदा भुगतहि क्वै न उबारी ।
अबि जीवति छुटिवो किम होइ । हलत पलत[1] संकट महि सोइ' ॥ ७ ॥
सुनि संगति सगरी हरखाई । उठी बहुर गुरु आगिआ पाई ।
जहि चंदू चंडालनि बीच । लगे बिलोकनि बैठ्यो नीच ॥ ८ ॥
देति सजाइ घाव तन परे । किरम समूहनि ते सो भरे ।
आंखन ते अधा हुइ गयो । नीच ग्रीव सिर ऊच न कियो ॥ ९ ॥
कबि कबि तन के किरम निकासै । दुरगध अधिक बहै किम पासै ।
पनही कुछक मारि करि मुरे । नहि बहु हनी, जाइ नहि मरे ॥ १० ॥

---

1. इहलोक, परलोक ।

संगति अपने सदन सिधारी। कीरति गुर की बदन उचारी।
'श्री हरि गोबिंद धंन[1] महांने। पित बदला लीनो रिपु हाने ॥ ११ ॥
इस बिधि पद्रंहि दिवस बिताए। कबि कबि शाहु मिलहि ढिग आए।
कबि सतिगुरु को निकटि बुलावै। दरशन करहि बोलि हरखावै ॥ १२ ॥
पुरि के सिख सेवक दरसंते। पाइ कामना को हरखंते।
देश विदेशनि संगति आवै। बंदहि सतिगुरु भेट चढावै ॥ १३ ॥
नित प्रित नए होति उतसाहू। रहै भीर बहु गुर के पाहू।
चंदू पुरि मंहि फेरनि हेतु। रहि जेठा इस चाह समेत ॥ १४ ॥
'इम पापी की दशा कुढाली। पिखहि नारि नर भा बुर हाली।
सतिगुरु को बदलो उर जानहिं। शरधा[2] बधहि अनंद को ठानहिं ॥ १५ ॥
श्री हरिगोविंद ते चित संकहि। क्रिपा न करहि जानि सम रंकहि'।
इक दिन बैठि चलाइ प्रसंग। 'इहां दुशट ने कर्‌यो कुढंग ॥ १६ ॥
गुरू अवग्या पिखि नर नारी। सभिहिनि हाहाकार उचारी।
प्रेमी महां ब्रिलाप करंते। संकट शोक बिसाल धरंते ॥ १७ ॥
दुरि दुरि मिलि मिलि गार नि़कारति। श्री गुर प्रभु इस क्यों नहीं मारति।
जथा दुखिति होए तिस काल। धरि सनेह सतिगुरू क्रिपाल ॥ १८ ॥
तिस दुख ते अबि दुगन अनंद। धारहिं पुरि के नर त्रिय त्रिंद।
जबि देखहिं इसको अस हाल। सभिहिनि कै अभिलाख बिसाल ॥ १९ ॥
बिना आप की आइसु करे। नहीं दुशट को ले पुरि बरे।
पुरि जन की इच्छा लखि पूरो। फेरनि बनहि बजार ज़रूरो ॥ २० ॥
मुसकावति श्री मुख ते कह्यो। 'नरक बिखै[3] पावनि अबि चह्यो'।
करहु दिखावनि सिख सुख पावैं। नहि मारनि दिहु तन ब्रिनसावैं ॥ २१ ॥
गुर द्रोही दुख प्रापति भारे। हलत पलत मंहि नित मुख कारे'।
ले आइसु गुर की तबि गयो। चंदू को मंगवावति भयो ॥ २२ ॥
गर संगरी चंडालनि हाथ। ले करि चले ब्रिंद नर साथ।
पुरि के पौर कर्‌यो मुख कारा। अंतर प्रविशे वीच बज़ारा ॥ २३ ॥
हेरि हेरि बालिक गन आए। खल सिर मुशट धूल को पाए।
'इहु गुरु द्रोही कूर कुपत्ता[4]'। इम कहि नर गन मारति जुत्ता[5] ॥ २४ ॥
कौडी हाटनि ते मंगवावति। मारति. जेठा तिनहि हटावति।
'इस को मारनि पुंन बिसाला। हतनि देहु हम को इस काला ॥ २५ ॥

1. महा धन्य। 2. बढ़ती थी। 3. डाला जाना। 4. बदनाम। 5. जूता।

'नहि मारहु अबि इहु मरि जाइ। जीवति पावहि अनिक सजाई।
इम जेठा बरजति बहु नर को। तऊ छुहावति पनही सिर को॥ २६॥
सनै सनै मारति चलि जाति। गुरु द्रोही कूकर की भांति।
को कोठनि, को द्वारन खरी। कितिक अटारनि ऊपर चरी॥ २७॥
परदे बीच झरोखनि हेरहिं। रौर परति जित जित पुरि फेरहि।
निज निज कार त्याग सभि धावैं। देखि धिकारहिं गार सुनावैं॥ २८॥
गरी गरी महिं फेरनि कीना। बीच बजारनि सभि दिखि लीना।
करम काल ते तहि चलि आयो। गुरु हित जहिं ते रेत मंगायो॥ २९॥
अगन तपावति ऊपर डार्यो। तिस भठिआरे दुशट निहार्यो।
महां क्रोध जिस के उर छायो। देख न सकहि आइ अगवायो॥ ३०॥
कड़ब तपत हुतो तिस हाथ। इत उत रेत करहि तिह साथ।
निकट होइ जबि उलंघनि लागा। ब्रिंद बालके पाछे आगा॥ ३१॥
रौर परति जिसके संग आवति। भरूआ बडो समूह अलावति।
रिस ते करछा तपति उठायो। गुरू द्रोही की दिशा चलायो॥ ३२॥
'महां पातकी आवति नेरे। दे परछावो[1] जाहु परेरे'।
करछा लोह गरव अति तातो। लग्यो दुशट के उदर बिघातो॥ ३३॥
तीछन कोर चरम को चीरा। मनहुं चहति मिसि असति[2] सरीरा।
आंत्रै निकसि गिरी धर माही। परेयो धरा मुख हाइ सु प्राही॥ ३४॥
गिरत्यां संकट पाइ उचार्यो। 'हरिगुबिंद मुहि अवगति मार्यो।
सुता न जनमी बदला कोई। जिस उपजे मम अस गति होई॥ ३५॥
पीरा परम पाइ कहि 'हाइ'। सफरी जिम तरफ्यो बिललाइ।
लोटति अवनी होत बिहाला। लोक बिलोकति गन तिस काला॥ ३६॥
गारी देति कहैं 'मरि पापी। तस भुगतहु जस कीनसि आपी।
किसके दया न मन मैं आवै। लखहिं पातकी कोप उपावैं॥ ३७॥
इम नरगन हेरहिं तिस थान। अति संकट ते छूटहि प्रान।
चहुं दिशि माखी को समुदाइ। देखति मन गिलान उपजाइ॥ ३८॥
हुकम जगति पर सभि अनुसारी। धन की कमी न सदन मझारी।
शाहु समीप हितू सभि कोई। गुरू कोप ते अस गति होई॥ ३९॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे 'चंदू म्रितक' प्रसंग बरननं नाम एकादशम अंशु॥ ११॥

---

1. परछाई देने से। 2. अस्त।

अंशु १२

लवपुरी

दोहरा

घटिका इक तरफति रह्यो गुरू द्रोही म्रितु षाइ।
जेठे कह्यो चंडाल सो 'लेहु ऐंच गहि पाइ ॥ १ ॥

चौपई

बिशटा महिं एंचति ले चलो। वहिर शहिर ते अबि तुम निकलो।
रावी के प्रवाह महिं जाइ। तट थित ह्वै करि देहु बगाइ[1] ॥ २ ॥
गहे चंडाल खैंच करि चले। रावी तीर होइ करि खले।
पापी को बगाइ तन डारा। इस प्रकार गुरु द्रोही मारा ॥ ३ ॥
सिक्खन मन को कोप घनेरे। जबहि अवग्या गुर की हेरे।
गुर द्रोही को पिखि अस हाल। भयो शांति सभि को तिस काल ॥ ४ ॥
श्री हरिगोविंद जोधा बली। जथा जोग कीनी इह भली।
किस के मन महिं हुती न कैसे। शाहु दिवान मारीअहि ऐसे ॥ ५ ॥
अस अनबन को गुरू बनावैं। बनी बात ततछिन बिगरावैं।
इम बहु जसु को कहिं नर ब्रिंद। धंन धंन श्री हरि गोबिंद ॥ ६ ॥
सिक्ख बिलोकति गमने डेरे। पहुंच्यो जेठा गुरू अगेरे।
सुधि दीनसि 'गुर द्रोही मर्‌यो। ऐंचि नदी महिं गेरनि[2] कर्‌यो ॥ ७ ॥
सुनि करि सतिगुरू सभि महिं कह्यो। 'जस कीनसि अघ, तस फल लह्यो।
को गुरू द्रोही सकहि बचाइन। जहिं कहिं पावहि अनिक सज़ाइनि ॥ ८ ॥
करी प्रतग्या पूरी भई। आज पिता को रिण उतरई।
जब लौं पलटा लेउं न हेरें। तबि लौ करज़ हुतों सिर मेरे ॥ ९ ॥
खान पान अरु सुख सो सौवनि। आज करी चिंता इम खोवनि।
मार अचानक प्रान निकारे। हुतो मरन इस करि भठिआरे ॥ १० ॥

---

1. फेंक दो। 2 गिरा दिया।

लिखी बिधाते ने जस रीति। तस जीवन पर होति बितीत।
दिवस आगले हज़रत आयो। मिलि सतिगुर को सीस निवायो ॥ ११ ॥
बैठ्यो चले प्रसग अनेक। पुन श्री अरजन गुननि बिबेक।
'चिरंकाल को है इक पीर। सुनो गुरू जी ब्रिद्ध सरीर ॥ १२ ॥
तिसने सकल बात समुझाई। श्री अरजन की जितिक बडाई।
धंन धंन उर महां गमीर। अज़मत इती, इती बड धीर ॥ १३ ॥
करि चारी मति मोर बिरागी। ढिग हकारि नहिं सुधि संभारी।
तिनको रूप आपको जाना। अखिल दोश बखशावनि ठाना ॥ १४ ॥
दुरबुद्धी मैं दयो गहाइ। तुम को सभि बिधि ते हरखाइ।
रावर की प्रसंनता ठानी। मैं निरदोश भयो तब्रि जानी ॥ १५ ॥
सतिगुरु कह्यो 'करति जस जोइ। तस तिसको फल प्रापति होइ।
तुम ने कुछ गुर द्रोह न धर्‌यो। कहे दुशट के जो कुछु कर्‌यो ॥ १६ ॥
पसचाताप कह्यो पशचात। यांते गुर बखशयो सभि भांति।
प्रान हान तन भा खल काली[1]। सिक्खनि दीनि सज़ाइ बिसाली ॥ १७ ॥
सुनति शाहु कहि 'आछो भयो। गुर पलटा[2] दे करि मरि गयो।'
इत्यादिक कहि गुरू प्रसंग। सुनि करि हज़रत हरखति अंग ॥ १८ ॥
कितिक समैं बैठ्यो पुन गयो। अधिक भाउ गुरू को उर भयो।
श्री हरिगोबिंद रहे लहौर। कितिक काल बीत्यो पुन और ॥ १९ ॥
इह ब्रितंत सभि महिं बिदतायो। चंदू गहाइ शाहु मरिवायो।
श्री हरि गोबिंद के अनुसारी। जहांगीर बहु शरधा धारी ॥ २० ॥
जिन को कह्यो मानि हम लीनि। बावन राव छोरि करि दीनि।
मिहरवान प्रिथीए को नंद। गुरू बडिआई सुनहि बिलंद ॥ २१ ॥
दुखी होइ पछ्तावति महां। प्रथम कहां होई अब कहां।'
झगरति रह्यो न पित कुछ पायो। कितिक काल मैं बैठि बितायो ॥ २२ ॥
हुते सहाइक तबि समुदाइ। गए पिता के संग बिलाइ[3]।
किछ बदला चंदू ने लयो। कीनि अनुचिति गहाइ सु दयौ ॥ २३ ॥
करि कुछ सिहर[4] शाह बसि कीना। डेरे जाइ भाउ महिं भीना।
नगर सुधासर राख्यो हम ते। मालिक हुते न कीने सम ते ॥ २४ ॥
अबि उपाइ क्या करहिं बनाई। जहांगीर की मति ब्रिरमाई।
शाह जहां सों मेल जि करीअहि। तौ सहाइता तिस की धरीअहि ॥ २५ ॥

---

1. कल को ही। 2 बदला। 3. विलीन और विनष्ट हो गया। 4. जादू टोना।

चितवित कौन मिलावहि जाइ। करहि सुनावनि बहु बडिआई।
हरि गुविंद संग जिसको द्वैश। हमरो करहि सुकाज विशेश॥ २६॥
चंदू सुत की सुधि मंगवाई। शाहजहां तक पहुंचै जाई।
सुनि हरिख्यो, हुइ मित्र हमारा। जिस को पित चंदू इम मारा॥ २७॥
इक दुइ वारी दास पठायो। आप मिलनि को ब्योंत[1] बनायो।
पाग दुशाला धन कुछ लीनि। चंदु नंदु को मिलि करि दीनि॥ २८॥
दोनहु गुरु की निंद बखाने। महिमा लखि न सकहि अनजाने।
शाहु जहां सों मोहि मिलावो। जतन करहु जैसे रिपु घावों॥ २९॥
हुती जथा मति दुशट बडिनि की। गुर संगि द्रोही तथा दुहिन की।
चंदू प्रिथीआ बैर बिसाला। श्री अरजन संग किय सभि काला॥ ३०॥
चंदु नंद अरु प्रिथीआ नंद। भे रिपु तिम श्री हरिगोबिंद।
केतिक दिन महिं ब्योंत बनायो। शाहुजहां संग जाइ मिलायो॥ ३१॥
'सुनहु शाहु सुत! क्या हम कहैं। चिरंकाल को न्याव न लहैं।
हमरो उनको एक पितामा। मम पित बडो चहिति सभि सामा[2]॥ ३२॥
इस को पित लघु सभि किछु लीनि। पुरी निकासे छल बल कीनि।
हमरो कहिनहार नहि कोई। मैं चदू नंद न पहुंचहि दोई॥ ३३॥
कहि कै कौन शाहु समुझावै। नीकै लखहि त हमहिं दिवावै।
सतिगुर तुमरे वनहिं सहाइ। गह्यो अलंब आप को आइ॥ ३४॥
कर्यो तनक रुख कहि सुत शाहू। अवसर पाइ कहैं पित पाहू।
अपर सुभाइ बिखै पुन पर्यो। मिहरवान पुन आत्रनि कर्यो॥ ३५॥
चितवति रिदे, मिलहि बहु बारी। होइ शाहु सुत साथ चिनारी।
रुत बसंत आई हुलसंति[3]। बरन बरन सुमन सुबिगसंति॥ ३६॥
गई सीतता उशन उपाई। बन उपवन खुशबोइ बधाई।
जहांगीर सिमरी कशमीर। जहि घाम न, अति सीतल नीर॥ ३७॥
जहिं सुदर बागनि लगि मेवे। भागवान इस रितु महिं सेवे।
कर्यो मनोरथ अबि चल जावौं। बारश भए देश इस आवौं॥ ३८॥
इम निशचै करि इक दिन माहू। आयो श्री हरिगोबिंद पाहू।
शाहुजहां नंदन ले साथ। टेक्यो आनि दुहूं पग माथ॥ ३९॥
सादर सतिगुर बोलि विठाए। प्रभु दिशि के सुप्रसंग चलाए।
पुन हज़रत कहि सुन गुर पीर!। मैं अब चल्यो चहति कशमीर॥ ४०॥

1. साज़िश, योजना। 2. सामान। 3. उल्लासवंती।

जिम अबि मिहरवानगी धरिहो। मम पाछे इम ही हित करिहो।
शाहु जहां सेवा तुम ठानै। रहै इहां सभि बिधि को जानै ॥ ४१ ॥

मो पर क्रिपा करति जिस रीति। इस पर भी तुम ठानहु नीति।
श्री हरिगोबिंद बाक बखाना। श्री गुरू-घर है मुकर समाना ॥ ४२ ॥

जथा ग्रापनो बेस बनावै। तिस प्रकार ही तिसै दिखावै।
जिम तुम हम सों, रहिं हम तुम सों। तिम हम रहिं, जिम इह रहि हम सों ॥ ४३ ।

अबि कशमीर जाहु सुख हेतु। जहिं, सीतलता बरफ समेत।
करहु सैल[1] जहिं घाम न कोई। बन उपवन सुमननि जुति होई ॥ ४४ ॥

इम लवपुरि महिं ठानहिं बासा। नहीं आपने जाहि अवासा।
इहां प्रमेशुर सिमरहिं वैसे। तिम हम रहिहैं तुम ढिग जैसे ॥ ४५ ॥

इत्यादिक बच अपर बखाने। गयो शाहु पुन अपन सथाने।
शाहजहां समुझावनि कीनि। 'इह पीरनि के पीर प्रबीन ॥ ४६ ॥

करहु मान रही अहु अनुसारे। मानो तिम जिम गिरा उचारें।
मम आवति लौ सुधि सबि लीजै। मूल न कवहुं अवग्या कीजै ॥ ४७ ॥

इत्यादिक सभि करि तकराई[2]। अपर सौंपि सभि थाईं।
जहांगीर कशमीर पयाना। लशकर कुछक संग प्रस्थाना ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे 'लवपुरि' प्रसग बरननं नाम दवादशमों अंशु। १२।

---

1. सैर। 2. सावधानी।

अंशु १३

मिहरवान

दोहरा

जहांगीर कशमीर गा सतिगुर बसे लहौर।
इक आवति इक जाति हैं संगति ठौरनि ठौर ।। १ ।।

चौपई

श्री गुर हरिगुबिंद सुनि पायो। 'मिहरवान लवपुरि महिं आयो।
कतिक दिन बीते इह थाने। पिता समान बैर को ठाने।। २ ।।
गुरु बिचारि उर, तुरकनि पास। झगरति करति पुकार प्रकाश।
जिस ते माथे चहैं टिकावनि। तिह समीप क्या न्याव चुकावनि ।। ३ ।।
सुरपति आदि निमहिं गुरगादी। नीको नाहिं न होवनि बादी[1]।
याते मेल करहिं, सुख पाइ। निज निज थान रहैं हरखाइ।। ४ ।।
इम बिचार करि भेजे दोइ। पैड़ा अपर पिराणा जोइ।
'बूझहु जाइ मेल की बाति। नाहक बाद करहु बख्याति ।। ५ ।।
सुनि दोनहु तबि चलि करि गए। खोज्यो डेरा पहुंचति भए।
बैठे निकट प्रसंग चलायो। 'श्री हरिगोबिंद हमें पठायो ।। ६ ।।
बैर भाव को चहति बिसारे। करति जु बडे[2] प्रलोक सिधारे।
हासल[3] कछु न बादि महिं होवा। रहे पुकारू जसु को खोवा ।। ७ ।।
तुम हम मिलि कै अबि इक होइं। नीके जानहिंगे सभि कोई'।
मिहरवान सुनि कै रिस धारी। द्वैखक[4] गिरा कठोर उचारी ।। ८ ।।
'पिता करति जिम छल को आगे। तिसी रीति महिं अबि सुत लागे।
कहि कहि मधुर करहिं बिरमावन। लीनि छीनि सभ कुछ रचि दावन[5] ।। ९ ।।
शाहु ग्राम दीनो तहिं बैसे। दिवस गुज़ारहिं जैसे कैसे।
जिस दिन होवै न्यांव हमारा। लेउं आदि ते गिन धन सारा ।। १० ।।

1. झगड़ा करने वाला। 2. पुरखा, बजुर्ग। 3. प्राप्त। 4. द्वैष की वानी।
5. दांव पेच रच के।

आयुध धारी भा अबि जोधा। क्यों जानहि सो हमरो क्रोधा।
हम भी गहिं जबि अपने हाथ। करें मेल तबि शसत्रनि साथ॥ ११॥
अंत समै पित मुझ उपदेशा। 'लेहु पलटा रचि द्वैश विशेशा।
तिन लघु कर्यो बिसाल धरौं मैं। कि बातनि सों मेल करों मैं॥ १२॥
सुनि पैड़े पुन बैन बखाना। 'नहिं मन ठानहु क्रोध महाना।
बिशनु, राम, नरसिंह, गुविंद। सो सरूप श्री हरि गोबिंद॥ १३॥
जो लैं करि सभि जगत विशेख। सुपति जोग निंद्रा पर शेख[1]।
मधु कैटभ मरदन जो रूप। सो श्री हरि गोविंद अनूप॥ १४॥
सति चेतन आनंद प्रकाश। सभि महि व्याप्यो जथा अकाश।
सो निरकार[2] धर्यो आकार। श्री हरि गोबिंद रूप उदारि॥ १५॥
जिस को जोगीशुर धरि ध्यान। भुगतहि सकल जिसी को दान।
शेश, गनेश, दिनेश, महेश। जिस को सिमरहिं नाम हमेश॥ १६॥
सो सरूप गुरदेव बिचारो। तजहु द्वैश अबि निकट सिधारो'।
एव प्रशंशा को सुनि करिकै। जरी न मिहरवान जरि बरिकै॥ १७॥
छिद्रन खोज खोज करि कह्यो। 'सभि जग महि तुमरो गुर लह्यो।
प्रथम धर्यो सुलही को त्रासा। छोरि सुधासर ग्राम सु बासा॥ १८॥
तहिं जनमयो अबि जो बड जोधा। क्यो न करति पित की गति बोधा।
छल करि मम पित सो मिलि गयो। आनि सुधासर पुन घर कयो॥ १९॥
बसति बसति अपनो बल पाइ। दे दे रिशवत सिख अपनाइ।
हुतो सुभाव पिता को भोरा। लख्यो न कपट कूट को जोरा॥ २०॥
अपर कहां लगि कहौं खुटाई। अंत समे कहु क्या गति पाई।
चंदु बिलंद सज़ाइनि दीनि। पाइ कशट तन तजिबो कीनि॥ २१॥
कैदि गुआलियर गमन्यो एहु[3]। क्योंहूं निकस्यो आयो ग्रेहु।
कहूं न अज़मत[4] किस दिखराई। परालबध ते सभि बनि आई॥ २२॥
जिन ढिग शकति सु कैसे कहैं। किम कमता अपनी जग चहै।
बकति जिनहु को हरि अवतार। करहिं बडाई खाहि अहार[5]॥ २३॥
श्री नानक की चाहति रीस। भे अवतार जु पूरन ईश'।
सुनति पिराणे बैन बखाने। 'एक जोति खट तन गुर ठाने॥ २४॥
अहै गुरनि की इक बडिआई। अजमति देहिं न जे सिर जाइ।
श्री अगद गुरु नानक रूप। तुम मानति कै नहीं अनूप॥ २५॥

---

1. शेष नाग। 2. निर+आकार। 3. यह (हरिगोबिंद)। 4. शोभा, करामात।
5. आहार, खाना।

सो जाटनि मिलि ग्राम निकारे। निकसि गए नहि शकति दिखारे।
इम श्री अमर सही उर लाति। कशट लह्यो बय बड ब्रिध गात॥ २६॥
गोइंदवाल छोरि करि गए। पुन भाई ब्रिध ल्यावति भए।
जो तुम दूखन बचन बखाना। सतिगुर मत इहु भूखन जाना॥ २७॥
गुरु सलिता-पति सम गंभीर। को तिन थाहु लहै अस धीर।
अचल मेरु सम कौन चलावै। जिनकी गति लखी न जावै॥ २८॥
बूंदक अज़मत है जिस पास। करहि बिदत जग की धरि आस।
ओछे नर तिन को बडिआवें[1]। बड समुंद्र की सार न पावें॥ २९॥
अबि लौ गुरु गरबहिं बडिआई। बडे बैस करि तुमहि लखाई।
मानहु कह्यो मेल को कीजै। वैर खोइ सुख अरु जसु लीजै॥ ३०॥
जानहिं 'हमरी होइ छुटाई। करहिं पुकार तुरक अगवाई।
नाम बडिनि को सभि महिं अहै। श्री गुरू रामदास के कहैं॥ ३१॥
इम लखि, लाज धरहि लखि मनहीं। तुमरे संग मिलिनि चहि मनही'।
मिहरवान बोल्यो रिस पागे। 'उठहु क्यों न मम नेत्रनि आगे॥ ३२॥
अपनी कुशल चहहु चलि जावहु। नाहक बीच मार किम खावहु'।
सुनति उठे पैड़ा रु पिराणा। रिसे न, गुर को त्रास पछाणा॥ ३३॥
चलि श्री हरि गोविंद ढिग आए। मिहरवान को कह्यो सुनाए।
तबि गुरु कह्यो 'आप हम चलैं। लेहिं निहोर[2] प्रथम, जे मिलैं॥ ३४॥
जेठे कह्यो 'न आप पयानो। मिहरवान प्रिथीए सम जानो।
बडे गुरनि बहु करे उपाइ। बिनती कहि कहि रहे पठाइ॥ ३५॥
रह्यो बिपरजै[3] समुझति सोई। 'मुझ ते डरति दीन मन होई।
सुलही सहत म्रितक हुइ गयो। मन को हठ नहि छोरति भयो'॥ ३६॥
कह्यो गुरू 'जेठा! सच कहैं। तऊ बारि इक, हम भी लहैं।
जे नहि मानहि हुइ सम धूरति। रहै वंस लगि बहुत बिसूरति॥ ३७॥
हम को उचित निहोरनि अहै। सो बड दुखी पुकारू रहै।
पुरी पितामे की तजि गए। निंदा करति रहति हित हए[4]'॥ ३८॥
इम कहि कितिक सिख संगि लीनि। गए धीर गुरु परम प्रबीन।
आगै मिहरवान अभिमानी। गुर गादी पर निज को जानी॥ ३९॥
कितिक रंक पिख निकट बिठाए। थिर्‌यो प्रयंक आप उच थाए।
पिखे दूर ते हरि गोबिंद। आवति हैं गज मसत मनिंद॥ ४०॥

---

1. बडाई करें। 2. मिन्नत समाजत। 3. विपर्य। 4. हेय, प्रेम हानि।

सुंदर डील बिलंद अनंदति। भुजा प्रलंब करी-कर[1] निंदति।
खड्ग सिपर कट निकटि बिराजति। शमश[2] बदन तम ससि को लाजति ॥ ४१ ॥

राज चिन्ह सभि अंगनि बिखै। जौ लगि दूर रहे तन पिखै।
आए निकट गयो रुख फेरि। उठी करक सुंदर दुति हेरि ॥ ४२ ॥

सिख रंकन को प्रथम सिखायो। 'उठहु न बंदहु पिख इह आयो।
आदर हेतु न बोल्यो कोई। रहे दबक जड़्ह सिर तर होई ॥ ४३ ॥

मिहरवान को करिकै बंदन। बैठि गए गुर दोख-निकदन।
सिख ते अग्र प्रशादि धरायो। रह्यो मौन जनु बोल न आयो ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रास 'मिहरवान' प्रसंग बरननं नाम षोदशपो अंशु ॥ १३ ॥

1. हाथी की सूंड। 2. दाढ़ी।

अंशु १४

मिहरवान को प्रसंग

दोहरा

मिहरवान परयंक पर लद्यो अधिक हंकार।
श्री हरि गोबिंद छिमानिध बैठे तरे निहार ॥ १ ॥

चौपई

सहि न सक्यो बिधीऐ तबि कह्यो। 'उचितानुचित नहीं इन लह्यो।
ऊपर बैठहु क्यों थिर तरे[1]। आप शिरोमणि सभि जग करे ॥ २ ॥
पीरन पीर मीर सिर मीर। रावर ते को ऊच न धीर'।
सुनि सतिगुर ने बाक बखाने। 'हम पित ते इस पिता महाने ॥ ३ ॥
अरु इह बय महिं अहैं बडेरे[2]। हम जनमे पीछे सु छुटेरे।
ऊचे उदित बडो इह भाई। हम नीचे बैठनि बनि आई ॥ ४ ॥
सतिगुर बच तूशन हुइ रहे। दुखति बिअदबी[3] नहि सिख सहे।
कितिक बेर बोल्यो नहिं जबै। म्रिदुल गिरा श्री गुर कहि तबै ॥ ५ ॥
'करहु बदन सनमुख रिस छोरि। सुख के बाक कहौ मम ओर।
क्यो पुकार करते तुम फिरो। बसो सुधासर पुरि महिं थिरो ॥ ६ ॥
घर धन भूम पदारथ जोइ। कहो आप हम देवैं सोइ।
दीन बनहु क्यों तुरक अगारी। एको लाज हमारि तुमारी ॥ ७ ॥
गुरू पदारथ सगरे दीने। क्यों न मिलहु भुगतहु सुख पीने।
इक तो जग महिं अपजस पावहु। दूजे हम सों बैर बढावहु ॥ ८ ॥
तउ न अयो कुछ हाथ तुहारे। पिता आदि ते लेहु बिचारे।
बीत गयो हम ही चिर कालू। रहे बधावति बैर बिसालू ॥ ९ ॥
औगुन तिस महिं भए अनेक। करि देखहु निज रिदे बिबेक।
सुनि करि मिहरवान बच पेला[4]। हमरो तुमरो क्योंहुं न मेला ॥ १० ॥

---

1. तले (नीचे) ठहरे। 2. अधिक बड़े। 3. निरादर। 4. बात उलटाई।

तुम भी साच कहति हो तावति। कोई न आंच लगी उर जावति।
सुख महि सुततहु चित न काई। नहीं पिता ते कुछ बनि आई ॥ ११ ॥
कहि भेज्यो मुझ प्रति जबि अंत। हे सुत! जानहु सकल ब्रितंत।
ज्यों क्यों करि पलटा लिहु मेरो। सभि जग गुरता अपनी हेरो ॥ १२ ॥
सुत पित को कहि कैद करावैं। कै उपाइ ते प्रान गवावैं।
वसतु पितामे की लिहु सारी। तौ सपुत्र होवैं सुखकारी ॥ १३ ॥
प्रान जानि लौ मिलहुं न कबै। इह उपदेश धरहुं बय सबै।
अबि मैं लागयो रचनि उपाइ। तुमहिं सुधा सर ते निकसाइ ॥ १४ ॥
परहु कैद कै जाहु पलाई। तबि सपुत्रता मुझ बनिआई।
महापुरख पूरन पित मेरो। कहे बाक हुइ साच बडेरो[1] ॥ १५ ॥
अंत समें महिं जथा उचारा। सो शुभ मैं लखि अंगीकारा।
पिता पुत्र तुम लाज न धरिहो। मेल करनि बहु बारि उचरिहो ॥ १६ ॥
पुरी पितामे की सभि छीनि। लगे कहावनि गुरू प्रबीनि।
पिता क्रिपाल न मन नहिं ल्याइ। न तु सुलही ढिग देति गहाइ ॥ १७ ॥
अबि मैं करों संघारनि तोहि। नीको मेल तिसी दिन होहि।
उर कपटी बाहर मधुराई। इम तुम पिता सीख सो पाई ॥ १८ ॥
सुनि सिखनि भा क्रोध बिसाला। कहिर गुरुनि बडि निंद कुचाल।
जेठा सिख पिराणा आदि। उदति भए करिबे हित बाद ॥ १९ ॥
जे लरि परहि त इस गहि लैहैं। नीकी सीख बनाइ सु दैहै।
कुछ बोलनिको जबिहूं लागे। निशठुर बाक कोप महिं पागे ॥ २० ॥
श्री गुर हरि गोबिंद हटाए। 'हम चलि करि डेरे इस आए।
हरखावनि कं कोप उपावनि। नहि तुम कीजहि कछु अलावन ॥ २१ ॥
इम दासनि को बरजि बडेरे। पकरे आप चरन तिस केरे।
'भ्राता! वय[2] महिं जेशट अहै। उतर तोहि समुख नहिं कहैं ॥ २२ ॥
तऊ बिचारहु त्यागहु क्रोधू। होति क्रोध ते नर बिन बोधू[3]।
कलमल अरु कलहा को मूला। क्रोध धरम ते करि प्रतिकूला ॥ २३ ॥
क्रोधी परहि नरक महिं जाइ। करहि अनुचिती क्रोधी धाइ।
पुरि महिं सदन आपने लीजै। अपर वसतु ह्वै सो कहि दीजै ॥ २४ ॥
कारनि रिस को देहु बताई। तिसते हटहिं तुमहि हरखाई।
पाछल बात न रिदैं बिचारो। जिम हुइ शांति तथा निरधारो' ॥ २५ ॥

1. अधिक बड़ा। 2. अवस्था। 3. बुद्धि।

सुनि सिखनि दिशि नैन तरेरे। मिहरवान करि क्रोध घनेरे।
'क्यों न जाति उठि कछु हुइ परैं। इह गवार करि द्रिग ते परे॥ २६॥
न तु मिलिबो अबि अस हुइ जाइ। रुंड मुंड धर परे दिखाइ।
आगै धुखति[1] रहति नित छाती। अबि बर[2] परैं होहि बख्याती॥ २७॥
इत्यादिक कहि अपर कठोरा। मुख द्रिग अरण लरनि को तौरा।
खड़ग मुशट पर धरि करि करको। गुरहि दिखाइ बीरता बर को॥ २८॥
धरम धुरंधर धीरज धारी। गुरू छिमा-निधि कीनि बिचारी।
कहति भए 'हम इम चित चहैं। गुर की कुल सभि इक सम रहैं॥ २९॥
परारबध खोटी हुइ ऐसे। तौ किस को बसि चलहिन कैसे।
स्राप गुरू कहु होवहि साचे। पित जुति तुम जिम चिंता राचे॥ ३०॥
तथा बंस नित चिंता लहै। पर-प्रभाव पिखि करि उर दहै।
जिन को अबि बच कहैं गवार। तुम कुल हुइ सिखनि अनुसारि॥ ३१॥
इनकी पाहुल ले सुख पावैं। चाकर हुइ जीवा सु चलावैं।
बनि बनि दीन मिलहि इन संगि। पाइं अनादर घर घर मंगि॥ १२॥
हमह निहोरे[3] कियो न मेल। होइ भविख्यत महिं अस खेल।
मिल्यो चहै गुरु घर सों तबै। सिक्ख हटावहिं मिलहि न सबै॥ ३३॥
चाकर बनहिं कि पाहुल लेंहि। तबि इह सिक्ख दरब को देंहिं।
इम दे स्राप उठे गुर पूरे। जिन के अंग सुहावति रूरे॥ ३४॥
बाध[4] घाट सो बोलति रह्यो। बहुर न उतर श्री गुरु कह्यो।
वडे वडाई पाइ निवंते। जिम तरु झुकहि जि हुइ फलवंते॥ ३५॥
बधै बेणु[5] सिर ऊचै राखै। छिनक बिखै जर बर हुइ राखे।
जिम गुरगिर[6] शिर परि त्रिण लोटे। बडे सो बडे छोट सो छोटे॥ ३६॥
अलप छांग गै सिर चढि गयो। घटयो न गज, अज बधति न भयो।
तिम श्री हरिगोबिंद किय बंदन। महिमा घटी न कुछ गुरु नंदन॥ ३७॥
सहिज सुभाइक सनै सनै चलि। आनि बिराजें निज निवेंस थलि।
चितवति मिहरवान लघुताई। 'मिले प्रथम ही लख्यो सुभाई॥ ३८॥
जनु पाटी निज पिता पढाई। द्वैश रचनि की चातुरताई।
कहनि कठोर, धरनि हंकार। कपट करनि महिं बुधि उदार'॥ ३९॥
पीछै मिहरवान वड फूला। गरब हिंडोरे चढि जनु झूला।
निज सिक्खनि सों महिमां कहै। 'हम तो बंदनीय गुर अहै॥ ४०॥

---

1. सुलगती। 2. जल बल पड़े। 3. मनाना। 4. घटा बढ़ी, बुरा भला। 5. बांस। 6. गुरु गिरि, भारी पहाड़।

दे दे रिशवति दरब मसंद। इह बनि बैठे गुरू बिलंद।
करहिं अग्र पग नमो हमारे। इह महिमा न लखहिं सिख सारे॥ ४१॥
को को लखहि सु हम ढिग आवै। पिखा पिखी तिस ढिग चलि जावैं।
मेलि करनि चाहति इत आयो। 'बात न बिगरहि' इन लखि पायो॥ ४२॥
शाहुजहां सो मेलि हमारा। सुन्यो किसी ते उर डर धारा।
हम ऐसे क्या हैं अनज़ान। बनति बात शुभि, करहि जि आन॥ ४३॥
हज़रत सुत मम काज सुधारहि। तुरत बनहि, ढिग पिता उचारहि।
किधौं आप ही देहि बनाइ। हरि गोबिंद को डर उपजाइ॥ ४४॥
कहे शरीक बरों पुरि कैसे। आछी बात होति नहिं ऐसे।
अपने जोर साथ सभि लैहौं। सदन पितामे लै सुख पैहौं॥ ४५॥
सुनि करि दास कहे कर बंदि। 'तुम सतिगुर के पुत्र बिलद।
सभि बसतनि के हो अधिकारी। इह तो खिलकत जानहि सारी॥ ४६॥
इत्यादिक कहि कहि हरखावै। लखहि कि गुरुता हम ढिग आवै।
दिन प्रति अधिक कुटिलता धारी। भयो नहीं सतिगुर अनुसारी॥ ४७॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे 'मिहरवान को प्रसंग' बरननं नाम चौदशमो अंशु॥ १४॥

अंशु १५
तुरंग प्रसंग

दोहरा

इस बिधि बसि करि लवपुरी केतिक मास बिताइ ।
संगति आवहि दरस को प्रथम सुधासर न्हाइ ॥ १ ॥

चौपई

श्री हरिसंदर करि करि दरशन । सुनि पुनि आइ गुरू पग-परसन ।
बली तुरंग शसत्र बहु आनहिं । सतिगुर हेरि खुशी तिन ठानहिं ॥ २ ॥
चारों चक्कर[1] केर मसंद । आनहिं गुर को दरब बिलंद ।
अनगनि भीर ई नित आवै । वसतु अमोल अकोर चढ़ावैं ॥ ३ ।
जहि कहिं ते हय आछो टोरि । दे दे दरब ल्याइ गुर ओर ।
शसत्र पुलादी तीछन महां । बरछे, बान आनि[2] जहिं कहां ॥ ४ ॥
धनुख तुफंग[3] मोल बड देति । अरपि गुरू ढिग खुशी सु लेति ।
देश बिदेशनि चारहुं दिशि मैं । छोटे बड़े नगर किस किस मैं ॥ ५ ॥
सतिगुर की सिखी जग मांही । जहिं नहिं हुइ अस थल को नाही ।
जहि कहिं सुजसु-चंदोआ तन्यो । नहि को अस जिन सुन्यो न भन्यो ॥ ६ ॥

दोहरा

सत्ता अर बलवंड जुग हुते रबाबी पास ।
करति कीरतन राग धुनि सभि उर देति हुलास ॥ ७ ॥

चौपई

पहुंचयों अंत समां तवि तिन को । लवपुरि त्याग दीनि निज तन को ।
अपर रबाबी बाबक नाम । जो गावति रागनि अभिराम ॥ ८ ॥
राख्यो तबि हज़ूर ने पास । लगहि दिवान सु राग प्रकाश ।
सुनि प्रसंन ह्वै दें बड भौज[4] । हरखति दरब सरब दे फौज ॥ ९ ॥

1. चारों दिशाओं, समस्त प्रदेश 2. लाते थे 3. बंदूक 4. खुशी में भेंट किया धन ।

केतिक मास बिते सुधि आई। 'कुगा रिढ़्यो'[1] सभिनि मुख गाई।
जहांगीर परलोक सिधारा। शाहुजहां सभि राज संभारा ॥ १० ॥
सभि देशनि पर हुकम चलायो। जहि कहिं उमरावनि गन आयो।
देशपती अरु दुरग –पती सबि। आनि मिले उपहारनि दे तबि ॥ ११ ॥
ब्रिद तुरंग मतंग सु आवैं। जहिं ते चाहै तहिं मंगावैं।
केतिक दिन बीते इस भांति। शाहुजहां जहिं कहिं बख्याति ॥ १२ ॥
सगरो बंदुवसति करि लीनि। होए अलप बिसाल अधीनि।
तिम ही गुर की संगति आवै। शसत्र तुरंग दरब अरपावैं ॥ १३ ॥
काबल महिं इक सिख सुजाना। धन गन ते बिवहार महाना।
गुरू दसौंध निकारति रह्यो। लाभ बिसाल बारि इक लह्यो ॥ १४ ॥
गुर को दरब भयो समुदाह। तिन हजूर को सुन्यो सुभाइ।
'चंचल बली तुरंग बिलोकहिं। ले सिख ते करि देति अशोकहिं ॥ १५ ॥
अधिक शौक होवहिं असवार। करहिं अखेर केर बिवहार।
गुर को दरब ब्रिद मैं जोगा। तांते लेउं टोरि[2] करि घोरा ॥ १६ ॥
दूरि दूरि लगि खोजनि कीनसि। बडे मोल को बाज[3] न चीनसि।
बलख बुखारे महिं नहिं पायो। आगै रूम देश लगि आयो ॥ १७ ॥
तहिं कित सुन्यो अराकी घोरा। जिसको मोल नहीं किछु थोरा।
बूझि बूझि सभि ते सुधि तांकी। जाइ बिलोक्यो तुरंग अराकी ॥ १८ ॥
हाथ फेरि बहु सुंदर हेरा। गुर हित चाह्यो सिख घनेरा।
कह्यो 'मोल मुझ देहु सुनाई। हम लेवहिं धन दे हरखाई'। १९ ॥
सुनति सुदागर ने तिस कह्यो। 'लेवे उचित नहीं तूं लह्यो।
इस को पातिशाहु को लेवै[4]। अनगन[5] धन मन गिनहि न देवै ॥ २० ॥
सिख ने कह्यो 'वाक फुर तोरा। सच्चा पातिशाह ले घोरा।
गिनहि न धन मन करि कै जोइ। इह तुरंग लेवति है सोइ ॥ २१ ॥
कहो मोल हम लें सुनि काना'। तबि सौदागर साच बखाना।
'मोल सवा लख इस को पावै। लाख दिए बिन हाथ न आवै' ॥ २२ ॥
सुनि सिख आनंद करि उर मांही। गुर को दरब इतो हुइ नांही।
साचो पातिशाहु ले अस को। मै कहि दियो बाक अबि इस को ॥ २३ ॥
आगै मैं जु करौं बिवहार। तिस महि लेवों शेख[6] बिचार।
इह मन ठानि लाख ही दीना। घोरा खोलि तहां ते लीना ॥ २४ ॥

---

1. अरथी-यात्रा का गीत – विशेष जिसका भाव है 'मनुष्य का शरीर उस पात्र (कुप्पे) के समान हैं जो लुढ़क कर रीता हो जाता है। 2. ढूंढ टटोल कर। 3. बाजि, घोड़ा। 4. कोई। 5. अगणित। 6. शेष की क्षतिपूर्ति।

नटबाज़ी जिम बाज़ी चाला। फांदति चंचल बली बिसाला।
ज्यों क्यों करि काबरु महिं ल्यायो। पट पूरान सों राखहि छायो ॥ २५ ॥

गुर दरशन को अधिक उमंगति। काबल आदि मिली बहु संगति।
मद्र[1] देश को आवनि लागी। ले धन आदि वसनु अनुरागी ॥ २६ ॥

ले तुरंग सभि संग मिल्यो है। अधिक छुपावति पंथ चल्यो है।
'नहिं उमराव देखि करि लेय। शाहु निकट सुधि को नहिं देय ॥ २७ ॥

गुर ढिग पहुंचहि बिघन-बिहीन। इस हित जतन अनेकसु कीन।
अटक सिंध नद तरी चढावा। तट उरारले[2] तबि उलंघावा ॥ २८ ॥

इक उमराव पिशौर सिधारा। सुन्दर बाजी चपल निहारा।
तहां तेज़ ऐसे कुछ भयो। रोक्यो जाइ न बहु बल कयो ॥ २९ ॥

सने सने सादर कर फेरि। कह्यो टिकावनि घोरा फेर।
पिखि उमराव रिदा बिरमायो[3]। मनहुं कमल परि भवर लुभायो ॥ ३० ॥

बूझनि कीनि 'अहै किस घोरा। कहिं ते आइ. जाइ किस ओरा।
'श्री गुरु हरि गोबिंद बिसाला। कह्यो खरीदनि, तिन ढिग चाला' ॥ ३१ ॥

मूरख मन उमराव बिचारा। शाहु उचित हय रुचिर निहारा।
चढ़े हरख करि मोहि सराहै। किम असु[4] लेइ पुचावों[5] पाहैं ॥ ३२ ॥

सो भी रहे शाहु के पासि। होहि न अस रिस करहि प्रकाश।
यां ते लिख भेजों सुधि तांही। लेहि तुरंग हुइ चित महिं चाही ॥ ३३ ॥

अदब करहि तो नाहिन लेवै। मम सिर दोश न किम को देवै।
इम बिचार खत को लिखि भेजा। नर को कह्यो तुरत ही ले जा ॥ ३४ ॥

'हरखहि शाहु दरब को दैहै। चढि तुरंग पर अधिक रिझैहै।
मजल[6] बिसाल पंथ सो चाला। पहुंच्यो शाहु पास तिस काला ॥ ३५ ॥

मिलि किह सों ढिग लिख्यो पठायो। पठि करि बहुत पिखनि उमगायो।
नर को बूझयो निकटि हकारे। 'कहिं आवनि अस तुरंग उदारे ॥ ३६ ॥

दुइ त्रै मजल पिछारी मेरे। आवति चल्यो गुरु के डेरे।
बहु संगति जिस के संग आवति। मैं सुधि हित पहुंच्यो उतलावति ॥ ३७ ॥

सुनति शाहु कुछ सैन पठाई। पठि उमराव सु लयो मंगाई।
परम दुखी सिख बसि नहिं चाला। दियो तुरंग सशोक बिसाला ॥ ३८ ॥

---

1. पंजाब 2. उरार वाला तट 3. रीझ गया 4. अश्व, घोड़ा 5. पहुंचाऊं पास। 6. मंज़िल।

सभि संगति को त्याग पिछारी। सुधि दैवे हित धाइ अगारी।
लवपुरि महिं सतिगुर के डेरे। पहुंच्यो दिल दिलगीर घनेरे ॥ ३९ ॥
हाथ जोरि करि बदन ठानी। समुख खरो द्रिग निकस्यो पानी।
कह्यो न जाइ बाक मुख बाहर। करदम-शोक धस्यो हुइ ज़ाहर ॥ ४० ॥
परख्यो श्री हरि गोबिंद भाखा। 'कहु सिखा उर की अभिलाखा।
दीन बदन चितातुर हेरा। को कारज बिगर्यो बडि तेरा ॥ ४१ ॥
सुनि सिख ने धरि करि उर धीर। नीठ नीठ बोल्यो गुर तीर।
'गुर जी! बिगर्यो काज बिसाला। जिम हित जतन कीनि चिरकाला ॥ ४२ ॥
बलख बुखारा आदिक खोजा। करति तलाश बिते बहु रोज़ा।
करि कै प्रेम रूम लगि गयो। जिस हित दरब लाख गिन दयो ॥ ४३ ॥
चंचल बली बिलंद तुरंग। आन्यो बड उपाइ के संग।
जीरन बसत्रन रह्यो दब्रावति। संगति संगि लिए मैं आवति ॥ ४४ ॥
पातशाहु को सुधि किन दीनसि। पठि कुछ सैन छीन सो लीनसि।
बस नहिं चल्यो खरो तहिं रह्यो। तिस ते चित शोक बहु लह्यो ॥ ४५ ॥
नहीं भावना पूरनि भई। मन की मन ही महिं रहि गई।
तिस पर गुरु चढाइ नहि हेरे। महां कशट चित उपजति मेरे ॥ ४६ ॥
काबल पुरि को मैं नित बासी। करौं बिहारि अधिक धन पासी।
दरब दसौंध केर बहु होवा। मैं बिचारि तबि चित में जोवा ॥ ४७ ॥
जिस ते गुरु प्रसंन चित होइं। ऐसी बसतु खरीदौं कोइ।
बहु सिक्खनि ते सुन्यो सुभाइ। चंचल बाजी ते हरखाइ ॥ ४८ ॥
याते खोजि देश महिं आना। तिन छीनति को बैन बखाना।
श्री गुरु हरि गोबिंद दे मोल। मंगवायो बहु देशनि टोल ॥ ४९ ॥
किनहुं न मानी, कहै सु कौन। लियो शाहु अगु ठानी मौनि।
हुइ बिन बस मैं संकट लह्यो। धाइ प्रसंग आप सो कह्यो ॥ ५० ॥
सिख को पिखि करि प्रेम घनेरा। धीरज बाक भने तिस वेरा।
'जो तुरंग सतिगुर को अहै। अपर मूढ ढिग क्योंहूं न रहै ॥ ५१ ॥
तोर कामना पूरन होई। धरहु बिखाद न मन महिं कोई ॥
कितिक बिते दिन हम ढिग आवै। क्याहुं न दुशट अरूढ़ान पावै ॥ ५२ ॥
तो हरखावनि हित हम लैहैं। तुरंग अरूढि फंदाइ पलैहैं।
करहिं कामना पूरन तेरी। धरि निशचै लिहु लोचन हेरी ॥ ५३ ॥
सुनि सिख पाइ अनंद बिलंद। बंदति बारि बारि कर बंदि।
गुरू समीप रह्यो चिरकाला। हेतु बिलोकन तुरंग बिसाला ॥ ५४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे 'तुरंग प्रसंग' बरननं नाम पंचदशमो अंशु ॥ १५ ॥

अंशु १६

काज़ी ते घोरा लेनि को प्रसंग

दोहरा

रिदे बचारयो सतिगुरु 'शाह-जहां मति मंद ।
करी अवग्या अदब बिन लीनि तुरंग बिलंद ।। १ ।।

चौपई

आज लीनि असु[1] कीनि कुचाली । अपर बसतु छीनहि रिखि काली ।
सिक्खनि उर शरधा मिटि जावै । वसतु अमोलक बहुर न ल्यावैं ।। २ ।।
जानैं 'वली तुरक ले छीनि' । परहि त्रास बिनु अस प्रबीनि ।
हम सिक्खी को करहिं ब्रिथारनि । मिटहि, जबहि पिखि लें आस कारनि ।। ३ ।।
इसके संग न बनहि हमारी । बिगर परहि औचक किस बारी ।
अपनो घोरा लैहैं जबै । इस को सग त्याग दे तवै ।। ४ ।।
इम सतिगुरु उर महिं ठहिराई । शाह जहां अस्व लियो मगई ।
हेरनि हेत प्रतीखति रह्यो । आयहु निकट हरख बहु लह्यो ।। ५ ।।
बसत्र उतारि आप कर फेरा । सकल बनाउ शुभति ग्रति हेरा ।
चढ़नि हेतु जबि उद्दम कर्यो । गुर फेर्यो मन, ततछिन मुरयो ।। ६ ।।
कह्यो 'थकति हय आयहु दूरि । दिहु बिसराम जीन बनि रूर ।
दो इक तीन दिवस महुं चरैं । तावति श्रम सगरो परहरै ।। ७ ।।
सुनि उमराव सराहनि ठाने । 'रावर हो नित भाग महाने ।
उचित आप के सभि चलि आवै । को किम करहि किकहूं दुरावै ।। ८ ।।
देखति कहां तुरंग सुहाए । कहां वसत्र जीरन तन पाए ।
शाहु-जहाँ बहु करी बधाई । बखश्यो दरब नरनि समुदाई ।। ६ ।।
दासनि को बहु करी तगीद । 'सेवहु शुभ' नित देहु रसीद[2] ।
घ्रित आदि अरु नीक मसाला । म्रिदुल महां त्रिण खाइ सुखाला' ।। १० ।।

---

1. अश्व, घोड़ा । 2. विवरण, सूचना ।

अपनी द्रिशटि तरे बंधवायो। देखति रहति मोद मन पायो।
दुइ दिन आछो रह्यो तुरंग। पुन रोगी होयो सरबंग ॥ ११ ॥
खाइ न दाना पीय न पानी। दुखिति आगली लात उठानी।
दासन देखि शाहु सो कह्यो। आप आइ करि घोरा लह्यो ॥ १२ ॥
गन सलोतरी तुरत हकारे। तिनहुं उपाइ करे करि हारे।
देखि दगा असु की सभि कह्यो। 'हजरत सुनहु न हम रुज लह्यो' ॥ १३ ॥
राखन उचित नहीं इस ठाउरा। इस की गंध पाइ असु अउरा।
किस उमराव देहु जो लेहि। उपचारहि चिर लौ धन देहि ॥ १४ ॥
सुनति शाहु युत चिंत बिराजी। रुसतम खान हुतो ढिग काज़ी।
तिस ते सुनहि किताब हमेश। ढिग राखहि दै दरब विशेश ॥ १५ ॥
कह्यो शाहु 'इह लेहु तुरंग। करि उपचार मिटहि रुज अंग।
नाहि तू करहि खरीदति कोइ। धन गन को ले दीजहि सोइ ॥ १६ ॥
नहिं अरूढबे लायक रह्यो। नजर लाइ किन ततछिन दह्यो।
सभि सलोतरी करे उपाइ। मिट्यो न खेद न लात टिकाइ ॥ १७ ॥
सुनि काज़ी उर भर्‌यो प्रमोद। निम्यो बारि बहु हजरत कोद[1]।
ले तुरंग आनति भा संग। सने सने चलि पीडति अंग ॥ १८ ॥
जाहि दुरग ते जिस मग घर को। बीच हुतो डेरा सतिगुर को।
आवति जाति नज़र तहि परै। हुइ ऊचे श्री गुर नित थिरै ॥ १९ ॥
हय के सहत तहाँ चलि आयो। जहिं सिख गन दीवान लगायो।
ऊच बिराजहिं अंतरयामी। जो करता सभि जग को स्वामी ॥ २० ॥
करी तुरंग हिरेख विशेखा। मनहुं पुकारति श्री गुर देखा।
'तुरक तोम तप ताल बिलंद। मैं आरत गज दीनि मनिंद ॥ २१ ॥
काज़ी ग्राह ग्रस्यो ले जाति। बिरद दीन-बंधू बख्याति।
करहु छुरावन राखहु पास। क्रिपा-निधान ! सुनहु अरदास ॥ २२ ॥
असु मन की लखि कै ततकाला। करे बिलोचन ऊच बिसाला।
दिशि मारग की द्रिशटि चलाई। बोले कौन तुरंग ले जाई ॥ २३ ॥
सने सने गमनति दुखिआरा। कितिक सिक्ख उठि तत्रै निहारा।
'काज़ी अहै गरीब निवाज़ !'। 'जाति लिए को रोगी बाज' ॥ २४ ॥
इम सुनि घोरा ल्यायो जोइ। उठति बिलोक्यो परख्यो सोइ।
उर हरखति मुख तुरत उचारा। 'श्री गुरु जी' इह तुरंग तुमारा ॥ २५ ॥
बिछुरि मोहि ते दुरबल भयो। नहीं जतन करि रावर लियो।
दुशटनि के बसि भा अस हाल। लीजहि सतिगुरु आप संभाल ॥ २६ ।

---

1. की तरफ।

अधिक प्रेम सिख के उर हेरा। काज़ी दिशि बिलोकि तिस बेरा।
पठि कै सिख समीप हकारा। सादर सभा बीच बैठारा॥ २७॥
हयं ब्रितंत को बूझयो जबै। काज़ी कहति भयो तबि सनै।
काबल दिशि ते शाहु मंगावा। चढायो नहीं चढिबे ललचावा॥ २८॥
दुह दिन आछो रह्यो तबेले। भयो रोग पुन कियो दुहेले।
अपने उचित न हज़रत जाना। मुझ को बखश दीन हित ठाना॥ २९॥
कह्यो – इलाज करो हुइ राज़ी। नाहिं त बेच देहु कित बाजी।
अबि ले करि मैं सदन सिधारों। दे दे औशधि रोग निवारों॥ ३०॥
अ्रसु, दिशि द्रिशटि धारि गुर कही। 'जे वेचनि चाहति चित महीं।
करि कै मोल देहु हम पास। इस को रोग करहिं सभि नाश॥ ३१॥
सुनि काज़ी कहि मोल बिसाला। को दे सकहि देखि इस हाला।
तीन चरन, इक धरहि न धरनी। दियो लाख कीमत इह बरनी॥ ३२॥
सूरत सुन्दर जनु किनि धर्यो[1]। चंचल बल बिसालते भर्यो।
सुनि काज़ी ते श्री गुर कहैं। देहु मोल हम लैवो चहैं॥ ३३॥
उचित अरुढनि के अबि नाहीं। जे सतिगुरु इस रोग गवाहीं।
कितिक दिवस सेवा करिवावहिं। दुरबल भा तबि बल भरि आवाहि॥ ३४॥
तुमहु न आस जियनि असु केरी। लेहु लाभ बेचहु इस वेरी।
दस सहंस्र हम देवैं धन को। ले करि जाहु हरख धरि मन को॥ ३५॥
परालबध इस जियनि जि अहै। करैं इलाज अरुज बचि रहै।
नाहिं त देयु, चुके हम दरबा। कह्यो जितिक लीजै निज सरबा॥ ३६॥
सुनि काज़ी मन कीनि बिचारा। प्रापति ह्वै खट चार हजारा।
बचै न घोरा रोग दबायो। नहीं गुरु ने रुज लखि पायो॥ ३७॥
अबि तो दरब मिलति समुदाइ। मरे तुरग न कुछ कर पाइ।
चहुं दिशि को धन गुरु निकेता। पुन उदार डर देनि जि एता॥ ३८॥
इन सम अपर नहीं को दैहैं। समा चुके पुन हाथ न ऐहै।
कितिक समे हुइ मौनि बिचारा। 'बाज गुरु जी! लेहु' उचारा॥ ३९॥
बाक न मोरहि तुम सम पीर। चढहु आप परहरि रुजि पीर।
निकसावहु धन, दीजहि सोइ। जेतिक कह्यो आप खुशि होइ॥ ४०॥
श्री हरि गोबिंद कह्यो सुनाइ। जो अबि कै संगति धन ल्याइ।
पूरब सगरो दे करि, तौरा। बहुरो लाइ काज जे औरा॥ ४१॥
सरब दरब को घर महि जानि। इस हित कोइ न संसै ठानि।
तुरत आइ, बितहि न चिर काल। अरपहिं सिक्ख सुलेहु संभाल॥ ४२॥

1. बनाया गढ़ के। 2. रोग की पीड़ा।

रहनि इकत्र एक पुरि मांही। मेल नितोप्रति, हम मग मांही।
सुनि काज़ी पुन बाक बखाना। नहि अटको मै समो महाना ॥ ४३ ॥

उरधरि फिकर दरब जे दैहो। पिखहु भले रूज-जुति असु लैहो।
फिरहि न फेर तुरग को सौदा। कै दे शोक किधों दे मोदा ॥ ४४ ॥

सुनि गुर भन्यो 'न बन अनजान। एह नहिं भले पुरख की बान।
कहनि बाक करि पुन फिर जाना। करहि जि नर, से दोज़क जाना ॥ ४५ ॥

सुनि काज़ी कागद लिखवायो। 'दरब करज एतो ठहिरायो।
लेनिहार मै गुर ते रह्यो। दस हजार असु मोल जि कह्यो' ॥ ४६ ॥

बहु तकराई सहत लिखाइ। अपरनि केर उगाही[1] पाइ।
घोरा दियो गुरु के पास। ले कागद को गयो अवासि ॥ ४७ ॥

सतिगुरु लाइ तुरंग तबेले। रेशम दाम[2] तिसी के मेले।
कुछ औखधि करि दीनि मसाला। भयो सभिनि महि हरख बिसाला ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे काजी ते घोरा लेनि को प्रसंग बरननं नाम खोड़समो अंशु ॥ १६ ॥

---

1. दूसरों की गवाही। 2. रस्सी, रास।

अंशु १७
काज़ी को प्रसंग

दोहरा

अगले दिन सतिगुरु गए सुंदर अंग तुरंग।
कर्यो बिलोकनि सकल को, कर फेर्यो हित संग ॥ १ ॥

चौपई

फुरकावति घोरा हरखायो। सनैं सनैं निज पाव टिकायो।
दिन तीनक महिं रुज परहर्यो। त्रिण समुदाइ रु दाना चर्यो ॥ २ ॥
दिनप्रति बली पुशट सभि अंग। भयो प्रिथम सभ तबहि तुरंग।
सतिगुर सुवरन ज़ीन पवायो[1]। हीरन जड़ती गन दमकायो ॥ ३ ॥
बसत्र शसत्र पहिरनि करि तन मैं। भए अरूढ गुरू तिस छिन मैं।
भयो तुंद[2] हरखति फुरकावैं। सने सने असु फांदति जावैं ॥ ४ ॥
गए वहिर को फेरयो थोरा। मन अनुसार चलति मग घोरा।
शारत हाथ पांव की करे। नर सम गिनि गिनि पाइन धरे ॥ ५ ॥
सतिगुरु चढि प्रसंन अति होए। सिक्ख काबली थिर हुइ जोए।
हाथ जोरि चरननि पर पर्यो। 'मोर मनोरथ पूरन करयो ॥ ६ ॥
रिदे भावनी जिम करि ल्यायो। निज नेत्रनि सों तिम द्रिशटायो।
करहु खुशी, गमनहुं निज पुरि को। उपजी शांति महां सुख उर को' ॥ ७ ॥
सिख की शरधा अरु पिखि प्रेम। श्री हरि गोबिंद बखशी छेम।
'भयो निहाल' भन्यो श्री मुखते। 'छूटयो जनम मरन के दुख ते' ॥ ८ ॥
रिदे प्रकाश भयो सुख पायो। पावन पाद पदम लपटायो।
रिद अनंद हुइ मारग चाला। लिव लागी सतिनाम बिसाला ॥ ९ ॥
गयो आपने ग्रिह हरखायो। अंत समै शुभ पद को पायो।
गुरू-तबेले शुभति तुरंग। खाइ खुराक पुशट बलि अंग ॥ १० ॥

---

1. कसवाई। 2. तेज़ शिकार।

कबि कवि गुरु अहढ करि जावैं। करहिं अखे[1] हरख उपजावैं।
बुड्ढे आदिक सिक्ख अशेश। रहहिं सभासद निकट हमेश॥ ११॥
बहु पूरब ते संगति आवै। वसतु अमोलक गन अरपावै।
इसि के देश नगर समुदाई। कहिं लगि गिनी अहि मति थक जाई॥ १२॥
तथा दिशा दक्खन के आवैं। संग मसंद संगतां ल्यावैं।
पश्चम पुरि आदिक कशमीर। चली आइ संगति की भीर॥ १३॥
परबत-बासी वसतु अजाइब। दरशन करहिं अरप करि साहिब।
काज़ी केतिक दिवस बिताइ। गुर समीप आयहु धन चाइ॥ १४॥
बंदन करि बैठ्यो पुन कह्यो। 'हय केतिक कीमत को लह्यो।
सुन्यो रोग तिस को मिटि गयो। मुद अरुढत्रे को तुम लयो॥ १५॥
सफल देनि अबि दीजहि दरबा। कह्यो आप दें इक बिर[2] सरबा।
सुनि करि श्री मुख ते फुरमायो। 'अबि लौ इतो नहीं धन आयो॥ १६॥
जो आयो दुइ तीन हज़ार। बनै न दैबे अलप बिचार।
डेरे बिखै खरच समुदाए। देग सुधारस अधिक चलाए॥ १७॥
गन सैना को खरच बिसाला। सिरे पाउ सिक्खनि सभि काला।
इन खरचनि ते उबरे जोइ। संचनि करें देहिं तुझ सोइ॥ १८॥
काज़ी कह्यो 'फिकर उर राखो। जे मुझ को देने अभिलाखो।
विना दिये रिण उतरै नाही। संकहु सकल खरच के मांही'॥ १९॥
इम कहि आयो कुछक दिन बीते। निस दिन काजी धन दिशि चीते।
इक दिन बहुर दिवान मझार। बैठ्यो आनि अधिक हंकार॥ २०॥
कह्यो प्रसंग दरब को लैवे। 'बिते बहुत दिन कीजहि दैबे।
कर्यो अरोग तुरंग खुदाइ। दरब प्रिथम ते देहु सवाइ॥ २१॥
हज़रत को पाइन असुवारी। प्रापति तुमहि भाग के भारी।
मुझ को इतो दरब दिलवावें। रावर को आनंद दिखरावें॥ २२॥
श्री गुर कह्यो 'खुदाइ पुचाइ। जिस की वसतु तिसी ढिग आइ।
प्रभु आगे क्या मनुख बिचारा। करहि जि ओज अनेक प्रकारा॥ २३॥
खोजति पहुंच्यो सिक्ख हमारा। रूम विलाइत बडी मझारा।
दरब लाख तहिं दे फरि ल्यायो। किस के कहे शाहु सुनि पायो॥ २४॥
तुरंग मंगायो सीने ज़ोरी। पिख्यो न्याइ ते नहिं प्रभु ओरी।
किम खुदाइ को भावै बाति। समझ लेहु काज़ी! इस भांति॥ २५॥

---

1. शिकार। 2. बार।

कितिक दिवस महिं संगति आवै। तुमको दहिं दरब सो ल्यावै।
धीरज धरहु कितिन दिन और। दस हजार लिहु बैठे ठोर'॥ २६॥
रिस धरि कुछक बाक तबि कहे। सतिगुर महिमा मूढ न लहे।
'सुनहु गुरु जी! बात न आछे। प्रथम कहहु नहि पूरो पाछे॥ २७॥
कबि लौं मैं धीरज धरि रहौ। चिरंकाल भा दरब न लहौं।
सौदा नहीं तरंग को फिरे। तउ लिजावहिं दिहु हम घरे॥ २८॥
हय राखहु तौ धन दे दीजै। जे न देहु तौ फेरनि कीजै।
नाहि त बिगर परेगी बात। करहु टाल मुझ सों बख्याति'॥ २९॥
तबि भाई ब्रिध ने समझायो। 'रिस ते कहनि न शुभ बनि आयो।
गुरु घर महिं परवाह न कोई। पावहिं परालबध जबि होई॥ ३०॥
अपर दिवस केतिक अबि देखि। क्या ते क्या हुइ जाहि विशेख।
लिहु धन, धीर धरो बुधिवानि। फीके बाक न करहु बखानि'॥ ३१॥
सुनति छोम करि उठि तबि चाला। कहति ब्रिद्ध सो 'अबि मैं टाला।
करहु दरब को त्यार अगारी। जाउं न छूछो पुन तिस बारी'॥ ३२॥
इत्यादिक बोलति चलि गयो। मन महिं गिनत अनिक बिधि भयो।
'अबि के देहिं त रहिहैं नीके। नाहिं त परैं शाहु ढिग फीके॥ ३३॥
लैहौ देय जोर धन सारो। हजरत को सभि भेव[1] उचारो।
कितिक दिवस नहिं बहुरो आवा। रात दिवस इस धन मन लावा॥ ३४॥
पहुच्यो पुन दिन ढरे दुपहिरे। श्री गुर हुते सेज पर ठहिरे।
ब्रिध बैठ्यो जहि गुर को पौर। अपर समीप न सिख तिस ठौर॥ ३५॥
बैठयो काजी रह्यो सुनाइ। 'हम गुर ढिग चाहति अबि जाइ।
दिवस बिताइ किते हम आए। चाहति हैं अपनो धन पाए॥ ३६॥
सुनि ब्रिध कह्यो 'न मिलिबे काल। पुन आवहु लिहु दरस क्रिपाल।
अबहि सेज पर गुर बिसरामे। को न उठाइ सकहि अस कामें'॥ ३७॥
काजी रिस करि गिरा उचारी। 'कार दार गुर-घर को भारी।
हम ने सुन्यो तुही इक अहैं। खरचहिं दरब संभारति रहैं॥ ३८॥
गुर सो मिलति होइ कै नाँही। दरब सरब ले बहु तुझ पाही।
सो भी तुझ ते करहि दिखावनि। दिहु अबि मोको बात सुहावनि'॥ ३९॥
कह्यो ब्रिध 'हम कौन बिचारे। आप संभारहिं अपनी कारे'।
जबि उठि श्री गुरु वहिर थिरैहैं। तबिही तिन को दरशन पैहैं॥ ४०॥
इतनी करहि शीघ्रता काहे। अंतर बर्यो चहति गुर पाहे।
दानशवंद[2] क्यो न तूं होहिं। करहिं निदाननि की गति सोइ'॥ ४१॥

---
1. भेद। 2. बुद्धिमान।

सुनि काज़ी मूरख रिस धारी। सनमुख ब्रिध के निठुर उचारी।
'क्या तूं बैठ्यो बात बनावै। शाहजहां तें त्रास न पावैं ॥ ४२ ॥
इक बिर कहि करि हज़रत नाल[1]। लैहों बनि[2] दमाद तिस काल।
कौन अरहि सभि डरहि महाना। तत छिन दैहैं दरब बिराना ॥ ४३ ।'
सुनि ब्रिध भाख्यो सहज सुभाइ। 'तुमरे गुर दमाद बन जाइ।
तौ कैसे धन लैवो धरैं। अरपनि निज तनुजा को करैं ॥ ४४ ॥
यांते गति सभि जानी जाति। तोहि न बनहि लेनि बख्याति।
होनहारि को मेटैं कौन। इम कहि ब्रिध ने ठानी मौन ॥ ४५ ॥
काजी जरि बरि कै उठि गयो। वचन कठोर उचारति भयो।
'गुरु सों मिलि कै अब इक बारि। जे न दरब दै, करौं पुकारि ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे रास पंचम 'काज़ी को प्रसंग' बरननं नाम सप्तदशमो अंशु ॥ १७ ॥

---

1. के साथ। 2. दामाद, जामात।

अंशु १८

काज़ी प्रसंग

दोहरा

काज़ी अरु ब्रिध बाद को सन्यो गुरु निज श्रोन ।
अति सचिंत चित मैं भए बैठे अंतर मौन ।। १ ।।

चौपई

इह क्या ब्रिध मुख बाक बखाना । काज़ी को दमाद मुझ ठाना ।
झगरति लरति सु क्रोध उपायो । हम बैठे कहु स्राप अलायो ।। २ ।।
असमंजस हमको बडि भए । जे दमाद काज़ी बनि गए ।
जग अपजस पसरहि जहि कहां । कहहिं सिक्ख 'इह कीनिसि कहां ।। ३ ।।
माता सुनति कहहि क्या बैन । पिखि अजोगता किसहु न देन ।
क्या हम करहिं न बनहि उपाइ । सभि जग महिं अपवाद चलाइ ।। ४ ।।
अस चितवति चित करि थिर लोचन । भए सोच-बसि सोच बिमोचन ।
'दुहु दिशि ते अतिशै' कठनाई । किह त्यागहिं, किह करहिं बनाई ।। ५ ।।
उतै अमेलि तुरकनी ल्यावनि । इत बड सिख को बाक हटावनि ।
जिन के बचन संग हम जनमे । जिसको कह्यो प्रधान सुरन मे ।। ६ ।।
जिस के कहे अचल चल परैं । अहैं सदागति से सभि थिरैं ।
कौन समरथ करहि बच मेटनि । खशट गुरनि सों हित करि भेटनि ।। ७ ।।
कहि बच को ससि सूरज रोकैं । जिस बर स्राप बीच त्रई लोकैं ।
बिधि, हरि, शिव मुनि के बर स्राप । मेटि न सकहिं धारि लें आप ।। ८ ।।
सो हम निफल करहिं अबि कैसे । अहैं बडिनि मिरजादा ऐसे ।
रामचंद मान्यो बरिआई[1] । सदन राखशनि सीअ पुचाई[2] ।। ९ ।।
हुती अजोग अजसु को मूल । उऊ स्राप के भे अनुकूल ।
मान्यो क्रिशन स्राप दुरबासा । सरब कुली को भयो बिनासा ।। १० ।।

---

1. बडाई 2. पहुंचाई ।

जिम किम करहि जगत के लोग। जानहि सकल अजाग कि जाग।
ब्रह्म-ग्यानी की हुइ सच बानी। इह म्रिजाद नहिं कीनिसि हानी ॥ ११ ॥
चहीअति हम को भी अबि ऐसे। ब्रिध के बाक सफल हुइ जैसे।
माता आदिक जे बडि अहैं। सुनि करि करहिं क्रोध, सभि सहैं ॥ १२ ॥
कान्हे ग्यानी को सहि स्राप। हमरे पिता लह्यो दुख आप।
प्रान हान जिसते करि दीने। जसु अपजसु कुछ नहि मन चीने ॥ १३ ॥
इत्यादिक गन सिमरि प्रसंग। रहे बिचारति बहु चित संग।
मुसकावति मुख निकसे बाहर। 'ब्रिध जी! कहो करयो क्या जाहिर ॥ १४ ॥
उचित अनुचित न रिदे बिचारी। झगरति काज़ी संग उचारी।
किम करनी हम को बनि आवै। तुमरे सम बड कहां अलावैं' ॥ १५ ॥
सुनि कर जोर कह्यो ब्रिध भाई। 'कही तथा जिम आप कहाई।
चिरंकाल की तप को तापति। अबि भी लैं न आप को प्रापति ॥ १६ ॥
किसू दोश ते तन तुरकानी। तऊ घालते उचितै जानी।
चंद्राइण आदिक ब्रत धरे। कशट अनिक तन सहिबो करे ॥ १७ ॥
सो सभि सफल होहिं इस बेरे। उपजहि प्रीति आप को हेरे'।
सुनति मौन श्री हरिगोबिंद। रिखि बशिशट ते राम मनिंद ॥ १८ ॥
कर पग बैठि पखारनि करें। मुख पखारि सुन्दर दुति धरे।
चीरा छोर-दार[1] बड जरी। दुहि दिशि लगि मुकतागन लरी ॥ १९ ॥
पेच बधे जु अनूनो बन्यो। शमस[2] नीक, मुख समि जस सन्यो।
बड बिसतिरति बिलोचन शोभा। अवलोकति किस नहि मन लोभा ॥ २० ॥
कोरदार हीरे बर चीरे। जिगा बधी छबि ऊपर चीरे।
मुकता उज्जल गोल बिसाला। कुंडल मुख-मंडल पर झाला ॥ २१ ॥
कंचन कंकन जरे जवाहर। मुकता माल ब्रिसाली ज़ाहर।
सूखम बसत्र सरीर सुहाए। खड़ग सिपर दोनहु अंग लाए ॥ २२ ॥
क्या गुर शोभा करों उचारी। अवर न पय्यति जिन अनुहरी।
जबर जवाहर ज़ाहर जरे। हय पर जीन सजावनि करे ॥ २३ ॥
डील बिलंद गुरू दुति संगि। भए अरोहनि तिसी तुरंग।
सिख सेवक सभि बरजि हटाए। एक नफर ले संग सिधाए ॥ २४ ॥
जहि काज़ी को दीरघ मंदिर। सुंदर ब्रिसद वहिर अरु अंदर।
करे झरोखे राखि दरीची[3]। बनी सु वैठक ऊंची नीची ॥ २५ ॥

---

1. पल्लू वाले। 2. मूंछ दाढ़ी। 3. खिड़की।

बहु परदेजुति बसहिं [illegible] । [illegible] जानै बाहर छाने ।
इक काज़ी की सुता कुमारी । मनहुं मदन निज हाथ सुधारी ।। २६ ।।
किधौं चंद्रमा चीरि निकारी । जनु रंभा महितल पग धारी ।
अंग अंग जिसके तरुनाई[1] । सहज सुभाइ झरोखे आई ।। २७ ।।
इत कूदति लघ छाल तुरंग । आइ सुहावति मनहुं अनंग ।
सुन्यो शबद हय कूदनि केरो । हेरनि लगी बदन इत फेरो ।। २८ ।।
देखति रूप अनिक अकुलाई । मनहु रंक के ढिग निधि आई ।
बहुत छुधिति जैसे नर कोइ । मनहु अहार देति ढिग होइ ।। २९ ।।
महाँ तपत ते लागिसि प्यासा । पियनि चहति जल ह्वै करि पासा ।
मनहु प्रतीखत[2] हुती चकोरी । औचक चद्र चित्यो चित चोरी ।। ३० ।।
अविलोकति रहिगी इकटक ही । भई अचंचल मुख को तकही ।
द्रिग बिसतरति कमल जनु फूले । लाज समेत अपनपौ भूले ।। ३१ ।।
प्रथम किवार ओट महिं दुरी । बहुर वहिर भी सनमुख खरी ।
मनहुं म्रिगी ह्वै मोहिति रही । पाछे हटनि होति किम नहीं ।। ३२ ।।
तिसको प्रेंम हेरि करि घनो । खरी[3] करी बद्ध्यति[4] किन मनो ।
आतुर को बिलोकि मन भीनौ । बाजी को टिकाह तबि लीनो ।। ३३ ।।
कितीं बेर बीती जबि खरे । इत उत कौलां नैन न करे ।
तपत घाम ते बहु अकुलावै । बयाकुल भयो छांव पुन पावै ।। ३४ ।।
त्याग न सकहि रहहि थिर जैसे । गाढी हुइ ठाँढी तहिं ऐसे ।
रिदे बिचारति है इह कौन । मनहुं चद आयो तजि भौन ।। ३५ ।।
महां छैल छबि छक्यो छबीला । कहां बसहि ठानति निज लीला ।
जिनहुं त्रियनि के हैं बडभाग । मिल्यो तिनहुं इह पुरख सुहाग ।। ३६ ।।
जग महिं होनि तिसी कहु धन । जिसको हसि कर मिलहि प्रसंन ।
मैं किम इन सो बोलनि करों । नहिं चिनारि मैं पूरब धरों ।। ३७ ।।
कौन भेत मुझ आनि बतावें । मिल बोले बिन मनु अकुलावें ।
को उपाइ मैं करों कुभागनि । पिखि सरूप होई अनुरागनि ।। ३८ ।।
परबसि मन भा नहिं बसि रह्यो । सुंदर चँद दूसरो लह्यो ।
इक टक देखति रिदै बिचारति । मिलन हेतु आतुरता धारति ।। ३९ ।।
इतने महिं काज़ी चलि आयो । पिखहिं परसपर तबि द्रिमटायो ।
महां क्रोध जाग्यो जर गयो । सदन प्रवेश शीघ्र ही भयो ।। ४० ।।

---

1. तरुणता यौवन, 2. प्रतीक्षित 3. खड़ी की 4. बांधी हुई ।

निज तनुजा को पिखि रिस भर्यो। चावक पर्यो तुरत कर धरयो।
मारति भयो त्रास नहिं ठाना। कहति 'क्रूर खोई कुलकाना ॥ ४१ ॥

हिंदुन के गुर को तूं हेरैं। जनमी कहां मद तू मेरै।
वहु चावक मारे बल संगि। उतर्यो चरम लगे सभि अंगि ॥ ४२ ॥

हाइ हाइ करि रही बिचारी। सुनि दौरी तिस की महितारी।
झिरक्यो काजी चावक छीना। 'क्यो निज सुता हती दुख दीना ॥ ४३ ॥

मम ढिग ते[1] अबि ही चलि आई। कहा भयो ठाढी इस थाई।
सुता तरुण को मारनि करैं। सुनहिं अपर शंका सभि धरैं ॥ ४४ ॥

क्यों अपनी पति लाज गवावहिं। हसहिं लोक कर-ताल वजावहिं।
रिस मैं कहति 'खरो गुरु हिंदू। नाम जांहि श्री हरिगोबिंदू ॥ ४५ ॥

तरै खरो तिसकी दिशि देखैं। तनुजा देहि कलक विशेखे।
नहि समीप राखहिं रखवारी। पिखों फेर मैं दैंहों मारीं ॥ ४६ ॥

इम कहि काजी बहु दुख पाइसि। वहिर निकलि बैठ्यो पछुताइसि।
सतिगुर गए आपने डेरे। उतरि बिराजे प्रभू वडेरे ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे 'काजी प्रसंग' बरननं नाम अशट दशमो अंशु ॥ १८ ॥

---

1. मेरे पास से।

अंशु १९
काज़ी प्रसंग

दोहरा

तिस की महितारी तबै दुहिता लई उठाई।
'हाइ हाइ' सो करि रही म्रिदुल सेज पर पाइ ॥ १ ॥

चौपई

चोटनि को कीनसि उपचारी। पिखि काज़ी को काढ़नि गारी।
देती धीरज सहत दिलासा। कितिक काल थित तनुजा पासा ॥ २ ॥
पुन दासी को निकट बिठायो। आप अपर कारज चित लायो।
कौलां तन मन ते दुख पाइ। हाइ हाइ करती बिललाइ ॥ ३ ॥
दासी ने तिस चित की जानी। गुपत बारता बूझनि ठानी।
'कौन हुतो जिस देखति रही। पिखि काज़ी हटके द्रिग नही' ॥ ४ ॥
तबि कौलां ने सकल बताई। तिस नर की सुधि मोहि न काई।
पिख्यो अचानक मन ठगि लयो। रही न सुधि जड़ सम तन भयो ॥ ५ ॥
काज़ी ने मारति लिय नामू। गुरु हिंदन को मुख्य अभिरामू।
श्री हरि गोबिंद महां बिचच्छन[1]। महाराज के जिस महिं लच्छन ॥ ६ ॥
क्या उपमा करि तोहि सुनावों। जिस के सम को अपर न पावों।
काज़ी ने मारी, गुन भयो। नाम पता प्रिय को सुनि लयो ॥ ७ ॥
हे दासी तूं करि उपकार। थिरहि कहां, खोजहु हित धारि।
बहु धन दैहों मानि हसन्न[2]। जे बचाइ राखैं मम जान ॥ ८ ॥
प्रान-दान ते भलो न और। करहु सही पावहिं जिस ठौर।
सुनि दासी ने सकल सुनायो। कई बारि मैं दरशन पायो ॥ ९ ॥
डेरा निकटि सु जानि हमारे। पूजहिं आवहिं लोक हज़ारे।
धरहिं भरोसा गुरु पर ऐसे। जम के कशट छुटावहिं जैसे ॥ १० ॥

---

1. बिचक्षण, विचित्र। 2. अहसान, उपकार।

परहिं चरन लाखहुं धन देति। हेतु प्रलोक सफल करि लेति।
बडी भीर[1] चहुं दिशि के लोक[2]। अरपि उपाइन होति अशोक ॥ ११ ॥
सुनि कौलां परफुल्लयत होई। पाइ कलप-तरु जिम नर कोई।
हे दासी तू धंन महानी। करि मेरो संकट अबि हानी ॥ १२ ॥
मोहि ब्रिथा किम जाइ सुनावहु। चहै कि नहीं, भेद सभ पावहु।
पठि किताब परसंगु सु हेरे। 'परम पुरख बसि प्रेम घनेरे' ॥ १३ ॥
रंक राउ को जानहिं नाही। प्रीति करहि तिस राखहिं पाही।
मैं तिन की तन मन ते दासी। बिना मोल सेवैं नित पासी ॥ १४ ॥
दासी कहे 'कहौं किम जाइ। नहीं चिनारी कबि[3] तिन पाइ।
ब्रिद नरनि महिं गमनहुं कैसे। अपर करहु बिधि कहौं सु जैसे ॥ १५ ॥
लिखि कागद पर अपनि ब्रितांत। जिम सज़ाइ होई सभि गात।
मन को प्रेम बिनै बहु बारी। लखहिं हकीकत को जिम सारी ॥ १६ ॥
सुनि दासी ते उर हरखाई। 'सदा आफरीं[4] नीक बताई'।
सरब पीर को परिहरि तबै। कह्यो आन कागद मसु अबै ॥ १७ ॥
कलमदान काज़ी को हेरा। उठि दासी ल्याई तिस बेरा।
पूरब लिखी जोरि करि बंदन। 'जसु तुमरो जग दोश निकंदनि' ॥ १८ ।

दोहरा

देति महां जम शासना तुम देखे छुटि जाइ।
इस हित दरशन आपको करहि आनि समुदाइ ॥ १९ ॥

चौपई

कहैं सुजसु तुमरो इस रीति। सो मुझ को बरत्यो बिप्रीति।
संसै भयो 'कहति इह झूठो। किधौं करम हैं मोह अपूठे[5] ॥ २१ ॥
एक घरी मैं दरशन कीना। प्रेम कामना ते मन दीना'।
मारि कहिर की मो पर होई। 'यांते मैं बिचार करि जोई ॥ २१ ॥
जे तुमरो नित दिरशन करैं। बचन अनंद सुनि कै मन धरैं।
तिनहुं सज़ाइ निरंतर चहियति। रूप-सुधा के तसकर लहियति ॥ २२ ॥
'दीन दुनी महिं हूजहु वाली'। सो प्रसग परिगा सभि खाली।
सुने 'पीर के पीर बडेरे'। अस संसा उपजति उर मेरे ॥ २३ ॥
इत्यादिक लिखि कागद आछे। कह्यो जि मम तूं जीवनि बांछे।
इक बार गुरू कर पकरावो। पुनि सुनाउ जिम उत्तर पावो ॥ २४ ॥

---

1. बड़ी भीड़। 2. लोग, जनता। 3. कभी। 4. शाबाश, साधवाद।
5. उलटे।

दैहों दरब बिभूखन नाना। रंगदार अंबर दुतिवाना।
नहिं बिसरों कबि तोर असाना। मो को करहि प्रान को दाना ॥ २५ ॥
संध्या भई तिमर कुछ छायो। दासी समा जानि को पायो।
बिसद बिसाल वसत्र बर लीना। तन सगरो आछादन कीना ॥ २६ ॥
डेरे निकट जाइ सिख हेरा। 'देहु कागद गुर को इस बेरा'।
ले तिसने अरप्यो ततकाला। पढ्यो खोल करि अखिल हवाल ॥ २७ ॥
प्रेमातुर दीना[1] बहु डीठि। लिख्यो तिसी कागद की पीठि।
'जो जहाज चढि गए हमारे। दीन दुनी हम तिस रखवारे ॥ २८ ॥
बिना जहाज़ चढे नहि वाली। बड पुरशनि की है अस चाली।
तिह सिख के कर बहुर पठायो। दियो आनि अरु भेव बतायो ॥ २९ ॥
उतर सतिगुर ने लिख दीना। सुनि हरखी कागद सो लीना।
कौलाँ के कर सो पकरायो। देनि रु लेनि प्रसंग बतायो ॥ ३० ॥
सभि ते छप[2] करि दीपक पास। खोलि बिलोक्यो होति हुलास।
उत्तर पठयो प्रेम ते गद-गद। रिदे अनंदति फिरि फिरि बद बद[3] ॥ ३१ ॥
कलम-दान ले होइ अकेली। लिख्यो बहुर दीह दुहेली[4]।
'सुनी अहि गुरू गरीब-निवाजू। मै तन मन ते चढ़ी जहाजू ॥ ३२ ॥
आप संभारो गही ग्रहि बाहू। करों सेव दासी पग पाहूं।
कै निज कर ते देहु धकेला। मरौं तुरत पासी[5] गर मेला ॥ ३३ ॥
पित के घर मैं जियों न कैसे। महां रोग ते आतुर जैसे।
दुइ महि एक बात हुइ मोही। कै मरिहौं कै देखो तोही ॥ ३४ ॥
घोरि[6] महां बिख तीखन पीवौं। तुम परहरहु तनक नहिं जीवों।
इम कहि दासी बहुर पठाई। गई गुरू के ढिग पहुंचाई ॥ ३५ ॥
खोलि पठ्यो निशचल तबि जानी। दासनि के प्रिय कीनि बखानी।
'धीरज धरहु कामना तेरी। हम पूरनि करिहैं इम बेरी ॥ ३६ ॥
चढहिं सुधा सर को जिस काल। तोकहु ले गमनहि तबि नाल[7]।
घने दिवस नहिं लवपुरि रहैं। आज काल मैं त्यारी अहैं ॥ ३७ ॥
सुनि दासी उर हरखति होई। आनि बरी[8] नहिं हेरति कोई।
क्रिपा-निधान क्रिपा बहु कीनि। तुझ को अबि अपनी करि लीनि ॥ ३८ ॥
सरब प्रकार भरोसा दीनि। अपने बिखै प्रेम तुव चीन।
चलहिं सुधासर ले तबि साथ। अबि लव पुरि नहिं बसिहैं नाथ' ॥ ३९ ॥

1. दीन दुःखी। 2. छिप करि। 3 वद अर्थात् बोलकर, पढ़ कर। 4. बहुत दुःखी। 5. पाश, फाँसी का फंदा। 6. घोल कर। 7. साथ 8. पंजाबी 'वड़ी'; आन प्रवेश किया।

सुनि कौलां सम कमल बिलोचन। करि चित की सभि सोच बिमोचन।
बारि बारि बूझति है दासी। 'सगरी बात करहु मुझ पसी ॥ ४० ॥
मुझ पर क्रिपा करति कै नांही। रुख परख्यों कै नहिं हुइ पाही।
नही टार कीनसि कहु कैसे। सुनि दासी भाखति पुन तैसे ॥ ४१ ॥
'अधिक छुपति सम क्यों डहकै[1] हैं। कितिक दिवस महि ढिग हुइ जैहैं।
पूरब जनम हुती वडभागनि। महिद[2] पीर की भी[3] अनुरागनि ॥ ४२ ॥
सुनि अनंद उर लीनि दुराई। परी सेज पर पीय न खाई।
जनु नागनि मणि रिदे छपाई। महाँ क्रिपन को जिम निधि पाई ॥ ४३ ॥
रखि अंतर वहिर न बिदतावै। ऊपर ते निज पीर जनावैं।
बार बार बोलती महितारी। करहि निहोरनि जिस बहु प्यारी ॥ ४४ ॥
नहिं मानति मुख कीनि मलीना। गुरू प्रेम चढि रंग नवीना।
निस महिं परी परम दुखिआरी। हाइ हाइ कवि करति उचारी ॥ ४५ ॥
वहिर पीर को करति जनावनि। गूढ पीर[4] नहि करहि सुनावनि।
तन छाद्यो ले बसत्र बिसाला। नहीं उघारति भी किस काला ॥ ४६ ॥
दिवस आगले काज़ी संगि। काज़नि लरी करे बद-रंग[5]।
'परी मरति अबि रहहु सुखारे। सभि शरीक अति हमहि निहारे ॥ ४७ ॥
कहैं 'कहा होयहु इस पास। ऐसी मारि करी दे त्रास।
सुनि काज़ी तूशन[6] हुइ रह्यो। नहिं दारा सो किम कछु कह्यो ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे 'काज़ी प्रसंग' बरननं नाम एकऊन-विंशति अंशु ॥ १९ ॥

---

1. घबराती है। 2. महत, उत्तम गुरु। 3. भई 4. गुह्य पीड़ा, प्रेम। 5. निस्तेज होकर। 6. चुप।

अंशु २०

मीआं मीर प्रसंग

दोहरा

श्री गुर हरि गोबिंद जी कीए प्रात इशनान ।
खान पान करिकै प्रभू बैंठे रुचिर सथान ।। १ ।।

चौपई

ढरे दुपहिरे होइ सुचेता । सुंदर शसत्र सुत्रसत्र समेता ।
ब्रिध सों कह्यो बाक गंभीर । 'मीआ मीर इहां बड पीर ।। २ ।।
तिन को मेल भयो कबि नांही । निशचै ब्रहम ग्यान के मांही ।
महां शकति-जुति चहहि सु करै । तउ छिमा धीरज गुन धरै' ।। ३ ।।
ब्रिध ने भन्यो 'जि सिमर्यो मन मै । तौ दरशन दैहैं गुन जिन मैं ।
जाम[1] दिवस बाकी जबि रह्यो । मीआं मीर प्रसंग सु लह्यो ।। ४ ।।
दरशन को गमन्यो तजि थान । श्री गुर सरब बारता जानि ।
कहति शीघ्र ही हय मंगवायो । हुइ अरूढ करि बेग चलायो ।। ५ ।।
घर ते पीर थोरई चले । जाइ अगाऊ सतिगुर मिले ।
लोक बिलोकति इम लखि पायो । लेनि गुरू को आगे आयो ।। ६ ।।
होरि परसपर वध्यो अनंद । मीआ मीर मिले कर वंदि ।
श्री हरि गोबिंद उतरनि लागे । गही रकाब शीघ्र हुइ आगे ।। ७ ।।
हय पर चढे लिये चलि आयो । हाथ रकाब संग इक लायो ।
जबि सथान के आयो पौर । उतरनि लगे सोढि कुल-मौर ।। ८ ।।
गहि रकाब जुग हाथ लगाए । सनै सनै हय ते उतराए ।
धरे हाथ महिं हाथ अगारे । होइ बरोबर जुगल पधारे ।। ९ ।।
रहिन-भवनि महिं गे[2] गुन-भवनू । कुशल प्रशन कीनसि रिपुदवनू ।
बैठे समुख अनंद बिलंद । श्री गुर हरि गोबिंद कुल चंदु ।। १० ।।

---

1. एक पहर । 2. रहने के कमरे में गए ।

पीर बिलोचन थिरे चकोरा। करहिं बिलोकन को मिलि जोरा[1]।
'कहो पीर जी ! ब्रिति कहिं तीक[2]। हक्क[3] सही कीनसि तहक़ीक[4] ॥ ११ ॥
कौन अवसथा को रस लेति। मन पर कैसे रहो सुचेत।
नाश वाशना को उर होवा। आतम अनंद कहो कस जोवा ॥ १२ ॥
मीआ मीर जु पीर गंभीर। सुन करि उचरति बच गुर तीर।
'क्रिपा आपकी जिस पर होति। तिस को निशचै हक उदोति ॥ १३ ॥
जहिं जहिं मिथ्या तजि तजि तहां। रहा एक जो जाइ न कहा।
मन बानी को बिशै न होवति। सुनहि न श्रवन आंख नहिं जोवति ॥ १४ ॥
सो सरूप लखि हौमैं[5] त्यागी। थिरी ब्रित्त एकै लिव लागी।
परारबध बसि तन इहु थिरै। लहै अजतन[6] सु भुकतनि करै ॥ १५ ॥
पाइ पदारथ हरख न भाना[7]। बिनसि गए कछु शोक न माना।
बांछति आप करहि नहिं कोइ। सहिजे होता जाइ सु होइ ॥ १६ ॥
सगरो जग मिथ्या जबि जाना। मूल हान ते वाशन[8] हाना।
अनंद आतमा कह्यो न जाई। गुरू भन्यो 'गूंगे मठिआई' ॥ १७ ॥
जिस पर क्रिपा आपकी होवै। हौमै मल गुरमति जल धोवै।
सुनि गुर भन्यो 'धंन तुम करनी। आप तरे, तारहु सम तरनी' ॥ १८ ॥
इम आपस महि करि संब्रादू। दरशन देति लेति अहिलादू।
चार घरी बैठे तह रहे। परम प्रेम बच सुनि पुन कहे ॥ १९ ॥
उठे बहुर श्री हरि गोबिंद। चल्यो संगि ही पीर ब्रिलंद।
आदर हेतु आइ करि साथ। लगे अरूढनि हय पर नाथ ॥ २० ॥
बरजि दास को पहुंचि शताब। जुग हाथन सो गही रकाब।
श्री गुरू हरि गोबिंद चढ़ाए। 'थिरहु पीर जी इस ही थाएं ॥ २१ ॥
बहु तकलीफ आप को होई। नंम्री धीर छिमा बहु जोई'।
मानि बचन को तहि भा ठांढो। पिखहि सरूप प्रेम करि गाढो ॥ २२ ॥
नंम्रि परसपर ह्वै करि चले। रहे पीर जी तिस थल खले।
सतिगुर जाइ बिराजे डेरे। सोदर संध्या करि तिस बेरे ॥ २३ ॥
कीनि जथा रुचि खान रु पाना। सुपति जथा सुख सेज महाना।
जबि गुर गए पीर के तीर। गन तुरकनि की तिस थल भीर ॥ २४ ॥
देख अचंभा सभि ने मान्यो। 'इह क्या करम पीर जी ठान्यों।
सभि के बीच बिसाल भनंते। सरब आइ करि नंम्रि हुवंते ॥ २५ ॥

---

1. जोड़ा। 2. तक। 3. सत्य स्वरूप ईश्वर। 4. ठीक ठीक, वास्तविक रूप में। 5. अहंकार भावना। 6. अयत्न। 7. भाया। 8. वासना।

इह चलि गयो आप उठि करि कै। हिंदू को आदर चित धरि कै।
बहुत बंदना कीनी जाइ। हाथ रकाब धरी चलि आइ ॥ २६ ॥
हय ते सादर तरे उतार्यो। अपनि थान कर-धरे पधार्यो।
बड़ पीरन के पीर कहंते। सभि उमराव खान मानंते ॥ २७ ॥
अशट दिवस महिं आवति शाहू। करि बंदन बैठति है पाहू।
अपर पीर इसके ढिग आवै। जानहिं कामल[1] सीस निवावै ॥ २८ ॥
इह हिंदू आगै निव चल्यो। निज ते बडो जानि करि मिल्यो।
इम सगरे तुरकनि महिं होई। कह्यो शाहु ढिग गमन्यो कोई ॥ २९ ॥
सरब सभा ने बुरा बखाना। शाहजहां सुनि करि इम काना।
कह्यो सभिनि महिं 'अबि के चलैं। बूझहि सकल बैठि जबि मिलैं ॥ ३० ॥
जो नित साथ हमारे रहै। आवनि जानि करहि जिम कहैं।
सदा रहहि हमरे अनुसारी। ऐसो हरि गोबिंद हित धारी ॥ ३१ ॥
माननीय बड पीर हमारो। जिस को मानहिं तुरक हजारो।
इनहु अदब किम कीनि महाना। हौरा भयो सकल तुरकाना ॥ ३२ ॥
इम बहु तरकति सो दिन आयहु। चल्यो शाहु लोकनि सिमरायहु।
गन उमरावनि की संग भीर। पहुच्यो मियां-मीर के तीर ॥ ३३ ॥
हाथ जोरि बंदन को करि कै। बैठ्यो शाहजहां मद भरि कै।
बूझति भयो 'मिले गुरु हिंदू। नाम जिनहुं श्री हरि गोबिंदू ॥ ३४ ॥
आप अदाइब एतिक कीनो। सभिहिनि के मन संसै भीनो।
सो हमरे सदीव अनुसारी[2]। तुम गमने हित लेनि अगारी ॥ ३५ ॥
करहि बाद सगरो तुरकाना। हमरे ढिगं लौ जाइ बखाना।
मीआं मीर सुनी इम काना। उत्तर ततछिन कीन बखाना ॥ ३६ ॥
'जेतिक पीर अहैं हम सारे। वडे कि छोटे अज़मति धारे।
जबि सभि दम[3] करि कै इकि बार। पहुंचहि जहिं खुदाइ दरबार ॥ ३७ ॥
थिरहिं पौर पर सभि तहिं जाहिं। बैठहि मौला की दरगाहिं।
कितिक समै जबि तहां बितावैं। अंदरि ते तबि इह चलि आवैं ॥ ३८ ॥
ऊपर पौर दरीची सुंदर। तहां आइ बैठहिं इह अंदर।
जो जो कारज जिस जिस होइ। देखति अरज करति निज सोइ ॥ ३९ ॥
बंदहि हाथ बंदना करिहीं। पद अरबिंद सप्रेम निहरिहीं।
सभि को हुइ संसै तिस ठौर। 'पाक खुदाइ इही कै और' ॥ ४० ॥

---

1. परिपूर्ण। 2. अनुयायी, अधीन। 3 जाप करके।

इस मूरति को दरशन करैं। अपर नहीं को द्रिशटी परैं।
यांते जानहार जे तहां। कौन न करहि अदाइब महां ॥ ४१ ॥
इही बैठि करते बखशीश। किस की कहि सों पुजहि न रीस।
जिस पर क्रिपा द्रिशटि इह धरैं। मन भावत तिस बखशिश करैं ॥ ४२ ॥
ज्यों धनारथी तोर अगारी। बर्नहि दीन कहि बच अनुसारी।
त्यों इन ते लैवे हित दाति। खरे अनेक ब्रिंद बिललाति ॥ ४३ ॥
कहु, जग महिं अस है अबि कौन। तुझ पिखि आदर करहि न जौन।
त्यों खुदाइ के प्रेमी जोइ। इन पग-खाक धरहिं सिर सोइ ॥ ४४ ॥
तुम संसारी ज्यों उर भावै। त्यों बरतहु नहिं को उलटावै।
उर खुदाइ की खबर न कोइ। नहिं जानहु आगै क्या होइ ॥ ४५ ॥
हिंदू तुरक बाद के साद। पचि पचि मरहिं खुदाइ न याद।
करहि साहिबी चार दिवस की। सदा लालसा बिशियनि रस की ॥ ४६ ॥
छिन भरि मौला यादि न कोइ। तरकहु मिले रहैं निति जोइ।
स्याने इस को कहै न नीकी। कहैं जु इम, तिनकी मति फीकी ॥ ४७ ॥
नहिं दरगाह बिखै तिस ढोई[1]। दोज़क की सज़ाइ लहिं सोईं।
पीर प्रताप-वंत के बैन। सुने सभिनि नीचे किय नैनं ॥ ४८ ॥
सनमुख पिखि नहिं उत्तर दीना। करी मौन मन जानि प्रबीना।
मीआं मीर धीर पुन कह्यो। 'नहीं महातम तुम ने लह्यो ॥ ४९ ॥
शकति अनंत धरति समरथ। भंजन घड़नि जिनहु को हत्थ।
तऊ मानवी लीला धारैं। नहिं किह को कबि शकति दिखारैं ॥ ५० ॥
अजर जरन एते उर करैं। कौन इनहु की समता धरैं।
शाहजहां सुनि सीस निवायहु। तूशनि ही उठि करि चलि आयहु ॥ ५१ ॥
वहिर आइ करि कहां बतावैं। मन हमरे निशचै नहिं आवै।
हिंदू ढिग खुदाइ के रहै। सुनि इम, कहा पीर को कहैं' ॥ ५२ ॥
तिन अनुसार शाहु भी होइ। कहै 'न मुझ प्रतीत अस होइं।
अंतहकरण बिमल बडि भागे। तौ गुर-महिमा महिं मन लागे ॥ ५३ ॥
मंद मती पख बादिनि रिदे। गुर कीरति ठहिरति नहि कदे।
धरे सदेह गए निज धामू। सगरे करति भए बिसरामू ॥ ५४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रथे पंचम रासे 'मीआं मीर प्रसंग' बरननं नाम बिंसती अंशु ॥ २० ॥

---

1. पुष्टि, आश्रय।

अंशु २१

कोलां को प्रसंग

दोहरा

बिन गुरू देखे दुख लहै कोलां बहु बिललाइ ।
रिदै बिलोकनि लालसा नहिं उपाइ को पाइ ।। १ ।।

चौपई

काज़ी अरु काज़नि मन जानै । चाबक लगे पीर को मानै ।
रुचि सों खान पान नहि कीनि । परी रही मुख पर पट लीनि ।। २ ।।
जबि संध्या होई तम छायो । दासी को कहि करि समझायो ।
जाहु पीर ढिग कीजहि अरज़ी । गुर जी ! दरशन बरजी[1] डर जी ।। ३ ।।
सुधि बुधि अपर रही नहिं कोई । केवल दरस-परायन होई ।
क्रिपा करहु बर बदन दिखावहु । मुझ मरती के प्रान बचावहु ।। ४ ।।
दासी ! दशा पिखति है जैसी । गुर ढिग करहु निवेदन तैसी ।
सुनति दुखातुर दीरघ जानी । दुइ दिनि महिं दुरबली महानी ।। ५ ।।
खान पान की रुचि जिन त्यागी । एकहु बारि महां अनुरागी ।
कहि दासी ने धीरज दीनि । 'क्यो तरफति ज्यों जलबिनु मीन ।। ६ ।।
करो शीघ्रता अतिशै नाही । विरह सिंधु ते पार पराहीं ।
तिमर भयो पिखि गमनी डेरे । हाथ जोरि करि खरी अगेरे ।। ७ ।।
'सुनहु पीर जी ! तुम सभि जानहु । भई बिकल बहु कहां बखानहु ।
दरशन को तरफति दिन रैनि । महा दीन मुझ सों कहि वैनि ।। ८ ।।
गुरू ढिग जाहु देहु सुधि मेरी । बितहि न दिन संमत[2] सम हेरी ।
परी प्रयंक बहुत बिललावै । 'हाइ हाइ' मुख सभनि सुनावै ।। ९ ।।
जानैं सकल चोट तन लागी । लखहिं न पीर छपी अनुरागी ।
होइ आपकी जथा रज़ाइ । तिस प्रकार मैं जाइ सुनाइ ।। १० ।।

---

1. मन में डर है कि दर्शन से वर्जित हूं । 2. वर्ष ।

श्री हरि गोबिंद प्रेम महाना। कौलां के मन को मन जाना।
क्रिपा धारि करि बाक सुनाए। धरहु 'धीर अबि बिलम न काए ॥ ११ ॥
डेरा कूच करावहि प्राती। तुझ ले संगि चढहि हम राती।
सभ निसि महिं जाग्रत ही रहीअहि। तुरंग हमारे को रव लहीअहि[1] ॥ १२ ॥
तत छिन तरे उतर करि आवहु। किस ते नही त्रास उपजावहु।
कोइ न जानि सकहि ले चलैं। आगै जाइ सैन संगि मिलैं' ॥ १३ ॥
सुनि दासी हरखति हटि आई। सभि कौलां के निकट सुनाई'।
रिदे अनंद बिलंद[2] उपावा। जनम-रंक जिम नवनिधि पावा ॥ १४ ॥
आछे हुते बिभूखन जोइ। दए वख्श दासी को सोइ।
ए री दई जान तैं मेरी। सदा असानवंद[3] मैं तेरी ॥ १५ ॥
जबि लगि रहैं प्रान तन माहिं। देत रहौं धन, बिसरों नाहीं।
उतरनि को निकेत बिधि जोई। कीजहि जतन त्यार ह्वै सोई ॥ १६ ॥
'नहि डर कछू पीर बच कह्यो। करहु कमंद जथा बिधि लह्यो।
इस ताकी[4] ते उतरो तरे। बहुर संभार लेउं मैं परे[5] ॥ १७ ॥
इत्यादिक सभि रचे उपाइ। निसि महिं त्यारी करति बिताइ।
दिवसि बिखै सुपतहि रहि परी। सभिनि दिखाइ अधिक दुख भरी ॥ १८ ॥
करहि निहोरनि बहु महितारी। कशट दिखाइ न खाइ अहारी।
सरब कुटंब म्रिदुल बच कहै। दुखी लखहि, मारी बहु, लहै ॥ १९ ॥
इति सत गुरु नैं निसा बिताई। कह्यो बाक 'सुनीअहि ब्रिध भाइ।
अबि लवपुरि क्या काज हमारो। शाहजहां ते हूजहि न्यारो ॥ २० ॥
संग लेहु डेरा सभि सैन। करहु मजल[6] टिकी अहि पिखि रैन।
पंच कोस अम्रितसर उरे। टिकहु प्रतीखनि हमरी धरे ॥ २१ ॥
हम निस महिं ह्वै कै असवारा। उलंघहि शीघ्र पंथ जो सारा।
आनि मिलहिं तुमरे संग होवैं। श्री अंम्रितसर दरशन होवैं ॥ २२ ॥
मानि बचन होए सभि त्यारी। गमन्यो सभि ते ब्रिद्ध अगारी।
सनै सनै सैना सभि मिली। श्री अंम्रितसर के मग चली ॥ २३ ॥
संध्या लगि सिख सेवक सारे। मिलि मिलि सतिगुर पंथ पधारे।
तंबू लग्यो रह्यो गुरु केरो। डेरो है मुकाम सभि हेरो ॥ २४ ॥
ढाढी[7] पातिशाह के जोइ। द्वै घटिका दिन आए सोइ।
चहैं सुनावनि अपनो राग। दरब लेनि को उर अनुराग ॥ २५ ॥

---

1. घोड़े की टाप भांप लीजिए। 2. ऊंचा। 3. अहसानमंद, कृतज्ञ। 4. खिड़की। 5. दूर, आगे। 6 मंज़िल। 7. चारण, वंदीजन।

तिन को पिखि निज निकटि बिठाए। श्री हरि गोबिंद बाक सुनाए।
'आज निसा सगरी तुम गावहु। बहु जोधा किय जुद्ध सुनावहु' ॥ २६ ॥
सुनि ढाढी मन हरख उपाए। जान्यो धन गुर ते बहु पाएं।
लगे सुनावनि जंग अखारे। भांति भांति के महिद[1] पवारे ॥ २७ ॥
सतिगुर बैठे तिनहुं अगारी। तान समैं गुर 'अहो' उचारी।
तंबू महिं बज रह्यो रबाब। गावैं ऊचे राग अजाब[2] ॥ २८ ॥
काज़ी हित धन लेनि उपाइ। शाहजहां सो सकल सुनाइ।
'कर्यो देनि जिस दिन तकरार। करि सीने-ज़ोरी दै टार ॥ २९ ॥
आज काल कहि देति सु नांही। तुम जो पठहु मनुख को तांही।
तबहि दरब पाले मम परिही। नाहि त टार इसी बिधि करिही ॥ ३० ॥
शाहजहां कहि 'होवहि भोर। ले नर जाहु गुरू की ओर।
कहि कै सरब दरब दिलवावहि। सो भी नहिं राखहि, चित आवहि ॥ ३१ ॥
संध्या समैं पिख्यो गुर डेरा। 'अहै अलप नहि रह्यो घनेरा।
चले न जाहिं दरब को लै कैं। आस चिंता चित काज़ी कै कै ॥ ३२ ॥
गयो अगारी तिस ही थाना। तिमर भये हटिआ इत जाना।
गावनि को सुनि शबद बिलंद। लख्यो अहैं श्री हरि गोबिंद ॥ ३३ ॥
लैउं भोर को अपनो दरब। जोर दिखाइ शाहु को सरब।
होइ निचिंत टिक्यो निज थान। एक लालसा दरब महान ॥ ३४ ॥
बैठ्यो राग सुनै गुर पूरा। तान समैं मुख देति हंगूरा।
ज़ीन तुरंग कस्यो ढिग खर्यो। तथा आप सवधानी कर्यो ॥ ३५ ॥
बखश्यो दरब रीझ कई वार। तान सराहै बिबिधि प्रकार।
आधी निसा बीति जबि गई। उठि सतिगुर निज त्यारी कई ॥ ३६ ॥
वहिर निकसि करि चढे तुरंग। ब्रिंद शसत्र पहिरे निज अंग।
तंबू महिं तिम होति हंगूरे। जथा देति बैठे गुर पूरे ॥ ३७ ॥
हुते जितिक तहिं गावनिहारे। नहि जाने नहि नयन निहारे।
प्रथम समान जानि गुरू बैसे[3]। सुनति हंगूरा[4] गावहिं तैस ॥ ३८ ॥
जो लगि प्रात होति तम रह्यो। तौ लगि सभिनि तहां गुरु लह्यो।
दरब अधिक प्रापति को जाना! गावहिं रागनि बिद्या नाना ॥ ३९ ॥
पूरब ही नहिं दीप जगायो। सिवर कूच करि दीनि सुनायो।
'इसी रीति गावहु हम बैसें। गावति रहे राग मिलि तैसे ॥ ४० ॥
सतिगुर हम को अग्र चलायो। जित काज़ी को सदन सुहायो।
पहुचति भए तुरंग टिकायो। चाहति कौलां तरे बुलायो ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे 'कौलां को प्रसंग' बरननं नाम इकविंसती अंशु ॥ २१ ॥

---

1. बड़े बड़े पराक्रम (युद्ध)। 2. अद्भुत। 3. बैठे। 4. हुंकार।

अंशु २२

सुधासर आवन

दोहरा

कौलां करति प्रतीखना लोचन रही लगाइ।
दासी संग सहाइता चाहति काज वनाइ ॥ १ ॥

चौपई

जबि सतिगुरु लखि मंदर काजी। तरे दरीची के किय बाजी।
ततछिन कौलां लखि आगवनू। तूरन चहति तज्यो निज भवनू ॥ २ ॥
सतिगुरू अज़मत-जुति[1] रिपुदवनू। जानि रिदै डर करहि न कवनू।
धरि कमद[2] तर को लटकाई। करि दासी के द्रिढ गहिवाई ॥ ३ ॥
तूरन तरे उतर करि आई। गुरु पग-पंकज गहि सिर लाई।
रिदे अनंद बिलंद उमंगा। भयो रोम-हरखन सभि अंगा ॥ ४ ॥
गदगद गिरा न कुछ कहि जाई। गही बांह गुर बेल[3] चढाई।
प्रेर्यो हय पुरि बाहरि आए। बडे बेग बायू सम जाए ॥ ५ ॥
कितिक दूर जबि गए अगारी। खरे पंच सिख आयुध-धारी।
जेठा आदिक बीर ब्रिसाले। मिले गुरू संग आगे चाले ॥ ६ ॥
खशट तुरंग चपल बलि भारी। चलहिं चाल सुखदा असुवारी।
थोरे काल दूर चलि जाई। नहिं असवारन परहिं लखाई ॥ ७ ॥
जब कुछ पता लखहिं कै ऊचे। तबि जानहि 'हम आन पहूंचे।
जबि अरणोदै होवति जाना। उतर परे सतिगुर इक थाना ॥ ८ ॥
कह्यो 'सुधासर केतिक रह्यो। इस थल को आछे तुम लह्यो।
तबि सिक्खनि कर जोरि बखाना। 'गुरू गरीब निवाज सुज़ाना ॥ ९ ॥
सपत कोस अबि ताल अमी[4] को। आनि पहूंचे सदन नजीको[5]।
थिरहु आप कीजै बिसरामू। घोरे हुते शीघ्र बहु-गामू[6] ॥ १० ॥

---

1. शालीन 2. धनुष के आकार का फंदा 3. घोड़े ली पीठ 4. अमृतसर 5. नज़दीक, निकट 6. बहुत तेज जाने वाला।

गुर बूझनि कीने सिख फेर। जान्यो कौन पता तुम हेरि।
इस थल चहूं दिशनि वन गाढो। लघु तरु अहै न ऊचा ठांढो॥ ११॥
निकट ग्राम भी लखीयति नाहि। महाँ उजार सभिनि दिशि मांहि।
पुन सिख भेती[1] तहिं के हुते। लगे बतावनि सगरे पते॥ १२॥
'मादो के बैराड़ जु नाम। अहै निकट सो जानहु ग्राम।
कई बार हम इत को आए। मग के भेती सभि लखि पाए'॥ १३॥
तहां चौतरा इक तिहारा। तरुपलास के तरै सुधारा।
तिस पर आसन डासनि कीनि। बैठि गए सतिगुरु प्रबीनि॥ १४॥
गह्यो पिराणे गुरू तुरंग। बांधी डोर तरोवर संग।
चलदल[2] ब्रिच्छ निकट इक भारी। तहिं बैठी कौला हुइ न्यारी॥ १५॥
ज्यों ज्यों रवि प्रकाश दिखरावै। त्यों त्यों पिखि सरूप बलि जावै।
कहै कि धंन भाग हैं मेरे। जिनते पीर[3]-पीर मुख हेरे॥ १६॥
जेठे संग कह्यो 'फिर करिकै। करहु आनि सुचि, नीर निहरि कै।
सुनि आइसु इत उत बहु फिरयो। घनो नीर नहिं कहूं निहरयो॥ १७॥
कह्यो आनि करि अपर न नीर। कछुक इही है जो तुम तीर।
सो महिखनि[4] लिटि करदम घोरा। जल मोटो दीखति इस ठोरा॥ १८॥
गुरु कह्यो 'अबि आछो इही। छित सो मिलि जल पावन लही।
होइ बिमल हम चहैं शनाना। नाम 'गुरू सर' हुइ इस थाना॥ १९॥
अपर सिक्ख जे मज्जन करहिं। संकट बिकट तिनहुं के टरहिं।
इम कहि सतिगुर कीनि शनाना। बैठि सरूप ध्यान को ठाना॥ २०॥
पुन पंचहु सिख मज्जन कीना। आयुध धरे खरे[5], बन चीना।
चहुं दिश रहे सुचेत फिरंते। मनहुं शेर निरभै बिचरंते॥ २१॥
पुन कौलां कीनसि इशनाना। दूर खरी हुइ बंदन ठाना।
तिस चल-दल के तर तबि आई। गुर मूरति रवि दै दिखराई॥ २२॥
कमल विलोचन विकसति जाति। रिदा अनंद ब्रिलंद उदात।
कितिक दिवस बैठे जबि चर्यो। गुरू ध्यान उर को तबि टर्यो॥ २३॥
चह्यो सुधासर को तबि हेरनि। जुग सिखनि को कीनसि प्रेरनि।
'आनहु जाइ कहारन ग्रामू। हित कौलां ले चलिबे धामूं॥ २४॥
तुरंग धवाइ जाइ करि आने। बसत्र शसत्र गुर पहिरनि ठाने।
कीमति लच्छ दरब की जाहिं। हय मंगवावति के तबि पाहि॥ २५॥

1. भेदिये। 2. पीपल 3 पीरों के पर' गुरुओ के गुरु 4. महिषी, भैंस 5. 'खरा' नामक योधा ने।

भए अरूढनि कीनसि पयाना। सनै मनै गमने बलवाना।
सभि सैना चलि आइ अगाऊ। मिले नमो करि उर धरि भाऊ॥ २६॥
पहूंचे श्री अंम्रितसर तीर। मिली आइ गन सिक्खनि भीर।
बहु उतसव को सकल करंते। शबद गुरु के मुख उचरंते॥ २७॥
जुग पद पदम सदन सुख केरे। बंदहि सतिगुर के हुइ नेरे।
जाइ सु पहूंचे तखत अकालं। उतर परे तिस थान क्रिपालं॥ २८॥
धरि प्रसादि अरदास कराई। पुन सभि कौ दीनसि बरताई।
बहुरो गए दरशनी पौर। नंम्रि भए सोढी सिर मौर॥ २९॥
पुन पहुंचे दरबार अगारी। सनमुख होइ बंदना धारी।
कीनि प्रकरमा फिर चहुं वारी। दरशन दरस प्रमोदति भारी॥ ३०॥
गंग मात के सेवक आए। मिले धाइ करि सिख समुदाए॥
पिख्यो अगारी आवति डोरा[1]। बूझनि कर्‌यो 'आइ कित ओर'॥ ३१॥
जो सिक्ख जानति तिनहि बतायहु। 'इह डोरा श्री सतिगुर ल्यावहु।
काजी की तनुजा बडभागनि। गुरु तन सों होइ अंनुरागनि॥ ३२॥
धाइ गए श्री गंग पास। सरब बार्ता कीनि प्रकाश।
सुनति मात ने रिस उपजाई। 'पुत्र कहा करतूत[2] उपाई'॥ ३३॥
इतने महिं श्री हरि गोबिंद। आइ करी बंदन करि बंदि।
बहु सनेह ते निकटि बिठाए। मसतक सूंघति प्यार बधाए[3]॥ ३४॥
'सुनहु पुत्र! इह क्या तुम कीना। जिसते सुजसु होइ जग हीना।
तुमरो उत्तम बंस बिसाला। कौन करहि इसि भाँति कुचाला॥ ३५॥
सभि ते बडि श्री नानक गादी। तिस पर तुम थित नित अहिलादी।
अपनी क्यों न पिखी वडिआई। कहै कहाँ संगति समुदाई॥ ३६॥
बेदी तिहुण जु भल्लयनि बंस। कुल सोढिनि सभि को अवितंश।
क्या नहिं निंदा करहिं तुमारी। महाँ अनुचिति रीति जो धारी॥ ३७॥
पिता तुमारो शांति सुभाऊ। पीर मीर राखहिं जिन भाऊ।
जग महिं तुम सभि के सिर मौर। नहीं मनिंद होति को औरि॥ ३८।
इस कुकरम को कैसे कीनसि। किसकी नहीं जिठाई[4] चीनसि'।
श्री हरिगोबिंद सुनि करि बैन। जननी ते करि नीचे नैन॥ ३९॥
कहति भए 'हमरे वसि नांही। हुती जि बसि तो करते कांही।
बली पुरख ने इम करवायो। किय बिचार कुछ जसि न बसायो॥ ४०॥

---

1. डोला। 2. कृतित्व। 3. बढ़ाए। 4. ज्येष्ठता, बज़ुर्गी।

इह कारज को कीनि लचार[1]। बहु असमंजस रहे बिचार।
इम कहि तूशनि हुइ चलि आए। पुन डोरा महिली पहुंचाए॥ ४१ ॥
गंग बिलोकति रिस उपजाई। 'इस को मेल नहीं इस थाईं।
महां कुजसु इह को घर राखे। चली जाहि जित ह्वै अभिलाखे'॥ ४२ ॥
श्री गंगा ने दीनि जबाब। सुधि आई गुर निकटि शिताब।
पैंड़ा देख्यो खरो अगारी। करि समीप को गिरा उचारी॥ ४३ ॥
'दक्खण दिशि श्री अंम्रितसर ते। पिखहु सुथल समीप बट तरुते।
तहिं तंबू को दिहु लगवाइ। डोरे कहु डेरा करिवाइ॥ ४४ ॥
होति प्राति कारीगर गन को। दिहु लगाइ करि लेहिं सदन को।
तूरन बनहिं बिलम हुइ नाँही। सरब वसतु पहुंचावहु पाही॥ ४५ ॥
इसत्री कितिक निकट तिस रहैं। हुइ अनुसारि करहिं जिम कहैं'।
हुकम पाइ करि तूरन गयो। काज जथोचित करति सु भयो॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रास 'सुधासर आवन' प्रसंग बरननं नाम दोइबिसंती अंशु ॥ २२ ॥

---

1. लाचार, विवश।

अंशु २३

काज़ी प्रसंग

दोहरा

श्री गुर बासे महिल निज खान पान शुभ कीनि ।
रामदास पुरि महि वहां उतसव करि सुख भीनि ॥ १ ॥

चौपई

दीप-मालका जहिं कहिं होई । घर घर हरखति हुइ सभि कोई ।
गुरू सराहति आपस मांहू । 'डील बिलंद[1], करी-कर[2] बाहू ॥ २ ॥
मुख मयंक सुंदर अकलंका । बन्यो बनाउ बीर बर बंका ।
केचित कहहि 'मोहि सो बोलो । मुसकावति पिखि दसन अमोलो' ॥ ३ ॥
'बूझी कुशल मोहि' कहि कोई । कहि को 'क्रिपा द्रिशटि मुझ होई' ।
केचित कहैं 'बिलास सुशील' । बरनह को 'बिलंद बर डील' ॥ ४ ॥
दीपक बारे ऊच अटारनि । सदन सदन के सुंदर द्वारनि ।
'बहु दिवसनि महिं बसे अवास । जहांगीर ले गमन्यो पास' ॥ ५ ॥
पुरिजन इस प्रकार बहु रीति । करहिं सुजसु को उर धरि प्रीत ।
बीच बजारनि दीपक बारे । बहु रवणक[3] होई पुरि सारे ॥ ६ ॥
सुपति जथा सुख निसा बिताई । भोर भई उठि करि समुदाई ।
सौच सु मज्जन करि करि सारे । श्री हरि गोविंद रूप निहारे ॥ ७ ॥
सभि संगति को दरशन देति । मन बांछति फल गुर ते लेति ।
बजहिं रबाब म्रिदंग सुहाए । गावहिं शबद राग समुदाए ॥ ८ ॥
पंचाम्रित करि करि बहु आनहिं । खरे होइ अरदास बखानहिं ।
जाम चढ़े दिन अचवि अहार । पुन प्रयंक पौढे सुख धार ॥ ९ ॥
सतिगुरु उठे मंगाइ तुरंग । भये अरुढनि कुछ भट संग ।
बाज लए हित करनि अखेर । नेर नेर फिरि करि तहिं हेरि ॥ १० ॥

---

1. ऊंचा कद 2. हाथी की सूंड 3. रौनक, गहमा गहमी

उत काज़ी की सुनीयहि बात। उठति भयो सु प्रकाशे प्रात।
घर की सुधि कुछ नहि तिस काला। उठति मूढ कारज को चाला॥ ११॥
किस उमराव निकटि थो जाना। तजि सोवनि थल कीनि पयाना।
आइ बरोबर जबि गुर डेरे। नर गन ढिरते तहां न हेरे॥ १२॥
संसै कर्‍यो 'सुपति क्या अबि लौं। निशचै होहि न हेरहिं जबि लौ।
थिर हुइ आछी रीति निहारा। जान्यो मन महिं 'गुरू सिधारा'॥ १३॥
तजि मग को डेरे महिं गइऊ। इक तंबू निर देखनि भइऊ।
दलक्यो रिदा[1] चित दुख भारा। धन गन ले मम गुरू पधारा॥ १४॥
हुकम शाहु ने कीनि दिवावनि। सो किन कोनहु इनहिं सुनावनि।
गए भाग देनो धन परै। बल ते शाहु दिवावनि करै॥ १५॥
हुइ हैं श्री अंम्रितसर गए। अपने सदन पहुंचति भए।
होइ न अस तहिं ते चलि जांही। बहुत दरब प्रापति ह्वै नाहीं॥ १६॥
जंगल देश जहां नहिं पानी। बिगर परहिं पहुंचहिं तिस थानी।
तहां न त्रास शाहु को होइ। जल बिन सैन जाइ नहिं कोइ॥ १७॥
यां ते उचित मोहि को जाना। मिलौं लेहु धन अबि तिस थाना।
जे बल करहिं न देवैं सोइ। आइ शाहु ढिग कहिबो होइ॥ १८॥
सैना लैके बहुर सिधावौं। शाहु हुकम बल ते सभि ल्यावौं।
इम गिनि कै मन गयो तबेले। जीन तुरंग पर तूरन मेले॥ १९॥
एक नफर लैं संगि सिधारा। सुधि बूझति 'गुरु नगरि मझारा'।
सुनति मारगी[2] देति बताइ। सतिगुरु सदन बिराजे जाइ॥ २०॥
उतसव आदिक दीपक-माला। छुटी तुफंगै शलख[3] बिसाला।
संगति आवति जाति अनेक। मुंजस करति बहु जलधि बिबेक॥ २१॥
सुनि काज़ी उर निसचै आवति। निज पुरि घर तजि करि किम जावंति।
इहां रहति धन रहहि न मोरा। लेवों भले पाइ करि जोरा॥ २२॥
बिगर्‍यो बिध दिवान मुझ संग। सो कहि करहि न कछू कुढंग।
देहि सुखेन तऊ रस रहै। नतु बिरस, बिगर्‍यो ही अहै॥ २३॥
इम चितवहि चित चिंता संग। मूरख लिखहि न भयो कुढंग।
पहुंच्यो राम दास पुरि आइ। सुंदर सदन शुभति समुदाइ॥ २४॥
तित दिशि गुरु अखेर सिधारे। निरखे हय पर है भुज भारे।
देखि दूर ते हरखति होही। लख्यो —'खुदाइ मदत[4] बहु मोही॥ २५॥

---

1. हृदय। 2. पथिक। 3. बंदूकों की बाढ़। 4. मदद, सहायता।

हुतो नगर महिं सदन प्रवेशा। होति मिलनि महिं विलम विशेशा।
वहिर तुरत ही कहिबो होइ। देति कि नहीं, परखहैं सोइ॥ २६।
गयो निकटि झुकि करी सलामू। टिके, गए मिलि सुभट तमामू।
'काज़ी! आउ' कही गुरु बानी। 'आवनि इतहि शीघ्रता ठानी॥ २७॥
लखीयति दरब हेतु करि धाए। आछी करी तुरत चलि आए।
सुनि काजी बोल्यो हरखाना। आप अचानक कीनसि प्याना॥ २८॥
हक तो लख्यो दिवान तुमारा। बिन सुधि आप भए असवारा।
थिर्‌यो न गयो रिदे ध्रित धरिकैं। यांते आयो तूरन[1] करि कैं॥ २९॥
आज काल करते दिन बीते। बिना लिए किम ग्राइ प्रतीते।
श्री हरि गोबिंद परखनि ठाना। 'सता प्रसंग न लख्यो अजाना'॥ ३०॥
सबि सुभटनि भी जान्यो ऐसे। दुहिता[2] बात न जानी कैसे।
सादर सतिगुर तबहि बखाना। 'लिहु अपनो धन जेतिक जाना॥ ३१॥
रहहु रैनि कहु प्रात सिधावहु। धन की हुंडी लिखि ले जावहुं।
लए संग गुरु पुरि को मुरे। गमन कीनि केतिक जबि उरे॥ ३२॥
इक सेवक को निकटि हकार्‌यो। सहज करनि[3] महिं बाक उचारयो।
'तूरन हम ते जाहु अगारी। देहु सुधि कौलां पास उचारी॥ ३३॥
लवपुरि ते आयहु पित तेरो। कीजहि त्यार अहार घनेरो।
हम भेजहि तुव निकटि निहार। अपने हाथ परोसहु थार॥ ३४॥
हांकि पौन ठानहुं सनमाना। बैठि समीप खुलावहु[4] खाना।
सुनति सऊर[5] धवायहु घोरा। तूरन गमन्यो तिस घर ओरा॥ ३५॥
दासी को हकार कर भाखा। 'कहु माता संग हम गुरु कांखा[6]।
'तोर पिता लवपुरि ते आयहु। दिहु अहार ढिग बैठि खुलावहु॥ ३६॥
गुरु की कहिवति[7] सकल सुनाई। उर अनंद सभि तथा बनाई।
मधुर सलवन अनेक प्रकारा। बहु स्वादल करि त्यारि अहारा॥ ३७॥
गुरु आइसु अरु निज पित जाना। यांते भली भांति सभि ठाना।
सतिगुर आए लाइ दिवान। बैठे सिक्ख सुभट-गन आनि॥ ३८॥
काज़ी को निज निकट बिठायो। सादर धन को देनि अलायो।
'खायो कै नहि मग महिं खाना। किधौं न उतरे किसहूं थाना॥ ३९॥
काज़ी कह्यो बनहि इक काल[8]। मारग चलिवे जतन बिसाल।
अबि त्यार करि कै अचि लेंहैं। एक निसा तुम निकट रहैहैं॥ ४०॥

---

1. तुरंत 2. दुहितृ, पुत्री 3. कानों में 4. खिलावो 5. सवार, अश्वारोही
6. आकांक्षा की 7. कथनी 8. एक जून।

तबि श्री हरि गोबिंद उचारा । 'प्रथम पठ्यो कहि भयो सु त्यारा ।
अहो छुधति लहु खाना खाइ । तुरत मेल अपने महिं जाइ ।। ४१ ।।
इक सेवक सों सहिज सुनायहु । काज़ी को निज संग लिजाहु ।
कौलां के ग्रिह दिहु पहुंचाइ । सो इस खाना देहि खुलाइ ।। ४२ ।।
सुनि गुर दे काजी संग लीनि । उठयो नफर जुति छुधा अधीन ।
तिस तनुजा के थान पुचायो । आगे पिख्यो प्रयंक डसायो ।। ४३ ।।
तहिं दासी ते आनि बिठावा । पिखि दल को काज़ी हरखावा ।
'किसी तुरक को सदन पछाना । करिवायहु गुर मुझ हित खाना ।। ४४ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रासे काज़ी प्रसंग वरननं नाम त्रैब्रिसंती अंशु ।। २३ ।।

अंशु २४

काज़ी प्रसंग

दोहरा

काज़ीं सथिति प्रयंक पर तरे नफर बैठाइ।
कौलां को तबि सुधि करी दासी अंतर जाइ॥ १॥

चौपई

भांति भांति के त्यार अहार[1]। करि चतुराई परोस्यो थार।
कर दासी के प्रथम पठायो। पिखि काज़ी ने हरख उपायो॥ २॥
आगै कीनसि थार रखावनि। हुतो छुधिति सो लाग्यो खावनि।
केतिक खाइ लीनि जबि खाना। आछी बिधि सों नहिं तृपताना॥ ३॥
'उठहि न छुधिति' जानि मन माही। पुन कौलां ग्रावनि को चाही।
भोजन कछुक हाथ मैं धारा। चली होति भूखन झुनकारा॥ ४।
काज़ी मूढ हेरि अभिरामू। मन महि कहै आइ को बामू।
बसत्र बिभूखन मोल बिसाले। नादति करहि सदन जबि चाले॥ ५॥
नीचे नयन करे चलि आई। काज़ी ने उत द्रिशटि लगाई।
निकट अनि जबि सनमुख हेरा। 'बावा जी! सलाम लेहु मेरा'॥ ६॥
पिखति सुनति जबि परखनि ठानी। मूरख बूड गयो बिन पानी।
इह तनुजा कित को चलि आई। ग़रक होनि छिति छिद्र न पाई॥ ७।
थिर्यो, ग्रास को हाथ न हाला[2]। नहो खान के हित मुखु चाला।
अंतर अंन न सकहि लंघाई। भयो सोच वसि बाहर आई॥ ८॥
कुछक नीर सों हाथ पखारे। करकति सर छाती जनु मारे।
बिसरि गई सुधि तन अरु मन की। कहां बात लैवे निज धन की॥ ९॥
चक्रित होइ गटी उर गिनै। 'अब मो को करतब[3] क्या बनै'।
उठनि हेत कौ तन उकसावा। कौलां कहे 'रिस्यो किम बावा'॥ १०॥

---

1. खाना तैयार। 2. नहीं हिला। 3. कर्त्तव्य।

खाना खाहु दरब निज लेहू। होत प्रात के गमनहु ग्रेहू।
चीरा चरम लवण जनु डाला। ब्रिख सम बोल्यो निठुर बिसाला ॥ ११ ॥
'हे खुदाइ-मारी! क्या करी। जनमति क्यों न प्रथमही मरी।
अजहू बोलति निडर निलाजा। गई आबरो दीरघ आजा' ॥ १२ ॥
'सुनीअहि पिता! खुदाइ न मारी। भा सहाइ भव-सागर तारी[1]।
धंन आप को मानि अनंदहु। परवदगार बंदि करि बंदहु ॥ १३ ॥
इम सबंध कादर ने कीनि। पीरन-पीर आसरा दीनि।
जिस को ज़ाहर जगत जहूरा। हिंदु तुरक जिस कहिं गुरू पूरा ॥ १४ ॥
मैं तो तरी[2] परी शरनाई। निकसी नरक, सुरग महुं आई।
अबि तूं करहिं कामना जैसे। भली कि बुरी लहैं फल तैसे' ॥ १५ ॥
सुनि काज़ी उर जरि-बरि गइऊ। गमनति बहिर कहति इम भइऊ।
'है सद हैफ़! लाज कुल तोटी। मारति प्रथम लखति अस खोटी ॥ १६ ॥
अबि भी फासी दे तुझ मारौं। नहि परंतु बसि चलहि बिचारौं'।
इम कहि गारी ब्रिद निकारति[3]। निकस्यो बहिर शोक रिस धारति ॥ १७ ॥
श्री हरिगोबिंद थिति जिस थान। लग्यो समीप दिवान महान।
तहां तुरंग बांधि करि गयो। लैबे हेतु सु आवति भयो ॥ १८ ॥
बुरका मनहु लाज को पावा। नहिं ऊचे को बदन उठावा।
श्री गुर पिख्यो दूरि ते आवति। सुंदर बदन मंद मुसकावति ॥ १९ ॥
अपर जि सिख जानहिं बरतांत। देखि गुरू की दिशि मुसक्याति।
निज तनुजा सों मिलि करि काज़ी। रिस्यो रिदै कै होयसि राज़ी ॥ २० ॥
आवति दिखति क्रोध ते दीन। नीचे कीनसि बदन मलीन।
सतिगुर भन्यो सु 'जान्यो जाइ। मिलि तनुजा संग भा जिस भाइ' ॥ २१ ॥
खरे होइ ढिग नफर पठावा। हित अरूढिबे तुरंग मंगावा।
श्री हरिगोबिंद दास पठायो। काज़ी को समीप बुलवायो ॥ २२ ॥
जबि सेवक ने जाइ हकारा। महां क्रोध ते निठुर उचारा।
'मैं नहिं जाउं अहै दुख-दानी। कौन गुरू, क्या करही बखानी ॥ २३ ॥
आनि चनूं बहु करौं जबै। मिलौं भले अरु बोलौं तबै।
सेवक कह्यो गुरू ढिग जाइ। 'निकट न आइ करहि बकबाइ[4] ॥ २४ ॥
मैं सैना-गन कौ ले आवौं। गहौं गुरू तबि बदला पावौं।
इत्यादिक रिस करि करि कहै। मूरख ब्रन्यो न शांती लहै' ॥ २५ ॥

1. तैराने वाला। 2. तैर गई, पार आ गई। 3. गालियां देता। 4 बकवास।

पुन[1] गुर, बिधीआ जेठा-जोऊ। 'आनहु काज़ी' पठे सु दोऊ।
जाहु म्रिदुल सनमान बखानहु। गहि भुज दोनहु हम ढिग आनहु ॥ २६ ॥
जाइ कह्यो 'क्यों कोप करीजै। सति गुर ढिग गमनहु धन लीजै'।
'मैं न मिलौं नहि लैहों धन जो। नहीं लख्यो अस कपटी मन को' ॥ २७ ॥
गही बांहु रिस करति छुरावति। तऊ दुऊ बल धरि ले जावति।
कोमल कहित गए ले तीर[2]। बोले श्री हरिगोबिंद धीर ॥ २८ ॥
'दस हजार लिहु आपनि दरब। नहीं बिलम गिन देवहिं सरब।
लर्यो ब्रिद्ध के साथ बिसाला। तिम सो फल पाइसि इस काला ॥ २९ ॥
सुन काज़ी कहि धन नहिं लैहौं। इह सभि शाहु निकट कहि देहौं।
गहि तुम को सभि लेउं उधारो। नांहि त त्यागि देउ मैं सारो ॥ ३० ॥
मोर आबरू बडी उतारी। शाहु कचहिरी मानहिं सारी।
तनुजा मम लुभाइ ले आए। इस को फल तूरनि लिहु पाए' ॥ ३१ ॥
गुर कहि 'अहै अपर जो झगरा। जिम चहि तथा निबेरहु सगरा।
कै तुम दरब लेहु निज अबै। नतु भाखहु हम लीनहु सबै ॥ ३२ ॥
नही करज सिर रहै हमारे। तीन बारि हम करहु उचारे।
तोहि अरिणी होहिं हम तबै। लेहु दरब कै त्यागहु सबै ॥ ३३ ॥
लीनि सथान अहैं हम तेरे। इह कारण ते कहु त्रै बेरे'।
सुनि काज़ी कहि 'गहिहौं तुमैं। लैबो दरब करौं तिह समें ॥ ३४ ॥
नाहिं त कह्यो सरब मैं छोरा। क्या मुख लै आवों तुम ओरा'।
पुन गुर कह्यो 'जि दरब न लेति। निसा बसहु बहु श्रमहि समेति ॥ ३५ ॥
जो बल होइ सोऊ कर लीजै। रात बितावनि सुख सो कीजै'।
'मोहि छुटावहु मैं नहि रहौं। लवपुरि अबहि पहुंचबो चहौं ॥ ३६ ॥
थक्यो नहीं अबि हटि करि जावौं। सहि न सकौं उर पिखि पछुतावहौं।
तबि सतिगुर कहि भुजा छुटाई। चढ्यो तुरंग कशट बहु पाई ॥ ३७ ॥
संग नफर ले तूरन प्रेरा। गमन्यो काज़ी क्रोध घनेरा।
जाहिं लग मग महिं तम नहीं छावा। तहिं लौं चल्यो गयो श्रम पावा ॥ ३८ ॥
हेरि ग्राम को उतर्यो थाना। चिंता बसी भयो दुख मानि।
नीठ नीठ[3] करि निसा गुज़ारी। उठ्यो प्रात कीनसि असुवारी ॥ ३९ ॥
दिवस आगले पहुंच्यो जाई। पुरि महिं सुधि पसरी[4] अगवाई।
काज़ी सुता अधिक निज मारी। निकसि गई अति दुखी बिचारी ॥ ४० ॥

---

1. पुनः, फिर। 2 पास। 3. जैसे तैसे, कठिनता से। 4. खबर फैली।

निंदा सुनति आपने कान। बदन बसन ते छादनि[1] ठानि।
तूरन[2] तुरंग प्रेर करि गयो। काज़नि रुदति बिलोकति भयो ॥ ४१ ॥
नहिं बोल्यो कुछ संकट पावा। बैठि इकाकी बहु पछुतावा।
दोश आपनो रिदै बिचारति। रहति सदन, जे मैं नहिं मारति ॥ ४२ ॥
भई तरुन नहिं कर्‌यो निकाह[3]। इत्यादिक गिन करि मन माहि।
तिस दिन शाह समीपि न गयो। चितातुर घर महिं दुख भयो ॥ ४३ ॥
काज़नि झिरक्यो बहु रिसि धरिकै। वार बार शरमिति करिकै।
'गई गुरू संग' कहि भा मौनि। निसा बितीति करी निज भौन ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रासे 'काज़ी प्रसंग' बरननं चतरबिंसता अंशु। २४।

1. ढक कर। 2. तुरंत। 3. विवाह।

अंशु २५

पातशाह ते काज़ी पुकार सुधि आवन

दोहरा

उठ्यो प्रात सुधि पाइ करि मुख पखार ले बार।
कहन शाहु ढिग मदति हित चित बिचारि बहुवार ।। १ ।।

चौपई

बसत्रनि पहिरि कचहिरी गयो। पातिशाह को देखति भयो।
करि सलाम बहु बारि अगारी। बोल्यो अपनी कीनि पुकारी ।। २ ।।
'हरिगोबिंद हिंदुन को पीर। करी सु कहौं आप के तीर।
रोगी तुम तुरंग मुझ दीनि। तिन हज़ार दस मोल सु लीनि ।। ३ ।।
करे उधार न अबि लौ दिए। आज काल कहि टारो किए।
अबि तनुजा मेरी बिरमाई। पुरि ते निकस्यो गयो पलाई' ।। ४ ।।
रुदिति कहति नहिं समझी गाथ। आगै शाहु रिस्यो किह साथ।
रकत नेत्र ते ताड़ति कांहू। काज़ी पहुंच्यो इतने माहूं ।। ५ ।।
पटकी सिर ते पाग उतारी। 'मुझ को कीनिसि जगत खुआरी'।
कुपति शाहु कहि 'मेलति रौरा[1]। समझ न परहि कहति जिम बौरा ।। ६ ।।
नांगो सिर नहिं करहु अगारी। भलो सयानो ज्यों मति मारी'।
शाहु रिसत पिखि तूशनि रह्यो। निकटि बज़ीर खान तबि कह्यो ।। ७ ।।
'हज़रत ! सुनहु कहां किस कहीअहि। कलि जुग समां कहिर को लहीअहि।
तनुजा तरुन कीनि दुखिआरी। कर्‍यो निकाह न दिन प्रति मारी ।। ८ ।।
हुइ लचार निकसि ग्रिह छोरि। बिचरति गई सुधासर ओरि।
इस को मारनि ते डरि धरि कै। बसी तहां आइ न मुरि करि कै ।। ९ ।।
श्री गुर को घर सदा क्रिपालु। परे अनेक रहहि नर बाल[2]।
अंन सभिनि को देते रहै। असन बसन बसहि जु तहि लहै ।। १० ।।

1. शोर। 2. बाला।

तिन पर करति पुकार अजान। जिनहुं दीन बड हजरत प्रान।
मीआं मीर आदि जो पीर। जिन ते अदब्र करहिं मिलि तीर॥ ११ ॥
नहीं आप को बिगरनि बनै। यांते क्यों तुम इन ते सुनै।
तनक बाति क्या इसकी अहै। खलकति सगरी तुम सुख चहै'॥ १२ ॥
शाहजहां सुनि कै सभि बाति। काज़ी सों कहि 'क्यों न लजाति।
तोहि न उचित हुती इम करनी। रखी निकेत तनूजा तरुनी॥ १३ ॥
पीर फकीर संग नहिं अरना[1]। इनको सदा अदाइब[2] करना।
जे मुख ते कहि देति कुवाक। करहिं पलक महि बड गिर[3] खाक॥ १४ ॥
बीच कचहिरी परदा पारा। देश बिदेशनि महिं भा ख्वारा।
घर तजि निकसी गयो इमान। पुन आनहि क्या कहहि जहान॥ १५ ॥
धरो मौन नहि ज़िकर चलावहु। अपनो कर्‌यो पाइ पछुतावहु।
सुनि काज़ी मुख नीचे कर्‌यो। कहे शाह के अति दुख भर्‌यो॥ १६ ॥
'बोलन ते भी मोहि हटायो'। परी पाग सिर हटि करि आयो।
रिदे बिचारति 'क्या इह भयो। जित कित ते संकट हुइ गयो॥ १७ ॥
दस सहस्र जो दरब सरब है। राखहि गुरू गहीर[4] गरब है।
मुझ को जानहि त्रिण सम रंक। अबि कैसे करि धरै अतंक[5]॥ १८ ॥
देहि न धन, तनुजा ले गयो। मरन मनिंद[6] मोहि करि गयो।
जिसको जतन न अबि कछु बनै। पलटा, गहनि कि प्रानन हनै॥ १९ ॥
शाहजहां पर हुतो भरोसा। सो उचरनि लाग्यो मम दोशा।
कहां खुदाइ कीनि संग मेरे। संकट हेरति हौं चहुं फेरे॥ २० ॥
सकल कुटंब रुदति करि नेहू। अस बिछुरी जो मिलहि न केहू।
रिदै बिसूरि बिसूरि पर्‌यो है। गुरू-द्रोह ते कशट पर्‌यो है॥ २१ ॥
बहुर न ज़िकर कर्‌यो किस थान। जानति लाज होति मम हान'।
शाहजहां आछी मन चीन। खान वज़ीर सराहनि कीनि॥ २२ ॥
'तैं आछी मसलति कहिं दई। जिस ते बडी बाति नहि भई।
गुर सो परै अचानक बैर। जिस ते बिनसहि तन की खैर॥ २३ ॥
काज़ी करम करे कुरिआरे[7]। बिगरति गर पर[8] जाति हमारे।
क्या लैनो क्या देनो तिन सों। कहनि वाक ते डरीअहि जिन सों'॥ २४ ॥
सुनि वज़ीर खां पुन समुझावैं। 'रावरि कुशल सभिनि को भावैं।
हजरत! बडे पिता जु तुमारे। तिन ढिग चंदू छल-बल धारे॥ २५ ॥

---

1. अड़ना। 2. आदर। 3. गिरि। 4. गंभीर। 5. आतंक। 6. मानिंद, समान। 7. कूट, झूठे। 8. गले पड़ जाती है, जिम्मे पड़ जाती है।

करति बैर गुरु, शाह सिखाए। तबै गुआलिआर महि पहुंचाए।
चाली[1] दिन बीते जिस काल। हज़रत हेरे शेर कराल ॥ २६ ॥
निस महिं त्रासति रिदे बिलंद। सिमरति भे श्री हरि गोबिंद।
रच्छा करी धाइ करि आइ। दोनहु केहरि दए हटाइ ॥ २७ ॥
तबहि हकारनि चाहे पास। महि-पालक कैदी तहिं बास।
गुर कह्यो छूटहिं महि-पाला। हमरो दरस होइ तिस काला ॥ २८ ॥
हुती ज़रूर हकारनि केरी। छोरे न्रिप बावन तिस बेरी।
निकटि हकारि कीनि सनमाना। ज्यो गुर कह्यो सु हज़रत माना ॥ २९ ॥
तिन के संग बिरोध उठावनि। नहिं आछी तुमको, सुख पावनि।
निज अनजानपनो करि मंद। खोइ आब्रू हुती बिलंद ॥ ३० ॥
तिस के कहे आप क्यों करते। जिस को करम हुतो सो बरते'।
इम कहि सुनि कै तज्यो ब्रितंत। चित महिं चितव्यो नहीं कदंत ॥ ३१ ॥
इह सगरी सुधि कहि लिखवाई। गुर ढिग खान वज़ीर पठाई।
आयो लवपुरि ते चलि चार। सिक्ख प्रतीखति[2] हुते उदार ॥ ३२ ॥
काज़ी कुछ उतपात उठावै। कहै शाहु सो चमूं पठावै।
परहि जंग गन सुभटनि हानी। सतिगुर मिटहिं न जाइ सु जानी ॥ ३३ ॥
चिंता बसी मसंद बिलंद। बिगर जाहिंगे कारज ब्रिंद।
श्री गंगा ढिग जाइ सुनावति। 'ऐसी बात न किम मन भावति ॥ ३४ ॥
कीनि अनुचित अयो पुन काज़ी। कर्यो हास तिस भयो विराजी[3]।
गयो पुकारनि शाहु समीप। सुनति रिसहि भेजहि अवनीप[4] ॥ ३५ ॥
चमू ब्रिंद जबि चढ़ करि आवै। गुर आगे ते जंग मचावै।
नहीं देश को राज हमारे। लरनि हेतु दहि लशकर भारे ॥ ३६ ॥
शाह संग किम समता होइ। चलहिं पलाहु तजहिं पुरि सोइ।
पिता पितामे को इस थान। छूटि जैह तबि बसहि इहां न' ॥ ३७ ॥
सुनि सुनि मात गंग पछुताइ। कहैं कि 'हम ते ह्वै न उपाइ।
पंच गुरु पूरब जे भए। शांति रूप सिक्खी बिदतए ॥ ३८ ॥
इनहुं तखत रचि आयुध धारे। सो कबहूं रण रचहि अखारे।
मैं बहु कह्यो एही समुझाइ। 'हे सुत! तुम नहि इह बनिआई ॥ ३९ ॥
उत्तर देति कि 'बसि नहि मोरे। जे बसि होइ त देवौ मोरे[5]।
सरब प्रकार आप सो स्याना। परहि बिगार होहि रण थाना ॥ ४० ॥

---

1. चालीस। 2 प्रतीक्षित। 3. रुष्ट। 4. सेना। 5. मोड़ करके, वापस देना।

करहि उपाइ आप ही सोई। हम तुम ते अबि होहि न कोई।
जो तुम ते समुझायहु जाइ। कहहु जाइ दिहु जंग मिटाई ॥ ४१ ॥
मम दिशि ते तुम करहु उचारनि। नहि नीके करिबे रण कारन'।
सुनति मसंद गए समुदाइ। हाथ जोरि बंदन करि पाइ ॥ ४२ ॥
उदित भए जबि कहिबे कारन। इतने महि किय चार निहारनि।
तिन दिशि ते रुख फेरनि कीनि। कागद दीनि, सिक्ख नै लीनि ॥ ४३ ॥
पठि सगरा परसंग सुनायो। सुनति सभिनि मन आनंद पायो।
ढिग गंगा सुधि तुरत पठाई। जानी भली रिदे हरखाई ॥ ४४ ॥
सभि के चित को चिंत बिनासी। अपनो बसन[1] लख्यो अबिनाशी।
होति भए बहु मंगल चार। हरि मंदिर अरदास उचारि ॥ ४५ ॥
पंचाम्रित बनवावहि कोई। 'मिट्यो बखेरा बसिबो होई'।
श्री सतिगुर को टेकहिं माथ। 'सभि करि सकहु आप के हाथ' ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रासे 'पातशाह ते काज़ी पुकार की सुधि आवन' प्रसंग बरननं नाम पंच बिसती अंशु ॥ २५ ॥

1. वश न।

अंशु २६

ब्याह उतसव

दोहरा

रामदास पुरि के विखै श्री हरि गोबिंद वास।
मन भावति निस द्योस महिं बिलसति बहुत बिलास ।। १ ।।

चौपई

आयुध विद्या को अभ्यासू। नित कराइं गन जोधनि पासू।
अनिक प्रकार आप भी करैं। छोरि तुफंग तुरंगनि चरैं[1] ।। २ ।।
हय धवाइ तोमर को फेरनि। करहिं प्रहार निशानो हेरनि।
तरवारनि को वार करंते। बान महान कमान खिचंते ।। ३ ।।
कबि[2] घोरे पर कबि हुइं खरे। वार अनेक प्रहारनि करे।
सुभट करहहिं गुरु को दरसावैं। तोमर तीर तुफंग चलावैं ।। ४ ।।
सिपर खडग को दावनि पेलैं। अरहिं, एक को दुति धकेलैं।
होइ मंडलाकार चलाइ। करहिं शीघ्रता इत उत धाइ ।। ५ ।।
मनहु परति हैं मल्ल्य अखारा। भाव दाव करि अनिक प्रकारा।
बहुत शीघ्रता करि दिखरावैं। किधौं लच्छ[3] को मारि गिरावै ।। ६ ।।
तिह पिखि 'साध साध' गुर कहैं। करहिं रिझावनि बखशिश लहैं।
इस प्रकार शस्त्रनि अभ्यासू। होहि निता प्रति अधिक प्रकाशू ।। ७ ।।
देश विदेशनि महिं जसु फैला। बखशति बहु धन श्री गुर छैला।
सुनि सुनि सुभट आदि गन रहैं। जे बहु शसत्रनि विद्या लहैं ।। ८ ।।
संगति सिक्ख देश परदेशी। आइ निताप्रति भीर विशेशी।
अनिक कामना पूरन करनी। जन पर भीर परहि सो हरनी ।। ९ ।।
बैठि दिवान दरस को दैना। लैनि सकल सुधि हय गन सैना।
जहिं कहिं महि महिं दासनि काजू। सिमरहिं गुरू गरीब-निवाजू ।। १० ।।

---

1. चढ़ें। 2. कभी। 3. लक्ष्य, निशाना।

सभि थल जाइ सहाइक होना। निज जन को दिखाइ कबि भौना।
बहिर अखेर ब्रित कबि जावैं। कानन महि जीवनि को धावैं॥ ११॥
शलख तुफंगनि-गन की होइ। मगल नाना समै सु दोइ।
करहिं सुधासर मज्जन जाइ। श्री हरि मंदिर दरशन पाइ॥ १२॥
बंदति करहि प्रकरमा चार। अलप समै ठहिरहिं दरबार।
'अदब न रहहि थिरे चिर कालू'। इम लखि करि उठि आइ क्रिपालू॥ १३॥
तखत अकाल बिसाल सथाना। बैठहि गुरु लगाइ दिवाना।
संध्या भए महिल निज जावैं। तहिं दमोदरी सेव कमावैं॥ १४॥
गन दासी को बरजनि करैं। निज करते सेवनि रुचि धरैं।
नीर पखारहि पद अरबिंद। पोछहि पट सो प्रेम बिलंद[1]॥ १५॥
लए बीजना हांकति पौन। चांपी करहि चरण जुग लौन।
इत्यादिक सेवा करि सारी। करहि प्रसंन रहहिं अनुसारी॥ १६॥
कबि कबि मात गंग ढिग जाहिं। बिवहारन की बाति उमाहि।
सुत सुंदर को पिखि हरखंती। जोधा बली बडो परखंती॥ १७॥
बहु सनेह ते करहि उचारनि। मधुर बचन सुत को अनुसारनि।
इमि जबि बीत्यो केतिक काल। गंग मात ने सुधि संभाल॥ १८॥
बाक सफल बड गुरु को भयो। सो करि ग्रिथ बिखै लिखि दयो।
'वधी वेलि बहु पीड़ी चाली। धरम कला हरि बंधि बहाली[2]॥ १९॥
अबि लौं पौत्र नहीं उपज्यो। नहीं बिलोचन मैं पिखि लयो।
नहीं कामना पूरन होई। जबि लौं सुत को सुत नहिं जोइ॥ २०॥
केतिक दिन लौ चितवति रही। इक दिन गुरु पुत्र सों कही।
'सफल बाक नित पिता तुमारे। बंस बधावनि हेतु उचारे॥ २१॥
तिन पग है मेरो बिसवासे। बडो बंस जग बिखै प्रकासे।
तऊ एक चिंता चित धारौं। तुम सुत हुइ मैं नैंन निहारौं॥ २२॥
है बिपरीति प्रीति उर मेरे। चहौं कि सुत को सुत लिउ हेरे।
सभि सिक्खनि की पूरो आसा। क्यों मन मेरो करहु निरासा॥ २३॥
निज सुति को दिखरावनि करीअहि। अधिक प्रमोद कुटंब्र महिं धरीहि'।
सुनि बोले श्री हरि गोविंद। 'पूरहिं सतिगुरु आसा ब्रिंद॥ २४॥
तुम हो वडे आशिखा[3] देहू। वधै बंस लीजहि सुख एहू।
केतिक दिन महिं पौत्र निहारहु। पुरहु मनोरथ आनंद धारहु'॥ २५॥

---

1. ऊंचा, अधिक। 2. यह उक्ति गुरु अर्जुन देव की बाणी राग आसा घरु ७, गुरु ग्रंथ पृ० ३९६ में अंकित है। 3. आशिष।

सुनि हरखति होई मन गंगा। निशचे थिर्यो अनंद उमंगा।
'पिखौं पौत्र को सुत ने भाषा। पूरन होइ मोरि अभिलाखा॥ २६॥
निस मैं नित दमोदरी सेवै। दरशन ते आनंद को लेवै।
धर्यो गरभ को तेज बिलंद। दिन प्रति जथा दूज को चंद॥ २७॥
सभि महिं बिदति भई इह बाति। अधिक अनंदित[1] गंगा मात।
उतसव रचे अनेक प्रकारा। सुनि हरख्यो सगरो परवारा॥ २८॥
ले दमोदरी गंगा संगि। श्री हरि मंदर[2] गई उमंगि।
हाथ जोरि करि माथ टिकायो। 'बंस ब्रिद्ध[3] हित बाक अलायो[4]॥ २९॥
सरब मनोरथ के तुम दाते। प्रेमी दासनि के हित राते।
कुल-बरधक गुन-जुति सुत दीजै। ब्रिरद आपनो प्रभू जनीजै'॥ ३०॥
एव मनोरथ मन महिं धारे। कर्यो प्रनाम प्रदच्छन सारे।
खरे होइ अरदासि कराई। सरब प्रसादि दीनि बरताई[5]॥ ३१॥
बहुर सनूषा[6] को ले संगि। अधिक उमंगति हटि करि गंग।
आई ग्रेहि बडी बडभागनि। पौत्र पिखनि होई अनुरागनि॥ ३२॥
कितिक दिवस बीते इस भांती। आई बहुर ब्याह की पाती।
हरि चंद गुरु ससुरो दूजा। श्री अरजन को जिस ने पूजा॥ ३३॥
इक दिन दोनहुं भई सगाई। चंदु सुता की जबहि हटाई।
हरी चंद की जो सुकुमारी। बैस अलप[7] की सुता बिचारी॥ ३४॥
यां ते ब्याह प्रिथम नहिं कियो। समो जानि कागदि पठि दयो।
'मास विसाख प्रिथक दिन मांहीं'। लिखि भेज्यो श्री गंगा पाही॥ ३५॥
शादी पर शादी अहिलादी। वध्रिति समाज अधिक गुरु गादी।
सुनि सुनि गुर के दास रु दासी। अति अनंदत रिदे प्रकासी॥ ३६॥
श्री गंगा को देति बधाई। सभि दिशि ते शादी ढुरि आई।
जो जो वसतु ब्याहु महिं चहीयहि। नगर सुधासर ते नहीं लहीयहि॥ ३७॥
तिन हित विधीए को दे दरबा। कह्यो 'जाइ आनहु शुभ सरबा।
घ्रित मिशटान होति धन ब्रिंदा। जेठा अर ले अपर मसंद॥ ३८॥
सगल भांति के अंन अनाए[8]। खरच समुझि दस गुन इकठाए।
गुर घर महिं नित खरच बिसाला। आइ हजारहु नर सभि काला॥ ३९॥
लेनि देनि संभारनि करना। सरब कर्यो ब्रिद्ध के अनुसरना।
गन मसंद जित कित को धाए। करी सकल वसतू इक थाएं॥ ४०॥

---

1 आनंदित। 2. मंदिर। 3 वृद्धि। 4. आलापे, कहे। 5. बांटा, वितरण किया। 6. स्नूषा, बहू। 7. अल्प। 8. मंगवाए।

मेल हकारन मनुज पठाए। गोइदंवाल खडूर सिधाए।
लवपुरि महिं सोढी रहिं भाई। सुधि बयाह की तुरत पठाई ॥ ४१ ॥
बहुर ग्राम 'मउ' ओर गए हैं। सुनि सुनि सभि के अनंद भए हैं।
'श्री अरजन को बडो सपूत'। जहिं कहिं सुजसु कहति हैं पूत[1] ॥ ४२ ॥
'सभि बिधि ते बिरधाइ समाजा। सैंन सकेलि बन्यो महाराजा।
तिम ही दूसर ब्याहि करायहु। पतिशाहनि ते चरन पुजायहु ॥ ४३ ॥
काजी-तनुजा को अपराध। शाहु सुनति सहि तूशनि[2] साध।
कर्यो अदाब[3] कछू न कीना। यांते लखीयति भे बडि पीना[4] ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप ग्रिंथे पंचम रास 'ब्याह उतसव' प्रसंग बरननं नाम खटबिंसती अंशु ॥ २६ ॥

1. पवित्र। 2. तूषण, चुप। 3. आदाब, स्वागत। 4. बलवान।

अंशु २७

दुतिय ब्याह

दोहरा

सुनि सुनि गुर उतसाहु को मेल भयो आमोद।
आवन को त्यारी करी ठानति हास विनोद॥ १॥

चौपई

इक तौ करनि सुधासर मज्जन। दिवस विसाखी मेला स्वजन।
दुतीए सनबंधी[1] जे आवैं। सभि सो मिलैं अनंद[2] उपजावैं॥ २॥
त्रितीए श्री गुरु हरि गोबिंद। मिले प्रथम भा काल विलंद।
जहांगीर ने राखे तीर। रहे निकेत नहीं बर बीर॥ ३॥
चंदू आदिक मारनि करे। मानहि शाहु अदब कौ धरे।
आयुध विद्या महिं अभ्यासू। इत्यादिक का सुजसु प्रकाशू॥ ४॥
सुनि सुनि पिखनि होनि चित चाऊ। बहुर ब्याहु को सबब[3] बनाऊ।
यांते बहु अनंद-जुति[4] सवै। मिल्यो मेल मिलि मोदति तवै॥ ५॥
कुल भल्लयन की गोइंदवाल। पहुंचे आनि त्रिया नर जाल।
त्रेहण कुल खडूर ते आए। गंग मात पित 'मउ' ते धाए॥ ६॥
अपर मेल लवपुरि ते आदी। आनि पिखी सुंदर गुरु शादी।
जथा जोग मिलि सभि हरखाए। इसत्री पुरख मेल समुदाए॥ ७॥
करि करि सगुन गीत गुन गावैं। कौतक करति अनेक सुहावैं।
नौबत बजति मोद उपजावति। उतसव सकल दिशिनि दिसि[5] आवति॥ ८॥
चहुं दिशि की संगति बहु आई। सुनि पिखि ब्याहु मुदति अधिकाई।
अनगनि भीर सुधासर होइ। उतसव पिख्यो चहति सभि कोई॥ ९॥
अनगन आइ उपाइन तबै। ब्रिंद मसंद संभारति सवैं।
तखत थिरहि श्री हरिगोविंद। तम हति मारतंड मानिंद। १०॥

---

1. सम्बन्धी। 2. आनंद। 3. अवसर का कारण। 4. आनंदयुत।
5. दिखाई दी।

दासन बदन बिलंद अनंदति। अरबिंदनि दुति ब्रिंद मनंदति।
चक्रवाक सम चारहुं बरना। बिरह ब्रिनाशक दरशन करना।। ११ ।।
गुरु-दोखी पेचक[1] सम दुरे। तिमर दंभ हृति बे-मुख[2] मुरे।
बडो दिवान लगति सभि ओर। फरश होति पूरब चहुं कोर।। १२ ।।
चामीकर चित्रति गुलज़ार। बिजना[3] झुलनि मंडलाकार।
जनु सूरज झुकि झुकि चढि जाति। चमकति चारु चलति चपलाति।। १३ ।।
चहुंदिशि ते बंदहिं कर जोरि। चारु चमर ढोरति जुग ओर।
अरपहि खरे होहि अरदास। दरशन करति भीर बडि पास।। १४ ।।
चमू सुभट गहि खडग रु ढाले। गुर प्रताप ते बली बिसाले।
केहरि की समता को धरें। बैठे शुभति दरशन करें।। १५ ।।
भल्ले तेहण आदिक और। भीर हजारों की तिस ठौर।
कौन कौन कहि गिने समाज। लेनि देनि सभ हुइ महाराज।। १६ ।।
निकट ब्याहु को दिवस जु आयो। अंतहि पुर श्री गुरू बुलायो।
लौकिक बैदिक रीति अनेक। सकल करी को कहै बिवेक। १७ ।।
कीनिस बटना[4] मरदनि तन को। सपत सुहागनि मिली शगुन को।
कंचनं भीने भूखन अंगा। सूखम बसत्र[4] धरे बहु गंगा।। १८ ।।
जुति दमोदरी अपर सहेली। गीतन की चरचा बहु मेली।
साक शरीकनि त्रिय-गन मेलि। गावति, गारि निकारति गेल[5]।। १९ ।।
पीत बसत्र सुंदर बहु रंग। श्री गुर हरि गोबिंद धरि अंग।
उदति अधिक दुति मुदति निहारहिं। तन मन धन त्रीयनि गन वारहि।। २० ।।
जबर जराउ जवाहर जरें। भूखति भूखन अंगनि धरे।
चितवति चितहि चुरोवति चारू। हाथ कंगना बंधि उदारू।। २१ ।।
ब्रिंद मसंद बिलंद बराती। भल्ले त्रेहण सजि भलि भांती।
सिख परधान बिदेशनि आए। संग संगतां[6] जिनि समुदाए।। २२ ।।
भई बटोरनि बडी बरात। श्री सतिगुर असु चढे प्रयाति।
डफ गन पटह[7] बंसरी बाजति! धुनि दुंदुभि सुनि कै घन लाजति।। २३ ।।
चलै बैरका[8] धरे अगारी। खरे पुंज हेरति नर नारी।
हय पौरनि ते नादति अवनी। दूलहु जुति बरात बनि रवनी।। २४ ।।
पुरि महि सदन हुतो जिस थान। हरी चंद जिह भाग कहान।
इक थल मिलि खत्री समुदाए। हित सनमान अगाऊ आए।। २५ ।।

1. उल्लू। 2. मुड़ गए, वापस चलेगा। 3. पंखा। 4. उबटना। 5. साथ ही। 6. अनुयायियों की टोली। 7. बड़े ढोल। 8. झंडे।

अनगन धन जनु घन वनि बरखे। गुरु रुख पिखि गेरति उर हखे।
भए निहाल रंक जे जाल। गुरु कीरति बरनंति बिसाल॥ २६॥
हरीचंद हित मिलनी आयो। बसत्र दरब अरपन को ल्यायो।
इत सतिगुर ने रिदे विचार्यो। 'मिलहि त्रिध साहिब' निरधार्यो॥ २७॥
करि कुल रीति मिल्यो. हटि ग्राए। तत्रि ढुकाउ करि वेग मंगाए।
लोक हजारनि हेरनि करें। भई भीर भारी भरपुरें॥ २८॥
दूलहु चढि बड़वा अति सोहति। गन नर नारिन के मन मोहति।
जाइ द्वार लगि किय कुल चाल। बोलति मधुर बिलोकति बाल[1]॥ २९॥
वहुर बरात कर्यो सभि डेरा। जथा जोग जहि थल जिनि हेरा।
अधिक धूम सगरे पुरि होई। देखनि हेत मिले सभि कोई॥ ३०॥
जे मंगत जन मांगति आवै। मन भावति सतिगुर ते पावै।
आइसु पाइ मसंदनि दरब। दियो रंक गन को जे सरब॥ ३१॥
बाजे बजहिं अनेक प्रकार। बीत्यो दिवस तिमर बिसतार।
झार मसालें ज्वलति मताबी। हरिचंद नर पठ्यो शिताबी॥ ३२॥
'भलो महूरति धेनु-धूलि[2]। बिन बूझे शुभ मंगल मूल।
सुनति हने बाजनि पर डंके। दूलहु चल्यो वेस बर बंके॥ ३३॥
मुखि मसंद संगि सभि गए। जाइ बेदका[3] महिं थित भए।
देखति उठे तहां समुदाइ। बैठि गए सतिगुरुनि बिठाइ॥ ३४॥
बिप्र रीति शुभ पूजन केरी। लई दच्छना जाचि घनेरी।
कर्यो प्रकाश हुतासन तहां। डार सरोए[4] ते घ्रित महां॥ ३५॥
हरीचंदु निज़ तनुजा साथि। अगनि प्रदच्छन फेरे नाथ।
अपर रीति सभि जेतिक होइ। जथा जोग कहि कीनी सोइ॥ ३६॥
ले लावां डेरे जबि आए। बैठे हुते कुछक निज थाएं।
हेतु अहार हकारनि आए। गुरु जुति चलि बराति समुदाए॥ ३७॥
आतशबाज़ी छुटति हवाई। जनु सुर परि को खबर पठाई।
कौतक भांति अनेकनि होति। पिखि पिखि सभि के अनंद उदोति॥ ३८॥
हरिचंद के सदन पहूचे। भोजन हेतु वैठि करि ऊचे।
गुरु हित चौंकी बडी बिछाइ। जथा उचित सभि दिए बिठाइ॥ ३९॥
भांति भांति के गन पकवान। धरि धरि थारि परोसन ठानि।
मेवे बहु मिलाइ बनिवाए। सभि कों दे करि कहि अचवाए॥ ४०॥

---

1. स्त्रियां, बालाएं। 2. गोधूलि का समय, सायंकाल। 3. वेदी, चौकी। 4. श्रुवा, लकड़ी की करछी।

स्वादति अचवनि[1] लगे अहार। कोकिल कंठी गावति नारि।
होति अनंदति हेरति अचवति। सने सने भोजन ते त्रिपवति ॥ ४१ ॥
जूठ बिखै बहु धन को डारे। ले सभि ने जल पान पखारे[2]।
इसी प्रकार तीन दिन बासे। रीति जथोचित सकल प्रगासे ॥ ४२ ॥
दाइज[3] दीनि प्रयंक बिठाए। बसत्र बिभूखन धरि समुदाए।
जथ शकति बड बासन दीनि। हाथ जोरि बिनती पुन कीनि ॥ ४३ ॥
हरीचंद हरदेई दंपति। कहैं 'गुरु हम दई जु संपति।
भुगतैं सगरो दान तुमार। नहि सम को सबि के दातार ॥ ४४ ॥
इक दासी सेवा हित दीनि'। इम कहि दुहनि बंदना कीनि।
बिदा करे सगरी बिधि आछे। जाति चली तनुजा को पाछे ॥ ४५ ॥
लाइ गरे संगि द्रिग जल भरे। अपर सहेली मिलिबो करे।
बिदा होइ सतिगुर चलि परे। अपने सदन आइबो करे ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रासे 'दुतिय व्याह' प्रसंग बरननं नाम सपतबिंसती अंशु ॥ २७ ॥

---

1. खाने। 2. हाथ धोए। 3. दहेज।

अंशु २८

श्री नानक मते प्रसंग

दोहरा

श्री गंगा आगवन लखि सहित सनूखा नंद ।
सभि बरात जुति प्रथम गे हरि मंदिर सुख कंद ।। १ ।।

चौपई

हाथ बंदि बंदन करि आछे । दई प्रदच्छन फिर सुख बांछे ।
ले पुन[1] गई सदन को गंगा । करि कुलि रीति जथोचित संगा ।। २ ।।
वारि दरब को देति घनेरे । अगरे हरखहिं मुख गुरू हेरे ।
वसत्र ब्याह के पीत सुहाए । पिखहिं ज्ञि देश बिदेशनि आए ।। ३ ।।
करैं कामना मन मैं जैसे । तिस छिनि दरस देइ गुर तैसे ।
जे सिख अबि लगि धारै ध्याना । सुंदर बन्यो केसरी बाना ।। ४ ।
क्यों न कामना सिख सो लहैं । जिन के रिदे सतिगुरू रहैं ।
जल को वारि पानि करि गंगा । मंदर के अंदर ले संगा ।। ५ ।।
नुखा दूसरी जाइ बिठाई । नारि बिलोकति हैं समुदाई ।
नाम नानकी सुंदर रूप । जो सभि ते बडिभाग अनूप ।। ६ ।।
तेग बहादर जिन हुइ नंदन । पौत्र बली बिदतहि जग बंदन ।
जो निज दासनि दे छिति राज । करहि बिनाशनि तुरक समाज ।। ७ ।।
पिखहि पौत्र जिह बैस बडेरी । यांते बड भागनि सभि हेरी ।
तेहण भल्ल्यनि कुल की दारा । करहिं सराहन 'रूप उदारा ।। ८ ।।
इम दिन कितिक मेल सभ रह्यो । बहुर सदन गमनै चित चह्यो ।
जे दमोदरी के पित माता । रीति जथोचित करे प्रयाता[2] ।। ९ ।।
गोइंदवाल खडूर जु मेल । दान मान जुति गमने गेल ।
पुन संगति जो मेले आई । दरस्यो ब्याह मोद उपजाई ।। १० ।।

---

1. पुन:, फिर । 2. प्यारे ।

ले ले सिरोपाउ गुरु घर ते। निज निज घर गे जसु गुरु करते।
'प्रथम गुरनि ते इनि बिधि न्यारी। पीरि मीरि लीनि उदारी ॥ ११ ॥
महाराज सम वध्यो[1] समाजे। बडि ऐश्वरज के सहि बिराजे।
इमि उतसव सतिगुर के भयो। करि संखेप जथा कहि दयो ॥ १२ ॥
तिह पीछे श्री हरि गोबिंद। बसे कितिक दिन अनंद बिलंद।
वडभागी सिख मिलहिं जि आइ। दें उपदेश ग्यान सिखराइ ॥ १३ ॥
ग्यान पाइ भे मुकति घनेरे। जो जो आइ चरन गुर हेरे।
नानक-मते जानकी[2] कथा। भई जथा अबि उचरौं तथा ॥ १४ ॥
इकि सति गुर को सिख मतिवंता। तीरथ करनि गयो रतिवंता।
करति करति पूरब की ओर। मज्जति जाति पावनी ठोर ॥ १५ ॥
पहुंच्यो तबि श्री नानक-मते। बंदन करि सथान शुभ चिते।
ज़ाहरि जहिं अजमति[3] द्रिशटावै। चलदल[4] फेनल[5] ब्रिछ सुहावै ॥ १६ ॥
तहिं गोरख चेलनि को बासा। अपनो कीनसि अधिक प्रकाशा।
गुर के थान अवग्या करैं। गोरख को जसु सो बिसतरैं ॥ १७ ॥
सहि न सक्यो पिखि करि अकुलायहु। निज गुरु थल लखि करि ठहिरायहु।
सेवा करनि लग्यो सभि भांति। दीपक बारहि होवति राति ॥ १८ ॥
भोर उठहि इशनान करंता। श्री हरि गोबिंद को सिमरंता।
बढनी[6] फेरै लेपन करिता। पुशप धुप पुजनि आचरिता ॥ ५९ ॥
तहां जु बास सिद्ध कुछ करिते। परहिं ईरखा इसहि निहरिते।
बहुरो बाद करन को लागे। चल्यो जाइ इसि थल को त्यागे ॥ २० ॥
दिन प्रति बोलनि बध्यो बिखेरा। करहिं ओज इह एकल हेरा।
'गुरु को सिक्ख नहीं को नेरे। दिहु निकास हम अहैं घनेरे ॥ २१ ॥
पूरब हुतो हमारो थान। बैठ्यो गोरख तप्यो महान।
श्री नानक तिन के ढिगि आए। दुइ त्रै बासुर बस्यो बिताए ॥ २२ ॥
जिम पराहुनो[7] किस के आवै। क्या मालिक तिस घर हुइ जावै।
तिम बैठे गुर को किम अहै। चिरंकाल के सिधगन रहैं ॥ २३ ॥
गोरख-मता बिदति जग नामू। तप ते किय पुनीत अभिरामू।
गुर सिख कहै ब्रिच्छ इह दोऊ। अजमत इन मैं जाहर होऊ ॥ २४ ॥
श्री नानक को थान जनावैं। सिख गुरू के पूजनि आवैं।
गुरू के चिन्ह, अजहुं दरसंते। करौं बतावनि क्यों न पिखंते ॥ २५ ॥

---

1. वृद्धि हुई, बढ़ा। 2. जाने की, गमन संबंधी। 3. महिमा। 4. पीपल। 5. री ठे।6. झाड़ू। 7. अतिथि।

चलदल दल पर कर गुर चिन्ह। यांते सभि तरु ते इह भिन।
फेनल को तरू दोइ प्रकार। जिस के है बिसाल द्वै डारि ॥ २६ ॥
इकि के फल मधुरे इक कौरे। मधुर भयो कांड जु गुरु ओरे।
सिद्धनि दिशि की अब लगि कौरा[1]। जिस ते मान भयो तिन हौरा ॥ २७ ॥
श्री नानक की कथा रसाला। हम ने पठी सुनी ततकाला।
सरब ब्रितांत इहां को जाना। सभि सिद्धनि कौ हानिसि माना ॥ २८ ॥
मैं निज गुर की थाउ न छोरौं। निज प्राक्रम ते मुख तुम मोरौ।
श्री नानक की गादी तां परि। बैठे गुर हरिगोविंद जां पर ॥ २९ ॥
पीरी मीरी धरी प्रचंड। दंड उचित के दाता दंड।
सिमरे जहिं कहिं हाजर सारे। सिक्खी वेल वधावति[2] हारे ॥ ३० ॥
ऐसे गुरु पूरन समरत्थ। सिर मेरे पर तिन को हत्थ।
करहिं सहाइ आनि ततकाला। लखहु इकाकी नहिं, इस हाला ॥ ३१ ॥
सुनि कनपाटे जोगी ब्रिंद। उठे तुरत रिसि धारि बिलंद[3]।
'देखहिं तोर गुरु क्या करै। इस पीपर को हम परहरै ॥ ३२ ॥
यही चिन्ह तू बहुत बतावैं। यो को खोज कहनि नहिं पावै।
ईंधन अगनि लीए सभि आए। धरि चहुं दिशि मैं करि समुदाए ॥ ३३ ॥
जारि दयो पीपर मति-मंद। तब बोल्यो अलमसत बिलंद।
'आगै सिध गोरख जुति होइ। लगे उडावनि चलदल सोइ ॥ ३४ ॥
श्री नानक निज कर ते गह्यो। सिध हारे इसथिरु ही रह्यो।
अबि भी सतिगुर बनै सहाई। सकल थान मैं लेउ छुटाई ॥ ३५ ॥
करहु अवग्या तस फल पावहु। अपनि उखार जरो पछुतावहु।
इम उतपात कर्‌यो जोगीनि। रिपु गन आप इकाकी चीनि ॥ ३६ ॥
लग्यो अराधनि तप करि ब्रिंद। बिनती नित प्रति करति बिलंद[3]।
'श्री हरिगोविंद! बनहु सहाइक। रच्छहु आप सिख की लायक ॥ ३७ ॥
सरब घटनि को अंतर जामी। दाता सभि जीवनि को स्वामी।
परी भीर सिमरन उर करिता। रिदे भरोसा रावरि धरता ॥ ३८ ॥
बहु मिलि बल कीनसि जोगीनि। श्री नानक थल लीनसि छीन।
देश दूर रावरि की अहै। बिन आए इह थान न रहै ॥ ३९ ॥
बिरद आप को होवति हीन। धरहि दास बिसवासु सु पीन।
जन-रख्यक इह नाम तुमारा। बिदति पुकारति है जग सारा' ॥ ४० ॥

---

1. कड़वा। 2. बढ़ाने वाले। 3. बुलंद, ऊँचा, अधिक।

इत्यादिक नित बिनती करिता। खान पान को संजम धरिता।
आतप बरखा सीत सहारे। करै शनान[1] कि गुरु चितारैं ।। ४१ ।।
महां प्रेम ते रिदे बसाए। राति दिवस नहिं ध्यान डुलाए।
श्री हरिगोविंद सभि बिधि जानी। भई प्रेम की खैंच महानी ।। ४२ ।।
रह्यो न जाइ अधिक अकुलाए। घरी घरी छिनि छिनि ललचाए।
प्रिय सेवक को मिलहिं न जावति। कहां शांति सतिगुर को भावति ।। ४३ ।।
एकल बनहि न तिह ठां[2] जानो। नांहित पलक बिखै प्रसथानो।
कुछ सुभटनि को ले करि साथ। बनहिं सहायक तौ शुभ गाथ ।। ४४ ।।
इत्यादिक बहु रिदै बिचारैं। किम श्री नानक-मते सिधारैं।
इक तौ खैंच साध नै करी। 'इह ठां मिलहि' कामना धरी ।। ४५ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे 'श्री नानक-मते प्रसंग' बरननं नाम अशट बिसती अंशु ।। २८ ।।

1. स्नान। 2. स्थान।

अंशु २९
डरोली प्रसंग

दोहरा

डल्ले ग्राम दमोदरी मात पिता के धाम।
इक भगनी इस की बडी रामों तिस को नाम ॥ १ ॥

चौपई

जिस को पति सिख सांईदास। ग्राम डरोली वसहि अवास।
सति-संगत बहु डल्ले ग्रामू। मिलि मिलि सिमरति है सतिनामू ॥ २ ॥
साईं दास बस्यो ससुरारे। नरगन हेरे गुरमति धारे।
तिनकी संगति ते मन ढर्यो। श्री अरजन को सतिगुरु कर्यो ॥ ३ ॥
सिक्खी गुन समेत उर धारी। शरधालू चित भगति उदारी।
निज निकेत गमन्यो गुर भजै। सिमरति सत्तिनाम नित जजै ॥ ४ ॥
इम सिख भा केतिक दिन पाछै। भा सनबंध गुरु को आछै।
अति अनंद तिस को मन होवा। कई बार गुरु दरशन होवा ॥ ५ ॥
पारो परम सिक्ख कुल जांही। रामो जनम लीनि तिस मांहि।
परंपरा सिक्खी घर जांहू। यांते गुरमति धरि उर मांहू ॥ ६ ॥
मात पिता गुरु के सिक्ख भारे। क्यों संतति सिक्खी नहिं धारे।
रामो सिमरति सतिगुर नीति[1]। हित कल्यान प्रेम धरि चीति[2] ॥ ७ ॥
दंपति महिं गुरमति अति होई। गुरु गुरु सिमरति दुरमति खोई।
होइ पुरब दिन दीपक माला। किधो बिसाखी मेल बिसाला ॥ ८ ॥
दंपत आइ दरस को करिते। मिलि मिलि ब्रिहु के दुख परहरिते।
तिनहु सदन चिनवावनि कीना। धन गन तहिं लगाइ सुख भीना ॥ ९ ॥
बहु सुंदर मंदिर जबि बन्यो। कारीगरनि सुमति ते चिन्यो।
दंपति ने अविलोक्यो आछे। तिस मैं बसिबो नहि उर बांछे ॥ १० ॥
कर्यो प्रेम 'गुरु पूरब बसैं। पुन पशचाति सदन इस धसैं।
प्रथम नही इह हमरे जोग। गुरु पीछे हम बसिबो होग' ॥ ११ ॥

---

1. नित्य। 2. चित।

इम गाढो प्रण करि मन माहूं। रुचिर किवार बनाइसि ताहूं।
द्वार असंजति करि दिय तारो[1]। कबहुं न हेरनि हेतु उघारो॥ १२॥
दीन बंधु गुरु बिरद बिसाला। जन-इछा पुरवहिं तित-काला।
अपर समग्री करि करि त्यारी। सिमरति राखति सदन मझारी॥ १३॥
बहु सुंदर परयंक बनाए। दे दे दरब त्यारि करिवाए।
हित भोजन के सुंदर अंन। आनि धरहि हुइ सिदक संपंन॥ १४॥
ज्यों ज्यों वसतु त्यार करि जोवति। त्यों त्यों अधिक प्रेम उर होवति।
दिन प्रति प्रेमातुर हुइ दंपति। गुर बिन लगहि न आछी संपति॥ १५॥
करहिं प्रतीखन कब्रि[2] गुर आवहिं। हमरे मन अभिलाख पुरावहि[3]।
गुरु प्रसंग कहि आपस मांहू। सुजसु बखानति रिदे उमाहू॥ १६॥
बीते कितिक दिवस इस भांति। गुरु न आए तापति छाती।
क्या कारन भा मिले न स्वामी। चौदह लोकनि अंतरयामी॥ १७॥
श्री गुरु हरिगोविंद मुख-चंद। हम चकोर कबि देहिं अनंद।
सम सूरज कबि तेज दिखावैं। हमरे रिदे-कमल बिकसावैं॥ १८॥
चात्रिक सम दंपति बिलपाईं। स्वांति बूंद कबि मिलहिं गुसाईं।
तरु सूकति[4] दुरबल हम तैसे। कब गुर मिलहिं जलद जल जैसे॥ १९॥
जबि देखैं जुग पद-अरविंद। तबि हरखहिं मन होइ मलिंद।
अजहुं न आए हम निरभागे। किधौं न रिदैं प्रेम बहु जागे॥ २०॥
बसी प्रीति के सुने सदीवे। आइ तुरत जिम जल थल नीवे।
करति प्रतीखन दिन भे घने। तबि रामो निज पति सों भने॥ २१॥
'चलहु सुधासर मिलि करि ल्यावैं। बिनती बनिकै दीन सुनावैं।
ज्यों क्यों करि निज घरि महिं आनैं। सदन बसावहिं ज्यों इछ ठानैं'॥ २२॥
साईं दास भन्यो 'सुनि भोरी !। नीकी लगहि बाति नहिं तोरी।
अलपग्यनि सो इम बनि आवै। बिना भने जो भेव न पावैं॥ २३॥
गुरु हैं पूरन पुरख क्रिपालू। घटि घटि की जानहिं सभ कालू।
मन चितवनि ते इहां बुलावैं। नहिं आवहिं बैठे गुन गावैं॥ २४॥
कबहूं पिखहिं हमारी ओर। पूरनि करैं आइ करि लोर[5]।
साईंदास प्रेम भा गाढो। घर महिं दरसों इम नित बाढो॥ २५॥
ऊठति बैठति सोवति चालति। गुरु आगवन सदीव संभालति।
'युति दमोदरी के चलि आवैं। मम घर बैठहिं दरस दिखावैं'॥ २६॥

1. ताला लगा दिया। 2. कब्र। 3. पूरी कराएं। 4. सूखता। 5. आवश्यकता।

कितिक दिवस ऐसे जबि बीते। पुन रामो कहि पति सो प्रीते।
'जे नहिं चलहु मानि बच मोरा। पाती लिखि पठीअहि गुर ओरा ॥ २७ ॥
उत्तर लिखहिं जाइ सभि जानी। आवनि होहि कि नहि इस थानी।
बहुर करहु जिम तुव उर भावै। प्रण पूरन की सभि सुनि पावैं ॥ २८ ॥
साई-दास भन्यो पुन बैन। बोलति भर्यो प्रेम जल नैन।
'हे सुमद्धमें[1]! नहिं भै मानौ। रिदै प्रेम ते इह ठां आनौ[2] ॥ २९ ॥
सकल देश को होवहि भले। सिक्खी सारहि[3] सतिगुरु मिले।
आप न जाउं, लिखों नहिं पाती। सिमरौं निस दिन करि मति राती ॥ ३० ॥
आइ आप ही ते सुख करैं। लखहिं प्रीति उर आसा पुरैं।
दिन प्रति वसतू सकल सकेले। 'बहु दासन युत गुरु को मेले ॥ ३१ ॥
सगरी सेव करौं निज घर ते। नही आप ते ले कुछ बरते।
त्यारी करत्यो दिवस बितावै। कहौं कहां लगि प्रेम उपावै ॥ ३२ ॥
बसन बिभूखन देत उपाइन। करि करि त्यार[4] धरति है आइन[5]।
'आज कालि महिं गुरु आगवनू। आइ बिराजहिंगे मम भवनू ॥ ३३ ॥
धंन-भाग मैं तिस दिन होवौं। निज घर महिं थित[6] सतिगुरु जोवौं।
जबहि क्रिपा धारहिंगे नाथ। सभि परवार लेहिं निज साथ ॥ ३४ ॥
मोह दीन की दशा निहारहिं। ततछिन मारग महिं पग डारहिं।
सफल करैं मम सदन चिनायो। बसहिं आन पर्यंक डसायो ॥ ३५ ॥
हाथ जोरि मै थिरौं अगारी। करिहौं ज्यों ज्यों सुमुख उचारी।
ऐसी खैंचि प्रेम की भई। सुधि बिवहार बिसरि सभि गई ॥ ३६ ॥
दोनहु दिशि को प्रेम पछाना। श्री गुरु हरिगोविंद सुजाना।
नानक-मते अराधहि साधू। सिद्धन ते लहि बाधा आधू[7] ॥ ३७ ॥
ग्राम डरोली साईं-दास। ठान्यो प्रण 'गुरु बसहि अवास[8]'।
प्रेम-दाम ते ऐंचनि होए। मिल्यो चहति चितवति दिशि दोए ॥ ३८ ॥
बिरद संभारि गरीब निवाजू। चहति करे दासनि के काजू।
जुति परवार डरोली चाहति। निज घर बिखै बसाइ उमाहति ॥ ३९ ॥
साध चहैं जोगनि की जीति। श्री नानक थल महिं धरि प्रीति।
जिम प्रसथान बनहि जुग थान। तथा बिचारति गुरु भगवान ॥ ४० ॥
सभि बिधि को समुझनि करि मन मैं। चित को धारति पंथ गमनि मैं।
बन्यो अवस्य पहुंचनो तहां। श्री हरिगोविंद समरथ महां ॥ ४१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रासे 'डरोली प्रसंग' बरननं नाम ऊनबिंसती अंशु ॥ २९ ॥

1. हे सुंदरि। 2. ले आओ। 3. सम्हालना। 4. तैयार। 5. अयन, घर। 6. स्थित, ठहरते हुए। 7. आधि। 8. आवास।

अंशु ३०

श्री गंगा गमन डरोली प्रसंग

दोहरा

गुरु इकंत दमोदरी निकटि सु बैठी आइ।
तिस की बहनि प्रसंग को सगरो दियो सुनाइ ॥ १ ॥

चौपई

'साईं-दास सदन चिनवायो। पिखि सुंदर प्रण रिदे बसायो।
तोहि सहत चहि हमहि बसायहु। इस कारण ते इहां न आयहु ॥ २ ॥
दंपति सिमरति चात्रिक जैसे। निस दिन महिं बिसरति नहिं कैसे।
दिहु सलाहि किम करहिं पयाना। मिलहिं तिनहुं ब्रिहु करि हाना' ॥ ३ ॥
सुनि दमोदरी भगनि प्रसंग। बिनै भनी मन संग उमंग।
'बांछति बानी कान सुनाई। साईं दास भगनि को साईं[1] ॥ ४ ॥
एव कामना जे तिन कीनि। दंपति सिमरति जे बनि दीन।
अहै प्रेम बसि बिरद तुमारे। दासनि के सद ही हितकारे ॥ ५ ॥
बहुर सबंध अहै तिन साथि। चलहु मिलहु तूरन[2] ही, नाथ।
बिछुरनि ते बीत्यो चिरकाल। देखनि को चित चाहति बिसाल' ॥ ६ ॥
श्री गुर कह्यो 'करहु अबि त्यारी। गमहु डरोली बिलम बिसारी।
निस दिन कसकति[3] है मन मेरो। जानि जानि तिन प्रेम घनेरो ॥ ७ ॥
रह्यो न जाहि मोहि ते कैसे। बंध जि वारू बारी जैसे'।
इम कहि माता के ढिग आए। दुहु दिश के प्रसताव सुनाए ॥ ८ ॥
'नानक मतै ज़रूरी जाना। तहां साध के प्रेम महाना।
झगरहिं कन पाटे जोगीनि। सिख एकल को कीनसि दीन।! ९ ॥
सतिगुर को इसथान बिगारा। हमरो त्रास नहीं उर धारा।
बनौं सहाइ सथान छुरावौ। बिलम बिहीन तहां को जावौं ॥ १० ॥
दुतिय प्रसंग डरोली मांहि। तोर नुखा[4] की भगनी तांहि।
पति जुति सिमरति सदन उतारन। हम हित कीनि नवीनि उसारन ॥ ११ ॥

---

1. स्वामी, पति। 2. तुरंत। 3. आकर्षित होता है। 4. स्नुषा, वहू।

तिस महिं आप न प्रविशहिं सोइ। प्रथम निवास गुरू को होइ।
पाछे आप बसनि तहिं चाहै। निस दिन मम सिमरन मन माहैं' ॥ १२ ॥
सुनि माता ने सुत चित केरी। कह्यो 'बाट तुहि परहि घनेरी।
पूरब महि सथान बहु दूर। तहां जानि को चहहिं ज़रूर ॥ १३ ॥
बहुर डरोली जुति परवारं। गमने चाहति प्रेम संभारि।
तुम समरत्थ करहु जिम भावै। जिस करिबे बिन नहिं बनि आवैं' ॥ १४ ॥
सुनि गंगा ते गुरू उचारी। इस प्रकार हम रिदे बिचारी।
दोनहु नुखा संगि निज लीजै। गमन डरोली को तुम कीजै ॥ १५ ॥
चलिं धीरज दिहु साईं दास। मिलि करि वासह तांहि अवास।
दासी दास लेहु सभि संग। सुभट पचीस सु चढ़े तुरंग ॥ १६ ॥
स्यंदन वहिल सकट धरि भारा। सनै सनै करि पंथ पधारा।
सुख सों सभि संभारि बसीजै[1]। हम आगवन प्रतीखन[2] कीजै ॥ १७ ॥
दिन कतिक महिं हम चलि आवैं। मिलहिं डरोली अनंद उपावैं'।
इम मसलत करि माता साथ। निकसे आइ सभा महिं नाथ ॥ १८ ॥
ब्रिध-जुति[3] सभिनि मसंदनि संगि। चलिबे बरन्यो सकल प्रसंग।
'बन्यो अवश्यक जानि हमारा। करि निरनै चित लीनि बिचारा' ॥ १९ ॥
बिरहु होनि ते सभि अकुलाए। निज निज हित के बाक सुनाए।
दीनि अखिल को धीर घनेरे। करी मात त्यारी[4] तिस बेरे ॥ २० ॥
नारि नगर की सुनि करि आई। अरपि अकोरनि बिनै अलाई।
'तूरन निज पुरि की सुधि लीजै। आनि हमे दरशन को दीजै ॥ २१ ॥
तुमरे करि सनाथ हम सारे। एक आसरो गुरु को धारे।
तुम बिन रख्यक कौन हमारो। ताते बहिर न बहु दिन टारे' ॥ २२ ॥
सुनि माता ने धीरज दीनो। 'पुरि के रख्यक नित गुर चीनो।
करहु अराधनि श्री हरि मंदर। जगत जोति गुरू की अंदरि' ॥ २३ ॥
सुनि बंदन करि दरशन देखि। गमनी पुरि की त्रिया विशेख।
श्री अम्रितसर गंग शनानी। पौर दरशनी बंदन ठानी ॥ ५४ ॥
थिरी जाइ दरबार अगारी। दौन सनूखा केरि मझारी।
बिनती भनी जोति गुर ज़ाहर। 'कुशल करहु सभि घर अरु बाहर ॥ २५ ॥
हाथ जोरि अरदास कराइ। दई प्रदच्छनि सीस निवाइ।
निकसि वहिर फिरि ताल चुफेरे। पुन पुन[5] बंदति मंदरि हेरे ॥ २६ ॥

---

1. वास कीजिए। 2. प्रतीक्षा। 3. बाबा बुड्ढा के साथ। 4. तैयारी। 5. पुनि पुनि, फिर फिर।

रथ अरूढि[1] गंगा तिस बेरे। सूत तुरंगम मारग प्रेरे।
दौन स्नूखा चढि करि डोरे[2]। गमन कीन दक्खन दिशि ओरे ।। २७ ।।
दासी बहिलन महिं चढि चाली। भार उशट पर गमने नाली[3]।
सुभट तुरंग अरूढति होए। हिन सवधानी[4] शसत्री[5] जोए ।। २८ ।।
सिख सेवक-गन चाले संग। हित सेवा के हरखति अंग।
सने सने मग उलंघे सारा। तीरथ तारन तरन निहारा ।। २९ ।।
प्रथम बास करि निस बिसरामे। उठे प्राति सिमरति गुरु नामे।
कीनि शनान प्रदच्छन दैकै। हाथ जोरि अभिबंदन कै कै ।। ३० ।।
गमने मारग गए अगारी। सनै सनै चलि इसी प्रकारी।
कितिक दिवस महिं पहुँचे जाई। पठयो सऊर एक अगुवाई ।। ३१ ।।
मिल्यो जाइ करि साईं-दास। कीनो सकल प्रसग प्रकाश।
जनु तरुवर कुमलावति जातो। मिल्यो नीर भा हरो सपातो[6] ।। ३२ ।।
जनु ग्रीखम महि सर जल थोरा। तरफति झख, बरख्यो घनघोरा।
औचक सुनि आनंद बिलंद। मेघ गरज ते मोर मलिंद ।। ३३ ।।
जाइ भारजा निकटि सुनाई। 'गुर जननी गंगा चलि आई।
संग नुखा जुग मिलिबे हेतु। क्रिपा करी हम आए निकेत ।। ३४ ।।
मुदति लगी बूझनि पति पाही। 'सतिगुर नाथ साथि कै नांहीं'।
'सुनहु प्रिये गुरु पुरवहि आस। क्यों न आइ दें दरशन पास ।। ३५ ।।
नानक-मतै आप अबि गए। हम सम उन्हें अवाहनि किए।
बसी प्रेम के टिक्यो न जाइ। हित रच्छया के गे सहिसाइ ।। ३६ ।।
हटहिं तहां ते करुना धरि हैं। हमहिं निहाल दरस दे करिहैं।
प्रण मेरो पूरयो लखि दीन। अंतरजामी गुरू प्रबीन ।। ३७ ।।
अबि तूं उठहु उताइल ठानि। आगे चलहु करनि सनमान।
मसतक टेकि सफल हम होवैं। अनिक जनम के पातिक धोवैं ।। ३८ ।।
तत-छिन पूरयो[7] थार प्रसादि। दंपति चले धरे अहिलाद।
नगन चरन ह्वै गए अगारी। मिले मात को बंदन धारी ।। ३९ ।।
दोनहु ने पग पर सिर राखा। गंगा पिखि आशिख मुख भाखा।
बूझी 'कुशल अहै सभि थारे ?'। 'क्रिपा आप की' तिनहुं उचारे ।। ४० ।।
करि दरशनि वधि गयो अनद। पिख्यो चकोरनि पूरन चंद।
पुन रामो निज भगनि संगि। मिली गरे सौं हरखति अंग ।। ४१ ।।

---

1. आरुढ़। 2. डोले। 3. साथ ही। 4. सावधानी। 5. शस्त्रधारी। 6. सपत्र, पत्र समेत। 7. भर लिया।

जबि बंदन पाइन पर कीनि। तवि दमोदरी बरजनि चीन।
मो ते बड़ी आरबल[1] तेरी। उचति न नमो करनि को मेरी ॥ ४२ ॥
कहि रामो 'तूं हैं बडि भागनि। जग बंदन की प्रिया सुहागनि।
भूतल कहां जि चौदहि लोग। तूं सभि के नित बंदन जोग ॥ ४३ ॥
छोटि बधू गुर की पिखि दूजी। मिलि करि नमो करनि ते पूजी।
मिली गरे सों मोद वधाए। कुशल, प्रशन करि दुहनि बताए ॥ ४४ ॥
इन सनमानति लै करि संगि। आई सदन अनंदति अंग।
सनै सनै सभि को उतरावा। सभि वाहन को सिवर करावा ॥ ४५ ॥
दोनहु लए सनूखा संग। आई सदन अनदति अग।
जो सतिगुर हित राख्यो मंदर। खोलि किवार उतारे अंदरि ॥ ४६ ॥
जथा जोग सभि सेवा कीनि। ब्रिखभ[2] तुरंगनि दाना दीनि।
मन भावति त्रिण दए बताइ। 'इह आगे मैं रखे बनाइ' ॥ ४७ ॥
बहु बिधि के अहार[3] करि त्यारा[4]। भाउ समेति परोसे थारा।
म्रिदुल गिरा जुति धरि अचवाए। करि सेवा सगरे हरखाए ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रासे **'श्री गंगा गमन डरोली'** प्रसंग बरनन नाम त्रिसती अंशु ॥ ३० ॥

---

1. अवस्था । 2. वृषभ, बैल । 3. आहार । 4. तैयार ।

अंशु ३१

पैंदे खान प्रसंग

दोहरा

दंपति सेवा करति भे वसतु हुती सभ त्यार।
भांति भांति भोजन करे महां प्रेम को धारि ॥ १ ॥

चौपई

रामो त्रिय पति सांई-दास। निस महिं बैठि मात के पास।
प्रथम गुरू के ज़िकर चलाए। 'क्यों नहिं संग आपके आए ॥ २ ॥
अबि केतिक दिन महिं चलि आवें। हम दोनहुं जिस निसदिन ध्यावैं।
घर न प्रवेशहिं हम प्रन कीनि। गुर अंतरजामी सभ चीन' ॥ ३ ॥
श्री गंगा तबि सकल बताई। 'उत की हुती अधिक सहसाई।
श्री नानक को थान बिगारा। हुइ आतुर तिह सिमरन धारा ॥ ४ ॥
इत तुमरो लखि प्रेम घनेरा। रहे बिचारति बहुती वेरा।
दोनहुं दिशि की पुरवनि आसा। हम को पठयो कि देहु दिलासा ॥ ५ ॥
कहति भए 'हम पूरब जाइ। करहिं संत की तहां सहाइ।
इतने समें जु सांई दास। बिहवल होवै प्रेम प्रकाश ॥ ६ ॥
तहां जाइ मिलि देहु सुनाए। हम केतिक दिन महिं अबि आए।
बसहिं तुमारे ढिग चिर काल'। जानि सराह्यो प्रेम बिसाल ॥ ७ ॥
इत्यादिक कहि सुनि बहु भांति। सुपति[1] जथा सुख सभि तिस राती।
भई भोर सुधि कुशल बतावनि। सुत ढिग मानव कीनि पठावनि ॥ ८ ॥
'पंथ उलंघन सगरो कीनि। कुशल सहत पहुंचे हम चीन।
मिले डरोली बासे आइ। तुम तूरन पहुँचहु इस थाइ ॥ ९ ॥
साईं दास प्रतीखन किरता। प्रेम आप को उर बहु धरिता।
सुनति संदेश विशेश प्याना। मारग सकल तुरत उलंघाना ॥ १० ॥
सुधा सरोवर दरस्यो जाइ। मिल्यो गुरू बैठयो जिस थाइ।
रामो साईंदास दुइनि की। बिनै सुनाई प्रीति सु मन की ॥ ११ ॥

---

1. सोई।

'तुम को सिमरति समैं बितावै। कबि दरशन हुइ, बहु ललचावैं।
कह्यो मात, सुनीयहि गुरू पूरन। तहिं कारज करि आवहि तूरन[1]' ॥ १२ ॥
सुनी कुशल सुधि पहुंचन केरी। हरखे श्री सति गुरु तिस बेरी।
अपनी त्यारी चलिवे हेतु। करति भए ततकाल सुचेत ॥ १३ ॥
श्री हरि मंदिर सेवनि हेतु। अपर कार जे सरब निकेत।
सौंपी ब्रिध को अरु गुरदास। अपर मसंद ब्रिद तजि पास ॥ १४ ॥
'कार गुजारहु इसही रीति। करहु काज निज निज धरि प्रीत'।
इम कहि करि कौलां ढिग आए। पूरब चलनि प्रसंग सुनाए ॥ १५ ॥
'नानक मतै अवश्यक जाना। तू धरि धीर बसहु इस थाना।
पुन[2] केतिक दिन महि हम आवैं। तहां जाइ करि काज बनावैं' ॥ १६ ॥
सुनि कौलां दुरबल ततकाला। मान्यो ब्रिहु ते कशट बिसाला।
बूंदै गिरीं बिलोचन धरनी। होइ गई तन पीत सु बरनी ॥ १७ ॥
'बन्यो अवश्यक रावरि जाना। भयो बियोग अधिक दुख-दाना।
कहां चलहि तबि मेरो चारा। नित दरसति शुभ दरस तुमारा ॥ १८ ॥
अचौं अहार बिना अबि देखे। मोकहु बनी अवोग[3] बिशेखे।
नही गरास जाइ हैं अंतर। रहै लालसा रिदे निरंतर ॥ १९ ॥
मै तौ धीरज धरौ घनेरा। जे करि[4] होइ सथिर मन मेरा।
महा कशट ते छुटहिं न प्राना। इह उपाइ कुछ करहु बखाना ॥ २० ॥
जे तरसति तरफति मरि गई। यांते मै सुधि सभि कहि दई'।
श्री हरि गोविंद तबहि उचारा। 'इक छिन हुइ नित दरस हमारा ॥ २१ ॥
पाछलि रात उठहु इशनानहु। जपुजी मुख ते पाठ बखानहु।
भोग पाइ जबि सीस निवावें। दरस हमारो तूं तबि पावैं ॥ २२ ॥
सभि दरशन कर लेहिं सुखारो। बहुर बियोग न बाधा धारो।
कीजहि हित सों खान रु पाना। हमहिं प्रतीखति रहो महाना ॥ २३ ॥
हे सूखम अंगी! धरि धीर। आवहिं कितिक दिवस महिं तीर'।
सुनि हरखी गुर धीरज दीनि। निकसि बहिर पुन त्यारी कीनि ॥ २४ ॥
कछुक सैन ब्रिध के ढिग छोरी। गमने श्री हरि मंदिर ओरी।
बंदन करी प्रदछना जाइ। खरे होइ अरदास कराइ ॥ २५ ॥
कह्यो निकसि करि 'इत त्रिण थोरे। दुरबल तन हुइ है सभि घोरे।
यांते संग चलहु जे अहैं। सभि करतार पुरे भट रहैं ॥ २६ ॥

---

1. तुरंत। 2. पुनि, फिर। 3. विशेष। 4. यदि।

बीच दुआबे त्रिण तहिं घने। होइं पुशट हय भट सुख सने'।
इम सलाह करि चढे तुरंग। सैना सकल अरूढी संग ॥ २७ ॥
करयो चलनि मारग दिन चार। आइ पहूचे पुरि करतार।
डेरा कर्यो आपने थान। सुख सों करिकै खान रु पान ॥ २८ ॥
सकल चमूं बसिहै अबि इहां'। यांते गुर मुकाम करि तहां।
भई भोर बड लग्यो दिवान। गाइ रबाबी शबद महान ॥ २९ ॥
निकटि निकटि गन ग्राम चुफेरे। सभि महि सुधि प्रगटी तिह बेरे।
'गुर करतार पुरे महिं आए'। सुनि सुनि दरशन को ललचाए ॥ ३० ॥
लै लै सभि अकोर समुदाई। आइ गुरू ढिग ग्रीव निवाई।
करहि कामना दरशन पाइ। पूरहि गुरू की लखि समुदाइ ॥ ३१ ॥
मीर वडे सु ग्राम को नामू। तहां पठान बसहि गन धामू।
करति चाकरी जहिं बनि जाइ। आयुध-बिद्या सदा कमाइ ॥ ३२ ॥
तिनहु सुनि 'हरि गोविंद आए। सैना संग जिनहुं समुदाए'।
करी सलाह 'चलहु दरसैहैं। जें राखहिं चाकर रहि जैहैं ॥ ३३ ॥
नाहि त दरशन परसनि करिकै। आवहिं अपने ग्राम बिचरि कै'।
दसकु पठान मिले इक ठाए। सिपर[1] खड़ग को अंगि लगाए ॥ ३४ ॥
चलि करि आए पुरि करतार। सुने 'गुरू हैं सभा मझार'।
मुदति खान पहुचे तिस थान। श्री अरजन-सुत बीच दिवान ॥ ३५ ॥
नर नारनि की भीर घनेरी। करि करि दरस जाइ तिस वेरी।
सभा दूर लगि बैठी पास। खरे करति संगति अरदास ॥ ३६ ॥
निकट होनि को थाउ न पाई। तीर भीर आवति इक जाई।
सभा बिखै भी बैठनि थान। नहिं देख्यो थिर सुभट महान ॥ ३७ ॥
कीनि सलाम तमाम पठान। खरे भए पश्चात दिवान।
कितिक काल बीत्यो तहिं ठांढे। गुर सरूप पिखि आनंद बाढे ॥ ३८ ॥
दिशटि गई सतिगुरु की जबै। पिखे पठान खरे गन तबै।
सिपर खड़ग के अधिक सिपाही। पिखीयति ऐंठ जिनहुं के मांही ॥ ३९ ॥
बसत्र शसत्र ते बाना बन्यो। जनु रण चहति बीर रस सन्यो।
श्री सतिगुर को सहज सुभाऊ। जहां बिलोकहि बीर बनाऊ[2] ॥ ४० ॥
क्रिपा करहिं बूझहि तिह बात। लरिबे जुध शसत्र के घाति।
सुनहि सुभट रण कथा सुनावै। 'इम लरि बीर बिजै बड पावैं' ॥ ४१ ॥

---

1. ढाल। 2. बनाव, बाना।

पुन श्री मुख ते दाव कहंते। 'इम शसत्रनि हति शत्रु जितंते'।
यांते पिखे पठान अगारी। निकटि दास तिह संग उचारी ॥ ४२ ॥
'इन खाननि सो बूझहु जाइ। कौन अहो तुम कहिं ते आइ।
दरशन करहु कि कारज कोऊ। सुनि जो कहैं. आनि कहु सोऊ' ॥ ४३ ॥
सुनति सिख उतलावति गयो। सतिगुर दिशि ते बूझति भयो।
सुनि खाननि आनंन ते भाखा। 'हम आए दरशन की कांखा ॥ ४४ ॥
निकटि आपके हमरो ग्रामू। भाखहिं 'मीर वडे' तिस नामू।
बसहिं समीपी पिख हरखावैं। कुई काज इन ते बनि जावै' ॥ ४५ ॥
सुनि सिक्खनि सभि जाइ सुनायो। 'बांछति तुम दरशन मन भायो'।
पुन गुर तिन की ही दिशि देखे। भिन भिन तन बल अविरेखे ॥ ४६ ॥
इक खोड़स बरसनि को खान। होनहार जिह डील महान।
दीरघ अंग सरब ही हेरे। बीर सु बनहि बनाउ बडेरे' ॥ ४७ ॥
आयुत बदन बिलोचन जांके। बंधे परे बार बर[1] बांके।
लांबी बाहु पुशट भुजदंड। जनु मतग की सूंड पचंड ॥ ४८ ॥
बड बिसतार सहत दिढ छाती। सरब सरीर संधि[2] दिढ भांती।
लांबी ग्रीव बन्ह्यो[3] सिर चीरा[4]। अपर शरीर बिखै बर चीरा[4] ॥ ४९ ॥
करि पसंद राखनि को चाहा। सरब पठान हकारे[5] पाहा।
आगया सुनति निकटि चलि आए। खरे भए सति-गुरु समुहाए ॥ ५० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रास 'पैंदे ख़ान' प्रसंग बरनंन नाम इक त्रिसंती अंशु ॥ ३१ ॥

---

1. श्रेष्ठ बाल। 2. जोड बंद। 3. बांधा। 4. (i) रंगीन पगड़ी (ii) पहनने का कपड़ा। 5 पास बुलाए।

अंशु ३२

करें ग्राम प्रसंग

दोहरा

सतिगुरु को रुख देखि कै आए निकट पठान ।
सनमुख ठांढे ह्वै रहे बनि कै सकल समान ॥ १ ॥

चौपई

श्री हरि गोविंद बूझनि ठानि । 'नई बैस को है जु पठान ।
किस को पुत्र नाम क्या अहै । तुम ढिग बसहि कि अनतै रहैं ॥ २ ॥
सुन इसमाइल खान बखाने । 'गुरू गरीब निवाज महाने ।
आलम पुरा गिलज़ीआ नाम । पूरब हुतो तहां इस धाम ॥ ३ ॥
हुते नानके मीर बडे महिं । सुरति संभारी बडे होहि तहिं ।
मादर[1] पिदर[2] भिसत[3] को गए । इस लघु को ही त्यागति भए ॥ ४ ॥
मम भगनी-सुत लागति जाना । ले पारयो मुहि अपने खाना[4] ।
कुछक होश अबि करी संभारनि । धरि करि अंग बिखै हथ्यारन ॥ ५ ॥
दरस आप के आयहु संग । करि चित चौंप बिलंद उमंग ।
पैंदे खान नाम को कहैं । अबि लौ हमरे ही घर रहैं ॥ ६ ॥
सुनि श्री हरि गोविंद उचारा । 'अबि तो होनि लग्यो हुशीआरा[5] ।
महां डील हुइ शसत्र धरैया । संघर महि बड काज करैया ॥ ७ ॥
जे चाकर इस राखनि करें । रहै, कि नहीं मनोरथ धरै ।
बहुर खानि गुरु संगि बखाना । 'सकल पठाननि कौम जु जाना ॥ ८ ॥
इन को काम चाकरी अहै । तुम सम के सामीपी रहैं ।
करहि आपनी नित गुज़रान[6] । जि की जैसी बनहि जहान ॥ ९ ॥
तकरी[7] तुलनि कि खेती करनी । जे इत्याद कार जग बरनी ।
करें पठान न अंगीकारा । इनको हित है जंग अखारा ॥ १० ॥

---

1. माता । 2 पिता । 3 बहिश्त, स्वर्ग । 4. घर । 5. होशियार, चतुर । 6. जीवनयापन । 7 तराजू ।

मिहरवानगी आप जि धरिहो। राखहु ढिग प्रतिपारन करिहो।
इह पठान को पूत महानो। करहि काज जब तुम रण ठानो ॥ ११ ॥
जे परवसति[1] करहु तुम आछे। मिलहिं पदारथ जस मन बांछे।
बहुर देखीयहि डील बिलंद। इह एकल हो सम नर ब्रिंद ॥ १२ ॥
बली बिसाल होइ जस तनु है। राखहु निकट बीरबर बनि है'।
श्री हरिगोविंद बहुर सुनायो। 'अबि तौ दरशन के हित आयो ॥ १३ ॥
ले गमनहु अबि सदन मझारे। पुन आवहि उठि होति सकारे।
रहै सैन महिं पुरि करतार। हम गमनहि पूरब को त्यारि ॥ १४ ॥
केतिक मासन महिं चलि आवहिं। वसत्र शस्त्र दे बीर बनावैं'।
इम कहि इक दस दीनि रुपय्ये। 'पुरि ते लिहु अहार इन खय्ये ॥ १५ ॥
करी सलाम ठान तमामू। हरखति हुइ करि गमने धामू।
सो दिन कर्यो बितावनि सारो। निस महिं सतिगुरु खाइ अहारो ॥ १६ ॥
सुपति जथा सुख राति बिताई। करी क्रिया नित की चित लाई।
दिवस चढे पुन संगति आइ। दरशन को सगरी उमडाइ ॥ १७ ॥
बैठे सतिगुरु लाइ दिवान। शबद बिलावल के सुनि कान।
धरहि उपाइनि अनगन संगति। दरशन करहिं थिरहि बनि पंगति ॥ १८ ॥
पंच पठान लिए निज संग। आयो पैंदे खान उमंग।
गुरु दरमाहा[2] सभि को कियो। बसिबे को इक थल तिन दियो ॥ १९ ॥
जुग महिखी[3] दें दुगध महाना। सेवक सों गुरु कीन बखाना।
'सभि पै[4] ले करि करहु तपावनि। पिसता अरु बदाम करि पावन ॥ २० ॥
आदि छुहारे मेवा सानो। चार घरी दिन रहि जबि जानो।
मिसरी को मिलाइ करि आछे। करहु खुवावनि जेतिक बांछे ॥ २१ ॥
पंच रजतपण[5] नित दरमाहा। दिहु पैंदे खां को सुख पाहा'।
इत्यादिक सेवा जो आन। निज दासनि सों गुरू बखानि ॥ २२ ॥
प्रतिपारनि की करि तकराई। सरब रीति इक बार बनाई।
भए पठान अनंद[6] महाने। गुरू की खुशी बिसाल पछाने ॥ २३ ॥
इक दिन निज हजूर करिवायो। निकट बिठाइ गुरू अचवायो।
द्वै नर जेतिक खाना खावैं। तितिक खाइगा, पिख हरखावैं ॥ २४ ॥
'इम सदीव ही दीजहि खाना'। निज दासनि संगि गुरु बखाना।
सैना महिं मिलाइ इम राखा। 'महां बली हुइ' उर अभिलाखा ॥ २५ ॥

---

1. परवरिश, पालन। 2 वेतन। 3. दो भैंसें। 4. पय, दूध। 5. चांदी के रुपये। 6. आनंद।

अगली प्रात करी निज त्यारी। शसत्र धरे हय की असुवारी।
श्री गुर हरिगोबिंद पयाने। पंद्रह कोस पंथ उलंघाने॥ २६॥
करि डेरा तहिं निसा बिताई। भई भोर पग चले गुसाईं।
इसी रीति दिन प्रति प्रसथानहिं। परै रात डेरा तबि ठानहिं॥ २७॥
तीरथ महां पहोआ नामू। सारसुती सलिता अभिरामू।
गन पापनि को खापनि करनी। जिस की महिमा बेद सु बरनी॥ २८॥
सो खट कोस रही जबि आवनि। चहैं कि 'चलि तहि डेरा पावनि।
तहिं इक पिंगल आंखन हीना। किह सिखने उपदेशनि कीना॥ २९॥
निस दिन गुर को सिमरति सोई। कहै कि 'अबि नहिं मेरो कोई।
मिलहिं गुरू सभि जग के दाता। तौ मेरो संकट हुइ हाता॥ ३०॥
चलि पहुँचनि की शकति न मेरी। आइ इहां धरि क्रिपा घनेरी।
इम मन ठानि करा इक ग्रामू। गुर सिमरहि तहि करि बिसरामू॥ ३१॥
तिस को संकट काटनि हेता। उतरि परे तहिं क्रिपा निकेता।
सुभटनि करे तुरंग लगावनि। सेवत लगे त्रिणनि को ल्यावनि॥ ३२॥
रसद खरीदी ग्राम मझारा। करनि लगे सभि त्यार अहारा।
पिंगल सुनी कि 'सतिगुरु आए'। भयो अनंद अंग नहिं माए॥ ३३॥
रुढ़ति चलति निकस्यो तजि ग्रामू। गुरु गुरु जपति रिदे मुख नामू।
जिस थल सतिगुरु थिरे सुहावति। बूझि बूझि तिसहि थल आवति॥ ३४॥
आनि प्रभू को सीस निवायहु। सनमुख बैठति बाक अलायहु।
'इन बातनि ते रावरि नामू। 'दीनानाथ' भनैं अभिरामू॥ ३५॥
तुम बिन नहिं को जगत हमारा। पग दिग[1] बिन नहि जाति पधारा।
रह्यो पतीखति आस तुमारीं। मम हित आए करुना धारी॥ ३६॥
केतिक बरख बितीते मोंही। सिमरन करति सदा गुरु तोही।
आए मोहि निवाजनि[2] हेतु। दिहु दिग पग मैं बनौ सुचेत'॥ ३७॥
गुर ढिग सिखनि बाक सुनाए। 'चरन कमल की लिहु रज पाए।
धरयो उपानय[3] गुरु को चीनि। ले तिन अंगरी घसवनि कीनि॥ ३८॥
जबि नेतनि के बिच तिन पाई। भई आंखि जनु प्रथम बनाई।
गुरु बपु सुंदर पिख्यो अगारी। बारि बारि होवति बलिहारी॥ ३९॥
'धंन गुरू जिम सुन्यो विशेखा। तथा बिलोचन ते अबि देखा।
नित दीननि पर किरपा धारो। हम सम पतितनि पुंज उधारो॥ ४०॥

---

1. द्रिग, आंखें। 2. सन्मान देना। 3 जूता।

इत्यादिक बहु उसतति कीनि। सतिगुरु क्रिपा-दिशटि दुख हीन।
कह्यो कि लोचन तैं अबि पाए। इस थल कों सेवहु हित लाए॥ ४१॥
बढनी[1] फेरहु दीपक बारहु। सदा गुरू को नाम संभारहु।
जो सिख पूजहि दे धन आन। तिस को बांटि करहु गुज़रान॥ ४२॥
आवति जाति सिख बसि जाए। तिन कहु दे अहार अचवाए।
पीछे आप करहु पुन खानि। करहु कार सभि ही इस थान'॥ ४३॥
इस प्रकार की सिख्या दीनसि। पिंगल भा प्रसंन हित चीनसि।
'सिर धरि करिहौं वाक तुमारा। हलत पलत मुरि सरब सुधारा॥ ४४॥
तुम समान है कहा क्रिपालू। दीननि दयाल सु नाम बिसालू'।
इह सथान श्री हरि गोबिंद। कर्यो पुजारी क्रिपा बिलंद॥ ४५॥
सेवति ही तिस थल को रह्यो। कितिक बरख बीते दुख दह्यो।
श्री गुर तेग बहादर गए। निज निवेस तहिं करते भए॥ ४६॥
तिन को दरशन करि हरखायो। सतिनाम सिमरन बर पायो।
कूप बाग हित धन बहु दीने। आन थान पुन प्याना कीनो॥ ४७॥
पुन सतिगुरु दसमें पतिशाहू। पहुँचे देखैं नर थित ताहू।
हित सनमान खरो नहिं होवा। हय पर चरे सथिर गुर जोवा॥ ४८॥
बूझै मनुज 'अहै इह कौन'। कह्यो 'गाम' करहाली' भौन।
आयो इह ठांहैं ससुरारि। बिच परगने ठिकानेदार'॥ ४९॥
सहजि सुभाइक सुनति बखाने। श्री कलगीधर तेज महाने।
'अबि सभि गए ठिकाने ठरक[2]। गए प्रथम के टिके टरक[3]'॥ ५०॥
इम कहि तुरत तुरंग हटाए। उतरे कलसे ग्राम सु जाए।
श्री हरि गोबिंद निसा बिताई। भई प्राति चाले अगनाई॥ ५१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रासे 'करें ग्राम' प्रसंग बरननं नाम दोइ त्रिसंती अंशु॥ ३२॥

---

1. झाड़ू। 2. टूट गए। 3. टल गए, नष्ट हो गए।

अंशु ३३

नानक मते आवनि प्रसंग

दोहरा

भए त्यारि श्री सतिगुरू गमने मारग जाइ।
खशट कोस पर सरसुती हेरी जल अलपाइ ॥ १ ॥

चौपई

तहिं शनान करि दे धन दान। पुन आगै कीनसि प्रसथानि।
चले जाहिं कुछ सैना साथ। करहि निवेस निसा महिं नाथ ॥ २ ॥
श्यामल जल जमना तबि आई। करि शनान उलंघे अगुवाई।
गढ़-गंगा के पंथ पधारे। चले जाहिं तूरनता धारे ॥ ३ ॥
सिख प्रेमी जहि कहिं जिन बासा। सुनहि गुरू आयहु इत आसा।
निकटि निकटि जे ग्राम अनेक। कहिं लगि तिन कहु करहें बिबेक ॥ ४ ॥
केतिक मग महिं मिलहिं सु आइ। अरपहिं वसतुनि को समुदाइ।
केतिक जबि निवेस को करैं। आनि अकोरन आगै धरैं ॥ ५ ॥
दुगध अधिक दधि आवहि डेरे। जथा शकति धरि दरब अगेरे।
बंदन करि करि दरसहिं जावहिं। अपरनि के ढिग सुजसु अलावहिं ॥ ६ ॥
इम गमनति पहुंचे गढ़-गंगा। पिख्यो प्रवाहु बिमल जल चंगा।
उतरे सतिगुर कीनि शनान। दीनो अधिक दिजनि[1] कहु दान ॥ ७ ॥
पूरन गुरू नहीं तिन जाना। जांच्यो नहीं भगति गुनयाना।
धन लालच को जिन मन कीनि। किम प्रभु लखहिं बिशय मन भीन ॥ ८ ॥
पुन तहिं ते करि कूच पयाने। चले जाहिं आगै सुख साने।
इक साधू की शरधा पूरन। पहुंच्यो चहैं तहां गुरु तूरन ॥ ९ ॥
पुन श्री नानक मते सथान। जांइ पहुचे क्रिपा निधान।
उतरयो डेरा तुरंग लगाए। इत उत सुभट फिरति समुदाए ॥ १० ॥
इक कनपाटे वूझनि कीने। 'को सरदार आइ भट लीने'।
सिक्खन कह्यो 'साच पातिशाहू। श्री हरि गोविंद गुरु, दुखु दाहू' ॥ ११ ॥

1. ब्राह्मण, द्विज।

सुनि करि जोगी भाजि पधारे। 'नहिं वंधहि हम को' डरु धारे।
सिख की दशा सुनहुं जिम होई। गुरू ध्यान मैं थिरहै सोई॥ १२॥
तन की क्रिआ साधि इक बारी। बहु थिरहि निस द्योस मझारी।
गुरु सिमरन के ततपर होवा। जवि को बिगर्‌यो चलदल जोवा॥ १३॥
बहुत बिसूरति दुख उर धारति। गुरू अवग्या नहीं सहारति।
अनिक प्रकारनि की मन गिनती। होइ दीन बहु बोलति बिनति॥ १४॥
'हे प्रभु! रावर को अपवाद[1]। बिगरहि बिरद, रखहु मिरजादि।
सतिगुर सदा सलामत गादी। किम हुइ प्रापति जै कहु बादी॥ १५॥
मम तन तजे जि सुधरहि थानू। तौ तजि देउं तनक महि प्रानू।
तऊ न जोगी लहैं बिसादू[2]। करि हंकार उठावहिं बादू॥ १६॥
श्री नानक की महिमा गौरी[3]। तुमरे अछत होति अब्र हौरी।
तौ पाछे की क्या है चली। अलप शकति भी निरभै दली[4]॥ १७॥
क्यो न उताइल बनहु सहायक। अस कारज तुमरे ही लाइक।
लई जगत ते पीरी मीरी। क्यों न करो सिक्खन करगीरी[5]॥ १८॥
जग गुर सभिहिनि के सिरमौर। अजमत-जुति बिगरति बर ठौर।
श्री हरि गोविंद! बनहु सहाई। दिहु उठाइ जोगी समुदाई'॥ १९॥
इत्यादिक मुख बिनै बखानति। जीत रिखीक ध्यान गुर ठानति।
भयो शबद हय कीनि हिरेखा। सुनति अचानक चाहति देखा॥ २०॥
निकसि कुटी ते बाहर आयो। मानव गन को थिरि दरसायो।
'लोक पंजाबी करहि चिनारी। संग एक के मिल्यो उचारी॥ २१॥
किस को डेरा उतर्‌यो आइ। कित ते आनि कहां को जाइ।
सिख ने कह्यो 'अहै जग गुरू। दरशन सिंह बिघन गन रुरू[6]॥ २२॥
अम्रित-बाक श्रवन पुट पाना। हुतो म्रितक मनु भा सवधाना[7]।
धाइ परै धरि पद बिचलंति। चल्यो न जाति अधिक उतलंति॥ २३॥
हुते खरे गुर सहिज सुभाइ। बसत्र शस्त्र जुति, रजदुति पाइ।
पद अरबिंद म्रिदुल बर लाल। हुते उपानय महिं तिस काल॥ २४॥
पहुंचि समीप दंड सम परयो। भर्‌यो प्रेम ते द्रिग जल ढरयो।
पद रज ले सिर मुख पर लाई[8]। 'धंन गुरू! तेरी वडिआई'॥ २५॥
हाथ जोरि भा सनमुख ठांढो। करति सुजस को आनंद बाढो।
चौदहि लोकनि घटि घटि अंतर। सभि सुधि जानति सदा निरंतर॥ २६॥

---

1. निंदा। 2. विषाद। 3. गिरि समान भारी। 4. नष्ट की। 5. दस्तगीरी, सहायता। 6. मृग। 7. सावधान। 8. लगाई।

इक मम घट की लखि करि आए। नहिं अचरज, तुमरे बनि आए।
शकति अनंतनि के बड सागर। देवनि देव उजागर नागर॥ २७॥
निरने करि तुम महिं गुन हेरा। रहहु प्रेम के बसी घनेरा।
प्रीत द्रोपती की लखि साची। भई दीन मन बिनै उबाची॥ २८॥
सभा शरीकनि की रिस राची। बेमिरजादि करनि कहु बाची[1]।
परी शरन रच्छया तबि जाची। राखी लाज जानि जन ताची[2]॥ २९॥
संकट ते प्रहलाद उबार्यो। दुखद दैत कहु तत छिन मार्यो।
तिम बहु सिक्खनि भए सहाइ। महां बिघन ते लीनि बचाइ॥ ३०॥
करी तिलोके की तलवार। हुती काठ की बनिगी[3] सार[4]।
सिख को बाट घाट थो जोई। करयो सभा महिं पूरन सोई॥ ३१॥
खशट रूप सिख भए सहाई। कहिं लौ गिनौं गिने नहिं जाई।
मोहि दीन पर करुना धरिकै। मारग दूर उलंघन करिकै॥ ३२॥
भए सहाइक अंतर जामी। नमोनमो पग पर जग-स्वामी।
अपनि बिरद प्रभु आप संभारहु। सेवक के निज काज सुधारहु॥ ३३॥
इत्यादिक बहु करि करि बिनै। भनै सु बैन प्रेम के सनै।
श्री हरि गोविंद भए प्रसन। कह्यो 'सिक्ख! तू अहैं अनंन॥ ३४॥
गुरु पर सिदक धारि करि बैसे। मनोकामना लहैं न कैसे।
कहुं अलमसत! गाति कुशराति। किम कनपाटे किय उतपात'॥ ३५॥
'प्रभु जी सुनहु क्रिपा तुम पाइ। कुशल सरीर अहै, सुखदाइ।
मतसर पावक अति जोगीनि। जरहिं सदा उर शांति बिहीन॥ ३६॥
चलदल जारयो अगनि लगाइ। मम आसन को दयो उठाइ।
करी अवग्या इसते आदि। बहु अपवाद कह्यो करि बाद'॥ ३७॥
सुनि सतिगुर ने धीरज दीनि। 'पुरहि कामना तोहि प्रबीन'।
पुन सतिगुरु हित फरश डसाइव। बैठि सरब रज को झरवाइव॥ ३८॥
शसत्र उतारि बिराजति भए। सुभटनि चहुं दिशि डेरा कए।
हरे त्रिणनि गन सेवक ल्याए। चारे हयनि जीनि उतराए॥ ३९॥
ग्रामनि ते गन रसद मंगाई। लागे करनि देग मन भाई।
खशट घरी दिन बाकी रह्यो। 'आनहु निरमल जल' गुरु कह्यो॥ ४०॥
कर पग बदन पखारनि कीने। पुन मज्जन जल ते मल हीने।
बसत्र पहिरि तन ह्वै करि न्यारे। कह्यो 'चलहु, गुरु थान निहारें'॥ ४१॥

---

1. बांची, वाची। 2. उसकी। 3. बन गई। 4. लोहा।

भयो संग अलमसत बतावति। 'इह थल पिखहु महां छवि पावति।
सुनि पिखि रावर को आगवनू। भाजि गए जोगी तजि भवनू ॥ ४२ ॥
इस थल चलदल दलफल हरीअल। जोगिनि दुशट अवग्या करीअलि[1]।
मुझ ते प्रथम लख्यो तुम आए। देखि रह्यो, थल त्यागि पलाए ॥ ४३ ॥
इह फेनल को तरु बच रह्यो। अजमत महिं तिस हित इह लह्यो।
इक सिकंध[2] के माधुर फल हैं। जित दिशि श्री नानक थिर थल हैं ॥ ४४ ॥
दुतिय डार के फल हैं कौरे। जिस ते गोरखादि सिध हौरे'।
श्री हरि गोविद सुन्यो प्रसंग। धीरज दई 'बनहि तिम रंग[3] ॥ ४५ ॥
तहां फरश सतिगुरु करायहु। बैठि सभिनि दीवान लगायहु।
सोदर की चौकी थिरि सुनी। जिस महिं महिमा गुरु हरि भनी[4] ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे नानक मते आवनि प्रसंग बरननं नाम तीन त्रिसती अंशु ॥ ३३ ॥

---

1. की थी। 2. स्कंध, डाल। 3. आनंद, प्रेम। 4. कही।

अंशु ३४
सिद्धन प्रसंग

दोहरा

पढि सोदर अरदास भी सभिनि निवायहु सीस ।
श्री हरि गोविंद चंद जी गुरु समरथ जगदीस ।। १ ।।

चौपई

चेलदल प्रथम सतुल चहि कर्यो । दल सों कलित हुतो जिम हर्यो ।
निरमल जल पावन अनवावा[1] । कहि करि कुंकम को घसवावा ।। २ ।।
आप खरे हुइ कर महिं धार्यो । 'सत्तिनाम' मुख मंत्र उचार्यो ।
निज कर ते छिरकनि को कीनि । ततछिन निकस्यो दिपति नवीन ।। ३ ।।
प्रथम लगर निकसी पिखि एसे । बिवर[2] विखै ते बिसीयर जैसे ।
'छिरके देति नीर के ज्यों ज्यों । फैलति ब्रिधति जाति है त्यों त्यों ।। ४ ।।
तबि अलमसत कह्यो कर बंदि । 'श्री सतगुर ! सभि रीति बिलंद ।
प्रथम चिन्ह इस पर गुरु कर को । महां महातम जुति पिखि तरु को ।। ५ ।।
अबि नहि पिखीयति तथा बनावहु । सतिगुर ते चिंन्हति दिखरावहु ।
श्रीं हरि गोविंद कर्यो उचारनि । 'अपर चिंन्हयुत बधहि[3] स डारनि' ।। ६ ।।
इम कहि कुंकम को छिरकायहु । छोटी बडी बूंद बरसायहु ।
'इन छीटनि ते चिंन्हति रहै । जबि लौ थिर प्रथमी पर अहै ।। ७ ।।
अबि इह निस महिं बरधहि तेतो । जोगनि जार्यो हुतो सु जेतो ।
पुन सतिगुर डेरे कउ आए । जथा रुची भोजन त्रिपताए ।। ८ ।।
भए सुपति सुख राति बिताई । उठे गुरू नित क्रिया कराई ।
भई प्रात बड लग्यो दिवान । सतिगुर बैठे दिपति महान ।। ९ ।।
जोगी गुर को देखि पलाए । सो गोरख के निकट सिधाए ।
सभिहिनि को आदेस बखानी । बैठे निकटि हौल उर ठानी ।। १० ।।
मानों महां जंग ते भाजे । बोल न सकहिं अधिक मन लाजे ।
कितिक देर महिं धीरज धारा । बहुरो सरब प्रसंग उचारा ।। ११ ।।

---

1. मंगवाया । 2. विवर, बिल । 3. बढ़े ।

'प्रथम हमारे गुरु को थाना। गोरख-मता नाम सभि जाना।
श्री नानक जबि तिह ठां[1] आए। सो प्रसंग तुम लखहु सबाए ॥ १२ ॥
गुर को नाम लोप हुइ गयो। 'नानक मता' नाम बिदत्यो।
टिक्यो न जोगी को[2] तिस थान। बिन सेवा थल रह्यो विरान ॥ १३ ॥
हमने चित महि हेरि बिचारी। सेवा करन रिदै बुधि धारी।
'बैठहि इसि थल जोग कमावैं। अरु निज गुरू नाम बिदतावैं' ॥ १४ ॥
बीत्यो हमहिं रहति चिरकाल। सद सथान की सेवा घालि।
इक फकीर आयो नर बावर। नहीं त्रास धार्यो जिन रावरि ॥ १५ ॥
श्री नानक को नाम बखाना। तरु चलदल तर आसन ठाना।
कितिक थान पर ममता धारी। 'हमरे गुर की' करति उचारी ॥ १६ ॥
बाद कर्यो तिन हमरे नाल[3]। हट्यो न डर धरि त्रास बिसाल।
ले कर गन ईंधन को डारा। लाइ अगनि हम चलदल जारा ॥ १७ ॥
तबि निरास हुइ बैठ्यो दूर। इक झुंगी[4] करि बस्यो बिसूर।
को जानै किन जाइ सुनायो। तिन को गुर तिह ठां चलि आयो ॥ १८ ॥
श्री नानक की दीरघ गादी। तिस पर थिर्यो, जिनहुं बड शादी।
कुछक चमूं है तिन के संगि। चंचल बली अरूढि तुरंग ॥ १९ ॥
हम नै हेरति रिदै बिचारी। अर्यो न जैहै इनहुं अगारी
अपर चक्रवरती हुइ राजा। लाखहुं सैना बीर समाजा ॥ २० ॥
अपनी सिद्धां को बल पाइ। तिस को भी हम लेहिं हराइ।
इह तौ एकल भी बलवान। जिन की अजमत विदत जहान ॥ २१ ॥
होइ न अस हमको गहि लेहि। मन वांछति पुन संकट देहि।
चलदल जर्यो लखहि अपराधी। हित बाधा बहु नर ले बांधी ॥ २२ ॥
त्रास पाइ हम सुधि हित आए। गुरु जुति करहु जथा मन भाए'।
सभि सिद्धनि गोरख दिशि देखा। जिसकी आइसु बिखै अशेशा[5] ॥ २३ ॥
सभि के मन की गोरख जानी। सरल रिदे बोल्यो बर बानी।
'श्री नानक संग मेल सुहेला। भयो जबहि, सिधगन, सु इकेला ॥ २४ ॥
जिन के मन महिं मान महाना। सभि मिलि महां बाद को ठाना।
अज़मति जुति चरचा करि हारे। बार बार अभिमान उतारे ॥ २५ ॥
भंगर नाथ अर्यो नहि माना। मारि खाइ करि बंदन ठाना।
सिध गोसट करि सभि हरखाए। सगरे सिधनि सीस निवाए' ॥ २६ ॥

1. स्थान। 2. कोइ। 3. साथ। 4. कुटिया। 5. अशेष।

सुनि भंगर क्रोधो उर भारा। नहिं गोरख को बाक सहारा।
कहति भयो 'सो ग्रिहसत मझारे। जोग साधना ब्रिकत[1] हमारे॥ २७॥
असमंजस अस रीति चलाई। तिस को गुरु कहि ग्रीव निवाई।
तिन को पिखि रुख बंदन धारी। नतु भंगर किस निवै अगारी'॥ २८॥
बोल्यो मंगल नाथ सुजाना। 'सभि महि ओज करे जु बखाना।
तिस को उचित सु करि दिखरावै। बिना कहे दीरघ जसु पावै॥ २९॥
बोल्यो भरथरि है इह काल। हौरा पख पर्‍यो हम हाल।
आप गुरू नानक भी नांही। थान छुरावहु अब तिह पाहीं'॥ ३०॥
झंगर आदिक मानी जेय। सभि ने कह्यो 'क्यों न हम लेय'।
गोरख हंस्यो जानि हंकारी। 'नहि इन संतनि की मति धारी॥ ३१॥
जिम जग महिं पखबाद हंकारा। सगरे धर्‍यो, न तजे बिकारा।
मान हानि बहु भए अगारी। हुइ लज्जति अबि संकट भारी॥ ३२॥
तऊ होइ गुन, दूखन जाइ। 'इम लखि भाखति भयो रजाइ[2]।
'जे थल जाइ छुरावहु आज। सभि सिद्धनि को सुधरहि काज॥ ३३॥
बदहि ब्रिंद महिं बहु वडिआई। आछी बात करहु सहिसाई।
बच गोरख के निज अनुसारे; सुनि करि मानी सिद्ध सिधारे॥ ३४॥
जहां गूरू को लग्यो दिवान। चलि आए 'आदेस' बखानि।
सुनि बोले सतिगुरु जगतेश। हुइ आदेस तिसै आदेश॥ ३५॥
गुर समीप सनमुख हुइ बैसे। सिर मुँडति हुइ हंडीआ जैसे।
मुंद्रा फटक[3] श्रवण महि डारी। भसम लगे झोरी तन धारी॥ ३६॥
सेली मेली कट लगोटी। अस तन बेख, तऊ इछ खोटी।
सभि सिद्धां के बल हैं भारे। हाथ बिरागण[4] फहुरी धारे॥ ३७॥
सतिगुर सों भंगर तबि कहे। 'जग महिं ग्रिहसती तुम बन रहे।
हम सिध भए जगत ते न्यारे। भोग बिखै त्यागे सुख भारे॥ ३८॥
हमरे संग तुमारो अरना। असमंजस, नर ब्रिध गन बरना।
यांते नहीं ओज कछु कीजै। गोरख-मता छोरि थल दीजै॥ ३९॥
इह सिद्धनि को थान पुराना। छप्यो नहीं कुछ बिदति जहाना'।
श्री हरि गोविंद बिकसति नैन। उत्र देनि को बोले बैन॥ ४०॥
बंधन मुकति बेस ते नांही। बंधे, तन हंता जिन मांही।
ममता धरति महां मन मानी। लख्यो न रूप, न दुबिधा हानी॥ ४१॥

---

1. विरक्त। 2. रज़ा, आज्ञा। 3. स्फटक। 4. सिद्धों की टिकटकी।

वहिर वेख धरि मन नहिं साधा। सो कबि छूटहि न, बंधन बाधा।
जिन के तन हंता नहीं लेश। निज सरूप लखि जगत अशेश ॥ ४२ ॥
ममता[1] गई, न पर्य्यति कहां। सो बिन बंधन ग्यानी महां।
वेख देखि बिरमहि अनजानं। मन बिकार तुमरे मन मान ॥ ४३ ॥
यांते हो सज़ाइ की लाइक। बंचक[2] जिम तनु वेख बनाइक।
सुनति छोभ करि सकल उडाने। निज अजमत को चहिं दिखराने ॥ ४४ ॥
बरखा पाथर की गन वरखति। बडे रूप धरि सिक्खनि धरखति[3]।
ऐंचति कंकर धूरि घनेरी। बल ते बायू बही बडेरी[4] ॥ ४५ ॥
अधिक प्रकाशति उलका डारति। 'मारि लेहु इन' बदन पुकारति।
'बहुर न करहि बिखेरा आइ'। बोल्यो भंगर क्रोध वधाइ ॥ ४६ ॥
'हम नीके समुझाइ न मानी। करहिं चमूं जुति अबि तुव हानी।
नांहित तूरन जाहु पलाई'। बोलत दारुन रूप बनाई ॥ ४७ ॥
शेर सरप गिर[5] सम बधि[6] गए। देखति सिक्ख बिसम[7] उर भए।
सुनति हुते श्री नानक साथ। अजमति लाइ थके सिध नाथ ॥ ४८ ॥
तिम[8] अबि गुरु सों कीनि बिखेरा। बोले हरि गोविंद तिस बेरा।
'बैठे रहहु, बिलोक तमाशा। सभि इन शकती होहि बिनाशा ॥ ४९ ॥
गुरु डेरे ते दूर फिरंते। गुरु तेज ते अंग जरंते।
बरखा आदि बड उतपात। गुर नर के न छुए कुछ गात ॥ ५० ॥
गुरू प्रताप अगनि दिखरावा। सम सूरज के तिनहुं दिखावा।
जहिं जहिं फिरति धाइ करि सारे। अगन समान तहां तहिं जारे ॥ ५१ ॥
सहि न सकहिं भाजनि ही धारा। ब्याकुल होति लाइ बल सारा।
जरे जाहिं तन जतन करंते। चले पलाइ रिदे पछुतंते ॥ ५२ ॥
ठहिरयो गयो न बड हठ धारति। कोस कोस लगि चहुं दिशि जारति।
तजि धीरज को गए पलाई। जहि गोरख जुति सिध समुदाई ॥ ५३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे **'सिद्धन प्रसंग'** बरननं नामु चतर त्रिंसती अंशु ॥ ३४ ॥

---

1. अहंकार। 2. वंचक। 3. घर्षण और दबाव करते है। 4. और बड़ी। 5. गिरि। 6. बढ़ गए। 7. विस्मयपूर्ण। 8. इस प्रकार।

अंशु ३५

श्री गुरु डरोली आगवन प्रसंग

दोहरा

भाजि गए तजि लाज को सिद्ध-समाज मझार ।
जानी गोरख बारता बोल्यो कुछ रिस धारि ॥ १ ॥

चौपई

'सुनि भंगर ! तैं लाज बिसारी । बनि बनि बैठति बड-हंकारी !
श्री नानक की प्रथम खरावां । तिस की मार खाइ पछुतावा ॥ २ ॥
अपने साथि अनुचित कराई । तै गुर आगे ग्रीव निवाई ।
जग महिं प्रगटन, देनि दिखाई । जहं कहं नर गन ते पुजवाई ॥ ३ ॥
तबि की हम ने दीनिसि छोर । जान्यो पसर्‌यो कलिजुग घोर ।
सो प्रण तजि अबि गमने दौरि । क्या करतूत करी तिस ठौरि ॥ ४ ॥
सभि सिद्धनि को कीनसि हौरा । मद हंकार पान ते बौरा ।
जो सिध हुइ मम बच अनुसारी । रहै दुर्‌यो अबि गिरन मंझारी ॥ ५ ॥
नहिं देशनि तिन[1] देहि दिखाई । चहहि न बिदति होनि पुजवाई ।
बे मिरजाद करहि अबि कोई । सिध मंडल ते निकसहि सोई' ॥ ६ ॥
सभि सिध भंगर की दिशि देख । हसहिं लखहिं 'मतिमंद बिशेख' ।
बैठि रह्यो करि कै मुख नीचा । मनहुं सैंकरे[2] घट जल सींचा ॥ ७ ॥
सुनि गोरख ते सिद्धनि मानी । बहुर न बिदति भए किस थानी ।
टिके जाइ करि सरब सुमेर । करहिं जोग को बैस बडेर ॥ ८ ॥
सभि उतपात बिसाल बिलोके । अपनि तेज ते श्री गुरू रोके ।
सुभट जि सिक्ख साध अलमसत । सिध भागे पिख हरख समसत ॥ ९ ॥
श्री मुख ते सभिहूंनि सुनायो । 'भयो बिघन हम सकल मिटायो ।
अबि ते आगे होहि न कोई । नहिं आवहि कबि को सिध जोई ॥ १० ॥
भयो अचल श्री नानक-मता । बिघन भविख्यति के सभि हता ।
सुनति अनंद भए सिख सारे । सदा गुरू की बिजै उचारें ॥ ११ ॥

---

1. तीन लोक । 2. सैंकड़ों घड़े पानी के पड़ गए, अर्थात् बहुत लज्जित हुआ ।

तिस दिन सतिगुर डेरे मांहि। थिरे रहे कित गमने नांहि।
पंचाम्रित घनो करिवायो। नर-गन मिले सभिनि वरतायो ॥ १२ ॥
सुनि करि पिखि करि गुर आगवनू। जिस पुरि ग्राम हुतो सिख भवनू।
नर नारी आनंद बिलंदे। मिलि मिलि जहि कहिं भे सिख ब्रिंदे ॥ १३ ॥
दरशन हित उतलावत आए। मनहु अमी सर भरि मुहि पाए।
जिनको सुनति दूरि ते दूरि। हम भागनि करि आए हदूरि ॥ १४ ॥
धरि धरि आगै पुंज अकोर। चरन कमल वंदहिं कर जोरि।
जस जस करहिं कामना, पावहिं। दरशन ते निरमल बनि जावहिं ॥ १५ ॥
सत्ति नाम सिमरन लिव लागे। जिन मन सुपति[1] भगति महिं जागे।
भई भीर गुरु के चहुं फेरे। आवति गमनति चहुं दिशि केरे ॥ १६ ॥
सुजसु बखानति जहिं कहिं जाते। पुरहिं कामना उर हरखाते।
श्री हरि गोविंद हय आरूड़े। करहिं अखेर ब्रिती बन गूड़े ॥ १७ ॥
बीन बीन करि केहरि मारे। शूकर ससे धाइ संघारे।
पाड़े मिरग जानि नहिं पावैं। तीरनि तर कै तुपकनि घावैं ॥ १८ ॥
बन महिं विचरति रहति बडेरे। संगति आइ थिरहि विच डेरे।
जब सति गुर अखेर[2] करि आवैं। तवि सुंदर दरशन को पावैं ॥ १९ ॥
ग्रामनि महिं बहु सिख बनजारे। धनी बिसाल करहि बिवहारे।
अरपहि दरब सरब तहि आनि। गुरू कामना[3] पूरहिं महांन ॥ २० ॥
इस प्रकार दिन कितिक बिताए। सभि थल के सिख मुख्य बुलाए।
जबि समुदाइ आनि करि बैसे। श्री हरिगोविंद उचरयो ऐसे ॥ २१ ॥
प्रथम गुरू को इह असथान। दरशन को फल पुंन[4] महान।
अघ ओघनि हरता उर धरीयहि। पुरब दिवस के मेला करीयहि ॥ २२ ॥
सतिगुरु शबद पठहु अरु सुनीयहि। करो कीरतनु निरमल बनीयहि।
बिघन उठावहि को इत आइ। निरवारहु मिलि करि समुदाइ ॥ २३ ॥
सुनि गुरि ते सभिहूंनि बखानी। 'अबि ते करहिं कही जिम बानी।
जिस प्रकार हमरो कल्यान। तिम तुम हम सों करति बखान' ॥ २४ ॥
'अबि ते साध फकीरी बेस। रहै इहां' बोले जगतेस।
पुन अलमसत साध को धीर। दे करि भले गुरू बर बीर ॥ २५ ॥
अपने देश चलनि के हेतु। कह्यो सभिनि सों 'बनहु सुचेत'।
तिस थल थिर हुइ करि अरदास। अभिवंदन चित धरे हुलास ॥ २६ ॥

---

1. सोकर। 2. शिकार। 3. पूरी करें। 4. पुण्य।

हय अरोहि[1] सतिगुर मग चले। करि करि बंदन नर-गन मिले।
सभिहिनि कहु हरखाइ सु आछे। प्रसथाने कुछ सैना पाछे॥ २७॥
क्रम क्रम करि मग उलंघनि कर्‍यो। आइ सुरसरी नीर निहर्‍यो।
तट प्रवाह के डेरा पाइ। जल महिं क्रीड़ति अनंद[2] उपाइ॥ २८॥
बिधीआ जेठा आदिक सारे। गुर पाछे बरि गंग मझारे।
इत उत पैरति बेग करंते। निरमल जल ते उर हरखंते॥ २९॥
इतने महिं सुनि दिज-गन आए। जचि गुरू ते धन बहु पाए।
कीरति करति सदन को गए। 'इनि सम दाता नहिं द्रिशटए॥ ३०॥
जिनहुं दान सतिगुर ते पायो। दारिद सगरी बैंस गवायो।
जिसको देत करति निहाला'। पसरयो जहं कहं सुजस उजाला॥ ३१॥
मन भावति गुरु करे बिलासा। रहे कितिक दिन सुरसरि पासा।
चढे तहां ते चले अगारी। सनै सनै वाहन सुख धारी॥ ३२॥
आई श्यामल वारी वारी[3]। श्री जमना पावन अघ-हारी।
तट डेरा करि तहां रहाए। दियो दान दिज जो चलि आए॥ ३३॥
परे पार गुर सैंन समेता। आगै गमने होइ सुचेता।
प्रापति भए थनेसुर आए। डेरा करयो तुरंग[4] लगाए॥ ३४॥
बडे ताल महिं कीनि शनाना। पुन गमने गुरु नानक थाना।
दरशन करयो प्रशादि ब्रतायो। हरखति सभि सिक्खनि लैं खायो॥ ३५॥
दासनि बूझयो थान प्रसंग। गुरू सुनायहु सभि के संग।
'सूरज परब[5] इहां गुर आए। संन्यासी दिजि मिलि समुदाए॥ ३६॥
मन मलीन सभि के गुरु जाने। वहिर बेख कूरे[6] तन ठाने।
करि चरचा सभि को मग पायहु[7]। गुरु सिक्खी जग महिं बिदतायहु॥ ३७॥
इकठे भए बिदुखनि[8] बिलोकि। श्री नानक तबि कीनि शलोक।
करहि तरकना जो पिखि मास। तिन पर कीने बाक बिलास॥ ३८॥
श्री गुरु हरि गोविंद मुकामू। कितिक दयोस कीनसि बिसरामू।
सभि तीरथ को करे शनान। पुन तहि ते चाह्यो प्रसथान॥ ३९॥
सनै सनै गमने मग मांही। मिलहिं सिख सुन आवति पाही।
पंथ बिखै केतिक मिलि परैं। दौरि दौरि पद पर सिर धरैं॥ ४०॥

---

1. आरोह होकर। 2. आनंद। 3. वाली (श्यामल जल वाली)। 4. घोड़े थान पर ले गए(तुरंग लगाए, घोड़े लगाए पुरातन मुहावरा)। 5. सूर्य ग्रहण पर्व पर। 6. कूट (झूठे)। 7. राह पर डाला (लगाया)। 8 पंडित।

डेरा होति अनिक चलि आवैं। अरप अकोरनि सीस निवावैं।
इसि विधि दिन प्रति भीर परति है। मेला[1] बडि गुरु निकटि करति हैं ॥ ४१ ॥
सनै सनै सभि उलंघति गए। निकटि डरोली पहुंचति भए।
परखति सगुन सकल परवार। करति प्रतीखनि प्रेम उदार ॥ ४२ ॥
बोलति काक उडावनि करें। 'गुरु आवहिं' इम बाक उचरैं।
गंगा रिदे सनेह अछेह। सुत दरशन को बांछति ग्रेह ॥ ४३ ॥

दोहरा

गुरु-घरनी दामोदरी दुतिय नानकी जान।
चितवति गुरु आगवनि को करि करि प्रीत महान ॥ ४४ ॥

चौपई

तिम रामो उरु साईं दास। करहिं प्रतीखन आवनि आस।
आंख नानकी धरकी बामू। सम इंदीबर बडि अभिरामू ॥ ४५ ॥
पट दमोदरी को सरकंति। वाम भुजा छिनु छिन फरकंति।
तिम शुभ शगुन गंग परखंती। सुत आवहि अति शीघ्र लखंती ॥ ४६ ॥
सुनि सुनि पिखि पिखि सौन[2] पकाश। हरखति रामो साईंदास।
गुरु आगवन जानि नियरायो। सरब समाज त्यार करिवायो ॥ ४७ ॥
तिण आदिक जे चहियहि आए। कीने त्यार सकल समुदाए।
करहि प्रतीखन दिन प्रति ऐसे। ग्रीखम महिं बरही[3] घन जैसे ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे श्री गुरू डरोली आगवन प्रसग बरननं नाम पंच त्रिसती अंशु ॥ ३५ ॥

---

1. सम्मेलन। 2. शकुन। 3. मोर।

अंशु ३६

डरोली प्रसंग

दोहरा

श्री गुरु हरि गोविंद जी प्रथम पठ्यो असवार ।
ग्राम डरोली सुधि दई सुनि हरख्यो परवार ।। १ ।।

चौपई

साईं दास दास ले ब्रिंद । सुनि सनमाननि हेतु बिलंद ।
निकसि ग्राम ते वध्यो प्रमोद । तूरनि गमन्यो सतिगुरु कोद ।। २ ।।
'सुंदर मंदर बिखै प्रयंक । करयो डसावनि हरखति अंक ।
उज्जल आसतरन[1] कसवाइ । रेशम डोर गुंफ[2] लरकाइ ।। ३ ।।
अंतर वहिर निरंतर घर को । करीयहि त्यारि मारजनि करि को ।
अतरन की खुशबोइ फैलावहु । दास भेजि गन फूल अनावहु ।। ४ ।।
कुंभ अंब हित, दीजहि कोरे । सीतल जल कीजहि सम ओरे[3] ।
तर ऊपर दे करि बहु शोरा । करहु भले इह कारज तोरा' ।। ५ ।।
कहि रामो संग आप पयाना । गुरु सनमुख, करिबे सनमाना ।
मधुर प्रशादि उठाए हाथ । अति चित चौंप पिखनि को नाथ ।। ६ ।।
मात गंग के सेवक संग । मिले डरोली मनुज उमंग ।
सभिहिनि के चित चाउ बडेरे । पैर नगन गे कोस अगेरे ।। ७ ।।
पिखे दूर ते उडरी धूर । भे अनंद ते उर भर पूर ।
उदयो मनो पूरब दिशि चंद । भए चकोर बिलोचन दंद ।। ८ ।।
करति इताइल किम मिलि जाइ । जनु रवि पिखि पंकज बिकसाइ ।
चरन धरति आगे बिचलंते । गद गद गिरा न बोल सकंते ।। ९ ।।
भई दशा अस साईं दास । मन को प्रेम बिसाल पकाश ।
जल की बूंद बिलोचन बरनी[4] । ढरि ढरि परति बदन ते धरनी ।। १० ।।
इतने महिं सतिगुर सहिसाए । प्रेमातुर को चहिसि मिलाए ।
परम पवंगम पायो पोईए । अपने जन को तूरन जोईए[5] ।। ११ ।।

---

1. बिछोना । 2. गुच्छे । 3. ओले । 4. पलके । 5. तेज़ घोड़ा ।

निकटि होइ करि लीनि टिकाइ। संग सुभट पशचाती आइ।
साईं दास उताइल करि कैं। दरशन देखि चरन कर धरि कैं ॥ १२ ॥
सिर धरि पग पर तिह थल थिर्‍यो। मनहुं पखारनि द्रिग जल कर्‍यो।
अपर दास दूसरि पग गह्यो। धरि धरि सिर सभि आनंद लह्यो ॥ १३ ॥
श्री हरि गोविंद परस्यो पान। बूझी 'कुशल अहै सुख थान'।
'सभि अनंद है, क्रिपा तुमारी। निस दिन अखिल, प्रतीखन धारी ॥ १४ ॥
सहत सनूखा जननी गंगा। कुशल सहित सेवक सरबंगा।
दिन संमत सम बीतति रह्यो। लगी उडीक[1] दरस अबि लह्यो' ॥ १५ ॥
सनै सनै गमने दिशि ग्रामू। बोलति बात करति अभिरामू।
"साईं दास! सदा रिद मेरे। वसति रह्यो तुव प्रेम वडेरे ॥ १६ ॥
सिमरति करति चहति इति आवन। हित कारज बिलमें सभि थावन।
भए सिद्ध नहिं देर गवाए। शीघ्र करति तेरी दिशि आए ॥ १७ ॥
मग महिं सिख संगति सभि थाईं। करि करि बिनती लिए टिकाई।
सभिहिन मनोकामना पूरि। आए शीघ्र लखहु मग दूर' ॥ १८ ॥
इम बोलति बिहसति[2] गुरु नाथ। साईं दास लिए निज साथ।
ग्राम डरोली भए प्रवेश। आइ मिले तहिं लोक अशेश ॥ १९ ॥
जथाजोग मिलि बोलनि करिकैं। हय टिकाइ दर तरे उतरि कैं।
गए प्रथम गंगा के पासी। तनुज बिलोकन की बड-प्यासी ॥ २० ॥
सुनि आगवन अनंदति होई। प्रिय पुत्रा थिर द्वार अलोई[3]।
आगै गए दौर बहु पास। जिन गुर देख्यो धरे हुलास ॥ २१ ॥
'माता जी आए गुर पूरे। सभिहिनि कीनसि दरशन रूरे।
इतने महिं श्री हरि गोविंद। परे मात के पद-अरबिंद ॥ २२ ॥
पिखि सपूत को अंक लगायव। उर अनंद द्रिग जल भरि आइव।
मसतक सूंघति बर मुख हेरति। रज झारति अंचर को प्रेरति ॥ २३ ॥
करे प्रेम को कर तनु फेरति। मनहु ब्रिहा को कशट निवेरति।
'कहु सुत! सकल काज सिद्ध कीने। जिस हित इते पंथ पग दीने ॥ २४ ॥
रह्यो कुशल सो तन सभि दिन में! वध्यो कि नही प्रमोद जि मन में'।
सुनि सतिगुर ने सकल सुनाए। जो प्रसंग श्री नानक थाएं ॥ २५ ॥
कितिक समैं तहिं बैठे रहे। पुन इकंत होवनि को चहे।
उठे गुरू लखि साईं दास। बोल्यो हाय जोरि इह पास ॥ २६ ॥

1. प्रतीक्षा। 2. विहसते। 3. देखती रही।

'मंदर सुंदर जहां सुधार्‌यो। तुमहि बसावनि को प्रन धार्‌यो।
तहां चलहु कीजहि बिसरामू। करहु सफल पावन शुभ धामू॥ २७॥
इम कहि आपि संग ले चल्यो। बूझी कुशल आन जो मिल्यो।
सुंदर सरब सेज म्रिदु करी। रामो तहां प्रतीखति थिरी॥ २८॥
प्रविशे द्वार दौरि करि आई। कोमल पग पंकज लपटाई।
'घरी आज की शुभ मै धंन। जिस पर सतिगुर भए प्रसंन॥ २९॥
सदन आनि कै चरन दिखाइ। अपने जन जाने मन भाए'।
'कहु रामो! तूं हैं सुख साथ। प्रेमी भगति सिख तुव नाथ॥ ३०॥
प्रीति-दाम ने ऐंचि मंगाए। केवल इस घर के हित आए'।
इम बोलति सु प्रयक बिराजे। जिन के सिमरन ते अघ भाजे॥ ३१॥
तबि रामो पिखि तूरन तरनी[1]। ले करि संग ग्रई गुर-घरनी।
दोनहुं हाथ जोरि करि वंदति। पति को दरशन करि अभिनंदति॥ ३२॥
कुशल बूझ करि धीरज दीनि। पुन अहार की त्यारी कीनि।
अनिक प्रकार मधुर करि धरे। तुरश सलवण स्वाद सों भरे॥ ३३॥
रामो निज कर सो गुर कारन। भांति भांति के रखे अहारनि[2]।
थार प्रोस्यों प्रेम सु करि करि। प्रिथक प्रिथक सभि रसको धरि धरि॥ ३४॥
ले करि गई आप हरखति। अपनि सरीर अमोघ करंती।
साईं दास संग जिह साईं। जल सीतल निज हाथ उचाई॥ ३५॥
आनि थार को धर्‌यो अगारी। पिखति न त्रिपतहि प्रीति उदारी।
पति बिजना गहि हाकति वायू। मंद मंद गुर देहि लगायू॥ ३६॥
त्रिया हाथ मैं धरु रुमाल। फेर थार पर थिर तिस काल।
इम दंपति उर भाउ सु धरि धरि। अचवावति भोजन हित करि करि॥ ३७॥
सनै सनै बातनि बतरावति। 'इह स्वादल' कहि कहि कै ख्वाबति।
अति प्रसंन पिखि करि गुर होए। प्रेमी महां जानि करि दोए॥ ३८॥
'सनबंधी हैं गुरु हमारे। इह निशचै उर ते निरवारे।
प्रभू लख्यो सभि जग को स्वामी। आयहु हमहि उधारनि कामी॥ ३९॥
दीन-बंधु जिह नाम उचारें। वसी प्रेम के सकल विचारें।
तीन लोक-पति की इह मूरति। सिक्खनि बतसल सुंदर सूरति॥ ४०॥
इम निशचै लखि श्री गुर पूरे। भए प्रसंन चरित निज रूरे।
अपर कामना निज कै नाही। रिदा विमल करि दीनसि तांही॥ ४१॥

---

1. तुरंत खिसक गई। 2. अनेक आहार। 3. रूमाल।

रुचि करि भोजन ते त्रिपताए। जल सीतल पीवनि हरखाए।
हाथ पखारन जनि करि लीनि। पौंछनि हित रुमाल तबि दीनि ॥ ४२ ॥
कर्यो बचन उर भाउ जु हेरा। 'होहि न अबि ते भवजलि फेरा।
अति प्रसंन मोकहु तुम कीना। इस कारन ते गति[1] बर दीना' ॥ ४३ ॥
देख्यो अपने रिदे बिचारि। भरम मोह के मिटे किवार।
ग्यान ब्रिती जिन के उर जागी। राग द्वैख तनहंता त्यागी ॥ ४४ ॥
गुरु महातम नीके जाना। बिशियनि ते मन जबि सितलाना[2]।
वडे भाग ते जाग्यो ग्यान। भए जगत के बंधन हान ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रासे **'डरोली'** प्रसंग बरननं नाम खशट त्रिशती अंशु ॥ ३६ ॥

---

1. सुगति, मुक्ति। 2. शीतल पड़ गया।

अंशु ३७

श्री बाबा गुरदित्ता जन्म प्रसंग

दोहरा

रहनि लगे श्री सतिगुरु मिलि करि सकल प्रवार।
गरभवती दामोदरी पुत प्रतीखन धारि ॥ १ ॥

चौपई

सेवा करैं नानकी कर सों। पति महिं प्रीती धारति उर सों।
गंगा हेरि हेरि प्रिय नंदन। करहि आनि जग जिन को बंदन ॥ २ ॥
अति अनंद चित जिसके होवा। वध्यो प्रताप पुत्र को जोवा।
पौत्रा पिखनि लालसा जांही। रखहि सनूखा[1] को निज पाही ॥ ३ ॥
ब्रिंद बिघन ते रच्छ्या करिही। जतन अनेकनि के अनुसरही।
सतिगुर वहिर दिवान लगावैं। सुनि संगति बहु दिशि ते आवै ॥ ४ ॥
निकटि निकटि जे ग्राम तमामू। सुनि सुनि गुरु को जस अभिरामू।
प्रथम न सिक्ख भए सो पावैं। ले सिख्या को उर हुलसावैं ॥ ५ ॥
बनहिं दास मनु-कामन पावैं। अनिक अकोरन को अरपावैं।
केतिक दिन प्रति दरशन आवैं। कितिक निकट रहि सेव कमावैं ॥ ६ ॥
सिक्खी अधिक होनि तहिं लागी। सिमरहिं सत्तिनाम वडि-भागी।
भए देश तिस ब्रिंद निहाल। फैलि रह्यो सतिगुरु जसु-जाल ॥ ७ ॥
इस प्रकार तहिं बसति बितायो। समै प्रसूत होनि को आयो।
मात गंग निसि दिन सवधाना। निकट नुखा के रहित सुजाना ॥ ८ ॥
जगत बिखें रुति सरद प्रकाशी। कातिक सुंदर पूरनमाशी।
ग्रिह निछत्र शुभ लगन मझारा। अरध राति महि चंद उदारा ॥ ९ ॥
जनम्यो बालक सुंदर देहि। सुनि गंगा भई आनंद ग्रेह।
दासी दास फिरहिं उतलाए। मंगल वसतु संचि समुदाए ॥ १० ॥
आपस महिं कहि हरखति होति। सभि कुटंव के अनंद उदोति।
गुर ढिग सुधि कहि धन गन पायो। सभिनि बिखै मंगल प्रगटायो ॥ ११ ॥

---

1. बहू।

भई प्रभाती बजी बधाई। लघु नौबत बाजति शहनाई।
मंगत जनु सुनि सुनि समुदाए। जाचन हेतु गुरू ते आए॥ १२॥
जेठे संग कह्यो 'धन लीजै। गन मंगत जन को बहु दीजै।
ले तबि एकल थान थिर्यो है। दे सभिहिन को अनंद कर्यो है॥ १३॥
घर दर अग्र हीजरे नार्चाहं। पखहिं अनेक हरख चित रार्चाहं।
ढोलक टलका[1] घंघरू ताली। गाइ बजावति लेति भवाली[2]॥ १४॥
गूथति फूलनि पात सुधारै। दर पर बांधी बंदनवारैं।
जेठा[3] सुत जनम्यो बडभागी। गावति मिली त्रिया अनुरागी॥ १५॥
आनि आनि गन देति बधाई। सुनि सुनि मोद गंग उर पाई।
जो कुल रीति हुती सभि कीनी। जथा जोग वथु[4] त्रीयनि दीनी॥ १६॥
साईं दास प्रिथक धन बांटा। रामो जुति वड मंगल ठाटा।
गंग मात को देनि बधाई। गुरु ढिग कहति सुनति हरखाई॥ १७॥
इत्यादिक बड उतसव कीना। रंकनि को धन अनगन दीना।
सुनि सुनि अपर ग्राम के आवैं। रिदे अनंदति बाक सुनावैं॥ १८॥
'राम दास गुर को वड वंस। सगरे सोढिनि को अवतंस।
गुर अरजन को उद्यो सपूत। माया महि अलेप अवधूत॥ १९॥
जोधा गुरू जगत को मालिक। सभिनि जीव का तुमरे तालिक।
अलप घनी देते सभि तांई। रावरि दात सरब ले खाई॥ २०॥
इंद्र मनिंद बिलंद उदारा। देति दान जिस वार न पारा।
सिख संतन को गुर बखशंते। जनम मरन के बंध करते॥ २१॥
सुनि सुनि जसु श्री हरिगोविंद। बखशति दरब दयालु बखशिंद[5]।
सुत जनमति उतसव इम कीना। जथा-जोग जन गन धन दीना॥ २२॥
करनि लगे सुत की प्रतिपारे। पौत्रा दिखहि गंग मुद धारे।
खशटी[6] कीनि जथा कुल-चाली। पाइ सूप महि बरखति साली[7]॥ २३॥
सभि त्रीयन कहु दीनि कराहू। बंट्यो बहुत लीनसि सभि काहू।
दिनि त्रौदश में करि कुल रीति। हेरि हेरि करि हरखति चीत॥ २४॥
सवा मास जबि बितवनि करयो। 'गुर दित्ता' गुर आखय[8] धरयो।
पिता निकट तबि ले करि आए। दासी दास संग समुदाए॥ २५॥
श्री हरि-गोबिंद नंदन हेरा। कर्यो प्यार सिर पर कर फेरा।
'श्री गुर सुत दीनसि अभिरामू। गुर दित्ता यांते धरि नामू॥ २६॥

---

1. घंटी। 2. भांवरी। 3. ज्येष्ठ, बड़ा। 4. वस्तु। 5. दानी। 6. छठी। 7. चावल। 8. नाम।

कितिक लोक इम करति उचार। 'श्री नानक को इह अवतार'।
नहिं इम कहहु अनुचित महान। होइ न गुन, अवगुन पहिचान ॥ २७ ॥
जिस कारन ते उचरनि लागे। सो भी कहौं सुनहुं अनुरागे।
इक दिन महि श्री हरि गोविंद। मिले कहूं बैठे श्री चंद ॥ २८ ॥
करि बंदन तबि थिरे अगारी। श्री नानक सुत गिरा उचारी।
'केतिक नंदन भए तुमारे। गुरू भए सभि जगत मझारे' ॥ २९ ॥
हाथ जोरि बोले गुर भारी। 'पंच पुत्र भे क्रिपा तुमारी।
सिरी चंद बिकसति कहि बैना। 'को बावे[1] के घर भी दैना ॥ ३० ॥
कै अपने घर ही सभि राखहु। पंचहु को न बिरहु अभिलाखहु'।
कह्यो गुरु तबि नंम्री होइ। 'करहिं रजाइ आप की जोइ ॥ ३१ ॥
अभिलाखहि हम, सकल समाजा। होइ सफल जो तुमरे काजा।
आदि गुरु के नंदन आप। जिन को सभि थल वध्यो प्रताप' ॥ ३२ ॥
श्री नानक सुत सुनति अलाई। 'हित आदर के कहति बनाई।
कै तुम साच करहु हम जाचा[2]'। हरि गोविंद कहि 'जानो साचा' ॥ ३३ ॥
इम कहि घर को गए गुसाई। जेशट नंदन लीनि बुलाई।
बसन बिभूखन चारु नवीन। शसत्र सहत पहिरावनि कीन ॥ ३४ ॥
लै निज संगि गए पुन तहां। बैठ्यों सिरी चंद शुभ जहां।
'जेठो नंदन इही हमारे। अरप्यो तुमरे आनि अगारे ॥ ३५ ॥
अपर पुत्र सभि दास तुमारो। चित बांछहु लीजहि अबि सारे।
रावर की इह वसतू सारी। हम सदीव ऐसी मति धारी' ॥ ३६ ॥
सुनति प्रसंन भए श्री चंद। 'धंन तुमहु इम बने बिलंद।
हम प्रसंन मन तुम पर भए। उचित वडाई के लखि लए ॥ ३७ ॥
जो इच्छा हम ते बरु लीजै। कुछ अदेय तुम ते न जनीजै[3]।
श्री हरि गोविंद सुनति बखाना। 'जो सभि ते आछो तुम जाना ॥ ३८ ॥
सो दीजहि जे भए क्रिपाला। दाता तुम सम क्वै न विसाला'।
सिरी चंद तबि रिदे बिचारा। श्री अरजन सुत संग उचारा ॥ ३९ ॥
आगे ही तुम घर वडिआई। श्री गुर नानक की शुभ पाई।
हमरे सिर टोपी इक अहै। संगी सदा सरब ही लहैं ॥ ४० ॥
अपर पदारथ सभि तुम लीने। हलत पलत को राज प्रवीने।
सो टोपी हम दें सुत तोही। बिदति जग बखशिश इह मोही ॥ ४१ ॥

1. बाबा श्री चंद। 2 याचना की। 3. जाना जाए।

सभि जग की महंतता भारी। इस टोपी के हुइ अनुसारी।
अपर न ह्वै इस के सम दूजा। चहुं दिशि देखि करहिं बड पूजा ॥ ४२ ॥

लाखहु नर धारहि इह बाना। केतिक नांगे बनहि महाना।
बिथरहि पंथ महिद मही आन। जिनके होइ न आन समान ॥ ४३ ॥

मम तप को प्रताप बल भारी। पसरहि सगरी धरन मझारी।
केतिक हम ढिग आछो रह्यो। सो सभि पुत्र तुमारे लह्यो ॥ ४४ ॥

सों संमत ऊपर किछ जानो। भई बैस हमरी पहिचानो।
पिता गुरू की जो बडिआई। सो सभि सोढनि के घर आई ॥ ४५ ॥

जेतिक हुती हमारे पास। सो भी आई तोहि आवास'।
इम कहि निज टोपी ले हाथ। धरी तबहि गुरदित्ते माथ ॥ ४६ ॥

हरखति कह्यो बदन को जोयो। 'तू अबि ते बाबे को होयो।
अपर चतुर सो गुरु के रहे'। चित प्रसंन ते गुर सुत कहे ॥ ४७ ॥

तबि ते श्री बाबा गुरदित्ता। कहनि लगे जबि ते बर दित्ता[1]।
'बाबा' नाम कहिन ते जाना। पाछे नर करि करि अनुमाना ॥ ४८ ॥

श्री नानक को बाबा नाम। जग महि बिदति लखहि अभिराम।
अपर न बाबा किस को कह्यो। गुरता थिरु सु गुरू पद लह्यो ॥ ४९ ॥

सभि सोढी नै[2] बाबा नाइ। श्री गुरदित्ते को लखि पाइ।
यांते लखीअहि रिदे मझार। श्री नानक के भे अवतार ॥ ५० ॥

इक तौ कथा गुरनि की सारी। सुनी नही नहि मन महिं धारी।
और वासतव नहीं बिचारे। इम कहिते मति दूखन धारे ॥ ५१ ॥

बैठे गादी नौं[3] गुरु भारे। सो किस के कहीयहि अवतारे।
जे लखीअहि बाबा गुर दित्ता। श्री नानक अवतार सु लित्ता[4] ॥ ५२ ॥

तिन के नौ रूपनि अवतार। इह आशै निकस्यो कुरिआर[5]।
जिसने प्रथम कीनि अनुमान। नही भेव सो सक्यो पछान ॥ ५३ ॥

तिस ने सिख संगति महिं कह्यो। सुन परंपरा सभि नै लह्यो।
कहति रहे सिख सुनते रहे। निरने करि आशै नहि लहें ॥ ५४ ॥

यां ते कहनि नहीं इह चीन। समझहु सतिगुर सिक्ख प्रबीन।
'बाबा' कहिबे ते सभि जाना। सिरी चंद कथ सुनी न काना ॥ ५५ ॥

---

1. वर दिया। 2. ने। 3. को, ९। 4. लिया। 5. झूठा।

निरनै करनिहार सिख जेई। समझ बिचारहु नीके तेई।
श्री हरि गोबिंद के सुत जनमें। सरब कुटंब अनंदति[1] मन में ।। ५६ ।।
करि करि गंग सनेह घनेरा। पौत्र दुलारति संझ[2] सवेरा।
ग्राम डरोली समै बितावा। श्री सतिगुरू प्रमोद बधावा ।। ५७ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे **'श्री बाबा गुरदित्ता जन्म'** प्रसंग बरनन नाम सपत त्रिशती अंशु ।। ३७ ।।

1. आनंदित, प्रसन्न। 2. सांझ।

अंशु ३८

साईंदास प्रसंग

दोहरा

श्री हरि गोविंद चंद के सुत उपजे पशचात ।
केतिक मास बितीत भे सुंदर ब्रिद्धति गात ।। १ ।।

चौपई

रामो लगति हुती गुरु सारी[1] । सौ सबंध्र को रिदे बिसारी ।
पति जुति जान्यो 'गुरु जगदीश' । नित उठि धरति चरन पर सीस ।। २ ।।
भोजन आदिक सेवा जोइ । करहि प्रेम ते निज कर सोइ ।
अस प्रतीत दंपति को आई । सेवति सतिगुर शकती पाई ।। ३ ।।
अजमति सहत भयो उजीआरा । चौदहि लोक चरित लखि सारा ।
त्यों त्यों नंम्री भूत बनंते । शकति पाइ करि नहि गरबंते ।। ४ ।।
बिलसति बडे बिनोद बिलासू । तिनके सतिगुरु बसे अवासू ।
रामो ले गुरु सुत करि प्यारू । बहुत दुलारति देखति चारू ।। ५ ।।
गुर समीप कबि कबि ले जावैं । गोद पुत्र को ले दुलरावैं ।
साईंदास कबहूं ले अंक । सुंदर मनहुं चंद अकलंक ।। ६ ।।
पिखि दमोदरी ह्वैं बलिहारी । पारति पुत्र प्रीति उर धारी ।
जरे जराउ सु चामी कर[2] के । भूखन बहु पहिरावनि करके ।। ७ ।।
सूखम झीन बसत्र पहिरावैं । झगली[3] महिं सरीर दिपतावैं ।
त्रिपत न होति दुलारति सारे । बालक दुरलभ प्रथम निहारे ।। ८ ।।
बीत्यो चेत, बिसाखी आई । चहुं दिशि ते संगति उमडाई ।
सुन गुर डेरा ग्राम डरोली । अरपनि हित बसतू बहु मोली ।। ९ ।।
लैबे खुशी कामना पूरन । संगति आइ पहूची तुरन ।
दिवस बसोए[4] को जबि आवा । बडो फरश गुर बहिर करावा ।। १० ।।
मखमल की गादी लगि ज़री । चारन कोर बराबर करी ।
ऊपर परे बडे उपधानू । खरे ढलैत[5] भए सवधानू ।। ११ ।।

---

1. साली । 2. सोना । 3. छोटा चोला । 4. वैशाखी । 5. ढाल-धारी, शूरवीर ।

कंचन दंड लिए को पानी[1]। खरे भए गुर के अगवानी।
सूरजमुखी बीजना चमकहि। जनु सूरज किरननि जुत दमकहि॥ १२॥
सुंदर मदिर को तनि त्यागे। आए बडी सभा जहि लागे।
बोलति चलति नकीब अगारी। रामो पति सों कर कर धारी॥ १३॥
सनै सनै धरि पद अरबिंद। आवति भे श्री हरि गोविंद।
खरी दूर लौ संगति घनी। दरशन की अभिलाखा सनी॥ १४॥
एक बार सभि सीस निवाए। अविलोकति मन मोद उपाए।
गादी को बंदन कर बांदि। बैठे ऊपर डील बिलद॥ १५॥
चमर चारु ढोरति छबि ऐसे। आवति उडति हंस हुइ जैसे।
भयो मेवरो खरे अगारी। हित सिक्ख्यनि अरदास उचारी॥ १६॥
हुकम भयो संगनि को तबै। 'अब गुर दरसहु आवहु सबैं।
सुनति बाति उतलावति आई। धरहि उपाइनि गन अगुवाई॥ १७॥
दरशन करि करि जोरति हाथ। पाइ कामना शरधा साथ।
अनगन दरब चढ्यो गुर आगे। अरपहि जानहिं सफल सुभागे॥ १८॥
आवनि सिख्यनि करयो सकारथ। सरब गीति करि भए क्रितारथ।
सवा जाम[2] गुर दरशन दीना। पुन भोजन हित उठे प्रबीना॥ १९॥
जय जयकार होति चहुंफेरे। गए सदन को गुर तिस बेरे।
देग बिसाल होति गुर केरी। करहिं त्यार निसि दिवस घनेरी॥ २०॥
लोक अनेक सु अचहि अहारा। नहिं पय्यति किह समे शुमारा[3]।
तीन दिवस मेला बड रह्यो। भाउ सहत गुर दरशन लह्यो॥ २१॥
दे दे सिरे पाउ गुर फेर। करे बिसरजन जित कित केरि।
चहु दिशि को प्रसथन प्रसथाने। गुर जस करते जाति महाने॥ २२॥
गए सुधा-सर को नर केई। मज्जन करति भए तहि तेई।
बुढे अरु गुरदासि जि आदि। बूझति सुधि करि करि गुर यादि॥ २३॥
चहै दरस 'कबि निज घर आवहि। चंद बदन सुंदर दरसावहिं।
सभिहिनि ब्रिध सों कीनि बखानी। लिखहु अखिल की बिनै महानी॥ २४॥
अभिलाखति हैं दरस तुमारा। लाग रह्यो मन इतहुं हमारा।
आइसु बिना न आइ सकैहैं। चित चाहति ही दिवस बितैहैं॥ २५॥
सदन प्रवेशहु आनि गुसाईं। तहां बसन कैसे मन भाई।
पिता पितामह सबंधी थान। तीरथ सतिगुर कीनि महान॥ २६॥

---

1. पानि, हाथ। 2. याम, पहर। 3. गणना।

किम बिसारनो बनहि जु ऐसे। बसहु आप पित दादा जैसें।
इत्यादिक ब्रिध लिख्यो घनेरे। सिख गुरदास आदिकनि प्रेर॥ २७॥
पठ्यो सिख चलि तूरन आयो। श्री सतिगुर को दरशन पायो।
कर बंदन को बिनै उचारी। धरि दीनसि अरदास अगारी॥ २८॥
सभि की कुशल बूझि तिह संग। पुन कागद ले पठ्यो प्रसंग।
जानि बिनै निज सिखनि केरी। करी गमन की मति तिस बेरी॥ २९॥
बहुर पठ्यो कागद लिखवाइ। 'बिना बिलंब आइ इस थाइ।
सरब काज इत के हुइ गए। पूर मनोरथ सिख्यनि कए॥ ३०॥
सतिगुर शबद करहु पठि प्रेम। जो दाता दुहि लोकनि छेम'।
ले गुर ते गमन्यो सिख सोई। जाइ पहूच्यो पुरि, सुधि होई॥ ३१॥
सुन्यो हुकमनामा गुर केरा। सभि के हरख भयो तिस बेरा।
बहुर ब्रिद्ध ने सभि सो भाखा। 'तुरत दरस गुर दें अभिलाखा॥ ३२॥
प्रेम संग रहु रास पिछेरे। मिलहु सिक्ख तवि होइ घनेरे।
मने सने परदछना करीयहि। प्रेम संग गुर शबद उचरीयहि॥ ३३॥
हलत पलत निज भलो बिथरीयहि। हुकम गुरू आयो मन धरीयहि।
प्रेम बसी हैं सहिज सुभाइक। आइ दरस दें सभि सुखदाइक'॥ ३४॥
सुनत ब्रिद्ध ते सिक्खनि माना। संध्या बिखे मेल बड ठाना।
सुधा सरोवर के चहुंफेरे। फिरति पढति करि प्रेम घनेरे॥ ३५॥
करें टहिल आपस महि सारे। चांपी करिते, पौन झुलारे।
चार घटी निसि बीते जबि लौ। गुरके शबद उचारहि तबि लौ॥ ३६॥
भोग पाइ[1] अरदास करंते। 'आइ दरस दिहु' बच उचरंते।
इस प्रकार सिक्खनि प्रन ठाना। अंतरजामी गुर सभि जाना॥ ३७॥
चहति चलनि को पुरि उतलाए। इक दिन पौढे सहिज सुभाए।
रुत ग्रीखम महिं घाम बिसाला। छिरक्यो जल सीतल करि साला॥ ३८॥
चांपति पद जुग साईंदास। रामो बिजना करति हुलास।
म्रिदुल सेज पर सतिगुर थिरे। इस प्रकार कौतक तबि करे॥ ३९॥
लादी खेप एक सौदागर। भरि जहाज ठेल्यो बिच सागर[2]।
गमन्यो किस टापू हित जानै। जल अगाध महिं करति पयानै॥ ४०॥
केतिक दूर गयो चलि सोइ। बांछति चित पहुंचति द्रुत होइ।
उठहि तरंग उतंग बिलंद। जल के जीव भयानक ब्रिंद॥ ४१॥

---

1. पाठ का समापन करके। 2. सागर में।

तहां बिघन ऐसे कुछ भयो। चलति जहाज अटक तहि गयो।
चलहि न, जतन करति सभि हारे। भे निरास लचार ब्रिचारे ।। ४२ ।।
सभि किछ त्याग परे गुर शरना। 'रच्छहु आइ, आप को परना।
जहां सहाइक होति न कोई। तहिं सिक्खनि के पालिक होई ।। ४३ ।।
कारज करहु सुधारनि सारे। इस प्रकार नित बिरद तुहारे'।
श्री हरि गोबिंद संकट जाना। पहुंचे ततछिन महिं भगवाना ।। ४४ ।।
लाइ सिकंध[1] चलाइ जहाजा। निज सिख के पूरन किय काजा।
रामो आदि दास जि और। जानै 'गुर सुपते इस ठौर'।। ४५ ।।
चहु दिशि फिरती बिजना करती। स्वेद न होइ प्रेम को धरती।
जबै सिराने दिशि को आई। केस छुटे गुर के दरसाई ।। ४६ ।।
तिन ते निचुरति नीर घनेरा। अचरज भई हेरि तिस वेरा।
पति सों उचरति 'इह क्या भयो। इतो स्वेद किम सिर ते गयो'।। ४७ ।।
बहुर कहति 'इह स्वेद न अहै। नीर अधिक केसन ते बहै।
क्या कारन, भाख्यो नहिं जाई'। साईं दास सु बात सुनाई ।। ४८ ।।
'अबि सागर बिचरे गुर आए। सिख जहाज अटक्यो सु लंघाए।
तूशनि रहहु सेव कहु ठानहु। नहि ऊचे मुख बाक बखानहु ।। ४९ ।।
तबि सतगुर होए सवधाना[2]। उठि करि बैठे बाक बखाना।
'साईं दास जु बात बताई। शकति इती कित ते तैं पाई'।। ५० ।।
हाथ जोरि बोल्यो बड भागी। 'तुमरी सेबा महिं मति पागी।
पद रज की मुख आंखनि लाई। सीत प्रसादि आपको खाई ।। ५१ ।।
करहि प्रेम सो इती जु सेवा। इस विधि हुइं प्रसंन गुर देवा।
बहुरो वसतु न ऐसी कोइ। जो सिक्ख तुमरो लहै न सोइ ।। ५२ ।।
रावर की करुना सभि भई। अपर कहां ते हमने लई'।
सुनि प्रसंन श्री हरि गोविंद। 'सफल भई तूम सेव बिलंद'।। ५३ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे **'साईंदास' प्रसंग बरननं** नाम अशट त्रिसंती अंशु ।। ३८ ।।

---

1. स्कंध, कंधा। 2. सावधान।

अंशु ३९

सुधासर आगवन प्रसंग

दोहरा

गमन करन को सुधासर सिमरति उर महिं नीत।
चहति देखिबे हमहि को सभि सिक्खनि को प्रीति ॥ १ ॥

चौपई

इक दिन मात गंग के पास। चलिबे नगर प्रसंग प्रकास।
'बहु दिन बीते तज्यो सथाना। करहि प्रतीखन सिक्ख महाना' ॥ २ ॥
सुनि जननी आनंद करि कह्यो। 'सुनहु पुत्र ! मम चित अति चह्यो।
अधिक बास निज पुरि बनि आवै। अथ चलिबो सभि के मन भावै' ॥ ३ ॥
करि मसलत माता के साथ। निकसे वहिर बैठि करि नाथ।
विधीए अरु जेठे संग भाखा। 'पिखनि सुधासर की अभिलाखा' ॥ ४ ॥
सुनि दोनहु हरखे कहि बानी। हमरे मन की ही तुम जानी।
पठहिं तहां ते सिक्ख संदेसा। सतिगुर बिरम रहे परदेसा ॥ ५ ॥
करि करि बिनती ज्यो क्यों आनहु। इह उपकार सु हम पर ठानहु।
करीयहि त्यारी बिलम बिसारे। निज सिक्खनि की करहु संभारे ॥ ६ ॥
गुरु उचरयो 'सभि को कहि दीजै। प्राति कूच ह्वै त्यारी कीजै।
सुनि जेठे ने सभि सो कह्यो। 'चलनि प्रात सों सतिगुर चह्यो' ॥ ७ ॥
सुनि प्रसथान सकल हरखाए। सभि वाहनि को त्यारि कराए।
चलहु सुधासर, हमहिं निहारैं'। मिलि आपस महिं हरख उचारैं ॥ ८ ॥
परी निसा गुर पलंघ सुहाए। तबि दंपति दलि करि नियराए।
करहु प्रभु कैसे अबि त्यारी। कौन खुनामी[1] पिखी हमारी ॥ ९ ॥
अपने जानहु देहु बताइ। भई भूल सो लें बखशाइ।
कै हमरे परवार मझारा। तुम नर सों कटु बाक उचारा ॥ १० ॥
भई न को तुमरी मन भाई। जिस ते औचक[2] कीनि चढाई।
सुनि सतिगुर बोलति मुसकाए। प्रेम तुमारो पिखि चलि आए ॥ ११ ॥

---

1. कुनाम, अपराध। 2. अचानक।

चिरंकाल बीत्यो पुरि तज्यो। श्री हरिमंदर को नहि जज्यो[1]।
लिखि लिखि पठहिं सिक्ख अरदास। जिन कै निसदिन प्रेम प्रकास ॥ १२ ॥
बडे गुरनि के संगी रहे। उचित अदब के हम को अहे।
जिनकी कह्यो हटहि नहिं मो ते। उत्तमता कहीयहि क्या तो ते ॥ १३ ॥
इस हित कूच अचानक जानहु। तुम दंपति अबि सभि सुख ठानहु।
जनम मरण को मिट्यो संदेहू। सिमरहु सत्तिनाम बिधि एहू ॥ १४ ॥
कितिक बरख मैं पुन इह आवनि। करहिं बिलास इहां मन भावनि।
अबि तुम सद ही संग हमारे। नहीं करहिं निज ते कबि न्यारे' ॥ १५ ॥
इत्यादिक कहि धीरज दई। दंपति आइसु सिर धरि लई।
बिन अनुसार न बोले हेरि। उठे नमो करि सुपते फेर ॥ १६ ॥
राति जथा सुख सकल बिताई। प्राति होति गुर कीनि चढाई।
हित सनमान संग कुछ आए। कहि बहु बार वहुर ठहिराए ॥ १७ ॥
बिछुरत रामो बंदन कीनि। साई दास निम्यो बनि दीनि।
गंगा मात चढी तबि स्यंदनि[2]। दोनहुं करी जाइ पद-बंदनि ॥ १८ ॥
आशिख दे आगे कहु चली। पुन दामोदरी के संग मिली।
दंपति जंपति[3] द्वै कर बंद। 'तूं जनमी जग भाग बिलंद ॥ १९ ॥
मात पिता को बंस उधारा। तुझ करि भा सनबंध हमारा।
भए क्रितारथ तुव उपकारा। यांते बंदन बारंबारा ॥ २० ॥
गुर ते जेठो पुत्र उपायो। अधिक भाग तुव भाल सुहायो।
श्री गुरदित्ते कहु ले गोद। बारि बारि पिखि होति प्रमोद ॥ २१ ॥
कहि दमोदरी 'गुरनि प्रताप। दासी जानि करी मुहि आप।
तिन की क्रिपा जास पर होइ। सुख बडिआई, प्रापति सोइ ॥ २२ ॥
दीपमाल वैसाखी आदि। मिलहु आनि करि लिहु अहिलाद'।
गल सों मिलि करि होइसि न्यारी। बहुर नानकी निकटि पधारी ॥ २३ ॥
नमो करति को पकरि हटाई। ले रामो गुर संग मिलाई।
कहि सुनि बचन प्रेम के भुरी। आंसू ढरति बिलोकति खरी ॥ २४ ॥
दोनहुं डोरे संग मिलाइ। तबि स्यंदन गंगा चलिवाइ।
बली तुरंगन गुरु अरोहे। महां बेग ते गमनति सोहे ॥ २५ ॥
संग पवंगम जोधा चढे। चलहिं पिछारी आनंद बढे।
पंथ उलंघ्यो केतिक हेरा। दुआदश कोस करयो चलि डेरा ॥ २६ ॥

---

1. योजना, धार्मिक प्रबंध। 2. रथ। 3. याचना करना, विनति करना।

जथा जोग करि खान रु पाना। निस बिताइ होए सवधाना।
करति अखेर गुरू मग चाले। पाछे सभि को गंग संभाले ॥ २७ ॥
गमने डेरा कूच कराइ। इसी प्रकार चले मग जाइ।
आइ तरन तारन के थान। टिके निसा महिं गुर भगवान ॥ २८ ॥
सुत को ले करि गे दरबारा। बंदन करि प्रसादि बरतारा।
करी प्रदछना फिर करि सारे। पुन बिसरामे निसा गुजारे ॥ २९ ॥
देखि प्राति गुर कीनि चढाई। प्रथम सुधासर सुधि पहुंचाई।
तवि पुरि पाई सागर शोभा। उमगे नर जन बाढयों छोभा[1] ॥ ३० ॥
बसत्र बिभूखन पहिरति नारी। हित आदर के मिलनि अगारी।
बीथन चली प्रकाश छबीला। सोहति ज्यों वड़वानल कीला[2] ॥ ३१ ॥
नगर मिरजाद सु बेला ठाहर। नर जल निकसे फैलति बाहर।
श्री हरि गोविंद चंद मनिंद। पिख्यो परब महिं धर्‍यो अनंद[3] ॥ ३२ ॥
सिख पहुंचे इक कोस अगारी। गुरु दरशन करि बंदन धारी।
लै लै जथा शकति परसादि। अरपति गुरु को धरि अहिलादि ॥ ३३ ॥
कुशल बूझि आगे को चले। तवि गुरदास आदि सभि मिले।
ब्रिध सो प्रथम पठयो कहि ऐसे। 'करहु न खेद कहहु तुम वैसे ॥ ३४ ॥
हम आवैंगे निकट तुमारे। श्री हरि मंदर दरस निहारे'।
अपर अगाऊ सगरे आए। पिखि पिखि सतिगुर को हरखाए ॥ ३५ ॥
जथा जोग सभि बचन उचारे। ले करि गमने संग अगारे।
नर नारी पुर की समुदाया। मिलति आइ सभि सीस निवाया ॥ ३६ ॥
धरहिं उपाइन ह्वै बलिहारी। 'धंन आज की घरी' उचारी।
'पुत्र सहत गुरु दरस निहारा। हम सभि के हैं भाग उदारा' ॥ ३७ ॥
किह को देखि, बोल किह साथ। सभिनि अनंदति चाले नाथ।
श्री गुरदित्ता ले करि सग। गमने श्री दरबार उमंग ॥ ३८ ॥
प्रथम अकाल तखत कहु बंदति। गए दरशनी पौर अनंदति।
सीस निवाइ रिदे अनुरागे। थिरे जाइ हरि मंदरि आगे ॥ ३९ ॥
धरि धरनी सिर बंदन कीनि। श्री अरजन सुत महां प्रबीन।
दई प्रदछना फिर करि चारी। पुन प्रविशे दरबार मझारी ॥ ४० ॥
पिता पितामे को धरि ध्यान। हाथ जोरि अभि बंदन ठानि।
पुन भाई ब्रिध को पग परे। कुशल प्रशन दुहि दिशि ते करे ॥ ४१ ॥

---

1. जोश। 2. शिखा। 3. आनंद।

श्री गुरदित्ता को पग पाइव। खरे होए अरदास कराइव।
इम मनाइ करि गुरू बडेरे। निकसे उतसव रचे घनेरे॥ ४२॥
लघु दुंदभि शरनाइ नफीरी। बजे बाजि धुनि उठति गहीरी।
घन सम धन वरखा तवि डारी। गावति चलति नागरी नारी॥ ४३॥
को ढोलक कौ जाति बजावति। प्रसंग गुरु ग्रिह के गन गावति।
जिस जिस बीथी सतिगुरु जाइं। अंजुल भरि फूलनि बरखाइं॥ ४४॥
इत्यादिक मंगल को ठानति। नगर गरी गुरु मंद पयानति।
दुहनि सनूखा ले करि संग। तिमही पाछे गमनति गंग॥ ४५॥
बोलति जाति नकीब[1] अगारी। चलति संग सगरे नर नारी।
भीर महां गरीअनि के माहूं। दरशनि देति जाति सभि काहूं॥ ४६॥
गंग मंगल संग उमंग। भई प्रवेश निकेत उतंग।
बर आसन जहिं रुचिर बिछाए। आसतरन बहु-मोले छाए॥ ४७॥
पौत्रे सहत सनूखा लीनि। बैठी सदन बिखै सुख-भीन[2]।
पूरि नारी गन देति वधाई। ढोलक बजति संग घरि आई॥ ४८॥
धन गन दीनि सगल हरखाई। सुधा समान आशिखा[3] गाई।
'जुगु जुगु जीवहु पौत्र सुभाग। रहहु सदा गुरु प्रेमहि पाग'॥ ४९॥
श्री हरि गोबिंद अपर सदन मैं। बैठि बिराजे तहिं गन जन मैं।
घर घर महिं उतसब बहु कर्यो। 'सतिगुरु आए मुद मन भर्यो॥ ५०॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे **'सुधासर आगवन'** बरननं नाम ऊन-चतवारिंसती अंशु॥ ३९॥

---

1. प्रतिहार। 2. सुख भीनी। 3. आशिष।

अंशु ४०

पैंदे खान प्रसंग

दोहरा

गुरु इकंत होए जबहि कौलां दरशन प्यास ।
आई अति मोदति रिदै प्रविशी तास अवास ।। १ ।।

चौपई

जनु सुनि कान प्रिय बाति चकोरी । दौरी निकट चंद की ओरी ।
मनहुं प्रेम ते ह्वै करि बौरी । कमल खिरे पर आवति भौरी ।। २ ।।
सुंदर मंदिर अंदर धरीआ । करि दरशन चरनन पर परीआ ।
मनहुं रंक कहु प्रापति राजू । मन महिं गिनति 'धंन दिन आजू' ।। ३ ।।
कमल बिलोचन ते जल डारै । जनु अनंद ते चरन पखारै ।
हाथ जोरि सनमुख गुरु बैसी । मूरति पिखि दिवाकर जैसी ।। ४ ।।
कमल बिलोचन बिकसति जाति । इक टक देखि रही गुरु गाति ।
पूरब तप को फल शुभ पायो । अति प्रमोद चित कह्यो न जायो ।। ५ ।।
प्रेमातुर चित सति गुरु देखी । 'कहु कौलां ! तन कुशल विशेखी ।
सरब रीति ते सुख सों रही' । सुनि म्रिदु बाक आप पुन कही ।। ६ ।।
'क्रिपा आप की मो पर जबि की । पदवी कुशल लही मैं तबि की ।
रावरि दरशन इच्छा बिना । रिदे मनोरथ उठहि न अना ।। ७ ।।
रही उडीकति[1] नाम अधारा । रुचि सों अच्यो न कबहु अहारा ।
हेरति आनि अचानक मोही । तबि जानति मैं जिस बिधि होही ।। ८ ।।
रावर को सुनि करि आगवनू । ततछिन तन होयहु मुद भवनू ।
दरशन दरस्यो अबि दुख—दवनू । सदा रिदे महिं बासहि[2] जवनू' ।। ९ ।।
सुनि गुर कह्यो 'कर्‌यो हित तोरा । दरशन करति रही नित मोरा ।
तौ किम ब्रिह संकट अस पारा । प्रथम देखि जे करति अहारा[3]' ।। १० ।।
कहति भई 'निशचै इह अह्यो । नित दरशन को मै इम लह्यो ।
करि शनान जबि सिमरन कर्‌यो । छिनिक मात्र नित दरश निहर्‌यो ।। ११ ।।

---

1. प्रतीक्षा करती । 2. बसता है । 3. आहार ।

जिस बिधि होते तुम तिस काल। बैठे कै हय चढे बिसाल।
जस पोशिश, जस होति सुभाउ। तिसी प्रकार दरस को पाउं ॥ १२ ॥
कहनि परसपर होइ न कोई। जियति रही पिख दरशन सोई'।
इत्यादिक कहि सुनि करि बैन। उर अनंद[1] पुन गमनी ऐन[2] ॥ १३ ॥
खान पान करि सतिगुरु फेर। सुपति जथा सुख सुखद बडेर।
जाम जामनी जागे नाथ। सौच शनान कीनि जल साथ ॥ १४ ॥
निज सरूप महि इसथित[3] भए। ध्यान-परायन बैठति भए।
दिनकर उदै प्रकाश्यो सारे। कमल बिलोचन तबहि उघारे ॥ १५ ॥
चौकी गाइ बिलावल केरी। आइ जाइ नर गन गुरु हेरी।
बडो दिवान लग्यों गुरु तीर। आवति जात नरन की भीर ॥ १६ ॥
सगरे पुरि महिं[4] रवणक होई। कारज भनहि सुनहिं सभि कोई।
सुभटनि को वसतू जो चाही। जाचति पावति सतिगुरु पाही ॥ १७ ॥
जाम दिवस लौ बैठनि करैं। निज दासनि की वाछा[5] पुरैं।
बहुर उठहि अचवन आहारा। अनिक प्रकारनि त्यारि सुधारा ॥ १८ ॥
गन सिक्खन महिं भोजन करे। नाना भांति सु बासन धरे।
सूखम चावर सूप[6] जि नाना। गोधुम-चून[7] जु सूखम नाना ॥ १९ ॥
बिंजन[8] अनिक प्रकार बनंते। सिख संगति सभि बैठि अचंते।
देग बिसाल गुरू की चाले। भुंचहिं सकल आनि जुग काले ॥ २० ॥
बहुर दुपहिरे करहिं अराम[9]। टिकहि इकांत आपणे धाम।
चतर घटी ते उठहि पिछारी। करहिं सुचेता[10] निरमल वारी[11] ॥ २१ ॥
कबहि अखेर ब्रित्त को जावहि। सुभट संग चढिकै फिर आवहिं।
थिरहिं अकाल तखत के थान। गन सुभटनि को लगहि[1] दिवान[2] ॥ २२ ॥
सिक्ख मसंद ब्रिंद सभि आए। बंदन करि करि धन अरपाए।
देश बिदेशन की गुरु कारा। आवहि दिन प्रति दरब हज़ारा ॥ २३ ॥
सभि पुरि गामन बिखे मसंद। गुरु को दरब बटोरहिं ब्रिंद।
पशचिम बिखे बिलाइत मांही। चल्यो आइ धन सभि गुरु पाही ॥ २४ ॥
पूरब दक्खण उत्तर सारे। आनहि दरब मसंद उदारे।
दिन के चौथे पहिर दिवान। करहि लगावनि गुरू महान ॥ २५ ॥

---

1. आनंद। 2. अयन, घर। 3. स्थित। 4. रौनक, गहमा गहमी। 5. वाञ्छना। 6. रसोई। 7. गेहों का आटा। 8. व्यंजन, खाने। 9. आराम, विश्राम। 10. न्हाना धोना। 11. वारि। 12. दीवान लगाना, सम्मेलन करना।

प्रथम नमहि करि श्री हरिमंदिर। चतर प्रदछणा दे करि सुंदर।
बैठहि आनि सकल तिस थान। श्री हरि गोविंद जहां सुजान ॥ २६ ॥
गाइ रबाबी बाबक राग। गुरु जुति सिक्ख सुनहिं करि राग[1]।
आनि आनि दरसहि सिख सारे। पुरहि मनोरथ कांखा वारे[2] ॥ २७ ॥

केतिक आवति चलि जग्यासी। किंतिक ममोखी सिख रहिं पासी।
सेवा करहिं प्रेम ते घनी। सुनहि करन दे जिम गुरु भनी ॥ २८ ॥
संध्या महि सोदर सुनि करि कै। भोग परे ते शरधा धरि कै।
करि बंदहि बंदन करि आछे। बहुर चलहि सतिगुर के पाछे ॥ २९ ॥
वडी प्रदछना सर[3] की देहिं। पौर दरशनी दरशन लेहिं।
अंतर की परकरमा करैं। नंम्री होति प्रेम को धरैं ॥ ३० ॥
भाई बिध सभि सिख गुरदास। गावति चौंकी सबद प्रकाश।
सनै सनै प्रदच्छना देते। सबद पढति समझति सुख लेते ॥ ३१ ॥
देखति भए प्रसंन बिलंद। बदति भए श्री हरि गोविंद।
'धंन[4] ब्रिद्ध भाई शुभ रीति। करी सुधासर[5] पर धरि प्रीति' ॥ ३२ ॥
करे सराहनि पुन गुरदास। 'अहो धंन वड प्रेम प्रकाश'।
पुनहि जामनी महिं गुरू जावैं। सुख समेत शुभ सदन ब्रितावैं। ॥ ३३ ॥
पुरि करतार बिखै गन सैना। पठी बुलाइ प्रथम गुन ऐना।
पैंदे खां समेत चलि आई। गुरु आगै सभि ग्रीव निवाई ॥ ३४ ॥

प्रिथक प्रिथक सुभटनि को हेरा। बूझी कुशल सभिनि तिस बेरा।
हरखति हुइ गन करहिं उचारी। 'अखिल[6] अनामै क्रिपा तुमारी ॥ ३५ ॥
पुन तुरंग शुभ अंग निहारे। 'अहैं पुशट तन प्राक्रम भारे'।
पुन पैंदे खां की दिशि देखा। जिस को डील शरीर विशेखा ॥ ३६ ॥
पूरब ते डिउढा हुइ गयो। अति खुराक ते बल अति भयो।
बडे पुशट भुज दंड प्रचंड। मनहुं करभ की दीरघ सुंड ॥ ३७ ॥
कद बिसाल मसु भीजति आनन। जिह समान तन नाहि न आनन[7]।
देखि प्रसंन भए गुर साईं। 'बनहि बली जोधा रण थाईं' ॥ ३८ ॥
आयुध बिद्या सिख्या हेतु। बोले श्री सोढी कुल-केतु।
'अबि तूं बरज़श[8] करहु सदाई। दिन मैं दोइ समै दिढताई ॥ ३९ ॥

---

1. अनुराग। 2. आकांक्षा वाले। 3. सरोवर। 4. धन्य। 5. अमृतसर। 6. नीरोग। 7. अन्य। 8. वरज़िश, व्यायाम।

गुरू हुकम को पाइ पठान। द्वै मण की मुंगरी धरि पान।
चार घरी फेरहि बल लाए। धरि धरनी पर लेति उठाए॥ ४० ॥
बार बार बहु बाले[1] दै है। सिर पर आनि भ्रमावन कै है।
इत उति फेरहि ऊच रु नीचे। करहि उछारनि गहि अध बीचे॥ ४१ ॥
वध्यो ओज मुंगरी पर भारो। इत उत भ्रमति शीघ्रता धारो।
पुन गुर घट सिकता[2] भरिवाए। पैंदे खां के दंड[3] बंधाए॥ ४२ ॥
बहुर भ्रमावति मुंगरी भारी। करहि शीघ्रता तिम कर धारी।
बाले करहि निकासन घने। हेरत हुइ प्रसंन गुरु भने॥ ४३ ॥
'दिन प्रति करो बंधावन भार। ज्यों ज्यों ले भुजदंड सहार।
वंधे बाहु कलस लटकंते। गरुवी[4] मुंगरी बहुत भ्रमंते॥ ४४ ॥
केतिक दिवस करति इम रह्यो। देखि हसे श्री गुरु तबि कह्यो।
'अबि द्वै मल्ल बली जे अहैं। दोनहु भुज दंडन को गहैं'॥ ४५ ॥
आग्या मानि करनि लगि सोई। मल्ल गहें भुज लटकहिं दोई।
तऊ मूंगरी तथा भ्रमावैं। करहि शीघ्रता बल अज़मावैं॥ ४६ ॥
हेरि हेरि बिसमहिं नर सारे। 'इस के सम और न बल भारे'।
दोनहुं काल दंड को पेले। सभि तन भार हाथ पर मेले॥ ४७ ॥
इक इक कर पर थिर हुइ जाइ। दिन प्रति वध्यो ओज अधिकाइ।
सिपरनि[5] कौ कर गहि चीराइ। श्रीफल फोरहि दंड दबाइ॥ ४८ ॥
गहै रजत पण चुटकी मांहि। हरफ[6] मिटावति मलि करि तांहि।
इत्यादिक नित अचरज करे। गुर प्रसंनता त्यों त्यों धरें॥ ४९ ॥
बहु-मोली वसतू बखशंते। धन गन देति, लेति हरखंते।
इस की कथा कहैंगे फेर। सुनहु अबहि गुरु सिक्खनि केरि॥ ५० ॥
ज्यों ज्यों मिले सुन्यो उपदेश। ले गुरु मति को कटे कलेश।
तिन की कहौं कथा कुछ थोरी। श्रोता सुनहु महां रस बोरी॥ ५१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ पंचम रासे '**पैंदे खान**' प्रसंग वरननं नाम चत्तवारिंसती अंशु॥ ४० ॥

---

1. फेरे देता है। 2. रेत। 3. भुज दण्ड। 4. भारी। 5. ढालें। 6. अक्षर।

अंशु ४१

सिक्खन प्रसंग

दोहरा

दरगाहा भंडारीआ सिक्ख हुतो सति धीर।
श्री गुर हरि गोविंद को सेवति रहि करि तीर॥ १॥

चौपई

हाथ जोरि अरदास बखानी। 'सिक्ख करहिं चरचा गुरु बानी।
कतिक परहिं लर आपस मांही। निज निज अरथ हटन दें नाहीं'॥ २॥
सुनि श्री हरि गोविंद उचारा। होवति चरचा चारि प्रकारा।
गुर सिक्खनि को चहीअति दोइ। दोनहुं को त्यगति हैं सोइ॥ ३॥
इक इह चरचा 'वाद' कहावै। शबद अरथ जो नहि उर आवै।
करहि परसपर बूझनि कहिने। सुनहिं प्रेम ते अरथ सु लहिने॥ ४॥
दूजी चरचा हेत[1] पछान। निज बुधि महिं सो करति बखान।
सुनति दूसरे म्रिदु बच कहैं। 'इहु नहिं अरथ अपर बिधि अहैं'॥ ५॥
सबद अरथ कहि भलो सुनायो। सुन्यो जथारथ तिह मन भायो।
बहुरो दो करि बुद्ध विशेख। करहिं आप तैसे शुभ देखि॥ ६॥
भनति सुनति दोनहुं मिलि आछे। निरने होइ अरथ जो पाछे।
पक्खबाद तजि सो उर धरै। आपस महिं सराहना करैं॥ ७॥
इस ते आइ न उस ते सुन्यो। उह नहि जाने तौ इन भन्यो।
दोनहु को गुन मिलि करि भयो। प्रेम बिसाल बहुर जुग कयो॥ ८॥
जिम इक दीपक करै प्रकाश। रहहि अंधेरा पीछे तास।
दुतीओ दीपक जे तहिं होइ। पाछल तम दुनहनि को खोइ॥ ९॥
जो एकल ही अरथ बखानै। तिस ते मन को मान न हानै।
लेहिं शबद रस मिलि करि दोइ। मान न रहे महां फल होइ॥ १०॥

---

1. हेतु वाली, प्रेम-भरी।

चरचा 'जलप' तीसरी जानि। जो निज मुख ते कीन बखान।
हुइ अनबन कै बन्यो कहंति। नहि दूसर उर बिखै लहति ॥ ११ ॥
तिस पर दोनहु बाद[1] उठाए। निज निज पख परि जुगति[2] बनाए।
अनिक प्रमाण आनि दृढ करैं। नहिं दो मानहि, नहि मन धरैं ॥ १२ ॥
ज्यों क्यों अरथ आपनो मंडहि[3]। रिसहिं परसपर पर को खंडहिं।
लरहिं क्रोध ते बंधहिं द्वैख[4]। जरहि रिदे सुनि जसु को देखि ॥ १३ ॥
सो गुरु सिक्ख न अंगीकारहि। निंम्र न मन हुइ बैर बिकारहि।
चौथी चरचा होति 'वितंडा'। खंडण महिं नित होति प्रचंडा ॥ १४ ॥
अपनी मति विशेश नहिं अहै। नहिं मानहिं जे दूसर कहै।
पठि निहार जे सगरे लोक। दुखहिं अधिक तिन जबहि बिलोक ॥ १५ ॥
इह भी सतिगुर के सिख त्यागहिं। सार गहैं शुभ को अनुरागहिं।
किस कौ मन कबि नहीं दुखावहिं। उर प्रसंनता सभिनि उपावहिं ॥ १६ ॥
श्री मुख ते सुनि कै शुभि बानी। सिक्खनि धरि शरधा उर आनी।
इक जमाल जिह नाम सु आयो। श्री सतिगुर को सीस निवायो। १७ ॥
बैठि समीप भाउ को धारा। लेतो भयो प्रसाद ब्रतारा।
देखि प्रभा सतिगुर की मोहा। सुंदर सीतल ससि सम सोहा[5] ॥ १८ ॥
हाथ जोरि अरदासि उचारी। 'मैं अबि आयो शरनि तुमारी।
सिक्ख आपनो मोहि बनावो। सुखदानी उपदेश बतावो ॥ १९ ॥
पूरब महिमा सुनी तुमारी। अबि मैं आनि हजूर निहारी।
पर्‍यो रहोंगो रावरि शरनी। कहों वदन ते करौं सुकरनी' ॥ २० ॥
श्री मुख ते उपदेश उचारा। 'पठि सुनि करि गुरु शबद बिचारा।
धरहु सिदक तिम करम कमावो। तातपर्‍य तिस को लखि पावो ॥ २१ ॥
जेतिक तन जग महिं उपजाए। पंच तत्त के अखिल बनाए।
घाट न बाध एक सम जानो। अंतहकरण इंद्रय तन मानो ॥ २२ ॥
जहि कहि इक चेतन सभि मांही। चेतन बिखे भेद कुछ नाहीं।
जे इम जानहिं सिखहैं सेई। जनम मरन बंधन हति तेई' ॥ २३ ॥
सुनि जमाल ने प्रशन बखाना। 'इक चेतन जे है सभि थाना।
तौ अहार करिबे इक संग। क्यों न तिपति होवैं सरबंग ॥ २४ ॥
इक के ग्यान होनि करि सारे। क्यों अग्यान खोइं नहिं सारे।
जो अचंवहि सोई तिपतावै। जो ग्यानी सो कैवल पावै' ॥ २५ ॥

---

1. झगड़ा। 2. युक्ति। 3. मण्डन करता है। 4. द्वेष। 5. शोभा।

श्रीमुख ते शुभ उत्तर दीनि। 'घट मठ नाना जहिं कहिं चीन ;
एक अकाश[1] सभिनि महि दीखति। निरनै करहु भेव नहि ईखत[2] ।। २६ ।।
पाइ पदारथ जिस घट बिखै। तिस ते ही निकसति सभि दिखै।
जिस मन महि दीपक है बारा[3]। तिम इक महि होइसि उजीयारा ।। २७ ।।
तिम जानहु जिम भोजन खानो। धरम प्रान को पानी पानो।
मन को धरम समझबो ग्यान। आतम साथी सभि को जान ।। २८ ।।
भेद सजाति विजाती, सुगति न। सभि ते न्यारो ब्रहम सचेतन।
जिम जुग ब्रिच्छ सजातीवान। तथा ब्रह्म ते ब्रह्म न आन[4] ।। २९ ।।
जिम तरु पत्थरु उहैं विजाती। तिम भी ब्रह्म के नहि बख्याती।
चेतन ब्रह्म जगत जड़ अहै। भए विजाती दोनहु लहै ।। ३० ।।
ब्रह्म सदा सति चित अबिनाशी। जड़ कलपत सिख्या सभि नाशी।
ब्रह्म को नहीं बिजाती रहै। यांते भेद ब्रह्म नहि लहै ।। ३१ ।।
जथा बिरछ के शाखा टास[5]। सुगति भेद को हम निरजासि[6]।
जिम नर तन प्रति अंग सु अंग। नहिं चेतन कै, अहै अनंग ।। ३२ ।।
ब्रह्म आतमा हम निरधारो। निरगुण सभि महि निराकारो।
लिपहिन, सरब बीच अर न्यारो। ज्यों जल भीतर दीखति तारो ।। ३३ ।।
तन घट, अंतहकरण सु-जलु है। ब्रह्म चंदु प्रतिबिंब सतुल है।
सभि महि भासै सभि ते न्यारो। एव आतमा को उर धारो ।। ३४ ।।
इस प्रकार जिनि समुझनि कीनि। से गुर के सिख परम प्रवीन'।
सुन जमाल गुर को सिख भयो। जड़ चेतन को निरनै कियो ।। ३५ ।।
'कुक्को'[7] सिक्ख वधावण[8] जोइ। संग 'अनंता' दूसर होइ।
परे शरनि श्री हरि गोविंद। वंदति दोनो पद अरबिंद ।। ३६ ।।

हाथ जोरि जुग अरज़ गुजारी। 'भए गुरू नानक निरंकारी।
कीनसि अंगीकार कराह। अपर प्रमादि क्यो हित नांह ।। ३७ ।।
इस महि क्या कारण गुरु राखा। नहि पकवान आन को कांखा'।
सु श्री मुख ते बाक उचारा। 'उतम लखहु गुरू अवतारा' ।। ३८ ।।
सभि ते उत्तम तथा कराहू। अंगीकार्यो संगति मांहू।
तिम गुरु शबद अहै उपदेश। सभि ते श्री सतिनाम विशेश ।। ३९ ।।
गुरगादी इसथिर है जबि लौ। बीनि बीनि नीकी वथु तबि लौ।
निज सिक्खनि को सभि ही दैहैं। बडि भागी गुरमुख बनि लैहैं ।। ४० ।।

---

1. आकाश। 2. थोड़ा सा। 3. जलाया। 4. अन्य। 5. टहनी, डाल। 6. समझें। 7. नाम व्यक्तिवाची। 8. वधावन जाति।

जग सारे महिं सार निकारैं। दे गुरु सिक्ख सु अंगीकारैं।
श्रुती शासत्रनि सार निकारैं। गतिदायक जिम शबद उचारैं ।। ४१ ।।
उत्तम वसतु गुरू घर मांही। लहैं सिक्ख तिन दुख कबि नांही'।
सुनि प्रसंन होए सभि कोई। निवला अपर निहालू दोई ।। ४२ ।।
बंदन करि पद बैठि उचारा। 'किम श्री गुरु हम होइ उधारा'।
सुनि करि श्री हरि गोविंद कहैं। 'सभि काशट महिं अगनी रहै।। ४३ ।।
बिना मथे नहिं निकसि प्रकाशे। कारज करहि न सीत बिनाशै।
जथा दुगध महिं घृत मिलि रह्यो। मथन करे बिन किनहुं न लह्यो ।। ४४ ।।
तिम सतिगुर के शबद मझारा। आतम ग्यान बसै सुख-सारा।
पाठ करे हुइ पुंन महाना। नांहि न प्रापति आतम ग्याना ।। ४५ ।।
जबि बिचार करि रिदै बसावै। सभि बिवहारनि बिखै कमावै।
ग्यान प्रकाशै आनंद पावै। जनम मरन को कशट मिटावै' ।। ४६ ।।
दोनहु सुनि गुरु को उपदेश। महां सुमति जुति पढ़े विशेश।
लागे गुर को शबद बिचारनि। सति संगति महिं कथा उचारनि ।। ४७ ।।
सुनि तिन ते श्रोता हरखावैं। डर बिकार ते, गुरमति पावैं।
सुनहिं प्रेम करि धरि धरि भाऊ। ब्रह्म ग्यान लहि सहिज सुभाऊ ।। ४८ ।।
श्रोता बकता जे समुदाइ। जीवन मुकति अवसथा पाइ।
इस प्रकार का बहुत उधार। 'धंन धंन[1] सतिगुरू' उचारि ।। ४९ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रासे सिक्खन प्रसंग बरननं नामु एक चतवारिसंती अंशु ।। ४१ ।।

---

1. धन्य।

अंशु ४२

'सिक्खन' प्रसंग

दोहरा

मनसा धारि सु तुलसीआ दरगहि तखतू धीर।
तीरथ उप्पल संग मिलि आए श्री गुरु तीर।। १ ।।

चौपई

बंदन करि सभि बैठे पास। हाथ जोरि उचरी अरदास।
'सच्चे पातिशाहु हम सुनै। सिख अनेक अरथ जे भनैं।। २ ।।
मन को शांति न किसको आवै। इत उत ते हटि थिर न रहावै।
निवला अपर निहालू दोइ। कथा उचार करति हैं सोइ।। ३ ।।
त्रास बिकारन ते हुइ तबैं। दुरमति उर ते परहरि सबै।
गुरमति को प्रापति चित होति। गुन गन हिरदे जोति उदोति'।। ४ ।।
सुनि श्री हरिगोविंद बखाना। अंम्रित सतिगुरु शबद महाना।
बकता महिं चौदह गुन होइं। ग्यान पाइ तिस ते सुनि कोइ।। ५ ।।
तिस श्रोता महिं चौदस गुन ह्वैं। तुरत ग्यान प्रापति जे सुनहैं।
जे गुन होहिं न दोनहु मांहीं। तूरन[1] ग्यान सु प्रापति नांही।। ६ ।।
जे इक बकता महि भी होइ। श्रोता को प्रापति सुनि सोइ।
बूझन करे गुरू 'गुन जेई। हम कहु बरन सुनावहु तेई।। ७ ।।
क्रिपा करहु सेवक निज जानि। भिंन भिंन अबि करहु बखान'।
तबि श्री हरिगोविंद सुनाए। 'सुनहु सिक्ख धारहु समुदाए।। ८ ।।
प्रथम 'वागमी' सुंदर बानी। ब्रिंद शबद के पद लौं जानी।
श्रोते जिते तिती धुनि करै। छंद धारना जिम, तिम परै[2]।। ९ ।।
दूजे हुइ वित ब्यास समासे। लखहि कि जिस थल सुरस प्रकाशे।
ठहिरै ब्रिति श्रोतानि उदार। तहां सु करहि अरथ विसथार।। १० ।।
जिस थल होवहि ब्रिती उदास। तहिं संछेप ही करहि प्रकाश।
ब्रिति प्रिय कथा केर प्रसताव। इहु चतरथ गुन लखो सुभाव।। ११ ।।

---

1. तुरत। 2. पढ़ै।

मधुर गिरा अस करहि उचारी। जिसते सभि को लागसि प्यारी।
पंचम 'साच बचन' को कहै। करम उपासन ग्यान कि अहै ॥ १२ ॥
रिदा शब्द को होइ सु बरनै। अरथ सुनावै करि करि निरनै।
खशट 'संदेह छेदनो' मानि। प्रशन करै उत्तर दे जानि ॥ १३ ॥
जथा शबद को आशै[1] अहै। तथा प्रमाण सु साखी कहै।
जैसे बुधि मैं श्रोता जानै। तिसी प्रकार द्रिशटांत[2] बखानै ॥ १४ ॥
सपतम कुशल सकल मत केरो। सुने होइ शासत्रन के झेरो[3]।
अशटम ख्यात विखेप[4] क्रितौनि। कथा प्रसंग होति है जौन ॥ १५ ॥
अपर जु मत साखी सु प्रमान। आशै[1] समझनि करै बखान।
नवमि 'अविंग[5] जु सूधा बैसे। मन भी सरल रखहि बिधि तैसे ॥ १६ ॥
दसमो 'जन रंजक' पहिचान। ज्यों ज्यों श्रोता सुनहि सु कान।
त्यों त्यों रंग प्रीत को चरै। इम कहि सरब सभा बसि करै ॥ १७ ॥
चितै सभो इक दसमो जान। श्रोता सकल समुख सवधान।
श्रवन बिलोचन निजदिश करैं। चहैं कि आगे कहां उचरैं ॥ १८ ॥
'ना-हंक्रित[6] द्वादशमो होवै। सरब हंकार रिदै ते खोवै।
मन नीवां[7] राखं सभि संग। गुन बड लखि न किसे चित भंग ॥ १९ ॥
होइ धारमिक त्रोदसवैं इह। कहै जो जथा कमावै निज तिह।
चौदशमहिं संतोखी होइ। परालबध करि आवै जोइ ॥ २० ॥
सहत अनंद पाइ जौ लेय। बिन जाचे अंम्रित सम देय।
अधिक पदारथ चाह न धरै। ढिग जो होइ बरतबो[8] करै ॥ २१ ॥
इह बकते के चौदश गुन हैं। धारहि चतरदश कथा जु सुनि हैं।
बकता की करनी निज भगति। मन बच करमन के संजुगति ॥ २२ ॥
दूजे होइ न मन हंकारी। जानहि 'मैं बड सेवा धारी'।
तितीऐ शरधा सुनिबे होइ। नहीं उचाटहि मन को सोइ ॥ २३ ॥
चौथे अपनी चित चतुराई। बकते पर नहिं करहि बनाई।
पंचम बकता भनहि जु अरथ। तिह समझन की होइ समरथ ॥ २४ ॥
खशटम[9] प्रशन करन को जानै। सपतम सुने ग्रंथ बहु कानै।
अशटम आलस को नहिं धरै। नौमै निंद्रा को वसि करै ॥ २५ ॥
दसमो सुनहिं धरहि उर सोइ। वंड[10] खाइ ढिग पिखि जो होइ।
द्वादशमो जिम गुरुनि सिघांति। तिस अनुसारि सुनहि चित शांति ॥ २६ ॥

---

1. आशय। 2. दृष्टांत। 3. झगड़े, वाद-विवाद। 4. ख्याति, विक्षेप कृत न। 5. अव्यंग। 6. हंकार रहित। 7. नम्र। 8. बरतता रहे। 9. षष्टम। 10. बांट कर।

होइ विपरजै त्यागनि करै। त्रोदशमो तन मैं सुत्र धरै।
चौदशमों नहिं करै पखंड। मन को लावहि सुनहिं अखंड ॥ २७ ॥
इम श्रोता बक्रता जो होइ। प्रापति होति ग्यान को दोइ।
इह लच्छन[1] जो कहे बनाइ। सिक्ख निहालू बिखै सु पाइ ॥ २८ ॥
तिसकी संगति करहु हमेश। हुइ तुम महिं गुन-ब्रिंद विशेश।
सुनहु कथा तिह मुख ते नीकी। क्यों न श्रेय हुइ तुमरे जी की' ॥ २९ ॥
श्री मुख ते सुनि सभि हरखाए। धारन कीने गुन समुदाए।
किशना झंझू पंमू पूरी। श्री हरिगोविंद केरि हजूरी ॥ ३० ॥
करि बंदनि को बाक उचारा। 'करहु गरीब-निवाज उधारा'।
श्री मुख ते उपदेश बखाना। 'कलि महिं नाम जहाज महाना ॥ ३१ ॥
शबद पठनि कीजहि अभ्यास। चढहु जहाज नाम सुख-रासि'।
सुन करि दोनहु बहुर उचारे। 'इक सिख पढन श्रवन को धारे ॥ ३२ ॥
खोटे करम त्याग करि देति। इक पढि करि धारन करि लेति।
करहिं परसपर अधिक विरोध। पाहन रेख न त्यागहि क्रोध ॥ ३३ ॥
उर हंकार धरहिं 'हम बडे'। काम लोभ करदम[2] मन गडे।
तिन को पद प्रापति हुइ कैसे। करुना करहु सुनावहु तैसे' ॥ ३४ ॥
सुनि श्री मुख ते बाक उचारा। 'करै सबद सभिहूंन उधारा।
समें पाइ करि दे कल्याने। पढिबो सुनिबो शबद जु ठाने ॥ ३५ ॥
इक नर 'ग्यान बद्ध' जे होइ। तिन की श्रेय करहि नहिं कोइ।
सुनहि शबद जे नर अग्यानी। तिन के कलमल होवहिं हानी ॥ ३६ ॥
जग्यासा[3] को पाइ अगारे। अभ्यासे लहि ग्यान सुखारे।
भगतनि की दिढि भगती होइ। ग्यानी ग्यान सु गाढो जोइ ॥ ३७ ॥
जो नर पढहि मान के कारन। दुरि दुरि करहि समूह विकारनि।
निशचा[4] नही ग्यान को पावै। सभि महिं ग्यानी नाम कहावै ॥ ३८ ॥
हंकारी सति संग न करै। बडिआई धन हित सभि धरै।
तिस को प्रापति होइ न ग्यान। किम दरगाहि पाइ सो मान ॥ ३९ ॥
श्री अंम्रितसर जिसने जाना। मग न लहहि तौ बूझि पयाना।
अग्यानी भी आनि शनाने[5]। तिस को संगति मिली महाने ॥ ४० ॥
आइ सुधासर करहि शनान। मिलि आवति तिन संग अजानि।
तिम जग्यासी पहुंचहि आइ। मज्जन करि अनंद[6] को पाइ ॥ ४१ ॥
जो ग्यानी मग जानति आछे। आनि पहूचति जबि चित बांछे।
जो परंतु मग जाननिहारो। दिशा भरम भा रिदे मझारो ॥ ४२ ॥

---

1. लक्षण 2. कीचड़ 3. जिज्ञासा 4. निश्चय 5. स्नान करे 6. आनंद।

उलटे जाति सुधासर मग ते। सुनहि अपर ते कहै न लगते।
उर हंकार कि 'मैं मग जानों'। भरम भयो उर नहीं पछानो ॥ ४३ ॥
तिम संतन ते पूछति नांही। 'मैं सभि पठ्यो' लखहि मन मांही।
नहिं सति संग करहि मनमानी। सो कबि होइ नहीं ब्रह्म-ग्यानी ॥ ४४ ॥
श्री गुरु कह्यो सभिनि सिख सुन्यो। शरधा[1] धरि नंम्री हुइ मन्यो।
घिगल मद्दू दोइ तिखाण। करनि कार महिं बहुत सुजान ॥ ४५ ॥
रहैं गुरू हरिगोविंद तीरैं। नित लंगर की लकरी चीरैं।
मंजे बहुत चौकीआं करैं। सतिगुर के घर मैं सों धरैं ॥ ४६ ॥
अपर सिक्ख के कारज होइ। करि कै प्रेम बनावैं सोइ।
कथा कीरतन शबद उचारि। सुनहि प्रेम ते काज बिसारि ॥ ४७ ॥
पाछलि राति होइ सवधान। पूरब आप करहिं इशनान।
जल निकासि पुन सिक्ख नव्हावैं[2]। निस दिन सत्तिनाम लिव लावैं ॥ ४८ ॥
अंत समां तिन को जबि भयो। प्रथम शनान सुधासर कियो।
जितिक पदारथ निकट निहारे। निज कर ते रंकनि दे सारे ॥ ४९ ॥
वाहिगुरू सिमरति तन छोरा। गुरू बिन कर्यो न मन किस ओरा।
सिक्ख चिखा[3] पर जबि लें गए। श्री हरिगोविंद पहुंचति भए ॥ ५० ॥
दोनहु को कर ते ससकारा[4]। पीछे गुरु प्रसंग उचारा।
इह नल नील हुते अवतार। करी बिनै इनहुं इक बार ॥ ५१ ॥
इनको भगति देइ ब्रह्म-ग्यान। होवहिं लीनि अनंद महान।
तबि हमने उचर्यो तिस काल। पूर कामना करहि निहाल ॥ ५२ ॥
अबि सतिगुर के सबद कमाए। ब्रह्म ग्यान भे नहीं लखाए।
अबचल पद प्रापति अबि होवा। भोग करम फल सभि को खोवा ॥ ५३ ॥
सुनि कर सगरे सिख बिसमाए। 'गति मित तुमरी लखी न जाए।
काइ न जानै महिमा सगरी। तीन लोक महिं महां उजगरी' ॥ ५४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रासे सिक्खन प्रसंग बरननं नाम दोइ चतवारिंसती अंशु ॥ ४२ ॥

---

1. श्रद्धा। 2. स्नान करवाए। 3. चिता। 4. दाह संस्कार किया।

अंशु ४३

सिक्खन प्रसंग

दोहरा

हुने बैंद दोनहुं बडे बन वाली प्रसराम।
सिक्ख साध को रुज हरैं उर निशकाम अनाम ।। १ ।।

चौपई

आवखध[1] निज धन लाइ बनावैं। गुरू अरथ रोगीन खुलावैं।
पर्‌यो होइ तिस के घर जाइ। अवखध बल ते देति उठाइ ।। २ ।।
सतिगुरु शबद प्रेम ते गावैं। अरथ बिचारहिं बहुर कमावैं
इक दिन श्री सतिगुरू अगारी। कर जोरति अरदास उचारी ।। ३ ।।
'साचे पातशाहु हम जाना। सति गुरु शबद देति कल्याना।
साध संग की उपमां भारी। क्यों सतिगुरु ने इती उचारी ।। ४ ।।
श्री मुख ते तिन सो तब कहैं। 'अवखध सभि रोगन को अहै।
तुमने करि सभि घर महिं राखी। रोगातुर आवहिं हुइ कांखी ।। ५ ।।
देख नाटका[2] करहिं बिदारी। गरमी, सरदी, कफी उदारी।
नीके जबि परखहु तबि देति। बहुरो पथ[3] बताइ सुख हेतु ।। ६ ।।
तबि तिस को रुज दूर बिदारो। सने सने हुइ जाति सुखारो।
धरी होइ जे अवखध लाख। रोगी मिले सगल उर कांख ।। ७ ।।
बिना बैंद ते रोग न जाई। इहु निश्चै जानहु समुदाई।
तिम गुरमुख सिख जो मम प्यारे। देखहिं प्रथम कवन अधिकारे ।। ८ ।।
करम उपासन, किधों ग्यान। अधिकारी जस तथा बखान।
रहत बताइ गुननि को देति। सो सिख शीघ्र श्रेय को लेति ।। ९ ।।
बिन अधिकार जु दे उपदेश। रही श्रेय सो लहे कलेश।
साध संग की महिमा भारी। यांते श्री गुरु देव उचारी' ।। १० ।।

---

1. औषधि। 2. नाड़ी। 3. पथ्य, अनुपान।

हुतो तीरथा इक सिख जोइ। रहे शाहु-लशकर में सोइ।
श्री हरिगोविंद शरनी आयो। हाथ जोरि करि बाक अलायो॥ ११॥
'लगो रहौं निज किरत बिसाला। अवसर होति नहीं किस काला।
किम हमरो भी होइ उधारा। श्री मुख ते उपदेश उचारा॥ १२॥
संतन की सेवा नित करीअहि। छादन भोजन ते सुख धरीअहि।
देति धेनु को घास रु दाना। सो नर दुगध करति है पाना॥ १३॥
तथा साध की सेवा करै। जिम किम तिन प्रसंनता धरै।
पंथ सुखेन बताइ सु देति। भगति ग्यान को द्रिड़ करि लेति'॥ १४॥
सुनि बूझ्यो 'किम संत पछानों। जिसते पिख करि सेवा ठानों।
तबि सतिगुर बिधि ताहिं बताई। 'इक न्रिपने अभिलाख उठाई॥ १५॥
किम हेरहिं हंसन को नैन। खग गन को सेवनि करि ऐन।
ब्रिंद चोग सभि बिधि की पावै[1]। देश विदेशनि ते खग आवैं॥ १६॥
चुगैं चोग अरु जस् बिसतारैं। मानसरोवर लाग सिधारैं।
सुनि हंसन सभि बिखै बखाना। 'हम भी चलहिं नरिंद सथाना॥ १७॥
तिह उर शरधा जाइ वधावैं। जिमते नित खग चोग चुगावैं।
तबि हंसन की जोरी आइ। अपनि सरूप स दीन दिखाई॥ १८॥
पिखि लोकनि तबि जाइ सुनायो। हरखति न्रिप मुकता पै[2] ल्यायो।
धर्यो अगारी तिन के जाइ। तजि पानी, पै लीनिसि खाइ॥ १९॥
गोल अमोलक मुकता माल। निज अंतर ते दए निकाल।
उडि करि गए आपने देश। मन अनंद करि लए[3] नरेश॥ २०॥
जबै जौहरी ते परखाए। सभि न्रिप धन नहिं तिनि समताए।
तिम तूं सभि की सेवा ठानि। मिलहि आइ जो दे ब्रह्म-ग्यानं'॥ २१॥
भयो अनंद सुने गुरु बैन। सेवन लग्यो संत सुख दैन।
वाहिगुरू सिमरति सुख पावा। अंतकाल गुरु निकटि सिधावा॥ २२॥
भावा धीरो बसहि उजैन। करहि भगति गुरु की निज ऐन।
कथा कीरतन सुनै सुनावै। दोइ नाम निस सुपति बितावै॥ २३॥
खशट जाम महिं भगति करंता। सति संगति को मिलि बुधिवंता।
छठे मास गुरु के ढिग आवै। दरशन करति अनंद को पावैं॥ २४॥
इक दिन बूझ्यो सतिगुरू पास। 'संतनि के लच्छन क्या रासि'।
तबि श्री हरि गोविंद बखाना। 'इक सलोक संतनि गुनवाना॥ २५॥

---

1. डाले 2. दूध। 3. ले लिए।

श्री मुख वाक

मंत्र राम नामं ध्यानं सरब्त्र पूरन: ।
ग्यानं सम दुख सुखं जुगति निरमल निखैरण: ।
दयालं सरबत्र जीआ पंच दोख बिवरजित: ।
भोजनं गोपाल कीरतनं अलप माया जल कमल रहत: ।
उपदेशं सममित्र शत्रु: भगवंत भगति भावनी ।
परनिंदा नह श्रोति श्रवण आपु त्यागि सगल रेणुक: ।
खट लखशण पूरनं पुरख: नाम साध स्वजन: ॥ ४० ॥

चौपई

सिमरहि राम लखहि सभि मांही । दुख सुख महिं सम सदा रहांही ।
जो निरमल निरवैर निराला । जुरे रहैं तिहसो सभि काला ॥ २६ ॥
सभि जीवन पर दया करंते । काम क्रोध करि नहीं लिपंते ।
ज्यों जल कमल अलेप सदीवे । शत्रु मित्र उपदेशक थीवे । २७ ॥
पर निंदा नहि सुनैं सुनावैं । निम्री मन, खट लक्खन पावैं ।
इनतें परख लेहि बुधिवान । सोई साध ब्रिद गुनवान ॥ २८ ॥
तिनकी संगति दुरमति हरै । सेवति ग्यान-प्रापती करै ।
सुन हरख्यो धीरो घट गयो । शुभ लक्खण सभि धारति भयो ॥ २९ ॥
मेलि बडो सिख पुर बुरहान । भाई भगत दास भगवान ।
अपर बोदला मलक कटारू । पिरथी मल जरांद बुधि सारू ॥ ३० ॥
डल्लू भगत छुरा हैराण । श्यामी दास वधावनि जाणि ।
सुंदर आदिक सिख अनेक । मिलहि कीरतन करहिं बिबेक ॥ ३१ ॥
सभि इकठे दरशन हित आए । श्री गुरु हरिगोविंद दरसाए ।
अनिक भांति की अरपि उपाइन । सिर धरि बंदति पंकज पाइनि ॥ ३२ ।
रहे कितिक दिन दरसन करिते । बैठे ढिग जग्यासा धरिते ।
'हम को सुमति बतावनि करीअहि । भवसागर ते पार उतरीअहि' ॥ ३३ ॥
तवि श्री हरिगोबिंद उचारा । 'धरम साल इक करहु उदारा ।
बडी प्रभाति मिलहिं सभि आइ । गुरबानी को सुनहि सुनाइ ॥ ३४ ॥
अरथ विचारहु कथा करीजै । बहुर कमावहु मन धरि लीजै ।
समों आरती चरन कवल लगि । करि अरदास जाहु निज धर मग ॥ ३५ ॥
धरम किरत करि कूर[1] न कहीअहि । पुन[2] रहरास[3] समों जबि लहीअहि ।
जाम निसा लगि किरतनु करीअहि । अंत सोहिला पढिबो लहीअहि ॥ ३६ ॥

---

1. झूठ । 2. फिर । 3. बानी का नाम ।

जाम निसा ते करहु शनान। पठहु कंठ बानी सुख-खानि।
छुधिति नगन सिख देखो जोइ। भोजन बसत्र देहु सुख होइ॥ ३७॥
पुरब[1] अमस्या अरु संग्रांदि। दीप माल बैसाखी आदि।
गुर की कार इकत्र करीजै। तबि पंचाम्रित करि बरतीजै[2]॥ ३८॥
तजि हौमै धारहु मन नीवां। इम सतिसंगति करहु सदीवा।
'परी कूप महिं जाइ बिलाई। किम पवित्र हुइ पूछ्यो जाई॥ ३९॥
पंडित कह्यो काढि मंजारी। बहुर हज़ार डोल कढि बारी[3]'।
हुइ पवित्त सुनि कै नर गयो। कढनि बिनाई भूलति भयो। ४०॥
जल निकासि बहु गंधि न गई। पंडत निकट जाइ सुधि दई।
'नहिं पावनि सो कूप भयो है। नीर निकासनि अधिक कियो हैं॥ ४१॥
सुनि पंडत ने पुनहु बखानी। काढहु लच्छ[4] डोल भरि पानी।
पुन दुगांधि लखी जल मांही। 'नहिं पुनीत' कहि पंडत पाही॥ ४२॥
सुन पंडित चलि कूपि निहारि। बीच परी तिम ही मंजारि।
कहति भयो —'इह क्या तुम कीनी। मितक बिलाई बिच रखि लीनि॥ ४३॥
जौ लगि इसहि निकासहु नांही। किम पावनता हुइ जल मांही।
तिम जानहु तन हौमै बुरी। अणहोवति जो तन महि धरी॥ ४४॥
जबि लगि इसहि बिसारो नांहि। तब लगि संसै मुकती मांहि।
यांते हौमै तजिबे हेतु। करहु जतन नित होइ सुचेत॥ ४५॥
सनै सनै इह होइ बिनास। होइ आतमा ग्यान प्रकाश'।
इम सुनि कै सिक्खनि की पंगति। जो बुरहानि पुरे की संगति॥ ४६॥
धर्यो अनंद गए निज धामू। सिमरनि करति भए सति नामू।
कह्यो गुरू सो कीनि कमावनि। अंतह्करण भए तिन पावनि॥ ४७॥
जो जो सतिगुर रहति बताई। सोई करति भए सभि जाई।
उचित मोख के सगरे भए। 'सतिगुर धनं धनं सुख दए'॥ ४८॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रासे 'सिक्खन' प्रसंग बरननं नाम तीन चतवारिसती अंशु। ४३।

---

1. पर्व, अमावस, संक्रांति। 2. बांटिए। 3. वारी, जल। 4. लाख।

अंशु ४४

सिक्खन प्रसंग

दोहरा

माईआ[1] लंब[2] सुहंड[3] रहि सति संगति नित जाइ ।
प्रेम गाइ गुर शबद को करहि भगति भउ भाइ ।। १ ।।

चौपई

सतिगुर के दरशन हित आयो । पग पंगज पर सीस झुकायो ।
रहि केतिक दिन बूझनि कीनि । मोहि बतावहुं गुरू प्रबीन ।। २ ।।
सति संगति कै गुर दरबार । इक तौ जाति कामना धारि ।
लेति पदारथ हित गुज़रान । करहिं तिसी ते खान रु पान ।। ३ ।।
इक सिख करि कै धरम कमाई । सिखनि को बरताई सु खाईं ।
सहकामी निशकामी जोऊ । किरतन करति सुनति हैं दोऊ ।। ४ ।।
सति संगति करि बैस बितावैं । नित रावर को दरशन पावैं ।
क्या गति होति अगारी जावैं । अंतर कितिक सु फल को पावै ।। ५ ।।
श्री हरिगोविंद तबहि सुनाए । 'सति संगति महिं दोनो आए ।
सहि कामी मरि गंध्रब[5] लोक । जाइ अनंद भुगतहि बिन शोक ।। ६ ।।
तिन ही संग मुकति हो जावै । जनम मरन को दुख नहिं पावै ।
जे निशकाम ग्यान[6] को पाइ । झूठे लखि जग सुख समुदाइ ।। ७ ।।
परारबध पुरवे तजि प्रान । मिलहिं वाहिगुरू महिं सुखवान ।
'सभि ते अधिक अहै निशकाम । दुइ बिधि के जानहु सहिकाम ।। ८ ।।
तन निरबाह मात्र इक लेति । बिन जाचे करि भाउ जु देति ।
सो लेकरि हरखहि उर माही । लखहि वाहगुरू 'पठि हम पाही ।। ९ ।।
प्रापति जो, बरताइ[7] सु खाइ । किरतनु कथा श्रेय हित गाइ !
थोरे बहुत पदारथ पाइ । करि संतोख सदा हरखाइ[8] ।। १० ।।

---

1. व्यक्ति का नाम । 2. जाति का नाम । 3. स्थान का नाम । 4. निष्कामी
5. गंधर्व । 6. ज्ञान । 7. बांटे । 8. हर्षित हो ।

अस भी हुइ निशकाम समान। बिना लोभ ते, करहि जु आन।
किंचित करहि बासना जोइ। पुरि गंध्रव जाति है सोइ ॥ ११ ॥
जे अति लोभी धन के हेतु। करहि कीरतन मन नहिं देति।
उचरनि कथा, अपर शुभ करम। करहि दरब हित जाइ न भरम ॥ १२ ॥
इहां पदारथ चहै सु पावै। धन हित संगति मिल्यो रहावै।
मरहि बहुर नर तन को पाइ। सिमरहि पुन सतिगुर अधिकाइ ॥ १३ ॥
जनम अनेक पाइ मल खोइ। लहै मोख निशकामी होइ।
यांते तुम बन कै निशकाम। किरतन करहु भजहु सतिनाम' ॥ १४ ॥
सुनि उपदेश रिदे महि धारा। जनम मरन को कशट निवारा।
सिख चूहड़ चोझड़ गुन धारी। रहति नगर लखनऊ मंझारी ॥ १५ ॥
उठति बैठति पौढति चालति। काजर महिं सतिनाम संभालति।
सो चलि दरशन के हित आवा। पद अरबिंदन सीस निवावा ॥ १६ ॥
कितिक दिवस दरशन हित रह्यो। इक दिन सतिगुर के संग कह्यो।
'सिखी लता मूल क्या अहै। बरनो रूप कि जिम सभि लहैं' ॥ १७ ॥
श्री गुरु हरिगोबिंद उचारा। 'मन नंम्री धर्यो सु किदारा[3]।
गुर शरधा जिसको अंकूर। गुर पद प्रीत महां दिढ मूर ॥ १८ ॥
सतिसंगति सों करनो मेलि। इह बरधन[1] है सिक्खी वेलि।
संतनि की सेवा शुभ करनी। सगरी लगरैं[2] छुटनि बरनी ॥ १९ ॥
गुन गन को धरनो दल हरे। दिन प्रति घनो होनि अनुसरै।
किरतन करनि कि सुनिबो करनि। इही नीर को सेंचन करनि ॥ २० ॥
शबद बिचारनि सुमन सफूले। किरतन सरब सुगंधि अनुकूले।
उकति जुगति लखिबो मकरंद। बिकसन बिशय बिराग बिलंद[4] ॥ २१ ॥
लाग्यो फल, जान्यो जग कूरा। ब्रह्मानंद के रस संग पूरा।
लीनो अपनो रूप पछान। इही स्वाद पायो, मनजानि ॥ २२ ॥
सिक्खी बेल लई जिन एही। एही सिख है गुरू सनेही।
से गुरमुख से परउपकारी। से ग्यानी से भगति बिचारी ॥ २३ ॥
से जग के सिर मौर उदारा। जीत गयो सो कबहुं न हारा'।
सुनि चूहड़ सतिगुर के बैनि। गयो सराहति अपने ऐन ॥ २४ ॥
सनमुख सिक्ख नाम इक भाना। तीरथ राज, प्रयाग सथाना।
तहां बसति बीत्यो चिरकाला। सतिगुर के दरशन को चाला ॥ २५ ॥

---

1. वर्धन। 2. टहनियाँ। 3. क्यारा, खेती। 4. अत्यधिक।

जथा शकति धरि भेट अगारी। हाथ जोरि करि बंदन धारी।
कुशल प्रशन कीनसि जबि ताहू। अरज करति भा सतिगुरु पाहू ॥ २६ ॥
'रिदे कामना करि कल्यान। आनि धर्‌यो तुम शरनि महान।
निज उपदेश बतावहु मोही। जिस ते जनम मरन नंहि होई' ॥ २७ ॥
श्री गुर हरिगोबिंद बखाना। 'किरत धरम की करहु सुजाना।
वाहिगुरू को नाम लईजै। रसना सिमरहु नहिं बिसरीजै' ॥ २८ ॥
तब भाने सुनिकै निरधारा। पुन पूछनि को बाक उचारा।
'अपर मतनि के नर हुइ नेरे। तरकहिं मोहि बाद को छेरे ॥ २९ ॥
पुरश महान सभिनि ते जोइ। बारं बारि हकारहि[1] कोइ।
खीझहि सो झिरकहि दे तास। नहिं राखति है तिन को पास ॥ ३० ॥
राम राम नित परे पुकारो। नहिं रीझै खीझै निरधारो।
क्या फल तुमको आवै हाथ। निसहि महां फल दाता नाथ' ॥ ३१ ॥
श्री सतिगुरु कहिं लखहु न ऐसे। शरधा धरहु कहैं, हम जैसे।
जिम कोई आजिज़[2] ह्वै दीन। शत्रु ब्रिंद ने जिस दुख दीनि ॥ ३२ ॥
सभि ते हुइ निरास निरधारे। ले अधिपति को नाम पुकारे।
जबि लगि सुनीयति नहीं पुकार। बारि बारि सो करहि उचार ॥ ३३ ॥
सुनहि पुकारत रिपु जन जेई। से हटि जाति कशट नहिं देई।
निज बल रोकहिं तिस ते फेरि। भै करि होइ सकहिं नहिं नेर ॥ ३४ ॥
जे अधिपति के चाकर अहैं। दीन दुखी रिपु गन ते लहैं।
क्रिपा करहिं से बनहिं सहाइ। सभि शत्रुनि को त्रेति हराइ ॥ ३५ ॥
जे अधिपति भी सुनहि पुकारा। जानहिं 'मेरो नाम उचारा'।
क्रिपा करै निरभै करि लेति। रिपु गन नाश, महां सुख देति ॥ ३६ ॥
तिम ए काम क्रोध ते आदि। लूटति नित प्रति करि करि बाद।
पाप रूप भै देति सदीव। दुखद शत्रु गन लखहि जि जीव ॥ ३७ ॥
राम नाम तबि करहि उचारन। मिलहिं जि संत सु करहि उधारनि।
काम क्रोध रिपु पाप समेति। इन ते अभै तुरत करि लेति ॥ ३८ ॥
सुनि परमेशुर करुना धरै। जानहिं मेरो सिमरनि करै।
पर्‌यो शरन मेरी हुइ आरति। रिपु गन मिले इसे नित मारति ॥ ३९ ॥
बिरद क्रिपाल आपनो जाना। करहि मुकति सभि बंधन हाना।
अबिचल सुख प्रभु दात करंते। इह फल होति नाम सिमरंते' ॥ ४० ॥

---

1. बुलाए। 2. असहाय, दीन।

सतिगुरु कह्यो 'तोहि जो तरकै[1]। प्रभु सिमरन ते पाइ जु फरकै।
निंदक पामर शत्रू सोइ। तिन सम दुखद अपर नहि कोइ ॥ ४१ ॥
तिन को संग न करो कदाई। मिलनि बोलने पाप उपाई।
कहि तरकां निशचे ते गेरति। अपर जि मंदमती महि प्रेरति ॥ ४२ ॥
तजहि न विशय, रहे मन लागि। तौ बिशयन के संगी त्याग।
तिन की संगति कबहि न करै। तिन को तजनि सदा हित धरै' ॥ ४३ ॥
सुनि भाने पूछ्यो इह कहां। बिशियनि ते बिशई रिपु महां।
कारन बिशय परति हैं जाने। बिशयनि भुगता काज समाने ॥ ४४ ॥
सुनि श्री हरिगोबिंद उचारे। 'कारन अगनि देइ तन जारे।
तिस अगनी ते लोहि तपावा। लाल बिसाल भयो झलकावा ॥ ४५ ॥
अगनी ते हुइ तेज महाने। सहि नहि सकीअति नेर न ठाने।
त्यों बिशई बिशयनि ते भयो। बंधमान, किम नहि मुकतयो ॥ ४६ ॥
तिस की संगति देह गिराइ। शुभ पद को न अरूढनि पाइ।
जिम तरुवर को बहु फल लागे। बाउ लगे जिनि शाखा त्यागे ॥ ४७ ॥
सो गंदा हुइ जाइ न पाके। काचे गिर्यो न रस परि वाके।
वायु, आदि जिन बिघन न भयो। दिढ शाखा कै संगी रह्यो ॥ ४८ ॥
सो तरुवर ते रस को पावै। पाके नीम मधुर हुइ जावै।
गुरबानी शाखा तिम लागे। तरकै निंदक सुनि जो त्यागे ॥ ४९ ॥
परमेशुर तरु को रस पाइन। गंदे जनम मरन दुख आइन[2]।
लगे रहे सो ले रस ग्यान। मधुर मुकति हुइ बंधन हानि ॥ ५० ॥
त्यों भाना तुम सुनि कै तरक। परमेसुर सों करहु न फरक।
नहि त्यागहु सतिनाम, सुखेना। जे अनंद अभिलाखहु लेना ॥ ५१ ॥
सुनि भाने मानी गुरबानी। सत्य सन्त ऐसे गुन खानी।
दिढ शरधा धरि सिमरन कर्यो। भउ जल तर्यो पार सो पर्यो ॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रासे सिक्खन प्रसंग बरननं नाम चतुर चतवारिंसती अंशु ॥ ४४ ॥

---

1. तर्क करे। 2. अयन, घर।

अंशु ४५
सिक्खन प्रसंग

दोहरा

वसहि जौनपुर के बिखै जट्टू तपा महान ।
श्री गुर हरि गोविंद के आयहु दरशन ठानि ।। १ ।।

चौपई

बंदन करी जोरि जुग पान । बैठि करी अरदास बखान ।
'सुन्यो सुजसु रावर को भारी । लाखहुं मानुख कुमति बिदारी ।। २ ।।
पर्यो शरनि मैं क्रिपा-निधान । दिहु उपदेश होइ कलिआन ।
सुनि करि श्री सतिगुरू उचारा । 'करहु शांति की तप निरधारा ।। ३ ।।
राम नाम नित नाम उचरीअहि । इन्द्रै रोकि नाम मन धरीअहि' ।
बहुर तपे बूझनि गुरु कीने । 'केतिक कहिते सुमत प्रवीने ।। ४ ।।
बिना ग्यान ते गति कबि नांही । बेद प्रमाण देति इस मांही' ।
सुनि गुर भन्यो 'लखहु इस रीति । जे गति[1] के अभिलाखी चीत ।। ५ ।।
वाहिगुरू जबि निसि दिन जापति । चारहु द्वार होइ तबि प्रापति ।
जिनि दर अंदर हुइ प्रविसाइ । मिलहि जाइ करि, पदि को पाइ ।। ६ ।।
जिमि हरिमंदर के दर चार । जिस बरहि[2] सु तिसहि उदार ।
जोग बिराग भगति अरु ग्यान । सिमरे नाम आइ चहु पान[3] ।। ७ ।।
ब्रिति इकागर करि अभिराम । प्रेम सहत सिमरे सतिनाम ।
तबि फल 'जोग' करे को पावै । सिमरन करि तिस मन टिक जावै ।। ८ ।।
तबि बिशयनि ते लहै 'बिराग' । मूल 'भगति' को सिमरनि लागि ।
प्रभु महि 'प्रेम' महाँ उपजायो । निस दिन मन मैं एक बसायो ।। ९ ।।
क्रिपा करहि जिस महिं लिवलाई । रिदे पुनहि दे 'ग्यान' उपाई ।
एक आतमा पूरन जानहि । निज सरूप लखि बंधन हानहि ।। १० ।।
इम सतिनाम आसरै चारे । सिमरति प्रापति होवति सारे ।
यांते जो बांछहि इन चारनि । नाम निरंतर करहि संभारन ।। ११ ।।

---

1. सुगति । 2. प्रवेश । 3. हाथ में ।

धरम साल के सतिगुर द्वारे। चलति लहहि फल पग पग भारे।
शवद सुनहि तजि हं मन नीवां[1]। प्रभ उपासना प्रापति थीवा ॥ १२ ॥
पाछलि राति उठनि इशनान। अहै शांतकी तपु सु महान।
सतिनामु सिमरनि फल पावै। 'मैं तन नहिं' निशचै ठहिरावै ॥ १३ ॥
तन जनमे ते जनम न मेरो। बिनसनि ते विनसनि नहि हेरो।
सति चेतन मैं रूप आनंद। सनै सनै ऐसे सुख कंद ॥ १४ ॥
नवला सिक्ख निहाला दोइ। पटणे नगर बसहि घर सोइ।
सच बोलहि सचु कार कमावें। साचे की संगति निन भावै ॥ १५ ॥
जे सिख भजन करति धरि प्रेम। तिन को सेवति नित हित छेम।
श्री गुर के दरशन को आए। जथा शकति धरि सीस निवाए ॥ १६ ॥
कितिक दिवस बसि करि गुर पास। हुइ थित करति भए अरदास।
गुरू गरीब-निवाज मुकंद। दिहु ऐसो उपदेश बिलंद ॥ १७ ॥
जिसके करे सरब कुछ होई। बहुरो करतब रहहि न कोई।
श्री गुरु हरि गोबिंद अभिरामू। कह्यो 'उपासहु नित सतिनामू ॥ १८ ॥
भन्यो निहाले सुनि तिस काल। 'कितिक सुमति जुति कहिं इस ढाल।
जबि लौ द्वैत होति जन रिदे। त्रिपटी[2] बनी रहति है तदे[3] ॥ १९ ॥

दोहरा

एक उपासि उपासना त्रिती उपासक सेय।
ध्याता धेयरु ध्यानु तिम, ग्याता ग्यान रु गेय ॥ २० ॥

चौपई

जब प्रापति अद्वैती होइ। तहिं तीनहु को बननि न[4] जोइ।
पार ब्रह्म को बनहिं सरूप। जिम सागर हुइ बूंद अनूप ॥ २१ ॥
नामी नाम न जापक जबै। अपनि सरूप सरब लखि तबै।
श्री गुरु सुनि कै बहुर उचारा। 'भगति होति है चार प्रकारा ॥ २२ ॥
ब्रिद कामना करि करि मन मैं। सत्तिनाम सिमरति निस दिन मैं।
अरु संतन की सेवा ठानति। कहे बचन संतनि के मानति ॥ २३ ॥
तिन की होति कामना पूरी। पुन प्रभु प्रीति उपजि उर रूरी।
दुतीए आरति भगत बनंते। जो शत्रुनि ते हुइ दुखवंते ॥ २४ ॥
कै रोगातुर दुख को पावै। प्रभु के सिमरनि महिं मन लावै।
शत्रु जिते हुइ जाति सुखारो। रोग नशट ते हुइ बल भारो ॥ २५ ॥
आगे की शरधा वधि परै[5]। लालच ते सद सिमरनि करै।
तीजे नित उपासना धारी। सिमरहिं सत्ति नाम अघहारी ॥ २६ ॥

1. अहंकार छोड़कर मन नम्र 2. त्रिपुट, तीन वस्तुओं का योगः ध्यान, ध्याता, ध्येय 3. तभी 4. न देखे 5. बढ़ जाए।

लखहि दास निज प्रभु को करता । हम त्रिय सम, परमेशुर भरता ।
अंतहकरन बिमल हुइ जाति । पुन तिसि ब्रह्म-ग्यान उपजाति ।। २७ ।।
चौथे ग्यानी भगत बिसाले । एक प्रमेशुर सभि महिं भाले ।
घट मठ महिं जिम व्यापि अकाश । तिम सभि महि इक ब्रह्म प्रकाश ।। २८ ।।
इम लखि वाहिगुरू नित सिमरहिं । दिढ हुइ आतम ग्यान सु उर मंहि ।
चतुर भूमिका ते चढि जाइ । सपतम बिखै सथिरता पाइ ।। २९ ।।
यांते सिमरहु तुम सतिनाम । संतन को सेवहु निशकाम ।
मन नीवा[1] राखहु तजि मान । होइ सुखेन तुमहु कल्यान' ।। ३० ।।
सुनि उपदेश भलो तिस काला । गुरमुख ते नवला रु निहाला ।
जोधा जैत सेंठ मल भारी । पौरदार गुरपौर अगारी ।। ३१ ।।
सदा द्वार पर रच्छा करिहीं । बिन बूझे नहिं अंतरि वरिहीं ।
इक दिन बैठे सहिज सुभाइ । सतिगुरु सो बूझ्यो इस भाइ ।। ३२ ।।
'केतिक कहति ग्यान जबि लहा । तबहि भगति को करिबो कहां ।
देति ग्यान ही कैवलि एक । जिसके उपज्यो रिदे बिबेक' ।। ३३ ।।
श्रीमुख ते शुभ पंथ बतावैं । 'बिना भगति नहिं ग्यान सुहावै ।
जथा घ्रिति है अति बलिवान । भोजन मिलहि जि स्वाद महान ।। ३४ ।।
कफी जि घ्रिति पान को करै । छाती बोझ रोग सो धरै ।
फीका बदन रहै दिन राति । खांसी होनि, अहार न खाति ।। ३५ ।।
जे सुभाउ तन पेती[2] होइ । पीवहि निरो घ्रित जे सोइ ।
तिस को लगहिं अधिक अतिसार । उपजहि तन महिं रोग बिकार ।। ३६ ।।
जे मिलाइ मिसरी को खाइ । दुहूंअनि के तन सुख उपजाइ ।
तथा ग्यान जहिं एकै होइ । 'अहंब्रह्म' कहि सुभहि न सोइ ।। ३७ ।।
सुनिबेहार बिगर बहु जाइं । परैं नरक, नहिं सुरग लखाइं ।
जे हंकारी नर डर धारै । अपनि आपि को वडो बिचारैं ।। ३८ ।।
नहि सति संगति सेवा करै । नंम्रता न किस अगै धरै ।
छाती बोझ रोग इह होइ । नरक परहि लहि संकटि सोइ ।। ३९ ।।
जे बिशई सुनि केवल ग्यान । भोगहि नारि बिरानी जानि ।
इत्यादिक बिशियनि लगि जाइ । अतीसार सम, नरक सु पाइ ।। ४० ।।
यांते भगति संग ब्रह्मग्यान । सभिहिन की करता कल्यान ।
सोभहि मुख ते करहि, प्रभु दास । ग्यान अहंब्रह्म रिदे प्रकाश ।। ४१ ।।
यांते सभि को सिमरनि नामु । करहि प्रेम ते लहि सुख धाम ।
खुशक ग्यान यांते नहिं नीको । सिमरे नाम श्रेय हुइ जी को' ।। ४२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रासे 'सिक्खन प्रसंग' बरननं नाम पंच चतवारिसती अंशु ।। ४५ ।।

---

1. नम्र । 2. पित वाला ।

अंशु ४६

सिक्खन प्रसंग

दोहरा

राजि महल पुरि के बिखै भानू बहल बसंति ।
भाउ भगति सिखी धरी बरतहि गुरू मंतत ।। १ ।।

चौपई

सिमरहि वाहिगुरु सतिनामु । वंडि खाइ जो होवति धाम ।
श्री हरिगोविंद के ढिग आयो । धरि अकोर को सीस निवायो ।। २ ।।
बूझनि कीने जलधि बिबेक । 'शासत्रनि मत अहैं अनेक ।
को तप तीरथ महिमा गावै । को ब्रत नेमनि करहु बतावै ।। ३ ।।
'जग्ग होम' को करैं बिसाल । को कहि दान करहु बिधि नाल ।
बडिआई सतिगुर के धाम । केवल सिमरनि को सतिनाम ।। ४ ।।
अंतर इन महिं कितिक बतावहु । किम महिमा सतिनाम बधावहु' ।
श्री मुख ते सुनि बाक बखाना । 'जुगति बतावनि कीनि महाना ।। ५ ।।
सत्तिनाम एकांग[1] पछान । अपर करम सभि शूंन समान ।
जे इकांग पूरब लिख देय । शूंन लगे दस गुनो वधेय ।। ६ ।।
जे इकांग पूरब लिखि नांही । केवल शूंन लिखति ही जाहीं ।
सो सभि खाली कुछ नहिं सरै । गिनती महिं कोऊ नहि धरै ।। ७ ।।
तिस सतिनाम बिना सभि बादि । जिनि को फल युति अंत रु आदि ।
जे इकांग परि शूंन लिखाइ न । होइ न दस गुन तौ इक जाइ न ।। ८ ।।
अपर जुगनि के धरम सरब हैं । बली बिसाल समूह दरब है ।
कलि महिं केवल है सतिनाम । इस ते लहै श्रेय सुखधाम ।। ९ ।।
बिना नाम ते नहिं छुटकारा । अपर करम ते वधै हंकारा ।
नंम्रि होनि सिमरनि हरि नाम । लहै अंत को सुख बिसराम ।। १० ।।
अंतर इतो जानि मन माहि । सो हंता[2] जुति, इस महिं नाहि ।
भानू बहल सुनति सुख पायो । गुर को कहिवो रिदे बसायो' ।। ११ ।।

1. एकांक । 2. अहंकार युक्त ।

बदली सोढी सेठ गुपाल। श्री हरिगोविंद के नित नाल।
रहहिं सदा घालहि बहु घाल। गुरु ढिग कर्यो प्रशन इक काल ॥ १२ ॥
'कीजहि कुछ उपदेश बखान। जिस ते होहि परम कल्यान'।
श्री मुख कह्यो 'बिसाल सुखारे। निवि करि गमनहु सकल अगारे ॥ १३ ॥
जथा फुहारे को जल हेरे। जितो नीव चढि तितो उचेरे।
धूरि सरब के पांइन तरे। इस गुन ते सभि के सिर चरे ॥ १४ ॥
कर अंगुरी जिन छोटि कहायो। रुचिर बिभूखन इसके पायो।
सभि तरु ते छोटा तरु चंदन। करहि सुगंधिति निकटि जि ब्रिंदनि ॥ १५ ॥
जेतिक ऊचै पद अभिलाखहिं। तेतिक नंम्रि आपनि मन राखहिं।
सभि ते अधिक बिशनु वडिआई। तिस सभ ते मन नंम्रि सदाई ॥ १६ ॥
भ्रिगू लात सहि नंम्री होए। पांडव मख महिं रिखि पग धोए।
अपर जि करम करति भगवान। हुइ नंम्री हंकार न ठानि ॥ १७ ॥
ऊचे पद दैवे की कारन। अहै नंम्रता उर हंकार न।
गुर सिखनि ते हारनि सदा। इन ते जीत न चाहहि कदा ॥ १८ ॥
जो जीतहि सो हारहि अंति। जो हार्यो सो जीतनिवंति।
जिम फिरंग की पौरी होइ। ऐसी कला सहत बनि सोइ ॥ १९ ॥
लखहि जु चढति जाति मैं ऊचा। सो तौ उतरति गमनति नीचा।
जो जानहि 'मैं गमनौं नीचे। सो चढि जाति अचानक ऊचे ॥ २० ॥
जीतति हार्यो, हारति जीते। इम होवति सिक्खनि बिपरीते।
सति संगति महिं नीवे[1] चलहु। मधुर गिरा कहि 'सिक्खनि मिलहु' ॥ २१ ॥
इम सुनि कै सतिगुर को कह्यो। नंम्री होइ परम पद लह्यो।
इक चड्ढा सुंदर जिस नाम। गुर सिख हुतो आगरे धाम ॥ २२ ॥
मिलहिं सिक्ख ध्रमसाला[2] माहिं। किरतन करहिं नाम सिमराहिं।
जहां भजन को करते देखहि। तहिं सेवा नित करति विशेखहि ॥ २३ ॥
श्री गुर हरिगोबिंद ढिग आवहि। तथा भाउ धरि सेव कमावहि।
इक दिन बैठ्यो हित करि पास। हाथ बंदि बोल्यो अरदासि ॥ २४ ॥
'सतिगुर! किसि बिधि सिख उधारै। अवगुन परहरि गुन निसतारैं।
सुनि श्री हरिगोबिंद उचारा। होति सतिगुरू चारि प्रकारा ॥ २५ ॥
श्री नानक चारहुं महिं बडे। जिनके नाम सुनति जम डरे।
इक गुर भ्रंगी के सम होइ। किसी जाति को ले क्रिम सोइ ॥ २६ ॥
निज घर धरि दर पर थिर घनै। किरम ध्यान करि भ्रिगी बनै।
किसी जाति क्रिम निज सम करै। नहि सभि बनहिं सु जानी परै ॥ २७ ॥

---

1. नम्र। 2. धर्मशाला।

इक गुर पारस के सम अहैं। जिस धातू के संग जि छुहैं।
तिस को कंचन देति बनाइ। निज गुन देते नहीं कदाइ[1] ॥ २८ ॥
इक बावन चंदन सम होति। जबि तिस पर हितु हितू उदोति।
निकट ब्रिच्छ चंदन करि लेति। बिन रुति नहिं सुगंधिता देति ॥ २९ ॥
इक सतिगुर हैं दीप समान। तिनसों मिलहि जि दीपक आन।
अपने सम ही लेति बनाइ। बाती तेल जि सहति मिलाइ ॥ ३० ॥
श्री गुर नानक परम क्रिपाल। होइ जि सिख शरधा के नाल[2]।
सुनहि पठहि सतिगुर की बानी। सने सने होवै ब्रह्म ग्यानी ॥ ३१ ॥
अनंद[3] आतमा सो बनि जाइ। चहै सु अपरनि तथा बनाइ।
नहीं साधना चहीयति कोइ। मेत्री सति संगति को होइ ॥ ३२ ॥
इस ते ही प्रापति कल्यान। जनम मरन के बंधन हानि'।
सुनि सुंदर सुंदर उपदेशु। सति संगति भा प्रेम बिशेश ॥ ३३ ॥
मोहन सिख ढाके महिं रहै। गुरु सिखी के गुन मन चहै।
दरशन हेतु दूरि ते आयो। जथा शकति भेटनि अरपायो ॥ ३४ ॥
मसतक टेकति धरति अनंद। गुरु ढिग रह्यो सु प्रेम बिलंद।
इक दिन बैठि करी अरदासि। साचे पातिशाह के पास ॥ ३५ ॥
'जनम मरन को कशट बिसाल। करहु मिटावनि दीन क्रिपालु'।
श्री मुख कह्यो 'न आप पछाना। बिन निज जाने कशट महाना ॥ ३६ ॥
कहहु सरूप कवन तैं जाता। जिस के हित महिं नित चित राता'।
'हम मानुख तन रूप सु हेरे। साचे पातिशाह सिख तेरे' ॥ ३७ ॥
सुनि गुरु कह्यो 'सरीर जि सारे। पंच तत्त के लेहु बिचारे।
तन जनमे ते पूरब अहै। बिनसे ते पुन पाछे रहै ॥ ३८ ॥
सो तन गुरु अरु सिख को सम है। तिम प्रमातमा नहिं किमि कम है।
नहिं जनमति नहिं मरता सोइ। साखी रूप एक सम होइ ॥ ३९ ॥
गुर सिख मन को भेद बिसाला। गुर को उज्जल सिख को काला।
इक है शुद्ध अशुद्ध सु दूजा। आइ शरनि जबि करिहै पूजा ॥ ४० ॥
गुर को शबद श्रवन—मग जाइ। रिदे प्रवेशहि थिरता पाइ।
सनै सनै सिख मन जु मलीन। उज्जल करहि बनहि मल-हीन ॥ ४१ ॥
पुन अपनो सिख रूप पछानै। देह अहंता सगरी हानै।
लक्ख[3] जीव अरु ईशरु केरा। सति चित आनंद[4] एकहि हेरा ॥ ४२ ॥
वाच दुहनि को भिंन पछानो। जीव वाच अलपग्य[5] महानो।
ईशरु वाच्य अहै सरबग्य[6]। जानति नीके जोइ ततग्य ॥ ४३ ॥

1. कदाचित, कभी। 2. साथ। 3. लक्ष्य। 4. आनंद। 5. अल्पज्ञ। 6. सर्वज्ञ।

इक उज्जल इक ताल मलीन। रवि प्रतिबिंब दुहिन महिं चीन।
जल मलीन महिं मैलो भासै। उज्जल हुइ उज्जल जल-आशैं[1] ॥ ४४ ॥
शुद्ध सतोगुन माया माहिं। ब्रह्म प्रतिबिंब सु ईश्वर आहि।
मलिन अविद्या तम गुण विखै। ब्रह्म प्रतिब्रिंब जीव तिह पिखैं ॥ ४५ ॥
ईशुर महि खट गुन को जानि। जांते कहीअति है भगवान।
खट बिकार जुति जीव रहंति। भिन भिन सुनि सभि ब्रिरतंत ॥ ४६ ॥
जसु, ऐश्वरज, विराग, उदार। लछमी, ग्यान सु पूरन धारि।
खट बिकार जनमनि अरु मरने। इह सरीर के दोनहु बरने ॥ ४७ ॥
छुधा, त्रिखा, दुइ प्राननि केर। हरख, शोक मन के जुग हेर।
साखी रूप ब्रह्म निरलेप। मुकति होति लखि ब्रिना विखेप ॥ ४८ ॥
सुनि सिक्खनि पुन प्रशन उठायो। 'तुम ने सत्तिनाम ही गायो'।
सतिगुरु कह्यो 'लखहु मन मांहु। जथा महान वेग परवाहु ॥ ४९ ॥
इक भुज बल ते परते पार। ऐसे ब्रिरले रिदे बिचार।
चढि वेरे पर सभि को तरै। सुख के साथ पार सो परै ॥ ५० ॥
तिम जानहु सतिनाम जहाजू। जपति पुरहि सभि मन के काजू।
अंत सहाइक वनहि ब्रिसाला। नासहिं कशट सरवदा काला ॥ ५१ ॥
कलि महिं इसके सम नहिं दूजा। सिमरहि नाम रिदे नित पूजा।
जे नित जपहिं सि मानव धंन। लिव लागे प्रभु होहि प्रसंन ॥ ५२ ॥
ग्रिहसती रहै कि हुइ संन्यासी। जपै नाम नहि जम की फासी।
ऊच नीच हुइ रंक कि राऊ। सिमरहि नाम जि सहिज सुभाऊ ॥ ५३ ॥
तिन के सम को होति न आन। हिज तप व्रत जो करहि महान।
यांते सदा नाम उर धारहि। आप तरहि अरु पितरनि तारहि ॥ ५४ ॥
सुनि सगरे सिख आनंद पायो। सत्तिनाम को रिदे बसायो।
सिमरति उधरे सिक्ख करोर। बरनति कौन लहै तिन ओरि ॥ ५५ ॥
सिक्खनि को गुरमति हित दैबे। सिक्खी के हित ग्रहन करैबे।
कुछ सिक्खनि की कथा सुनाई। जिन महिं बरने गुन समुदाई ॥ ५६ ॥

दोहरा

बडे भाग जिसके अहैं ले गुरमति को पाइ।
आप तरै संगी तरैं कशट समसत नसाइ ॥ ५७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रासे सिक्खन प्रसंग बरनने नामु खशट चतवारिंसी अंशु ॥ ४६ ॥

1. जलाशय।

अंशु ४७

कशमीर प्रेमनि सिक्खनी ब्रितांत

दोहरा

श्री अरजय कशमीर महिं सोढी माधो दास।
पठ्यो तहां तिस ने करी सिक्खी महिद प्रकाश ॥ १ ॥

चौपई

जो जिसने जस बांछा करी। पाइ सु गुरु महिं शरधा धरी।
पाहुल पद पखार करि लीनी। गुर सिखी की महिमा चीनी ॥ २ ॥
पठहिं शबद पंचाम्रित करहिं। गुर हित बरतावहिं अघ हरहिं।
मेलि करहिं सिख आपसि मांही। सुनिहैं किरतन बहु सुख पाहीं ॥ ३ ॥
गुर की कार इकत्रै करिकै। अरपहिं बंदहिं शरधा धरिकै।
सिक्खी को होयहु बिसतार। सिमरन लगे नाम करतार ॥ ४ ॥
इक तौ मनबांछति को पावैं। दुतीए मग सुखेन दरसावैं।
त्रितीए दोनहुं लोक भलेरा। सभि ते गुरमति जानि उचेरा ॥ ५ ॥
बिप्र आदि सभि अंगीकारा। दें दसवंध गुरू की कारा[1]।
भए हज़ारहुं घर सिक्ख गुरु के। जीवति ही होए सम सुर[2] के ॥ ६ ॥
सेवा दास बिप्र इक तहां। सिदक करहि सिक्खी महुं महां।
पंचाम्रित कराइ बहु बारी। करहि मेलि संगति को भारी ॥ ७ ॥
पठहि सुनहि गुर शबद महाना। प्रेम करहि सतिसंगि सुजाना।
निज सुत की दिशि जननी हेरा। उपज्यो हिरदे प्रेम बडेरा ॥ ८ ॥
सतिसंगति की पंकति जहां। सुनति शीघ्र ही पहुंचहि तहां।
सतिगुर के गुन सुनहि अछेरे। हेरहिं प्रेम एक जन केरे ॥ ९ ॥
धनं आदिक जे अपर बडाई। तिनहुं न मानहिं मन सुखदाई।
शरधा करे भावना ठानहिं। उर सेवक के प्रेम पछानहिं ॥ १० ॥
बूझति रहहि पुत्र के पास। 'किम सुभाव कहु सेवादास।
वसहिं दूरि किम दरशन देहिं। जानहिं नहीं कि जननि सनेह ॥ ११ ॥

1. सुकार्य भेंट। 2. देवता। 3. अधिक, बढ़कर

बिन दरशन ले बिपति न मोही। मिलहिं जबहि, नहि संसैं होही।
तीन लोक पति केर सुभाऊ। दासनि संगि फिरहिं हर थाऊ॥ १२॥
नाम देव अरु भगत कबीर। रहे संग इन गुनी गहीर।
बाधी छपरी कारज कीना। बिठुल[1] देहुरा फेरि सु दीना॥ १३॥
केतिक गिनीअहि गुन तिन केरे। भगतनि काज करे फिर फेरे।
सतिगुर हैं तिन[2] कै अवितार। सिक्खयनि काज सुधारणहारि॥ १४॥
श्री नानक आदिक गुरु भए। देखि प्रेम सिक्खयनि को गए।
सूनियति अहै शाहदी[3] सारे। आदि संगलादीप सिधारे'॥ १५॥
देख्यो न्रिप को प्रेम बडेरे। कर्‌यो निहाल गए तिस डेरे।
मैं ऐसे गुन सिमरनि करौं। हेरनि हेतु प्रेम उर धरौं'॥ १६॥
सेवादास पुत्र सुनि कान। कह्यो 'जि हमरे भाग महान।
जानहि प्रेम रिदे को जबै। देहिं दरस आवहिं गुरु तबै॥ १७॥
इम कहि सुनि कै ब्रिधा महानी। गुर देखनि हित प्रीती ठानी।
इत्यादिक गुन करहि बिचारनि। अपर कहां लगि करौं उचारनि॥ १८॥
नित प्रति गुरु गुन नए बिचारहि। दरशन को सनेह उर धारहि।
पुन उपाइ इक रच्यो नवीन। दुरलभ तूल[4] मोल बडि लीनि॥ १९॥
निज हाथनि ते तुंबन करिकै। बीनि बीनि तिह भलो सुधरि कैं।
गुरु गुन गावति करति सु कार। कातहि सूखम सूत सुधारि॥ २०॥
इक सम करिकै बटो चढावहि। चरखा फेरहि सूत बनावहि।
सहत प्रीत के करहि अटेरनि। दिन प्रति अभिलाखति गुरु हेरनि॥ २१॥
हे प्रभु मैं बिरधा बहु होई। नहीं समरथ गमनि की कोई।
पंथ पहारनि को बहु दूरि। ऊच नीच थल लखीयति भूर॥ २२॥
नांहि त मैं अंम्रितसर आवति। निज कर सों अंबर पहिरावति।
शक्ति-हीन किम गमनौ स्वामी। सभि घट ब्यापक अंतरजामी॥ २३॥
दासनि करहु कामना पूरन। हेरि प्रेम को पहुंचहु तूरन।
शासत्र बेद श्री ग्रिंथ मझारा। सुन्यो आपको बिरद उदारा॥ २४॥
इस प्रकार चितवनि[5] चित धरिती। बसत्र बुनावनि की क्रित करितो।
ग्रहि कुबिंद[6] के तबि चलि गई। सूत बुनावनि देति सु भई॥ २५॥
अधिक मजूरी देकरि तांहि। मुख ते म्रिदुल गिरा को प्राहि।
'अति प्रिअ पट को कारज मेरा। करहिं नीक उपकारहि तेरा॥ २६॥

---

1. वीठल, परमात्मा। 2. तीन लोक। 3. गवाह, साक्षी। 4. कपास। 5. चिंतन।
6. जोलाहा, बुनकर।

कहि बहु बारि भलो बनिवायो। पुन मिहनत बहु दीनि धुवायो।
घट महिं एक सथान सुधारा। गुर हित कलप्यो रिदे मझारा॥ २७॥
लिंपनि करि तहिं धूप धुखावहि। अधिक सुगंधति पुशप चढ़ावहि।
घ्रित को दीपक राखहि बार। चंदन को चरचै महिकार॥ २८॥
इक चौकी तहिं कीनि डसावनि। बहु पावन करि नई बनावनि।
तिस पर राख्यो बसत्र सुधारि। करि नीके फलनि बिसतार॥ २९॥
सति गुरु सम पूजहि कर बंदि। दिन प्रति शरधा वधहि बिलंद।
बिनै बखानहि खरी अगारी। नईबेद अरपै हित धारी॥ ३०॥
दोनहु समैं अरचना करिही। गुरु समसर की शरधा धरिही।
करहि अराधनि उर कर बंदि। 'गुर अरजन सुत हरिगोविंद॥ ३१॥
पूरनि करहु जानि मम आशा। पग पंकज को है भरवासा[1]।
मैं कुचील इसत्री को जामा। तऊ आसरा लीनसि नामा॥ ३२॥
सुत जुति भाग भरी द्वै समै। श्री गुरु हरिगोविंद कों नमै।
सुनि नर अपर करहिं उपहास। 'तुव जननी हे सेवा दास॥ ३३॥
बसत्र बुणाह इहां ही राखा। परि आवहिं गुर धरि अभिलाखा।
सो किम आवनि तिन को होइ। सैना घनी संग महिं जोइ॥ ३४॥
दुरगम मारग आवनि केरा। अहै दूरि. कछ नाहिन हेरा।
इक श्री नानक बिचरे सारे। अपर गुरू रहि देश मझारे॥ ३५॥
नहिं बिचरति परदेशनि मांही। संगति सकल तहां चलि जाही।
असमंजस इस थल गुर आवनि। सैन समेत करहिं इत पावन॥ ३६॥
महा प्रेम ते बसत्र बुनायो। सो तिसही थल देहु पठायो।
सेवादास मात समुझाई। 'हठ छोरहु दिहु तहां पठाई॥ ३७॥
बहुत लोक समुझावति मोही। गुर आगवन कहहु किम होही।
श्री नानक बिन अपर न आयो। वड समाज गुर संग सुहायो॥ ३८॥
सिमरहु नाम ध्यान को कीजै। जिम हजूर तिमही फल लीजै।
भाग भरी सुनि कै सुत बैन। परम प्रेम जल छोरति नैन॥ ३९॥
'सुनहु पुत्र मम बैस बिहाई गुर दरशन इछ है अधिकाई।
मरनि प्रयंत आस मै करिहौं। निस बासुर सिमरनि मन धरिहौं॥ ४०॥
अंतरजामी सभि थल व्यापा। सरब शकति धरि संकट थापा।
तिन आगवन कठन कुछ नांही। नहिं थल अस जहिं नहिं चलि जाहीं। ४१।
करनि तरकना[2] अस मन मांही। निशचा रिदै टिकनि दे नांही।
मम अनाथ की दिशा निहारहिं। ब्रिरद गरीब निवाज संभारहि॥ ४२॥

1. भरोसा। 2. तर्क-वितर्क।

छिन महिं आइ दरस को दैहैं। मम कर ते अंबर पहिरैं हैं।
हुती भीलनी भगतनि हरि की। करति प्रतीखनि शरधा उर की ॥ ४३ ॥
बदरी फल संचति सो रही। मिले प्रभू इम आगम[1] कही।
मैं तिह समही करति उडीका[2]। देहिं दरस लखि प्रेम सु ही का[3] ॥ ४४ ॥
मिलहिं अवश्य मोहि बिसवासा। जीवति मै नहिं त्यागौं आसा।
नहिं त मरि कै मिलि हौं जाइ। मैं न प्रतग्या तजौं कदाइ ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रासे कशमीर प्रेमनि सिक्खनी ब्रितात प्रसंग बरननं सपत चतवारिंसती अंशु ॥ ४७ ॥

---

1. शास्त्र । 2. प्रतीक्षा । 3. हृदय ।

अंशु ४८

सतिगुर कशमीर प्रवेश करन

दोहरा

श्रीगुर हरि गोविंद जी जानी सभि मन मांहि।
मम प्रतीखना करति है निस बासुर सुख नांहि ।। १ ।।

चौपई

देश पहारनि को मग अहै। मम सिखनी नित जाचति रहै।
बसहिं गिरनि महिं सिक्ख्य घनेरे। नित चाहति जो मो कहु हेरे ।। २ ।।
तिन सभिहिनि की पुरवौं आसा। जो हमेश रहिं मम भरवासा।
बिरध भाग-भरी पट राखा। मोकहु पहिरावनि अभिलाखा ।। ३ ।।
खान पान सूखम जिन कीनो। निस बासुर सिमरनि मन लीनो।
अंत समां भी आनि पहूच्यो। मम देखनि को नित चित रूच्यो ।। ४ ।।
श्री गुर हरिगोबिंद कुल-चंद। रिदे बिचार्यो चलनि अमंद।
बूझि मात को करि कै नमो। मिलि कै सकल संग तिह समो ।। ५ ।।
निज सुभटनि कुछ लै करि साथ। सभि को धीरज दे करि नाथ।
यथा योग सभि को सनमाना। दास लिए संगि कीनि पयाना ।। ६ ।।
करनि निहाल देश कशमीर। गमने दिन प्रति गुरु गंभीर।
चलति चलति चपराहड़ पुरि जहिं। जाइ पहूंचे ढिग सतिगुर तहिं ।। ७ ।।
इक दिजबर[1] असुवारनि मिल्यो। तिन बूझ्यो को आवति चल्यो।
तिस को सिख ने कहि समझायो। 'इह सतिगुरु इत दिशि को आयो ।। ८ ।।
पहुंचहिगे आगे - कशमीर। हरि गोविंद बीर बडि धीर'।
खरो रह्यो हेरनि हित सोऊ। देखि लेउं गुर भाखति जोऊ ।। ९ ।।
इतने महिं सतिगुर चलि गए। तिस दिन मों बच बोलति भए।
'इस थल बसहि, नीर कहु कहां। उतरहि करहि सुचेतो[2] तहां ।। १० ।।
हुइ तड़ाग बिन मल ते जल को। बैठहिं तहां, बतावहु थल को'।
सुनि दिज[1] कहति भयो करि बंदन। 'आप जात गुरु, दोश-निकंदन ।। ११ ।।

---

1. द्विज वर। 2. हाथ मुंह धोना, शौच।

छपी वसतु कित किसू न पावै। मन करि भी सो लखी न जावै।
तिनहि बतावहु आप सुजाता। तीन लोक थल के सभि ग्याता॥ १२॥
नहि जानति जिम बूझहु मोही। यांते अचरज उर महिं होही।
बरतहु शकति तेज बिपरीति। इह न सुहाइ लोक महिं रीति॥ १३॥
जहिं जल-जाइ[1] तहां चलि जावहु। जे नहि, निज हित नयो बनावहु।
तुम सरबग्य करहु जस अहै। उतरहु जल निरमल जित लहै'॥ १४॥
इम सुनि करि श्री हरि गोविंद। रोक्यो निज तुरंग कुल-चंद।
उतर परे सोई थल देखि। ठहिरी सैना साथ अशेख॥ १५॥
आइ दास कीनसि अरदास। 'इस थल दिखति नहीं जल पास।
आगै जिम रावर की मरज़ी। जे करि दूरि तं आनहिं गुर जी'॥ १६॥
कर सतिगुर के बरछो हुतो। खर दीरख, सो अवनी हतो।
धस्यो कितिक पुन ऐंचि निकास्यो। फुटी बंब[2] जल तबहि प्रकाश्यो॥ १७॥
सति गुरु भन्यो खनहु कुछ टोवा[3]। जिस ते जल कुछ रहै खरोवा'।
सुनति हुकम तहि लयो बनाइ। जितक चहति सो लीनि टिकाइ॥ १८॥
छुट्यो प्रवाह नीर को घनो। चलति सु चिरंकाल को मनो।
पुन सतिगुरु हित फरश बनायहु। गिलम ग़लीचा रुचिर डसायहु॥ १९॥
मादिक दास आनि करि दीनिसि। सौचाचारि सतिगुरू कीनसि।
देखि बिप्र बिसम्यो डरपायो। पग पंकज पर सीस निवायो॥ २०॥
'महाराज! मैं कह्यो कठोरा। जाति गरब अफर्‌यो चित मोरा।
महिमा जानि बूझि सभि रावरि। बिनै जुकति मैं भन्यो न बावर'॥ २१॥
सतिगुरु सुनि करि धीरज दीना। 'जथा जोग तैं भाखनि कीना।
कछू क्रूरता दोश जि पायो। मिट्यो सु पाछे बहु पछुतायो॥ २२॥
अलप पाप, जे बचन कहनि मैं। नशटहिं करे बिसूरनि मन मैं।
केतिक चिर सतिगुर तहिं थिरे। सौचाचार चमूं पुन करे॥ २३॥
निकस्यो जल सोई सभि लीनि। क्रिआ शनान आदि तहिं कीनि।
बिसमे हेरि मुकंद प्रतापू। परमेशुर बपु. पुंन न पापू॥ २४॥
शरधा परहि करहि सभि सेवा। प्रेम सहत दरसहिं गुर देवा।
कर्‌यो कूच सतिगुरु आरूढे। गमने पंथ, चलित जिन गूढे॥ २५॥
तहिं जल अबि लौं निकसति रहै। हमने सुन्यो, गुरु सिख कहैं।
जाइ पहारन बिखै प्रवेशे। अनिक भांति जहिं ब्रिछनि बिसेसे॥ २६॥
दारम, ज़रदालू तहि खरे। फल बहु मधुर तुरश रस भरे।
खरे खरोट सदल गन हरे। कदली बदरी फल झर परे॥ २७॥

1. स्थान। 2. धार, फूटी। 3. गढ़ा।

जहि कहिं दिखति महीरुह भीड़। सरली उचे ब्रहु थल चीड़।
सिला पहारनि की जहिं नाना। कित वाहड़, गन खरे पखाना ॥ २८ ॥
झरने झरहिं महां बेग धरि ब्रिंदा। सुदर जल मलहीन बिलंदा।
सलिता वहै बेग धरि ब्रिंदा। सुंदर जल मलहीन बिलंदा ॥ २९ ॥
बरफ सुपैद चहूं दिशि दिखयति। जहां उशन को त्रास न लखियति।
सेउ, वटंक बेल अंगूर। फल सूंदर गन स्वादति भूर ॥ ३० ॥
कबि ऊचे परबत पर चरहैं। कबि गमनति थल उतरनि तरैं।
इस सैलनि की सैल बिसाले। करति सु मंद मंह मग चाले ॥ ३१ ॥
सिख जु हुते पहार निबासी। जित कित सुनि करि सुधि सुखरासी।
रुचिर उपाइ न लै लै आए। करि करि दरशन उर हरखाए ॥ ३२ ॥
उचित खान के स्वादि बिसाले। गुर हित आनि देति रस वाले।
जबि परबत उलंघे मग सारा। सम सथान पुन चारु निहारा ॥ ३३ ॥
इक कट्टू सिख तहां बसे है। सत्यनाम रस रिदा रसे है।
आगै मिल्यो सुधासर आइ। तब्रि सतिगुरु की सेव कमाइ ॥ ३४ ॥
अति सुहिरद प्रेमी गुरु केरा। अंतर प्रभू निरंतर हेरा।
क्रिपा कटाछ गुरू जबि कीना। हति अग्यान, रूप लखि लीन ॥ ३५ ॥
सत्यनाम सिमरनि लिवलागी। लख्यो ब्रहम हुइ गूरु अनुरागी।
सेवा करति रह्यो चिरकाल। लखि सु ब्रिति सतिगुरू क्रिपाल ॥ ३६ ॥
कट्टू शाह नाम तिस कह्यो। अधिक प्रेम तिस के उर लह्यो।
ग्रिह को कर्यो बिसरजनि फेरि। घाली घालि सतिगुरू हेरि ॥ ३७ ॥
यांते नाम गरीब-निवाजा। गुरु को जग कहिं रंक रु राजा।
मिल्यो आइ ले फल बहु स्वादू। दरशन देखति उर अहिलादू ॥ ३८ ॥
पग पकज पावन लपटायो। जल अनंद लोचन झलकायो।
हेरति श्री हरि गोविंद कहै। कट्टू शाह आउ सुख अहै ॥ ३९ ॥
'श्री गुरु जी तुव दरशन हेरे। सुख अनंद उर सौगुन मेरे।
बिखम पंथ कशमीर घनो है। गुर सिखी बिसतार सनो है ॥ ४० ॥
जानि आपने दास घनेरे। करनि क्रितारथ तिन इह वेरे।
क्रिपा धारि कीनिसि आगमनू। बडे भाग, प्रापति भे भवनू ॥ ४१ ॥
इत्यादिक कहि करि शुभ बानी। रह्यो रैन ढिग प्रीति महानी।
अपर अनेक सिक्ख चलि आए। बंदहि पद अरविंद सुहाए ॥ ४२ ॥
जथा जोग सगले सनमाने। बसे रैन पुन प्रात पयाने।
कट्टू शाह बिसरजनि कर्यो। महां प्रेम पद पर सिर धर्यो ॥ ४३ ॥
सति गुर हरि गुबिंद करि कूच। पुरि बिसाल ढिग जाइ पहूचि।
जहाँ हुतो काठी दरवाजा। किया प्रवेश गरीब-निवाजा ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे पंचम रासे सतिगुर कशमीर प्रवेश करन वरननं नाम अशट चतवारिसंती अंशु ॥ ४८ ॥

अंशु ४६

कशमीर प्रसंग

दोहरा

पौर प्रवेशे प्रभू पुरि जिस वल्‍ दास अवास ।
तहां पहुचे जाइ करि पूरन[1] बिरधा आस ।। १ ।।

चौपई

तिस घर के दर खरे अगारी । सेवादास सिख्य हितकारी ।
सुनि तुरंग के खुर को खरका । निकस्यो वहिरि छोरि दर घर का ।। २ ।।
खरे हेरि श्री हरि गोविंद । कर महिं तोमर गह्यो बिलंद ।
पग पंकज परि धरि करि सिरको । भयो अनंद विलंदै उर को ।। ३ ।।
चिरंकाल की लगी उडीका । दरस्यो आज भावतो जीका ।
गहि रकाव करि तिनै उतारे । ले गमन्यो निज ग्रेह मझारे ।। ४ ।।
रुचिर प्रयंक निकासि डसावा । निज माता को हरखि सुनावा ।
'हे बड-भागनि दिन प्रति जांही । करति प्रतीखन चहि चित मांही ।। ५ ।।
क्रिपा धारि घर सो चलि आए । नाम सखा सिक्खनि बिदताइ ।
आख्य भाग भरी शुभ तेरा । सारथि[2] भाग भरी अबि हेरा' ।। ६ ।।
सुनति उठी ब्रिहब्रल युत प्रेम । बलहीना गुर हित किय नेम[3] ।
इक तौ ब्रिधा बिती बय घनी । खान पान संजम के सनी ।। ७ ।।
चित निरंतर अंतर उर के । निस दिन दरशन चहि सतिगुर के ।
यांते प्रेम ब्रिहातुर होई । शीघ्र नहीं उठि सकीया सोई ।। ८ ।।
सुत-कर पकरे अंङण[4] आई । चखनि पलक ते इक टक लाई ।
गद गद भई न बोल्यो जाई । बानी रही कंठ उरझाई ।। ९ ।।
सने सने सामीपी होइ । कर महिं गहि पग पंकज दोइ ।
सिर धरि धरि परि करि परनामा । देखति पुन सरूप अभिमाना ।। १० ।।

---

1. पूरी करने के लिए । 2 सार्थक । 3. नियम । 4. आंगन ।

बरछा अपने निकट गडायो। शुभ सिहजा[1] पर गुरू सुहायो।
कितिक समें महिं धरि करि धीरा। बोली बिरधा प्रेम गहीरा ॥ ११ ॥
सतिगुर संग लगन जिस लागी। सभि रस त्यागि दरस अनुरागी।
तिस को निशचै प्रापति होइ'। इह गाथा जग कहि सभि कोइ ॥ १२ ॥
सो प्रतख्य होई अबि मेरे। श्री सतिगुर तुम दरशन हेरे।
हौं वारी, हौं सद बलिहारी। हौं सदके घोली सद वारी ॥ १३ ॥
गूंदी फूलनि माल बिसाला। पहिराई गुर गर[2] दुति माला।
'करौं पूजना गेह मझारा। तुम हित जहां सथान सुधारा ॥ १४ ॥
ध्यान धारि करि गर पहिरावौं। भई सफल अबि दर्शन पावौं।
सुनि बोले श्री हरि गोविंद। 'कर्‌यो प्रेम ते वसी बिलंद[3] ॥ १५ ॥
मम हित बसत्र सुधार्‌यो नीको। निस दिन करि अनुरागति जीको।
सो मैं पहिरनि हित चलि आयो। अपर न अंबर मोहि सुहायो ॥ १६ ॥
सो मोकहु अबि देहु सिवाइ। पहिरौं तन महिं मोद उपाइ'।
सुनि बिसमति चित ह्वै करि कह्यो। 'नहिं तुमरे इह अचरज लह्यो ॥ १७ ॥
करते रहे सदा इस भांती। नहीं बिचारहु जाति कुजाती।
इसत्री पुरख न धन गुन कोई। प्रेम रिदे हुइ परतखहु सोई ॥ १८ ॥
नांहित मैं मति-मंद मलीनी। धन गुन सकल भांति ते हीनी।
बिखम पंथ जहिं ब्रिद पहारनि। सभी उलंघि पहुचे जिस कारन ॥ १९ ॥
'सिख प्रिय' बिरद आपको सच इम। भगत-वछल तुम रूप बिशनु जिम।
मोहि पतित को पावन कीना। दीननि पर करुना रस भीना ॥ २० ॥
कहां आप की सतुति बखानौं। अलप मती कुछ कहि नहिं जानौं।
'अधम उधारनि' नाम तुमारा। इक इह मैं नीके निरधारा ॥ २१ ॥
देखहु प्रेम कि नर हुइ नारी। गति सुभाउ की महिद[4] बिचारी।
नौ निधि सिधनि सभि को स्वामी। पोखनि करहु सबतर जामी ॥ २२ ॥
क्या इक बसत्र नहीं सो नीका। तिस हित श्री सोढी कुल टीका।
पंथ बिखम को लंघति आए। मुझ जीवति को दरस दिखाए' ॥ २३ ॥
हम कहि होति वारने हित सों। कगी प्रकरमा हरखति चितसों।
त्रिपति न होति बिलोकति लोचनि। नित चितवति सोचनि करि मोचनि ॥ २४ ॥
अंतर जाइ बसत्र को ल्याई। जिह पर अधिक सुगंधि सिंचाई।
करति शीघ्रता धर्‌यो अगारी। हाथ जोरि पुन वंदन धारी ॥ २५ ॥

---

1. शय्या। 2. गले में। 3. उच्च, उत्तम। 4. बड़ी सुंदर।

ततछिन दरजी निकट हकारा। दीरघ गुरू सरीर दिखारा।
सीमनि[1] करहु सरब अभिरामा। जनम सफल हुइ पहिरहिं जामा ॥ २६ ॥
इम कहि ततछिन सियनि लगायो। निकटि बैठि सो त्यारि[2] करायो।
सुनि बिरधा निरमल जल लीने। पद अरबिंद पखारनि कीने ॥ २७ ॥
सो ले जबि अपने मुख डारा। दिव्य द्रिशटि होई लखि सारा[3]।
रूप वासतव आतम जाना। उर अनंद अंतर लगि ध्याना ॥ २८ ॥
बरख सैंकरे साधहिं जोग। भई जोग अस पहुचनि लोग।
सभि घर महिं उठि करि छिरकायो। पुनह पुत्त[4] को पान करायो ॥ २९ ॥
डेरा सभिहिनि को करिवाइ। खान पान हित सकल पुचाइ।
श्री सतिगुर की सेवा सारी। अपने हाथ करी हितकारी ॥ ३० ॥
निसा बिखै शुभ सेज बिलंद। पौढे सतिगुरु हरिगोविंद।
देश सरब कशमीर मझारी। गुर आगवनू सुधि बिसतारी ॥ ३१ ॥
करन पुटनि जनु सुधा पिवाई। सुनि सुनि सिख मन मोद उपाइ।
जहिं कहिं ते इकत्र हुइ आएं। भई प्रात पहुंचे समुदाए ॥ ३२ ॥
मधुर महां फल मूल बिलंद। गुरु हित ल्यावति करत अनंद।
हुइ प्रसंन हम ते फल खावें। जनम सफलता तत छिन पावैं ॥ ३३ ॥
घने सेउ ले करि रंग लाल। गुच्छ अंगूरनि केर बिसाल।
ज़रदालू अरु ल्याइ बटंत[5]। इत्यादिक बहु बिधि अरपंति ॥ ३४ ॥
सिख्यनि करनि भावना पूरन। सतिगुर अचहिं हेरि फल रूरनि।
अपर अंन सिध हेतु रसोई। चहुंदिशि ते आनति सभि कोई ॥ ३५ ॥
ज्यों ज्यों दूरि होति सुधि ग्रामनि। त्यों त्यों सिख आवति तजि धामनि।
बडे भाग अपने पहिचानहिं। बडो लाभ बिन जतन पछानहिं ॥ ३६ ॥
जथा जनम दारिद्री कोइ। उद्दमहीन आलसी होइ।
तिसके सदन अचानक आवै। नव निधनि को बैठ्यो पावै ॥ ३७ ॥
तथा परसपर भाखति मिलि कै। 'जनम लाभ लिहु दरसहु चलिकै।
इम जहिं कहिं ते सिख चलि आए। अनिक उपाइनि उत्तम ल्याए ॥ ३८ ॥
सुंदर वसत्र अनेक ब्रिधिनि के। अरपहि गुर आगै जुति धन के।
होति देग सतिगुरु की भारी। करहिं अहार संगतां सारी ॥ ३९ ॥
बिरधा ने सो जामा लीनि। निज कर ते पहिरावनि कीनि।
हेरि हेरि सतिगुरु की दुति को। सुत जुति करति अनंदति चित को ॥ ४० ॥

---

1. सीना। 2. तैयार। 3. सार तत्व। 4. पूत, पुत्र। 5. पेंवदी नाशपाती।

हम रंकनि के घर गुरु आए। सेवति सुर नर जिह समुदाए।
सभि संगति महिं पसरी बाति। त्रिरधा बसत्र जो कर्यो जो कात ॥ ४१ ॥
तिस पहिरनि को गुर चलि आए। सो जामा अबि गर पहिराए।
हेरि हेरि करि आपस मांही। भाग त्रिधा के अधिक सराहीं ॥ ४२ ॥
रहैं प्रेम बसि श्रीपति जैसे। गुरु सरूप तिन को विधि तैसे।
धंन गुरू गुरु सिख्य सु धंन। जिन कै प्रेम गुरू उतपंन ॥ ४३ ॥
इम कीरति पसरी तिस देश। करि दरशन भे सिख विशेश।
पग पाहुल ले आनंद होवें। जनम मरन को संकट खोवें ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रासे कशमीर प्रसंग बरननं नाम एक उन-पंचासति अंशु ॥ ४९ ॥

अंशु ५०

कशमीर प्रसंग

दोहरा

इस प्रकार श्री सतिगुरू बासे द्योस कितेक।
दरसहिं सिख्य निहाल हुइ केतिक लह्यो बिबेक ॥ १ ॥

चौपई

किस को प्रापति सति संतोश। को ब्रह्म-ग्यानी भए अदोश।
सत्ति नाम सिमरनि किस पावा। निस दिन उर अंतरि लिव लावा ॥ २ ॥
उचित मुकति के केतिक भए। गुर संगति ते दोशनि हए।
इक दिशि ते सिख आवति ब्रिंद। बासन मधु को भर्यो बिलंद ॥ ३ ॥
मग महिं घर रहि कट्टू शाहु। ब्रह्म-ग्यान जिसके उर मांहु।
तिस के सदन रहे सिक्ख सोई। निसा बिताइ चलहि मग जोई ॥ ४ ॥
कट्टू शाहु सेव सभि करी। गुर संगति लखि शरधा धरी।
खान पान आछे करिवाइ। सुपतनि को दीनी शुभ थाइ ॥ ५ ॥
भई प्रात उठि संगति सारी। क्रिया शनान आदि सभि धारी।
जबि होए चलिबे कह त्यारी। बरनी कट्टू शाहु उचारी ॥ ६ ॥
इस बासन महिं क्या ले आए। भो गुरु सिक्खहु देहु दिखाए।
सुनि करि कह्यौ 'मधु शुभ जाति। श्री सतिगुरु हित ले करि जाति ॥ ७ ॥
अधिक फिरे इह कीनि बटोरा। गुर रसना की लायक टोरा[1]।
इह डाली जुत फल समुदाए। सतिगुर को अरपहिं अबि जाए' ॥ ८ ॥
कट्टू शाहु सुन्यो शुभ एह। जाचयौ 'मधु मुझ को कछु देहु।
आन्यो टोरि होइ है आछो। हेरनि हेत स्वाद मैं बांछो' ॥ ९ ॥
सुनि करि सिख्यनि उत्तर दियो। गुर को नहीं अरपबो कियो।
बहु श्रम करिकैं मधू बटोरा। सतिगुर अर्चहिं, नेम चित जोरा ॥ १० ॥
सतिगुर बिनां दियो नहिं जाई। पूरब आप लेहिं मुख पाई।
पाछे सिख संगति को देहिं। खैंबे उचित तबहि लखि लेहिं' ॥ ११ ॥

---

1. ढूंढा।

मौन करा पुन कट्टू शाहु। नहिं प्रापति भी चित की चाहू।
हरख शोक को लेश न उर मैं। रैंन दिवस मन लाग्यो गुर मैं॥ १२॥
इम कहि संगति मारग परी। गुर दरशन की मनशा धरी।
सनै सनै चलि कै पुरि आए। सिवर बूझि करि तहां सिधाए॥ १३॥
जहां विराजे सतिगुरु पूरे। संगति पहुंची जाइ हदूरे।
सभि मेवनि की डाली[1] धरी। हाथ जोरि तबि बंदन करी॥ १४॥
रिदे प्रमोद धारि करि दरसे। शरधा ते सतिगुर पग परसे।
खुशी करी सभिहिनि पर तबै। होति निहाल बिलोकति जबै॥ १५॥
गुर कहि बासन मुख खुलवाइव। देखति सभि के मन विसमाइव।
'इम हम खोजि खोजि करि सारे। मधु आन्यो[2] प्रभु हेतु तुमारे॥ १६॥
पिख्यो प्रात इह नीको तबै। अबि क्रिम गन सों पूरन सबै।
क्या होयो गति लखी न जाइ। शुध मधु मधि क्रिम भे समुदाइ'॥ १७॥
मुसकाने गुर बाक बखाना। 'कट्टू महिं हम जाचनि ठाना।
तहिं तुमनै इह दीनिसि नांहि। यांते भए क्रिरम मधु मांहि॥ १८॥
जो मम सिख्यनि के मुख परे। सो मुझ को पहुंचहि हित धरे।
सिख जाचे जो देय न तांही। बिघन परति निशचै तिस मांही॥ १९॥
कट्टू शाहु निकट अबि जावउ। धरि शरधा मधु तिसै अचावउ।
सु प्रसंन जबि करिहो तांही। इह सगरो तैस बनि जाहि'॥ २०॥
सुनि सतिगुर ते उर पछुताए। कट्टू शाहु सिक्ख अधिकाए।
निज दासनि महिं वास करंता। सरब सथल महि गुर भगवंता॥ २१॥
मानि बचन को बहुर पधारे। ले मधु बासन बिलम निवारे।
संध्या समैं पहूचे जाइ। कट्टू शाहु हेरि मुसकाइ॥ २२॥
सिख्यनि को गुर मान रखंता। निज ते अधिकावति भगवंता।
तिनहु जाइ धरि मधू अगारी। 'छिमहु अवग्या' बिनै उचारी॥ २३॥
बासन ते निकासि मधु लीना। कट्टू शाहु खानि तबि कीना।
बहुर अछादनि मुख करि दियो। अधिक सुगंधित मधु हुइ गयो॥ २४॥
करि वंदन सिख महिमा जानी। गुर सिखी है धंन महानी।
पुनि पुरि को चलि करि सो ल्याए। मधु बासन गुर ढिग अरपाए॥ २५॥
आछो मधु देखि गुर कह्यो। 'गुरमुख सिख मम भेद न लह्यो।
एक रूप करि जानहु दोई। गुर अरु सिख्य न अंतर कोई'॥ २६॥
इम करि मधु बासन धरिवाइसि। सिखी महिमा अधिक बधाइसि।
इसी प्रकार बसे कशमीर। नित आवति संगति की भीर॥ २७॥
कितिक द्योस[3] बीते तिस देश। नित नौतन गुरु चरित विशेश।
अंत समां बिरधा को आवा। तनु त्याग्यो उर हरख उपावा॥ २८॥

---

1. भेंट, उपहार। 2. लाया। 3. दिवस, दिन।

गुर के निकट कुशासन कर्यो। नख शिख रुचिर सरूप निहर्यो।
देखति देखति सतिगुरु देहि। निकरे प्रान न्रिवाह सनेह ॥ २९ ॥
धंन जनम बिरधा को कहै। जिसकी समता जोगी लहैं।
सतिगुरु की आइसु को पाइ। ससकारनि को कीनि उपाइ ॥ ३० ॥
सेवादास आदि सिख सारे। करति भजन सभि कार सुधारे।
जथा शकति ते कीनि बिमाना। कंध उठाए कर्यो पयाना ॥ ३१ ॥
धरी चिखा[1] पर पावक बारी। ततछिन देहि भसम करि डारी।
जबि तन, जर्यो भयो नभ लाल। पिखि सभि अचरज कर्यो बिसाल ॥ ३२ ॥
मणिनि खच्यो इक आइ बिमान। सुर सरूप हुइ चढी सुजान।
दिब्य सरूप बिभूखन बसन। मंद मंद सुंदर मुख हसनि ॥ ३३ ॥
सगरे लोक उलंघति गई। सतिगुर पुरि को प्रापति भई।
अनिक देव गण सादर साथ। पहुंचाई जोरति जुग हाथ ॥ ३४ ॥
जै जै करति छोरि सुर आइस। उत्तम महिमा तिस की गाइस।
गुरु पग पकज प्रेम बिसाला। तिस ते अस पद लहि ततकाला ॥ ३५ ॥
तप जप दान जग्ग नहि कीन। गुरू प्रेम ते शुभ गति लीना।
कलि महि मानव अस श्री गुर को। सेवहि जे न प्रेम करि उर को ॥ ३६ ॥
भाग हीन तिन ते को परैं। अस सुखेन जे काज न करैं।
बड पुंननि को जे फल होई। तौ अस सतिगुर प्रापति होई ॥ ३७ ॥
दूरि उलंघे बिखम पहार। दीनसि दरशन सदन मझार।
निज हजूर हुइ तनु तजिवाइ। अचलोतम[2] पद दई पुचाइ ॥ ३८ ॥
अस क्रिपाल गुरु प्रभू बिसाल। सिमरहु मन तजि अपर जंजाल।
करहु अराधन प्रेमी होइ। जीवति नहिं बिसरावहु सोइ ॥ ३९ ॥
इस प्रकार सतिगुर तहि बासे। सिक्खनि के करि कारज रासे।
बहु दासन के कर्यो प्रकाशू। मंसे जुति अग्यान बिनासू ॥ ४० ॥
श्री मुख ते आग्या तबि करी। 'सेवादास आइ तिस घरी।
सति संगति को देहु अहारा। भोजन रचहु अनेक प्रकारा ॥ ४१ ॥
ततछिन सभि बसतू अनवाइ। सेवादास करी समुदाइ।
जग्य कर्यो संगति सुख पायो। जिस जस चह्यो सु तिस तस खायो ॥ ४२ ॥
देखि प्रसंन भए गुर देव। सेवादास लाइ निज सेव।
कर्यो मसंद देश तिस केरा। गुरू दरब संचै सु घनेरा ॥ ४३ ॥
देग चलावनि लाग्यो तहां। धरमसाल रचि संगति महां।
अपर जितिक धन संचै होइ। सतिगुरु ढिग पहुचावै सोइ ॥ ४४ ॥
इस बिधि को मसंद करि भारी। श्री हरिगोबिंद कीनिसि त्यारी।
चल्यो चहैं निज देश मझारा। बली बिसाल प्रताप उदारा ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रासे 'कशमीर प्रसंग' बदननं नाम पंचासति अंशु ॥ ५० ॥

---

1. चिता। 2. अचल+उत्तम।

अंशु ५१

तलवंडी प्रसंग

दोहरा

सुनि सतिगुरु के गमनि को सिख संगति समुदाइ।
फल मधुरे बहु भांति के पंथ हेतु दे ल्याइ ॥ १ ॥

चौपई

मनो कामनां सभि ने पाई। क्रिपा द्रिशटि पिखि सिख समुदाई।
सिरे-पाउ मुख्यनि को दीने। निज निज सदन बिसरजनि कीने ॥ २ ॥
जथा जोग सभिहिनि सों करिकै। गमने सतिगुर हय परि चरिकै।
जहिं बावन होए अवतार। अदिती कस्यप सदन मझार ॥ ३ ॥
बारा मूला पुरि को नाम। तिस थल महिं रिखि बर को धाम।
बड कशमीर देश जहिं तीका। कस्यप कीनि बसावनि नीका ॥ ४ ॥
तहां आइ उतरे गुर पूरे। चहुं दिशि महिं परबत थल रूरे।
बारा मूले महि सिख जेते। सुनि सतिगुरु ढिग पहुंचे तेते ॥ ५ ॥
सरब भांति करि सेव महानी। पूरी भई जु बांछा ठानी।
गुरमति को दे करि उपदेशा। गाढी सिक्खी कीनि विशेशा ॥ ६ ॥
निसि बिताइ करि प्रात अरोहे। पुन आगै गिर को मग जोहे।
सरल चीड़ समुदाइ खरे हैं। सनै सनै चलि उलंघ परे हैं ॥ ७ ॥
हाफसवाद[1] सिक्ख इक सिमरति। सतिगुर दरशन को चित बिरमति[2]।
तिस को दरशन दैवे हेतु। पहुंचे श्री सोढी कुल केत ॥ ८ ॥
पुरि ते वहिर कर्यो पिखि डेरा। उतरे हय लगाइ तिस बेरा।
तरुवरु की छाया रमणीक। सघन सदल गन खरे नजीक ॥ ९ ॥
फरश कराइ बैठि तहिं गए। पुरि महिं सुधि होई 'गुर अऐ।
करमचंद सिख तहां बसति है। बानी पठिबे अरथ[3] रसति है ॥ १० ॥
सो सुनि कै आयहु ततकालू। देख्यो सुंदर दरस बिसालू।
बंदन करी चरन अरबिंद। बूझति से श्री हरिगोबिंद ॥ ११ ॥

1. हाफ़िज़ाबाद। 2. तरसता था। 3. रस लेते हैं।

'कौन अहैं, किस थल मंहि बासैं । किस कारज आयहु इम पासैं ।
करम चंद कर जोरति उचरी । 'रावरि सिक्ख, बसौं इस पुरी ॥ १२ ॥
जथा शकति चाहौं तुम सेवा । बडे भाग पहुचे गुर देवा ।
इम कहि गयो सदन ततकाला । सरब समग्री ल्याइ बिसाला ॥ १३ ॥
हेतु पवंगम त्रिण अरु दाना । चावर, चून, दार बिधि नाना ।
सरपी[1] सिता, आनि करि नीके । श्री गुर के सभि धर्यो नजीके ॥ १४ ॥
आइसु पाइ अरालिक[2] तबै । भोजन कर्यो त्यार शुभ सबै ।
श्री हरिगोबिंद जबि त्रिपताए । हुइ प्रसंन बैठे तरु छाए ॥ १५ ॥
बोल्यो करम चंद कर जोरि । चहिति रह्यो आवनि तुम ओर ।
जपुजी के अरथन की चाहू । सुनौ श्रौन मैं रावरि पाहू ॥ १६ ॥
क्रिपा करहु मुझ देहु सुनाइ । तुम बिन अपर न किस ते आइ ।
श्री हरिगोबिंद बाक बखाना । 'जप के अरथ महान महाना ॥ १७ ॥
जथा बेद पद अरथ उचारै । निज सरूप जाननि निरधारै ।
तिम जपु पद को अरथ लखीजै । जाननि अपनि सरूप जनीजै ॥ १८ ॥
धर्यो प्रथम ही जो जपु नाम । सरब ग्रिंथ को लिखि अभिराम ।
बेद रु जपु पद द्वै को अरथ । इकि जाननि को कहै समरथ ॥ १९ ॥
यांते सुनहु खशट जे पौरी । कीनि मंगला चरन सु ठौरी ।
सपतम मंहिं बैराग अलावा । बिना ग्यान सभि कूर दिखावा ॥ २० ॥
बहुरो चार जि पौरी बनी । श्रवण महातम महिमा भनी[3] ।
पुनचारिनि मंहिं मनंन दिखायो । ब्रहम ग्यान को हेतु जनायो ॥ २१ ॥
पच परवाण बिखै निध्यासन । तीनहुं[4] करत्यो करहि उपासन ।
'तू सदा सलामति निरंकारि । इह तुक 'तत्वमसि' उचारा ॥ २२ ॥
महांवाक हुइ श्रुति मंहिं चारि । तिस तुक कही चारि ही बार ।
शकति शांतकी[5] प्रथम उचारी । जे असंख की पवरि बिचारी ॥ २३ ॥
दूजै बिखै तामसी कही । त्रिती बिखै द्वै मिसरति लही ।
जीव ईश इकता दिखराई । सचिदानंद दहनि सम पाई ॥ २४ ॥
इत्यादिक सभि अरथ सुनाए । सुनि सिख सगरे मंनि बसाए ।
जपु जी अरथ अहैं अति गूढे । श्री नानक बानी सभि रूढे[6] ॥ २५ ॥
जिस ते परै कहिन कुछ नांही । कहै परै सो जानहिं नाही ।
जोग जनावनि सकल जनायो । सभि सिख्यनि को पंथ बतायो ॥ २६ ॥

---

1. घी । 2. रसोइया । 3. कही । 4. तीनों—श्रवण, मनन, निदिध्यासन । 5. शंत एवं सात्विक । 6. सुंदर ।

बचन मानि जिन पायहु ग्यान। कोट जनम के बंधन हानि।
मञ्जति जपुजी पढि जुति नेम। श्री नानक धरि ध्यान सप्रेम ॥ २७ ॥
तिन को गहै न जम दुखदाई। अत समै गुर बनहिं सहाईं।
श्री गुर नानक देश बिदेश। फिरे उधारति जीव विशेश ॥ २८ ॥
जेठे आदि सुनी गुर पास। अपनि मनोरथ कीनि प्रकाश।
जनमे श्री नानक जगतेश। सो इत ही दिशि है शुभ देश ॥ २९ ॥
क्रिपा करहु तहिं दरस दिखावहु। चलति पंथ तित ओर सिधावहु।
श्री हरि गोविंद सुनि करि भाखा। 'हमरी भी ऐसे अभिलाखा ॥ ३० ॥
अबि दरशन करते तहिं चलैं। बरति निमानी[1] के नर मिलैं।
तिस दिन हम भी पहुंचहिं जाईं। इम कहि सतिगुर निसा बिताई ॥ ३१ ॥
प्राति भई आरोह तुरंग। गमने पंथ सैन कुछ संग।
करम चंद तबि आइ अगारी। 'चलौं संग मैं' गिरा उचारी ॥ ३२ ॥
कह्यो गुरू 'रचि इहां सथान। आइ सिक्ख, करि सेव महान।
जिम हम संग रहे फल पावैं। तथा सथान सेव ते भावैं' ॥ ३३ ॥
इम दै धीरज चले अगारी। बार देश जिस दिशा मझारी।
पंथ उलघति पहुंचे जाई। तलवंडी नगरी जिस ताईं ॥ ३४ ॥
श्री नानक सर पर करि डेरा। कीनि शनान बिमल जल हेरा।
बहुति मोलि की पोशिश नई। पहिरी तन शोभा अति भई ॥ ३५ ॥
सूखम बहु पाले[2] को जामा। कलगी जिगा सीस अभिरामा।
शमश श्याम दीरघ मुख मंडल। मुकता माल करन कल कुंडल ॥ ३६ ॥
सहत सिपर शोभति शमशेर[3]। कसी कमर पौरख सम शेर।
दरब प्रसाद बहुत उचवाए। फल कशमीर देश के ल्याए ॥ ३७ ॥
प्रथम ताल पर अरपि उपाइन। पुन पहुंचे चलि करि तिस आइन।
जनम लीनि श्री नानक जहां। धरि अकोर दरशन को लहा ॥ ३८ ॥
उर करि ध्यान मधुर फल धरे। बिनती भनति बंदना करे।
तहिं दरशन करि आन सथान। चले बतावति गुर भगवान ॥ ३९ ॥
जिस तरुवरु के तर प्रभु परे। आइ शेश[4] मुख छाया करे।
कथा सुनावति दरस करावा। सभिहिनि तिस थल सीस निवावा ॥ ४५ ॥
बिरछ बिलोक्यो बहुरो जाइ। टिकी रही जहिं तरु-परछांइ।
पुन किदार[5] सो जाइ निहर्यो। महिखनि चर्यो कर्यो द्रुतिहर्यो ॥ ४१ ॥

1. आषाढ़ की एकादशी। 2. कई जोड़ वाला। 3. तलवार। 4. शेषनाग। 5. क्यारी।

इत्यादिक फिर सरब सथान। जात्रा करी भाउ को ठानि।
लानि बिराजे सतिगुरु डेरे। पसरी खबर देश चहु फेरे॥ ४२॥
ब्रत इकादशी दिवस निमानी। आयहु मेला भर्‌यो महानी।
बेदी लालू चाचा गुरु को। तिसको परपोत्रा हित करि को॥ ४३॥
सुधि मुनिकै मन मोद उपायो। सुत बुलाइ कुल ताहिं सुनायो।
मिलि करि शुभ मानव समुदाए। आछी वसतू संग लवाए॥ ४४॥
रिद भाउ धरि सभि करि जोरि। मिले गुरू को अरपि अकोर।
फरश बिसाल दिवान वडेरा। राज समाज दिपै गुरू केरा॥ ४५॥
पिखि सिभिहिनि को करि सनमाना। कुशल अनामय[1] बूझनि ठौना।
तिन बडियनि की जथा कहानी। गूर पूछी तिन अखिल बखानी॥ ४६॥
सिरेपाउ वहु मोले जेई। बखशे दोनहुं को पिखि तेई।
अति अनंद पायहु मिलि गुर को। परखति भे उदारि बडि उर को॥ ४७॥
पुन मेला आयो थल परसन। तिन सभिहिनि लीनसि गुरदरशन।
जथा शकति भेटनि अरपावैं। रिदे कामना करहिं सु पावैं॥ ४८॥
हाथ जोरि कर सीस निवावैं। सुंदर गुर सरूप दरसावैं।
करहिं सराहनि आपस मांही। सुजसु करति नित निज थर जाहीं॥ ४९॥
ग्राम समूहनि के नर आए। करि मेला सतिगुर दरसाए।
इस प्रकार श्री हरिगोविंद। देखि देखि गमने नर ब्रिंद॥ ५०॥
केतिक दिन तहिं बासा करिकै। कर्‌यो कूच हय सुंदर चरि कै।
सनै सनै मद्री चलि आए। शुभ सथान पिखि सिवर कराए॥ ५१॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे पंचम रासे तलवंडी प्रसंग बरननं नाम इक पंचासती अंसु॥ ५१॥

---

1. आनंद मगल।

अंशु ५२

श्री हरिगोविंद सगाई प्रसंग

दोहरा

मद्री उतरे गुरु प्रभु दासनि लाइ तुरंग।
फरश कराइ बिसाल को बैठे सिख भट संगि ॥ १ ॥

चौपई

ग्राम बिखै नर सुनि सभि आए। अरपि उपाइनि सीस निवाए।
सेवा सरब करी गुरु केरी। इक सिख ने भाख्यो तिस बेरी ॥ २ ॥
'श्री अरजन को आसा[1] इहां। पग की पनही उत्तम महां।
सुनि सतिगुर सो निकटि मगाए। करि दरशनं सभि सीस निवाए ॥ ३ ॥
जेठे बूझ्यो 'गुरु किस कारन। दिए तुमहिं, सो करहु उचारन'।
सुनि सिख माणिक जिसके नामू। कहिबे लग्यो प्रसंग अभिरामू ॥ ४ ॥
श्री अरजन जी इस थल आए। सिक्ख किदारा मिल्यो सुभ्राए।
डेरा धरमसाल करिवायो। सेवा करति अधिक चित चायो[2] ॥ ५ ॥
हुती हजीरां गर महिं तांही। देति बिखाद मिटति सो नाहीं।
केतिक करि उपाउ को हारा। नहिं किस औखधि रोग निवारा ॥ ६ ॥
जतन करनि ते पुनि हटि रह्यो। एक अलंब गुरू को लह्यो।
सिक्खी बिखै सदा सवधान। सेवा करति सप्रीति महान ॥ ७ ॥
जाम जामनी जबि रहि गई। 'दरसो गुर' इच्छा तिस भई।
श्री अरजन प्रयंक पर थिरे। बैठ्यो आनि भजन मुख करे ॥ ८ ॥
सिख गुर संगी बैठे जेय। तिन महिं मिलि करि बैठ रहेय।
ग्रीव हेरि बोल्यो गुरदास। इह किम होयहु कशट प्रकाश ॥ ९ ॥
सुनि करि तिस ते कहैं किदारा। रोग हंजीरा संकट भारा।
करति रह्यो केतिक उपचारू। परारबध करि नंहि परहारू ॥ १० ॥
पिखि अमेटि मैं पुन मिटि रह्यो। नहिं कुछ कर्यो नरन बहु कह्यो।
सुनि पुन बोल्यो सिख कलियाना। रुज असाध्य इह तोहि पछाना ॥ ११ ॥

---

1. लाठी, सोटा। 2. चाव।

दिवस बिखै सतिगुरू अगारी। करहु बिनै, दें रोग बिदारी[1]।
ऐसी वसतु न जग महिं कोई। करहिं गुरू जो होइ न सोई॥ १२॥
सुनति किदारे बहुर उचारा। सतिगुर महिमा अपर अपारा।
अहै जथोचित तुमने भाखा। तऊ सुनहु मेरी अभिलाखा॥ १३॥
गुर ते अविचल मुख को जाचनि। सत्ति नाम सिमरन मन राचनि।
तन अनित्त ऐसे सुख इसके। नाशवंत नहिं संगी किसके॥ १४॥
रुज हरिबे हित गुर को कहौं। रिदे अनुचिति बात मैं लहौं।
कहां मशक[2] पर शेरि बंगारनि[3]। उचित मतंग-कुंभ[4] जो फारनि॥ १५॥
मोह महान मसत को मारति। जिस दिशि करुना द्रिशटि निहारति।
अस निशचा निज कीनि सुनावनि। सरब सिक्ख ततछिन हरखावनि॥ १६॥
कहि गुरदास 'उचित तें कह्यो। जिस पर क्रिपा तिसी इम लह्यो।
धरि शरधा दिढ अबि निज उरकी। धरी जु पनही इह सतिगुर की॥ १७॥
गर के चहुं दिसि फेरहु याहि। दुखद रोग सगरो मिटि जाहि।
मान्यो कहिबो हाथ उठाई। रोग हजीरां पर तबि लाई॥ १८॥
तुरति किदारे को दुख हर्यो। मनहुं न भयो, गरो अस कर्यो।
जनु मिसि चाहति पनही लागे। हरखति भए, सरब रुज भागे॥ १९॥
कितिक समें महिं सतिगुर जागे। पिख्यो किदारा बैठ्यो आगे।
पद अरबिंदनि बंदे गुर को। बूझति भए, कहां रुज गर को॥ २०॥
सुनि करि सगरी बाति बताई। 'तुमरी पनही अबहि लगाई।
अनिक जतन ते गयो न जोइ। तनक समै महिं दीनसि खोइ॥ २१॥
तबि सतिगुरु ले आसा हाथ। पनही को उठाइ तिह साथ।
दई किदारे को, इम कह्यो। जिम तेरे गर को दुख दह्यो॥ २२॥
तिम को अपर हजीरां वारे। करहिं लगावनि रोग बिदारे।
पनही जुति आसा घर रखहु। चिरंकाल इह रहिहुं, लखहु॥ २३॥
सुनि आग्या तबि लीनि किदारे। राखे अपने सदन सुधारे।
पूजा करहिं धर्यो इह रहै। आइ रुजी तिम को रुज दहैं॥ २४॥
सुनति अनंद भए सिख ब्रिंद। वसे निसा श्री हरि गोबिंद।
खान पान करि भली प्रकारा। सुपति जथा सुख भई सकारा॥ २५॥
सौचि शनान ठानि गुरु चले। नमो करहिं सिख जे मग मिले।
मटवी आइ सिवर को घाला। हय ते उतरे गुरू क्रिपाला॥ २६॥

---

1. नष्ट। 2. मच्छर। 3. ललकारना। 4. हाथी का सिर।

इहां प्रसंग भयो जिस रीति। सुनीअहि श्रोता श्रोन सप्रीति।
ग्राम एक जानहु मंड्याली। ऐरावती कोस त्रै चाली॥ २७॥
तहिं मरवाहा खत्री रहै। दुआरा नाम तिसी को कहैं।
भागण नाम भारजा तांही। करे पुन पूरब भव माहीं॥ २८॥
चिरंकाल बासो तिस ग्रामू। सिमरति श्री परमेशुर नामू।
बर प्रापति कंन्या तिनि धामू। बड भागनि सभि तन अभिरामू॥ २९॥

खोजति रहे सु करनि सगाई। मन भावति नहिं कितहूं पाई।
गुर को सिक्ख मित्र तिस कोई। इक दिन मिले परसपर दोई॥ ३०॥
निज कंन्या की बात सुनाई। 'आछो थान नहीं को पाई।
जे तो कहु कित मालुम[1] होइ। देहु बताइ ठिकानो कोइ॥ ३१॥
सुनति सिक्ख ने रिदे बिचारी। 'जे सतिगुर को देहिं कुमारी।
जिन ते आछो अपर न कोई। जे इह सुता भाग बडि होई॥ ३२॥
कहति भयो 'सुन सखा हमारे। जे सबंध बनि जहिं तिहारे।
घंन आप को जानहुं फेरि। जिनके सम को अपर न हेरि॥ ३३॥

श्री अरजन सुत जोधा बली। श्री हरिगोविंद सूरत भली।
द्वै उपबाह अगारी भए। जिन आगै सगरो जग नए॥ ३४॥
उर शरधा धरि जे अरपावैं। तिन ते आछो अपर न पावैं।
सुनि दुआरा पुन बूझनि लागा। 'अबि सो अहैं कौन सी जागा॥ ३५॥
कहि करि लागी देउं पठाइ। तेरो कह्यो मोर हित चाइ[2]।
बहुर सिक्ख ने बाक सुनाए। 'अबि कशमीर देश ते आए॥ ३६॥
मैं डेरा तलवंडी सुन्यो। इक पंथी ने मो संग भन्यो।
इस मारग ही अबि चलि आवैं। सुधि लेते रहु सिवर जु पावैं॥ ३७॥
निकटि ग्राम के आइ जि जानो। तुरत सबंध करनि को ठानो।
सुनि सिख को उपदेशनि द्वारा। लग्यो प्रतीखन गुरू उदारा॥ ३८॥
मटवीं आइ कर्‍यो जबि डेरा। लागी पठे सुने जिस बेरा।
सहिज सुभाइक बैठे जहां। आनि पहूचे ततछिन तहां॥ ३९॥
आशिख दई बिप्र बर जबै। जेठा दूरि हकार्‍यो तबै।
सकल बात दिन नै समुझाई। 'मैं आनी गुर हेतु सगाई॥ ४०॥
मंड्याली खत्री मरवाहा। बर प्रापति कंन्या घर मांहा।
ब्याह सहत इक बार सगाई। करी भावना अत्रहि पठाई॥ ४१॥

1. मालूम, ज्ञात। 2. चाव।

सुनि जेठे सतिगुरू सो कह्यो। 'पुरहु भावना जिम किम चह्यो।
जो को आनि परहि शरनाई। नहि त्यागहु इह विरद सदाई॥ ४२॥
श्री हरि गोविंद सुनि करि मानी। बूझ्यो दिज बुलाइ अगवानी।
द्वारे की सभि बात सुनाई। धरी भावना पठी सगाई॥ ४३॥
पुन पांधा दिज अपर हकारा। आनि ग्राम ते बंदन धारा।
शुभ दिन लगन गिन्यो तिन आछो। कह्यो 'करहु परसों जिम बाछो'॥ ४४॥
तहां टिके गुरु भई सगाई। सकल ब्याह त्यारी[1] करिवाई।
लवपुरि पठि करि वसतु मंगाई। जो चहीयति दिज दीन बताई॥ ४५॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे 'श्री हरिगोविंद सगाई' प्रसंग बरननं नाम द्वै पंचासति अंशु॥ ५२॥

1. तैयारी।

अंशु ५३

श्री गुरु आगमन प्रसंग

दोहरा

करे शगुन सभि ब्याह के जेतिक बिप्र बताइ ।
श्री गुर हरि गोविंद जी दुलहु रहे सुहाइ ।। १ ।।

चौपई

सजी बराति जितिक सिख संग । चले कुदावति चपल तुरंग ।
पहुंचे तबहि जाइ मंड्याली । देखि खुशी तिन कीनि बिसाली ।। २ ।।
लोक इकत्र करे समुदाइ । आगे लेनि सु द्वारा आइ ।
जेठा लग्यो दरब बरखावनि । रंक धनी बनि भे हरखावनि ।। ३ ।।
तुररी, डढ, गन पटह, निशाना । बाजि उठे जनु घन गरजाना ।
गुरु पर द्वारे वार्यो दरब । रीति करी कुल की जे सरब ।। ४ ।।
ले करि संग निवेस करायो । जो चहीयति ततकाल पठायो ।
द्वै दिन सतिगुरु गए अगारी । देखि सराहति हैं नर नारी ।। ५ ।।
मंगत जन समूह चलि आवैं । सभि को सतिगुरु दरब दिवावें ।
जसु फैल्यो बड दान दए ते । बसे दोइ दिन वीति गए ते ।। ६ ।।
त्रिती द्योस रहि घटिका चारि । बड़वारूढे ह्वै सभि त्यारि[1] ।
घने बजावति बाजे चाले । सुनि सभि कौ भा हरख बिसाले ।। ७ ।।
जेठे संग मिलनी करि द्वारे । कर्यो ढुकाउ जाइ तिस द्वारे ।
पिख्यो जमाता[2] भागण जबै । अंग अनंद न मेवहि तबै ।। ८ ।।
पिखि पिखि अबला सकल सराहति । जिह न पिखे सुनि देखिनि चाहति ।
जानि समा[3] गोधूल बिसाला । वेदी थल मिलि करि दिज जाला ।। ९ ।।
सतिगुर करे अवाहन जबै । पहुंचति भए जाइ करि तबै ।
बिधीआ जेठा आदिक साथ । खार्यो[4] पर बैठे शुभ नाथ ।। १० ।।
नौ ग्रैह को दिज ने पुजवाइ । अगनि सथापन कीनि बनाइ ।
सरपी पाइ होम को कर्यो । उठि सतिगुर चहुं दिशि तिस फिर्यो ।। ११ ।।

---

1. तैयारी । 2. जामत्र, दामाद । 3. गोधूलि समय, सायं । 4. अखाड़ा ।

करनि उचित करि लावां लीनि। जहां चहति जेठे धन दीनि।
सतिगुरु गए आपने डेरे। बाजे बजति बहुत तिस बेरे[1] ॥ १२ ॥
पुन भोजन के हेतु बुलाए। ऊचे पंकति लाइ बिठाए।
सत[2] पकवानी आनि अहारे। कर्यो परोसनि सकल अगारे ॥ १३ ॥
अचनि लगे गावति बर नारी। ले ले नाम उचारति गारी।
मुदित समाज सरब हुइ रह्यो। देखि देखि गुर जसु को कह्यो ॥ १४ ॥
तिपति होइ डेरे पुन आए। सुपति जथा सुख राति बिताए।
भई प्रात करि सौच शनाना[3]। बैठे सतिगुरु लाइ[4] दिवाना ॥ १५ ॥
निकटि निकटि के ग्राम जि ब्रिंद। देखनि हित श्री हरि गोविंद।
लोक अनेक धनी अरु रंका। आनि आनि दरसहि गुर बंका ॥ १६ ॥
अरपि अकोरनि सीस निवावैं। मनो कामना हेरति पावैं।
दुइ[5] दिन पूरब तीनि पिछारी। कर्यो बास तहिं श्री गुरु भारी ॥ १७ ॥
पुन बिदाइगी द्वारे कीनि। यथा शकति दाइज को दीनि।
मिलि भागण दुहिता के साथि। अरपनि करति भई गुरु नाथ ॥ १८ ॥
करि डेरा आगैं गुर चले। हुइ पशचाति अपर सभि मिले।
बाजे बजति पंथ गमनंते। अन गन धन घन जनु बरखते ॥ १९ ॥
कितिक दूर जबि चले अगारी। 'खरे रहो' गुरु गिरा उचारी।
'प्यारो सिक्ख चल्यो इक आवति। हम दरशन को बहु ललचावति' ॥ २० ॥
इतने महिं लंगाह चलि आयो। प्रेमी पग पंकज लपटाओ।
करि बंदन जबि खरो अगारी। 'अहै कुशल' सतिगुरू उचारी ॥ २१ ॥
कहति भयो 'सिख लवपुरि गए। ब्याह वसतु कछु ल्यावति भए।
सुधि रावर की तिन ते पाई। दरशन को हियरा ललचाई ॥ २२ ॥
अपर बात इक, परति बिगारि। बैर करहि काज़ी कुरिआर[6]।
शाहु निकट हुइ उचरति चारि[7]। खोट अरोपहि ओर तुहारी ॥ २३ ॥
धरमसाल को चहति गिरावा। हित मसीत धरि अवनी दावा।
करहि वज़ीर खान तिह मोरनि[8]। चहति अनीति राखि उर खोरनि[9] ॥ २४ ॥
इह सुधि करन काज मैं आवा। महा लाभ तुम दरशन पावा'।
श्री सतिगुर सुनि वाक वखाना। 'धरमसाल परमेशुर-थाना ॥ २५ ॥
तिस का बुरा चितहि जे मूर[10]। अपनो वेग उखारहि मूर।
सतिगुरु धरमसाल नित थिरी। अवचल नीव प्रमेसुर करी' ॥ २६ ॥

---

1. वेला। 2. सात। 3 स्नान। 4. दीवान लगाकर। 5. 2+3=5 दिन।
6. झूठा। 7. चुगली। 8. मोड़ना। 9. द्वेष। 10. मूढ़।

इम कहि सुनि कै सिक्ख लंगाहु। सतिगुरु कह्यो 'अबहि तूं जाहु।
अंतर बाहर सेवा सारी। आमद खरचनि लेहु संभारी ॥ २७ ॥
धरमसाल महिं जेतिक संगति। दिहु अहार सभिहिनि करि पंगति।
देग चलावति रहीअहि नीति। सेवहु भले रिदे करि प्रीति ॥ २८ ॥
इम सतिगुर की आइसु पाइ। चरन कमल पर सीस निवाइ।
लवपुरि के मारग चलि गयो। दरशन ते हरखति चित भयो ॥ २९ ॥
द्वारा तनिया नेह अरूझा। हाथ जोरि सतिगुर सो बूझा।
'कबि दरशन मैं लहौं तुहारा। बड क्रिपाल मुझ पतित उधारा ॥ ३० ॥
दरशन की दीरघ जिस प्यासा। अंतरजामी बाक प्रकाशा।
ब्रिच्छ सिसंपा[1] खरो जि एह। इस पिखि हम दरशन फल लेहु ॥ ३१ ॥
परहि भावना इस को हेरे। तिस नर को हुइ पुंन बडेरे।
हुइ है इस को नाम चुटाला। बिदत बिसाल रहहि चिर काला ॥ ३२ ॥
सतिगुर ससुर जानि थल वडे। सनमान्यो बहु तहिं ही छडे।
भागन सास खरी कर जोरि। करि वंदन गुर तिस की ओर ॥ ३३ ॥
कर्यो पयान लिए सभि संग। हेरे ऐरावती तरंग।
तरनी ते तरिकरि परि तीर। डेरा कीनसि गुनी गहीर ॥ ३४ ॥
तिस थल श्री नानकी बेरी। वंदन ठानि भाउ करि हेरी।
सुधि हित सिक्ख सुधासर नगरी। पठे शीघ्र ही भाखी सगरी ॥ ३५ ॥
सुनति मात गंगा हरखाई। आवहिं अबला देति बधाई।
नौबति लगी बजनि मुद दैंनी। मिली ब्रिंद नागर पिक बैंनी ॥ ३६ ॥
गाइ मधुर सुर गीत घनेरे। मंगत जन दै दान बडेरे।
लेनि अगाऊ की करि त्यारी। जिम बरात की ह्वै सुधि सारी ॥ ३७ ॥
उत सतिगुर यो निसा बिताइ। बाज[2] अरूढे[3] बाज बजाइ।
डेरा करे अगारी चाले। सुभट तुरंग चले तबि जाले ॥ ३८ ॥
आनंदति अंम्रितसर तीर। पहुंचे आइ लीए नर भीर।
छिरकी बीथि ब्रिंद बजारनि। कितिक पिखति हैं चढे अटारनि ॥ ३९ ॥
जाने जबि नेरे पुरि आए। नारि नागरी भई अगाए।
गूंदि[4] गूंदि फूलनि की माला। ले ले मिली जाइ गन बाला ॥ ४० ॥
भाट नकीब[5] बोलते आवें। बहु डोरे पर धन बरखावें।
पुरि को मोद देति घर आए। गंग मात कुल रीति कराए ॥ ४१ ॥

---

1. शीशम। 2. वाजि, घोड़े। 3. आरूढ़े। 4. गूंध। 5. चोबदार, प्रतिहार।

साजि आरती अग्र उतारी। पीयसि बारि[1] बारि बर बारी।
अंतर सदन बिराजे जाइ। देखि नुखा[2] सुत को सुख पाइ॥ ४२॥
श्री हरिगोविंद पुन उठि आए। श्री अंम्रितसर बिखै नहाए।
लियो प्रसादि गए दरबार। हाथ जोरि करि बंदन धारि॥ ४३॥
भाई ब्रिद्ध सहत गुरदास। मिले नमो करि हरख प्रकाश।
दीनि प्रदछना पुनि हटि आए। थिरे अकाल तखत की थाए॥ ४४॥
फरश कराइ दिवान लगायो। सभि आए गुर दरशन पायो।
करि करि वंदन बैठहिं पासि। सभि सों बोलति बचन बिलास॥ ४५॥
पैंदे खां जुति भट गन आए। नमो करहिं लोचन बिकसाए।
कर्‌यो खान को मान घनेरा। भटनि कुशल बूझी तिस वेरा॥ ४६॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे **'श्री गुरु आगमन'** प्रसंग बरननं नाम तीन पंचासति अंशु॥ ५३॥

---

5. पानी वार वार कर। 6. बहू।

अंशु ५४

पुत्र जनम प्रसंग

दोहरा

श्री गुरु दित्ता पुत्र तहिं ल्याए सतिगुरु तीर ।
लीनि अंक दुलरावते म्रिदुल बाक ते धीर ॥ १ ॥

चौपई

जथा जोग सभि को सनमाना । सिक्ख मसंद सुभट जे नाना ।
पुन उठि निज मंदिर को गए । खान पान नाना बिधि कए ॥ २ ॥
सन्ध्या समै सु दीपक माला । जहिं कहिं कीनसि भयो उजाला ।
श्री हरि मंदर के चहुं दिशि मैं । दीपक बार धरे घ्रित जिस मैं ॥ ३ ॥
श्री अंम्रितसर की सौपान । जहिं कहिं कीनि प्रकाश महान ।
सुपति जथा सुख राति बिताई । जाम निसा ते गुरू नहाई ॥ ४ ॥
गाइं रबाबी आसा वार । सत्तिनाम सिमरन जैंकार ।
बैठहिं सतिगुरु लाइ दिवान । आवहिं सिक्ख अनिक लै ग्यान ॥ ५ ॥
इसी प्रकार बिते बहु मास । सतिगुरु बिलसति बिविधि बिलास ।
धरि दमोदरी गरभ दुतिय तबि । केतिक मास बितावनि किय जबि ॥ ६ ॥
भई प्रसूता जनमी कंन्या । वड भागनि सभिहिनि ते धंन्या ।
श्री गंगा ने ताहिं निहारा । बीरो नाम बिचारि उचारा ॥ ७ ॥
मात करंति प्रतिपाला घनी । प्यारी सुता प्रेम के सनी ।
कबि[1] दादी ले अंक दुलारहि । 'गुरु घर जनमी पुंन उदारहि' ॥ ८ ॥
संगति दीपमाल कौ आवै । श्री अंम्रितसर बिखै नहावै ।
श्री हरि मंदिर दरशन करै । सुनहि शब्द उर आनंद धरै ॥ ९ ॥
श्री हरि गोबिंद तखत अकाल । बैठहिं सभा लगाइ बिसाल ।
आनि अकोरनि को अरपंते । अपनि मनोरथ को उचरंते ॥ १० ॥
करहिं कामना सभि की पूरन । बखशहिं सिक्खनि को गुन रूरनि ।
केतिक भगति बिखै मन लावैं । सत्तिनाम सिमरति गति पावैं ॥ ११ ॥

---

1. कभी ।

किस को दें निशचै उर ग्यान। जानहि अपनो रूप महान।
तन हंता ते होति निराले। लिपहिं न फल जे करमनि जाले ॥ १२ ॥
आइ अनिक सेवा कहु लागे। जग बंधन त्यागहिं बड भागे।
लग्यो सदाव्रत मुकती केरा। आन धरहि लें आनंद घनेरा ॥ १३ ॥
वहिर अखेर[1] ब्रिति को जाते। आयुध बिद्या महि उमहाते।
पैंदे खान अधिक बलवाना। तिह सों परचति रहहिं महाना ॥ १४ ॥
बडे बली दो महिख मंगावहिं। तिन कहु सनमुख सीस भिरावहिं।
टक्कर इक जबि करहिं भिरावनि जबि दूजी को लागहिं लावनि ॥ १५ ॥
दोनहुं महिखनि केर बिखान[2]। गहहि पान महि पैंदे खान।
भिरनि न देति टिकावहि दौन। नहिं करि सकहि ओज तबि कौन ॥ १६ ॥
बल ते झटकहि करहि पिछारी। दोनहुं थिरहि सकल बल हारी।
खरे हज़ारहुं पिखहिं तमाशा। बिसमहिं रिदे लखहिं बलरासा ॥ १७ ॥
इसके सम महि मंडल मांही। दूसर किस थल सुनियति नाहीं।
देश बिदेशनि महि तिस बात। करहिं लोक, सुनि सुनि बिसमाति ॥ १८ ॥
केतिक देखनि के हित आवैं। डील बिसाल बली पिखि जावैं।
नौं नौ मन की मुदगर फेरहि। अवनी महिं उठाइ कर गेरहि ॥ १९ ॥
सतिगुर दिन प्रति रुख बहु करैं। क्रिपा द्रिशटि बल परखति धरैं।
वसतु अजाइब संगति ल्यावहि। निज कल्यान हेतु अरपावहि ॥ २० ॥
सो पैंदे खां को गुरु देति। बल दिखराइ रिझाइ सु लेति।
धन गन बसत्र शसत्र बखशंते। बल बरधक भोजन अचवंते ॥ २१ ॥
अपने निकटि बिठाइ खुलावहिं। खोवा पै[3] तपताइ बनावहिं।
आदि बदाम पाइ बहु मेवा। तोल अधिक दिन प्रति गुरदेवा ॥ २२ ॥
खाइ बहुत पुन बरज़िश करै। दंड पेलबो मुंगरी धरै।
जिस थल बारि बारि फिरि करति। अवनी बिखै परैं तहि गरत[4] ॥ २३ ॥
बल जुति देहि होति निज गाढी। सरी सार की जनु इह बाढी।
कैसो हुइ तुरंग बल भारी। गहै, न चलिवे देति अगारी ॥ २४ ॥
धरे रजतपण सभा मझार। मेटहि हरफ मसल बल धारि।
पुनह[5] पटेबाज़ी जबि करै। नहीं अगारी को नर अरै ॥ २५ ॥
तबि सतिगुर अपनो बल करै। अंग दबाइ गरब परहरैं।
लज्जति होइ सुनावहि बैन। 'हम बल सम अवनी को है न ॥ २६ ॥

---

1. शिकार। 2. विषाण, सींग। 3. दूध, पय। 4. गढ़ा। 5 पुनः।

अरिन्रे देउं न दो पद मांही। सहै कौन बल, बचहि सुनां ही।
तनु को त्रान धारि करि आपि। करहु न बसि मोकहु हरि दाप[1] ॥ २७ ॥
अजमति[2] को बल करि कै भारो। मुझ को बभि करि लेति लचारो[3]।
हम हंकार जास के होवा। निज बल सम दूसर नहि जोबा ॥ २८ ॥
आइ संगतां[4] देश बिदेश। देखति बिसमति रिदे अशेश।
इस प्रकार दिन कितिक बिताए। अदभुत अपने चरित दिखाए ॥ २९ ॥
मरवाही ने गरभ धर्यो है। समां बितावनि जबहि कर्यो है।
भई प्रसूता सुत उतपंना। सुंदर सूरति सूरज-वंना ॥ ३० ॥
मात गंग सुनि आनंद धारे। मंगल बिदति कियो पुरि सारे।
लघु दुंदभि की नौबति बाजति। अनिक गीति के मंगल साजति ॥ ३१ ॥
रंकन को धन अनगन दीनि। बंदन-वारें बंधन कीनि।
फूल माल बहु दर लरकाई। अंबि भौर[5] पातनि हरिआई ॥ ३२ ॥
पुत्र संग गंगा बच भाखा। 'समा बिचार लेहु करि कांखा।
मंगल कीजहि बिबिध प्रकारा। गुर मान्यो जिम मात उचारा ॥ ३३ ॥
करि बिचार गुर गिरा उचारी। 'इस ते बंस बधहि जग भारी'।
सूरज बली लगन के धामू। यांतै सूरज मल, इस नामू ॥ ३४ ॥
सभि कुल रीति जनम की करी। बजति बधाई आनंद भरी।
इस जनमे दिन केतिक पाछे। रिदे नानकी सुत को बांछे ॥ ३५ ॥
एक समै पति पाइ इकंत। बैठे श्री सतिगुर भगवंत।
लज्जा सहत नानकी ठांढी। जोरे हाथ कामना बाढी ॥ ३६ ॥
खली भई बूझी गुरु ऐसे। 'रिदे मनोरथ कीनसि कैसे।
कहु निज कारज क्या चित चाहू'। सुनि करि कहत भई गुर पाहू ॥ ३७ ॥
'तुम सभि जानति अंतरिजामी। तऊ जि पूछहु उचरौ स्वामी।
जुग सौतनि सुत प्रापति करे। तथा कामना मैं उर धरे' ॥ ३८ ॥
भए प्रसंन बचन मुख कह्यो। 'बड़ो भाग तेरो हम लह्यो।
तिन ते अधिक पुत्र भी पाइ। तोहि प्रताप वधहि[6] अधिकाइ' ॥ ३९ ॥
सुनति अनंद बिलंद उपावा। हाथ जोरि सिर अवनि टिकावा।
थिते कितिक दिन गरभ सु धार्यो। नव मासनि को समां सु टार्यो ॥ ४० ॥

---

1. घमंड। 2. शान, गौरव। 3. लाचार, विवश। 4. अनुयायी गण। 5. बौर।
6. बढ़े।

सेव्यमान धाइनि ते होई। जनम्यो पुत्र चित चित खोई।
पौत्रा पिख्यो आनि करि गंगा। मंगल रच्यो हरखके संगा ॥ ४१ ॥
पति की सिमरति गिरा रसाली। भई सफल अबि खुशी बिसाली।
'वधी[1] वेलि बहु पीड़ी चाली। धरम कला हरि वधि बहाली' ॥ ४२ ॥
जाचक गन को दीनसि दान। बाजति बाजे द्वारि महान।
गुर घर महिं शादी पर शादी। होति सदा पिखि ह्वै अहिलादी ॥ ४३ ॥
देति आशिखा म्रिदुल उचारा। 'सौगुन वधहु गुरू परिवारा'।
उचित करनि के सबि ही कीनि। सभि घर करि कराह बहु दीनि ॥ ४४ ॥
बूझ्यो गंग गुरू कहु आइ। 'हे सुत! सुत को नांव बताइ।
श्री नानक की क्रिपा उदार। कर्यो बधावनि मम परिवार' ॥ ४५ ॥
रिदे विचारति गुरू उचारा। 'अणी राइ इस नाम उदारा'।
सुनि करि सरब अनंदति होए। चहुं दिशि ते संगति गन जोए ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे '**पुत्र जनम**' प्रसंग बरननं नाम चतुर-पंचासति अंशु ॥ ५४ ॥

---

1. बढ़ी।

अंशु ५५

श्री बाबा गुरदित्ता की सगाई प्रसंग

दोहरा

इस बिधि बीत्यो समों बहु सतिगुर हरि गोविंद ।
करहिं उधारनि गन नरनि सुनि जसु आवहिं ब्रिंद ॥ १ ॥

चौपई

बीति गई बरखा रुति जबै । सरद सुंदरी दीपति तबै ।
दीपमाल को लखि आगवनू । चहुं दिशि के सिख तजि तजि भवनू ॥ २ ॥
इकठी करें गुरू की कार । दरशन गुर अभिलाखा धारि ।
वसतु अजाइब ले ले चले । आनि सुधासर मेला मिले ॥ ३ ॥
चारहुं बरन चारि आशरमी । दरशन हित आवति गुरु मरमी[1] ।
नर नारिनि को मिलि समुदाया । चहुं दिशि ते आवति मग छाया ॥ ४ ॥
राउ रंक अभिलाखति आए । निशकामी सहिकामी धाए ।
भगत सप्रेम किधौं ब्रहम-ग्यानी । दरसहिं जिन गुरु महिमा जानी ॥ ५ ॥
बासहिं सागर महिं दिन रैन । पट पालो भी आलो है न ।
काजर को कोठा बडि कारो । करहिं कार विच संझ[2] सकारो ॥ ६ ॥
तऊ श्यामता छुई न लेश । उज्जल पोशिश रहो हमेश ।
जेतिक महां अजमती नर हैं । गुरु को पिखि पिखि बिसमति उर हैं ॥ ७ ॥
परे जगत बिवहारनि ऐसे । हरख शोक उर छुयो न कैसे ।
आनि भर्‌यो मेला बडि पुरि मैं । उर अभिलाखी जे सतिगुर मैं ॥ ८ ॥
करहिं शनान सुधासर मांही । हरि मंदरि दरसहिं मुद पाही ।
दरब समरपहिं करि करि वंदन । परहि प्रेम कलि कलुख[3] निकंदन ॥ ९ ॥
दीप माल दिन कितिक अगारी । श्री हरि गोविंद करुना धारी ।
थान अकाल तखत के थिरे । फरश बिसाल डसावनि करे ॥ १० ॥
बैठे गादी पर छबि पावैं । चहुं दिशि चामर चारु ढुरावैं ।
कंचन दंड लिए थिर आगे । सिख समीप जिन मन अनुरागे ॥ ११ ॥

---

1. मर्म जानने वाले । 2. सांझ में । 3. कलुष ।

आनि आनि जोधा समुदाया। गुरु पग पंकज सीस निवाया।
सभा विखै बैठे बनि[1] बसत्रनि। कंचन लिपति गहे कर शसत्रनि ॥ १२ ॥
ब्रिंद मसंद धनी गन आए। संगति दरसति ग्रीव निवाए।
तबि श्री गुर दित्ता तहिं आयो। चामीक़र भूखन गन पायो ॥ १३ ॥
सबज़े[2] सब जे[3] हीरा मोती। अंगनि जेवर जगमग होती।
लीनि अंक श्री हरिगोबिंद। आइ गोद बुध चंद मनिंद ॥ १४ ॥
अंक क्रिशन परदुमन[4] सुहावति। देखि लोक इस भांति बतावति।
सभा बिखै होवति बड शोभा। तबि पिख करि मन काहि न लोभा ॥ १५ ॥
कमल पांखुरी आंखि बिसाला। म्रिग छौना सम हुइ चलचाला'।
इक रामा खत्री तहिं खरो। इकटक देखि रह्यो मनहरे ॥ १६ ॥
निज तनुजा की करनि सगाई। चहै करी पर कह्यो न जाई।
गज कीटी सम अंतर घनो। यांते मोन लाज मन सनो ॥ १७ ॥
उर महिं गुरू सुभाउ विचारा। इह नहिं चाहति धनी उदारा।
बसी प्रेम के करुना करिते। रंकनि को बहु आदर धरिते ॥ १८ ॥
चंदू शाहु दिवान महाना। त्याग्यो, नहीं कदाचित माना।
सिक्ख गरीबनि की ले सुता। किय सनबंध मान बहु दिता ॥ १९ ॥
इन ते सभि किछ ही बनि आवै। होति रंक नर राउ बनावैं।
इम बिचार करि अरज़ गुज़ारी। हाथ जोरि करि खरो[5] अगारी ॥ २० ॥
श्री गुरु हरिगोबिंद निहारा। अभिलाखी लखि बाक उचारा।
'किम तू खरो, कहा उर बाछे। कहो मनोरथ अबि तू आछें ॥ २१ ॥
तबि रामे निज बिनै सुनाई। 'मैं चाहति चित करनि सगाई।
खशट बरख की कंन्या मोरे। दासी करनि चहौं सुत तोरे ॥ २२ ॥
दीनवन्धु लखि बिरद तुहारा। सुकचिति चित ते कीनि उचारा'।
जेठे को सतिगुरु फुरमायहु। 'इस को आछे थान बिठायहु ॥ २३ ॥
माता को सुधि देहु जनाइ। जिम जानहि तिम करहिं सुहाइ।
पुरि अरु गोत सुनावनि कीजै। उचित अनुचिति सकल लखि लीजै ॥ २४ ॥
जेठा मात गंग ढिग गयो। सरब प्रसंग जनावति भयो।
'लेनि सलाह आप की जैसे। कीजहि सभि बिचार करि तैसे' ॥ २५ ॥
सुनति गंग मन आनंद पायो। 'इह आछी विधि बाक अलायो।
लछमी सदन प्रवेशहि आई। द्वार किवार न देहु बनाई ॥ २६ ॥

---

1. बन ठन कर। 2. पन्ना मोती। 3. जो। 4. प्रद्युम्न। 5. खड़ा।

इस मैं संसै करहु न कोइ। लेहु शगुण जिम रीति सु होइ।
जाति भली हेरहिं मतिवान। धन तो आवनि जानौ जानि ॥ २७ ॥
नगर वटाला है शुभ थान। तहिं के खत्री बिदत जहान।
सुनि जेठा गंग के वाक। जान्यो रिदे सराहति साक ॥ २८ ॥
आनि गुरू के निकटि सुनाई। 'कह्यो मात ने 'लेहु सगाई'।
दिज[1] ते आछो दिवस पुछावा। अपर समाज त्यारि करिवावा ॥ २९ ॥
आछो समो दिवस जिस आयो। मंगल सहत सु काज रचायो।
चंदन की चौंकी डसवाइ। श्री गुर दित्ता दीनि बिठाइ ॥ ३० ॥
नौ ग्रैह को अभिखेकनि करे। ब्रिंद मिले नर पिखि सुख धरे।
द्वार अगारी बाजे बाजति। सभि प्रकार के मगल साजति ॥ ३१ ॥
सुत ढिम सतिगुरु बैठे जाइ। तबि रामे को लीनि बुलाइ।
आइ समाज देखि करि नीका। रिदे प्रमोदति कीनिसि टीका ॥ ३२ ॥
अपर रीति सुंदर सभि करी। बहु अनवाइ[2] बदामनि गरी।
खारक आदिक मोदक ल्याए। सभि संगति महिं बहु बरताए ॥ ३३ ॥
पुरि की मिलि नारि पिक बैनी। पीन उरोजनि, पंकज नैनी।
ब्रिंद होइ गावति हरखाई। उतसव ते पूरन चहुं घाई ॥ ३४ ॥
पुन सुत को ले संग गुसाईं। श्री हरि मंदर ग्रीव निवाईं।
गन प्रसादि लीने संगि दास। खरे करावति भे अरदास ॥ ३५ ॥
तहिं बरताइ प्रदछना दै कै। आए वहिर मोद मन कै कै।
बहुर अकाल तखत के थान। संगति को दे दरशन दान ॥ ३६ ॥
संध्या भए गए निज मंदिर। करति अनंदति मंगल सुंदर।
निज आसन पर जाइ बिराजे। माता करति भई सभि काजे ॥ ३७ ॥
देनि लेनि को गन बिवहार। हरखावति धन पाइ उदार।
जहिं कहिं सुजस भयो भरपूर। बरनहिं सतिगुरु के गुन रूर ॥ ३८ ॥
दीप माल को मेला भयो। सभिहिनि इह मंगल दरसयो।
चहूं दिशिनि के सिख गन आए। क्या गिनती को कहै सुनाए ॥ ३९ ॥
सिरे पाउ सिक्खनि को दीने। रिदे मनोरथ पूरन कीने।
ब्रिंद मसंदनि को बडिआई। देकरि देशनि पठे गुसाईं ॥ ४० ॥
जो जिस देश रहै सो जावहि। गुर की कार बटोरि लिआवहि।
कौन कौन सो देश गिनीजै। अवनी मंडल सकल जनीजै ॥ ४१ ॥

---

1. द्विज। 2. मंगवाए।

सलितापति के टापू जेय। सिक्ख बसहि आवहिं धन देय।
पुरि ग्रामनि की गिनती कौन। सभिहिनि महिं सिक्ख्यनि के भौन ॥ ४२ ॥
जहां होहिं सिख परहै भीर[1]। तहां बनहि रच्छक गुरु धीर।
क्रिपा द्रिशटि ते कोटि उधारे। जिन को गिनि करि पाइ न पारे ॥ ४३ ॥
सभिहिनि की सुनि बिनती तूरनि। करहिं कामना उर की पूरनि।
ब्याप रहे सतिगुरु सभि देश। प्रेमी के अग संग विशेश ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे **'श्री बाबा गुरदित्ता की सगाई'** प्रसंग बरननं नाम पंच पंचासति अंशु ॥ ५५ ॥

---

1. संकट पड़े।

अंशु ५६

श्री अटल राइ उपजन प्रसंग

दोहरा

इम उतसव मेला भयो हरख्यो सभि परवार।
इक दिन बैठे मात ढिग सतिगुरु मुकति उदार ।। १ ।।

चौपई

'सुनहु पुत्र किस नीके थाई। खोजि करहु निज सुता सगाई।
इह कारज भी करिबे जोग। पठहु किितिक पुरि लागी लोग ।। २ ।।
जहां बिलोकहिं भलो ठिकाना। सो थल आनि सुनावहिं काना।
सामग्री संबंध की जेती। लेहि सदन ते गमनहि तेती' ।। ३ ।।
सुनि गुर कह्यो 'बनहि बिन बारि[2]। जहिं संजोग रच्यो करतार।
सो सुखेन ही हुइ अबि जाइ। रिदै मनोरथ आपि उठाइ ।। ४ ।।
कहि सुनि मात संग घर थिरे। निज प्रयंक पर पौढनि करे।
तबि दमोदरी सुत ले साथि। आई सेव करनि गुर नाथ ।। ५ ।।
हाथ जोरि करि बाक बखाना। 'पिखहु सुता हित नीक ठिकाना।
त्रिया मोहि मनु जहिं सुख पावै। हम हेरहिं आछे हरखावै ।। ६ ।।
सतिगुरु कह्यो 'संजोग रच्यो जहिं। सुख को प्रापति होहि बसहि तहिं।
उचित न इह चित चिंता करनी। परालबध सभि ते बड बरनी' ।। ७ ।।
सुनि दमोदरी उठि हरखाई। 'रहहु सुखी, बच[3] तुम सफलाई।
सुपति जथा सुख निसा गुज़ारी। उठि गुर मज्जे निरमल बारी ।। ८ ।।
दिवस चढे पुन लग्यो दिवान। दरशन करहिं बंदना ठानि।
सिख संगति को होवति ठांढे। को बैठहिं ढिग प्रेमी गाढे ।। ९ ।।
सभि दिशि देख्यो द्रिशटि चलाइ। बैठे, उठे जाहिं, को[4] आइ।
इक नर हेर्यो बालक साथि। दरबहीन पट मलिन अनाथ ।। १० ।।
जबि नेरे हुइ बंदन ठानी। सुनति सभिनि के गुरू बखानी।
भौन कौन, पुरि जाती कौन। किम आयहु कहु कारज जौन ।। ११ ।।

---

1. सरितापति, सागर। 2. विलम्ब। 3. वचन। 4. कोई।

सुनि सुकच्यो बंदे जुग हाथ। सभा बीच बोल्यो गुरु साथि।
'मल्ल पुरि बासहिं चिर काल। गए दरब ते थुरि इस हाल॥ १२॥
जाति खोसले खत्री अहैं। धरमा नाम मोहि को कहैं।
सपत बरख को बालक मेरा। साधू नाम धर्यो इह केरा॥ १३॥
सुनि सतिगुरु निज निकटि बिठायहु। आनहु खारक[1] बिप्र बुलायहु।
सुनि पिखि बिसमति भे नर सारे। 'कहा करति गुर रिदे बिचारे॥ १४॥
जबि दिज आयो कर्यो बखाने। 'सिस[2] के मुख दिहु खारक खाने'।
सुनि धरमे कर जोरि उचारा। 'तुम सगरे जग गुरू उदारा॥ १५॥
समरथ चहहु सु करहु, गुसाईं। को तुमरी समता नहिं पाई।
मैं अनाथ सभि शकति बिहीना। रंक दरब बिनु बसत्र मलीना॥ १६॥
करनि सगाई किम बनि आवै। समता सिंधु बूंद किम पावै।
कहिं कीटी कहिं बड गजराज। सुनति बात मुझे उपजति लाज॥ १७॥
रावर बंदन करनि सथान। बहु अजोग[3] किम करिहु बखान।
सतिगुरू कह्यो 'चित नहिं कीजै। रच्यो बिरंच[4] संजोग लखीजै॥ १८॥
इह सुत तेरो ह्वै बड भागे। भगत बिसाल प्रभू अनुरागे।
इस को दोश न लागहि कोई। अपर संदेह देहु सभि खोईं॥ १९॥
इम कहि जेतिक रीति सगाई। तहिं बैठे सभि गुरू कराई।
हेरि हेरि सगरे बिसमाए। 'सिक्ख रंक संजोग बनाए॥ २०॥
सभा उठी गुर मंदरि गए। सभि महिं इह प्रसंग बिदतए।
खत्री रंक पुत्र के साथि। करी सगाई तनिया नाथ॥ २१॥
सुनि दमोदरी गुर ढिग आई। अनिक[5] भांति की तरक उठाई।
कहति भई 'नहि कीन बिचार। पुत्री दीनसि रंक अगार॥ २२॥
खोज्यो निज समान नहिं थान। धनी बिसाल जु बिदत जहान।
कहहिं कहा पिखि कै नर सारे। आइ सबंधी जबहि निहारे॥ २३॥
सुनि श्री गुरु तिह धीरजि दीनि। 'सभि ते अधिक इसी कहु चीनि।
दिन प्रति आछो हुइ तबि जानै। अपर न पावति इसी समानै॥ २४॥
सुनि दमोदरी तूशनि होई। गंगा संग कही जिम जोई।
माता सुनि सुत बच बिसवासा। नहीं तरक हित कछू प्रकाशा॥ २५॥
सभि सुजान ते महिद सुजाना। कला निधान[6] पुत्र को जाना।
आछी होहि करीं है जैसे। भई सु भई फिरति नहिं कैसे॥ २६॥

---

1. छुहारा लाओ 2. शिशु 3. अयोग्य 4. विरंची, रचने वाला 5. अनेक 6. शक्तिशाली।

जानि भली माता किय मौन। मंगल करति भई गन मौन।
प्राति उठे सतिगुर हरखाए। चढि तुरंग पर वहिर सिधाए॥ २७॥
सुभट चढे गन गए अखेर। इत उत कानन महिं फिरि फेर।
छोरहिं बाज पंछीअनि पाछे। चीते धाइ म्रिगनि दिशि गाछे[1]॥ २८॥
स्वान बिसाल शूकरनि दौरे। घेरि घेरि हति करि तिन बौरे।
लगर, झगर, जुर्रे गन शिकरे। बहरी उडति खगनि को पकरे॥ २९॥
राज रिखिनि सम खेलि अखेरे। बन बिचरनि मुदि पाइ बडेरे।
पुरि मुरि आए गुरु उर हरखति। आयुध-बिद्या सुभटनि परखति॥ ३०॥
करति शिकार तुफंग प्रहारें। को भट कर गहि खडग संघारें।
तोमर तीरनि तूरनता[2] तर। करहिं दिखावनि चातुरता धरि॥ ३१॥
पैंदे खान बीर बल रासहि। आयुध विद्या कउ अभ्यासहि।
केतिक दिन बीते इस रीति। श्री हरिगोविंद पतित पुनीत॥ ३२॥
समें प्रसूत होनि को होवा। धाइनि को बुलाइ गन जोवा।
सदन बिखै गन दीपक बारे। दासी उतलावति[3] गति धारे।॥ ३३॥
जनम नानकी ते तबि लीनि। सुनि सुत भयो सभिनि मुद कीनि।
गंगा करति मंगलाचार। रिदे मुदति ब्रिद्धति परिवार॥ ३४॥
भोर होति लघु दुंदुभि धरे। बाजति सुनति सभिनि मुद भरे।
मंगति जन उतलावति आए। मात गंग कहि दरब दिवाए॥ ३५॥
नर नारी गन देति बधाई। ल्याइ दूबि गुर ढिग अरपाई।
उतसव करिबे की जे रीति। सभि गंगा करिवाइ सप्रीति॥ ३६॥
ब्रिध[4] संमति हुइ नाम बिचारा। 'अटल राइ' तबि गुरू उचारा।
'अटल समाधि करति इह रह्यो। यांते उर बिचार करि कह्यो'। ३७॥
अनगन दरब दीनि गुर दान। पाइ करहि नर सुजसु बखान।
श्री गुरु रामदास को पोता। दीन दुनी थंभि भार खलोता॥ ३८॥
देति कामना जग महिं सुख की। मूल उखारहि बिखम सु दुख की।
पर उपकारी जोधा बली। सिक्खनि को बखशति गति भली॥ ३९॥
दिन प्रति अधिक बखश दे जौन। सुरपति बपुरा आगै कौन।
जिस को नाम लिए जम त्यागै। दरशन ते कल-मलगन भागें॥ ४०॥
राज जोग बरतहि जग मांही। इक रस ब्रिती उथति कबि नांहीं।
इम सतिगुरू कै भा परिवार। उपजी एक सुता, सुत चारि॥ ४१॥

---

1. गए। 2. बहुत जल्दी। 3. उतावली होती है। 4. बाबा बुड्ढा के परामर्शसे।

साहिब-ज़ादे रूप सु रूरा। जिनते भवन लगहि जनु पूरा।
ले पौत्रनि को गंग दुलारहि। भूखन बसत्र अनिक तन धारहि ॥ ४२ ॥
खान पान दे अपने हाथ। पारति पौत्रनि प्रीती साथ।
हेरि हेरि हरखहिं गुरु बस। सोढी कुल के जनु अवतंश ॥ ४३ ॥
अनिक दास सेवा महिं रहैं। अंक रखैं वहिरंतर चहै।
इम सतिगुर के सदन अनंद। दिन प्रति होवति ब्रिंद बिलंद[1] ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे **'श्री अटल राइ उपजन'** प्रसंग बरननं नाम खसट पंचासति अंशु ॥ ५६ ॥

---

1. उच्चतर।

अंशु ५७

कौलां को प्रसंग

दोहरा

केतिक दिन पशचाति ते कौलां सुनति अनंद ।
चहति बिलोकनि गुरू-सुत उर अभिलाख बिलंद ॥ १ ॥

चौपई

चढि डोरे पर तबहि सिधारी । गुरु घर प्रविशी आनंद धारी ।
गंगा को पग बंदन कीनी । देखि तांहि को आशिख दीनी ॥ २ ॥
तीनहुं गुरु पतनी तबि हेरी । सभि को नमो कीनि तिस बेरी ।
हित सों हेरि परसपरि बैंसी । बोलति मधुर गिरा मुख तैसी ॥ ३ ॥
मान सहत बच कहति बिठाई । लखहिं सु प्रीति रिदे करि आई ।
दई बधाई सभिनि सुनाइ । मानी तिनहुं अनंद उपाइ ॥ ४ ॥
खेलति साहिबजादे चारि । तन सुकुमार सु मूरति चारु ।
पंचमि कंन्या देखनि कीनि । बसन बिभूखन धरि दुति भीनि ॥ ५ ॥
करि करि प्रेम अंक मैं लेति । हेरि हेरि करि आशिख देति ।
श्री गुरुदित्ता दौरति फिरैं । बजति बिभूखन रुण रुण करैं ॥ ६ ॥
सनै सनै सूरजमल जांहि । पाइनि भयो बडो बल नांहि ।
अणीराइ अंङण रिङ माण[1] । अटलराइ नहिं भा तन त्राण ॥ ७ ॥
बीरो खेलति दासी गोद । इम संतति के लहति बिनोद ।
सभि सों कौलां करति सनेह । मन महिं कहि बड-भागनि एहि ॥ ८ ॥
पूरब जनम पुंन बड कीने । जिनहुं सकल सुख इस बिधि दीने ।
पति पायहु सभि जग सिरमौर । जिह सम और नहीं किह ठौर ॥ ९ ॥
बहुर पुत्र सुंदर अस पाए । जिन को देखति चित हुलसाए ।
क्यों न होहि ऐसे दुतिवान । जिन को पित सभि गुणनि महान ॥ १० ॥
धंन जनम इनहुं को होयहु । पतिसुत को सुख इम जिनि जोयहु ।
रिदे बिचारति प्यार करंती । हाथनि सो गहि गोद धरंती ॥ ११ ॥

---

1. घुटनों के बल रींगते हैं ।

पिखति पिखति चित महिं फुरमाई। मुझ ते संतति क्यों न उपाई।
तिन ते उपजहिं पुत्र प्रवीना। तन सुंदर बल महिं हुइं पीना॥ १२॥
अबि लौं मैं न जाचना कीनी। यांते रही महां मति-हीनी।
जिसते चहुं दिशि के नर नारी। जाचहिं बनि कै दीन अगारी॥ १३॥
केतिक कहति 'न दारिद रहे। बडे पदारथ हम अबि लहे'।
तन अरोगता जाचति केई। सुत को बर ले, बिन सुत जेई॥ १४॥

इत्यादिक[1] वथु गिनीयहि कौन। राउ रंक जाचहिं गुरु भौन।
क्रिपा द्रिशटि अवलोकति देति। ले ले संगति जाति निकेत॥ १५॥
मैं प्रारथना करति अगारी। हुइ प्रसंन बर देति उचारी।
पिख गुरु पुत्रनि को मुद होई। इम चितवति उर ब्याकुल सोई॥ १६॥
बैठ्यो बहुत काल नहिं गयो। तूरनि मन अकुलावति भयो।
उठति मात को कीनसि नमो। तीनहुं को बंदति तिह समो॥ १७॥
आई अपने सदन दुखारी। बैठी सोचति दीन बिचारी।
जानि तुरकनी मोकहु त्यागा। करति कपट को, नहिं अनुरागा॥ १८॥
सभि ते मुझ को जानि मलीनी। प्रीति रिदे की नहिं मम चीनी।
मन बांछति संगति बर पावै। जो कबहु करि दर्शन आवै॥ १९॥
मम सम प्रीत होहि किस माहूं। तिन बिन मन छिनि जाति न काहूं।
निस दिन मन महिं बास करति हैं। तिन महिं मन बिसराम धरति है॥ २०॥
बांछत बर मुझ देहिं न कैसे। प्रेम-अधीन बिरद जिन है सो।
सरब भांति की शकति बिसाला। जिन को नाम सकल सुख वाला॥ २१॥
धिक मोकहु नहिं कीमति जानी। कबहु न जाच लीनि मनु भानी।
आप प्रसंन होहि नहिं दीनो। मंद भाग यांते निज चीनो॥ २२॥
कपट कर्यो मुझ सों गुरु पूरन। जिन को प्रेम होहि उर पूरन।
इम बिचार करि रिसि को धारी। लोचन जल बूंदनि को डारी॥ २३॥
जेवर जबर जवाहर लागे। अंगनि ते उतारि करि त्यागे।
अंङण परी, बिकीरण[2] सोहै। जथा गगन महिं उडगन जाहैं[3]॥ २४॥
रंगदार अंबर-बर गेरें[4]। मोटि मलिन पट ले तिसि बेरे।
खान पान को त्यागनि कीना। म्रिदुल प्रयंक छोरि तबि दीना॥ २५॥
कै बर सुत को लैहों पाइ। नाहिं त जीवनि जाइ बिलाइ।
अवनि सयन करि नयन सनीर। सकट रिसि ते होति अधीर॥ २६॥

---

1. वस्तु। 2. विकीर्ण, बिखरे हुए। 3. तारे दिखाई देते हों। 4. गिराए।

अंतरिजामी जानहिं आप। बूझहिं आइ भयो जिमि ताप।
जबहि लेहिं सुधि मोहि उठावैं। बांछति दैहैं उर हरखावैं॥ २७॥
परी रही, भर संध्या काल। अधिक निसा महि भई बिहाल।
तरफति दुखित प्राति हुइ आई। सम संमत के रैनि बिताई॥ २८॥
दासी अनिक उठावति बोलति। 'क्या दुख है' कहि इति उति डोलति।
बूझि रही नहिं कछू बतावै। 'हरता पीर[1], पीर[1] मम पावै॥ २९॥
पीरनिपीर[2] सरब ही जानैं। इम कहि बहुर तूशनी ठानैं।
इति सतिगुरु निति नेम रखंते। जाम जामनी जबहि जगंते॥ ३०॥
आसावारि सुनहिं दरबार। बहुर सुखमनी पाठ उचारि।
बैठि तखत दीवान लगावैं। दैं दरशन सिख संगति आवैं॥ ३१॥
बानी पठहि ग्रिंथ की ब्रिंद। इसि प्रकार निति नेम बिलंद।
पढति न बोलहिं किह सों बैन। पिखहिं न इति उति थिर करि नैन॥ ३२॥
तिस दिन कौलां को दुख जाना। खैंचि प्रेम की भई महाना।
थिर्यो न जाइ न मन थिर होइ। प्रेमी को दुख सहैं न सोइ॥ ३३॥
गुरु के ध्यान-पराइन भई। गुर मूरति मन थिरता लई।
इम जोगी के ह्वै न समाधि। लई प्रेम नै दिढ करि बांधि॥ ३४॥
प्रीति करे व्याकुलता धारी। नहीं जाति प्रभु पासि सहारी।
केतिक रह्यो सुखमनी पाठ। उठे तुरति ही तजि सभि ठाठ॥ ३५॥
भगति वतस जो बिरद उदारा। उर गाढो करि अंगीकारा।
अपर नेम पण त्यागे जाइ। प्रिय को हित नहिं तज्यो कदाइ॥ ३६॥
गए वेग ते घर तिसि घरी। कौलां कौज[3]-बिलोचन परी।
करी बिलोकनि, बैठे तहां। पठ्यो पाठ जेतिक थो रहा॥ ३७॥
कर्यो संपूरन सीस निवायो। पुन दासी को निकटि बुलायो।
'क्यों इह परी, कहा इसि होवा। बिगर्यो कौन काज इनि जोवा'॥ ३८॥
हाथ जोरि तिनि दशा बताई। 'प्रथम आपके सदन सिधाई।
तहिं ते ही ह्वै करि दिलगीर। परी आनि नहिं भाखति पीर॥ ३९॥
हरता पीर लखहि मम पीर। सभि ते दीरघ पीरनि पीर।
खशट जाम इसि भांति बिताए। कालि दुपहिरी ते दुख पाए॥ ४०॥

---

1. पीड़ा। 2. गुरुओं के गुरु। 3. कमल-विलोचन।

खान पान परयक सुहावनि । बसन बिभूखन करे बगावनि[1] ।
दीरघ स्वास लेति दुख भरे । अंस[2] बिलोचन ते जलि भरे ।। ४१ ।।
रावर को निज पीर बतावै । बूझहु आपि हवाल[3] सुनावैं ।
श्री हरिगोविंद सुनि करि गाथा । बूझ्यो चहिति तिसी के साथा ।। ४२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे **'कौलां को प्रसंग'** बरननं नाम सपत पंचसती अंशु ।। ५७ ।।

1. फेंकना । 2. आंसू । 3. दशा ।

अंशु ५८

कोलसर प्रसंग

दोहरा

बरनी जाइ न कछु दशा धरनी लोटति दीह।
हरनी[1]—द्रिग तरनी[2] परी गुरू लखी सपीह[3] ॥ १ ॥

चौपई

'क्यों धर परी नीर भरि बरनी[4]। भई बिबरनी चंपक-बरनी।
किसि ने तोरि अनादर कीनो। कहु कारन, क्यो बेख मलीनो ॥ २ ॥
बांछति कहति प्रथम हम पासि। सो करि देते कारज रासि।
क्यों इतनो तन पाइ बिखादू। बिना आज ते निति अहिलादू' ॥ ३ ॥
सुनि म्रिदु वाक उठी कर जोरि। करि निज मुख सतिगुरु की ओरि।
'तुम समरथ सभि रीति गुसाई। कहि सभि जग अरु मैं लखि पाई ॥ ४ ॥
लाखहं देशनि ते सिख आवें। मन बांछति तुम ते बर पावें।
पूरब जनम भाग मम नीका। होनि हुतो निसतारो जीका ॥ ५ ॥
जिसि ते अंचर गह्यो तुमारा। महां नरक ते मोहि उबारा।
जनम तुरक मम अविगति[5] जाती। सो तजि करि मैं तुम संगाती । ६ ॥
जबि लौ जगत रहै इह बन्यो। तबि लौ रावर को जस सुन्यो।
मैं बिचारि नीके उर जोई। नहिं प्रलोक की चिंता कोई ॥ ७ ॥
इकि चिंता इसि जग की भारी। सो न मिटहि जे शरणि तुमारी।
तौ निरभाग भई तिसी दिशि ते। मुहि नहिं देहिं लेहि जग जिसि ते' ॥ ८ ॥
कह्यो गुरू 'क्या काज तुमारा। जिसि करि अस संकट तन धारा।
कहु अबि हम सों, पूरन करौं। नाहक किमि संचित दुख भरो' ॥ ९ ॥
निज परि क्रिपा जानि सतिगुरु की। कहति भई निज चिंता उर की।
जिमि रावर को जस जग सारे। बिदति भविख्यति रहै उदारे ॥ १० ॥

---

1. मृगलोचनी। 2. तरुणी। 3. जान बूझ कर। 4. पलकें। 5. खोटी।

तिमि निज नाम उजागर काखौं[1]। पुत्र आपि ते हुइ अभिलाखौं।
रहहि सांझि जग महिं तबि मेरी। जानहिं नर संतति जबि हेरी ॥ ११ ॥
इसि दुख करि दुखीआ मन मोरा। हरहु, भरोसा है इक तोरा।
श्री हरिगोविंद सुनति बखाना। कहा मनोरथ तैं उर ठाना ॥ १२ ॥
नाशवंत जग महिं चहिं नामू। क्यों न संभारति आगलि धामू[2]।
सुमतिवंत बड से हैं प्रानी। जगति वाशना[3] जिनहु मिटानी ॥ १३ ॥
क्या सुत बित ते सरहि अगारी। मरे न आवहिं कबहुं निहारी।
हंता ममता मिथ्या धारति। जगत पदारथ हित भव[4] हारति ॥ १४ ॥
कहा पुत्र ते कारज सरहि। त्यागि चलहिं एकलि जबि मरहिं।
हम संगति को लाभ इही है। जगति वाशना होति नहीं है ॥ १५ ।
क्या तुछ वसतू पर ललचाई। इतो खेद मन धर्‍यो जनाई।
हम सो प्रेम इतो तुम कर्‍यो। अबि लौं नहीं मोह परहर्‍यो ॥ १६ ॥
सुनि कौलां पुन गुर संग कह्यो। 'आपि जथारथ मम हित चह्यो।
तऊ सुनहु मैं गमनी मंदिर। पुत्र पिखे रावर के सुंदर ॥ १७ ॥
जिनि जिनि ते सुत जनमे अहैं। तिनि के नाम जगत महिं रहैं।
मरे पिछारी नाम न मेरो। किमि को लेहि, नहीं किछ हेरों ॥ १८ ॥
तुमरे तन सों जिमि तन संगति। तथा नाम भी रहि इमि मंगति।
रावरि नाम अटल जुग चारि। सिमरहिं जग ते, करहिं उधार ॥ १९ ॥
तिमि मेरो भी राखहु नामू। इही वाशना उर, निशकामू।
अपर मनोरथ उठति न कोऊ। मन खै[5]-हीन वाशना होऊ ॥ २० ॥
नाम संगि मैं नाम थिरावौं। इही कामना को अबि पावौं।
दीजहि पुत्र मोहि कहु प्यारे। नांहि त मरण मोहि मन धारे ॥ २१ ॥
तीनहु पतनी को जिमि नामू। बिदतहिं जगति बिखै अभिरामू।
तिमि ही मनसा मेरी जानो। परहु क्रिपा करि, प्रेम पछानो' ॥ २२ ॥
सुनि सतिगुरु कहि, दे उर धीरि। 'यहि सुखेन मिटिहै तव पीर।
तिनि तीनहुं ते तेरो नामू। वडो बिदति करिहैं अभिरामू ॥ २३ ॥
उठहु शनान करहु हरिखाइ। पहिरहु बसत्र सु भोजन खाइ।
तेरे पुत्र होहि जग ऐसे। नाम लेहि तुव सभिहूं जैसे ॥ २४ ॥
नाम तोहि परि ताल लगावौं। होहि कौलसर बहु बिदतावौं।
करहिं शनान नाम तुहि लैहैं। सर जबि गिनहि तहां गिन लैहैं ॥ २५ ॥

---

1. आकांक्षा करती हूँ। 2. परलोक। 3. वासना, वाञ्छना। 4. हस्ती, जन्म। 5. क्षय।

सदा अटल होवहि, नहिं जाइ'। सुनति उठी कौलां हरखाइ।
तुम मेरे हित के हो करिता। अदभुत लखियति हैं तुव चरिता॥ २६॥

यांते मैं न करौं हठ कोई। तुम को आछी कीजहि सोई'।
इमि कहि हरखति कीनि शनाने। सतिगुरु आए अपनि सथाने॥ २७॥
ब्रिध सों कह्यो 'ताल की त्यारी। करिवावहु तूरनता धारी।

जो जो चहीयहि सभि किछु लेवहु। चूने ईंट हेति कहि देवहु'॥ २८॥
सुनि साहिब ते बाक उचारा। 'जो तुम रचहु सु परउपकारा'।
इमि कहि सो दिन दियो बिताई। अगले दिवस गए सुखदाई॥ २९॥
सिख मसंद संगति बहु साथि। खरे भए चलि तिस थल नाथ।
प्रथम महूरति आपि करायो। पुनि संगति सों बच फुरमायो॥ ३०॥

'करहि तालकी कार जु आइ। मन बांछति फल को सिख पाइ'।
पुन ब्रिध[1] बैठि कार करिवावहि। जो चहीयति सो तुरति दिवावहि॥ ३१॥
दरशन हित संगति जबि आवै। सुनि महिमा को खनि खनि जावै।
नाम कौलसर कहि बिदतायहु। इम कहि कौलां को समुझायहु॥ ३२॥

'देश बिदेश बिखै तुव नामू। फैलहि तीरथ हुइ अभिरामू।
पर उपकार जगति पर होयो। बहु सुख पावैं सर ते जोयो॥ ३३॥
सुनि कौलां मन भई अनंद। खन्यो ताल नीवों सु बिलंद।
इह प्रसंग तौ इस बिधि भयो। रामा करि सबंध घरि गयो॥ ३४॥
निज पतनी सों गाथ सुनाई। 'गुरु सुत सों किय सुता सगाई'।
सुनि सुख देई भई अनंदा। बडे भाग ते मिले मुकंदा॥ ३५॥
गुरू पुत्र को ब्याहनि आवैं। नगर लोक सगरे दरसावैं।
सभि परि भयो तोरि उपकारा। अरु आछो निज काज सुधारा॥ ३६॥

बीत गए जबि तीन महीने। आयो माघ भले दिन चीने।
निज पतनी सों कीनि सलाह। करि दीजहि तनुजा को ब्याह॥ ३७॥
पांधे ते सुधाइ करि साहा। लिखि भेज्यो सतिगुरु के पाहा।
आयो दिज आशिख को दीनि। 'कित ते आयो, बूझिनि कीनि॥ ३८॥
सुनि बोल्यो 'रामे मुझ भेजा। साहा सतिगुरु के ढिगि लेजा।
नगर बटाले ते चलि आयहु। इसि हिति करि गुर दरशन पायहु॥ ३९॥
उदै भाग नर के जबि होइ। तबि रावर कौ दरशन जोइ।
रामे कही बंदना करनि। बिनति सहत आपि के चरन'॥ ४०॥

---

1. बाबा बुड्ढा।

दिज ते ले पाती पठिवाई । 'मास विसाख महां सुखदाई ।
साहा[1] मैं आछो सुधिवायो । अंगीकार तुमहि बनि आयो' ।। ४१ ।।
सतिगुर के मंदिर सुधि गई । सभि सुनि करि मन मोदित भई ।
गंगा कह्यो 'काज भा आछो । उतसव देखनि को वहु वांछों' ।। ४२ ।।
दिज की सेव सौंपि करि गए । सतिगुर मंदिर प्रापति भए ।
अति प्रसंन हुइ बूझनि कीने । कौन मास को साहा दीने' ।। ४३ ।।

दोहरा

श्री गुरु हरि गोबिंद जी भाख्यो सभनि सुनाइ ।
मास विसाख इकीसवीं सोध्यो लिख्यो बनाइ ।। ४४ ।।
सुनि सभि बिखै अनंद भा मंगल महिद पसंग ।
सहत सनूखा तीन के रिदे उमंगति गंग ।। ४५ ।।
जीत मंगलाचार के पिक बैनी मिलि गाईं ।
गुरु कै उतसव बिदतिओ सुनि सुनि सखि हरखाइ ।। ४६ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे **'कौलसर प्रसंग'** बरननं नाम अशट-पंचासति अंशु ।। ५८ ।।

1. महूर्त ।

अंशु ५९
श्री गुरदित्ता ब्याह प्रसंग

दोहरा

दिन दोइकि दिज को रख्यो लाग दरब को दीन ।
केतिक दिन बीते प्रभू त्यारि समाज सु कीनि ॥ १ ॥

चौपई

दे दे दरब मसंद पठाए। सरपी सिता बटोरति ल्याए ।
सूखम चावरु चारु लंमेरे। तिमि गोधूम जहां शुभ हेरे ॥ २ ॥
जेतो खरच लख्यो मन मांही। दुगन वसतु ल्यावति भे तांही ।
ब्रिंद कराहे दए चढाइ। शुभ पकवान पाक समुदाइ ॥ ३ ॥
प्रथम थार-गन[1] भरि करि ल्याए। ब्रिंद सेवकनि ते उचवाए ।
श्री दरबार बंदना कीनि। फिरे प्रदखना चारहु दीनि ॥ ४ ॥
ब्रिध साहिब, भाई गुरदास। इनि ते करिवाइसि अरदास ।
सरब प्रसाद ब्रतावनि[2] करे : बहुर निकेत आइ हित धरे ॥ ५ ॥
आग्या करी 'सबंध जहां जहिं। गन पकवान पठाइ तहां तहिं ।
सगरो मेलि[3] हकारनि करो। इसि कारज की बिलमि न धरो ॥ ६ ॥
प्रथम खडूर रु गोइंदवाल। गंगमात ने पठी बिसाल ।
मंडिआली रु डरोली डल्ले। दे पकवान दूत गन घल्ले ॥ ७ ॥
राम दास पुरि महिं घर सारे। पठि करि तिनहुं अनंद को धारे ।
अपर जि मंगल अनिक प्रकारे। करति रहे जिमि गंग उचारे ॥ ८ ॥
बिधीए को सभि सौंप समाजा। करे अनेक व्याह के काजा ।
सरब रंग के तंबू घने। रेशम की डोरनि सों बने ॥ ९ ॥
तिन महिं फरश गिलीम[4] ते आदि। करि कै त्यारि रखी हित शादी ।
ज़ीन तुरंगनि लिपटे ज़री। ऊपरि चारु करी बिसतरी ॥ १० ॥

---

1. बहुत से थाल। 2. वितीर्ण। 3. सम्मेलन के सदस्य गण, संबंधी। 4. गलीचे।

सुभटनि को पोशिश बनवाई। बहुति बिभूखन लीनि घराई।
धन अनगन जिनि किन गुरु घरते। ले ले सकल समाजनि करते॥ ११ ॥
जबि कुछि त्यारि होहि बनिवावति। श्री सतिगुर को जाइ दिखावति।
रहि जबि गए कितिक दिन शेख। आदि पहूच्यो मेल अशेख॥ १२ ॥
दातू अपर मोहरी आए। वनिता नंद, संगि निज ल्याए।
दया कुइर नाराइण दास। दंपति आए करति हुलास॥ १३ ॥
सतिगुरु करि कै बहु सनमाने। जानि थानि बड बंदन ठाने।
बहुरि गई सभि गंगा पासि। मिलि मिलि गरसों प्रेम प्रकाश॥ १४ ॥
सुनि दमोदरी मात पिताए। उतिकंठा जुति अंक मिलाए।
क्रिशन चंद धनवंती आइ। मिलि गुरु सो सभि गरे लगाए॥ १५ ॥
द्वारा भागन के जुति आयो। मरवाही सों मिलि सुख पायो।
सगरो सतिगुरु को परवारू। जेतिक मेल मिल्यो हित धारू॥ १६ ॥
सिंधु अगाध अनंद बिलंदा[1]। क्रीड़ति तिसि महिं मिलि करि ब्रिंदा।
श्री गुरदित्ता बीच बिठावें। सपति सुहागणि नेह[2] चढावें॥ १७ ॥
मरदन करहिं उबटणो अंग। गावति मंगल गीत उमंग।
अपर सरब करि कै कुल रीति। मिलि मिलि देखति हैं चित प्रीत॥ १८ ॥
गुरु आग्या ते सकल बराती। भए त्यारि[3] सजि सुंदर भांती।
बसन बिभूखन पाइ घनेरे। बने जु खरचे दरब घनेरे॥ १९ ॥
लघू दुंदभि बाजति शहनाई। पटह निशान शबद समुदाई।
भाट नकीब उचारति खरे। लेनि देनि जिति किति नर करे॥ २० ॥
गुरू पुत्र गुरदित्ता तबै। पोशिश पीत अंग धरि सबै।
शुभति सेहरा सुंदर माथे। बांधि कंगणा हाथहिं साथे॥ २१ ॥
श्री हरि मंदिर बंदन करि कै। ताल समेति प्रक्रमां फिरि कै।
भए अरूढनि चले अगारी। संगि सुंदरी शोभति सारी॥ २२ ॥
चली बरात चढावनि आगे। गावति गीत मोद मैं पागे।
श्री हरि गोबिंद चढे तुरंग। सजी चमूं चाली गन संगि॥ २३ ॥
धौंसा की गंभीर धुंकारनि। दुहरी चोब करी जबि मारनि।
संयदन[4], सकट[5] अनिक ही चले। सिवका[6] सजति ज़री झलमले॥ २४ ॥
थाती[7] ब्रिंद दरब की लीनि। जेशट पुत्र ब्याह को चीन।
तीनहु नुखा गंग ले संगि। अपर नारि सगरी शुभ अंग॥ २५ ॥

---

1. विशाल। 2. स्नेह, तेल। 3. तैयारी। 4. रथ। 5. छकड़ा। 6. पालकी। 7. थैली।

करि कुल रीति बराति चढाई। अधिक अनंदति आलय आई।
ले सतिगुर सुत संगि ससैना। चलति सकल के हेरति नैना॥ २६॥
मारग उलंघि कितिक जबि गए। संध्या समै सिवर सभि किए।
तहिं सथान श्री नानक केरा। ब्याहनि जाति कर्यो शुभ डेरा॥ २७॥
तहां करी बंदन सभि जाइ। बूझे 'किस थल' गुरू बताइ।
जथा जोग तहिं खाना दाना। सभिहिनि कीनि अनंद महाना॥ २८॥
वाहन सगरे बहु त्रिपताए। करि बिसराम सु निसा बिताए।
जाम जामनी जबहि निहारि। लगी चोब धौंसा धुंकार॥ २९॥
सुनति उठे सभि त्यारी करी। सौचि शनान जथा रुचि धरी।
निज निज वाहन काछनि[1] करे। पुन सतिगुर असवारी करे॥ ३०॥
चलनि समै बाजे समुदाई। पटह निशाननी धुनि उठवाई।
तुररी, ढोल, बंसरी घनी। झांझ, नफीरी नादति सनी॥ ३१॥
चली बराति उमडि करि ऐसे। नीर, प्रवाह बेग जुति जैसे।
सभि मन की अभिलाखा धारैं। कबि[2] ढुकाउ[3] को जाइ निहारैं॥ ३२॥
उति पुर के सगरे नर नारी। बिचरति इति उति हरखति भारी।
पिखहिं बरात गुरू की आवै। दरशन करि लोचन सफलावैं॥ ३३॥
चलति सुभट गन छुटहिं तुफंग। करहिं कुवाइद बिद्या संगि।
मनहु कुरंग तुरंग कुदावति। बागनि[4] फेरि फेरि दिखरावति॥ ३४॥
बसत्र शसत्र ते सजति बराती। दिपहिं बिभूखन सुंदर कांती।
करति बिलास पहूचे जाई। कोस वटाला रह्यो जदाई[5]॥ ३५॥
उतरे सतिगुरु संघनी छाया। देखति टिके मनुज समुदाया।
जहिं जहिं जिसि ने छाया हेरी। उतरि परे सगरे तिसि बेरी॥ ३६॥
तुपकनि शलख मुदति चलिवाई। दीह[6] अवाज उठी समुदाई।
पुन सभि बादित[7] की धुनि ऊंची। उठी अधिक पुरि जाइ पहूंची॥ ३७॥
रामा करति प्रतीखनि आगे। सुनति मनो तिसि छिन नर जागे।
सगरे उठति भए ततकाला। हित बरात के काज संभाला॥ ३८॥
भरी कावरां[8] गन पकवाना। सकल भांति के स्वाद महाना।
तत छिनि दे करि नर परधान। भेज्यो सतिगुर के अगवान॥ ३९॥
तूरनि पहुंच्यो आनि हजूर। धरि आगे कावर गन रूरि।
बंदन करि दरशन को देखा। भलो समाज सकल[9] अविरेखा॥ ४०॥

1. कसे। 2. कब। 3. आगमन। 4. घोड़ों की बागें। 5. जभी। 6. दीर्घ, ऊंची। 7. बाजे। 8. बहिंगी। 9. देखा।

'महाराज चालो अबि पुरि को। दिहु अनंद ब्रिंदनि के उर को।
सभ बरात महिं सो बरताइ। स्वाद सराहति बहु शुभ खाइ ॥ ४१ ॥
जाम दिवस जबि देखा शेखि। कर्‍यो हुकम सतिगुरू विशेख।
'सरब त्यारि हूजहि करि बाने। बसत्र शसत्र सजि कै सवधाने' ॥ ४२ ॥
जहिं कहि कह्यो नकीब उचारि। निज निज वाहनि बनि असवार।
तिसि छिनि मन आनंदति होइ। करनि ढुकाव जानि सभि कोइ ॥ ४३ ॥
बंके छैल छत्रीले छाए। बसत्र शसत्र सुंदर तनु पाए।
मुख मंडल जिनि कुंडल डोलति। मुसकावति आपसि महि बोलति ॥ ४४ ॥
श्री हरि गोविंद चढे मतग। दमकति झूल ज़री गन संगि।
घंटनि गन को चलि ठनकारे। रंग अनिक संगि चित्रति सारे ॥ ४५ ॥
साईं दास हकार्‍यो जाति। चढहु खवासी परि पशचाति
कह्यो 'आपि साहिब हो महां। मैं सेवक को सेवक अहा ॥ ४६ ॥
किमि बैठनि महिं समता करौं। अति अजोगता कैसे धरौं।
श्री हरि गोविंद निकटि बुलावा। भुजा पकरि पशचाति चढावा ॥ ४७ ॥
दातू स्यंदन महिं चढि चाला। अपर तुरंग अरूढे जाला।
सिवका शुभति ज़री दमकावैं। चढ्यो मोहरी अग्र सिधावैं ॥ ४८ ॥
क्रिशन चंद स्यंदन महिं चर्‍यो। द्वारा संगि मोद उर भर्‍यो।
इत्यादिक वाहन परि बने। सकल बराति कहां लगि गिने ॥ ४९ ॥
कंचन रजत ज़ीन हय सोहैं। तिनि परि सुभट अपार अवरोहैं।
बन करि चढ्यो नराइणदास। बरखावनि हित ले धन पासि ॥ ५० ॥
अपर मसंदनि बिधीआ आदि। गेरनि हित धन ले अहिलाद।
कहिं लगि गिनीयहि अपर समाजा। ले करि चढे गरीब-निवाजा ॥ ५१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पचम रासे '**श्री गुरदित्ता ब्याह**' प्रसंग बरननं एकोनशशठी अंशु ॥ ५९ ॥

अंशु ६०

श्री गुरदित्ता ब्याह प्रसंग

दोहरा

सतिगुर करनि ढुकाउ को चढे बराति सजाइ।
बादित बाजे अनिक ही पटह ढोल शरनाइ ॥ १ ॥

चौपई

झांझ नफीर बंसरी बाजै। धौंसा धुकारति घन गाजै।
उशट्र परि सुथरी इकि ओर। कही बाति नहिं सुनीयति और ॥ २ ॥
परहि तुरंगनि के धर पौर। स्यंदन चक्र शबद तिसि ठौरि।
जहिं कहिं धुनि बिसाल ते पूरी। बनी बरात सुहावति रूरि ॥ ३ ॥
होति तुफंगनि ब्रिंद अवाजे। ऊचे हयनि हिरेखा गाजे।
बरखावति धन तहिं ते चाले। संगति जन अनगन मिलि जाले ॥ ४ ॥
ब्रिद मसंद करहिं धन बरखा। घन सम लेनि हारि गन परखा।
पहुंचे निकट नगर भा सागर। सभि नर के भा छोभ[1] उजागर ॥ ५ ॥
मिलि मिलि ब्रिंद अधिक उमडाए। मनहुं तरंग उतंग उठाए।
चारु चंचला[2] सी रुचि चंचल। कंचन मंडल जरी सु अंचल ॥ ६ ॥
चढी अटारनि परि चमकावैं। जनु बड़िवानिल लाट उठावै।
नगर कोटि बेला तजि तूरनि। फैले नर जल वहिर सपूरन ॥ ७ ॥
सुंदर रांका चंद मनिंद। अति दुति जुति श्री हरिगोविंद।
सरब बरात चंद्रिका होवा। छोभति पुरि सागर जबि जोवा ॥ ८ ॥
मच्यो कुलाहल धन बरखंता। कर्यो ढुकाउ गुरू भगवंता।
बहुति रंग के अग्र निशान[3]। धुनि ऊची ते बजति निशान[3] ॥ ९ ॥
पुरि नर नारी हेरति हरखे। जनु घन उमडि घुनडि गन बरखे।
बढवा परि चढि श्री गुर दित्ता। ससुर सदन पहुंचनि चहि चित्ता ॥ १० ॥
तबि रामे गन लई अकोर। आयो मिलिनि हाथ को जोरि।
सतिगुरु के पाइनि परि पर्यो। नहिं गर मिल्यो अदाइब कर्यो ॥ ११ ॥

1. उमग। 2. बिजली। 3. (i) झंडे (ii) धौंसे।

नहिं मानहि नर बहुत अलावा। गहि भुज गुर ने गरे लगावा।
करि सभि रीति हट्यो जबि पाछे। चह्यो ढुकाउ करनि तबि आछे॥ १२॥
धन बरखावति पहुंचे जाइ। हेरति पुरि नर उर हरखाइ।
श्री गुर दित्ता द्वार खरोवा। साजि आरती सभि प्रिय होवा॥ १३॥
दूलो करहिं सराहनि सारी। 'हे अलि जिमि रामे सुकुमारी।
तस पति मिल्यो जियह जुगवारी। इह जोरी बिधि अधिक सुधारी'॥ १४॥
लौकिक वैदिक रीति भलेरी। करि सभि हटे पाछि तिसि वेरी।
डेरा करिवाइसि शुभ थानु। उतरि परे सगरे तजि जानु[1]॥ १५॥
ततछिन रामे पठे बुलाइ। प्रथम तुरति लिहु भोजन खाइ।
बहुरु समां फेरणि को होइ। इमि सुनि हरख उठे सभि कोइ॥ १६॥
बाजि परे सभि ही तबि बाजे। चले बराती गुरु जुति साजे।
आतशबाजी छूटनि लागी। देखति पुरि नर त्रिय अनुरागी॥ १७॥
गन फुलझरी मताबी ब्रिंद। चरखी चादर शब्द बिलंद।
तिसि छिनि तम दस दिशि ते भागा। दिवस भयो सभि के भ्रम जागा॥ १८॥
देव देवनी दारुन[2] साजी। भए बरूद छुटे गज बाजी।
अधिक कुलाहलि हेरति करते। छुटहिं झार इति उति हुइ डरिते॥ १९॥
सतिगुर देखति चलहिं तमाशा। पहुंचे रामे जाइ अवासा।
चंदन की चौंकी रचि चारु। अनिक रीति के फरश[3] सुधारि॥ २०॥
तिस परि गुरू बिठावनि करे। बैठि बराती पंकति धरे।
थार परोसे सत पकवान। मोदक स्वाद जलेब महान॥ २१॥
मेवे ब्रिंद अमेज़ करे हैं। अग्र सभिनि के आनि धरे हैं।
रुचि सों खावनि लगे अहारा। मन भावति जिनि स्वाद उदारा॥ २२॥
मिलि आइ गन पंकज नैनी। गावन लगी मधुर पिक बैनी।
ले ले नाम निकारति गारी। चढि बैठी गन ऊच अटारी॥ २३॥
आनंदति नर ब्रिंद बरात। भोजन अचवि उठे इस भांति।
पाइ जूठ मैं धन गन तबै। रीति अपर जेतिक करि सबै॥ २४॥
बादिति बजति आइ निज डेरे। बैठे सतिगुर शुभति बडेरे।
अलप समें महिं बहुर हकारे। 'फेरे लेनि चलहु हुइ त्यारे'॥ २५॥
बादति बाजे बहुर बिसाले। ले परधान नरनि गुरु चाले।
श्री गुरदित्ता कीनि अगारी। जाइ प्रवेशे सदन मझारी॥ २६॥
बेदी बिखै जाइ बैठाए। नव ग्रैह को अभिखेक कराए।
अगनि पूज करि हमन[4] कर्यो है। बेद मंत्रि को दिजनि रर्यो[5] है॥ २७॥

---

1. यान, सवारी। 2. भयंकर। 3. बिछौने। 4. हवन। 5. उचारा।

फेरि हुतासन के चहुं फेरे। उठि करि फिरति गुरू सुत फेरे।
अपर रीति रामे सभि करी। जिमि जिमि गन बिप्रनि तबि ररी[1] ॥ २८ ॥
सति गुरु दान मान वडि दीनि। बिप्रनि को प्रसंन मन कीनि।
बहुर निवेश प्रवेशे जाइ। शेख निशा अशेख सुपताइ ॥ २९ ॥
होति प्राति के बाजे बजे। उठे सफल निज बसत्रनि सजे।
श्री नानक को जहि इसथान। गए गुरू सुति संगि सु जानि ॥ ३० ॥
साइंदास कह्यो कर जोरि। 'किमि बंदन कीनी इस ठौरि'।
श्री नानक को व्याह प्रसंग। कह्यो गुरू ने तिसि के संगि ॥ ३१ ॥
'आए इहां फिरे निज फेरे। मूले के घर महिं तिसि बेरे।
पूजा करि सथान की आए। पुन भोजन हित गुरू बुलाए ॥ ३२ ॥
श्री हरि गोविंद सिवका चरि[2] कै। चले बराति संगि ले करि कै।
चमरु ढुरति है बारंबारी। सेत पुशाक सजै दुति भारी ॥ ३३ ॥
नवला[3] हाथ गही चपलावैं[4]। जिति दिशि मुख करि द्रिशटि चलावैं।
खडे हज़ारहु बंदन ठानहिं। मंद मंद मग कीनि पयानहि ॥ ३४ ॥
पहुचे चलि रामे के पौर। हित आदर आवति सभि दौर।
हाथ जोरि मुख बिकसि दिखावति। 'धन गरीब निवाज' अलावति ॥ ३५ ॥
चारु चुकोनी चौंकी चंदन। गुरू ब्रिठाए करि करि बंदन।
और मोहरी आदि बडेरे। ऊचासन पर थिरि तिसि बेरे ॥ ३६ ॥
उत्तम सभि पकवान परोसे। इनो पाइं इकि बिरि, जिमि तोसे।
पिसता दाख बदामनि गिरि। सरब अमेज़ मधुरता करी ॥ ३७ ॥
अचित्रनि करति बराती सारे। हरखति गारी नारि निकारे।
गावत गीत सुनति मन भाए। अचवि जथा रुचि सभि त्रिपताए ॥ ३८ ॥
जूठ पाइ धन हाथ पखारे। सकल रीति करि सिवर सिधारे।
सूरज मुखी अगारी करे। कंचन दंड बीजना[5] धरे ॥ ३९ ॥
भाट नकीब बोलते चालति। गुरु जस श्रवन सभिनि के डालति।
तरुन ढलैत[6] समूह सिपाही। गमनति अग्र त्रास उर नांही ॥ ४० ॥
डेरे सहत समाज बिराजे। बसन बिभूखन सुंदर साजे।
मंगति जन गन गन हुइ आवैं। दरब मसंदनि ते सभि पावैं ॥ ४१ ॥
बीत्यो दिवसि जामनी आई। सुपति जथा सुख तबि समुदाई।
प्राति उठे करि सौच शनाने। सभिनि संगि सति गुरू बखाने ॥ ४२ ॥

---

1. कही। 2. चढ़ के। 3. फूलों की छड़ी। 4. हिलाते थे। 5. पंखा। 6. ढाल रखने वाले वीर।

'सजि सजि वाहन कीजहि त्यारी'। सुनति सकल तूरनता धारी।
चढे पालकी गुरू सिधारे। साईंदास तुरंग असवारे ॥ ४३ ॥
करति बतक[1] ही अचल[2] सिधाए। आदि मोहरी दातू आए।
गुरु थल चहिति बिलोकनि सारे। गए चौंप चित गुरू पिछारे ॥ ४४ ॥
जाइ पहूंचे दरशन कर्‌यो। बंदन कीनि धरनि सिरि धर्‌यो।
पंचांम्रित अधिक करिवाइ। गुरु अरपनि करि सरब ब्रताए[3] ॥ ४५ ॥
सुनी बिलावल चौंकी तहां। सभा बिसाल लगी दुति महां।
खरे होइ अरदास कराई। बहुर पालकी चढे गुसाईं ॥ ४६ ॥
साईंदास निकटि तिस वेरी। बूझ कथा श्री नानक केरी।
'किसि कारन ते इसि थल आए'। श्री हरि गोविंद सरब बताए ॥ ४७ ॥
'गोरखादि इह सिद्धनि थाना। तिनि ढिगि मेला लगहि महाना।
तिनि को मान हान हित आए। पिखि सिद्धनि निज शकति दिखाए ॥ ४८ ॥
श्री नानक निज अज़मत संग। करे ज़ेर[4], जीते मद भंग।
परे चरन पुन अरे न कैसे। महा मतंग शेर संगि जैसे ॥ ४९ ॥
तबि को इह उत्तम इसथाना। जिसि दरसे फल होति महाना'।
एव सुनावति पहुंचे डेरे। रामे सुनि 'आए इस बेरे' ॥ ५० ॥
तातकाल निज सदन बुलाए। भली भांति भोजन त्रिपताए।
इसी रीति बीते दिन तीन। निकटि निकटि संगत सुनि लीनि ॥ ५१ ॥
'नंदन ब्याहनि गुरु पुरि आए। दरशन हेत सकल ही धाए।
जथा शकति भेटनि को देति। बंदति नेत्र सफल करि लेति ॥ ५२ ॥
त्रै दिन संगति आवति रही। करि अरदास कामना लही।
अति उतसव लखि सभि बिसमाए। मनहु अनंद रूप समुदाए ॥ ५३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे **'श्री गुरदित्ता ब्याह'** प्रसंग बरननं नाम शशठी अंशु ॥ ६० ॥

---

1. बातें। 2. अचल बटाला। 3. सब बांटे। 4. अधीन।

अंशु ६१

मिहरे को प्रसंग

दोहरा

दिन चौथे महिं चलनि को श्री सतिगुरु फुरमाइ।
नर नारी सुनि दुखिति चित 'पुन इमि किमि दरसाइ ॥ १ ॥

चौपई

देश बिदेशनि के जिनि ताईं। दरशन हेत अए समुदाई।
हे अलि ! सो हमरे पुरि आए। धंन भाग इनके लखि पाए ॥ २ ॥
रामे की तनुजा बडभागनि। गुरु सुत ते जो भई सुहागनि।
तिह सबंध ते हम भी धंन। तीन दिवस गुर पिखे प्रसंन' ॥ ३ ॥
इत्यादिक कहि कहि उतशाही। आइ मिली रामे घर मांही।
करनि बिदा को गुरू बुलाए। शुभ आसन परि ऊच बिठाए ॥ ४ ॥
दाज समाज सरब ले आवा। दिखरावति तिसि थान टिकावा।
निज तनुजा नेती ले आवा। करि संकलप सरब अरपावा ॥ ५ ॥
बसत्र बिभूखन बासन ब्रिंद। बोल्यो रामा द्वै कर बंदि।
'तुमरे सुत की सेवा हेत। इकि दासी मैं दई निकेत ॥ ६ ॥
अपर नहीं मुझ ते बनि आई। राखहु लाज जानि अपनाई।
बिरद गरीब निवाज तुमारा। सम न पाइ खोजिय जग सारा ॥ ७ ॥
श्री हरिगोविंद धीरज दीनि। 'साधु साधु, पुन नंम्री[1] कीनि'।
इम कहि करि बाहरि को आए। चढनि हेत त्यारी करिवाए ॥ ८ ॥
नेती डोरे बिखै बिठाई। मिलिनि हति त्रिय बाहरि आई।
तनुजा सों मिलि मिलि सुखदेई[2]। अनिक प्रकारनि सिख्या देई ॥ ९ ॥
बिरह होनि ते अश्रु मोचति। मंगल समै जानि संकोचति।
सभि अबला निज गरे लगावैं। 'थिरु सुहाग' आशिखा अलावैं ॥ १० ॥
आगै डोरे को करि लित्ता[3]। गमने पाछै श्री गुरदित्ता।
दोनहु पर धन को बरखावैं। जनु ऊनवि घन बूंद गिरावैं ॥ ११ ॥

1. नम्रता। 2. नाम माता का। 3. लिया।

सभि बिधि बाजे बजति अगारी। चले सुधासर पंथ मझारी।
केतिक नर सों आवति रामा। एक कोस पहुंच्यो तजि धामा ॥ १२ ॥
दे धीरज सतिगुर तब्रि मोरे। बंदे चरन कमल कर जोरे।
गमने मारग सहत बराती। गए प्रथम आए तिसि भांती। १३ ॥
एक निसा बसि कै मग मांही। आवति भे अपने पुरि पाही।
पूरब गयो, जाइ सुधि दीनसि। सुनि गंगादिक आनंद कीनसि ॥ १४ ॥
सकल मेलि की अबला जेई। सुनि आगवन त्यार भी तेई।
डोरे सहत सु द्वार अगारे। गुरु सुत आयहु सरब निहारे ॥ १५ ॥
पिखि दमोदरी पुत्र सनूखा[1]। मनहु कलप तरू लह्यो अदूखा।
बारि बारि बारी बर बारा। भली रीति ले सदन मझारा ॥ १६ ॥
झोरी पाइ दरब की थाती। पिखति सनूखा सीतल छाती।
पौत्र वधू को गंगा हेरा। मुदिति महां धन दीनि बडेरा ॥ १७ ॥
आइ नानकी अरु मरवाही। पिखि पिखि धन दे सरब सराही।
अपर मेलि की अबला सारी। देति दरब गन बधू निहारी ॥ १८ ॥
श्री हरिगोविंद सहत बराति। आगै करि गुरदित्ता तात।
गए प्रसादि लए दरबार। भए दरशनि बंधन धारि ॥ १९ ॥
श्री हरि मंदर बंदन करिकै। चारहुं करी प्रकरमा फिरिकैं।
अंतरि प्रविशे ग्रिद्ध निहारा। नमो करति सभि कुशल उचारा ॥ २० ॥
खरे होइ अरदास बखानी। पुन प्रसादि बरतावनि[2] ठानी।
तखत अकाल बैठिगे आइ। मिलि गुरदास नमो जुति गाइ ॥ २१ ॥
कह्यो मसंदनि सों गुरु तबै। 'सुधि लिहु नर बराति जे सबै।
खाणा दाणा देहु संभारि। जथा जोग सभि को निरधारि' ॥ २२ ॥
उठि करि निज महिलीं गुरु गए। संध्या सूर अथ्यो तम भए।
तबि गंगा सगरो परवार। सहत मेलि सभि करिकै त्यारि ॥ २३ ॥
जाइ करी बंदन हरिमंदर। दीनि प्रदछना फिरि सभि सुंदरि।
धरि अकोर पुन मुरि कर आई। गावति गीतनि देति वधाई ॥ २४ ॥
खान पान पुन करि समुदाई। सुपति जथा सुख राति बिताई।
पंच दिवस इस रीति बिताए। मेलि चलनि घर को अकुलाए ॥ २५ ॥
कहिं लगि गिनीयहि नाम जु सारे। जथा जोग सभि दे अधिकारे।
दान मान सों करे बिसरजन। निज निज घर गमने हरखति मन ॥ २६ ॥

---

1. स्नूषा, बहू। 2. बांटना।

मउ खडूर, डल्ले मंड्याली। गोइंदवाल सु मेलि बिसाली।
सुजसु करति निज निज घरि गए। 'उतसव अधिक ब्याह महिं भए' ।। २७ ।।
रामो सहत सु सांईदास। नहिं गमन्यो रहि सतिगुरु पासि।
'केतिक दिन हौं दरशन करौं। नहीं जानि घर इच्छा धरौं' ।। २८ ।।
हुइ प्रसंन प्रेमी बड जाना। गुर निज निकटि राखि बैठाना।
मिहरा नाम सिक्ख इक गुरु का। बसहि बकाले प्रेमी उर का ।। २९ ।।
तीर बिपासा के शुभ ग्राम। सो आयो सिमरति सतिनाम।
उतसव ब्याह बिखै हरखाए। मेलि विसाखी को समुदाए ।। ३० ।।
मिहरे जथा शकति कर लीनि। भेट गुरू आगै धरि दीनि।
मसतक टेकति गुरू बखानी। 'मोहि भावना पुरहु[1] महानी ।। ३१ ।।
सुंदर सदन सुधारनि करे। तिनि महुं चरन आप को फिरे।
माता गंग संगि चलि आवैं। इमि देखनि मम चित ललचावैं' ।। ३२ ।।
सुनि करि श्री सतिगुरू बखाना। 'जे करि प्रेम मनोरथ ठाना।
क्यों न होहि पूरन मन जानहुं। अस हुइ समो प्रतीखन ठानहु ।। ३३ ।।
सुनि गुरू ते आइसु को लीनि। गमन्यो श्री गंगा घर चीनि।
पौत्र ब्याह ते हरखति होई। वधी बेल गुरू बच[2] फुरि सोई ।। ३४ ।।
मिहरे अग्र उपाइनि धरी। हाथ जोरि अभिवंदन करी।
अति प्रसंन हुइ बूझनि ठाना। मात गंग आनंद महाना ।। ३५ ।।
सुनि मिहरो ब्रितंत निज भाखा। 'मन मेरे अस है अभिलाखा।
श्री हरि गोविंद ले करि नाल। घर दरशन दे करहु निहाल ।। ३६ ।।
सुंदर मंदिर मैं बनिवाए। दरब अधिक ही तिनि पर लाए।
बस्यो नहीं मैं अंतरि तांहि। नए हेरि मन उपजी चाहि ।। ३७ ।।
प्रथम गुरू के पद अरबिंद। बिचरहिं सदन होति आनंद।
बिनै भनी इह गुरू अगारी। तऊ सहाइता चहौं तुमारी ।। ३८ ।।
कहि करि आपि त्यारि करिवावहु। एकि बारि तिसि घर पग पावहु[3]।
सफल करहु बनिबो[4] तिनि सुंदर। इकि दुइ निसा बास करि अंदरि ।। ३९ ।।
सुनि गंगा मिहरे संगि कह्यो। 'उतसब ब्याह केरि हुइ रह्यो।
अबि तौ जानो बनै न कोई। को दिन बितहि निहारैं सोई ।। ४० ।।
श्री हरि गोविंद को ले संगि। आइ पहूचहिं सदन उतंग।
नहिं संसै इसि महिं किमि जानहु। अबि तूं अपने धाम पयानहु' ।। ४१ ।।

---

1. पूरी करो। 2. वचन। 3. डालो। 4. बनावट।

सुनि गंगा ते धीरज कीनि। मिहरे सदन पयाना लीनि।
निस दिन चितवहि आवनि गुरु को। बिनु दरशन ते सुख नहिं उर को ॥ ४२ ॥
भोजन अलप नींद नहिं आवै। गिनती गुर आगवन गिनावै।
इकि दिन मात गंग सुत हेरा। मिहरे हेति कह्यो तिसि बेरा ॥ ४३ ॥
'हे सुत सिख जु बसहि बकाले। अभिलाखति घर बिखैं बिसाले।
अधिक प्रेम ते कहि करि गयो। तुम आगवनि चितहि बसि भयो' ॥ ४४ ॥
श्री गुरु सभि गति को मन जाना। कर्‌यो मात को बच मन माना।
'तुम समेति हम चलहिं तिथाई[1]। दुइ त्रै निसा बसहिं तहिं जाई ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे '**मिहरे को प्रसंग**' बरननं नाम इकशशठी अंशु ॥ ६१ ॥

1. तिस स्थान, वहीं।

अंशु ६२
श्री गंगा प्रलोक-गमन

दोहरा

सुनि करि बच इमि मात के श्री गुरु हरि गोविंद ।
मानति भे सभि जानि के होहि भविख्यति ब्रिंद ॥ १ ॥

चौपई

'होति प्रभाति करहिं सभि त्यारे[1] । चलहिं बकाले संगि तुमारे' ।
इमि कहि सुपते राति बिताई । जागे दया सिंधु गोसाईं ॥ २ ॥
सोच-शनान[2] ध्यान को ठाने । दिनकर चढे चढनि ललचाने ।
सभि परवार सदन ही राखि । हय मंगवाइसि चलिबे कांकि ॥ ३ ॥
कुछ सिख सुभटि संगि लै नाथ । गंग मात के चाले साथि ।
श्री हरि मंदर बंदन करि कै । गमनि बकाले दिशा निहरि कै ॥ ४ ॥
सनै सनै मग उलंघ्यो सारो । जाइ बकाले ग्राम निहारो ।
साईदास संगि बच कह्यो । 'इह सथान आगे जो लह्यो ॥ ५ ॥
पहुंचनि उचिति इही लखि लीजै । केतिक दिन बासा इति कीजै ।
मिहरे सुन्यो 'गुरू चलि आए । माता गंगा संगहि ल्याए ॥ ६ ॥
हरखति गमन्यो लेनि अगारी । आइ मिल्यो बंदन पद धारी ।
सतिगुरु कुशल बूझि तिह संगा । 'दया आपि की सुख सरबंगा' ॥ ७ ॥
पुन माता के चरनी पर्यो । 'गुरु चिति आवहिं आशिख रर्यो ।
मुदित रिदे ले पुरी सिधारा । जहां नवीन निकेत उसारा ॥ ८ ॥
तहिं आछो परयंक डसावा । सुंदर आसतरन[3] सों छावा ।
कहि सतिगुरु सों तहां उतारे । सभि परवार बंदना धारे ॥ ९ ॥
खान पान नीके करिवाइसि । सरब सेव ते गुरू रिझाइसि ।
तीन दिवस गुरु तहां बिताए । करति टहिल बो उर हरखाए ॥ १० ॥
चतुरथ दिन महिं बैठे पासि । माता कीनसि बाक प्रकाश ।
'हे सुत ! सुपन राति को आयहु । देहि अंति अपनो लखि पायहु ॥ ११ ॥

---

1. तैयार । 2 शौच स्नान । 3. बिछौने ।

तुमरे पिता समीपि सिधावो। मिलौं अनंद तहां को पावहौं।
जीवति चित बांछति मैं पावा। गुरू क्रिपा ते मोद उपावा ॥ १२ ॥
कह्यो संझि निसि भी मध्याना। तबि गंगा तन कीनि शनाना।
सुनि सतिगुरू ढिग बैठे रहे। वाहिगुरू सिमरनि को कहे ॥ १३ ॥
हुकमु सत्ति जान्यो निरधारा। अपर मात सों कुछु न उचारा।
प्रथम पठि जपु जी को कीना। पुन सुखमनी बिखैं चित दीना ॥ १४ ॥
बिधीआ जेठा साईंदास। सुनि सुनि बैठे माता पास।
चित बिसमति अविलोति सारे। गुरु समेति बैराग सु धारे ॥ १५ ॥
पाठ सुखमनी भोग जबि पायहु। हाथ जोरि सभि सीस निवायहु।
सुत सों प्रेम करे बच कह्यो। जिमि तुम पिता दाग-जल[1] लह्यो ॥ १६ ॥
तथा करहु मेरो ससकारा। सुखी बसहु तुम जुति परवारा।
कुशा डसावनि तबि करिवाइ। पीढी मुख परि अंचर पाइ ॥ १७ ॥
सभि के देखति तनु तजि गई। श्री अरजन ढिगि प्रापति भई।
जेशठ सुदी चौथ ससि[2] वार। श्री गंगा परलोक पधारि ॥ १८ ॥
जैं जैं-कार सुरग महिं होवा। गंग बिवान जाति कहु जोवा।
बाबक रागी गुरू हकारा। 'गावहु आसा वारि' उचारा ॥ १९ ॥
'मारू अरु वडहंस जि राग। गावहु शबद वडो बैराग।
सुर करि गावनि सुंदर कीनि। सुनति सकल बानी चित दीनि ॥ २० ॥
बैठे माता के चहु दिश मैं। सुनहिं प्रेम ते करुना रस मैं।
भई प्रभाति भोग तबि पायो। माता हेत बिबान[3] बनायो ॥ २१ ॥
सभिनि गुरू जुति कीनि शनाना। नर अनुहार रुदन को ठाना।
बीचि बिबान गंग को पाए। पुन चारिहुं निज कंध उचाए[4] ॥ २२ ॥
साईंदास, पिरागा दोइ। बिधीआ, जेठा सुधि मैं होइ।
मिहरे गहि कर चमरु ढुरावा। बाबक गावति अग्र सिधावा ॥ २३ ॥
गमने श्री गुरु हरि गोबिंद। मिले आइ करि मानव ब्रिंद।
कंधि उठाइ पढति गुरु बानी। पहुंचे तीर बिपासा थानी[5] ॥ २४ ॥
आइसु पाइ गुरू की चारहुं। जाइ प्रवेशे नदी मझारहु।
जहां कह्यो थिर करनि बिमान। तहां उतारि कंध ते जानि ॥ २५ ॥
जबि जल बिखै कछुक परवेशा। तन भा अंतर ध्यान अशेशा।
आइ बरन बंदन को ठानी। कर्यो पुचावनि[6] शुभ इसथानी ॥ २६ ॥

---

1. जल प्रवाह। 2. शशि (सोम)। 3. अरथी। 4. कंधों पर उठाए। 5. स्थान पर। 6. पहुचाना।

बिसमति होइ हटे तबि चारों। कह्यो, प्रसंग पिख्यो जिमि सारो।
'गुरु की गति गुर ही इकि जानैं'। इमि कहि सभि ही वंदन ठानैं ॥ २७ ॥
जथा-जोग करि कै हटि आए। बीचि बकाले नर समुदाए।
एकि निसा बसि कै तिस थाना। भई प्रात गुरू चह्यो पयाना ॥ २८ ॥
मिहरे संगि कह्यो 'तुव चाही। पूरन भई लखहु उर मांही।
जाइ सुधासर सगरी रीति। कर्यो चहिति चित महि धरि प्रीति' ॥ २९ ॥
मिहरे कह्यो 'इहां प्रभु कीजै। बांछति होइ मंगाइ सु लीजै।
माता हेत जग्य करिवावहु। तिलक सभिनि ते इह ठां पावहु' ॥ ३० ॥
गुरू कह्यो 'चित चाहति जोइ। सो भी बाति तोहि ढिगि होइ।
हम ते बिती थान गुरु बैसें। तिलक बकाले महि लें ऐसे ॥ ३१ ॥
मेरो रूप भेद नहि कोई। तबि लो जीवनि तेरो होई'।
सुनि मिहरे उर निशचै पायो। चरन कमल गुरू को लपटायो ॥ ३२ ॥
चढे तुरंग बेग ते चाले। साईदास सिक्ख भट नाले।
पंथ बिखे कुछ थोरा ठहिरे। चढे गुरू पुन ढरे दुपहिरे ॥ ३३ ॥
कितिक दिवस रहि पहुंचे जाई। गंग मात की बाति सुनाई।
गुरू पतनी तीनहु रुदनती। सिमरि सिमरि गुन बहु पछुतंती ॥ ३४ ॥
'पूरब ही हम ते हुइ न्यारी। अंत समें महि नहीं निहारी।
हम सभि को अलंब[1] बड हुती। घर कारज की दायक मती' ॥ ३५ ॥
श्री गुरू उतरि परे तिह समों। श्री हरि मंदर करि कै नमो।
बैठे तख्त अकाल सथान। सुधि पुरिमहि सुनि सुनि सभि कान ॥ ३६ ॥
स्याने नर सतिगुरू ढिग आए। बैठि मात की बात चलाए।
करहि सराहन बहु मतिवती। सम भानी के अति सतिवंती ॥ ३७ ॥
गुरू कह्यो 'जो उपजनिहार। बिनसहि, नेम इही करतार।
होनिहार को क्या है शोक। करहि शोक पाइ न कुछ लोक[2] ॥ ३८ ॥
पुरि के नर मसंद गन सूरे। आए, भई भीर थल पूरे।
जथा-जोग सभिहिनि के साथ। बचन बिलास प्रकाशे नाथ ॥ ३९ ॥
उठि करि निज महिली[3] तबि गए। अधिक शोर तहि सुनते भए।
पुरि की नारि ब्रिंद घर भर्यो। ऊचे सुर रोदन बहु कर्यो ॥ ४० ॥
इक दासी निज निकटि बुलाई। रुदति दुखिति चित सो चलि आई।
कह्यो तांहि सों 'रुदन हटावहु। बैठे रहहु गुरू-गुन गावहु ॥ ४१ ॥

---

1. आलम्बन, आश्रय। 2. लोग। 3. महल में।

बडभागनि जननी सुखु पाए। नहिं सोचनि के जोग कदाएं।
सुनि दासी अंतर तबि जाइ। गुरु बच कहि कै दई हटाइ॥ ४२॥
सुनि कै सने सने हटि गई। शोक सकल ही ठानति भई।
राति बितावनि कीनी सोइ। उठे प्रभू निजि बेला जोइ॥ ४३॥
सुधि सबंधीअनि सदन पठाई। सुनी सभिनि बहु शोक उपाई।
निज निज घर ते ह्वै करि त्यारे। परे सुधा सर पंथ मझारे॥ ४४॥
बोले सतिगुरु 'सुनि गुरदास !। पठहु ग्रिंथ साहिब सुखरास।
बिदतहि सिख्यनि मैं अस रीति। म्रितक भए जे पढहिं सप्रीति॥ ४५॥
सभि बिधि के सुख पावहि प्रानी। जिस हित पढनि करहिं गुरु बानी।
इसि फल सम जग अपर न कोई। बडे भाग ते प्रापति होई॥ ४६॥
फरश[1] करायो सुंदर ठोर। दुहुं दिशि सिख ढुरावहि चौर।
खोलनि कर्‌यो ग्रिंथ जी तबै। करि गुरदास पाठ को सबै॥ ४७॥
इमि करते दिन द्वै कि बिताए। सुनहिं पाठ को नर-समुदाए।
हुते सबंधी से चलि आए। गुरु के महिल जाइ रुदनाए॥ ४८॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे **'श्री गंगा को प्रलोक गमन'** बरननं दोइ शशटी अंशु॥ ६२॥

1. **बिछौना।**

अंशु ६३

श्री तेग बहादर जनम

दोहरा

गोइंदवार, खडूर ते मउ, डल्ले, मंड्यालि।
सभि आए नर नारि गन रोदति शोक बिसाल ॥ १ ॥

चौपई

गुर महिलनि महिं शबद रुदन को। भयो बिसाल मेलियनि गन को।
करहिं सराहनि गुर समुदाए। सिमरि सिमरि गन त्रिय रुदनाए ॥ २ ॥
बहिर गुरू ढिगि बाति करंते। 'भागवान दीरघ' उचरंते।
पिखहु फ़नाह[1] जहान तमाम। नहीं रहति निति काहु मुकाम[2] ॥ ३ ॥
नदी प्रवाह चल्यो जग जाति। जीरनि बनति बिदति दिन राति।
भल्ले तेहण अपर जि स्याने। सभिनि सुनावति एव बखाने ॥ ४ ॥
'अहै जथारथ' श्री गुरु कह्यो। इस बिधि कहि करि डेरा लह्यो।
सेवा परि मसंद गन छोरे। सरब सेव कीनी सभि ओरे ॥ ५ ॥
सति गुरु बैठति लाइ दिवान। दिन प्रति आवहिं लोक महान।
दीरघ चौकी हुइ दुइकाल। सुनि करि संगत मिली बिसाल ॥ ६ ॥
इस बिधि त्रौदश[3] दिवस बिताए। भोग ग्रिंथ गुरदासहि पाए।
गुरु करावति भे अरदास। दीनसि पोशिश ज़री प्रकाश ॥ ७ ॥
दीनि दिजनि को दान घनेरे। बसत्र बिभूखन मोल बडेरे।
सिहजा दरब अहार[4] उदारा। तोशनि[5] कीने सरब प्रकारा ॥ ८ ॥
उठ्यो ब्रिद्ध दीनसि दसतार। लई गुरू निज सिर परि धारि।
तेहण भल्ले जिनिक संबंधी। दई सभिनि जबि श्री गुरु बंधी ॥ ९ ॥
द्वारा हरी चंद इह दोइ। दास नराइण तीसरि जोइ।
बसत्र बिभूखन धन दे घनो। हाथ जोरि बिनती के सनो ॥ १० ॥

---

1. नाशवान 2। स्थिरता। 3. १३वां दिन। 4. आहार। 5. संतोष।

संगति सिक्ख मसंद बिलंद। देति पदारथ ल्यावति ब्रिंद।
पुन गुरु पंचाम्रित करिवायो। घनो सभिनि महिं कहि बरतायो ॥ ११ ॥
उतसव भयो शोक कौ त्यागे। नौबत बजनि लगि जिमि आगे।
जेतिक आए सकल सिधाए। गोइंदवाल आदि समुदाए ॥ १२ ॥
कितिक द्योस जबि बीते फेरि। संगति आवति जाति घनेरे।
इक दिन भाई ब्रिद्ध बखाना। 'रावर करने कौतक नाना ॥ १३ ॥
बहिर क्रिआ अविलोकि तुमारी। भ्रमहिं लोक मिलि निंद उचारी।
अर करने बहु जंग अखारे। समें, भयो प्रापति इसि बारे ॥ १४ ॥
जहां रिहाःशि[1] है मुझ नीति[2]। बैठ्यो रहति इकांत सप्रीति।
श्री गुरु रामदास के समैं। सकल समाज सौंपियति हमैं ॥ १५ ॥
तऊ बास मम बीड़ मझारा। जानति सभि तुम सुन्यो उदारा ॥ १६ ॥
मात गंग अबि तनु को त्याग्यो। तबि लौ बीर रंग नहिं जाग्यो।
हुइ अबि बिघन अनेक प्रकारे। कारन प्रथम शस्त्र तुम धारें ॥ १७ ॥
सुनि श्री गुरु ने सकल बिचारी। जथा जोग बिध इच्छा धारी।
पूरब भी इह बहिर रहंते। हमरे हित ठहिरे हितवंते ॥ १८ ॥
समां जुद्ध को पहुंच्यो आई। इमि बिचार आइसु फुरमाई।
करि कै चरन कमल को बंदन। बारि बारि पिखि शत्रु निकंदन ॥ १९ ॥
गयो बीड़ को प्रथम सथाना। इकि रस ब्रिती रिदे ब्रहम-ग्याना।
शकति बिसाल चहै सो करिहि। तऊ न करहि धीर उर धरिहि ॥ २० ॥
पाछे केतिक दिवस बिताए। संगति सदा आइ इक जाए।
करति अनेकन को कल्यान। किसि दें भगति किसी ब्रहम ग्यान ॥ २१ ॥
किसि की करहिं कामना पूरी। सुन बित आदि जि करि उर रूरी।
आयुध बिद्या बहु अभ्यासे। करहि सुभट गुरु पिखहि तमाशे ॥ २२ ॥
पैंदे खान बीर बर होवा। जिसि की समको दुतिय न होवा।
सिपरि खडग के दाव करंते। धनुख निठुर नौटंक खिचंते ॥ २३ ॥
खपरे[3] कहां फुलादी[4] तीखन। गुरु घरावहि कहि कहि भीखन।
चारि चारि अंगुल चौरा करि। कानी[5] पुष्टका मद्ध बीच धरि ॥ २४ ॥
देखति लोक अधिक बिसमावैं। 'अबि तौ असि नहिं कोइ चलावै।
अरजन आदिक समय मझारा। सुने बली, से करति प्रहारा ॥ २५ ॥

---

1. निवास। 2. नित्य। 3. चौड़े फल वाले तीर। 4. फौलादी। 5. नोकदार डंडी।

कौन शत्रु इनि सकहि सहारे। जथा सरप को फण बिसथारे।
करि करि त्यारि ब्रिंद रखवावैं। तुपकनि[1] हित गुलकां ढलिवावैं ॥ २६ ॥
जेतिक जंग सामिग्री बरने। गन आयुध को संग्रह करते।
दिन प्रति रुख पैंदे संगि करैं। कवि कबि पहुंचति कौलां घेरै ॥ २७ ॥
देखि देखि सिख खुनसहि[2] घने। बिनु जाने निंदा जग भने।
तुरकनि सों गुरु को बडि मेलि। राखहिं संगि अपर को ठेलि ॥ २८ ॥
काज़ी तुरक सुता हरिआनी। तिसि घर प्रविशि न धरहि गिलानी।
प्रथम गुरू अस कोइ न भयो। होति सुशील बिसारनि कियो ॥ २९ ॥
औरि सुभाव और ही रीति। औरि बिहार, और विधि प्रीति।
करनि शिकार जीव गन मारनि। निस दिन आयुध महि हित धारनि ॥ ३० ॥
इसि बिधि पसर्‍यो जग अपवाद। 'पूरबिकी करि भंग म्रिजादि[3]।
देश बिदेशनि महि सभि कहैं। पूरन सिक्ख भेद को लहैं ॥ ३१ ॥
दिपति तेज मुख मंडल केरा। कहि नहिं सकहि होहि को नेरा[4]।
सारी[5] रामो, साईदास। कितकि समैं वासे गुर पासि ॥ ३२ ॥
सो भी बिदा करे जिस काल। बिछुरति संकट लह्यो बिसाल।
करे सपरश चरन अरविंद। धीरजि दे श्री हरिगोविंद ॥ ३३ ॥
गए डरोली को सुख वासे। सिमरति रहित गुरू सुख-रासे।
केतिक दिन बिताइ सो घर मैं। भयो प्रसूत नानकी समैं ॥ ३४ ॥
मास विसाख हुतो अभिराम। रही जामनी सवा मु जाम।
सोलह सै उनहत्तर साल। बदी पंचमी थिति तिसि काल ॥ ३५ ॥
सेब्यमान धाइनि ते होइ। दासी दास हरख सभि कोइ।
बालक जनम्यो भयो अनंद। रखिबे हित जग बीरज हिंद ॥ ३६ ॥
जिनि की सम जग भयो न कोइ। परहित सीस दियो जिनि जोइ।
भा मंगल देवनि महिं घनो। 'बिनसति धरम राखिहैं' भनो ॥ ३७ ॥
सुर सभि आइ सदन सो पूजा। करहिं सुतुति 'इनि सम नहिं दूजा'।
चंदन चरचहि फूल चढावैं[6]। 'धंन गुरू घर' कहि हरखावैं ॥ ३८ ॥
भई भोर जहिं कहिं सुधि होई। गुरू बधाई दे सभि कोई।
बहु मंगल के बादित बाजे। बंदन वारैं द्वारनि साजे ॥ ३९ ॥
मंगत जनको धन गन दीनो। नगर अनंद नारि नर कीनो।
बांधे टोलि नागरी सुंदर। चलि प्रविशी सतिगुरु के मंदिर ॥ ४० ॥

---

1. तोपें। 2. चिढ़ते थे। 3. मर्यादा। 4. निकट। 5. साली। 6. धन्य।

बसन बिभूखन धरि धरि आछे। गावहिं गीतनि आगे पाछे।
सभि कुल रीति करी जो लही। मिलि मिलि सभिनि वधाई कही ॥ ४१ ॥

श्री सतिगुरु तब्रि रिदे बिचारा। इस के उपजहि बली उदारा।
रण वहादरी करहि वडेरी। इह निरभै जर[1] तुरक उखेरी ॥ ४२ ॥

सुत वहादरी तेग करे है। शत्रु ब्रिंद को जंग खपै है।
यांते 'तेग वहादर' नाम। धर्यो बिचार गुरू अभिराम ॥ ४३ ॥

सुनति नानकी हरखति होई। करति प्रेम मुख सुत को जोई।
इस प्रकार गन मंगल भए। पंच पुत्र सभि गुरु निपजए[2] ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे 'श्री तेग बहादर जनम' प्रसंग बरननं नाम तीन शशठी अंशु ॥ ६३ ॥

---

1. जड़ मूल। 2. उत्पन्न हुए।

अंशु ६४

पैंदा खान प्रसंग

दोहरा

दिन प्रति दान बिसाल दिज अरु दीननि को देति ।
दारिद रह्यो न पुरि बिखै आइ गुरू ते लेति ॥ १ ॥

चौपई

अदभुत चरित गुरू दिखरावैं । जिनि को भेद नहीं को पावै ।
वहिरि क्रिया पिखि निंदा करैं । 'बे मिरजादि सकल इह धरै' ॥ २ ॥
जिमि श्री क्रिशन चंद को देखि । करहिं वहिर विवहार अशेख ।
इसत्री-जिति आदिक सभि कहैं । पूरन पुरख नही चित लहैं ॥ ३ ॥
जे समरत्थ प्रभू अवतारा । चहै सु करैं जि शकति उदारा ।
गन दोखनि ते लिपहिं न कैसे । कमल दलनि परि जलकन जैसे ॥ ४ ॥
तिन महिं अवगुन भी, गुन होति । रीति कुरीति चहैं सु उदोति[1] ।
बिन जाने जिन को मति अलप । निंदा करैं सु दूखन कलपि ॥ ५ ॥
दूरि दूरि को निंदा करैं । गुर महिं अवगुन दूखन धरैं ।
निकटि होइ तूशनि करि रहैं । तेज पचंड गुरू को लहैं ॥ ६ ॥
इक दिन गुरू महिल महिं गए । हुइ इकांत तहिं वैठति भए ।
तबि दमोदरी चलि करि आई । वैठि समीपि बाति समुझाई ॥ ७ ॥
'अशट बरख की कंन्या होई । उचित व्याह के जानहु सोई ।
करि कै फिकर व्याह इसि दीजै । साहा शुभ सुधवावनि कीजै' ॥ ८ ॥
कह्यो गुरु 'कहि आछी बात । करहिं कार इमि उठि करि प्राति' ।
सुपति भए सभि रीति बिताई । जागे प्रभु समै निज पाई ॥ ९ ॥

1. उदयमान, उत्तम ।

सोच शनान ध्यान को ठाना। दिनकर उदै उठे भगवाना।
बैठि दिवान लगायो सारा। दैवग[1] दिज को निकटि हकारा॥ १० ॥
कहि साहा सुधवावनि ठाना। जोतिश को गिन बिप्र महाना।
कंन्या बीरो नाम सुधावा। साधू बालक को समुझावा॥ ११ ॥
ग्रेह निछत्र सोधे दिज सारे। पुन सतिगुरु सों बाक उचारे।
'जेशट की छबीसवी माहि। भलो लगनि प्रापति भा तांहि॥ १२ ॥
कहि गुरु तदि लिखवाइसि पाती। कुंगू[2] संगि छिरकि शुभ भांती।
सिधा प्रोहत अपनि बुलायहु। सरब बारता कहि समुझायहु॥ १३ ॥
'मल्ले ग्राम जाहु सुधि दीजैं। जेठ मास सुत व्याहिनि कीजैं।
सिघा गुरु की आइसु पाइ। चल्यो तहां हरखति उतलाइ॥ १४ ॥
चारि दिवस महिं पहुच्यो जाई। धरमे साथि मिल्यो सुख पाई।
अति अनंद तिस सदन बिठावा। कुशल बूझि गुरु की हरखावा॥ १५ ॥
सिंघे दई हाथ ते पाती। ले करि अति अनंद भरि छाती।
निज पांधे ते सकल पढाई। सुनति ब्याह की सुधि बिदताई॥ १६ ॥
नंद कुइर दारा संग कह्यो। जेशट बिखै सरब नर लह्यो।
मंगल कर्‍यो अहै जिमि रीति। मिली सुंदरी गावति गीति॥ १७ ॥
दोइ कु दिन महि सिंघा तोर्‍यो। दान मान दे अधिक निहोर्‍यो।
पंच दिवस महिं पहुंच्यो जाई। सतिगुर सों सुधि सकल सुनाई॥ १८ ॥
सभिनि मसद संग फुरमायो। जानहु समै ब्याह नियरायो।
करहु समिग्री संचनि सारे। सुनि सुनि धन ले बहिर पधारे॥ १९ ॥
संचनि कर्‍यो घ्रिति बहु ल्याए। लादि फाणती[3] उशट[4] पठाए।
सूंदर अंन होति जिसि भूमि। सूखम चावर अरु गोधूम॥ २० ॥
गन मेवे कावर भरि आई। बसन मोल बहु के समुदाई।
इत्यादिक चहियति सो ल्याए। संचि समिग्री त्यार कराए॥ २१ ॥
श्री हरिगोबिंद सहजि सुभाइ। पैंदे पर रुख[5] वधि[6] अधिकाइ।
रीझहिं कद बिसाल अविलोकें। बल ते महिखनि को गहि रोकै॥ २२ ॥
श्री फल धरि कै डंड दबावै। फोरि देति नहिं बिलम लगावै।
फिरति मुंगरी फेरति जहां। धसबति धरा, गरत ह्वै तहां॥ २३ ॥
दोइ घटी दिन जबि रहि जावै। अपना बल तिह संग लगावै।
करहि अनेक रीति के दाइ। गहै गुरू कर लेति दबाइ॥ २४ ॥

---

1. दैवज्ञ, ज्योतिषी 2. केसर 3. खांड 4. ऊंट 5. ध्यान 6. विधाता।

होइ बिबसि बल चलहि न थोरा। तऊ कहै 'बल घाटि न मोरा।
अजमति को बल आपि लगावहु। मो कहु बसि करि अंग दबावहु ॥ २५ ॥
मुझ मानिंद बली भव मांही। आन थान किति दिखियति नांही।
गहौं मतंग संड करि वल को। ऐचिनि करौं तजौं नहि थल को ॥ २६ ॥
उशटर बपुरे कहां अगारी। गेरों भू परि ह्वै न संभारी।
खाहि मलीदा बली तुरंग। होवहि बर दीरघ सरबंग ॥ २७ ॥
एक हाथ ते रोकौं वाही। चरनि उठावनि देव न तांही।
लघु तुरंग बपुरे इह कहां। भागति को गहि राखव तहां ॥ २८ ॥
सुनि सतिगुरु सराहनि करें। 'बल ते बली क्यों न इमि धरें।
जथा सरीरु डील वड तोरा। तिमि ही बल बिसाल नहि थोरा ॥ २९ ॥
जिमि बल बड तिमि बरकस[1] करी। अचि खुराक बरकस समसरी।
जथा जोग भे कारन काज। तुझ सम बली न अपर समाज' ॥ ३० ॥
सुनि पैंदे खां बहुर उचारै। 'हित करि आपि मोहि प्रतिपारैं।
परहि जंग तबि देखहु हाथ। कहां करौ प्राक्रम वडि साथि ॥ ३१ ॥
रिपु लशकर सलितापति भारो। गिर मंदर[2] सम बरौं[3] मझारो।
बाहु स्रिग ते मथि करि डारौं। रुंडमुंड रण खेत बिथरौं' ॥ ३२ ॥
सुनि गुरु कहैं 'आइ अस काल। जिमि चाहति चिति कर्यो विसाल।
बहुत बारता पैंदे साथ। सगरे दिन लहिं करते नाथ ॥ ३३ ॥
निति प्रति धन अनगन को देति। बसन बिभूखन गुरु ते लेति।
हय आछो पिखि चढहि तबेले। ज़ीन जराऊ ऊपरि मेले ॥ ३४ ॥
आछो शसत्र गुरू ते लैहै। अपने अंग सजावन कैहै।
जिनि वसतनि को मोलि विशेश। आनै संगति देश विदेश ॥ ३५ ॥
लेकरि गुरु तिसि को तबि देति। देति जि नहीं मांगि सो लेति।
पिखि सिख् मन खुनसहिं[4] गन घने। गुरु ते डरति न मुख ते भने ॥ ३६ ॥
गुरु पहिरहिं गुरु कारज लागै। यांते अरपि करहि गुरु आगै।
जबि पैंदा ले धारहि अंग। देखति सिख-गन ह्वै मन भंग ॥ ३७ ॥
तिमी ख्याल महिं परचे रहैं। सिखयनि की दिशि कबहुं न लहैं।
संगति पिखि सुभाउ गुरु केरा। करहि बिचार उचार कुफेरा[5] ॥ ३८ ॥
'देखहु पूरब गुर की रीति। मींड म्रिजादि करी बिपरीति।
सति संगति महिं मन जिन थोरा। राचे करम करति जे घोरा ॥ ३९ ॥

1. कसबल, कसरत 2. मंद्राचल 3. प्रवेश किया 4. कुढ़ते 5. बुरा ।

दुतीए तुरकनि घर महिं धरी। नहीं गिलान तनक मन करी।
धरमसाल टिकि बैठति नांही। करति आखेर त्रिति बन मांही॥ ४० ॥
काजी दुहिता के निति मंदिर। जाइ प्रवेशति, हेरति अंदर[1]।
कहीअहि कहां कही नहि जाइ। पिखि पिखि निंदति हैं समुदाइ॥ ४१ ॥
सिक्खनि ते नहि जाहि सहारी। मिलि आपसि महिं करति बिचारी।
'तुरक बडो अपने मुख लायो[2]। गुरु करुना ते सो गरबायो'॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे पेंदाखान प्रसंग बरननं नाम चतर शशठी अंशु॥ ६४ ॥

1. घर में। 2. मुंह लगा रखा है।

अंशु ६५

सिक्खनि प्रसंग

दोहरा

मति जिन की अनजान है निंदहिं मूढ गवार।
मिलहिं परसपरि बोलते कौलां को तकरार॥ १॥

चौपई

'श्री गुरु रामदास बडिआई। रहि बिराग निति द्रिग जल जाई।
इकि रस व्रिती सदा चित शांती। जिनि के मोह न माया ताती[1]॥ २॥
सति संगति करते दिन बीते। बैठहि शबद संगति चित प्रीते।
जागहिं जामनि के जुग जाम। तबि सतिसंग होति अभिराम॥ ३॥
तिनि के सुत श्री अरजन भए। गुन गन पिखि गुर गादी दए।
तिनहुं करे जेतिक उपकार। छपे नहीं, बिदते संसार॥ ४॥
श्री अंम्रितसर रहे बनावति। बहुरो तारन तरन सुहावति।
श्री ग्रंथ साहिब गुरु कर्‌यो। मनहुं श्रेय को मंदर भर्‌यो॥ ५॥
जबि लौ तन की थिरता[2] लहे। पर-उपकार करति ही रहे।
चहु दिशि उज्जल जसु बिसतारा। करत्यो बीते सुशट[3] अचारा॥ ६॥
तिनि के सुत इह गादी बैसे। भए न पिता पितामा जैसे।
आगै पातिशाह घरि आवति। गुरु गादी को सीस निवावति॥ ७॥
इह शाहुनि के पासि पधारे। दुरग कैद थल बसे मझारे।
अपर नरेश देश को जैसे। इनहु अपनि गति ठानी तैसे॥ ८॥
हुइ निरदै चंदू को मारा। नहीं दया को लेश बिचारा।
शाहु संग पुन आवति जाव। जथा औरि तिन को उमराव॥ ९॥
नहीं बिचारी अपनि बडाई। जहांगीर ढिग वसे तदाई।
संगि लहौर बास बहु करि कै। काज़ी दुहिता आनी हरि कै॥ १०॥
कर्‌यो काज इह दीरध खोटा। जानि तेज बडि किनहुं न होटा[4]।
आनि आपने सदन बसाई। नहीं लखी निज बंस बडाई॥ ११॥

1. कष्ट देने वाली। 2. स्थिरता। 3. सुष्ठु आचार। 4. रोका।

अबि लौं नहिं गिलान कहु करते। शाहु सैन ते उर नहिं डरते।
पुन पैंदे खां तुरक बिसाला। राख्यो निकटि दरब दे जाला॥ १२॥
बूझहिं तिसहिं काज जो करना। दिन प्रति करहिं अधिक ही करुना।
इत्यादिक दोशन को लहि लहि। निंदहिं मिलि आपसि महिं कहि कहि॥ १३॥
सुधा सरोवर लवपुरि आदि। करति जहां कहिं गुरु अपवाद।
'सरब शिरोमणि गादी थिरे। अंगीकार कुकरमनि करें॥ १४॥
सुनहिं सिक्ख जहिं कहिं गुरु निंदा। बसि नहिं चलहिं धरहिं चित चिंदा[1]।
मिलि आपस महिं करंति बिचारे। 'कोइ न कहि करि गुरु हटिकारे॥ १५॥
उचित आपि के करम न ऐसे। बरतहु पिता पितामा जैसे।
कहा भयो गुरु सुमति न चीनि। जिमि टामनि[2] ते बसि करि लीनि'॥ १६॥
इत्यादिक सिक्खनि महिं होयहु। दुखिति अधिक चित गुरु इमि जोयहु।
बहुर व्याह को दिन नियरायो। सकल मसंदनि बाक अलायो[3]॥ १७॥
'कीजहि मेलि बुलावनि सारो। काज महां किमि रिदे बिसारो।
करहु कराहे अबहि चरावनि। आइसु दिहु पकवान पकावनि॥ १८॥
आगै गंगा मात सु जाना। काज संभारति जितिक महाना।
जथा जोग मंगल करिवावति। आइसु देते नीक बनावति॥ १९॥
अबि तौ रावर के इखत्यारि। करिवावहु सभि कारज त्यारि'।
सुनि गुरु कितिक काल नहिं कह्यो। आगै बिघन होनि को लह्यो॥ २०॥
मौन ठानि करि बैठे स्वामी। कुछ न बखान्यो अंतरिजामी।
पिखि सुभाव कौ सभि बिसमाए। कहां गुरू गति लखी न जाए॥ २१॥
बहुरो मंदर जाइ प्रवेशे। थिर प्रयंक परि जबिहूं बैसे।
तबि दमोदरी चलि करि आई। सुता ब्याह की गथ[4] समुझाई॥ २२॥
'क्यों न करावति हो सभि आहर। काज बिसाल बिदति भा जाहरि।
अबहि कराहे कहि चरवावहु[5]। जित कित ते सभि मेलि बुलावहु॥ २३॥
श्री सतिगुरु सुनि तबहि बखाना। 'करहु पकावनि गन पकवाना।
मेलि हकारनि बनहि न अबिही। अपर कार त्यारी करि सबिहीं'॥ २४॥
सुनि दमोदरी उर बिसमाई। इह किमि बोलति लखी न जाई।
कह्यो सभिनि सों करनी कार। नहिं इकि कीनसि मेल हकार॥ २५॥
भांति भांति की होति मिठाई। करि करि त्यारि धरहिं इक ठाई।
लोकनि बिखै बिदति सभि होई। 'मेल बुलावनि कियो न कोई॥ २६॥

---

1. चिंता। 2. टोना। 3. कहा। 4. बात। 5. चढ़ावो।

इह भी नई रीति कुछ कीनी। कुल की चालि त्यागि करि दीनी।
पुन दमोदरी कहि बहु बारी। उत्तर दियो न. तूशनि धारी॥ २७॥
इकि दिन सिख जिस थल गुरदास। बैठे ब्रिंद जाइ करि पास।
बदली सोढी, सेठ गुपाला। तखतू, तीरथ, नवलु, निहाला॥ २८॥
किशना, जैत, तिलोका सूर। सिक्ख तुलसीया रहति हजूर।
इत्यादिक जानहु सिख ब्रिंद। केतिक गिनीअही नाम बिलंद॥ २९॥
हाथ जोरि गुरदास अगारी। सगरे सिखनि गिरा उचारी।
'जहिं कहिं वधी गुरू की निंदा। सुनि नहिं जरी जाइ, चित चिंदा॥ ३०॥
तुम अरु बडे जु बुड्ढा साहिव। श्री अरजन के महां मुसाहिब[1]।
जे इत्यादि अपर सिख धीर। तिनहुं न कबहुं बिठावहिं तीर॥ ३१॥
जिमि मलेछ बड पैंदे खान। राखहिं निकटि प्रेम को ठानि।
पुनि कौलां की बाति अजोग। पिखि कुकरम निंदति हैं लोग॥ ३२॥
तुम श्री गरु अरजन के मेली। क्यों समझाइ न ठानहु ठेली।
सुनि गुरदास कही निज बानी। इकि पौड़ी वचि वारि वखानी॥ ३३॥

धरमसाल करि बहीदा इक्कत थां न टिकै टिकाइआ।
पातिशाह घरि आंवदे गड़ चढ़िआ पातिशाह चढ़ाइआ।
उम्मति महिल न पांवदी नठा फिरे न डरे डराइआ।
मंजी बहि संतोख दा कुत्ते रखि शिकार खिलाइआ।
बाणी करि सुण गांवदा कथे न सुणै न गांव सुणाइआ।
सेवक पासि न रक्खीअन दोखी दुसटु आगू मुहि लाइआ।
सच्च न लुकै लुकाइआ चरण कवल सिख भवर लुभाइआ।
अजर जरै न आप जणाइआ॥ २४॥ वार २६।

चौपई

नहिं चिंता तुम मन महिं धारो। गुरु को पूरन ब्रहम विचारो।
श्री परमेशुर के अवतार। गति नहि जानी जाइ उदार॥ ३४॥
कृशन अनेक म्रिजादा तोरी[2]। किसकी लाज[3] कीनि नहिं थोरी।
करति रहे निंदा अनजान। सो ईशुर निरलेप महान॥ ३५॥
जो तुम चाहति कछू कहायो। चाहति हो इह भरम हटायो।
तौ ब्रिध निकटि बेनती करीयहि। कहिबे को सामरथ बिचरयहि'॥ ३६॥
सुनि करि सिक्खनि बहुर बखाना। 'तुम भी चलहु ब्रिद्ध के थाना।
दरशन करहु संग निज ल्यावहिं। तिनि ते गुरु ढिगि सफल कहावहि'॥ ३७॥

---

1. संगति वाले। 2. तोड़ी। 3. लिहाज़।

सुनि बिनती को उठि गुरुदास। सिक्खनि सहत गए ब्रिद्ध पासि।
बीड बिखै झुंगी जिनि पाई। इकि रस ब्रिती अनंद ठहिराई ॥ ३८ ॥
जाइ निकटि बंदन सभि कीनि। कह्यो जोरि कर होइ अधीन।
'सभि की चिंता आपि निवारहु। तुम ही उचित रिदै निरधारहु ॥ ३९ ॥
गुरु निंदा नहिं जाइ सहारी। चलि आए हम शरनि तिहारी'।
सरब बारता कहि समुझाई। कह्यो मरम गुरुदास बनाई ॥ ४० ॥
सुनि ब्रिध सभि को कह्यो सुनाई। 'समरथ को नहि दोश कदाई।
चहैं सु करैं, न भरमहु रिदे। करमनि ते लिपाइ नहि कदे' ॥ ४१ ॥
सुनि सभि कह्यो 'जथारथ बाती। तऊ न हम चित आवति शांती।
चारहु बरनाश्रम अरु तुरका। बहु अपबाद करति हैं गुरु का ॥ ४२ ॥
चलहु आपि मिलि गुरु समुझाइ। दोनहु को दिहु संगि हटाइ।
नाहित कौलां केरि जरूर। संगि छुटावहु श्री गुरू पूर ॥ ४३ ॥
तबि गुरुदास कह्यो 'सिख सारे। आइ परे अबि शरनि तिहारे।
मैं भी रह्यो बहुत समुझाइ। इन की इच्छा देहु पुजाइ' ॥ ४४ ॥
सुनि सभि ते ब्रिध करुना धारी। गुरु मिलिवे हित ह्वै करि त्यारी।
भयो संगि, पुरि को चलि आए। बचन बिलास करति समुदाए ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे पंचम रासे 'सिक्खनि प्रसंग' बरननं पंचशशटी अंशु। ६५।

अंशु ६६
भाई ब्रिद्ध प्रसंग

दोहरा

ब्रिद्ध भाई गुरदास को आगै करि समुदाइ।
पहुंचे पुरी बिलोकि कै श्री अम्रितसर थाइ ॥ १ ॥

चौपई

करि शनान हरि मंदिर गए। हाथ जोरि सभि बंदति भए।
बहुरि प्रदछना चहुं दिशि फिरे। पुरि जन मिले सुनति हित धरे ॥ २ ॥
बूझे 'अबि सति गुरु किसी थान'। पुरि जन भन्यो 'आपि सभ जानि।
चढे अखेर ब्रिति को गए। पूरब दिश को सनमुख भए' ॥ ३ ॥
सुनि ब्रिध साहिब रिदा रसाले। सिक्ख संगि सभि तितु दिशि चाले।
अधिक ब्रिच्छ गाढे गन खरे। बदरी[1] चत्र-दल[2] आदिक हरे ॥ ४ ॥
गए रामसर के तबि तीर। बैठे तहिं ले सिक्खनि धीर।
गुरु के सनमुख कितिक पठाए। 'हमरी सुधि कहीअहि इति आए' ॥ ५ ॥
आगै सतिगुरु करी अखेरे। हति करि बन के जीव घनेरे।
आवति चढे चमूं गन संगि। चंचल बली कुदाइ तुरंग ॥ ६ ॥
जाइ मिले सिख कोस अगारी। चरन कमल परि बंदन धारी।
हाथ जोरि कीनि अरदास। 'ब्रिध साहिब भाई गुरुदास ॥ ७ ॥
रावर के दरशन हित आए। प्रथम सुधासर मद्ध नहाए।
इति सुधि सुनी आपि की जबै। थिरे रामसर तीरथ तबै' ॥ ८ ॥
सभि गति जानी अंतरजामी। सिख तखतू संग बोले स्वामी।
'कितिक काल बीता तिन आए। केतिक सिक्ख संगि मै ल्याए' ॥ ९ ॥
'सुनहु प्रभू तहिं बैठे जबै। मैं आयो धावति इत तबै।
बीति गई घटिका अबि दोइ। बीसक सिक्ख संग मैं जोइ[3] ॥ १० ॥
इमि बतरावति[1] सतिगुर आए। कानन गाढो ब्रिध जिह थाएं।
हयते उतरि गए गुर तहां। सिक्खन सहत थिर्‌यो ब्रिध जहां ॥ ११ ॥
सुध को लहिं गहि हाथ सटोरी[2]। उठ्यो अग्र मति प्रेम सु बोरी।
परम ब्रिद्ध बल ते तन खाली। त्यों त्यों सिखी अधिक संभाली ॥ १२ ॥

---

1. बेर। 2. पीपल। 3. मैंने देखे हैं। 4. बातें करते, बतलाते। 5. सोटी, लाठी।

गुर के चरन कमल अभिलाखे। तिसे हटाइ आपि कर राखे।
इमि करि बंदन आपसि मांही। बैठे राम ताल तट पाही ॥ १३ ॥
श्री हरि गोविंद बाक बखाने। 'किसि प्रकार ते आवनि ठाने।
जे तुम कहति आइ उति जाते। आपि खेद क्यों धार्यो गाते ॥ १४ ॥
जेठ मास की तपति बडेरी। सहि करि किमि आए इसि वेरी'।
सुनि बुड्ढा बोल्यो 'तुम स्वामी। सभि घट जानति अंतरजामी ॥ १५ ॥
तऊ सिक्ख संगति गुर केरी। कह्यो चहिति इनि के हित[1] प्रेरी।
निज दासनि के कशट बिनासनि। रावर को जग बिखै प्रकाशनि ॥ १६ ॥
सूरज किरन सरब थल लागे। तऊ न लेप रंच भरि पागे।
भक्ख अभक्ख[2] अगनि महिं परै। एकि दोश भी छुयो न धरै ॥ १७ ॥
तिमि तुमरी गति है सभि काल। जानति हैं जिनि सुमति बिसाल।
नर लीला जग पिखि करि सारे। मूरख मति अपवाद[3] उचारें ॥ १८ ॥
सुनि सिख खिझहिं लरहिं तिन संगि। नहीं सहार सकहिं मन भंग।
धरहिं बिखाद[4] कलेश करंते। जहिं कहिं मूढनि सों झगरंते ॥ १९ ॥
निज संगति को करहु सुखारी। इमि जाचति हम निकटि तुमारी'।
सुनि गुरु कह्यो 'आपि उपकारी। परकारज को तन श्रम धारी ॥ २० ॥
मो प्रति दिहु आइसु जिमि होइ। माननीय रावरि बच जोइ।
तुम ते नहिं अदेय कुछ मेरे। हौं अनुसारी संझ सवेरें' ॥ २१ ॥
सभि के सुनति ब्रिद्ध पुनि कहे। 'सदा प्रेम के तुम बसि रहे।
मिलनि हेत जेतिक तप कीने[5]। भली भांति सो रावर चीने ॥ २२ ॥
तिसी हेतु मेरे बच भए। अंगीकार आपि ने कए।
अबि कौलां को त्यागि भलेरो। तप को फल तिनि लह्यो घनेरो ॥ २३ ॥
इह बिबेक संगति चहि कर्‌यो। जथा जोग तुम निकटि उचर्‌यो'।
इमि सुनि बिधीआ जेठा आदि। इह भी सुनति हुते अपवाद ॥ २४ ॥
जिते सुभट सभि ही सद संगि। अवसर लह्यो रिदे सु उमंग।
कहति भए 'ब्रिध अधिक बडेरे। खट सतिगुरु जिनि आंखनि हेरे ॥ २५ ॥
माननीय इनि बाक भलेरे। कहति साच ह्वै निंद घनेरे'।
सुनि गुरु जान्यो मति सभि केरो। चहिति बिबेक[6] करनि हित मेरो ॥ २६ ॥
है आछी जबि रिदे बिचारी। सभि के सुनत्यों गिरा उचारी।
'सुनहु ब्रिद्ध जी! बाक तुहारे। भई तिनहुं ते अंगीकारे[7] ॥ २७ ॥
तुम बच ते बिबेक अबि होवा। अरु त्यागनि कौलां कहु जोवा।
भई अवधि पूरनि अबि तांही। पंद्रह दिवस और रहिं जांही ॥ २८ ॥

---

1. प्रेरित बात। 2. भक्ष्य अभक्ष्य, अच्छी-बुरी वस्तु। 3. निंदा। 4. विषाद। 5. कौलां ने। 6. विवेक विचार। 7. स्वीकृत।

बिना त्यागि ते त्यागनि होई। इस महिं संसै रह्यो न कोई।
होनिहार होयो जबि चहै। तबि रावर मुखते बच कहैं॥ २९॥
ब्रहम असत्र रघुबर कर जैसे। तुमरो बाक निफल नहिं तैसे।
कहो बिबेक लगावनि मोही। ततछिनि करौं पाइ बच तोहीं॥ ३०॥
गुरु ते सुनति सरब उर हरखे। जनु अनंद के बादर बरखे।
ब्रिध साहिब कर सों कर गह्यो। कुछ तहिं चले भलो थल लह्यो॥ ३१॥
'इह बिबेक तुम को लगि भारी। जथा सरूप धर्यो उपकारी।
अपनो सर खनिवावनि कीजै। नाम बिबेक ताल धरि दीजै॥ ३२॥
बिगरहि रहति बिखैं सिख जोई। आनि शनानहि निरमल होई।
अपर कामनावान जु सेवै। रावर को प्रताप सो देवैं॥ ३३॥
सुनि बिध के बच पट कट[1] कसी। लई मंगाइ हाथ गहि कसी।
खनी म्रितका बहिरि गिराई। पुनि सिक्खनि तहि कार[2] कमाई॥ ३४॥
खनहि म्रित्तका बहिरि निकारै। निज बसत्रनि महि भरि भरि डारैं।
सुभट सिक्ख जेतिक तहिं खरे। सर की कार सरब लग परे॥ ३५॥
उतलावति गन कार निकारैं। गुरु हित करहि, प्रमोद बिचारैं।
द्वै घटिका दिन बाकी रह्यो। 'अबि हटि जाहु 'गुरु तबि कह्यो॥ ३६॥
"सिक्ख बिबेकी इहां निवासहिं। समै पाइ पाको[3] चहुं पासहिं।
गुरू अरूढति भए तुरंग। करि असवार बिद्ध लिय संगि॥ ३७॥
करि मज्जन सभि सिक्ख समेति। गमनि कीनि सोढी कुलकेत।
करि बंदन हरि मंदिर गए। धरमसाल ब्रिध डेरा कए॥ ३८॥
'कौलां की बीतहि अबि बाति'। कहि आपसि महिं उर हरखाति।
'ब्रिद्ध नरोतम को बडि कहिबो। अंगीकार करनि सभि चहिबो॥ ३९॥
अटल बाक जिनि के नहिं टलहिं। चलहि सुमेर तऊ नहिं चलहिं।
अपनि महिल महिं सतिगुर गए। सुपति जथा सुख राति बितए॥ ४०॥
भई भोर करि दरशन गयो। बीड़ बिखै बासो निज कियो।
इक रस ब्रिती अनंद महिं झूले। सम सरूप जबि कबहुं न झूले॥ ४१॥
अजमति[4] धारति बली बिसाला। बिदत करहि कित किसहुं काला।
रह्यो इकांत जानि कै तहां। दुतीऐ गुरु-सेवा हुइ महां॥ ४२॥
तिम सतिगुरु शुभ करे बिलासा। पूरन करति सभिनि की आसा।
ऊचि कि नीच प्रेम को ठानति। अधिक घाट सभि गुरु पछानति॥ ४३॥
करनि कामना पूरन दास। तन धरि बिलसति एव बिलास।
निंद उसतती कोऊ करै। बिरद प्रेम के बसि निज धरै॥ ४४॥

इति श्री गुर प्रताप सुरज ग्रंथे पंचम रासे 'भाई ब्रिद्ध प्रसंग' बरननं गुरु चरित कवि संतोख सिंह बिरचतायां भाखायां खशट शशठी अंशु॥ ६६॥

पंचम रासि समापतिमसतु शुभमसतु।

---

1. कटि, कमर। 2. परिश्रम करना। 3. पक्का। 4. गरिमा, महिमा।

रासि खशटमि

१ओं सतिगुर प्रसादि ।

१ओं श्री वाहिगुरू जी की फतह ।।

अथ खशटम रास प्रारंभते,

अथ जुद्ध प्रबंध कथनं ।

अंशु १

नारद प्रसंग

इश्ट देव मंगल

दोहरा

सति चेतन आनंद[1] इक असति भांति प्रिय पूर[2] ।
नभ सम सभि महिं शुभ करन, गन मंगल को मूर ।। १ ।।

कवि संकेत

चंद अमंद मनिंद[3] मुख सुमति कुनिंद[4] बिलंद ।
पद अरबिंद अनंद-दरा बंद गिरा कर[5] बंदि ।। २ ।।

इश्ट गुरु मंगल

कबित्त

बंदना को लेति ही, अबंदता[6] 'को देति जन, प्रीति लेति देति हैं प्रतीत सुख सेतु हैं ।
भाउ उर लेति ही, प्रभाउ बडो देति आपि, त्रिगुन पद देति, जन गुन देखि लेति हैं ।
थोरी जैसी भेट लेति, जम की अभेट देति, सतिगुरू नानक संतोख सिंह चेति है ।
हंता[7] लेति दासनि की, इहं ब्रह्म देति उर, मन लेति चरन में, मुकति सु देति हैं ।

इशट् गुरु मंगल

दोहरा

अजर जरन धीरज धरन देति शरन जन दान ।
श्री अंगद सुख-करन को नमसकार गुन खान ।। ४ ।।

इशट् गुरु, मंगल

अति उदार बखशति[8] प्रभू दोनहु लोक अनंद ।
अमरदास श्री सतिगुरू बंदौं जुग कर बंदि ।। ५ ।।

---

1. सच्चिदानंद 2. भरा पूरा है 3. मानिंद, भांति 4. करने वाला 5. हाथ जोड़ कर 6. स्वतंत्रता 7. अहंता, अहंकार । 8. प्रदान करना है ।

इशट् गुरु मंगल

त्रास बिनाशि उपासकनि[1] पुरहिं आस गन दास ।
राम दास सुखरास को नमो हुलास प्रकाश ।। ६ ।।

इशट् गुरु मंगल

श्री अरजन सिरजन अनंद तरजन[2] जनन[3] बिकार ।
बरजन दुरजन तेज को तिन पग-रज सिर धारि ।। ७ ।।

इशट् गुरु मंगल

कबित्त

बोध महिं बिदेह, जुद्ध क्रुध मद्ध रामचंद, सिक्ख तारिबे को भवसिंधु ते जहाज़ हैं ।
करुणा निधान ते बिशनु परमान मन, कीरति प्रकाशबे को सोइ दिजराज[4] हैं ।
प्रगट प्रताप मैं प्रचंड मारतंड बडे, शोभा सभि लैबे कउ सुहाइं सुरराज हैं ।
धीरज धरन को धरनि रूप बीरबर, श्री हरिगुबिंद सुख कंद ह्वै बिराज हैं ।। ८ ।।

इशट् गुर मंगल

सवैया

देव तरोवर[5] है न इहै, हरि राइ गुरू करि देव तरोवर ।
सो सुर धेनु नही मन जानिये, सेव गुरू सुर धेनु लहै नर ।।
है न चिंतामणि बूझ जि देखिये, श्री गुरु के नख चिंतमणी बर ।
सो न सुधा मधुराइ को धारति, ग्यान गिरा गुर की मधुरी तर ।। ९ ।।

इशट् गुर मंगल

दोहरा

लाल म्रिदुल सुंदर जुगल कमल ललित अलपाइ[6] ।
चरन गुरू हरि क्रिशन के अलि मन मिलि सुख पाइ ।। १० ।।

इशट् गुरु मंगल

चादर[7] भे हिंदुवान की बादर अनंद उदोति ।
तेग बहादर गुर नमो सिमरे हादर[8] होति ।। ११ ।।

इशट् गुरु मंगल

कबित्त

भ्रिगु-नंद[9] दान दीनि तांही के अच्छत्र छोनि,
जाचति फिरति दीन दिज्जन को गोत है ।

---

1. सेवकों का । 2. ताड़ना करने वाले । 3. दास जन के । 4. चंद्रमा । 5. तरुवर । 6. घटिया होता है । 7. लज्जा एवं प्रतिष्ठा का आवरण । 8. विद्यमान । 9 भृगु के पुत्र परशुराम ।

रामचंद अनंद-संदोह असुमेध विखै पायो दान,
खायो पूत पोते नाती पोत है।
पंड[1] पूत, सूर[2] सुत आदि जे संतोख सिंघ,
दीनि जिन दान पुन छीनता उद्योति है।
श्री गुबिंद सिंह महादान दीनो को न सम दिन,
दिन दूनो दूनो चौनो चौनो[3] होत है ॥१२॥

कबित

दल जे दिलेश[4] अचलेश दोऊ मिलि धाए
धुरवा[5] से धौंसा की धुंकार उठे घोरि घोरि।
बांधे वडे ठट्ट भट्ट धट्ट के संघट्ट जुट,
लोह की चमक छटा छबि भांत कोरि[6] कोरि।
गोरे परे ओरे, धूम अधिक अंधेरो धूर,
हलके हरौल[7], हलाहली उठै ठौरि ठौरि।
तौलो ही बनाउ श्री गुबिंद सिंह राउ,
जो लो छोरे न समीर तीर जेहि[8] मांहि ओरि[9] जोरि ॥ १३ ॥

दोहरा

सुनहु कथा गुर की रुचिर जिम संग्राम प्रसंग।
मन बांछति प्रापति करहि पुंन महिद[10] अघ भंग ॥ १४ ॥

सवैया

एक समें हरि गोबिंद जी निज मंदिर सुदर बीच थिरे।
क्वैन समीप महीप जु थे नर अंदरि आवन बंद करे।
देखि भलो अविकाश रिदै लखि कारनि मेलि अनंद धरे।
सारद[11] बारद[12] सारद पारद ता सम नारद मोद भरे ॥ १५ ॥

सवैया

औचक मंदर मैं बिदत्यो, गुर हेरि उठे हित आदर के।
वंदन आपस मांहि करे कहि वाक सरूप जु कादर[13] के।
'आवहु देव मुनी ! उच बैठहु कीन क्रिपा इत आचर के।
आवन कारन कौन कहो किम बांछति कारज जे उर के ॥ १६ ॥

---

1. पंडु पुत्र युद्धिष्ठर। 2. सूर्य पुत्र करण। 3. 2×2; 4×4। 4. दिल्लीपति औरंगज़ेब। 5. बादल। 6. करोड़ों। 7. हरावल, सेना का अगला दस्ता। 8. धनुष की तांत। 9. जोड़ कर। 10. महत्त्वपूर्ण। 11. शरत् ऋतु का ; शारद। 12. बादल। 13. कुद्रत वाला प्रभु।

नारद रूप बिलंद निहारति सुंदर क्रांति भुजा बल भारी।
दीरघ श्री मुख मंडल पै कल-कुंडल डोल बडी दुति वारी[1]।
अंग विशेश अशेश अहैं पट. बेस सु बेश[2] सजै मुदकारी[3]।
ब्रिंद अनंद को पाइ रह्यो, गुन कीरति कौ तबि कीनि उचारी ।। १७ ।।

भुजंग प्रयात छंद

'गुरू रूप धारे नमो लेहु मोहि। सदा ग्यान मै ध्यान मैं बास रहही।
परं ब्रहम नाथं, लखै नांहि कोई। कला-जाल[4] धारो करामात गोई[5] ।। १८ ।।
निरालंब नाथं. निरालं बचित्रं। प्रभू हो बिभू हो. अभै हो पवित्रं।
कली काल मैं पंथ कीनो मुखारे। निजं दास दैहोंपदेशं[6] उधारे ।। १९ ।।
बिना दंभ ह्वै कै भजै साच नामं। तजै देहि हंता. लहै आप धामं[7]।
महां मोह मातंग शेरं समानं। बिकारं तमं दीप जैसे प्रहानं[8] ।। २० ।।
भए बंस बेदीन के भानु जोए। पुनं तेहणं बंस के चंद होए।
पिता मोहरी[9] के धर्‌यो रूप फेरं। गुरू रामदासं प्रकाशं घनेरं ।। २१ ।।
भए शांत रूपं रच्यो ग्रंथ बानी। सुधा ताल कीनी अघं दास हानी।
पिता आप के धीर धारी धरा सी। गुरू पंच देशानि सिक्खी प्रकाशी ।। २२ ।।
धर्‌यो आप रूपं महा शसत्र धारो। गुरू पंच ते और रीतं सुधारी।
धरी तेग पीरी रु मीरी प्रकाशी। करो क्यों न काजं जथा शत्रुनाशी ।। २३ ।।
दया-सिंधु सीलं कुचालं-प्रणासी। करो आप लीला जथा मान वासी।
महाराज राजानि राजाधिराजं। तुही दीन बंधू सजै संत काजं ।। २४ ।।
नमो तोहि स्वामी रसं बीर राचो। बनो जुद्ध जैता. महां रुद्र माचो।
इसी हेतु जानो अयो[10] तीर तेरे। सवाधान[11] हूजै सुनो बाक मेरे ।। २५ ।।

दोहरा

इह अशटक उचर्‌यो जबै बैठि उचारन फेर।
श्री नानक की बारता कहनि लग्यो तिस बेरि ।। २६ ।।

चौपई

'मोदी खाने समों बितायो। बहुरो करता पुरख बुलायो।
बेईं बिखै बरण जबि कह्यो। जाइ तहां उपदेशनि लह्यो ।। २७ ।।

---

1. छबीली। 2. अधिक। 3. प्रमोदकारी। 4. शक्ति समूह। 5. गुप्त। 6. दे कर, उपदेश। 7. आतमस्वरूप ; गुरु नगरी। 8. आक्रमण। 9. गुरु अमरदास। 10. आया हूँ। 11. सावधान, होशियार।

तबि ते तजि करि सकल समाजा। सिक्खी बिसतारिन के काजा।
देश बिदेश धरा पर फिरे। सुनि करि सकल लोक मग परे॥ २८॥
तिसी रीति तुम बीच कुटंब। जुद्ध करनि ते धरी बिलंब।
सो मैं सिमरनि को करिवावौं। जिस रण को पिख नित हरखावौं॥ २९॥
सुनि सतिगुर बोले मुसकाइ। पिखहु जुद्ध अबि भटिनि अघाइ।
रहे अलप दिन देरि न कोई। मुचहि लोह-गढ़ो दिश दोई॥ ३०॥
तुझ को रहे उडीकति[1] आगे। नारद आवहि कलहा जागे।
कली काल को जंग अखारा। करि दिखरावों शत्रु संघारा॥ ३१॥
अबि ते जागहि जुद्ध बडेरा। बहर करहि रण पौत्र जु मेरा।
रुंड मुंड रण थल बिथरावैं। जोगनि ग्रिझन रुधर अघावैं॥ ३२॥
पुन बड पंथ खालसा गरजे। तेज तुरक को तरजति बरजे।
देखति रहीयहि जंग घनेरे। अबि ते छिरहिं रहैं चिर बेरें॥ ३३॥
सुनि नारद आनंदति होवा। नमो करति उठि तबहि खरोवा[2]।
गमन्यो सुरपुरि सुरनि मझारा। गुर प्रसंग तहिं सरब उचारा॥ ३४॥
सो निस दिन सति गुरू बिताए। सुभट हकारे निकटि बिठाए।
करी नदर महिं सगरी सैना। दिये शसत्र जो जिस ढिग है ना॥ ३५॥
बखशे तेगे खडग दुधारे। दरम्यानी चौरे[3] बढि[4] वारे।
सैफ[5] सरोही जाति जन्नबी[6]। महिद फुलादी तेज़ हलब्बी[7]॥ ३६॥
खंडे बडे प्रचंड उठाए। गुजराती सूरत समुदाइ।
करकति महां तुफंगनि गन को। कंचन लिपति दई सुभटन को॥ ३७॥
इक लांबी गुलकां[8] जिस केरी। अधिक दूर ते मारति बैरी।
अलप मद्ध के बडि जंजैल[9]। गहे तमाचे रण के छैल[10]॥ ३८॥
तोमर बरछी सांग बिसाला। किनहु धनुख ले तीरन जाला।
गुलकां बहु बरूद भरि दीनि। गन जोधानि जमा करि लीनि॥ ३९॥
खरे तबेला बिखै तुरंग। करे सजावनि ज़ीननि संगि।
जिसि ढिगि नहिं तिसि को तबि दीना। फेरति सूर अरूढ़ि प्रबीना॥ ४०॥
करें शिकार ब्रित समुदाइ। 'रहो त्यार[11] निज साज बनाइं।
इमि सतिगुर सभि सनि कहि दीना। 'चलहिं दूर किति' सुभटन चीना॥ ४१॥

---

1. प्रतीक्षा करते। 2. खड़ा हुआ। 3. चौड़ी। 4. धार वाले। 5. तलवार। 6. रूमानिया के नगर जन्नब की। 7. हल्लब देश की। 8. तोपें। 9. रहकला तोप। 10. छैल छबीले सैनिक। 11. तैयार।

ब्याहि करनि की देरि लखीजै। गुरू चढ़ें किति दूर जनीजै[1]।
त्यारी करी चमू की घनी। नहिं आगे कबिहूं इमि बनी ॥ ४२ ॥

इमि जोधा मिलि आपसि मांही। मन अनुमान करहि बिध वाही।
हेत व्याह के चर्हे कराहे। गन पकवान पकहिं घर माहें ॥ ४३ ॥

मोदक नुगदी खुरमे बरे। ब्रिद जलेब नीकि विधि करे।
घेवर घने घ्रित को लाइ। करे विसाल सिता[2] बहु पाइ ॥ ४४ ॥

कौन कौन गिनीअहि पकवान। कोशठ भरति जाति सुच थान।
जबि की गंग प्रलोक पधारी। सभि दमोदरी कार संभारी ॥ ४५ ॥

दासी दास आदि नर घर के। तिस अनुसारि रहहि उर डर के।
सभि पकवान धरावति जाती। जानहि 'खैहैं ब्रिद बराती' ॥ ४६ ॥

घ्रित सिता[1] अन अंन घनेरे। कमी न कछु वसतू बहुतेरे।
निति संभारति अधिक करावहि। ब्रिद मनुज शुभ पाक बनावंहि ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे नारद प्रसंग बरननं नाम प्रथमो अंशु ॥ १ ॥

---

1. जाना पड़ता है। 2. मिश्री, चीनी।

अंशु २

संगत प्रसंग

दोहरा

एक समें एकलि गुरू वैठे अंनरि भौन।
थिर प्रयंक पर हरख उर, नही समीपी कौन ॥ १ ॥

चौपई

सकल जोगनी को सिरदार। जिसि को रूप महां बिकरार।
कलहा नाम श्याम तनु धारा। दीरघ दांत तुंड[1] बिसथारा ॥ २ ॥
ब्रिंद जोगनी जांके संगि। दारुन बने जिनहु के अंग।
लाल बाल छुटि बड पिछारी। सूके चरम दिखहि गन नारी[2] ॥ ३ ॥
लाल बिलोचन श्रोणि सरसे। खप्पर धरे खोपरी कर मे।
हाडनि माल बिसाल कराला। जीरण चीर मलीन कुढाला ॥ ४ ॥
आनि भई गुरु आगे ठांढी। रुधर मास प्यासा छुधि बाढी।
जीह[3] दीह सों ओशट चाटति। जिह पिख कातुर[4] के उर ढ़ाटति ॥ ५ ॥
नमो करी गुरु बूझन कीनी। 'कौन अहैं तूं लाज बिहीनी।
संकट बड अकार कै धारा। कै कुरूप दारिद कुरिआरा[5] ॥ ६ ॥
किधौं मिरतु तुरकनि की आई। क्या चित बांछति देहु बताई'।
सुनि बोली 'कलहा मम नाम। छुधा त्रिखा मेटनि के काम ॥ ७ ॥
चलि आई मैं तीर तुहारे। दिहु अहार मेरो हितकारे।
बहु संमत बीते नहिं खायो। छुधा त्रिखा ते चित बिकुलायो ॥ ८ ॥
सभि की पुरहु कामना जैसे। क्रिपा करहु मोपहि भी तैसे।
सकल जोगनी मम परिवारा। छुधिति चाहती अधिक अहारा[6] ॥ ९ ॥
सुनि गुरु कह्यो, 'अंन मन भाए। लिहु हम ते, करि भोजन खाए।
जेतो लगहि अहार करनिको। दिहु बताइ लिहु उदर भरनि को ॥ १० ॥

---

1. मुंह 2. नाड़ियां 3. लम्बी जिह्वा 4. कादर, कायर 5. स्त्री वाला 6. आहार।

हमरे काम अंन नही आवहि । नहि संग्रह ले कबिहू खावहिं ।
मास रुधिर को करहि अहारा । होहि त्रिपति बहु लेहि डकारा' ॥ ११ ॥
गुरू कह्यो 'दें महिख मंगाई । भक्खहु मास छांग[1] समुदाई ।
जेतिक चहहु कहहु अबि मोही । दें अनवाइ त्रिपति जिमि तोही ॥ १२ ॥
अस ग्रामिख नहिं काम हमारे । नहिं कबि अचहिं न छुध्रा निवारे ।
मम अहार तुमरे कर अहै । अपन बिधिनि सों त्रिपति न लहैं ॥ १३ ॥
सो मैं कहों सुनहु गुरु पीर । दुहु दिशि दल जुटहिं बर बीर ।
करै हंकार शसत्र परहारैं । हुइ घाइल पुन तिस को मारैं ॥ १४ ॥
हटहि नं पाछै सनमुख गिरैं । मारि मारि रिपु गन रन मरैं ।
अस जोधानि मास ह्वै जोइ । सो हम खैबे लायक होइ ॥ १५ ॥
चिरंकाल भा जंग न भयो । यातें नहि अहार[2] किति खयो ।
सभि कुटंब जुति छुधिति बिसाला । रुधर न प्रापति भा किसि काला ॥ १६ ॥
यांते त्रिखा महां करि ब्याकुल । करति उडीकनि हम कुल आकुल ।
चिरंकाल की छुध्रा निवारो । रचहु जंग रिपु तुरकनि मारो ॥ १७ ॥
सुनि बिकसे गुर बाक बखाना । 'मचहि जुध अबि भीम महाना ।
संमत बितहिं सैंकरे आगे । होवहिं रण घरि घरि माँहि जागे ॥ १८ ॥
हम कर देहिं प्रथम पल तोही । लेहु डकार त्रिपति बहु होही ।
आनि पहूच्यो समैं तुमारा । मनभावति करि लेहु अहारा' ॥ १९ ॥
कलहा सहत जोगन ब्रिंद । भयो सभिनि उतसाह बिलंद ।
करि करि नमो नाचिबे लागी । लेति भवारी रण अनुरागी ॥ २० ॥
अंतरध्यान[3] भई हरखंती । 'अबि त्रिपतैं हम बहु छुधिंवंती[4]' ।
सो दिन सतिगुरु कीन बितावनि । निसि महिं करि भोजन को खावति ॥ २१ ॥
सुपति जथा सुख राति बिताई । जागे प्रभू सौच तन पाई ।
करि शनान मन ठान्यो ध्याना । पुन गुरबानी पाठ बखाना ॥ २२ ॥
किरतनि सुनति सु भोजन खायो । बैठे हुते गुरू सुख पायो ।
ताराचंद तखत मल दोऊ । पसचम दिश मसंद रहिं सोऊ ॥ २३ ॥
काबल नगर आदि जे औरि । गुरु की कार लेनि सभि ठौर ।
सुन्यो ब्याह गुरु तनुजा केरा । समुझे 'खरच दरब बहुतेरा' ॥ २४ ॥
सभि सिक्खनि सो कह्यो सुनाई । उगराही जहि कहि तबि पाई ।
लेकरि तहिं ते दरब घनेरे । अपर पदारथ संचि बडेरे ॥ २५ ॥

1. बकरा । 2. आहार । 3. अन्तर्धान (लुप्त) 4. क्षुधावंती ।

संगति संगि लए चलि आए। मिले चरन गुरु के लपटाए।
अपर सिक्ख धरि धरि उपहारा। बंदन करते दरस निहारा ॥ २६ ॥
बसत्र, बिभूखन, धन धरि निमैं। फलगन बहु मेवे तिह समैं।
ब्रिंद उपाइन गुरू अपारी। अरपि अरपि गुरदरश निहारी ॥ २७ ॥
कृपा द्रिशटि करि पिखें गुसाईं। मनो कामना सभि ने पाई।
अघ गन मिटे पुनीत भए हैं। बर सुत बितगन आदि लए हैं ॥ २८ ॥
ब्याह जानि उतलावति आए। समैं दुपहिरी दरशन पाए।
छुधिति हुते सिख संगति सारे। देग चुकी हुइ नही अहारे[1] ॥ २९ ॥
सभि भी कुशल बूझी गुरु स्वामी। बडी भोर के मारग गामी।
श्रमति अहैं कबि करैं अहारा। इम लख सतिगुर बाक उचारा ॥ ३० ॥
अंतरि होति जहां पकवान। कहि करि पठे दास तिसि थान।
'हित सिक्खनि के आनहु जाइ। थकति छुधिति बहु इह समुदाइ ॥ ३१ ॥
त्रिपति करहु दीजै हित खैवे। गए दास अंतरि तत्रि लैवे।
जहिं दमोदरी थित सवधान[2]। करिवावति बहु बिधि पकवान ॥ ३२ ॥
कोशठ अंतर करि करि धरैं। हित बरात के मंचनि करैं।
सुता ब्याह महि प्रीति महानी। जिमि आछो हुइ तिमि रुचि ठानी ॥ ३३ ॥
तबि सिक्खनि करि जोरि अलाए। 'सुनहु मात जी! गुरू पठाए।
पशचम ते संगति कछु आई। अनगन रुचिर उपाइन ल्याई ॥ ३४ ॥
देग बिखैं अबि नही अहारा। छुधित सिक्ख अबि लौ दिन ढारा।
तिनि हित मंगवायो पकवान। कछुक त्रिपति हुइ करि कै खान ॥ ३५ ॥
पुन संध्या हुइ देग अहारा'। इस प्रकार सतिगुरू उचारा।
सुनि दमोदरी मति बिचलाई। सिक्ख बिसाल सदन जनमाई[3] ॥ ३६ ॥
गुरु घरि महिं नित बास करंती। सिक्खी महिमा अधिक लखंती।
तऊ जि होनिहारि गति होइ। फेरी मति, बोली बच सोइ ॥ ३७ ॥
'इह पकवान सगुन के सनो। करि करि त्यारि राखती घनो।
अबि लौ खरचि नहीं किति कर्‌यो। जो होवत सो अंतरि धर्‌यो ॥ ३८ ॥
प्रथम बराती अचवनि करिहैं। तिनि पीछे को मुखि महिं धरिहै।
प्रथम न उचित किसू को दैवे। बिगरति रीति जि किनि ले खैबे ॥ ३९ ॥
किम सिक्खनि हित पूरब दैहैं। जबि लौ नहिं बराति कुछ खैहैं।
सुनति सिक्ख छूछे इति आए। 'कहैं न अबि लौ शगुन मनाए ॥ ४० ॥

---

1. आहार, भोजन। 2. सावधान। 3. जन्मी।

जबहि बराती अचिवनि करें। पीछे अपर कोइ मुख धरै।
बिगरहि रीति अहै जग जोइ। जे अबि अचहिं सिक्ख गनि सोइ' ॥ ४१ ॥
सिख संगति चहु दिश परवारे। सुनति गुरू रिस को उर धारे।
"आइसु मेटनि करहि हमारी। चहति बराति अचाऊं[1] ग्रहारी ॥ ४२ ॥
सिक्ख सदा मोकहु अति प्यारे। निस दिन जिन को रिदे संभारे[2]।
जिमि उपबन महिं उरुवरु खरे। सभिनि संभालनि माली करे ॥ ४३ ॥
पारति है करि प्रेम घनेरा। तिमि संगति उपवन है मेरा।
जिह ठां हुयो अमंगल चाहति। पुरनि[3] काज महिं बिघन उमाहति[4] ॥ ४४ ॥
करति अनादर तहिं सिख केरा। तिह के संगि होति है मेरा।
क्यों सुख प्रापति होवहि तिन को। गिर्यो रिदै ते निशचा जिन को ॥ ४५ ॥
प्रिय मेरे सिख जहिं चलि जावें। भोजन आदिक आदर पावें।
तहां बिघन गन होनि बिनाशा। पूरन करहिं तिनहु की आसा ॥ ४६ ॥
जेकरि गुर घर को पकवान। नहीं उचित सिक्खन को खान।
तौ मलेछ के जोग पछानो। बल ते करहिं आनि करि खानो ॥ ४७ ॥
होहि अमंगल, बिघन परै है। नीको काज न पूरन ह्वै हैं।
सुनि गुरु स्राप दियो घर आपे। सरब सिक्ख तबि थरहर कांपे ॥ ४८ ॥
क्रुद्धति बदन देखि गुरु केरा। नहिं को बोल सक्यो तिस बेरा।
मुख नीचे करि ढिगि थिर सारे। बडो बिघन भा रिदे बिचारे ॥ ४९ ॥
तिह छिन इक आयहु हलवाई। ल्याइ रजत पण पंच मिठाई।
हाथ जोरि सो भयो खरोवा। 'श्री गुरु जी! मम कारज होवा ॥ ५० ॥
करी हुती मैं 'सुक्ख[5] तुमारी। आस पुरी ते ल्याइ अगारी'।
बिकसे कुछ सतिगुरू बखाने। 'दिहु सिख संगति को इहु खाने' ॥ ५१ ॥
बाक मानि सिक्खन सो लीनि। सभि बरताइ अचवनो कीनि।
हुतो छुधति ले कुछ त्रिपताए। थिरे सरब ही निज निज थाएं ॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे संगत प्रसंग बरननं दुतियो अंशु ॥ २ ॥

---

1. खिलवाऊं। 2. याद करे। 3. पूर्ण होने। 4. पड़ता है। 5. मन्नत, मनोकामना पूर्ण होने पर भेंट देने का वचन।

अंशु ३
शिकार प्रसंग

दोहरा

सुनि सतिगुरु के स्राप की सकल रहे बिसमाइ ।
सुधि दमोदरी ढिग गई बहुत बैठि पछुताए ॥ १ ॥

चौपई

संकटि पाइ बिसूरति भारी । 'कीनि कहा मैं नहीं बिचारी ।
पति की आइसु मोरि[1] मिटाई । नहि आछी किसके मन भाई ॥ २ ॥
भई निसा गुरु महिलीं गए । बर प्रयंक पर बैठति भए ।
चलि दमोदरो तिस छिन आई । गुरु के स्राप अधिक डरपाई ॥ ३ ।
मुझ एकलि की सुता न कोई । रावर ते ही उतपति होई ।
जिसके ब्याहि बिखै दिय स्राप । चह्यो अमंगल करिबे आपि ॥ ४ ॥
अपर शकति किसि महि जो मोरै । जानी परहि आपदा घोरै ।
करहु क्रिपा फेरहु निज बैन । नहिं त ऊजरि होवहि ऐन ॥ ५ ॥
दुहिता प्रिया कुशल सो रहै । महां बिघन घरि परिबो चहै ।
रहहिं बराती कुशल समेति । सुख सो पहुंचहिं बहुरि निकेत ॥ ६ ॥
भई दीन पिखि आतुर भारी । श्री हरि गोबिंर गिरा उचारी ।
बिघन मूल मति तैं उर धारा । क्यों न करति अबि अंगीकारा ॥ ७ ॥
गुर के सिक्ख लखे असि खोटे । 'उचित न भोजन के' कह होटे[2] ।
होनिहारि तव रिदै बसाई । करि औगुन को पुन पछुताई ॥ ८ ॥
कुछु आछो फल जान्यो जाइ । नरगन महिं कुशली बनि आइ ।
अपर बिघन सो हटहिं न कैसे । भयो बाक होयहु चहि तैसे ॥ ९ ॥
कुछ दमोदरी हरखति होई । नरगन बिखे कुशल रहि जोई ।
सुख सो जाइं बराती घर को । तऊ डरति उर लागति धरको ॥ १० ॥

---

1. मोड़ कर, फिरा कर । 2. हटाए, रोक दिए ।

मुख कुमलाइ सशंकति होई। दहिन बिलोचन फरकति जोई।
दारुन काक शबद को करै। ग्रिद्धनि सहत भ्रमति घर थिरै ॥ ११ ॥
महां उदास दिवस दिखियंते। महां अमंगल निमित द्रिसंते।
सिमरति सागू को तिह समै। तिसके अछत फिकर नहिं हमै ॥ १२ ॥
जिसि के जीवहि रहे सुखारे। निज दुख किसि के निकट उचारें।
हुई हुती जे मुझ ते बुरी। सुनि करि जग गुरु छिमा न करी ॥ १३ ॥
किमि बीतहिगी व्याह मझारे। बुरे शगुन सभि जाहिं निहारे।
नहिं सनबंधी मेलि बुलायो। बहुर क्रोध कै स्राप अलायो[1] ॥ १४ ॥
इत्यादिक बहु रिदै बिचारति। उर दमोदरी चिंता आरति।
गुरु घर को इमि भा बिरतांति। रच्यो व्याह करि त्यारी दानि[2] ॥ १५ ॥
अबि सुणीयहि जिमि पर्यो बिगार। भया जुद्धा बहु भटनि संघारि।
लवपुरि शाह जहां किय बासा। अनगन चमू परी चहुं पासा ॥ १६ ॥
पैदिल ब्रिंद करे बहु डेरे। तिमि हय के असुवारि घनेरे।
गन मतंग चिंघारति खरे। कंचन रजत झूल परवरे[3] ॥ १७ ॥
चहूं दिशिनि को धन गन आवैं। दंभ भरैं सगरे डरपावैं।
अवनी तल महिं अस नहिं कोई। लोहा लेहिं समुख हुइ जोई ॥ १८ ॥
चक्रबरति जिमि प्रथम महाने। अबि कलि महिं इह तिनहुं समाने।
दस हज़ार तोपां जिह संगि। छुटहिं शकति जिनि दे गिर भंग ॥ १९ ॥
अरहिं दुरग इहु बपुरे कहां। धग्हर धर कंपावति महां।
अरधलच्छ[4] रहिं त्यार जमूरे। रण महिं रिपुनि प्रहारहि दूरे ॥ २० ॥
बड समाज मों उतर्यो शाहू। सेवहिं सभि छिति के नर नाहू।
इक दिन निकस्यो लवपुरि छोरा। करि कें बदन सुधासर ओरा ॥ २१ ॥
कानन महिं गन जीवनि धावैं। स्वाननि ते गन म्रिगनि गहावैं।
करति आखेर आधि मग आवा। श्रिमति शाहु तहिं कुछ अलसावा ॥ २२ ॥
कर्यो निवेस निसा बिसरामा। लगे तहां तंबू अभिरामा।
ब्रिंद बाहनी उमडति आई। करि दीनिसि डेरा चहुं थाई ॥ २३ ॥
गज बाजी ने बन मथि गेरा[5]। उतर्यो लशकरं शाहु घनेरा।
गन उमराव चमूं जुति आइ। जो नित करहिं सलामनि जाइ ॥ २४ ॥
खान पान करि कै समुदाई। सुपति जथा सुख राति बिताई।
भई प्रात पिखि जाग्यो शाहू। करनि अखेर चहिति चित मांहू ॥ २५ ॥

1. आलापा, बोला 2. दहेज 3. ढके हुए 4. आधा लाख 5 गिराया, डाला।

मुख पंकज को बहुर पखारा। म्रिदुल पदनि पर जलि को डारा।
जेठ मास को घाम निवारे। बैठे सतिगुरु श्रम निरवारे॥ ४० ॥
दूरि दूरि छाया अविलोकि। परे उतरि जे संगी लोक[1]।
हय बांधे डोरिनि के साथ। देखति भट जित दिश थित नाथ॥ ४१ ॥
इति श्री हरि गोबिंद गति ऐसे। हित बिसराम छांव महिं बैसे।
शाह जहां उति खेलि अखेरे। काननि के हति जीव घनेरे॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे शिकार प्रसंग बरननं नाम त्रितीओ अंशु॥ ३ ॥

---

1. लोग।

अंशु ४

बाज़ प्रसंग

दोहरा

खेलति अधिक शिकार को शाहजहां बन माहि।
हति करि चल्यो लहौर दिशि हने जीव बहु तांहि ॥ १ ॥

चौपई

बाज बलाइत किसि ते आयो। हित सुग़ात पिखि भलो पठायो।
लखि आछो हिति पिखनि तमाशे। चढ्यो शाहु आयो इत पासे ॥ २ ॥
हति जबि चल्यो, बिहंग सुरकाब[1]। निकसि उड्यो पिखि शाहु अजाब।
निज करते तबि बाज चलायहु। तीर मनिंद बिहंग पर आयहु ॥ ३ ॥
हुतो अघायहु करी न चोटि। बाजि कुमति नर महिं इह खोटि।
त्रिपति होइ पुन काम न आवैं। दग़ा देति प्रभु ते फिरि जावैं ॥ ४ ॥
देखति रह्यो शाहु बहुतेरा। गयो बाज खग पाछे हेरा।
नहिं मार्यो नहि हट करि बैंसे[2]। चल्यो गयो उडि नभ महि तैंसे ॥ ५ ॥
थकति शाहु तहिं ते चलि पर्यो। लवपुरि ओरि पयाना कर्यो।
कुछक सऊरनि को तहिं मोरि। 'मीर-शिकार जाहु लिहु टेरि ॥ ६ ॥
चढ्यो शाहु सुख की असुवारी। तूरनि पहुंच्यो पुरी मंझारी।
मीर शिकारनि जुति असवार। आवति पाछे बाज निहार ॥ ७ ॥
त्रासति उडति सुकाब अंगारी। तिस सभि अए शीघ्रता धारी।
उडति उडति आइ चलि तहां। श्री हरि गोविंद उतरे जहां ॥ ८ ॥
सहत सुकाब बाज को हेरे। सुन्यो सुभट ते गुरु तिसि बेरे।
अपनो बाज़ लीनि उतलाए। तिनि के सनमुख दियो चलाए ॥ ९ ॥
गहि सुकाब को तुरति दबाए। दोनहुं बाज़ उतरि[3] छिति आए।
आइ सु पाइ धाइ सिख गए। जुग बाजनि को पकरति भए ॥ १० ॥

1. सर्ख़ाब, चकवा। 2 हाथ पर न बैठे। 3. धरती।

ले तूरनि ही आए तीर। बली बिलोकि बाज़ बरु बीरु।
भए प्रसंन कह्यो तिस काल। 'साध साध सिख भयो निहाल' ॥ ११ ॥
ले करि अपने हाथ बिठायहु। आछे हेरति चित बिसमायहु।
'निपज्यो किसू बलाइत मांहू। अपन न किसि को अस बिन शाहू ॥ १२ ॥
अबि हम राखहिं दें तिसि नांही। अवर घने राखति सो पाही।
हमरो बाजि प्रथम तिसि लीनो। पुन श्री नानक हम को दीनो ॥ १३ ॥
सो पलटो तिसि के सिर रह्यो। उतरहि अबहि बात हम गह्यो।
इम दिढता करि सतिगुर थिरे। बारि बारि अविलोकनि करे ॥ १४ ॥
बारि बारि बहु करहिं सराहनि। मनहु प्रतीखति पुरबी चाहनि।
मीर शिकार संगे असवार। हयनि धवाइ शीघ्रता धारि ॥ १५ ॥
आए खोजति चमूं निहारी। बूझ्यो 'उतर्यो कौन अगारी'।
भटनि बताइ 'साच पातिशाहू। श्री हरिगोबिंद दुशटनि दाहू' ॥ १६ ॥
सुनि करि ज़रे[1], जरे[2] नहिं जाइ। अपर कौन पतिशाह कहाइ।
तुरक मूढ तबि चलि करि आए। डील बिलंद गुरू दरसाए ॥ १७ ॥
बाज़ शाहु को हाथ बिठायो। तुरकनि देखति बाक अलायो।
'इह तौ आयहु बाज हमारो। तुम गहि लीनि हाथ जिसि धारो' ॥ १८ ॥
मीर शिकारनि ते सुनि कहे। 'को तुम, बाज़ कौन को अहे।
हम किसि ढिग लैबे नहिं गए। बैठे इहां उडति गहि लए ॥ १९ ॥
तुमरे हाथनि ते नहिं छीना। संगि बाज़ के को नहिं चीना।
भ्रमति भ्रमति कित ते इह आयो। बडे जतन ते अबि पकरायो' ॥ २० ॥
मीर शिकारन उर हंकार। सुनि गुरु ते बोले रिसि धारि।
'शाहु जहां सभि आलम शाहू। जिसि को महां तेज जग माहू ॥ २१ ॥
जिसि आगै सभि देश न्रिपाला। झुकति सदा गन त्रसति बिसाला।
नहि मवास कितहूं थल छोरा। सभि हिनि परि करि अपनो जोरा ॥ २२ ॥
तिस को तुम जानति कै नाहीं। हम चाकर हैं तिसि के पाही।
खेलति इत अखेर[3] सो आवा। खग परि त्रिपत्यो बाज़ चलावा ॥ २३ ॥
करी न चोट इतहि चलि आयो। जबहि शाह को नहीं दिखायो।
लवपुरि को गमन्यो सहिसाई। हम आए देखति रिछवाई ॥ २४ ॥
तुमने आगे ही गहि लीनो। हाथ बिठाइ आपनो कीनो।
दिहु तूरनि[4] नहि करिहु बिगारे। सुनहि शाहु बहु रिस को धारे ॥ २५ ॥

1 जले। 2. सहन किया। 3. आखेट. शिकार। 4 तुरंत।

पुन गुरु कह्यो 'शाहु को जानहिं। तूं तिसि चाकर सोपि पछानहिं।
हमहि बाज कानन ते पावा। नहीं चलहि अबि तुमरो दावा[1]॥ २६॥
डरति शाहु ते दें हम नांही। गह्यो जतन ते राखहि पाही।
जाइ पुकारहु तांहि अगारी। जिसि को बकति जोर[2] तुम भारी॥ २७॥
तुरक सऊर कुपे कहि बैना। 'पातशाह को तुम डरु है ना।
तरै तनावनि[3] के तिह बासा। क्यों, साचो पिखि चहैं तमाशा॥ २८॥
भंग खाइ बोलति बिनु जाने। तिम सुभाउ रावर को जाने।
चमूं हज़ारों जिन के पास। सो कर जोरति धरि उर त्रास॥ २६॥
कहे न देति शाहु को बाज़। बचहु कहां कित जावहु भाजि।
आइ सैनि जबि घालहि ज़ोर। लरहि कौन तबि तुमरी ओरि॥ ३०॥
सहत बाज़ के गहि ले जाहिं। क्यों न डरहु तुम लखि मन मांही।
सुनति रिसे गुरु बाक उचारा। 'गीदी कथा तुम झगरो डारा॥ ३१॥
जाहु भले लै कै हथिआर। क्यों तुम चाहति खैबै मारि।
शहु बाज हम लेवनिहारे। बनहु पुकारू जाइ अगारे॥ ३२॥
सो जिमि कहै करहु सो कारी। इहां न कीजहि कछु तकरारी।
जे पति चाहति छोरि सिधावो। नाहक अपने शसत्र छिनावों॥ ३३॥
सुनि रिसि देखि सिक्ख सवधान[4]। बिधीए आदिक जे बलवान।
कहे कठोर जोर भरि बैना। 'किमि मूढहु बोलहु तुम भै ना॥ ३४॥
होहि न अस, रहि शाहु किथाई[5]। तुम अपने दिहु प्रान गवाई।
कितिक सिक्ख खड़ग रु ढाले। कुो सऊरनि की दिश चाले॥ ३५॥
'बाज़ संगि लिहु इनि हथिआर। भागहिं बरुरे करहिं पुकार'।
मार बकारा[6] सुभटनि कर्यो। पिखि सभि दिशि तुरकनि मन डर्यो॥ ३६॥
'गहि नहि लेहिं शिकारी मुरे। हुइ निरास गमने लवपुरे।
बिसमि बिसूरति मूरख मानी। इह क्या भई जाइ नहिं जानी॥ ३७॥
निकटि शाहु के लूटि मचाई। नहीं त्रास रंचक उपजाई।
खुद हज़रत को बाज़ अछेरा। जिसहि देखि करि मुदति बडेरा॥ ३८॥
मन भावति वसतुनि को देखहि। इह छीनहिं कर ओज बिशेखहि।
जे करि बाज़ सहत गहिवावहिं। तौ पलटा[7] अपनो हम पावहिं॥ ३९॥
करति उताइल तुरंग धवाए। चले गए नहिं कहूं टिकाए।
लवपुरि बिखै प्रवेशन भए। चहति पुकार करनि को गए॥ ४०॥

---

1. अधिकार। 2. ज़ोर, बल। 3. तनाव, बागडोर। 4. सावधान। 5. किसी जगह। 6. भभकी। 7. बदला।

इति श्री सतिगुरु तुरंग अरूढ़े। कर पर थिर करि बाज़ सु रूड़ैं।
चलति निहारति गुन तिसि परखति। लखहिं दुलभ, बहुमोला हरखति ॥ ४१ ॥
बूझहिं अपने मीर शिकारनि। 'अस आगे तुम कर्यो निहारनि'।
हाथ जोरि सो कहति बनाई। इनहुं बीच हम बैस बिताई ॥ ४२ ॥
बहुते बाज़ बिलोकनि करे। पिख्यो न को इमि की सम सरे।
किसिहू ते हम सुन्यो अगारी। शाहु बिलाइति किसि को भारी ॥ ४३ ॥
शाहजहां हित पठी सुगात। बाजी[1] बाज़ रुचिर अविदाति।
दिखयति नहिं इसि देश मझारी। नहिं पावति खरचे धन भारी ॥ ४४ ॥
सो इह बाज़ आप के लायक। प्रापति होयहु सहजि सुभायक।
करनि अपनिपौ सफल बिचारा। 'अदभुत रच्यो मोहि करतारा ॥ ४५ ॥
गुरु के कारज महिं जबि आवौं। होनि सफलता ततछिन पावौं।
इमि बिचार आयहु तुम पासा। पिखहु गरीब-निवाज तमाशा' ॥ ४६ ॥
कहति सुनति निज पुरि गुरु आए। हय उतरे निज महिल सिधाए।
गन सुभटनि महिं बाज़ रखायो। 'करहु सेव नीके' फुरमायो ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे 'बाज़ प्रसंग' बरननं नाम चतुरथो अंशु ॥ ४ ॥

---

1. घोड़े।

अंशु ५

शाहजहान सैंना चढ़नि प्रसंग

दोहरा

मीर सिकार सऊर सभि करिवे चहति पुकार।
मनहु चमूं मरिवाह करि सुधि को करति उचार ।। १ ।।

चौपई

शाहजहां के खरे अगारी। जवहि द्रिशटि इनिकी दिशि डारी।
बूझनि करे 'खरे किम भए। बाज़ पिछारी केतिक गए ।। २ ।।
पकर्‌यो जाइ कि उडि कित गयो। मुख मलीन तुमरो द्रिशटयो'।
सुनि बोले 'गुर हरिगोविंद। उतर्‌यो हुतो संग भट ब्रिंद ।। ३ ।।
उड्यो बाज तिनि ढिगि चलि गयो। सहत सुकाब बिलोकन कयो।
अपनो बाज़ छोडि तिनि दीना। छुटति बिहंग मारि सो लीना ।। ४ ।।
तत छिनि दोनहु तरै उतारे। गहि लीनो उर आनंद धारे।
कितिक देरि पाछे हम गए। गुरु ढिग बाज़ बिलोकति भए ।। ५ ।।
कहो तबै 'इह हजरत बाज़। बिचरति इत आखेर के काज।
त्रिपत्यो पीछे बिहंग चलायो। करी न चोटि उडति इह आयो ।। ६ ।।
सुनि करि कह्यो 'देति हम नांही। बडो जतन करि पकर्‌यो पाही।
डर रावर को दीन बडेरा। कहिसि कठोर घोर तिसि बेरा ।। ७ ।।
सुनि करि एक नहीं मन आनी। तनक त्रास तुमरो नहि जानी।
जवि हम को भी पकरनि लागे। अपनी पति[2] ले करि तबि भागे ।। ८ ।।
तुम सो लरहि, देहि नहि बाज़। करि राख्यो गुरु जंग समाज।
जे करि तुम कुछ चलति अगारी। मिटति न करति लोह तबि भारी' ।। ९ ।।
'बहु प्रिय बाज' सुन्यो 'गुरु छीना। रहे जाचि पुन क्योंहु न दीना।
रिस्यो शाहु कहि सभा मझारी। 'इह तौ रिपु सम निकटि हमारी ।। १० ।।
आज बाज़ छीन्यो बल करि कै। औचक किसू दुरग महि बरि[3] कै।
बनहि सवामी करहि लराई। सगरे देश फतूर उठाई' ।। ११ ।।

---

1. दृष्टि। 2. इज्जत, प्रतिष्ठा। 3. प्रवेश करके।

शाहु निकटि गुरु निंदकि जेई। अवसर पाइ सुनावहि तेई।
'गुर बिगार बहुत ही करे। छिमा ठानि तुम नज़र न धरे॥ १२॥
बड हज़रत तुम पिता अगारी। चंदू करी इनहुं की चारी[1]।
सुनि ततछिनि गुरू निकटि बुलाए। जानी संग सैंन समुदाए॥ १३॥
राखे पासि, करी तकराई। जानि न दए अपर किस थाई।
अपनी सैंन कछुक संग राखी। जे अखेर के हुइ अभिलाखी॥ १४॥
शाहि चमूं तबि संग सिधारहि। नहिं बिसवास इनहु को धारहि।
तुम ढिग लवपुरि बासो कए। काज़ी सुता साथि लै गए॥ १५॥
तऊ आपि ने छिमा धरी है। अबहि अवग्या फेर करी है।
टरहि नहीं बिनु करे लराई। बरहि दुरग आकी[2] हुइ जाई॥ १६॥
गहि लीजहि, तबि फलु को पावहि। नाहिं त कछू बिगारि उठावहि।
चलहि न बसि जे दुरगु प्रवेशैं। रिदै जंग जो चहति हमेशैं॥ १७॥
जे अबि छिमहु, न आछो अहै। बहुर फतूर[3] उठावनि चहै।
सुनति शाहु उर नीकि बिचारा। मुगलसखान[4] समीपि हकारा॥ १८॥
करि आदर निज निकटि बिठायहु। सिरे-पाउ बहु मोल दिवायहु।
कंचन ज़ीनि पाइ शुभ रंग। बली चपल बडि दीनि तुरंग॥ १९॥
पुन धन गन अनवाह सु दीना। करि बखशिश को भाखनि कीना।
'सपत हज़ार चमूं संग तोरे। कीजहि त्यारि बिलमि को छौरे॥ २०॥
अपरं सैंन लिहु संगि बनाई। दिहु दुंदभि को करहु चढाई।
श्री गुरु हरिगुविंद बड जोधा। पकरहु जाइ लरहु करि क्रोधा॥ २१॥
सहत बाज़ के ल्यावनि कीजहि। किधौं अचानक ही गहि लीजहि।
ज्यों क्यों करि जे ल्यावहु इहां। मनसब करौं प्रथम ते महां॥ २२॥
सुनि मुगलसखां उर हरखायो। शाहु साथि कर बंदि अलायो।
'क्या मम आगै करहिं सु जंग। पहुंचति ही गहि लेउं निसंग[5]॥ २३॥
चमूं असूदी[6] बली बिसाला। चहति रहति 'हुइ जंग कराला'।
गुरु ढिग सैंन कहां जो लरै। किस बिधि मम आगै सो अरै॥ २४॥
शाहु जहां सुनि कै उतसाहू। 'साधु साधु' कहि सभा सु माहूं।
निकस्यो बहिर पहिरि सिरुपाउ। हेर्‌यो सभिनि बडो उमराउ॥ २५॥
कहि करि निज दुंदभि बजवायो। सूरनि को उतसाहु बधायो।
तत-छिनि डारे ज़ीन तुरंग। भए सनद्ध-बद्ध भट अंग॥ २६॥

1. चुगली। 2. विद्रोही। 3. उपद्रव। 4. मुख़लिस खान। 5 शंका रहित।
6. सम्पन्न।

खड़ग, तुपक, तोमर, गन तरकश। धरि करि शसत्र तुरत कट कसि कसि।
गुलकां बहु बरूद बरताई। सुभटनि लई जितिक मन भाई॥ २७॥
अपर उशट पर लादि चलाए। चढे कुलाहल करि समुदाए।
प्रेरे काल कराल बिलंदे। भए अरूढ पवंगम ब्रिंदे॥ २८॥
मुग़लसखां करि कोप वडेरो। पिखि लशकर निज संग घनेरो।
चल्यो हंकारति मूढ गुमानी। नहिं जानति म्रितु की नियरानी॥ २९॥
जबि डेरे ते निसरि पधारा। धुनि खोटी ते बजति नगारा।
दल परि गीध भ्रमंती चलैं। काशट भार अगारी मिलैं॥ ३०॥
दीनमने बाजी[1] रुदनावैं[2]। निज लोचन ते अश्रु बहावैं।
चलति अकारन गिरि गिरि परैं। कितिक भटनि पगिया परि तरैं॥ ३१॥
शिवा पुकारति सनमुख आवति। म्रिग की माल कुफेरी धावति।
दारुन काक बोलते उडे। इम अपशकुन बिलोकति बडे॥ ३२॥
म्रितू निकटि ते जानहिं नांही। चले सुधासर मारग मांही।
गुरु संगति ने सुनि सभि बाती। सुधि के हेत लिखी तब पाती॥ ३३॥
'श्री गुरु तुम सभि अंतरयामी। तऊ बिनै दासनि की स्वामी।
हेति बाज़ के शाहु रिसायो। बहु लशकर तुम ओरि पठायो॥ ३४॥
कह्यो क्रोध ते गुरू गहीजहि। बाज़ समेति ल्याइबो कीजहि।
मुगलसखां उमराव वडेरो। चढि आयहु दल संग घनेरो॥ ३५॥
आपि सुजान अहो सभि रीति। हतहु मलेछनि. कीजहि जीत।
करनी सुधि इह धरम हमारो। लिखि भेजी सभि लेहु सभारो'॥ ३६॥
थोरे दिवस पठ्यो तबि चार। 'जावहु चले बिलंब बिसारि'।
इमि लवपुरि महिं बीती कथा। सुनहु संत गुरु कीनी जथा॥ ३७॥
खेलि शिकार सदन जबि आए। खान पान करि निसा बिताए।
भई प्रभाति गए तिस थान। जहां लोहगढ़ ऊचि महान॥ ३८॥
तिसि के चहुं दिशि भीत कराई। कुछ आढो करि हित तकराई।
काशट दीरघ हेति उतारनि। धरे आनि केतिक रिपु-मारनि॥ ३९॥
कितिक भटनि डेरा करिवायो। 'रखहु सुचेती' बाक अलायो।
तखत सथानि आनि करि बैसे। सुरनि सहत सुरपति थित जैसे॥ ४०॥
गन सुभटनि को लग्यो दिवान। छीने बाज़ रहैं सवधान[3]।
सतिगुरु अपने शसत्र मंगाए। धरि ऊचे थल धूप धुखाए॥ ४१॥

---

1. घोड़े। 2. रोने की सी आवाज़ करते थे। 3. सावधान।

फूलनि की माला पहिरावैं। चरचति चंदन को चित लावें।
चारु चमरु को गहे झुलावति। इमि पूजति बहु चित हरखावति ॥ ४२ ॥
आयुध तेगे बाढ[1] चढ़ाए। तरकश खपरें खर[2] करिवाए।
धनुख कठोरनि पनच[3] चढाई। कंचन लिपति तुपक अरचाई ॥ ४३
इति सतिगुरु अस खेल रचायो। त्यारी करनि जंग मन भायो।
उत दमोदरी सगरी त्यारी। करति ब्याह की सौंज सुधारी ॥ ४४ ॥
देनी दाति अधिक करिवाई। रुचिर विभूखन को घरवाई।
बसत्र सिवावनि लागे ब्रिंद। इत्यादिक सभि कीनि बिलंद ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे **शाहजहान सैना चढनि** प्रसंग बरननं नाम पंचमो अंशु ॥ ५ ॥

—

1. धार तेज़ करवाइ। 2. तीखे। 3. धनुष की डोरी।

अंशु ६

जुद्ध प्रसंग

दोहरा

इसि विधि सतिगुरु कुछ थिरे पुन भोजन करि खान ।
पौढे बहुरि प्रयंक पर ढर्‌यो दुपहिरे जानि ॥ १ ॥

चौपई

बिजीआ[1] पान करे हरखाए । बहुर सुचेता सकल बनाए ।
कर पद बदन पखारनि कीना । थिरे तखत पर दरशन दीना ॥ २ ॥
उतसव होति ब्याह को भारो । गन समाज को करि करि त्यारो ।
राखहिं सदन बनाइ घनेरे । जानहिं 'आइ बराति सवेरे' ॥ ३ ॥
गुर की गति इकि गुरु ही जानें । अपर नहीं को रिदे पछानै ।
आइ मलेछ संभारनि करें । इह गति किसै न जानी परै ॥ ४ ॥
लग्यो दिवान सु तखत अगारी । गावहिं शबद राग धुनि भारी ।
शसत्र सजे जोधा सवधान । आनि आनि बैठे बलवान ॥ ५ ॥
सोदर संध्या लग तहि बैसे । पायो भोग नमो किय तैसे ।
सतिगुरु मंदिर बिखै पधारे । निज निज थल तबि सुभट सिधारे ॥ ६ ॥
खान पान करि कै गन सोए । केतिक राति बिती जब्रि जोए ।
लवपुरि ते सिक्खनि अरदास । आइ पहूची सतिगुरु पासि ॥ ७ ॥
द्वारपाल सों बाक बखाने । अबि ही चहौं गुरू ढिग जाने ।
है जरूर को काम बिसाला । देरि न करहु जाहु दर-हाला[2] ॥ ८ ॥
जिमि मोकहु तुम आयहु जाना । तिमि आयो दल शाह महाना ।
द्वार पाल ने जाई सुनाई । लवपुरि ते पाती अबि आई ॥ ९ ॥
कहै सु 'बडि सैना चढि आई । मिल्यो चहै रावर के तांई' ।
सुनि सतिगुरु ततकाल बुलावा । अंतरि बरि[3] करि सीस निवावा ॥ १० ॥
धरि दीनी अरदास अगारी । पढि ब्रितांत सभि कीनसि त्यारी ।
पठे लोहगड़ केतिक जोधा । 'रोकहु प्रथम हतहु रिपु क्रोधा' ॥ ११ ॥

---

1. भंग । 2. इसी समय । 3. प्रवेश कर के ।

पुन लवपुरि के सिख को बूझा। 'किति लशकर तव आवति सूझा'।
सुनि तिनि हाथ जोरि करि कह्यो। 'संगि सैंन के मैं मग लह्यो ॥ १२ ॥
ढरे दुपहिरे तहिं ते चले। कई हज़ारि सुभट कलमले[1]।
तिनि को मग महि लागी देरा। मैं आयो करि बेग बडेरा ॥ १३ ॥
शाहु सैंन भी आई जानहु। दिढि हजूहि गुरु बिलमि न ठानहु'।
खुशी करी सिख परि तिस काल। क्रिपा द्रिशटि ते कर्यो निहाल ॥ १४ ॥
बहुर लोहगड़ ते सिख आयो। उतलावति ने बाक सुनायो।
'क्रिपा सिंधु! लशकर बडि आवा। कलबलाट हम ने सुनि पावा ॥ १५ ॥
बहु बरूद अरु गुलकां पठीयहि। पूरब संचर तिसि थल ठरीअहि।
गुरु जी! तोप होति इस काल। मारति शत्रुनि रोकति जाल' ॥ १६ ॥
सुनि सतिगुरु तबि हुकम बखाना। खोखर लकरो पर्यो महाना।
सनमुख रिपुनि धरहु तिह जाई। दिहु गोरन की मारि मचाई' ॥ १७ ॥
पुन सिख ने गुरु बूझनि कीने। 'दुरग बरूद सु गोरा हीने।
भरि लकरे महि कहां चलावैं। भ्रिग तौं नहीं हेरि डरपावैं ॥ १८ ॥
बहुर हुकम गुरु तिनहुं बखाना। 'पूरहु लकरा धूरि महाना।
पाथर ईंट पाइ करि मारो। आवति रिपु दल को परहारो ॥ १९ ॥
अंग संग हम रहैं तुहारे। लरहु तहां बहु धीरज धारे'।
सुनि बिसमें सिख धाइ पहूंचे। लकरो धर्यो उठाइसु ऊचे ॥ २० ॥
पूरि धूरि सों ठोकनि करी। अगनी तबहि पलीता धरी।
छुटी तोप सन अवनि हलाई। मनहुं गाज मंडप कड़काई ॥ २१ ॥
हुते लोह गड महिं भट जेते। बिसमति भए हरख धरि तेते।
चढ़ी चौंप चित भरि भरि तांही। छोरहिं गोरे[2] हुइ गिर जांही ॥ २२ ॥
शाहु सैन बडि कपट अरंभा[3]। 'किमि सुधि होई मान अचंभा।
'नांहि त सुपति परे गहि लैहे। बिना जंग ते कारज बनै हैं ॥ २३ ॥
भोर होति गुरु बाज समेति। गहि ले चालति अनंद समेति।
सो नहिं दगा भयो, सुधि पाई। जिनहुं अगारी तोप चलाई ॥ २४ ॥
अबि धौंसनि परि चोब हनीजै[4]। परहि जंग गाढो सुधि दीजै'।
इमि डर ते सभि कपट निवारा। सनमुख भए क्रोध बडि धारा ॥ २५ ॥

भुजंग छन्द

हनी चोब भारी सु धौसे धुंकारे। बडे बीर बांके बकैं बार बारे।
कल पै जड़े मोड तोडे धुखंते। चलाई तुफंगैं भभूके भखंते ॥ २६ ॥

---

1. व्याकुल हुए। 2. गोले। 3. आरंभ किया। 4. डंके की चोट करो।

निसा भूर अंधेर होयो गुबारा। उठी धूरि पूरं छयो गैन[1] सारा।
न दीसै कछू आपि हाथैं पसारे। पलीता भखे ते मलीन[2] निहारे ॥ २७ ॥
दिशा ताहि ताकैं चलावैं तुफंगे। भरैं फेरि छोरैं बडे वेग संगै।
कड़ाकाड़ नादं उठ्यो एक बारी। इतै लोह कोटं वकै मारि मारी ॥ २८ ॥
बडी काठि की तोप चौपै चलावैं। बडे जुंग[3] बांधे जहां चमु आवैं।
पखाणं[4] कि ईटें बनै ताहि गोरे। लगैं अंग भंगैं, उडैं सूर घोरे ॥ २९ ॥
मलेछानि सैनापती जानि ऐसे। 'गुरू आपि ईहां, लरैं बीर तैसे।
करो क्यों न हल्ला, गहो वेग जाई। चमू संग थोरी, लरै कौन आई' ॥ ३० ॥
कहे ते चले लोह कोटं नजीका[5]। छुटैं ब्रिंद गोरी मच्यो जुद्ध नीका।
लयो घेरि सैना घनी घूमि आई। फिरैं चारि पासे परैं ना दिखाई ॥ ३१ ॥

दोहरा

मच्यो लोहगड़ जंग इमि भयो शब्द बिकराल।
मनहुं भाड़ धाना भुजे तड़-भड़ भई बिसाल ॥ ३२ ॥

पाधड़ी छंद

सुनि तबहि शबद श्री हरिगोबिंद। मन मैं सुजानि दल है बिलंद।
निकसे निकेत ते बहिर आइ। सभि शसत्र अंग लीने सजाइ ॥ ३३ ॥
सभि सनध-बद्ध ह्वै आइ सूर। बोलति गरूर गुरु के हदूर।
'अबि बिलम कहां आग्या सु देहु। जिसते मलेछगन मारि लेहु' ॥ ३४ ॥
तिस समैं गुरू ह्वै करि इकंत। मुखि सुभट हकारि कीनिसि मतंत।
इकि महां बली पैंदा पठान। को नहीं बीर तिसके समान ॥ ३५ ॥
पुन बिधी चंद जोधा बिलंद। लखि दाव घाव और न मनिंद[6]।
वहु चतुर शत्रु हित रचि उपाइ। छल लेति छिनक महिं करहि दाइ ॥ ३६ ॥
मोहन, गुपालु नवलू, निहाला। इह चतर सूर चातुर बिसाल।
विद्या तुफंग की अधिक जानि। रिपु समुख देखि घर दें न जानि ॥ ३७ ॥
इक सुभट पिराणा शमसपीन[7]। तोमर प्रहार जानहि प्रबीन।
पुन करहि खड़ग के दाव घाव। जबि सुनहि जंग चिति होति चाव ॥ ३८ ॥
पुन जैत रु जाती मलिक दोइ। तीरनि प्रहार शत्रुनि परोइ।
इत्यादि सुभट गुरु तीर आइ। हय परि अरोह थित कितिक थाइ ॥ ३९ ॥
तोड़े धुखाइ बनि सावधान। बिचि तुपक बरूद गुलकां ठुकान।
भट कितिक दुगुलकां बीचि पाइ। करि राखि त्यार हाथनि उठाइ ॥ ४० ॥

---

1. गगन। 2. धुंधला सा। 3. दस्ते, टोलियां। 4. पत्थर। 5. नज़दीक, निकट। 6. मानिंद, समान। 7. बड़ी दाढ़ी।

चौपई

निज सैनापति सतिगुरु हेरे। सादर करे बिठावनि नेरे।
सभि सो कह्यो 'करें मत कौन। लरन भलो नहि अंतरि भौन॥ ४१॥
पुरि को त्यागी चलहिं अबि बाहरि। थिरहि हेरि मैदान सु ठाहरि[1]।
राति अंधेरी सूझति नांही। आनि प्रवेशहिं रिपु घरि मांही॥ ४२॥
अपनो पर का लख्यो न जाई। आपसि बिखै घाव तन घाई।
दूरि दूरि जोधा घिरि जाई। तबि लरिवे को ह्वै न उपाइ॥ ४३॥
पुरि महि लरनि दोश समुदाई। हमरो मत ह्वै बहिरि लराई।
चढे हयनि परि रिपुगन मारें। करहिं जंग अरु रहैं किनारें॥ ४४॥
पैंदे खान भनी 'इह आछे। जो मसलति रावरि चित बांछे।
तऊ बिचारहु निज परिवार। इसि की रछ्या बनहि उदार॥ ४५॥
इनहिं निकासहु करहु अगारी। सभि जोधा गन रहैं पिछारी।
सदन समाज न लालच करो। सकल सकेलि एक थल धरो॥ ४६॥
सौ असुवार संगि हनि रहैं। निज दल की समीपता लहैं।
लरति रहैं शत्रुनि को मारैं। भरहि तुफंगनि धरहि प्रहारैं॥ ४७॥
लरति जि आगै पाछै हल्लैं[2]। तबि कुटंब सों भट सौ मिलैं।
नवला सैनापती मिलावहु। इस कारज परि तिह ठहिरावहु'॥ ४८॥
सुनि करि नीके हरि गोविंद। नवले को दे करि भट ब्रिंद।
भेज्यो सभि परिवार निकासनि। 'दिहु धीरज को मानहि त्रास न'॥ ४९॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटनि रासे 'जुद्ध' प्रसंग वरननं नाम खशटमो अंशु॥ ६॥

---

1. स्थान। 2. निकल जाएं।

अंशु ७

जुद्ध प्रसंग

दोहरा

पठि नवले को सतिगुरू सभि को बाक सुनाइ ।
'हुते लोहगड़ के विखै पंच वीसु भट भाइ[1] ।। १ ।।

चौपई

अरे लरे भट छुटी तुफंगें । तोप शबद के होति उतंगै ।
तिनहुं रखी अटकाइ लराई । उठति कुलाहल[2] देति सुनाई ।। २ ।।
कवि लौ अरहि शाहु दल भारा[3] । आवहि इहां हूजीयहि त्यारा ।
महां तिमर इक निसि अंध्यारी । हयनि खुरनि ते खेह उडाई ।। ३ ।।
बांधे चुंग मिले सभि रहीयहि । प्रिथक होनि को किमि नहिं चहीयहि ।
जब प्रकाश सूरज को पावहु । तबि तुरकनि रिपु मारि गिरावहु ।। ४ ।।
सुनति सुभट गुरु ते ललकारे । 'पातिशाह ! बल पाइ तुहारे ।
किसि गिनती महि इह रिपु आए । हम मारहिं लवपुरि को जाए ।। ५ ।।
दुरग प्रवेशनि ते बचि रहैं । नांहित शाहजहां कहु गहैं ।
जबि चमकहिंगे खड़ग कराले । तबि देखहु हुइ जंग बिसाले ।। ६ ।।
पुन सतिगुरु सिख अपर पठावा । 'मंदर गमनहु बिलमि न लावा ।
वसतु लोभ को करीयहि नांही । परी रहनि दिहु सभि घरु मांही ।। ७ ।।
करहु शीघ्रता वहिर लिजावहु । पंथ रामसर केरि सिधावहु ।
आगहि पाछहि सुभट रहीजहि । बिचि कुटंब सगरो ले लीजहि ।। ८ ।।
प्रथम न तुपक चलावहु कोई । गमनहु शबद जथा नहिं होई ।
गयो सिख उतलावति मंदर । त्यारी करति सकल ही अंदर ।। ९ ।।
इक सिक्ख कौलां केरि अगारा । भेज्यो सतिगुरु ल्यावन[4] बारा ।
जाइ गुरू के बाक सुनाए । 'लोभ न करहु वसतु समुदाए ।। १० ।।
सभि तजि निकसहु विलमि न कीजै । सैंनि समीपि अई लखि लीजै' ।
स्यंदन[5] अरु डोरे गन आए । कहि बहु बारी तुरत चढाए ।। ११ ।।

---

1. प्रेम भाव वाले । 2. कोलाहल । 3. भारी । 4. लाने वाला । 5. रथ ।

अति दमोदरी दुखी बिचारी। पुत्री ब्याह बिघन भा भारी।
कौन कौन वथु चितवति खरी। त्रासति सगरी त्यागनि करी ॥ १२ ॥
सुभटनि साहिब-जादे लीनि। संग तुरंग अरूढनि कीनि।
भर्‌यो सदन सभ वसतू केरा। करिकैं त्याग चले बिनु देरा ॥ १३ ॥
जबि दमोदरी स्यंदन चरी। मरवाही स्यंदन बिब[1] थिरी।
नानकी तेग बहादर लीने। चढि डोरे परि चलिबो कीने ॥ १४ ॥
दासी दासनि के समुदाई। चले संगि नहिं बिलमि लगाई।
राति अंधेरी पंथ न सूझति। गमनति राम ताल मग बूझति ॥ १५ ॥
आपसि महिं इति उति हुइ चाले। संघने ब्रिच्छ खरे वहु डाले।
चलिवे को मग वडो न जहां। नीठ नीठ गमनति भे तहां ॥ १६ ॥
जाइ रामसर पर थिरु होए। सुभट सुचेत बीर रस भोए।
उत कौलां आ मिलिबो कीनि। गुरु परिवारहि संग प्रबीन ॥ १७ ॥
श्री हरिगोविंद ढिग सुधि आई। करी शीघ्र ही अपनी चढाई।
प्रथम अकाल तखत के थाई। हय अरूढे ग्रीव निवाई ॥ १८ ॥
पौर दरशनी बंदन कीनि। चले प्रदछना[2] दिशा प्रबीन।
फिरि आए दुख भंजनि वेरि। डेढ जाम तवि जामनि हेरि ॥ १९ ॥
गुरू कह्यो 'आधे रहु चरे। अरध शनान तालि लिहु करे।
सो सन्नध हुइ हय जबि चरैं। पुन सो अरध सुचेता करैं ॥ २० ॥
इमि कहि आप कीनि इशनान। बसत्र शस्त्र पहिरे बिधि नाना।
फिरत प्रदछना चलि करि आए। पौर दरशनी सीस निवाए'। २१ ॥
अंदर श्री हरिमंदर गए। द्वै करि बंदि बंदना किए।
खरे होइ गुर सभिनि अगारी। बिनती ले करि नाम उचारी ॥ २२ ॥

छप्पै

श्री गुरु नानक जोति होति नित सिक्ख सहायक।
बिघन मिटाइ अनेक एक चित सिमरि सुभायक[3]।
दुरजन को समुदाइ आइ तिन तत छिनि घायक।
दुशट अरिशट निवारि धार कर, सदा बचायक।
जग नायक नायक प्रभो! विभो रूप दायक बिजै।
रघु नायक सायक बचन रचन अनंद सद जै अजै ॥ २३ ॥

---

1. दूसरी। 2. प्रदक्षणा, परिक्रमा। 3. स्वाभाविक।

श्री अंगद कुल चंद बंदि कर बंदन मोरी।
दुंद बिलंद निकंद, कंद सुख ! शरनी तोरी।
दीन बंधु गुन सिंधु पंथ गति को दिखरावति।
जसु बिसाल, अरि घालि, घालि दासन मन भावति।
जर अजर गोइ उर अजर महिं, नहिं दिखाइ अस मतिगहे।
बर बदन[1] सदन सुख बर दिहो लहौं बिजै रिसु दल दहे।। २४ ।।

कुल भल्लथनि के मौर और समसर नहिं जनियति।
दाता महिद उदार सार दासनि दे भनीयति।
बाईस मंजी दीन कीन सिख दास निहाला।
निवैं जगति दरबार धारि इच्छा सु बिसाला।
पिखि प्रेम नेम बिनु छेम दे, इम कीरती वहु सजै।
श्री अमरदास गुन रासि बर ! बर देवहु 'रिपुने बिजै' ।। २५ ।।

चौथे सतिगुरु भए लए जसु जगति उजाला।
सदा प्रेम के बसी देति बर होइ क्रिपाला।
माया बिखै अलेप छेप नहिं किसहू काला।
सदा सच्चिदानन्द, बंदि पद भए निहाला।
नित नमहि नमहि पुनपुन नमहि, महिमहि महिमा महांबर।
कर जोरि निहोरति बिजै दिहु गुरु रामदास श्री बदनेश्वर।। २६ ।।

भगत भावना भरनि हरनि भै श्री भगवंता।
शरनि सूर, प्रणिपूर, मुकति दायक सभि संता।
पर उपकारी धीर भीर नित सिक्खनि केरी।
करति उधार उदार बिदत जिति कित महि हेरी।
श्री अरजन सिरजनि श्रेय जन नमो नमो पग सतिगुरू।
अबि शत्रु जीति की कामना, हतौं, पलावहि सम रुरू[2] ।। २७ ।।

दोहरा

सुनि उसतति को तिह समै श्री हरि मंदर मांही।
गिरा प्रगट होई सुनी 'करहु तुरक गन दाहि।। २८ ।।
प्रथम जंग तुम ते उठ्यो लरैं बहुत ही काल।
सने सने गन तुरक की उखरहिं जगं बिसाल।। २९ ।।
लहहु बिजै रिपु ब्रिंद ते न्रिभै हतहु हथियार।
मारि मलेछनि सैनि को लीजहि बिजै उदार।। ३० ।।

---

1. बदन, श्रीमुख। 2. मृग।

सुनि श्री हरिगोविंद जो नमो करी कर जोरि।
परम प्रेम करि निकसि तबि फिरे प्रदछना ओरि ॥ ३१ ॥

चतर प्रकरमा करि फिरे कर बंदन दरबार।
पौर दरशनी आइ कै सिर धरि नमहिं उदार ॥ ३२ ॥
कर्‌यो हकारनि हय बली आयो तहिं ततकाल।
आरोहनि सतिगुरु भए धनुख कठोर संभालि ॥ ३३ ॥
चंचल बली तुरंग बहु कीमति जिस की लाख'
गुरु मन सो लयलीनि हुइ चलति जथा अभिलाख ॥ ३४ ॥
गोल चंमू को संगि लै होइ गुरु सवधान।
चाहति भे संग्राम को गए रामसर थान ॥ ३५ ॥
करी संभारि प्रवार की श्री सतिगुरु तिसि काल।
इक्कि वीरो की सुधि नहीं और सकल हैं नाल[1] ॥ ३६ ॥
गुडीया रही संभालती बीबी बीच अगार।
राख्रति प्राननि ज्यों जिन्है 'ऐसे कर्‌यो विचार ॥ ३७ ॥
'माता समुझ्यो होइगी दूसर माता संग।
यांते भूली सदन मैं 'ल्यावै कौन निसंग' ॥ ३८ ॥
सिंघे प्रोहत को कह्यो 'वावक संगि सिधारि।
आनो बीबी को इहां सफलै जनम तुहारि' ॥ ३९ ॥
श्री गुरु आग्या ते चले हाथ बंदूक निधारि[2]।
श्री नानक सिमरति रिदै कारज ल्यावहिं सार ॥ ४० ॥
दई निशानी सिमरनी कह्यो 'जि हुइ भट भेरि।
तुपक अवाज़ करीजिए पठहि बीर बिनु देरि ॥ ४१ ॥
घिरबे ते चौकस रहहु दाव छाप करि जाइ।
बीर सहाइक सभि खरे सुनति शीघ्रता आइ' ॥ ४२ ॥
दोनहुं जोधा धीर धरि गए तुरंग धवाइ[3]।
सतिगुरु करति प्रतीखना खरे भए तिसी थाइ ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे 'जुद्ध' प्रसंग बरननं नाम सपतमो अंशु ॥ ७ ॥

1. साथ। 2. निर्धारित करके, पकड़ कर। 3. दौड़ा कर।

अंशु ८

जुद्ध प्रसंग

दोहरा

इति सतिगुरु इह बिधि करी निकसे मंदिर छोरि ।
उत लशकर सभि झुक पर्यो जंग लोह गढ़ घोर ।। १ ।।

चौपई

शलख तुफंगनी ब्रिंद चलाई । बीचि लोहगढ़ मारि मचाई ।
इति उति घेरि लीनि जबि गाढे । दारुन जंग मच्यो रिस बाढे ।। २ ।।
अलप भीत चहुं दिशि महि तांहि । ओटा हित बचाव कुछ नांहि ।
केतिक चिर सो लरे जुझारे । नेरे ढुकि लीनसि सभि मारे ।। ३ ।।
अंत समैं करवार प्रहारैं । हते अनेक कहां लग मारैं ।
गिरे जूझ करि जंग मझारा । इमि जबि लरति लोहगढ़ मारा ।। ४ ।।
अधिक अंधेरा द्रिशटि न परै । जान्यो इहां न को अबि अरै ।
सतिगुरु के महिलनि को गए । कितिक सुधासर दिशि को अए ।। ५ ।।
सूंनो हेरि प्रवेशे जाई । कोशट भरे परे जु मिठाई ।
हुते छुधातुर तुरक घनेरे । लवणुरि अच्यो चढे जिस बेरे ।। ६ ।।
ले ले करि बिसाल पकवान । हरखति होति लगे मिलि खानि ।
अपरनि को बुलाइ ढिगि लेति । 'खाना खाहु' आपि तहिं देति ।। ७ ।।
'गुरु नहि इहां भाजि करि गयो । पर्यो समाज लुट्यो सभि लयो ।
इमि सगरे पुरि महिं फिरि गए । खोजति फिरहिं न कित द्रिशटए ।। ८ ।।
धर्यो हरख तुरकनि 'बिनु लरे । फते लई बिनु मारे मरें ।
इमि नहिं जानति मूरख काचे । 'प्राति होत लौ हम हैं बाचें ।। ९ ।।
पसरी सैनि सुधासर तीका[1] । फिरहिं तिमरि महिं, दिखति न नीका ।
भूले बिचरति ऊचे बोलति । बीथिनि बिखै ब्रिंद भट डोलति ।। १० ।।
इतने महिं दोनहु गुर-सूरे । बाबक अर सिधा रिस पूरे ।
बीबी केरि महिल तर गए । जो सोचति बैठी दुखमए[2] ।। ११ ।।

---

1. तीक । 2. दु:खमय ।

वहु बिधि चितवति रिदे बिचारी। तरे थिरे ले नाम पुकारी।
'आवहु शीघ्र गुरू सिमरते। क्यों करि बैठी होइ निचिंते'॥ १२॥
नहि पतियावति पता न पावै। 'शत्रु सैन नहिं गहि ले जावैं'।
'हो तुम कौन' बूझना कीनि। 'जबि लौ नीके लेउं न चीनी॥ १३॥
तबि लौ नहीं किवार उघारौं। बैठी इहां प्रान हनि डारौं'।
सिघे तबहि सिमरनी दीनि। 'इहु गुरु करकी लेवहु चीनि॥ १४॥
दीपक के परकाश निहारी। भई रिदे महिं आनंद भारी।
जबै निशानी पित निरखाए। उतरि अगार-किवार खिलाए[1]॥ १५॥
तबि चढाइ चाले जुग बीर। सनै सनै हय की गति धीर।
सैना आगै मुगल पठानी। इति उति फिरति मनहुं ववरानी॥ १६॥
आइ सुधासर तट लगि फिरे। फते जानि मन आनंद भरे।
पौर दरशनी घेरा खर्‌यो। उतर्‌यो मुगल बीर तहि थिर्‌यो॥ १७॥
इह दोनहुं आवति तिस जाने। हय पग धरि धरि शबद उठाने।
चमक मुगल तबि तोमर गह्यो। 'अहो कौनि तुम बल भर कह्यो॥ १८॥
बावक भन्यो 'आपने भाई। थिरे रहो राखहु तकराई।
खोजति गुरु को बिचरति सारे। तुमने अब लौं नहीं निहारे॥ १९॥
इम कहि चले जाति अगुवाए। मुगल बरोबर को जबि आए।
चर्‌यो खरो सायुध[2] सवधाना[3]। तबि सिंघे मन ऐसे जाना॥ २०॥
'चंमू इहां लग पसरी सारे। होइ न अस भिर परहिं अगारे।
औचक हय की बाग उचाई। कह्यो तेज कुछ चल्यो पलाई॥ २१॥
बीबी के पग भूखन छनके। चलति बेग ते मिलि मिलि टनके।
तिन को शबद मुगल को सुनि के। रौरा कर्‌यो ऊच वच भनि के॥ २२॥
'आवहु धाइ सुभट हम संगी। हुई सुचेत वन तेज तुरंगी।
दुशमन बिच ते जाति पलाए। गुरू कवीले लेति लंघाए॥ २३॥
रोकेहु जे लेनो है वाज। नतु मिल जैहै अपन समाज'।
एव पुकारति मूरख मानी[4]। हय को प्रेरति भा अगवानी॥ २४॥
'जानि न देउ दुवेला[5] तोहीं। उतरि छोर अवि सुटिवा[6] होहीं।
तीखन तोमर हाथ उभारा। करति नेर चाहसि तवि मारा॥ २५॥
निजि तुरंग को हति कर चावक। सिंघे कह्यो पिखहिं किया बावक।
आवति दुशट चल्यो मम ओरा। मेरो अहै दुवेला घोरा। २६॥

---

1. आगार का किवाड खोला। 2. आयुद्ध (हथियार) समेत। 3. सावधान।
4. अभिमानी। 5. दो सवार वाला घोड़ा। 6. गिरना।

तुपक ताप तिह धरि करि धीर। हतहु रिदा दिढ ह्वै करि बीर।
इसको मारि निवारनि करीअहि। अपर न अपने निकटि निहरीअहि॥ २७॥
सुनि बावक तबि त्यार तुरंग। लख्यो चलति हय खरके[1] संग।
घने तिमर ते दीखहि थोरा। तऊ शबद की ओर सु जोरा॥ २८॥
हय कुदाइ करि निकटि पहूचा। 'खरो होहु अब रहै न सूचा'।
सुनि, सनमुख नेज कर आयो। निकटि होइ करि चहति चलायो॥ २९॥
तबि बावक ने डंभि पलीता[2]। हत्यो दुशट के हुइ निरभीता।
लगी दुगुलकां छुटि करि छाती। हय ते उछर्यो धरा पपाती[3]॥ ३०॥
मनहुं मतंग शेर ने मारा। किधो गाज ते गिर्यो मुनारा।
कै समूल ब्रिच्छ बायू डारा। बह्यो रुधर घाय सु भभकारा॥ ३१॥
छुट्यो तुरंग धाइ कित गयो। 'हाइ हाइ' बोलति म्रितु भये।
न्रिभै होइ करि चले अगारी। दूर रही सैना रिपु भारी॥ ३२॥
सतिगुर को इति ही दिश ध्यान। सुनी अवाज़ तुपक की कान।
निज सुभटनि सों गिरा उचारी। 'लिहु सुध तूरन होइ अगारी॥ ३३॥
दोनहुं बीर नहीं घिरि जाइं। तुरक फिरति इत उत समुदाइं'।
पैंदे खान हुकम सुनि चल्यो। सूरन को गन तूरन मिल्यो॥ ३४॥
तुपक त्यार करि भे समुहाई। तुंदि तरंगनि चले धवाई।
जहिं लग दोनहुं मिले न बीर। तहिं लग जाहि चीर अरि भीर॥ ३५॥
इम गुर को दल जबि उमडायो। तबि लग सिंघा बावक आयो।
सरब हकीकत भई सुनाई। 'साध साध' सुनि गुरू अलाई॥ ३६॥
भए निहाल अनंद समुदाई। हलति पलति महि रहे सहाई।
तबि लौं पहिर राति रहि गई। 'मचहि जंग' गुर उर लखि लई॥ ३७॥
'यांते सभि परवार सिधारैं। रहिं नर निकटि जि शसत्रनि धारैं'।
इम बिचारि गुर बाक उचारा। 'गोइंदवाल चलनि निरधारा॥ ३८॥
होति प्रात लग चलहु झबाल। सपत कोस पर ग्राम बिसाल।
लावां फेरन को दिन आजू। उतरि करहु सभि ब्याह समाजू॥ ३९॥
सरपी सिता आदि बथु सारी। करि खरीद रचीयहि सभि त्यारी।
अपर न चिंता चित महि करो। होनिहार इम ही उर धरो॥ ४०॥
हम भी पहुंचहिंगे तिस काला। फेरे फेरहिं ग्राम झबाला'।
सभि कुटंब इत भोजन कर्यो। पुन कौलां के संग उचर्यो॥ ४१॥

---

1. घोड़े की टाप के साथ। 2. दाग़। 3. गिर गया, पात हुआ।

'पुरि करतार बसहु अबि जाइ। जबि लग हम न मिलहिं ढिग आइ।
इहां संग न बनहि बिचार। परहि जुद्ध जोधा बरिआरि[1] ॥ ४२ ॥
'मिलहु शीघ्र कहि बंदन धारी। कछु नर ले करि पंथ पधारी।
जाइ प्रवेशी पुरि करतारि। गुर की चिंता रिदे मझार ॥ ४३ ॥
इत दमोदरी आदि कुटंब। परे पंथ चलि त्याग बिलंद।
दुखति बिसाल सचिंता त्रास। पिखि कुसूत[2] ले दीरघ स्वास ॥ ४४ ॥
एक जाम महिं पहुंचे जाई। तबि लौ उदे भयो दिन राई।
तिन पीछे गुर गिरा उचारी। गमनहुं सिक्ख बरात अगारी ॥ ४५ ॥
इत आवति को देहु हटाइ। ग्राम झबाल तिनहुं ले जाइ।
सुनति गयो सिख हय को प्रेरा। जिति बरात को आवन हेरा ॥ ४६ ॥
इमि करि सतिगुत भए निसंग। उठी चौंप चित करिबे जंग।
सरब सूर ठांढे सवधाना। चाहति तुरकन के हनि प्राना ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटम रासे जुद्ध प्रसंग बरननं नाम अशटमो अंशु ॥ ८ ॥

---

1. बलवान। 2. खराबी, विघ्न।

अंशु ९

शमस खान भानू बध

दोहरा

जिति किति करि परवार निज उचित[1] जंग के होइ ।
भए निसंसै लरन को रिस बीर सभि कोइ[2] ॥ १ ॥

रसावल छंद

उदै चंद होवा । गुरू गैन[3] जोवा ।
कछू भा प्रकाशा । दिख्यो आस-पासा ॥ २ ॥
निदेसं[4] बखानी । 'जिते सर मानी ।
लरो जाइ आगे । महां क्रोध पागे' ॥ ३ ॥
गुरू के प्रचारे[5] । चले बीर भारे ।
अहै नाम 'भानू' । चमू-नाथ जानू ॥ ४ ॥
लई सैन संगा । धवाए तुरंगा ।
तुफंगैं संभारी । सु धौंसा धुंकारी ॥ ५ ॥
बजी बंब[6] दीहा[7] । सुनी दूर जीहा ।
पहूंचे अगारी । रिसे सूर भारी ॥ ६ ॥
तुफंगैं चलाई । सु नादं उठाई ।
मुखं 'मार मारा' । करी एक बारा ॥ ७ ॥
सुन्यो शाह सैना । जु है बीच ऐना[8] ।
सु मंचे डसाए । परे नींद पाए ॥ ८ ॥
सुने ते नगारा । उठे कोप धारा ।
'गुरू न पलायो । अवै कोप आयो ॥ ९ ॥
करों बेग त्यारी । चढे बीर भारी ॥
पुरी छोरि चाले । धरे तेग ढाले ॥ १० ॥

---

1. योग्य । 2. हर कोई, सभी । 3. गगन । 4. आज्ञा । 5 प्रेरित एवं ललकारे । 6. डंका । 7. दीर्घ 8. अयन, घर ।

सु आए अगाए। जहां नाद पाए।
चढे चंद छोटा। अंधेरं न मोटा॥ ११॥
किती दूर हेरे। भए खान नेरे।
कड़ा काड गोरी। इकं बार छोरी॥ १२॥
लगी शत्रु अंगा। संभारी तुफंगा।
दुहूं अरो चाली। उठी जाग ज्वाली[1]॥ १३॥
कड़ा काड़ माचे। लगे लोह आंचे।
फुटे अंग जोधा। गिरे हीन-बोधा[2]॥ १४॥
लगे घाउ घूमे। लिटे ब्रिंद भूमें।
गिर्‌यो श्रोण चाला। तुरंगानि डाला[3]॥ १५॥
जथा धाइ आए। तथा घाव घाए[4]।
रहे ठांढि फेरा। गुरू जोर हेरा॥ १६॥
नहीं पाइ[5] घाले। अगारी न चाले।
मुखं तोरि गेरा[6]। घिरे ताहि बेरा॥ १७॥
मच्यो जंग भीमें। तजे नाहिं सीमं।
बड़ी मार होई। मलेछी[7] खरोई[8]॥ १८॥
तुरंगं धवाए। तुफंगं चलाए।
निजंगं[9] बचाए। इतै ऊत जाए॥ १९॥
गुरू केर सूरे। तत्रै क्रोध पूरै।
अगारी सु चाले। तुफंगै समाले॥ २०॥

दोहरा

झट-पट भट लट पट[10] लिटे सट-पट[11] भे भट जुट्ट।
अटक अटक कटि कटि कटि मिटै चटापट कट्ट। कुट्ट[12]॥ २१॥

पाधड़ी छंद

जबि मच्यो जंग दारुन महांन। पिखि मुगलस खां तबि लीनि जानि।
'बहु लरै जुद्ध, गुर नहि पलाइ'। निज मुखी वीर लीने बुलाइ॥ २२॥
सनमान साथ सभि को कहंति। 'सवधान खान! हूजै अचिंत।
अबि करहु जुद्ध नहि मिटहु बीर। नहि वडी चंमू गुर केरि तीरि'॥ २३॥

1. ज्वाला। 2. वेहोश, वेसुध। 3. गिरे हुए। 4. घाव लगे। 5. पैर। 6. गिराए। 7. मुसलमानों की सेना। 8. खड़ी थी। 9. अपने अंग। 10. एक दूसरे पर। 11. सटपटाए, घबराए। 12. कृपाण के प्रहार की ध्वनि।

इमि कहि पठान भेजे बिलंद। करि त्यार तुपक ढिग आइ ब्रिद।
अरु रह्यो सु भानू जहि बिसाल। नहि तजहि थान रिपु हनति जाल ॥ २४ ॥
उत शमस खान छोरी तुफंग। बहु आनि खान करि अपनि संग।
दुहुं दिशनि बिखै गुलका लगंति। हुइ अंग-भंग भूमैं गिरति ॥ २५ ॥
उत तुरक नाम जिह शमस खान। गुर सुभट हतै भानु जुआना।
ललकार बीर दुहुं दिशनि दोइ। गन तुपक चलाइ लगि घाइ सोइ ॥ २६ ॥

भुजंग प्रयात छंद

चलाई तुफंगैं दुहूं ओर ढूके। महानाद होयो मिले बीर कूके।
गिरे ज्यों मुनारे परे प्रान खोए। मनो भंग खै कै थके आनि सोए ॥ २७ ॥
परे फीन हल्ला मलेछी[1] सु धाई। इतै मार गोरीनि ऐसी मचाई।
किनूं आनि नेजा उभारे प्रहारा। किनू चांप ते बान को ऐंच मारा ॥ २८ ॥
क्रिपानैं लई धूह म्यानैं सु नंगी। खिचं खैंच बाहैं भए बीर जंगी।
वह्यो श्रोण चीरं गए भीज सारे। मनो लाल बागे[2] रिदे रीझ धारे ॥ २९ ॥
लहू धूल राच्यो भयो लाल गारा। भई लोथ पोथैं, परी धूमिआरा[3]।
मरे ब्रिद बाजी लगी अंग गोरी। भिड़े भेड़ जोधा लराई न थोरी ॥ ३० ॥
कह्यो बाक भानूं 'गुरू अंग संगा। डरो नहिं जोधा लरो ह्वै निसंगा[4]।
टिक्यों जंग आछो नहीं, जानि लीजैं। मलेछानि पै दौर हल्ला करीजै ॥ ३१ ॥
लराई लई देखि जैसी कि कीनी। पलावें इहां ते इनै बुद्ध हीनी'।
करे बीर संगी बजाए नगारा। चल्यो समुहे बीर बंको जुझारा ॥ ३२ ॥
करे तेज़ ताजी परे हूह[5] दै कै। जहा खान ठांढे मच्यो लोह तै कै।
बकें 'मारि मारं' करा चोल मारे। कटै सामुहै अंग कोपे जुझारे ॥ ३३ ॥
हुते खान आगै जवै मारि लीने। भजे त्रासिकै कै नहीं ठांढ[6] कीने।
परे सिक्ख पाछै क्रिपानैं प्रहारी। भगे धीर छोरी परी लोह[7] मारी ॥ ३४ ॥

दोहरा

मुगलसखां भाजे सुने, भेज्यो अनुवर खान।
'शमस खान क्या भयो जो होयहु अगवान' ॥ ३५ ॥

स्वैया छंद

सुनिकै वाक धवायो बाजी शमसखान को कह्यो पुकार।
'क्यों न प्रहारहु चढेसु आवहि, कित जैहो 'कुल लाज बिसारि।

---

1. मुसलमानों की सेना। 2. फुलकारी। 3. धूम, शोर। 4. शंकाहीन। 5. लड़ाई की ललकार। 6. स्थिरता। 7. शस्त्र।

आगै मुग़लसखान खरो कहि 'क्या होयो भट जेअ्रगवार[1] ।
रह्यो क्रोध धरि 'मुरहु, हतहु, रिपु पठे शाहु तुम बडे जुझार' ॥ ३६ ॥

सुनति चल्यो तबि शमस खान बहु खैंचि क्रिपान धवाइ तुरंग ।
गुर सैना महिं धर्यो शेर सम अरहिं अगारी काटति अंग ।
घनी पटे-बाज़ी जिनि कीनसि तछा मुच्छ[2] तिम करति निसंग ।
हय चपलावति इत उत धावति, घावति भट, भावति रण रंग[3] ॥ ३७ ॥

पिखि भानू कर तुपक संभारी तोड़ा जड़्यो मोड़ि कल मांहि ।
गहि सिरपोस उघारि पलीता हय कुदाइ फेर्यो ढिग तांहि ।
डंभ[4] तुपक कड़की तड़िता जिम लगी तुरंग भंग हुइ ज हि ।
हुइ मुख भार गिर्यो तहिं दिखि कै शमसखान तजि तूरनि वाहि ॥ ३८ ॥

रुप्यो पाइ अर घाव खाइ नहिं, करति दाव ते वार फिरंति ।
भानु करति थक्यो चातुरता नहीं शसत्र खायो भरमति ।
दुहि दिश के जोधा अविलोकति, करति वार अरु आप बचंति ।
नट जिम फांदति, खड़ग नचावति ढुकै निकटि भट काटि गिरंति ॥ ३९ ।

भानू चप्यो[5] 'तुफंग चलें नहिं, खड़ग वार को दाव न पाइ ।
तजि तुरंग तिस के सम भू पर खरो भयो चित चोंप बवाइ ।
खैंचि खड़ग खर ढाल संभारी कह्यो 'न जान दैहु किस थाइं ।
गनभट मारन को अबि पलटा लेहु छिनक मैं तुव उथलाइं' ॥ ४० ॥

शमसखान सुनि खुनस्यो मानी 'क्या गवार गीदी मकदूर[6] ।
मम तुरंग को पलटा[7] तव सिर कहति मिले ततकाल अदूर ।
खान खडग खर वार प्रहार्यो लयो सिपर पर कीनसि कूर[8] ।
फूलन[9] ऊपर लग्यो फुलादी[10], टूटि गयो हेरति सभि सूर ॥ ४१ ॥

भानू उछलति करा चोल[11] गहि बलते पर्यो तांहि पर जाइ ।
कर्यो प्रहार सिकंधन ऊपर बह्यो जिनेऊ समसर घाइ ।
गिर्यो पठाम पिख्यो गन तुरकन एक बारि आए अरिराइ ।
तोमर तीरनि तबर तुफंगनि अनवर सहत शस्त्र समुदाइ ॥ ४२ ॥

करैं प्रहारनि, चल्यो न भानू तोमर[12] मार्यो अनवर खान ।
काटि खडग ते निशफल करि कै अपर मलेछनि को करि हान ।

---

1. हरावल दस्ता । 2. मारकाट । 3. रंगशाला । 4. आग लगा कर । 5. खीझ कर कहा । 6. शक्ति । 7. बदला । 8. निष्फल । 9 ढाल पर फूल के आकार के लोहे के टुकड़े । 10. खड्ग । 11. तलवार । 12. भाला ।

निकट न पहुंचहिं त्रास तुरक करि रुप्यो बीर थिरु रह्यो मदान[1]।
ताकि तुपक की हती दुगुलकां लगी सीस तजि तूरन[2] प्रान ॥ ४३ ॥

दोहरा

शमसखान गन तुरक-जुति मारि मर्‍यो रणखेत ।
गयो सुरग सु बधू जुत अति आनंद समेत ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे 'शमसखान भानू बध' प्रसंग बरनन नाम नौमो अंशु ॥ ९ ॥

---

1. मैदान, क्षेत्र । 2. तुरंत ।

अंशु १०

अली मुहंमद, सिघा प्रोहत बध

दोहरा

दुहि दिशि के सैनापती दोनहु भे हति प्रान ।
परी सैन उमडाइ कैं, दुहि दिशि ते घमसान ।। १ ।।

रसावल छंः

दिशा दौन[1] आए । महां शसत्र घाए ।
फिर्यो को न पुट्ठे[2] । मिले रुंड कुट्ठे[3] ।। २ ।।
परी लोथ ब्रिंदां । प्रहारैं बिलंदं ।
कटे अंग वीरं । तजैं तौन धीरं ।। ३ ।।
रणं रंग राचे । रिसे बीर माचे ।
परे म्रितु ह्वै कैं । वडे घाव खै कैं ।। ४ ।।
'कहां जाहु भागे । कहै आउ आगे ।
कटी बांह काहूं । फिरैं जंग मांहूं ।। ५ ।।
किसी पाइ काटे । कटे कंध्र साटे[4] ।
किने बोल डांटे । फटे पेट फाटे ।। ६ ।।
लटापट्ट[5] होए । भजे नाहिं दोए ।
मरे ब्रिंद जोधा । तजैं पै न क्रोधा ।। ७ ।।

दोहरा

शमसखान मार्यो सुन्यो जिस दिश मुगलस खान ।
तिस दिशि को भेजति भयो सय्यद बीर महान ।। ८ ।।
बली मुहंमद अली तबि ले असवार हज़ार ।
मर्यो शमस खां अयो तहिं भयो खेत बिकरार ।। ९ ।।

1. दोनों । 2. पीछे । 3. वध । 4. फेंके हुए । 5. गुत्थमगुत्थ ।

रसावल छंद

बजाए नगारे। भयो नाद भारे।
तुफंगं चलाई। तुरंगैं पलाई ॥ १० ॥
इतै सिक्ख बीरं। पिखी शत्रु भीरं[1]।
चले आइ ऐसे। हड़्यो नीर जैसे ॥ ११ ॥
बकैं 'मार मार'। अनेकै प्रहारं।
लगैं ब्रिंद गोरी। तुफगानि छोरी[3] ॥ १२ ॥
जमे पैर नांही। मरे हेरि तांही।
गुरू सूर भागे। थिरे नाहि आगे ॥ १३ ॥
रहे थोर सूरे। मरे क्रोध पूरे।
इकैं सूर आयो। सु घोरा दुरायो ॥ १४ ॥
गुरू संग भाखा। 'वडो जंग राखा।
लरे प्रान हाने। रहे थोर जाने ॥ १५ ॥
उतै सैन भारी। सु आई अगारी।
थिर्यो जाइ नाही। कह्यो आप पाहीं ॥ १६ ॥

दोहरा

सुनि श्री हरि गोबिंद जी कह्यो 'संग लिहु बीर।
हतहु मलेछनि को तहां थिरहु थान धरि धीर' ॥ १७ ॥

पाधड़ी छंद

र पठ्यो वहुर सिवा उचारि। 'भट संग पंच सै बलि उदार।
श्री अम्रितसर जित दिशि पहार[4]। तहिं धर्यो खेत जूझे जुझार ॥ १८ ॥
हय को धवाइ मैदान हेरि। छोरति तुफंग मारे बडेरि।
इम चमूं जुगल मिलि आप मांहि। जनु नदी उमडि इक थान राहि ॥ १९ ॥
अरणोदय समै होयहु सु आइ। तुपकनि तड़ाक नादं उठाइ।
बहु काक ग्रिज्झ[5] उडिकै भ्रमति। गोमाय[6] बोलि मांस भखंति ॥ २० ॥
गन फिरी जोगनी रुधरि पान। बहु खाइ मास को त्रिपति ठानि।
उत खान आइ शसत्रनि प्रहारि। कटि गए सुभट केतिक [7]सुमार ॥ २१ ॥
दुहि दिशनि रौर माच्यो बिसाल। गुलकों लगंति गिर परति जाल।
भट मिलि पठान हल्ला सु कीनि। गन मुगल दौर रण रंग भीन ॥ २२ ॥

---

1. भीड़। 2. गोली। 3. छोड़ी, चलाई। 4. उत्तर दिशा। 5. गिद्ध। 6. गीदड़। 7. गणना।

मुहंमद अली बोल्यो गरूर। 'लिहु मारि समुख देखो जु सूर।
रण थल छुटाइ लीजहि अशेख। अबि भा प्रकाश लिहु नैन देखि ॥ २३ ॥
सुनि तुरक चपे[1] चाले अगाइ। इक बार दौरि रौरा मचाइ।
चमकंति खड़ग पकड़ंति ढाल। छुटकंति तुपक [2]वमकंति ज्वाल ॥ २४ ॥
सरकंति सूर, हरखंति हूर। दरड़ंति दीह, गरजंति भूर।
उछलंति जाति, मारंति शत्रु। खड़कंति मिलति, टुटियंति [3]अत्रु ॥ २५ ॥
इत सुभट गुरू के परति दौर। नहि भजै खान थिति कटति ठौर।
मइ मच्यो जंग दारुन महान। गन बिथरि लोथ पोथनि सथान ॥ २६ ॥
निज शूर संग सिंघे निहारि। तिनि कह्यो बाक ऊचे उचारि।
'इहु पिखहु मलेछ जि समुख आइ। इक बार शलख मारो रिसाइ' ॥ २७ ॥
इम कहति चल्यो आगै रिसाइ। वहु बज्यो राग मारू सुहाइ।
कहि 'मारि मारि' माच्यो सु रौर। मिलि परे सुभट नहि तजहि ठौर॥ २८ ॥
इक बार शलख छोरी तुफंग। पुन खड़ग गहे करि म्यान नगि।
कटियंति अंग गिरियंति भूमि। कटकंत बीर गिर परति घूमि ॥ २९ ॥
गन तुरक मारि सिंघे निहारि। ललकार पर्‌यो जिह बल उदार ॥ ३० ॥
बलि बिप्र गुरू प्रोधा सुभट्ट। तबि भयो समुख मारे उलट्ट।
जिस ढिग कमान लगि कान तान। धरि पनच चलावति ताकि बान ॥ ३१ ॥
वड गुरु प्रताप जिस लगहि जाइ। तन तुरक फेरि पारै पराइ।
सम सरप शूंकत[4] चलहि तीर। रिपु गन प्रहारि वेधति सरीर ॥ ३२ ॥
रस बीर रूप मानो कराल। वहु फिरति प्रहारति शत्रु जाल।
दुहि दिशनि मरी समुदाइ सैन। जनु थकति बीर कीनी सुतैन ॥ ३३ ॥
इम हते तुरक तबि हाल चालि[5]। पिखि अली मुहंमद रिस बिसाल।
'मुझ खरे निकट चाले पलाइ। क्या कहैं लोक किम भाज जाइ' ॥ ३४ ॥
घोरा भजाइ मोरे सु बीर। तबि पिखे तजति सिंघा जु तीर।
नहि टिकनि देति इह भट भजाइ। पिखि भयो समुख इसके रिसाइ ॥ ३५ ॥
सिंघे सु पिख्यो आयो अगाइ। 'इह तकहि मोहि तुरकन चलाइ'।
हय, बचनि हेत इत उत धवाइ। धनु ऐंचि ऐंचि तीरन [6]अगाइ ॥ ३६ ॥
तबि ताकि तुपक छोरी संभालि। छुटि लगी गुलक हय के उताल।
सिंघें समेत गिर पर्‌यो बाज। देखति अनंद तुरकन समाज ॥ ३७ ॥
वनि सावधान धनु लिय संभारि। चहुं ओर तुरक परवारि डारि।
घेर्‌यो सुबीर करि मारि मारि। तबि तकहि तीर मारहि जुझार ॥ ३८ ॥

---

1. खीझे। 2. उगलती हैं। 3. अस्त्र। 4. फुंकारते। 5. हलचल। 6. फेंके।

जो निकट होति तिह बिकटि बान। फोरहि सरीर करि हानि प्रान।
बह सरति शीघ्रता तजति तीर। नहि लख्यो जाइ कबि छोरि बीर॥ ३९॥
ललकार अली मुहंमद सु आइ। 'मैं हतौं इसहि नहिं भाजि जाइ'।
तबि लख्यो ताकवे तुपक धारि। पनु तानि ब्रिप्प ने तीर मारि॥ ४०॥
लगि पर्यो भाल गिरि गी तुफंग। पुन पर्यो आप भाज्यो तुरंग।
इम तुरक सैन पति लीनि मारि। नहि टर्यो आप सिंघा जुझार॥ ४१॥
तबि ताक चमू इक वारि आइ। अनगन तुफंग गुलकां चलाइ।
करि मारि मारि हल्ला सुकीनि। गुर की सु चंमू पर ओज[1] दीनि॥ ४२॥
थिर पैदल सिंघा लगति घाइ। रुप रह्यो बीर नहि पग उठाइ।
मिलि बहुत आन करवाल संग। नहि चल्यो पाइ कटवाइ अंग॥ ४३॥
हुइ खंड खंड मिलि गयो खेत। हति रिपुनि चहति रिस के समेत।
जब सिंघा इव लीनो संघारि। बहु घाइ खाइ गिरि गे सु मारि[2]॥ ४४॥
हलि चली चमू महि मरि बिसाल। रण खेत भयो दिखीयति कराल।
सुधि गई गुरू ढिग सुनति कानि। करि क्रोध आप भे सावधान॥ ४५॥

दोहरा

इस प्रकार रण तुमल भा मरे हज़ारहु बीर।
श्री गुर हरि गोविंद तबि उमडनि चहिं धरि धीर॥ ४६॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रथे खशटम रासे 'अली मुहंमद, सिंघा प्रोहत बध', प्रसंग बरननं दसमो अंशु॥ १०॥

1. बल। 2. मर के।

अंशु ११

नंदा मिरज़ा बंग बध

दोहरा

कहि गुरु पैंदे खान को 'तुरक सैन समुदाइ ।
होहि निबेरो हते ते इस बिधि कीजै दाइ'।। १ ।।

भुजंग प्रयात छंद

रहे संग जोधा सु थोरे हमारे। सभै और सैना सु लीजै संगारे।
दिशा दच्छना मैं चले आप जावो। तुफंगैं करो त्यारि तोड़े मिलावो।
पर्यो जंग थानं तहां आर जावैं। रिपुं सामुहे मारि गढी मचावैं।
मलेछी चमू आइ मंडैं लराई। वधैं खेत आगे धरैं पाइ धाइ ।। २ ।।
तबै खान पैंदा ! परो धाइ ऐसे। बटेरा पिखे ते गहे बाज जैसे।
धरैं त्रास भाजैं करा चोल[1] मारो। लथेरो पथेरो[2] भटं काटि डारो।। ३ ।।
कर्यो मंत्र ऐसे गुरू धीर चाले। बजैं ब्रिद धरौंसानि नांद बिसाले।
तुफगैं करी त्यारि तोड़े उठाए। कसी ठोरि गोरी पलीता मिलाए ।। ४ ।।
किने लीनि नेज़ा कि सांगं संभारे। किनू चांप[3] मैं बाने जेहं[4] संचारे।
गुरू तुंद ताज़ी कियो आप चाले। मलेछानि पै कोप जाग्यो बिसाले।। ५ ।।
कर्यो चांप सज्जी[5] कठोरं कराला। धरे तीर तीखे निखंगै संभाला।
करी ढूक बीरानि पै मार माची। कटे तुंड मुंडं लहू धूलि राची।। ६ ।।
तुफंगैं चली एक बारी तड़ाकै। मनो गाज पुंजं गिरं पै कड़ाकै।
गई फूटि मुंडं लगी जोर[6] गोरी। किसू सूर छाती गरी[7] पार फोरी।। ७ ।।
किसू बांह टूटी गिरे शसत्र भूमैं। रिदा बेधि काहू खरे बीर घूमैं।
किसू लात टूटी गई फोरि गोरी। किते पानि[8] मांगै पिपासा न थोरी।। ८ ।।
हजारों मरे बीर केई लुठंते। किते घाइ खाए सु कोई उठंते।
पर्यो भूर रौरा हलाहाळ होई। झटापट्ट जुट्टे मिटे नांहि ढोई।। ९ ।।

---

1. तलवार। 2. लथ पथ करो। 3. कमान 4. तांत, चिल्ला। 5. दाएं। 6. ज़ोर से। 7. छेद। 8. पानी।

तोटक छंद

गुर श्री हरिगोविंद बीर महां। चलि आइ पिख्यो रण रंग जहां।
सम अंजुल के खपरे[1] जु वडे। धनु जेइ[2] अरोपति ब्रिंद छडे॥ १०॥
फनि को बिसतारति नाग मनो। चलि शूंकति वेग समेत घनो।
मुगलानि पठाननि के गन मैं। लगि जाइ अचानक जां तनु मैं॥ ११॥
ठहिरें नहिं, पार परें नर ते। अगवारि खरो विधता सर ते।
लगि बेधति दोइ कि तीन नर। गुरु देव चलाइ समूह सरं[3]॥ १२॥
बड रौर मच्यो रण ठौर विखै। भट मारति कै मरते सु दिखैं।
हय ब्रिंद किते हिहनावति हैं। कित सूर बिना बहु धावति हैं॥ १३॥
गुलकांनि लगे किति भूमि लिटैं। कितनेकु मरे भट काटि सटैं।
नुति भूखन ज़ीन शिंगार करे। असुवार समेत अनेक मरे॥ १४॥

सवैया छंद

मुगलखांन सुनी सुधि गुरु की 'आप चढे छोरति हैं बान।
एक बार दल उमड पर्यो बड चलति क्रिपान भयो घमसान।
मुहरी दई फोरि सैना की, हटि पाछे केतिक तजि बान।
क्तिक काल मैं करहिं निवेरनि सर मारति सतिगुर सवधान'॥ १५॥
इम सुनि पंच हज़ार चमूं कहु आइसु दई 'अरहु अगवाइ।
गहि लीजहि गुरु बलछल करि कै सगरे कारज सिध हुइ जाइं।
घेर लेहु चहुं दिशि ते दलगन सैन मरे इकलो तबि पाइ।
भाज्यो दयो खुदाइ अबहि गुर शाह निकटि दिहु, बड हरखाइ॥ १६॥
सुनि आग्या भट पंच हज़ारों शसत्र संभारि तुरंग चलाइ।
'गहहु गुरू कहु' बोलति धाए 'भयो मदत हम आनि खुदाइ।
बाज सहत ले चलहिं जियति को, शाहु प्रसंन इनाम दिवाइ।
चमू अलपते क्या लरि साकहि इक बिर परो सकल ही धाइ'॥ १७॥

रसावल छंद

मलेछी जु सैना। मिली जंग [4]ऐना।
करैं 'मार मारं'। हथ्यार संभारं॥ १८॥
बंदूकैं संभारी। बरूदं सु डारी।
कसी दोइ गोरी। गजं ठोकि छोरी॥ १९॥

1. चौड़े तीर। 2. तांत, चिल्ला। 3. तीर। 4. यथावत।

पलीते मिलाए। सु तोड़े डंभाए[1]।
कड़ा काड़ छूटें। भटं लागि फूटैं॥ २०॥

कर्‍यो दौरि हला। रणं खेत मल्ला।
प्रहारी क्रिपानैं। बडे बीर हानैं॥ २१॥

गुरू बान छोरे। चले बेग घोरे।
जिसे जाइ लागैं। तबै प्रान त्यागैं॥ २२॥

दलं मेघ घोरे। सो गोरी कि ओरे[2]।
परैं एक बारी। हला हूल भारी॥ २३॥

गिरे मुरछाए। मनो नींद पाए।
किते प्रान हाने। किने रोस ठाने॥ २४॥

स्वैया

पंज हज़ार परे ललकार तुफंगनि मारिकै रारि मचाई।
चैत बिखै जिम मेघ घटा बनि ओरन की बरखा बरखाई।
सूर खरे जिम खेत पक्यो इक बार ही मारि कै भूम गिराई।
तीर गुरू के समीर बहै दल[3] फाट गयो नहि धीरज पाई॥ २५॥

श्री हरिगोबिंद चांप कठोर ते यों खपरे खर[4] मारति हैं।
तेज़ तुरंग करे बिचरैं, जित ब्रिंद रिपू तितु डारति हैं।
लागति ही उथलैं हय ते मरि जाति न बाक उचारति हैं।
सूर बचै न तुरंग बचै जिस अंग लगै न संभारति है॥ २६॥

तीरनि की पिखि लाघवता[5], जिन ते हति सैंकड़ें सूर भए।
फेर टरैं न थिरे गुर अग्र, समग्रही उग्र न धीर लए।
खान बडे मुगलान की सैनि कि सय्यद शेख बिसाल तए[6]।
देखहु क्या, न चमूं ढिग दीरघ घेरो चहुं दिश, लेहु जए[7]॥ २७॥

यों कहि पीसि कै दांत परे गुरु ऊपर एक ही बारि घने।
होत भए थिर थंभ मनो गन छोरति बान को कोप सने।
अग्र जु आवति तां उथलावति ज्यों बड गाज सुनारे हने।
कान प्रमान लौ तानि चलावति मारे अनेक ही कौन गिने॥ २८॥

पूरब मंत्र कर्‍यो तिस हेतु हटे गुरु पाछे तजे रण थाना।
देखि मलेछ बडे उमडे हथियार प्रहार करैं घमसाना।

---

1. दाग़े। 2. ओले। 3 सेना दल जो बादल के समान थे। 4. तेज़ चपटे तीर। 5. फुरती। 6. तपे हुए। 7. विजय।

यौं कड़की इकि बारि तुफंग मचे तड़िता गन गाज महाना ।
चौंर ते ऊपरि धाइ परे जिनको तन काल महां नियराना[1] ॥ २९ ॥
'भाजि न जाइ गुरू रण छोरिकै घरेहु घरेहु क्यों न हट्यो जि पिछारी ।
शाहु चमूं बड जाइ अर्‌यो नहिं, दाहनी संग अबै वहु मारी' ।
यों कहि आपस मो उमडे करवाल करालनि खैंचि निकारी ।
ब्रिंद बडी लिशकै कर बीरनि[2] ज्यों तड़िता गन रूप को धारी ॥ ३० ॥
श्री गुर गति देखि तबै तखतू सिख जैत ने वाक उचारे ।
'रावर के हटि आवनि ते इह धाइ मलेछ परे अबि सारे ।
आप के बीर धकाइ लिए रण खेत महां करि जोर निकारे ।
धीर धरां सु गरीब निवाज हतैं इनको तुमरे ललकारे ॥ ३१ ॥
श्री हरि गोबिंद बीर बहादर बाक कह्यो 'इन आवनि दीजै ।
जानि कै थान तज्यो हमने, अगवाइ बधैं चित चौंप पतीजै ।
एक ही बारि करैं कटीया, मटीया जिम सोटि[3] ते फोरनि कीजै ।
मारो तुफंगन ते गुलकां अर त्यार रहो अबि जंग दिखीजै' ॥ ३२ ॥

दोहरा

इति ऐसेई कहति थे आयो पैंदेखान ।
बिधी चंद जिह संग है परे जंग पर आन ॥ ३३ ॥
अजब तमांचा गजब को, लग्यो मलेछनि अंग ।
भुरजहि धाना भाठ जिम, छूटी शलख तुफंग ॥ ३४ ॥

चाचरी छंद

तुफंगैं । निसंगैं । उठाई । चलाई ॥ ३५ ॥
दुगोरी । कि छोरी । पलीते । धुखीते[4] ॥ ३६ ॥
उलट्टे । पलट्टे । दबट्टे । न[5]लट्टे ॥ ३७ ॥
कडाके । तडाके । सु नेजे । जो तेजे ॥ ३८ ॥
उठाए । भ्रमाए । लगाए । धसाए ॥ ३९ ॥
क्रिपानैं । महानैं । निकासी । प्रकाशी ॥ ४० ॥
चलाई । लगाई । प्रकाटे[6] । न हाटे ॥ ४१ ॥
अचाने ।[7] प्रहाने । अराती । कि घाती ॥ ४२ ॥
हथ्यारे । उघारे । उभारे । प्रहारे ॥ ४३ ॥
दु हल्ले[8] । सु हल्ले । इकल्ले । धकल्ले ॥ ४४ ॥

1. निकट आए । 2. शूरवीरों के हाथ में । 3. लाठी । 4. दाग़े जाते हैं । 5. न लौटे । 6. बुरी तरह मरे । 7. अचानक । 8. दो तरफ़ से ।

अरे हैं। खरे हैं। मरे हैं। तरे हैं।। ४५।।
उचारैं। पुकारैं। प्रहारैं। संघारैं।। ४६।।

सिर खंडी छंद

पैंदे खां वड जोधा पर्यो रिसाइ कै।
खड़ग हाथ वड क्रोधा करहि प्रहार कै।
जिन आगा बड रोधा[1] मारे धरि परे।
जाती मलक जि प्रोधा हति हति तां ररे[2]।। ४७।।
निंदा सिक्ख पिरागा तेगे धूहि कै।
सुभटनि काटनि लागा तुरंग फंदाइ कै।
मारे रोकति आगा झटपट गिर परे।
जंग भीम बड जागा जोगनि हसति हैं।। ४८।।
लोहू खप्पर भरति अघावति पावती।
रिदे हरख को धरति सु तालि बजावती।
भूत प्रेत गन फिरति खाइ डकरावते।
अंत्रन माला करति हसति बहु नाचते।। ४९।।
भेड़ पइआ तरवारी बरछे ठेलिकै।
अति काली किलकारी आमिख भक्खिकै।
आंत्रै गहति उडारी रीझ कि चंग[3] हैं।
काक रु कंक[4] पुकारी दारुन शबद ते।। ५०।।
नंदा गुरू अगारी खैंचि क्रिपान को।
वाहति वारो वारी मुगल पठान को।
अरहि तांहि दे मारी धरहि न प्रान को।
जुट्यो बीर जुझारी शत्रुनि हानि को।। ५१।।
तुरक परे अरिराइ सु नंदा घिर गयो।
गुलकां चलि समुदाइ तुरंगम हति भयो।
चहुं दिशि महिं रिपु आइ प्रहारहिं एक के।
सभि ते अंग बचाइ हते गन सूरमे।। ५२।।
खडग टुट्यो जिस काल निरायुध ह्वै गयो।
मिरजा बेग बिसाल लात ते गहि लयो।
ऐंचि उतारि उताल नहीं श्रम किछु कियो।
अवनी पर तिह डाल महां बलते दियो।। ५३।।

1. रुद्ध करके, रोक के। 2. कहे। 3. पतंग। 4. शिकारी पंछी।

दोहरा

नंदा चाहति 'खड़ग को इस तें लैहौं छीनि ।
मिरज़ा बेग संभारि के भरि [1]कौरी महि लीनि ।। ५४ ।।

चौपई

मुशट-युद्ध दोनहु अर परे। घाव करनि ते भट हटि खरे।
पिखिनि लगे तिन दुहन तमाशा। मुगल सिक्ख रन महद प्रकाशा ।। ५५ ।।
कबहि मुशट कबि हतहि तमाचे। कबि कौरी[1] को भरि रिस राचे।
हित गेरन के ओज लगावैं। चपे वीर जुग जंग मचावैं ।। ५६ ।।
बदन बिलोचन जिन के लाल। अंगनि गुंदति,[2] रूप कराल।
सैन मलेछी अपर जु आई। तिन की शलख छुटी अगवाई ।। ५७ ।।
तिन ते कितिक लगी जबि गोरी। देहि दुहनि की बहु थल फोरी।
गुंदति अंग दुऊ धर डारे। चढि बिबान इक, सुरग सिधारे ।। ५८ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटम रासे नंदा मिरज़ा बेग बध प्रसंग बरननं नाम इकादमो अंशु ।। ११ ।।

---

1. अंक भर कर, बाहों में जकड़ कर। 2. गुत्थम गुत्थ।

अंशु १२

चतर बीर हतन

दोहरा

दुहि दिशि ते गुर दल पर्‌यो भई तुफंगनि मारि ।
गिरे बीर संग्राम महिं भागे कितिक सुमारि ।। १ ।।

चौपई

श्री हरि गोविंद के बड जोधा । करी लथेर पथेर सु क्रोधा ।
उदो, दाऊ, दोइ हरी के । अमीआं, हहर मुकख अनीके ।। २ ।।
रिंधावा महरू बड बीर । मोहन अपर गुपाला धीर ।
जैता, तोता, किशन निहालू । नाम पिरागा सूर बिसालू ।। ३ ।।
तखतू, दयाल, तिलोका, धीरा । देवी दास, अनंता, हीरा ।
पैड़ा आदिक कौन गनीजहि । गुर सैना के मुक्खि मनीजहि ।। ४ ।।
जाती मलक बिप्र बडि जोधा । सोढी वंस सभिनि को प्रोधा[1] ।
जेठा, बिधीचंद बलवंता । पैंदे खान वीर अतियंता ।। ५ ।।
बाब नाम रबाबी पास । आयुध बिद्या को अभ्यास ।
इह तिह समें भए रंग रत्ते । चली क्रिपानैं रिस भरि तत्ते ।। ६ ।।
उत इसमाइल खान चमू-पति । जो जानति है जुद्ध करनि अति ।। ७ ।।
दुंदे खान, बहादर खान । इत्यादिक बड वीर पठान ।
सय्यद इक दिदारली[2] भारा । बली बेग, दल बेग उदारा ।। ८ ।।
इस ते आदि मुगल सिरदार । जिन संग सैना कई हज़ार ।
रौरा पर्‌यो सभी ढुक परे । दुहि दिश के जोधा थिरि अरे ।। ९ ।।

भुजंग प्रयात छंद

दुऊ बीर बांके गुरू के बधाए । बिधीचंद पैंदा रिदे रोस आए ।
मलेछी चमू सिंधु जैसी बिसाला । बरे मच्छ दोनो हलाचाल घाला ।। १० ।।

---

1. पुरोहित । 2. दीदार अली ।

तुफंगै चलाई, दई दास पासे। गई फेर नेजे उभारे हुलासे।
परे दौरि ऐसे जथा बाज़ भूखा। उड्यो हेरि पंछी गहै खाइ सूखा[1]॥ ११॥
उत्थले पत्थले न जो पाइ हल्ले। करे छूछ बाजी अकल्ले धकल्ले।
हतैं नोक नेज़ानि देही खुभावैं। गहैं बांस ऐंच[2] फलंको[3] चढ़ावैं॥ १२॥
बली दीह घोरे धवावैं प्रहारैं। किसू फेट[4] सों गेरि भूमैं संघारैं।
किसू दे धकेला तुरंगै समेता। गिरैं प्रान खवै कै न होवैं सुचेता॥ १३॥
तबै बीर पैंदा कुप्यो जंग मांही। हये छोरि दीनो लियो खग्ग तांही।
दुती हाथ मैं ढाल भागी संभारी। बर्यो फांदि कै बीर कीने संघारी॥ १४॥
हतै तेग कांके[5] किते ढाल ढाहे। किसू दे धकेला रखे जंग मांहे।
हतै लात कांके गिरैं नीर भारे। सहार्यो न जाई किते सूर मारे॥ १५॥
करी तेग़ म्यानं रखी ढाल बाएं। चल्यो जाति घोरा गहे हाथ दांए।
करे ओज ते टांग ऐंचै गिरावै। तरै बीर दावै, मरै, प्रान जावै॥ १६॥
डरे बीर सारे नहीं नेर कीनो। खरे दूर गोरी चलावैं सु चीनो।
तबै धाइ घोरे चर्यो बीर पैंदा। तुफंगं संभारी नहीं खौफ़ कैंदा[5]॥ १७॥

नराज छंद

भरे पठान कोप मैं फिरे सु मोर[6] खाइ कै।
तड़ाभड़ी तुफ़ंग ते मचाइं बीर घाइ कै।
इते गुरू अगार को सिधारि पाउं डारि कै।
परे जुझार दौरि कै क्रिपान को प्रहारि कै॥ १८॥

तुरंग संग अंग भंग सूर प्रान छोरि कै।
भए अरोह देव लोक शोक त्यागि लोरि[7] कै।
फिरैं कबंध अंध सो गिरैं भवारि खाइ कै।
पुकार मारि मारि कै कटैं क्रिपान घाइ कै॥ १९॥

कटैं सिकंध दंड बाहु, हाथ अंगुरीन ते।
गिरंति सीस ग्रीव ते, कि तुंड[8] काटि दीन ते।
उरू कि गोडियान[9] ते निकंदि देति डारि कै।
गुमाय[10] मास खाति ब्रिंद, जोगनी डकारि कै॥ २०॥

विहंग मासहारि[11] आइ खाति हैं अघाइ कै।
बिथारि श्रोण मास को प्रकाश बीर घाइ कै।

---

1. सुख से। 2. खींच कर। 3. फल नेज़े का। 4. चोट। 5. किसी से।
6. मोड़। 7. चाह। 8. थूथनी। 9. गुठने। 10. गीदड़। 11. मांसाहारी।

करंति लोथ पोथना, तुरंग छूछ दौरते।
प्रहार ते क्रिपान आनि त्याग नाहिं ठौर ते ॥ २१ ॥
हजार ही मलेछ मारि श्री गुरू प्रहार ते।
बिसाल चांप ऐंच ऐंच तीर बीर डारते।
पुलादि मल्लय[1] तीखना लगैं स जोर जाइ कै।
तुरंग सूर बीच कौ परैं सु पार घाइ कै ॥ २२ ॥
न पानि फेर जाचते, न प्रान देहि धारते।
भई भयान भूमिका भगैल[2] भैं सिधारते।
बिसाल बीर बांकरे नहां करे हंकारते।
प्रचारते प्रहारते, सु मारते न हारते ॥ २३ ॥

भुजंग प्रयात छंद

पुनं कीनि हल्ला जु सैना पठानी।
गुरू ओर आए बडे बीर मानी।
'गहो क्यों न' बोलैं रहे सिक्ख थोरें।
निकाली क्रिपानैं धवाए सु घोरे ॥ २४ ॥
गुरू तीर आए सु हल्ला बिलोका।
भरे क्रोध मैं बीर तोता, तिलोका।
अनंता, निहालू, चले बीर चारों।
जहां खांन ठाढ़े, बिलोके हज़ारों ॥ २५ ॥
लई संग सैना गए धाइ आगे।
तुफंगैं तड़ाके उठे ज्वाल जागे।
चली एक वारैं सु नादं उठाए।
मनो गाज ब्रिदं गिरे भूमि आए ॥ २६ ॥
फुटं तुंडं मनो झुंड हांडी।
प्रचंडैं परी दंड खंडे जि कांडी[3]।
बडे ऐंडि बैंडे, उमंडे घमंडे।
परे रुंड ह्वै कै भए खंड खंडे ॥ २७ ॥

दुहुं ओर ते मार गोरी न होई। पलीते धुखैं सैन ने कीनि ढोई।
गिरैं बीर घोरानि ते भूमि ऐसे। फलं डाल ते बायु को बेग जैसे ॥ २८ ॥
उते खान ढूके हला-हल्ल कीने। रुहेले गहे तेग़ देरी बीहीने।
चले चुंग दाओज़ई[4] बीर आए। गुरू सामुहे एकठे होइ धाए ॥ २९ ॥

1. तीर का फल। 2. भगोड़े, कायर। 3. शाखाएँ। 4 दाऊद जई।

तबै और आगे निहालू तिलोके। तुफंगं प्रहारी अगारी सु आए ।। ३० ।।

क्रिपानैं निकासी, तुफंगानि छोरी। भई हाल हूलं. चले बान गोरी।
धका धक्क होई, हका-हक्क[1] बाजी। लटा पट्ट जुट्टे खिलैं जंगबाज़ी ।। ३१ ।।

सटासट मेले भई रेल पेला। कराचोल भाले हुलाचाल मेला।
दुचोंबैं[2] बजैं दीह धौंसे धुंकारे। लगे ढोल डंके उठ्यो नाद भारे ।। ३२ ।।

मिले आप माहीं हथावत्थ होए। पटे बाजि बिद्या करैं बीर ढोए[3]।
बलीबेग[4] को धाइ मार्‍यो तिलोके। कराचोल बाह्यो बज़ी पास होके ।। ३३ ।।

अधो आधि चीरा गिर्‍यो छोरि घोरा। हुतो भ्रात तांको इसे देखि दौरा।
हत्यो दीह नेजा लग्यो ग्रीव मांही। पर्‍यो भूमि मैं पै तज्यो कोप नांहीं ।। ३४ ।।

पिख्यो धाइ तेते चल्यो मारि नेजा। कह्यो 'होहु ठांढो नहीं, वार लेजा'।
संभारी तफंगं हती ताकि गोरी। दयो फोरि माथा, मर्‍यो प्रान छोरी ।। ३५ ।।

तबै खान जैंना पिखै दोइ मारे। निनो ते हमारे बडे बीर हारे।
तुरंगं धवायो अयो तीर तोते। 'कहां जाइ मारों, बचैं नहिं मोते' ।। ३६ ।।

बली बीर तोते क्रिपाने संभारी। जबैं नेर कीनो तबै ग्रीव झारी।
गहे हाथ खग्गं[5] गिर्‍यो ज़ैन खाना। मलेछानि देख्यो हत्यो दोइ ज्वाना ।। ३७ ।।

चलाई तुफंगें इकै बार ब्रिंदं। गिर्‍यो बीर तोता महां रोसवदें।
अनंता, निहालू रूपे बीर दोऊ। मनो शेर गाजैं थिरे जंग जोऊ ।। ३८ ।।

गुरू को अगारी प्रहारैं हथ्यारं। मिले सैंन मद्धे करे मार मारं।
उत्थले पत्थले बडे बीर बंके। परी धूम भारी संघारे निशंके ।। ३९ ।।

भटं अंग भंगे करे जंग चंगे। बडे खान खूनी हने श्रोन रंगे।
पिख्यो दौन को बीर ब्रिंदं गिराए। खुशी श्री गुरू कीनि 'साधु'[6] अलाए ।। ४० ।।

स्वैया

बीर बहादुर खान पिखे जुग सूर गुरू के फिरैं सु प्रहारति।
लेकरि ब्रिंद तुफंगनि को इक बारी घनी गुलकां कसि मारति।
यौं उथलाइ दियो भट पंज मनो करि टामनि को हनि डारति।
श्री हरिगोबिंद धारि अनंद बडे भट आपनें को ललकारति ।। ४१ ।।

'मारहु बीर मलेछन कैं' सुनि कै गुरू वाक परे भट धाई।
छोरि तुरंग क्रिपान लई रिस ब्रिंद मिले बहु मार मचाई।

---

1. पुकारते हुए। 2. दो डंडियों से तेज़ बजाना। 3. निकट आए। 4. बली वेग। 5. तलावर। 6. साधुवाद किया।

भादव की छट मैं तड़िता गन श्री शमशेर तथा चमकाई।
श्रोणत सो मिलि लाल भई जनु काल की जीभ हैं पान चवाई ॥ ४२ ॥

आइ बहादुर खान पर्यो जुग बीर घिरे भड़थू बड पायो।
मारि अनेक मलेछनि को ततकाल निहालु गिर्यो गन घायो।
बीर अनंते बहादर खान के कोप कै जाइ क्रिपान चलायो।
बाह कटी शमशेर समेत लहू गंध[1] ते गिरि कै मूरछायो ॥ ४३ ॥

दोहरा

मिलि पठान समुदाइ ने हन्यो अनंता बीर।
चारहु गुर सूरे हते धरी तुरक उर धीर ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटम रासे चतर बीर हतन प्रसंग बरननं नाम दुवादशमो अंशु ॥ १२ ॥

1. घाव।

अंशु १३

जंग प्रसंग

दोहरा

मच्यो महां संग्राम जबि कर चमकति शमशेर ।
श्री गुर हरिगोविंद तबि भरे कोप सम शेर ।। १ ।।

स्वैया

तीर तजे गन भीरु भजे, नहि ओज[1] सजे, न लजे मन काचे ।
तीखन भीखन जे खपरे सर मोट, पके दिढ ग्रथ[2] हैं तांचे ।
कंकन पंख बिलंद लगे जिन कंचन बागर[3] सुंदर राचे ।
चांप नुटंक ते छोरति हैं जिह लागि परे किम सो नर बाचे ।। २ ।।
तूरन तीरनि पूरति श्रोण लौ फोरि सरीरनि सूर गिराए ।
जाने न जाति निखंग निकारति, जे संचारति चांप चढाए ।
छूटति शूंकति जोर भरे फण को बिसतारति नाग सिधाए ।
एक द्वै तीन को वेधति हैं गिर जाहि घने भट यौं उथलाए ।। ३ ।।
श्री हरि गोविंद वीर वहादुर बादर ज्यों सर को बरखावैं ।
दें ललकारे मनो गरजैं, कर चांप धरे धनु इंद्र सुहावैं ।
कांप समीर तै जाति इते उत मोरि[4] तुरंग को मोर नचावैं ।
नीर मनिंद वहै तन श्रोणति, जोगनि काकनि, कंकनि प्यावैं ।। ४ ।।

कबित्त

पैंदेखान, बिधीचंद, मोहन, गुपाला बीर, जैत सों पिरासा धीर पैडा जंग आयो है ।
तखतू मलक जाती फिरैं रिपु घाती भए, देवी दास, किशना सुभट समुदायो है ।
उद्दा, दाऊ, दयाल, भागू, भट्टू, दौनं भ्रात बली हीरा अरु धीरा रण रंग को मचायो है ।
छज्जू, गज्जू मोहरू, रिंधांवा ते सुजाना सूर, दौर्यो दयाचंद मन रोस को बढायो है ।।५।।

---

1. ज़ोर लगाए । 2. उसकी गांठें । 3. गांठ । 4. मोड़ कर ।

गिने कौन कहां लगि गुरू के हजूर सूर, पूरन ग़रूर करि तूरन प्रहार ते।
त्रास बिना शेर जैसे बिचरैं मलेछ बीच, तोमर भ्रमावैं, कै तुफंग कसि मारते।
कोऊ चाप एंचि ऐचि छोरैं सर मारैं अरि, तुरक हज़ारों गिरैं रिदै रिस धारते।
रिपहि निहारते, पुकार ललकारते, बंगारते[1], न हारते, सु मारि मारि डारते ।। ६ ।।
आए उति मुगल करीम बेग सैन संग, दूसरे रहीम बेग अली बेग धाइ कै।
बली जंग बेग जांकै संग है तुरंग दल, और शमशेर-बेग बेग ते सु आइ कै।
ख्वाजा बेग, मौज बेग सूरमा हयात बेग, बडो सुलतान बेग पर्यो है रिसाइ कै।
मुगलस खान नै बखान कोप ठानि करि 'क्यो न करो हान को निदान जंग पाइ कै ।। ७ ।।
काइम खां, इसमाइल खां, लुतफल्लहि खान, इनाइतखाना।
बीर कलंदर खान कुप्यो, हय तेज अरेह मुहंमद खान।
कोप सलाबत खान भर्यो, इलमासहि खांन, जहानखां जाना।
दौलत खान, मुद्दफर[2] खां अरु हैदर खान महां अभिमान ।। ८ ।।

दोहरा

सय्यद सुभट दिदार अली गिनौं कहां लगि आन।
सभि सो करि कै कोप को बोल्यो मुगलस खान ।। ६ ।।

सवैया छंद

'मनसब[3] बडे बडे पाए, पातशाह ठानति सनमान।
ग्राम जगीर बिलंदै दौलत लेति सकल ही नित सुख मानि।
काज पर्यो अबि मालक को इह क्यों न करति ह्वै कै सवधान।
सनमुख हुइ तन लरति न नर को, करि राखे अव प्यारे प्रान।। १०।
निमकहरामी बनहु न, भाई ! हमरो लशकर महिद महान।
बिद्या शसत्रनि की सभि जानहु भए अरोहनि बली किकान।
भागे कहां रहहु को थल नहि क्यो कुल लाज न कटते कान।
पुन[4] किस काम शाहु को आवहु अलप काम भी इतो सरा न ।।११ ।।
कहां गुरू पहि दल बल जोधे हम ते दस गुन थोरे जानि।
अर्यो रह्यो पकर्यो न गयो जबि क्या तुमरी मानहि को आनि।
गहो कि मारहु नाहि त मरीयहि 'रहि आवहि तौ बात जहान'।
सुनि दिदारली सय्यद बोल्यो 'तीखन भीखन[5] गुर के बान ।। १२ ।।
सनमुख ठहिरनि देति नहीं सो तीन तीन महि पार परंति।
जिन के लगे न उकसन पाए, इक पैंदे खां सो बलवंत।

---

1. चुनौती देते। 2. मुज़फ़्फ़र खां। 3. पदवी। 4. पुनः। 5. भीषण।

देति धकेले हय धर[1] मेले काइ न झेले करि दे अंति।
तुम वाखति गुरु ढिग दल थोरा अपनो लशकर बहु निबरंति ।। १३ ।।
देखो आगे हुइ. गन लोथनि, मरे हज़ारों मुगल पठान'।
सुनि बरिआम[2] बिसाल गुरू को कुप्यो अधिक ही मुगलसखान।
चल्यो आप हुइ सनमुख रण को बाम बिलोचन फरक्यो जानि।

मुरझायो 'अबि हटनि बनहि नहिं 'मूढ बिसूरति जनु भाहान ।। १४ ।।
उमड्यो लशकर पिखि सरदारनि एको बार परे अरिराइ।
शलख तुफंगनि की बड छूटति उठ्यो धूम जनु घन गन छाइ।
ज्वाला-बमनी[3] ते छुटि गुलकां सम ओरनि[4] की बड बरखाइ।

फोरे सूर सरीरनि उर, टूटी भुजा, लात, गन पाइ[5] ।। १५ ।।
इत श्री हरिगोबिंद अनंदे बीर बिलंद बीर रस धारि।
जाती मलक, बिधीचंद, पैंदा इन को होरि दिए ललकार।
ओरड़ परे तुरक गन सारे होहु सचेत हतहु हथिआर।
नमसकारनी[3] ते गन गुलकां कै चांपनि ते बाननि मारि ।। १६ ।।
प्रथम करहु संग्राम इनहु को बहुरो सभि ऐंचहु तलवार।
काटि काटि डाटहु ग्ररू फाटहु नहिं पाटहु[6] मिलि कै इक बार।
कतले करहु मुरहु नहि धुरि लगि इन को बल गुर लियो निकारि।
अंग संग श्री नानक हमरे, बिजै धरो अरि लशकर मारि ।। १७ ।।
आवति सैंन मलेछी पिखि के हला कर्यो रिदै सभि जानि।
हुकम गुरू को सुनि करि सारे भयो बचन रिपु को बल हानि।
आगै धाइ परे सिख सारे काशट-पिशटिनि[3] नछोरि महानि।
मुगल पठांन आनि कै सनमुख बरखा करी ब्रिंद गुलकानि ।। १८ ।।

हरिबोलमना छंद

भट कोप भरे। दिशि दोइ जुरे।
इस भांति थिरे। जनु थंभ खरे।। १९ ।।

गुलकां बरखैं। रिपु को धरखैं।
बडि मार मची। रज श्रोण रची ।। २० ।।

भट ब्रिंद गिरे। मुख को न मुरे।
रण धूम परी। गन सैंन मरी ।। २१ ।।

---

1. धरती। 2. महाबली। 3. बंदूक। 4. ओले। 5. पैर। 6. विलग न हो जाओ।

बहु बान छुटे। रिसि बीर जुटे।
द्रिग लाल करे। पग रोपि अरे[1] ॥ २२ ॥
दिसि द्वैन हटे। थिर थान कटे।
गिरि भूमि परे। पिखि हूर बरे[2] ॥ २३ ॥
मुख चंद फबै। तन गौर सबै।
म्रिग नैन बने। मन प्रेम सने ॥ २४ ॥
अस हूर फिरैं। पिखि सूर बरैं[2]।
उतसाह महां। रण होति जहां ॥ २५ ॥
हम प्रेरित हैं। रण फेरति हैं।
इक टेरति हैं। फिर घेरति हैं ॥ २६ ॥
गुर तीर हते। चहिं जंग फते।
खपरे खर हैं। द्रिढ जे सर[3] हैं ॥ २७ ॥
तन पार परैं। ततकाल मरैं।
जनु नाग डसे। इम बान लसे ॥ २८ ॥
थल भीम[4] भयो। पल[5] श्रोण पयो।
खग खाहिं महाँ। गन स्याल तहा ॥ २९ ॥

दोहरा

दोनहु दल हल्ला कर्यो मिलि गए आपस माँहि।
कटि कटि झटपट गिरति हैं हय ते तर[6] पर जाहि ॥ ३० ॥

भुयंग प्रयात छंद

सरोही चमी बाढ वारी[7] हलब्बी। खिचे म्यान तेत्रे फुलादी जुनब्बी[8]।
सु खंडे दुधारे पचंडे चमक्के। चली सैफ[8] साफ कटैली दमक्के ॥ ३१ ॥
लगैं खग्ग पै खग्ग, टूटैं छणंकैं। गरे मैं संजोए कि तां सो झणंकैं।
चले मेल मेले भई रेल पेले। मनों रंग लेले सिले फाग खेलें ॥ ३२ ॥
भुजादंड कंधै गरे काट डारे। किसू तुंड मुंडं कि रुंडं[9] बिदारे।
कटी अंगुरी हाथ लोहू बहंता। बढ्यो पैर काँको न ऊठे सकंत[10] ॥ ३३ ॥

1. डट गए। 2. वर लिए। 3. शर, तीर। 4. भयंकर। 5. मांस 6 धरती। 7. हलब नगर की तलवार। 8. जनब नगर की तलवार। 9. तलवार। 10. धड़। 11. उठ सकते।

कट्यो गोड काको, कि जंघा भिदी हैं। उरू बाढि[1] गेरी कि छाती छिदी है।
गई लोथ पै लोथ गंथी[2] बियारी[3]। परे सीस फूटे हयं पाइ धारी॥ ३४॥
तछा मुच्छ जोधा झटा पट्ट होए। गहे सांग नेजे प्रहारे परोए।
चली तेग ऐसे वडे बीर मारे। जथा काटि खाती[4] गनं काठ डारे॥ ३५॥
तुफंगै भई बंद जुट्टैं क्रिपाणैं। खचा खच्च माची गचा[5] गच्च ठाणैं।
जमी हाथ मुशटैं लहु लागि रांगे। कटे बाहु जंघां मनो ब्रिच्छ छांगे॥ ३६॥
परे सूर सुते सु आखैं पसारी। भका भक्क बोलैं लहू घाव भारी।
किते बीर औंधे कि सूधे परे हैं। चले दौर घोरे तहा सो दरे[6] हैं॥ ३७॥
खिरे रंग लालं बडे सूर भासे। जथा मास बैसाख फुले पलासे।
अधूमं जथा लाट वंन्ही[7] प्रकाशी। चलैं तेग ब्रिंदम दिपैं चंचला सी॥ ३८॥
कहां लौ कहौं जंग की बात जोई। कटे अंग जोधानि क्रोधान खोई।
रुक्यो खेत सारो न धोरे धवावैं। चल्यो हूं न जाई कहां सो चलावैं॥ ३९॥

चौपई

कर्यो क्रिपाननि सो घमसाना। बज्यो लोह जिम घरें महाना।
ऐसी बात भई तिस काला। गही मलेछनि गन करवाला॥ ४०॥
केतिक परी टूट करि धरनी। गही रही कल मुशट सुवरनी।
कितिक सुभट को चल्यो न हाथा। भया सथभ त्रास कै साथा॥ ४१॥
केतिक बीरनि की मति मारी। रोम न काट्यो करे प्रहारी।
केतिक तुरंग धवावति जाते। उगल म्यान ते खड्ग पपाते[8]॥ ४२॥
कहैं मलेछ 'दगा दिया लोह'। कर प्रहार बिफल सभि होहि।
गुर सिख्यन क्रिपान मुल थोरे। भए सु तिस छिन तीखन घोरे॥ ४३॥
सहिजे चलहिं तार सम निकसैं। काटि काटि तुरकनि सिख बिगसैं।
सभि मलेछ तबि श्रम के संग। सपत जाम[9] भे चढ़े तुरंग॥ ४४॥
करति जंग त्रै पहिर बिताए। नहि सुपते नाहन कुछ खाए।
खड्ग जंग जब मच्यो करारा। माया मोह रिपुन पर डारा॥ ४५॥

दोहरा

एक छुधिपति दूजै थकति, तीजै रिस गुर कीनि।
सिथल अंग तुरकनि करे सिख सभि भे बलपीन॥ ४६॥

---

1 काट कर गिराई। 2. गुत्थम गुत्था। 3. बिखरी। 4. लकड़हारा। 5. दलदल। 6. दल दिए। 7. वन्ही (आग)। 8. गिरे। 9. याम।

सपत सहस्र जु बाहिनी भई कतल तिस काल।
बाकी भट जेतिक बचे तिनकै त्रास बिसाल॥ ४७॥
बज्यो खड्ग घटिका चतुर हटे सुर निज ओर।
लरति अघाई बाहनी भाजे दिये सु छोरि॥ ४८॥
बिसरामे अरु त्रिपत थे पुन गुर बखश्यो ज़ोर।
जिस ते मार्यो तुरक गनि कर्यो खेत रण घोर॥ ४९॥
बिधिचंद पैंदाबली करहिं प्रहार जि एक।
दइ त्रै काटति सुभट को मारे एव अनेका॥ ५०॥

इति श्री गूर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे 'जंग प्रसंग' बरननं नाम त्रोदसमो अंशु॥ १३॥

अंशु १४

दूत पठन प्रसंग

दोहरा

मुगल पठान महान दल कतल भयो जबि एव।
सुभट संभारे आपने सगरे श्री गुरदेव ॥ १ ॥

चौपई

मुगलसखान थिर्यो इक थान। जिस कै चिंता शोक महान।
जितिक सहंस्र बचे भट हारे। सभि दिशि ते तिस पासि पधारे ॥ २ ॥
तबहि दूत इक निकटि बुलायो। कहि बहु बिधि गुरु निकट पठायो।
शसत्रहीन हुइ गयो अगारी। हाथ जोरि करि बंदन धारी ॥ ३ ॥
'गुरु साहिब ! सुनीयहि दे कान। मोहि पठायो मुगलसखान।
कही आपि को बात भलेरी। 'तजहु लराई भई घनेरी ॥ ४ ॥
हजरत को अबि दीजहि बाज। नहि थल अस जहिं बसि हो भाजि।
नाहक प्रान देति क्यो लरिकै। क्या सुधरहि जबि मरिहो लरिकै ॥ ५ ॥
कई लाख सैना पातिशाही। किमि समता चाहहु चित मांही।
अलप बाज़ की बात पछानो। इतो बिगार अपनि क्यो ठानो ॥ ६ ॥
करी भूलि कहु समझहु अबै। मो संग मिलहु सुधारहु सबै।
शाहु समीप आप ले चलौं। तुमहि मिलाइ भले करि मिलौं ॥ ७ ॥
जो कीनसि अपराध बिसाला। छिमा करावहों मैं ततकाला।
निज पुरि आदि ग्राम जे सारे। भुंचहु नित जिम अहो अगारे ॥ ८ ॥
अबि लौ लखहुं आपि की नीकी। करहु कुशल निज अरु सभि जीकी।
नांहित लीजै रिदै बिचारि। जेतिक होइ तुमार बिगारि ॥ ९ ॥
शाह जहां को तेज बिसाला। जिस को झुकैं सकल महिपाला।
देशनि के पति जे बरिआमू। ठानहि आनि सलाम तमामू ॥ १० ॥

मारवाड़, हांडे, राठौर। जिन ढिग बडे मवासे ठौरि।
दिशि दच्छण के दे दे डोरे। होइ दीन मिलि शाहु निहौरे[1] ॥ ११ ॥
पूरब दिशि के आदि बंगाला। झुके महिप लखि तेज बिसाला।
पुन परवत बासा जे राजा। ले करि भले सुगात[2] समाजा ॥ १२ ॥
तनुजा डोरे दे दे मिले। अपने काज सवारहिं भले।
पशचमि दिशि जहिं बलख बुखारा। गिनौं कहां लगि देश उदारा[3] ॥ १३ ॥
फिरहि सभिनि महिं शाहु दुहाई। लिखि प्रताप को सभि डर पाई।
नहीं जगत महिं को नर आन। जो सनमुख हुइ बनहि समान ॥ १४ ॥
लाखहुं चढहिं बाहनी संगि। आइसु मानि प्रान दें जंगि।
तुम किसि के बल करहु लराई। मुशकल बनहि, बसहु किस थाई ॥ १५ ॥
अरहु लरहु होवैं हति प्राना। जीवहु छपहु जाइ किस थाना।
मानो मोरि कह्यो दिहु बाज। न तु मैं हतौं लरति ही आज ॥ १६ ॥
श्री नानक गादी पर अहो। पूरब रीति जथा तिम रहो।
नई चालि तुम कीनसि कैसे। समता चहति शाहु की जैसे ॥ १७ ॥
तखत रच्यो अरु चमू बनावहु। जग 'साचे पतिशाह' कहावहु।
इह सभि त्यागि बाज लिहु संगि। मैं करि देऊ शाहु सों रंग[4] ॥ १८ ॥
जे स्याने तुमरे ढिग थिरवति[5]। तिनि को साथ लेहु करि मसलति[6]।
ज्यों आछी तुमको बनि आइ। कहि भेजहु तिम करहिं बनाइ' ॥ १९ ॥
सुनति दूत के बच मुसकाए। श्री हरिगोविंद चंद सुहाए।
'सुनहु दूत अबि बाक हमारे। मुगलसखान बतावहु सारे ॥ २० ॥
लाख रजत पन कीमति जांही। अस बाजी[7] आवति हम पाही।
मोलि खरच सिख मग महि ल्यावति। सुन्यो शाहु ने अस[8] अस आवति ॥ २१ ॥
छीनि लीनि सिख कहि बहु रह्यो। बल तें उर हंकारति गह्यो।
गुरु पीरनि को त्रास न कीनि। मन भावति करि तत छिनि लीनि ॥ २२ ॥
सो काज़ी ते हम पुन लयो। प्रथम ब्रितांत तोहि कहि दयो।
अब इह उडति जाति खग साथ। गह्यो जतन करि बाज़ सु हाथ ॥ २३ ॥
सो पलटा हमने निज लीनि। प्रथम बिगारि शाहु ने कीनि।
इस को पिता अदाइब राखति। उत्तम वसतु देति अभिलाखति ॥ २४ ॥
निम्यो रह्यो घर गुरू अगारी। डर खुदाइ का रिदे मझारी।
बनी रही तिह साथि हमारी। बित्यो काल चिर नहीं बिगारी ॥ २५ ॥

---

1. विनति करते है। 2. भेंट। 3. विस्तृत। 4. प्रेमपूर्वक समझौता। 5. ठहरे हैं। 6. परामर्श। 7. घोड़ा। 8. ऐसा अश्व।

इह खुदाइ को जानहि नांही। बडो राज को मद इस माही।
नहिं मिलापि हमरो बनि आवै। देहिं जि बाज़ न पलटा पावैं॥ २६॥
यांते हमरो जंग करारा। मारहिं तुरक, हरहिं हंकारा[1]।
पुरख अकाल प्रमेशुर जोइ। सभि अवनि को मालिक सोइ॥ २७॥
तिस के करे इसी महिं रहैं। भोगहिं खान पान सभि लहैं।
इह क्या जंतु मशक[2] सम तहां। कूरों हंकारहिं उर महां॥ २८॥
इह सम बीते कई करोर। गिन त्यो जिनके पाइ न ओर[3]।
श्री नानक दीनो इनि राज। जिस करि एतो वध्यो समाज॥ २९॥
गुरु घर सों जि अवग्या कै है। सने सने सभि छीनि सु लैहैं।
निजि सिक्खनि को सहत समाज। दैहैं सभि अवनी को राज॥ ३०॥
जिस जल ते पंकज निपजैहै। तिस बिहीन हुइ जर बर जैहै।
गुरु सेवा ते इनको प्रापति। सो नहिं रहै, परै इन आपति॥ ३१॥
करि कूरे इनि को सभि रीति। राज प्रताप जाइ सभि बीति।
छोरि बाज की बाति पलावहु। जाइ शाहु अपने समुझावहु॥ ३२॥
नातुर जानि लेहु बिच जीके। करि संग्राम हतौ सभि नीके।
जिम इह आगे मारे परे। जिस के ज़ोर शाहु मद भरे॥ ३३॥
तिम लाखहुं तुरकनि को हालि। मारौं करि कै जंग कराल।
काइरु होइ सु डरपहि भाखे। हम तौ सदा जुद्ध अभिलाखें॥ ३४॥
चिरके रहे प्रतीखति धामू। अबि इह मच्यो महां संग्रामू।
बहुत अनी को कहां बतावैं। काशट ब्रिंद बिलंद बनावैं॥ ३५॥
अगनि समान जानि लिहु मोही। लगे छिनिक भसमी सभि होही।
अजहुं समझ जाहु पलाए। नांहि त मरहु जुध महिं आए॥ ३६॥
लवपुर लगि काटति हम जैहैं। सनुख भए नहि बाचनि पैहैं।
कुपे बीर किम त्यागैं नाहीं। निशचै लखहु अपनि मन मांही॥ ३७॥
सुनि भो दूत! जाइ समझावहु। क्यों नाहक निज प्रान गवावहु।
कहहु शाहु सों पलटे[4] बाजि। गुरु ने गह्यो तुमारो बाज़॥ ३८॥
सने कोप गुरु के बच सुने। तूशनि दून भयो नहि भने।
नहीं जुद्ध ते गुरू मिटंता। इते मरे समझ्यो न कदंता॥ ३९॥
गमन्यो जिस थल मुगलसखान। सकल हकीकति कीनि बखान।
'बाज न देति गुरु नहिं डरैं। कितो आइ लशकर तौ लरै॥ ४०॥
बडो हौंसला जिन के जंग। मारन मरनि बीर रस संग।
ज्यों गुरु कही सु सकल सुनाई। 'दई शाहु को गुरु[5] वडिआई[6]॥ ४१॥

1. अहंकार 2. मच्छर 3. अंत 4. घोड़े के बदले में 5. गुरु नानक ने 6. बड़ाई

करहि आवग्या लैहैं छीन। हग बोलति बिनु त्रास प्रबीन।
मुगलसखान सुन्यो उर डरै। मेरे प्रान गुरू अबि हरै।। ४२।।
सैना के सरदार संघारे। सनमुख गए सरब गुरु मारे।
तीरनि की तरीफ[1] भट करते। छूटे एक अनेकें मरते।। ४३।।
सो मुझ को किम त्यागनि करै। दल सरदार जानि करि हरै।
बिना लरे ते जे हटि जावौ। शाहु संग क्या वाक अलावौं।। ४४।।
काइर लखहि, न दे बडिआई। बिनु मारे तबि भी मरि जाईं।
सभि लशकर गीदी मुझ जानहि। सकल बीर अपवाद बखानहि।। ४५।।
यांते होनी होइ सु होइ। लरिबे उचित मोहि कहु जोइ।
एव बिचारति घरी बिताई। पुन आइसु सभि साथ अलाई।। ४६।।
'चढहु तुरंग बिलम नहिं कीजहि। सभि धौंसनि चोबनि हनि दीजहि।
गइहु कि मारहुं गुर को जबै। अपनो जीवनि जानहुं तबै।। ४७।।
नाहि त इत ते जे बचि जाइ। शाहु जहां तिंह ठां परिवाइ।
इहां मरन द्वै लोक मझारी। जसु अरु भिसति पाइ सुख भारी।। ४८।।
लवपुरि जाइ मरनि दुखदानी। दोज़क मरनि निंद जग ठानी'।
इम कहि सभहिनि भा सवधान। शसत्र लगाइ मंगाइ किकान[2]।। ४९।।
देखि रह्यो सरदार न नेरे। जिस को आगै रण हित प्रेरे।
मरे सरब ही उर बिसमायो। गुर के समुख आप ही धायो।। ५०।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटम रासे 'दूत पठनं' प्रसंग बरननं नाम चतुरदशमो अंशु।। १४।।

1. प्रशंसा। 2. घोड़े।

अंशु १५

सुलतान बेग बद्ध प्रसंग

दोहरा

बहु धौंसनि धुंकार को सुनि सिख आए दौरि।
श्री हरिगोविंद सों कह्यो 'सुनहु गुरू सिरमौर ॥ १ ॥

चौपई

आगे दूरि हुते हम खरे। जबके कतल भए रिपु मरे।
तकराई[1] हित इक सौ ठाढे। पकरे शसत्र शत्रु हित गाढे ॥ २ ॥
जेतिक तुरक समूह भगैल[2]। अरु जेतिक राखे निज गैल।
सभि करि इकठे रिसि को ठानि। आप चढ्यो अबि मुगलसखान ॥ ३ ॥
गन निशान वाजति अबि आवैं। बादित अपर अनेक बजावैं।
फररे छुटे निशान अगारी। आवति दल जुति बंड हंकारी ॥ ४ ॥
सावधान हुजहि गुरु पूरे। इकठे करहु निकटि गन सूरे।
अबि कैं इक हल्ले के तुरका। बिजै डंक तबि वाजहि गुर का ॥ ५ ॥
लक्खा ढिग नगारची अहा। खास गुरू के जो नित रहा।
सैनापति अपरनि के जुदे। निज निज मिसलि रहति जद कदे ॥ ६ ॥
श्री हरिगोबिंद वाक उचारे। 'दुहरी चोबनि हनहु नगारे।
करहु सूर सज्जी[3] रिपु मारें। अबि के थिरहिं न, भाज पधारें ॥ ७ ॥
ऐसी करहु मलेछन मारि। इक भाजनि की रहहिं संभारि'।
बिधीचंद कर जोरि सुनायहु। 'इमि ही हुइ जिम आप अलायहु[4] ॥ ८ ॥
हुते सिरोमणि से हति होए। कुछक भगैल आनि फिर ढोए।
अहै प्रताप आपको भारे। मरे मलेछ कितिक बिन मारे ॥ ९ ॥
गिरे अचानक हयन भजावति। दरे गए सैना के धावति।
औचक हाथनि ते हथियार। गिर धरनी पर नहिंन संभार ॥ १० ॥

---

1 ज़ोर एवं पुष्टि। 2. भगोड़े, कायर। 3. सज्जा, हथियार बंद होकर तैयारी करना। 4. कहा, आलाप।

पैंदेखान पर्यो जबि फेरि। अनगन भटनि लथेर पथेर।
केतिक शसत्रन सो छित मेले। कितिक संगारे हाथ धकेले ॥ ११ ॥
प्रिथम तुफंगनि चलिबो कर्यो। खड़ग जंग महिं कछू न सर्यो।
तथा भई जे अबि की बारे। कुछ मरि हैं कुछ भाजहि हारे ॥ १२ ॥
इम बोलति ही लशकर आयो। मारि तुपक जेतिक नियरायो।
ज्वाला-बमणी[1] सभि मिलि छोरी। पहुंचि दूर लौ लागति गौरी ॥ १३ ॥

भुजंग प्रभात छंद

पिखै आपि मैं फेर बाजे नगारे। दुहूं ओर ते बीर बंके करारे।
पलीते धुखे ज्वालमाला[2] जगाई। उठ्यो नाद ऊचं नभं धूम जाई ॥ १४ ॥
करे तुंद ताजी भए शत्रु सौहैं। रिसे सूर सारे करी बंक भौंहैं।
धवावैं तुरंगं तुफंगं चलावैं। वधै जौन आगे तिसे ताकि घावैं ॥ १५ ॥
गिरे लागि गोरी संभारैं न फेरे। चले आइ नेरे महांकाल प्रेरे।
नची जोगणी हाथ धारे कपाला। भरै श्रोणि सों फेर पीवैं कराला ॥ १६ ॥
तबै भीम भैंरों फिर्यो मोद पाए। भखैं मास गोमाय[3] कंकै[4] अघाए।
महा काक बोलैं उडंते भ्रमाए। जिते मासहारी मिले ब्रिंद आए ॥ १७ ॥

पाधड़ी छंद

दल ढुके दोइ करि मारि मारि। बहु छुटी तुपक गोरी प्रहार।
गिर परे सूर फुट्टे सरीर। हय फिरैं छूछ जबि मरति बीर ॥ १८ ॥
दह दिशनि ब्रिंद गुलकां चलंति। जनु चेत मास ओरे परंति।
इति उति भ्रनाइ घोरे धवाइ। रिपु हनहि ताकि तुपकनि चलाइ ॥ १९ ॥
गुर हरिगुविंद गमने अगारि। दिढ चांप आपि कर लीनि धारि।
दस तरकश[5] सर[6] आगे चलाइ। पुन भरे फेरि नीके मंगाए ॥ २० ॥
खर[7] खपरे अंजुल के समान। सम सेल कितिक तुक्के महान।
अध चंद जथा तिसके अकार। सर पीन मुखे जिन अधिक मारि ॥ २१ ॥
खर कंटक से केतिक घराइ। तबि चल शूंक[8] जनु नाग जाइ।
जबि परे सैंन तुरकानि मांहि। चलि साफ शीघ्र सुभटनि लगाहिं ॥ २२ ॥
इक बेधि दुतिय कै लगति जाइ। तिह छेदि तीसरे करहि घाइ।
हय होहि कि भट, जिसके लगंति। नहिं बचहि फेरि तूरन गिरंति ॥ २३ ॥
तबि लगे गिरनि जोधा बिसाल। परखंति बानु छूटे कराल।
'इह गुरू हाथ के लगति आइ। हय भटनि अनैकनि बिधति जाइ' ॥ २४ ॥

---

1. बंदूक। 2. बंदूक। 3. गीदड़। 4. सफेद चील। 5. तुणीर, भाथ। 6. शर, तीर। 7. तेज्र। 8. फुंकार।

बहु बडे रु मोटे देखि देखि। जो जियति त्रास धरते विशेख।
'इस समें कौन साकहि चलाइ। बडि इनहुं उचित धनु जो कराइ॥ २५॥
को सकहि ऐंच बडि हुइ कठोर। जिस धरे जोर[1] बहु भटनि फोरि।
नहिं बचहि गजिंद्र जि लगति जाइ। हय नरनि कौन गिनती कराइ'॥ २६॥
तबि मुगलसखां कहु कहति जाइ। 'इह दिखिहु तीर गुरु गन चलाइ।
जे रहहु थिरे रण करनि आपि। तौ कितिक काल भट देहिं खापि॥ २७॥
इक तीर संगि दे बहुत घाइ। नहि समुहि[2] होति भट त्रास पाइ।
होनी सु होइ हल्ला करेहु। करि खड़ग जंग ते मारि देहु॥ २८॥
पकर्यो न जाइ गुरु बलि बिसाल। जिन कर्यो खेत संवर कराल'।
सुनि मुगलसखां उर त्रास धारि। गुरु ते न होइ प्राननि उधार॥ २९॥
जबि पिखहि समुख आवहिं सु धाइ। म्रितु हेतु कीनि औचक खुदाइ।
अबि बनहिं नांहि हटिबो पिछारि। मरि गए बीर लरिकै जुझार॥ ३०॥
जिन को भरोस यो जुद्ध माहिं। सो मरे बीर दिखियंति नांहि।
कुमलाइ बदन गीदी बिसाल। गन सुभट हकारि लीने सु नालि॥ ३१॥
तबि चल्यो अग्र बाजे निशान[3]। सभि दए छोरि फररे निशान[4]।
उतसाह सभिनि को दे पुकार। 'हति लेहु बीर निज कार सार॥ ३२॥
चलि शाहु निकटि जसु करहिं तुमारि। बखशिशि दिवाउं सभि को संभारि'।
सय्यद दिदारली कीनि बाम। सुलतान वेग इक मुगल नाम॥ ३३॥
तिह कर्यो दाहने सैन संगि। इह बचे बीर द्वै करत जंग।
सभि ओर मारि धूली मिलाइ। चलि अग्र जिते उर त्रास पाइ॥ ३४॥
हल्ला तिआरि कीनो निहार। इति गुरु आपने ले जुझार।
भट पैंदेंखान निज बाम कीनि। भट बिधीचंद दाएं सु लीनि॥ ३५॥
बर बिप्र मलक जाती कराल। सो पर्यो धाइ भट लीनि नालि।
दल मिले दोइ करि मारि मारि। उर क्रोध धारि चाले प्रहारि॥ ३६॥
इति उति धवाइ आपा बचाइ। करि त्यार तुपक तार्कहि चलाइ।
भट उथल पथल गिर गिर परंति। जिस लागहि घाइ नहिं सो बचंति॥ ३७॥
तबि पैंद खान कुपिओ बिलंद। गन हतहि बान सूरा निकंद[5]।
बहु गुरू तीर रण खेत मांहि। बरखंति अधिक दें टिकनि नांहि॥ ३८॥
जिति तुरक ब्रिंद तित शूक जाति। बड कंक-पंख जिनि करति घाति।
नहिं निफल एक होंवै खतंग। हति सुभट अंग कै लगि तुरंग॥ ३९॥

---

1. बल से धारन करे जिसको। 2. सामने। 3. नगारा। 4. झंडे। 5. नष्ट करते हैं।

गिर परति तुरति नहिं लगति बार। इति बिधीचंद बहु करति मारि।
सुलतान बेग के होइ तीर। धनु ऐंचि कान लगि हतसि तीर॥ ४० ॥
जिस के संजोग सिर टोप लोह। बचि गयो ताहिं ते करसि क्रोह।
बरछा उभारि तबि आइ धाइ। तकि बिधी चंद कौ लाइ घाइ॥ ४१ ॥
करि चपल तुरंग आगे चलाइ। लगि भुजा बीच भा तनक घाइ।
गुरु हाथ दोय राख्यो बचाइ। जबि चल्यो मुगल हटि पाछि धाइ॥ ४२ ॥
कहि बिधी चंद 'क्यों जाति कूर। इमि जंग रीति नहिं करति सूर'।
ललार खड़ग खैंच्यो चलाइ। तबि मुगल ढाल आडी अगाइ॥ ४३ ॥
नहिं लग्यो घाइ बडि जानि दाइ। तबि बिधीचंद बहु क्रोध पाइ।
चपि, गयो दूर, लिय चाप बान। करि ओज ऐचि कर लागि कान॥ ४४ ॥
बिनु कवच खोद ते ग्रीव होरि। तहिं ताकि तीर ह्वै कै दलेरि।
छुटि चल्यो धनुख ते मनहुं नागि। बडि बेग संग तिहि कंठ लागि॥ ४५ ॥
सुलतान बेग लागे खतंग। गिर पर्यो झूम तजि कै तुरंग।
दुइ दिशनि पिखति भट ब्रिंद्व ताहिं। तजि प्रान गयो तबि भिसत मांहि॥ ४६ ॥
सभ तुरक शोक अरु त्रास धारि। इति सिक्ख प्रमोदति भे निहार।
तजि जियनि आस भै भीति होइ। इम जुटी सैन करि बहुति ढोइ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटम रासे सुलतान बेग बद्ध प्रसंग बरननं नाम पंचदशमो अंशु॥ १५ ॥

अंशु १६

श्री हरिगोबिंद जंग जीत

दोहरा

मच्यो जंग दारुन महां तबि दिदारली आइ।
पैंदा खान[1] वंगारियो जनु निज काल बनाइ॥ १ ॥

पाधड़ी छंद

हय को धवाइ दोनहु बीर। लिय चांप आप खर संधि तीर।
कीने प्रहार हति उतहि धाइ। दहुं दिशनि सूर लगि अनिक घाइ॥ २ ॥
ढलकंति ढाल, चमकंत तेग। थरकंति छटा घन ज्यों सवेग।
लगियंति घाइ, गिरियंति वीर। धरियंति धीर, भजियंति भीर॥ ३ ॥
भभकंति घाइ ढरियंति श्रौण। दलियंति दीह, बुझियंति कौण।
घुमियंति हूर, वरियंति सूर। हरखंति हेरि, बरखंति नूर॥ ४ ॥
सय्यद ढिदारली तज खतंग। पिखि पैंदखान के हनति अंग।
पहिरे संजाइ, नहि लगति कोई। सहि डोब लोह महि देहि सोइ॥ ५ ॥
बहु करि उपाइ हथियार डारि। इति उति धवाइ करिहैं प्रहार।
तबि पैंदखान गन तजति बान। गर कवच तांहि नंहि चुभहि जानि॥ ६ ॥
इमि उर बिचार तकि कै तुरंग। हति तीर तांहि के भाल अंग।
बडि बेग सहत लाग्यो प्रहार। परविश्यो शीघ्र गा पिछलि पारि॥ ७ ॥
ततकाल गिर्यो सय्यद तुरंग। तबि पर्यो उतरि धरि वेग अंग।
सड़कंति[2] खड़ग गहि ढाल हाथि। तबि रह्यो बीर कहि खान साथि॥ ८ ॥
'हय हत्यो कहा किय ओज तोहि। तुझ हतनिहार, पिखि लेहु मोहि।
अबि तरै उतरि करि दोइ हाथ। तबि लखौं होहु बल अधिक साथि'॥ ९ ॥
सुनि सहि न सक्यो बच पैंदखानि। हम तज्यो आपि बनि सावधान।
होइ निकटि कह्यो 'क्यों मरन चाहि। मम नाम सुन्यो कै प्रथम नांहि॥ १० ॥
मम एक मुशटि को ले सहारि। पुन करौं खड़ग तेरे प्रहार'।
सुनि सय्यदि क्रुधति नेरि आइ। 'तुव प्रथम हाथ काटौं बनाइ'॥ ११ ॥

1. ललकारा। 2. सरकती।

इम कहति कर्‌यो तबि तेग़ वारि। धरि सिपरि पैंद खां लिय सहार।
पुन उछलि आपि करि मुशट जोरि। जहि करन मूल तहि हति कठोर ॥ १२ ॥
सहि सक्यो न सय्यद कंर खाइ। गिर पर्‌यो बायु जनु तरु गिराइ।
बिन शसत्र लगे होयसि बिनाश। सभि पिखहि तमाशा आस पास ॥ १३ ॥
पिखि 'साधु साधु' कहि खान साथ। बहु हसे गरीब निवाज नाथ।
ततकाल तुरंग परि चढि पिधाइ। पुन गुरू निकट भा ठांढि आइ ॥ १४ ॥
पिखि मुग़लसखां सरदार दोइ। इह बचे हुते लिय मारि सोइ।
अबि मोहि बिना नहिं आन और। गुरु समुख होइ जबि आइ दौर ॥ १५ ॥
उतसाह धारि घोरा फंदाइ। रण के मदान महिं आइ धाइ।
श्री हरिगोविंद के समुख होइ। 'बहु मरे भयो नहिं काज कोइ ॥ १६ ॥
अबि मोर तोर रण ह्वै कराल। अविलोक लोक हरखहि बिसाल।
कै मरौं आपि कै लेउ मारि। तबि होइ हारि कै जीति कार' ॥ १७ ॥

गुर सुन्यो सभिनि को दिय हटाइ। 'अबि खरे सिखहु रन केर दाइ।
उति तुरक हटे नहिं घाव घालि। इति सिक्ख मिटे गुर बाक नालि ॥ १८ ॥
तबि चले दुहूं ते भीम तीर। अर परे बीर दोनहुं सधीर।
सभि लखहि पटेबाज़ी सु खान। पिखि गुरू संगि कीनसि बखान ॥ १९ ॥
'मैं चहौं खड़ग को करनि जंग। तुम तीर तजहु बल अधिक संगि।
समता न चाप विद्या मझार। बडि मारति हो प्रिथमे निहारि ॥ २० ॥
सुनि धरम जुद्ध की रीति जानि। गुर परे उतरि तजिकै किकान।
शमशेर गही सन शेर हाथ। बहु गरुव[1] पुलादी वाढि[2] साथि ॥ २१ ॥
जहि लगति लोह को काटि जाइ। हय नरनि कटनि क्या कहि बनाइ।
सभि लिपति हेम सो चमक चारु। कर बाम साथि गहि महद ढार ॥ २२ ॥
उत मुगलसखां खैंची क्रिपान। गहि सिपर भयो जबि सावधान।
बहु लखहि दाइ इत उत बचाइ। रण रीति फिरति चहि करनि घाइ ॥ २३ ॥
हुइ बाम दाहने करति नेरि। गुरु समुख आइ चाहति सु भेरि।
श्री हरिगुबिंद तबि कहिसि ताहि। 'सुनि खान ! जितिक बिद्या सु पाहि ॥ २४ ॥
सभि करिहु दिखावनि आजि आप। विसवास जास के धरहि दाप[3]।
दल दुहुनि केर जोधा दिखंति। सभि जीति हारि आसा धरंति ॥ २५ ॥
अब प्रथम वारि करि लिहु प्रहार। अविलोकहिं बल कैतिक जुझार'।
सुनि धीर सहत गुरु के सु-बैन। तबि मुगलसखां करि समुख नैन ॥ २६ ॥

---

1. भारी। 2. धार। 3. घमण्ड।

चाहति प्रहार नहिं दाव पाइ। जे हतौं खड़ग तनु ले बचाइ।
करि अग्र ढालि आडो[1] करेहि। हुइ बिफल वार कुछ नहिं सरेहि ॥ २७ ॥
गुरु सावधान होए चुफेर। शमशेर[2] हाथ सम शेर हेरि।
तक रह्यो बहुत, नहि दाव पाइ। तबि पर्‌यो आनि असि[3] को उठाइ ॥ २८ ॥
ऊपर जनाइ तर को प्रहार। गुरु गए कूदि गा छूछ वार।
पुन खड़ग सीस की दिशि चलाइ। गुरु सिपर शीघ्र ही करि बचाइ ॥ २९ ॥
तिह रोकि ऊपरे हाथ लीनि। गहि खड़ग आपनो वारि कीनि।
भुज के तरे सु तहिं लगिय जाइ। बज सहत बह्यो इम विधि सफाइ[4] ॥ ३० ॥
सभि शसत्र बसत्र पहिरे जि अग। कटि गए सकल इक वार संगि।
गन पासरीनि[5] सभि काटि दीनि। जुग खंड होइ धर परनि कीनि ॥ ३१ ॥
सिर भुजा सहत भा एक खंड। जुग चरन जुकत दुतीओ प्रचंड।
इम बह्यो खड़ग सभि काटि डारि। साबूणहि ते जिम तार पारि ॥ ३२ ॥
रहि गई आंखि पसरी विसाल। कर बिखै खडग नांगो कराल।
तिह पर्‌यो देखि गुरु दल बिलंद। कहि 'बिजै सदा श्री हरिगोबिंद' ॥ ३३ ॥
पिखि खड़ग खान के बहिसि घाइ। बिसमादि भए सभि तुरक धाइ।
इक बारि ओरड़े[6] गन तुफंग[7]। सभिहिनि चलाइ बेगी[8] तुरंग ॥ ३४ ॥
इक बार तुपक को सभिनि कीनि। पुन खडग हाथ महिं ऐंचि लीनि।
सभि परे आनि ऊपरि जु वार। मिलि गए आपि महिं मारि मारि ॥ ३५ ॥
गुरु हुकम कीनि 'सुनि पैंदखान !। इक मल्लक जाति भट महान।
लिहु बिधीचंद को संग धारि। गुरु अंग संग सदही तुमारि ॥ ३६ ॥
सरदार रह्यो नहि शत्रु कोइ। गहि खड़ग करहु इक ते स दोइ।
जो अरहि तिनहुं करि प्रान हानि। भट भीरु भजाइ दीजै निदान ॥ ३७ ॥
अबि गयो होइ संग्राम अंति। नहिं टिकहिं तुरक भजिहैं मरंति'।
गुरु हुकमु पाइ करि पैंदखान। गहि खड़ग खैंचि बडि बाढि-वानि[9] ॥ ३८ ॥
बिच पर्‌यो जाइ तुरकनि बिसाल। जिम म्रिगनि बिखै केहरि कराल[10]।
बहु उथल पथल करि काटि डारि। नहि बचहि, लगहि जिसके प्रहार ॥ ३९ ॥
इति बिधीचंद दौर्‌यो रिसाइ। करि मारि मारि दीने गिराइ।
बर बीर मलक जाती स क्रोध। गहि खडग संघारे अनिक जोध ॥ ४० ॥
इत्यादि अपर गुरु सूर धाइ। जे परे दौर, सभि को भजाइ।
कटि गए ब्रिंद धर पर गिरंति। गन रुंड मुंड खंडति परंत ॥ ४१ ॥

---

1. आड़। 2. तलवार। 3. कृपाण। 4. सैफ, तलवार, सफ़ाजंग। 5. पसलियां। 6. ओले, गोलिया। 7. बंदूकें। 8. जल्दी। 9. धार दार। 10. भयंकर।

किह कटे हाथ, किह पैर अंग। को मरे तरे दबि हति तुरंग।
हटि गए कितिक सो त्रास धारि। सरदार हीन भाजे गवार ॥ ४२ ॥
गुर-सैन पिछारी जाति धाइ। तबि चले भीरु म्रिगहिं लजाइ।
नहिं पिखहिं पिछारी कटति जाति। करि जोरि कितिक, नहिं तांहि घात ॥ ४३ ॥
सभि शसत्र छीनि दीने भजाइ। इकि कोस तीक[1] तिन गैल[2] जाइ।
सभि खेत जंग ते काढि दीनि। हटि आइ गुरू ढिग फतहि लीनि ॥ ४४ ॥
तबि जीति शत्रु दुंदभि बजाइ। गुरु भे प्रसंन सिख हरख पाइ।
निज सुभट घाइ-जुति लिय उठाइ। जे निकटि ग्राम तहिं सो पुचाइ[3] ॥ ४५ ॥
सभि खान पान की सार लीनि। नर सेव करन पर छोरि दीन।
रण खेत फते गुरु एव पाइ। पुन भट संभरि कीनसि बनाइ ॥ ४६ ॥
गुरु हरिगुविंद मानिंद सिंह। जसु करति कवी संतोख सिंह।
रण थान भीम बहु श्रोण मास। जिस देखि भीरु उर पाइं त्रास ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे 'श्री हरिगोबिंद जंग जीत' प्रसंग बरननं नाम खड़समो अंशु ॥ १६ ॥

---

1. तक। 2. पीछे 3. घायल। 4. पहुंचाए।

अंशु १७
झबाल आवनि प्रसंग

दोहरा

भयो दुपहिरा लरति बहु राति जाम ते जंग ।
तीन पहिर महिं हनि दई सैना सहत तुरंग ॥ १ ॥

चौपई

बिचरे सतिगुरु रण थल हेरा । श्रोण मास ते भीम घनेरा ।
लोथहि पर लोथैं बहु परी । सहत हयनि बडि सैना मरी ॥ २ ॥
इति उति फिरि सभि देखति भए । बहुर लोहगड़ को गुर गए ।
तहां सिक्ख जे मरे निहारे । विधीचंद सों बाक उचारे ॥ ३ ॥
'हय दिहु बंधि लेहु नर संगि । मरे सिक्ख भट करि करि जंग ।
सभिहिनि की लिहु लोथ उठाई । इक थल करहु म्रितक समुदाई' ॥ ४ ॥
हुकम पाइ विधिए ततकाल । ले मानव गन अपने नालि[1] ।
जहि कहिं ते सिख अपने भाले[2] । मरे मिले गन तुरक बिसाले ॥ ५ ॥
जिस थल गुरु के महिल बिलंद । तहिं इकठी करि लोथैं ब्रिंद ।
हेत ब्याह को काशट पर्‍यो । सो सभि लै करि तिस थल धर्‍यो ॥ ६ ॥
आपि गुरू बैठे तिस थान । आनि आनि धरि म्रितक महान ।
मोहन सहत गुपाला दोइ । सिसकति परे, उठाए सोइ ॥ ७ ॥
सतिगुरु के ढिग लेकरि आए । उठि करि पिखे रिदे प्रिय भाए ।
पौंछति मुख गहि हाथ रुमाल । सादर बोले गुरू क्रिपाल ॥ ८ ॥
'भो मोहन सिक्ख ! सुनहु गुपाला । तुम प्यारे मोकहु सद काला ।
मन बांछति बर जाचनि कीजै । तुम ते कछु न अदेय जनीजै[3] ॥ ९ ॥
अति प्रसंन ह्वै करि हम भाखा । बिन शंका पुरहु अभिलाखा ।
जे जग महिं जीवन को चाहो । राज सहत लिहु अनंद उमाहो ॥ १० ॥
अपर पदारथ जे जग महीआ । भोगहु सकल लेहु हम पहीआ[4] ।
सुन मोहन कर जोरि उचारा । 'मिलि हम द्वै निति करति बिचारा । ११ ॥

1. साथ । 2. ढूंढ लिए । 3. जाना जाए । 4. हमारे पास ।

प्रान अंति जब होहिं हमारे। तबि सतिगुर निज निकटि निहारें।
इह नित हूती कामना हमैं। प्रापति भयो आनि सो समैं ॥ १२ ॥
तुम अंतर जामी सभि जाना। याते रण महिं हते न प्राना।
अबि दरशन तुम दियो क्रिपाल। इसते लाभ न अपर बिसाल ॥ १३ ॥
जोगी जती तपी ब्रह्मचारी। भगत गिआनी चहिं सुख भारी।
अंत समें दरशन को चाहति। इस हित घालहिं घालि उमाहति ॥ १४ ॥
नहिं जाचनि कुछ इच्छा नाथ। हलति पलति महिं राखहु साथ।
जहिं जहिं हुइ अवतार तुमारा। तहिं तहिं राखहु संग उदारा ॥ १५ ॥
कछू न जाचनि करिहैं कबिहूं। रहैं संग, दीजै बरु अबिहूं।
अपर जि मरे सुभट रण मांहू। अपने लोक राखि यहि पाहू' ॥ १६ ॥
श्री गुरु सुनति बिसाल प्रसंन। 'पर उपकारी मोहन धंन।
जिम तैं जाचनि कीनसि अबै। तिसी रीति होंवहिगी सबै ॥ १७ ॥
श्री हरि गोविंद अग्र निहारे। दोनहुं तबि परलोक पधारे।
धंन मरण तिन को जग भयो। अंत समैं प्रभु को दरसयो ॥ १८ ॥
सभिहिनि को इशनान करायो। बसत्र नवीन मंगाइ सु पायो।
एकहु चिखा बनाइ बिसाला। गुरु भाई गुर मुख सिख जाला ॥ १९ ॥
इंधन गन सो ऊपर डारा। आपि गुरू कर लांबू धारा।
गति समीप[1]' सभिहिनि को दई। जै जै धुनि सभि के मुख भई ॥ २० ॥
चंदन घ्रित सदन ते ल्याए। ब्रिंद चिखा पर सगरो पाए।
नभ ते गन बिमान तब आए। सादर गुरु के सिक्ख चढाए ॥ २१ ॥
पहुंचाए सतिगुरु के लोक। जहिं मद मान मोह नहिं शोक।
जरा मरण को लेश न जहां। पदवी अचल थिरे चलि तहां ॥ २२ ॥
सूर सरीरनि छारि करीहैं। बडि भट लरें सराह करीहै।
चढि सतिगुरु ले भट समुदाए। सुधा सरोवर आइ नहाए ॥ २३ ॥
तखत अकाल बंदना कीनि। बहुर दरशनी पौर प्रबीन।
हरि मंदिर के आगे खरे। वारंबार नमों बहु करे ॥ २४ ॥
विप्र, साध, सिख, दीन, घनेरे। मिले, दिये तिन दान वडेरे[2]।
चतर प्रदछना फिर करि दई। धरि गुरु ध्यान बंदना कई ॥ २५ ॥
निकसे बहिर आनि करि खरे। भाट कलावति जिनि जसु ररे।
धन दे तिनको हरख वधाए। जहिं कहिं जाइ तिनहु जसु गाए ॥ २६ ॥

---

1. सामीप्य। 2. बड़े-बड़े।

गुरु बजवाइसि फते नगारा। भए तुरंग पर पुन असवारा।
चले झबाल दिशा को तबे। मोदति रिदे, उलंघि मग सबै ॥ २७ ॥
सभि परवारु थिर्यो जिसि थान। उतरे जाइ गुरू भगवान।
तत छिनि सभि को आग्या दीनि। जितिक समिग्री ब्याहनि चीनि ॥ २८ ॥
तहिं के बनक बुलाइ सुनाए। लेनि लाभ हित सगरी ल्याए।
सरब प्रकार अंन गन आना। घ्रित समूह बहुत मिशटाना ॥ २९ ॥
लगे करनि सगरे पकवान। आने बहु रेशम के थान।
कई हज़ारनि को धन लीनि। आनि आनि गन बनकनि दीनि ॥ ३० ॥
जथा जोग सामिग्री त्यारि। तुरत कराई गुरू उदार।
सुनी जनेत[1] जबहि नियराई। पठे मसंद सिक्ख अगवाई ॥ ३१ ॥
सकल रीति करि ल्यावति भए। पटह वंसरी ढोल बजाए।
धन बरखावति आइ अगारी। दूलहु तन सुंदर दुति धारी ॥ ३२ ॥
करिकै बंश रीति जो सारी। सादर भाखि बरात[1] उतारी।
डेरा करि सगरे बिसरामे। सभि देखति दूलहु अभिरामे ॥ ३३ ॥
करहिं सराहनि सभि नर नारी। सभि सुशील गुन गन को धारी।
सुरज असत होनि ते आगे। भोजन पठ्यो, खान सो लागे ॥ ३४ ॥
संध्या समैं सुरनि तन धारे। गए बरात सेव को सारे।
गुरु संगी नट भ्रमति महाने। दुलभ समिग्री ल्यावनि जाने ॥ ३५ ॥
सभि समाज बिगर्यो रण भए। संचनि करे पदारथ गए।
इत्यादिक देवनि मन जानि। नर तन धरे आइ तिस थान ॥ ३६ ॥
केतिक मंच उचाव लिआए। गिलम[2] गलीचा फरश कराए।
बारे झार[3] प्रकाश बिसाला। को त्रिन[1] आनति भे ततकाला ॥ ३७ ॥
किनहूं दाना आनि ब्रतायहु[5]। घ्रित मिशटान, अंन को ल्यायहु।
पानि कराइ कितिक सरदाई। को कुमकुमा[6] देहि छिरकाई ॥ ३८ ॥
केतिक करति बीजना[7] खरे। सभि सेवा संभारनि करे।
नर जेतिक पर्यंक डसाए। सुंदर आसतरन[8] सों छाए ॥ ३९ ॥
रेशम डोरें बंधन करी। लगे गुंफ जिन के गन ज़री।
म्रिदुल सेज पर सभि बैठाए। अदभुत दिखति रहे बिसमाए ॥ ४० ॥
कलस भरे सुंदर जल आने। ग्रीखम रुति पीवन बहु ठाने।
मिली जिनहु महिं बडि खुशबोई। अजब समिग्री जानति सोई ॥ ४१ ॥

---

1. बारात। 2. गद्दा। 2. झाड़ फ़ानूस। 4. चारा। 5. बांटा। 6. गुलाबदानी। 7. पंखा। 8. बिछौने।

गुरु के पठे गए नर जवै। प्रथम सेव होई लखि सवै।
नीके बूझनि करे बराती। 'जो चहीयति सभि निकटि अगाती[1]' ॥ ४२ ॥
सगरी सुधि ले करि हटि आए। श्री हरिगोविंद संग बताए।
'गन बरात की सेवा सारी। पुरि के सिक्खनि करी संभारी ॥ ४३ ॥
जो जिह चह्यति सकल पुचाई[2]। पाइ फुलेल मसाल जगाई।
त्रिण आदिक दुगने सभि पासि। दीने सिक्खनि आनि अवास[3] ॥ ४४ ॥
सतिगुरु कह्यो 'कहां सिख इतनो। सेवहिं सभिहि बराती जितनो।
नीके तुम सभि की सुधि लीजै। चहहिं जु वसतु, पुचावनि कीजै ॥ ४५ ॥
पुन सिक्खनि कर जोरि बखाने। 'महांराज सभि पूछनि ठांने।
सरब वसतु ते सभि त्रिपताए। पुरि कै निकटि ग्राम सिख आए' ॥ ४६ ॥
पुनि अंतरजामी तबि जाने। आइ सुरनि सभि कारज ठाने।
उति ते हुइ निचिंत सुखदाई। त्यारी[4] फेरनि की करिवाई ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटम रासे 'झबाल आवनि' प्रसंग बरननं नाम सपतिदसमो अंशु ॥ १७ ॥

---

1. आगे को प्रस्तुत की जाती। 2. पहुंचाई। 3. आवास। 4. तैयारी।

अंशु १८

श्री गुरु-सुता ब्याह को प्रसंग

दोहरा

पंच घटी जामनि गई प्रोहत कह्यो सुनाइ।
'महाराज बिलम न करहु लावां देहु बुलाइ' ॥ १ ॥

चौपई

तूरनि तवहि हकारनि गयो। धरमे साथि कहिति इम भयो।
'ले करि दूलहु करहु अगारे। समां जानि गुरु तुमै हकारे' ॥ २ ॥
सुनति शीघ्र ही ह्वै करि त्यारी। बाजति बादित करे अगारी।
आतिशबाज़ी छोरति भए। जहिं सतिगुरु थिर तहिं चल गए ॥ ३ ॥
करि कुल रीति वेदिका अंदरि। बैठार्यो दूलहु बहु सुंदर।
गणपति नौ ग्रैह को पुजवाइ। अगनि करी अभिसेचन ल्याइ ॥ ४ ॥
दुरग तुरक को हुतो सु नेरे। बडी निसा बीती जिस बेरे।
चढ्यो पाहरू[1] ऊच अटारी। देख्यो बडो प्रकाश अगारी ॥ ५ ॥
झार मताबी जलती हेरे। सोचनि लाग्यो तुरक बडेरे।
इह ठां कौन कुलाहल करै। बडो प्रकाश, मसालैं जरैं ॥ ६ ॥
हिंदुनि को गुर उतर्यो आइ। सुनी शाहु की सैन भजाइ।
लशकर बडो जंग करि मारा। डेरा इहां आनि अबि डारा ॥ ७ ॥
कसि तुफंग इनि को अबि मारों। बिन जाने, मुख ते न पुकारों।
धरहि त्रास तबि आन पलावैं। हमरो भेव तवहि इह पावैं ॥ ८ ॥
प्रेर्यो काल तुफंग संभारी। शिसति[2] बांध करि जबि करि धारी।
जहां गुरू अर नरु समुदाइ। महां प्रकाश होति लखि पाइ ॥ ९ ॥
तहिं को ताक धुखायहु तोरा। करिकै मुख सतिगुरु की ओरा।
फटी तुपक, बड शबद उठायो। फूट्यो बदन तुरक तबि घायो ॥ १० ॥

---

1. पहरेदार। 2. निशाना।

तत छिन मर्यो, न हाइ उचारी। अपर न किनहू कीनि संभारी।
परियो रह्यो प्रभाति सु जान्यो। पायो फल कुकरम जस ठान्यों ॥ ११ ॥
सुन्यो शबद गुरु दल ने जबिहूं। शसत्र संभार लीनि भट सभिहूं।
हयनि तयार करनि अभिलखे। गुरु ढिग सिक्ख तिनहुं बच भाखे ॥ १२ ॥
'बैठे कहां, बनहु सवधान। लखीअति आई सैन महान'।
सुनि श्री हरिगोबिंद बतायो। 'थिरे रहहु नहिं को रिपु आयो ॥ १३ ॥
अंतर दुरग तुरक मरि रह्यो। फटी तुफंग न किनहुं लह्यो।
गीदी छपि औचकि लगि मारनि। भयो तिसी सिर गज़ब गुजारनि ॥ १४ ॥
ऐसो समों आइ तुम जानहु। दुरग ढहै हति तुरक महानहु'।
इम कहि लगे करनि सो काज। फेरे फेरनि केरि समाज ॥ १५ ॥
दिज आग्या ते कन्यां आनी। बेदी बिखै बिठावनि ठानी।
बैदिक लौकिक कीनसि रीति। लावां दई मुदति सभि चीति ॥ १६ ॥
सगरो काज संपूरनि भयो। उठि दूलहु निज डेरे गयो।
खान पान आदिक सुधि सारी। गुरदासनि सभि रीति सुधारी ॥ १७ ॥
गुर प्रताप ते त्रास बिहीने। सकल जथा सुख सुपतनि कीने।
भई प्रभाति दाज की त्यारी। कहि सतिगुरु करिवाइसि सारी ॥ १८ ॥
हेम बिभूखन मुकता हारि। जे दमोदरी रखे सुधारि।
दिए पटंबर अरु पशमंबर[1]। सुंदर अधिक ज़री के अंबर ॥ १९ ॥
बली तुरंग दाज महिं दीने। नीकी रीति बिसरजनि कीने।
धरमा, सुत, जुग जोरे हाथ। नमो करी पग पंकज नाथ ॥ २० ॥
दूलहु के सिर पर कर फेरा। शकति-वानि गुर कीनि बडेरा।
पुन दमोदरी पाइ न पर्यो। आशिख बाक बिलोकि उचर्यो ॥ २१ ॥
मरवाही सु नानकी साथ। मिलि करि पग पर टेक्यो माथ।
सभिनि दई आशिख मन भाई। अपर प्रवार मिल्यो सुख पाई ॥ २२ ॥
श्री गुर कहि अनवायहु डोरा। मुकता की झालर चहु ओरा।
चामीकर के नग बहु जरे। आनि गुरू के हाजर करे ॥ २३ ॥
मिलि दमोदरी तनुजा संग। बह्यो बिलोचन नीर उमंग।
सभि परवार मिल्यो करि प्यारि। आस्वासनि[2] जुति सीख उचारि ॥ २४ ॥
बहुर पिता ढिग बीरो गई। मिली रुदन ठानति बहु भई।
नर अनुहार सुता को हेरा। गुरू बिलोचन ते जल गेरा ॥ २५ ॥

1, पशमीने के कपड़े। 2. आश्वासन, दिलासा।

कहति प्यार डोरे बैठाई। लियो कहारनि कंध उठाई।
सभि बरात के नर तबि आए। श्री गुर पाइन सीस झुकाए॥ २६ ॥
सादर सरब बिसरजनि करे। गमने तबहिं मोद उर भरे।
डोरे पर बहु धन बरखायहु। धरमे महां अनंद उर पायहु॥ २७ ॥
इम करि व्याहु सुता को तबै। थिरे गुरू बैठे सिख सबै।
बिधीचंद इम बाक बखाना। 'भयो पुनीत महां इह थाना॥ २८ ॥
रच्यो व्याह कित भयो सु इहां। कौन लखहि तुमरी गति महां'।
सुनि गुर कह्यो 'समां जबि आइ। इहां थान हमरो बनि जाइ॥ २९ ॥
पूजहि सिक्ख संत सिर न्यावैं। मन बांछति फल ग्रिहसती पावैं।
जेशठ की छबीसवीं मांहि। दरसहि आइ, अधिक फल पांहि'॥ ३० ॥
संमत सोरह सहिस उनासी। सुता व्याह किय गुर अबिनासी।
सभि कारज करि इसी प्रकार। थिरे कुछक जुति निज परिवार॥ ३१ ॥
वसतु संभारि सरब तिस थान। निज निज कार भए सवधान।
सुभट सनद्ध-बद्ध थिर रहे। पुनह अरूढनि को चित चहे॥ ३२ ॥
स्यंदन डोरे सभि करि त्यार। सभि परिवार भए असुवार।
अपने ते आगे करि तोरे। तारन तरन सु तीरथ ओरे॥ ३३ ॥
पंचहु साहिब ज़ादे संगि। तीनहुं गुर महिला मन भंग।
सुख सों वसति आपने धाम। आए त्यागि समाज तमाम॥ ३४ ॥
थोरी बाति बाज़ की कहां। कीनि बिगारनि कारज महां।
को कहि साकहि तिनहु अगारी। तूरनि सफलहि गिरा उचारी॥ ३५ ॥
मोरनि[1] करे हेतु पकवानां। 'तुरक खाहिंगे' स्राप बखाना।
निज नुकसान न जाना नैक। सुता व्याह महि बिघन अनेक॥ ३६ ॥
स्यानी सास हुती इस काल। इन बातनि को लेति संभालि।
तऊ भई सुख, जंग मझारे। जियति बचे सनबंधी सारे॥ ३७ ॥
इत्यादिक बहु रिदे बिचारति। मिलति आपु महिं बैठि उचारति।
चिंत-पराइन सभि परवारू। सिमरति सदन अनंद[2] उदारू॥ ३८ ॥
बिघन अचानक आप उठायहु। 'बिगरहि कारज' नहिं मन आयहु।
सतिगुरु बहुर भए असवारा। बज्यो जीत को महिद नगारा॥ ३९ ॥
सभट सनद्ध बद्ध हुइ चरे। सनै सनै करि मारग परे।
हुतो निकटि ही तारन तरन। पहुंचे गुरू सु कारन करन॥ ४० ॥

---

1. वापस करना। 2. आनंद।

तीरथ की पूरब दिशि माहि। कर्यो सिवर पिखि शुभ थल जांहि।
सभि सूरनि की निसि बिसरामू। मज्जन कर्यो ताल अभिरामू ॥ ४१ ॥
बहु ग्रीखम की तपत मिटाई। तट पर बैठि सु गए गुसाईं।
श्री अरजन को तीरथ महां। महिमां सहत बिलोक्यो तहां ॥ ४२ ॥
कह्यो महातम सिख्यन साथ। 'सुनहुं जु मज्जहि, फल की गाथ।
रोग बडे आदिक को खोवै। पापनि मल बहु जनमनि धोवै ॥ ४३ ॥
त्रिया अपुत्रा मजहि दरस[1]। पाइ पुत्र को धारहि हरश।
अपर कामना धार नहावै। शरधा धरै सु फल ही पावै ॥ ४४ ॥
हुइ इस को परताप बडेरा। लागहि मेला दरस घनेरा।
बैठे ताहिं भा केतिक काल। भोजन त्यार शीघ्र के नालि ॥ ४५ ॥
आपि अच्यो अरु सभि को दयो। बिसरामे श्रम तन ते गयो।
ढरे दुपहिरे समां लखाई। कहि सतिगुरु त्यारी करिवाई ॥ ४६ ॥
"अबि नहिं घाम होइ है घनो[2]। मग महिं चलहु अनंद के सनो'।
बजवाइसि तबि कूच नगारा। गोइंदवाल चलनि निरधारा ॥ ४७ ॥
गुर अरजन के थल करि नमो। चढे तुरंग गुरू तिह समो।
आगे करि डोरे अरु स्यंदन। गमने मारग शत्रु निकंदन ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटम रासे 'श्री गुरु-सुता ब्याह को प्रसंग' बरननं अ्रशटदशमो अंशु ॥ १८ ॥

1. अमावस। 2. बहुत।

अंशु १९

शाहजहां रोस निवारण प्रसंग

दोहरा

इति श्री हरिगोविंद जी गमने गोइंदवाल।
उत लवपुरि की कुछ कथा सुनीयहि जस भा हाल ॥ १ ॥

चौपई

जेतिक बचे भगौल पलाए। किसू ग्राम बसि भोर सिधाए।
शाह जहां के पहुंचे पासि। पिख्यो जुद्ध जिनके बडि त्रास ॥ २ ॥
रण की सगरी सुधि पहुंचाई। जे सरदार पठे समुदाई।
मुग़लसखां समेत सभि मारे। नहीं बचे गुरु ते सभि हारे ॥ ३ ॥
शाह जहां सुनिकै बिसमान्यो। एते लशकर किस बिधि हान्यो।
रण को हेरति जे 'भजि आए। सुनिबे हित से निकटि बुलाए ॥ ४ ॥
जाइ सलाम शाहु सों कीनि। बूझनि हित बोल्यो लखि दीनि।
'भयो जंग किम सभिही मारे। कर्‌यो कपट कुछ नहिं संभारे ॥ ५ ॥
कै गुर ढिग लखकर भट भारे। हते अलप जिसते तुम हारे।
सुनि भगौल गन कह्यो बनाइ। कछु खुदाइ गति लखी न जाइ ॥ ६ ॥
हम ते दस गुन तिह दल थोरा। छल भी नही भयो तिस ठौरा।
हम छल सो निस महिं चलि गए। पुरि ते उरे ऊचि थल अए ॥ ७ ॥
तहां परी इक तोप निहारी। लकरा खुदयो ताहि भरि मारी।
बीसक भट तहिं लरे बडेरे। लशकर के नर हते घनेरे ॥ ८ ॥
लेनि तोप हित मुगलसखान। करि हेला पायो घमसान।
घेरि सबै क्रिपान सो मारे। देखि तोप सभि अचरज धारे ॥ ९ ॥
गुरु मंदिर महिं जाइ प्रवेशे। धन भूखन ले गए अशेशे।
जाम निसा जबि चंद चर्‌ह्यो है। गुर लै करि दल आनि लर्‌यो है ॥ १० ॥

भई तुफंगनि की बहु मार। गुर के तीर चले तिस बारि।
चतुरंगलि[1] चौरे बडि तीखन। खपरे खरे[2] पुलादी भीखन ॥ ११ ॥
तीनि कि चार पांच के पार। परैं, षतन के प्रान बिदारि।
अरु गुलकनि को गिरनो जोई। दल थोरो बरखा बडि होई ॥ १२ ॥
नभ ते ओरनि की सम परैं। लशकर सुभट हज़ारों मरैं।
इति की चलहि लगहि तिन थोरी। को जानैं जाती किस ओरी ॥ १३ ॥
अधिक लशकर तपकनि मारा। बहुर मिले निकसी करवारा।
मुगल खान[3] का गन शमशेर। टूटि परी कितने तिस बेरि ॥ १४ ॥
गुर के भट क्या लोक गवारा। नहि जानहि बिद्या हथिआर।
अनिक जाति के करि इक ठाइ। दल की करि लीनो समुदाइ ॥ १५ ॥
तबि खडगनि की मार मचाई। सैना कतल करी जिम भाई।
पर्यो अपूठो लोह हमारो। करे प्रहारन रिपु को मारो ॥ १६ ॥
गज़ब तमाचा[4] अजब गुज़ार। इस बिधि रावरि लशकर मारा।
मुगलस खान आनि गुरु हन्यो। भयो कोप हजरत जबि सुन्यो ॥ १७ ॥
इस बिधि जे गुरु करहि ढिठाई। सगरे देश फतूर उठाई।
बंधहिं कै मारहिं नहिं जावद। देश रु हम को शांति न तावद ॥ १८ ॥
गन उमराव समीप बुलाए। जिन महिं मुखि वज़ीर खां, आए।
जहाँगीर के निकटि रहंता। मानहिं हजरत, जथा कहंता ॥ १९ ॥
बोल्यो शाहु सभिनि के संग। 'सुन्यो होइ तुम गुरू प्रसंग।
महां शत्रु सम कीनी बात। सैनां पठी भई सभि घात ॥ २० ॥
अबि गमनहु उमराव घनेरे। तोप जमूरे लेहु बडेरे।
गहि आनहु कै करहु संघार। होइि तिदारक[5] करिबे रार ॥ २१ ॥
लियो बाज सो दियो न कोई। अर्यो लर्यो लशकर संग सोई'।
सभि उमरावनि कह्यो सुनाइ। 'ज्यो रावर की होइ रज़ाइ' ॥ २२ ॥
सुनति वज़ीर खान कर जोरे। 'तुमरे बाज़ नहीं कित थोरे।
अनिक वलाइत ते चलि आवैं। लिहु मंगाइ जेतिक मन भावैं ॥ २३ ॥
पिता आप के ढिग गुर गए। किंचु बेग, मैं ल्यावति भए।
चंदु दिवान उपाइ बिनाइ। दुरग ग्वालियर दिए पुचाइ ॥ २४ ॥
चाली दिवस बीतिगे जबिहूं। निस महिं शेर आइ द्वै तबिहूं।
हजरत की छाती धरि पाइ। उर करि सतिगुरु को चित ल्याइ ॥ २५ ॥

1. चार अंगुली परिमाण। 2. तेज। 3. पठाण। 4. फुर्ती से हल्ला। 5. रोक-थाम, उपाय।

दोनहु हाथनि गहे रुमाल। गुरू हटावैं बल के नाल[1]।
पुन अवाज़ को सनिहै ऐसे। गुरु हकारहु जैसे कैसे ।। २६ ।।
होति प्रात को मोहि वुलायो। निस प्रसंग को सरब सुनायो।
लेनि हेति जबि मोहि पठावा। दारुन शेर न फेर दिखावा ।। २७ ।।
तिनि के कहे बवंजा[2] राजे। छोरि दिए अपने सुख काजे।
निकटि बुलाइ अधिक सनमाने। जबर जवाहर अरपनि ठाने ।। २८ ।।
तिनके कहे चंदु गहिवायो। पिता बैर ते गुर मरिवायो।
करामात के धनी वडेरे। करै बाक, ते हर्ताहि घनेरे ।। २९ ।।
संग रखे अपने चिर काल। निज सैना दे करि संगि नाल[1]।
करति रह्यो सभि रीति अदाइब। विधि करि प्रेम, रहे संग साहिब ।। ३० ।।
सो तुम जानति हो सभि भांति। कहाँ सुनावौं मैं करि बाति।
रावर के सरीर की खैर। चहैं सदा न करहु गुन बैर ।। ३१ ।।
अज़मति[3] जुति श्री नानक गादी। करे सेव बनीयति अहिलादी।
बिगरनि ते पाइ न कल्यान। इह तो सारे बिदति जहान ।। ३२ ।।
मीआं मीर पीर गंभीर। मानहि तुरकानो लखि धीर।
तिनहुं अदाइब केतिक राखा। तुम पूछा, गुरु जस अति भाखा ।। ३३ ।।
गुर खुदाइ के रूप वताए। सकल पीर जिह निस-दिन ध्याए।
जे रिस करि श्री हरिगोबिंद। कहि कुवाक, बनि शत्रु मनिंद ।। ३४ ।।
पुन उपाइ नहि बनिहै कोई। मिटहै नहीं, सफल सो होई।
कुशल सरीर आप की चही। यांते मैं तुम सो इम कही ।। ३५ ।।
आगै मालिक आप बिचारो। अपनी भली बुरी निरधारो।
अरु मैं सुन्यो सु किनहुं उचारे। श्री अंम्रितसर छोरि सिधारे ।। ३६ ।।
चढि लशकर कित जाइ पिछारी। रौरा परहि मुलख महि भारी।
लरनि विखै अनगन हैं दोश। मम मति सुनहु त्याग दिहु रोस' ।। ३७ ।।
शाहजहां सुनि रिंदे बिचारी। उचरहि साच चले निरधारी।
तन की कुशल सरब ते नीके। दुख बिहीन हुइ चहिवति जीके ।। ३८ ।।
तज्यो क्रोध, कहि 'परहि न दुंद। सुख सों बासहि मुलख बिलंद।
कहां बाज़ की बात सु थोरी। जो गुर लरहि न, तौ हम[5] छोरी ।। ३९ ।।
सुनि कै किंन बेग तबि कह्यो। 'गुर सुभाव मैं नीके लह्यो।
देश नगर को कुछ नहि कहैं। अरहि सैन तौ रण हठि गहैं ।। ४० ।।

1. साथ। 2. बावन। 3. शोभायमान। 4. मुलक, देश। 5. छोड़ी।

नहीं फतूर मुलख मैं करै। सभि की रच्छ्या पर हित धरैं'।
कहै शाहु 'इहु आछी बाति। नहिं दल पठहि, होहिं नर घाति ॥ ४१ ॥
श्री अंम्रितसर बसे न सोई। गमने दूर, बिगार न कोई।
इम कहि उर ते बाति बिसारी। करी मकूफ[1] चढनि की त्यारी ॥ ४२ ॥
इस प्रकार लवपुरि महि शांती। होति भई सुनि कै सभि भांति।
अबि सतिगुर की कथा सुनीजै। जनम सफल श्रोता करि लीजै ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे शाहजहां रोस निवारण प्रसंग बरननं नाम एकोनविसंती अंशु ॥ १९ ॥

1. स्थगित।

अंशु २०

गोइंदवाल आगवन प्रसंग

दोहरा

श्री गुर हरिगोविंद जी उलंघे पंथ अशेख।
पहुंचे गोइंदवाल तवि चतुर घटी दिन शेख[1] ॥ १ ॥

चौपई

पुरि महिं सुधि होई ततकाला। 'मुगल मारि गुर सुभट बिसाला।
रण करि तुरक संबह संघारे। जियति बचे जे भाजि सिधारे ॥ २ ॥
इस थल, जुति कुटंब गुरु आए। जिनके संग सुभट समुदाए'।
तजि तजि निजि निजि काज सिधाए। कहि 'गुरदासहिं' दौरति आए ॥ ३ ॥
ले करि मेवागन पकवान। आइ मिले सतिगुरु भगवान।
धरि प्रसादि को बंदन कीनि। हाथ जोरि सिख भए अधीन ॥ ४ ॥
क्रिपा-द्रिशटि ते सरब निहारे। कुशल प्रशन सभि संग उचारे।
आस्वासनि[2] करि साथ लए हैं। प्रिथम बावली निकटि गए हैं ॥ ५ ॥
बंदन कीनि अगारी थिरे। डेरा सकल वहिर ही करे।
बैठि तहां गुरु सिख्य पठायो। सभि कुटंब को निकटि बुलायो ॥ ६ ॥
'पंचहुं साहिबज़ादे आनो। कहहु जाइ बापी[3] इशनानो।
धाइ सिक्ख डेरे महि आयहु। सभि सो सतिगुरु हुकम सुनायहु ॥ ७ ॥
सुनि सभि गए करनि इशनान। मरवाही दमोदरी जानि।
अपर नानकी तीनहुं आई। शरधा धरि, करि नमो, नहाई ॥ ८ ॥
श्री गुर दित्ता आदिक नंद। करे शनान बिलोकि अनंद।
श्री हरि गोविंद मज्जन कीना। बैठे संगति सहत प्रबीना ॥ ९ ॥
श्री गुरु अमर अंस मिलि आए। भांति भांति पकवान सु ल्याए।
जथाजोग मिलि सभि के साथ। कुशल प्रशन सुनि करि कहि नाथ ॥ १० ॥
पुन ततछिन उठि गुरू सिधारे। जहिं रहिं श्री गुर अमर चुबारे।
सनै सनै पुरि अंतर गए। दरशन जाइ करति तबि भए ॥ ११ ॥

---

1. शेष। 2. आश्वासन, तुष्टि। 3. वापी, बावली।

करि बंदन रज मसतक लाई। धर्‌यो ध्यान गुर बिनै अलाई।
हटे गुरू निवेस को आए। बैठे बडो दिवान लगाए॥ १२॥
सिख संगति सगरे चलि आइ। दरशन करि बैठे समुदाइ।
नंद मोहरी नाम 'अनंद'। तिह नंदन 'सुंदर' मतिवंद॥ १३॥
जिसने सद बनाइ बखाना। गुरू ग्रंथ महिं लिखिबो ठाना।
आगे धरि प्रसादि तिह समो। हरखति मिल्यो करति भा नमो॥ १४॥
आदर अधिक कर्‌यो तिस केरा। करि उर प्रेम दरस गुर हेरा।
बैठि निकटि केतिक चिर पाछे। हाथ जोरि बोल्यो बच आछे॥ १५॥
'पंचहुं पातिशाहु गुर पूरे। शांति ब्रिती जिन की नित रूरे।
तैसो सिक्खन को उपदेश। देति सदा अरु कटति कलेश॥ १६॥
रीति आपने अपर चलाई। धारे शसत्र अंग समुदाई।
कारज करे कलेशनि केरे। तुरकन सों संग्राम घनेरे॥ १७॥
हमने सुन्यो शाह दल भारो। करि संघर को सभिहूं मारो।
ब्याहु सौज आदिक घर सारा। लुट्‌यो तुरक गन कीनि उजारा॥ १८॥
रीति पाछली रावर त्यागी। शसत्र हयनि के भे अनुरागी'।
सुनि सुंदर ते हरिगोबिंद। बोले करुना करति बिलंद॥ १९॥
'करता पुरख अकाल क्रिपाल। करहिं सु हम तिन आग्या नालि।
जिम रजाइ तिमही बनि आवै। तुरकनि ब्रिंद बिनाशनि भावै॥ २०॥
भए निचिंत पाप को लागे। छिति पर भार, गई प्रभु आगे।
अबि हम सनै सनै सबि राज। करहि बिनाशन सकल समाज॥ २१॥
निज सिक्खन को सगरो दैहैं। चलहि कुचाल तुरक सभि छैहैं।
इस हित हमने आयुध धारे। प्रथम भयो रणरिपु-गन मारे'॥ २२॥
सुनि सुंदर पुनि बंदन कीनि। धर्‌यो हाथ सिर गुरु प्रबीन।
सति गुर बडे अमर जी होए। बहु सिक्खनि मन-मोह बिगोए[1]॥ २३॥
तिन सुत के पोते तुम अहो। बडे थान पहि शोभा लहो।
इतनै महिं सुंदर की माता। आई प्रेम धरे मन राता॥ २४॥
संग अहे सुंदर की दारा। त्रियगन अपर दरस हित धारा।
आइ वारनो गुर पर कीना। बैठि बंदि कर कह्यो प्रबीना॥ २५॥
'अंतर चलहू निकेत हमारे। सुख सो निसा बसहु हित धारे।
हमरे सदन आपने जानहु। बिन संसै बसिबो तुम ठानहु'॥ २६॥

1. विगुप्त किया, नष्ट किया।

गुरु कह्यो 'ऐसो ही अहै। तऊ सैन मेरे संग अहै।
सभि को तजि किम जावनि बनै। क्रिपा तुमारी नित सुख-सनै' ॥ २७ ॥
सुन बोली 'जे तुम थिर थीजैं। सभि कुटंब को आइसु दीजै।
साहिब-जादे पंचहु चलै। तीनि मात तिनकी सभि मिलैं ॥ २८ ॥
सुख सों बसहि निसा घर मही। बालिक अहैं वहिर रहिं नाहीं।
हेरि प्रेम को सतिगुर भाखा। 'ले करि जाहु जि असि अभिलाखा' ॥ २९ ॥
सुनि आइसु को ततछिन गई। गुर कुटंब को देखति भई।
जथा जोग मिलि कै सभि साथि। पुन भाखी आइसु गुर नाथ ॥ ३० ॥
ले सभि को निज संग सिधारी। इक दमोदरी गुर की नारी।
मरवाही सु नानकी तीनि। पुत्रनि-जुति अपने संग लीनि ॥ ३१ ॥
सुदर मंदिर बिखै उतारे। आसतरन परयंक सुधारे।
सादर सरब बिठावनि कीनि। दासी संग मंच तिन दीनि ॥ ३२ ॥
भोजन मधुर सहित करिवाए। करि सनमान सभिनि अचवाए।
त्रिपति होइ कीनसि बिसरामू। थिरे प्रयंकनि पर शुभ धामू ॥ ३३ ॥
बाति सुधासर बूझनि लागी। अपर ब्याह हित मन अनुरागी।
'कहा भयो जबि काज रचायो। हम को पूरब नही बुलायो ॥ ३४ ॥
अपर मेल भी कोइ न भयो। बहुरो बिघ्रन जुद्ध को भयो।
दिये अपर[1] थल आनि सुफेरे। सुनि हम सभि को चित घनेरे ॥ ३५ ॥
आगे सदन हकारति[2] रहे। अबि के ब्याह क्यों न हम चहे'।
सुनि दमोदरी दीरघ स्वास। कहनि लगी बिरथा[3] तिन पास ॥ ३६ ॥
'बडे पुरख किस के कुछ नांही। बरतहिं जिम भावति मन मांही।
लाभु रु तोटा सम ही जानै। नहिं परवार मोह को ठानैं ॥ ३७ ॥
पूरब सतिगुर जेतिक भए। ऐसी रीति बरति सभि गए।
सनबंधनि[4] को कह्यो न माने। निज सथान सेवक ही ठाने ॥ ३८ ॥
सिख्यनि हित पकवान मंगावा। नहिं मै दीनो, स्राप अलावा।
खाहि मलेछनि सैन अहारा। घर उजारहि कुछ नही बिचारा ॥ ३९ ॥
भूत भविख्य गति सभि जाने। जाने नही हकारनि ठाने।
परहिं ब्याह मैं बिघन बिसालहि। हुइ है इम कुटंब को हालहि ॥ ४० ॥
श्री नानक दे हाथ बचाए। कुशल सहत इक तन निकसाए।
मैं जबि कह्यो बुलावनि तुमै। तूशनि होइ रहे तिह समै ॥ ४१ ॥

---

1. अन्य। 2. बुलाते। 3. व्यथा, वृत्तांत। 4. सम्बंधी।

तुरकनि चमूं अरधि निस आई। सिख्य बिचारनि कीनि लराई।
त्रास बिसाल भयो तिस राति। हे अलि! कहा कहो सो बाति ॥ ४२ ॥
हमहि निकासि झंग्राल पुचाए। आप लरे हति रिपु समुदाए।
तीनो पहर तुपक तरवारि। दुहि दिशि ते भट मरे सु मारि ॥ ४३ ॥
कई हज़ार तुरक की सैना। संघारी सभि संघर ऐना।
ढरे दुपहिरे केतिक पाछे। हम सो आनि मिले जब बांछे ॥ ४४ ॥
तहां बरात मोरि[1] करि आनि। फेरे फेरि सुता तिस थानि।
चढे आज तहिं ते चलि आए'। सुनि सभि के मन तबि बिसमाए ॥ ४५ ॥
पुन अनंद की तरुनी कह्यो। 'भली भई तन सभि सुख रह्यो।
धन तौ आवनि जानो जानि। हुइ है फेर समाज महान' ॥ ४६ ॥
करति बात निस जाम बिताई। सुपति जथा सुख तबि समुदाई।
बहिर गुरू जिम खान रु पान। सो भी सुनहु कथा सुख मानि ॥ ४७ ॥

दोहरा

इक रण करते, ब्याह पुन, द्वै निस नींद न पाइ।
बिन संसै बिसारम करि सुपति भए समुदाइ ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटम रासे गोइंदवाल आगवन प्रसंग बरननं नाम बिंसती अंसु ॥ २० ॥

1. वापस फिर लाई गई।

अंशु २१

गोइंदवाल प्रसंग

दोहरा

श्री गुर अमर भतीज को 'सावणमल' जिस नाम।
नंद 'चंदमल' तांहि को सुनि कै गुरु सुधि धाम ॥ १ ॥

चौपई

ततछिन सतिगुर के ढिग आयो। धरि प्रसादि को सीस निवायो।
सादर निकटि बिठावनि कीनि। कुशल प्रशन कहि सुनि सुख लीनि ॥ २ ॥
सूपकार तिस छिन महिं आवा। 'असन त्यार सभि' बाक सुनावा।
'ले आवहु' तबि गुरू बखाना। गए दास, लै थार महाना ॥ ३ ॥
स्वादति असन परोसनि कर्यो। चौंकी ऊपर ल्याइ सु धर्यो।
दोइ थार कहि और अनाए[1]। सुंदर, 'ससिमल' अग्र धराए ॥ ४ ॥
अपर सभिनि को तबि बरतायो। लीनि जथा रुचि त्रिपते खायो।
ले जल हाथ पखारनि करे। अनिक बचनि करि उर मुद भरे ॥ ५ ॥
'चंद मल्ल' को गुरू सराह्यो। सुंदर सहत दरस बहु चाह्यो।
बडी निसा बीती, घर जावहु। करि बिसराम नींद सुख पावहु ॥ ६ ॥
हाथ जोरि तबि दोनहु कहैं। 'सकल जामनी तुम ढिग रहैं।
चिरंकालि ते मेल हमारा। रहि समीप सुख लहैं उदारा ॥ ७ ॥
दुरलभ सेव आप की पावनि[2]। निसि महिं करति रहहिं हुइं पावन[3]।
तबि सनमान दुहनि को दीनि। जुग प्रयंक मंगावनि कीनि ॥ ८ ॥
चंद मल, सुंदर पौढाए। सभि संगति सो गुर फुरमाए।
निज निज सदन जाइ सुख पावहु। भए प्रभाति बहुर सभि आवहु ॥ ९ ॥
मानि हुकम सभि गमने धामू। गुर जस उचरति किय बिसरामू।
बडे प्रयंक पौढि गुरु गए। द्वै सिख सेवा हित थित भए ॥ १० ॥

---

1. मंगवाए। 2. पाना। 3. पवित्र।

पौन करति इक बीजन साथ। दुतीओ चरन पलोटति हाथ।
चांपी करति प्रेम ते सोई। श्री गुर निंद्रा के बसि होई॥ ११ ॥
हुते उनींदे द्वै निसि केरे। सुंदर चंद मल्ल तबि हेरे।
करै परसपर जंग प्रसंग। 'श्रमत अहैं तुरकनि गन भग॥ १२ ॥
कर्यो महाबल कई हज़ार। तीनि जाम महिं कीनि संघार।
कै तौ गुर थे शांति सरूप। शसत्र धरे किय रीति अनूप॥ १३ ॥
जिस प्रकार धारे हथिआर। तैसे करे तुरक संघार।
जथा डील बड बलके साथि। तथा रिपुनि दिखराए हाथि॥ १४ ॥
सफल कर्यो बल शसत्र धरनि को। सभि ते अधिक कर्यो रण गन को।
संग सुभट सिख से बड-भागे। जे इनकी सेवा महुं लागे॥ १५ ॥
मरे जंग से सुरग सिधाए। जिन्प्रति साथ हैं सेव कमाए।
इन दोनहु सिक्खनि दिशि देखो। करति सेव को प्रेम विशेखो॥ १६ ॥
चंद मल्ल सुनीयहि हित ठानि। सेव समान नहीं कुछ आन।
परम पदारथ सेवा अहै। सेवा करे सकल फल लहै॥ १७ ॥
सरब गुरनि सेवा को चीन। निज पद ऊचो सेवक दीनि।
हम ते नहि अबि सेव करावैं। जिस सेवा ते सभि कुछ पावैं'॥ १८ ॥
इम चरचा आपस महिं कहे। गुरू सरूप बिलोकति रहे।
रही जामनी जाम सवा जबि। श्री हरिगोबिंद नींद तजी तबि॥ १९ ॥
प्रथम सौच करि मज्जन भए। बानी कंठ पाठ को कए।
इतने बिखै रबाबी आए। आसावार राग जुति गाए॥ २० ॥
फरश बिसाल दिवस लगायो। शबद राग जनु अमी बखायो।
जबहि अकाश प्रकाशहि धर्यो। आसवार भोग तबि पर्यो॥ २१ ॥
गुर जुति सभिहूं सीस निवायो। उदेयो तरनि[1] तबि तिमर नसायो।
श्री हरिगोबिंद हुकम उचारा। 'करहु कूच को अबहि नगारा'॥ २२ ॥
सुनि ततछिन ही बंब[2] बजाई। भए सनद्ध सूर समुदाइ।
आपि बापिका दिशि को चले। सेवक ले तुरंग को मिले॥ २३ ॥
नहीं अरूढं दीनानाथ। गए चरन सो दोनहुं साथि।
इक कर सो सुंदर कर गह्यो। चंदमल्ल संग बाकनि कह्यो॥ २४ ॥
साहिबज़ादे पंचहु आए। संग पिता के चलति सुहाए।
संगति जुति तहिं कर्यो शनान। दीन दिजनि को दीनसि दान॥ २५ ॥

1. सूर्य। 2. नगारा।

श्री गुरदित्ते पित सो कह्यो। 'बापी महिमा मो चित चह्यो।
करहु सुनावनि जैसी अहै'। सुतसो श्री हरिगोविंद कहैं ॥ २६ ॥
'त्रितिय गुरू इह सिरजन करी। हमरे बडे सेव बहु धरी।
जो पूरनमाशी इह मज्जै। जनम जनम के कलमल भज्जै ॥ २७ ॥
मन-बांछत फल प्रापति होइ। श्री गुरु अमर सिमरि उर सोइ।
चौरासी कीनी सौपान[1]। पठहि चुरासी जपु करि न्हानि ॥ २८ ॥
नहीं चुरासी पावहि जीव। प्रापति गुरु की पुरी सदीव।
इम कहि पुन दोनहु संग कह्यो। गुरु सथान जहिं जहिं तुम लह्यो ॥ २९ ॥
तहिं तहिं चलि करि दरस करावहु। जिम जिम भए प्रसंग सुनावहु।
बड जामा गुरु के गर पर्यो। खड़ग बिसाल गातरे[2] धर्यो ॥ ३० ॥
कंचन जवर जवाहर जरे। घरि निखंग कटि कसिबो करे।
भीखन तीखन तीरनि भरे। धनुख कठोर बडे कर धरे ॥ ३१ ॥
चले तहां ते बंदन कीनि। गरी तंग पुरि की जहिं चीनि।
गुरू बात करते तहिं चाले। सुनि आवति धरि हरख बिसाले ॥ ३२ ॥
नर नारी निज काज बिसारे। धरि तजि तजि ठांढे सभ द्वारे।
करहि बिलोकनि हुइ करि नेरे। सुंदर डील बली जु बडेरे ॥ ३३ ॥
सुंदर चंदमल्ल रस राते। जित चलिबो तित प्रेरति जाते।
वीथनि महि घर घर दिशि दोऊ। दरसति नमो करति सभि कोऊ ॥ ३४ ॥
भीरी गली कितिक तहिं आई। गुरु जामो दुहु दिसि लगि जाई।
जिनि को डील सरीर बडेरा। पुन जामा बहु पालनि[3] केरा ॥ ३५ ॥
भीरी बहुत बीथिका सोई। यांते दूहु दिशि लागति जोई।
तबि सुंदर ने बाक बखाना। 'इह गुरु राम दास उदपाना[4]' ॥ ३६ ॥
तहिं चरनाम्रित ले करि चाले। देखि चुबारे पुंन बिसाले।
एक किलक तहिं कंध मझारा। गडवायहु श्री अमर उदारा ॥ ३७ ॥
निस दिन खरे रहति तप करते। थकति होति तबि तांहि पकरिते।
सौ ते अधिक बरख बय तन की। देहि जरजरी भूत सु जिनि की ॥ ३८ ॥
तऊ प्रीति जिन की तप मांही। रिस प्रसंनता निशफल नांही।
नमो करी दरशन को हेरति। पुन सुंदर ससिमल कहि प्रेरति ॥ ३९ ॥
'श्री गुरु रामदास गुरिआई। इस थल बैठि दई सुखदाई।
तहिं दरशन करि अधिक अनंदे। सो थल जोरि हाथ बहु बंदे ॥ ४० ॥
पुन सुंदर ने भन्यो सुनायो। 'जहां जनम तुमरे पित पायो।
तिस थल को अबि दरशन करीअहि। इह पुरि अपनो प्रथम बिचरीयही ॥ ४१ ॥

---

1. सीढ़ी। 2. गले की मियान। 3. पल्लू वाला। 4. बावड़ी।

राइ बेल चंबेली केरि। ल्यायो माली फूल घनेर।
हुइ प्रसंन बखश्यो बहु दरबा। ले सभि थलि पर अरपे सरबा ॥ ४२ ॥
पिता जनम को सु-थल निहारा। बंदन कीनि प्रेम को धारा।
गन फूलनि के भर करि अंजुल। अरपनि करे बिसद बर मंजुल ॥ ४३ ॥
फूलनि माल लई जु चढाई। चंदमल्ल गुरु गर पहिराई।
तिस ते बधी अधिक ही शोभा। पिखि करि किसिको नहि मन लोभा ॥ ४४ ।
पुन मोहन के गए चुबारे। सुंदर बंदन करंति उचारे।
'श्री अरजन जी इस थल आए। लैबे गुरबानी समुदाए[1]' ॥ ४५ ॥
'मोहन तेरे उचे मंदर'। गौरी छंद उचार्यो सुंदर।
श्री हरिगोविंद तबि मुसकाए। कथा बडनि की सुन हरखाए ॥ ४६ ॥
'सुंदर, धनं सदा तुम अहो। कथा गुरनि की सगरी लहो।
अपर सथान माननिय जोइ। करिवावहु दरशन अबि सोइ' ॥ ४७ ॥
सुंदर बंदति हाथ बखाना। 'तीन देहुरे वहिर सथाना।
तिन को भी दरशन करि लीजै। जात्रा सफल बडिनि की कीजै ॥ ४८ ॥
सुनि सतिगुरु बैठे इक थाइं। त्यारी हित कुटंब्र समुदाइ।
थिरे सरब ही बहु नर साथि। त्रिपतहिं नहिं, दरसहिं गुरुनाथ ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे गोइंदवाल प्रसंग बरननं नाम एक-बिंसती अंशु ॥ २१ ॥

1, संकलन।

अंशु २२

श्री करतारपुर आगवन

दोहरा

सुंदर की माता तबै भल्यनि बंस बधनि ।
गई सभिनि को संग ले बैठि बंदि कर दूनि ।। १ ।।

चौपई

सुंदर चंद भल्ल के संमति । कह्यो सभिनि ही सिर करि नंम्रिति ।
'क्रिपा करहु राखहु निज डेरा । कीजहि गोइंदवाल बसेरा ।। २ ।।
इस थल तुमरे रहे पितामा । बहुत बरख लगि कीने धामा ।
बहुर आप के पित जबि आवैं । मास दु मास सु बास बितावैं ।। ३ ।।
तिमही तुम भी मेलि रखीजै । सुख सो बास आपनो कीजैं ।
सुनि सभिहिंनि ते गुरू क्रिपाल । बोले देति अनंद बिसाल ।। ४ ।।
'हमरी तो इस थल बुनियादि[1] । बडे भए गुर अमर प्रसादि ।
क्रिपा कटाख इहां ते पाइ । कीटी ते गजराज बनाइ ।। ५ ।।
जिसके बडे भाग जग होइं । बसि पुरि तुम को सेवहि सोइ ।
श्री गुर अमर बंस की सेवा । करनि चहौं चित मैं नित एवा ।। ६ ।।
गुरू हुते सभि शांति सरूप । जिन के अचरज चलित अनूप ।
मोहि संगि भा तुरकनि द्वैख । यांते सैना संग विशेख ।। ७ ।।
रहनि बनें नहिं, रह्यो बिचारो । सुभट रु संगति संग हज़ारों' ।
सुनि गुरु ते पुन इनहुं उचारा । 'जथा जोग है बाक तुमारा ।। ८ ।।
तऊ आप को जो परिवारा । तिनि को रहनि उचित निरधारा ।
क्रिपा धार इस थान रखीजै । जहिं बहु बसहु बुलावनि कीजैं ।। ९ ।।
देखि प्रेम सभि को तिस काला । रखनि कुटंब सु मानि क्रिपाला ।
केतिक दासी दास समेत । कह्यो 'सभिहि रहिं तुमहिं निकेत ।। १० ।।
इह मसलति कहि सभिहिनि साथ । चले वहिर[2] पुरि ते गुरु नाथ ।
सुंदर चंद मल्ल हरखाए । कहति सुनति बच संगि सिधाए ।। ११ ।।

---

1. नींव । 2. बाहर ।

तीन देहुरे तीर बिपासा। पग सो गए गुरू तिन पासा।
पिता मात भानी असथान। कीनि बंदना धरि मन ध्यान॥ १२॥
पुन गुरु अमर थान करि नमो। लेकरि नाम सिमरि तिह समों।
श्री गुरु रामदास थल बंदे[1]। खरे होइ पुन पिखति मुकंदे॥ १३॥
पत्र परे तरु खग बिठ[2] केरे। बढनी[3] भी नहिं किनहूं फेरे।
कह्यो कि 'सिक्ख साध इह थान। क्यों नहि कर्यो बिठावनि आनि॥ १४॥
यांते समैं पाइ करि एहि। नदी बिपासा निज बिच लेहि'।
अस कहि लयो मंगाइ तुरंगा। भए अरूढनि शोभति अंगा॥ १५॥
पिखि सुंदर सुंदर सुखकंद। चंदमल्ल मुख चंद अनंद।
दुंद बंदि कर पद-अरबिंद। बंदति भे श्री हरिगोबिंद॥ १६॥
बिछर न सकहिं प्रेम चित गाढे। भने गुरू नहिं होवति ठांढे।
कहि कर तरनी निकटि हकारी। चढ तुरत होवनि हित पारी॥ १७॥
दोनहुं संग सु नौका चढे। हटहि पार ते आनंद बढे।
श्री गुरदित्ता संग सुहाइ। तरी अपर पर भट समुदाइ॥ १८॥
प्रेरी सरिता महि बर तरनी। पिखि निरमल जल महिमा बरनी।
यच्छ कच्छ जल जंतु बिसाला। तीर अलंक्रित सारस जाला॥ १९॥
तरे तुरत तरनी पर तीर। उतरे श्री हरिगोबिंद धीर।
सुंदर चंद मल्य के साथ। बहु बिधि भाउ धारि करि नाथ॥ २०॥
करे हटावनि नमो करंते। पुरि को आए गुन बरनंते।
उत सतिगुरु दे दरब मलाहू। प्रसथाने मारग के मांहू॥ २१॥
उत कौलां जबि गुरू पठाई। तबि ते ब्याधि देहि उपजाई।
दिन प्रति बाधे भई बिमारी। गुर को प्रेम रिदे नित भारी॥ २२॥
सिमरत दिन महिं भोजन त्यागा। निसा नींद नहि मन अनुरागा।
परी रहै छादन मुख करै। दीरघ स्वास ब्रिहा ते भरे॥ २३॥
गुर मूरति महिं मन लय लीन। रिदे बिसूरति बहु दुख भीन।
पर्यो जंग भा बिघन बिसाला। दरशन को तरफंति बिहाला॥ २४॥
क्रिपा धारि कबि देहिं दिखाई। बिछुरन ते प्रान न छुटि जाई।
भयो रोग तन बधति बिलंदा। बहुर ब्रिहा श्री हरिगोविंदा॥ २५॥
सूखम-अंगी भई लचारी[4]। 'देहु दरस प्रभु मरिबे वारी।
घट घट के तुम अंतरजामी। जानहु मोहि रिदे की स्वामी॥ २६॥

---

1. वंदना की। 2. बीठ। 3. झाड़ू। 4. लाचारी, विवशता।

क्यों न देति दरशन प्रभु आइ। अंत समां मम जान्यो जाइ।
लाखों दास कामना पावैं। शरधा धरहिं गुरू गुन गावैं ॥ २७ ॥
मोहि भरोसा रावर केरा। बनहु सहाइ अंत की बेरा।
मुझ जीवति को दरस दिखावहु। अधिक त्रिखति को सुधा पिआवहु ॥ २८ ॥
गन तुरकनि रण दीरघ होई। लखि न जाए, सुधि पठी न कोई।
प्रिय दासन के प्रेमी प्यारे। आवहु दिहु दरशन इस बारे' ॥ २९ ॥
इत्यादिक सिमरति दिन रैन। निस दिन चल्यो जाति जल नैन।
इम कौलां की गति गुरु जानि। समां समीप तजनि का प्रान ॥ ३० ॥
दरशन देउं जीवती जाइ। मोहि प्रेम ते अति अकुलाइ।
हय को प्रेरति तूरन[1] चाले। पैंदखान आदि भट नाले[2] ॥ ३१ ॥
बिधीआ जाती मलक सु बीर। रणि बातनि करत चलि धीर।
जिम जिम हते मुगल अरु खान। जितिक सुभट अपने तजि प्रान ॥ ३२ ॥
चार घटी दिन जबि रहि गइऊ। पुरि करतार द्रिशटि तबि अइऊ।
अंतर भए प्रवेश गुसाई। वंदति देखि देखि समुदाई ॥ ३३ ॥
पहुंचे प्रथमे थंम्ह असथान। उतरे हय ते गुर भगवान।
बंदन करि बैठे हरखाए। सुनि सोढी नर गन जुति आए ॥ ३४ ॥
धरि धरि करि परसादि अगारी। आइ सभिनि पद बंदन धारी।
कुशल प्रशन अखिलनि सो कीनि। जथाजोग आदर को दीन ॥ ३५ ॥
इक घटिका लगि आवति रहे। सादर माधुर बाकनि कहे।
जहिं कौलां उर दुखी बिचारी। सिमरति निस दिन प्रीती धारी ॥ ३६ ॥
तहां प्रवेश तुरत ही होए। कौलां कौल-नेत्र करि जोए।
उदति उठनि को, उठ्यो न जाई। बोल्यो चहि. न बोल मुख आई ॥ ३७ ॥
दुरबल तन झुर[3] झंझर होवा। पीरो रंग बदन को जोवा।
ततछिन ढिग ह्वै गुरू हटाई। बैठे तिस ढिग धीर बंधाई ॥ ३८ ॥
कितिक देरि महिं हाथ निकारे। चरन कमल परसति हित धारे।
बही बिलोचन ते जल-धारा। धारा धीरज बाक उचारा ॥ ३९ ॥
'सभ जानति मम चित की जेती। कहा कहों मैं तुमरे सेती।
जानि दीन की दशा क्रिपाला। आए दरस दीनसि इस काला ॥ ४० ॥
कौन प्रभु तुम बिन है मेरा। सुख दुख बिखै अलंब बडेरा।
सिमरति निस दिन नाम तुमारा। व्याकुल ब्रिह ने कीनि उदारा ॥ ४१ ॥

---

1. तुरंत। 2. साथ। 3. झुर्रियों से जर जर।

अबि मैं निकटि निहारों मरना। दीनि दरस, कीनसि ब्रिहु हरना।
अबि नहिं चित करों इस काला। पुरी कामना आनि क्रिपाला' ॥ ४२ ॥
सुनि श्री हरिगोविंद बखाना। 'समां मरन को तुव नियराना।
सिमरन कर्यो बहुत ही मेरा। आनि मिल्यो तोको बिन देरा ॥ ४३ ॥
तोहि प्रेम ने टिकनि न दए। यांते सकल काज तजि अए।
चार घटी जबि दिन रहि काली। तबि तन तुव प्राननि ते खाली ॥ ४४ ॥
तबि लगि सिमरहु श्री करतारा। भव सागर ते भयो उधारा।
प्रथम जनम की तू बडि भागनि। हमरे बिखै भई अनुरागनि ॥ ४५ ॥
बहुर न होइ जगत महि फेरा। भयो उधार दुखन ते तेरा।
कछु नहिं चित धरहु उर महीआ। धन जनम उत्तम पद लहीआ' ॥ ४६ ॥
दोइ घटी लगि बैठे रहे। इत्यादिक सुनि अरु बहु कहे।
धीरज दीनि चरन छुटकावति। नहिं छोरति पुन पुन उर लावति ॥ ४७ ॥
हे सतिगुर तुमरे पग प्यारे। नहि त्यागनि चित चहति हमारे।
बारि बारि मुख पर को फेरति। त्रिपत न होति रूप गुरु हेरति ॥ ४८ ॥
आस्वासनि दीरघ तबि कीनो। अंत समां जबि मेरो चीनो।
सनमुख मम बैठहु तबि आइ। तुम देखति ही प्रान सिधाइ ॥ ४९ ॥
इह बिनती मेरी सुनि लीजै। तुम क्रिपाल बड करुना कीजै।
सुनि गुर कह्यो 'आइ तुव पास। रहु आनंद महि, चित बिनासि' ॥ ५० ॥
कहि करि इम श्री हरिगोविंद। निकसे वहिर जहां नर ब्रिंद।
बैठि सभिनि महिं दरशनं दीनि। पर उपकारी बीर प्रबीन ॥ ५१ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे 'श्री करतार पुर आगवन' प्रसंग बरननं नाम द्वै बिसति अंशु ॥ २२ ॥

अंशु २३

केहरि हतन, कौला प्रति उपदेश

दोहरा

थमं अगारी बैठि करि सतिगुर लाइ दिवानं।
आइ रबाबी ढिग थिरे कर्यो शबद को गान ॥ १ ॥

चौपई

ज्यों ज्यों पुरि महिं गुर सुधि होई। त्यों त्यों चल्यो आइ सभि कोई।
अरपि अकोरनि सीस निवावैं। दरशन करहिं मोद उपजावैं ॥ २ ॥
क्रिपा द्रिशटि ते देखन करैं। सभि की मनो-कामना पुरैं।
संध्या सोदर लगि तहि थिरे। भोग पाइ बंदन को करे ॥ ३ ॥
उठि सतिगुरु डेरे महिं आए। रुचि अनुसार असन कउ खाए।
म्रिदुल सेज पर थिरे गुसाईं। सुपति जथा सुख राति बिताई ॥ ४ ॥
रही जाम जामनि दुइ घरी। उठि करि सौच सरब ही करी।
श्री अरजन इक कूप बनायो। शंकर-गंग तिह नाम बताओ ॥ ५ ॥
हित इशनान गए तिस थान। ले करि संग दास बुधिवान।
बंदन करि मज्जन तहिं कीनि। बैठे धरिकै ध्यान प्रबीन ॥ ६ ॥
निज सरूप को चितवन करिते। वहुर गुरू बानी को ररते।
आदि सुखमनी ऊचे सुरते। करति पाठ को प्रीती उरते ॥ ७ ॥
'सिख्यनि केरि उधारन कारन। परहि रीति' इम करहिं उचारन।
तहिं बैठे प्राती हुइ गई। दसहूं दिशि प्रकाश जुति भई ॥ ८ ॥
आइ रबाबी चौंकी कीनि। गाइ बिलावल राग प्रबीन।
कितिक देर लौ लग्यो दिवान[1]। पर्यो सबद को भोग सुजान ॥ ९ ॥
आइ लांगरी थिर्यो अगारे। 'महांराज ! है त्यार अहारे'।
कह्यो 'आन'[2] सो ततछिन खान। इतने महिं इक सिख चलि आयो ॥ १० ॥
सुनीअहि गरू गरीब-निवाज। संत धेनु रच्छ्या तुम काज।
इस थल ते केहरि इक नेरे[3]। मारति है नित जीव घनेरे ॥ ११ ॥

1. दीवान, दरबार। 2. ले आओ। 3. निकट।

महिखी[1] गऊ समूह निकेत। गयो प्रात मैं चारन हेत।
गो-धन बिखै आनि सो पर्यो। मार कितिक को घाइल कर्यो ॥ १२ ॥
मैं तकि शरन आपकी आयो। निर्भै करहु दिहु त्रास मिटायो।
नांहि त बन महिं घास घनेरे। अवि डरि जाइ नहीं को नेरे' ॥ १३ ॥
सुनि सतिगुर तिह धीरज दीनो। दास संग ऐसे बच कीनो।
'तूरन आनि तुरग हमारा'। सुनति हुकम को ज़ीन सुधारा ॥ १४ ॥
पैंदा बिधीआ आदि जि सूर। त्यारि तुरत लखि चढे हज़ूर।
हय को हेरि जु होयहु त्यार[2]। सतिगुर भए तुरत असवार ॥ १५ ॥
संग सुभट इक सौ चढि चाले। आगे करि सिख गमने नाले।
जहि देख्यो सो थान दिखावा। जाइ प्रवेशे बन के थावा ॥ १६ ॥
कानन गाढो बहुत बिलोका। जहां गमन हय को मग रोका।
तिह सिख ने सो थान बतायो। केहरि तहां नदर नहि आयो ॥ १७ ॥
गुरु लागे तहिं करनि अखेरे। सूकर ससे म्रिगानि घनेरे।
सभि सो कह्यो 'खोजीयहि शेर। इति उति फिरि करि लीजहि हेरि ॥ १८ ॥
आमिख खाइ तिपति हुइ पर्यो। नहिं गमन्यो कित उदर जि भर्यो।
सुपति होइ किस झारी मझार। करहु तुफंगनि को कड़कार' ॥ १९ ॥
इति उति ते गन तुपक चलाई। जाग्यो शेर लीनि अंगुराई।
महां केहरी भीखन[3] भारा। बडी बेल[4] लांगुल बड धारा ॥ २० ॥
मुख पसार करि तबि जंभायो। गरज्यो भूर सभिनि सुनि पायो।
बिखम सथान झार के तरे। तहां बिलोक्यो भट सुधि करे ॥ २१ ॥
सुनि गुरु बली तहां चलि गए। केहरि भीखन देखति भए।
बिखम थान सो खर्यो निहार्यो। हय ते उतरनि रिदै बिचार्यो ॥ २२ ॥
नहीं तुफंग संग इस मारैं। खडग सिपर गहि समुख संघारैं।
नहीं तुरंग चलावनि थान। कंटक जुति तरु खरे महान ॥ २३ ॥
दीरघ दाड़ै दारुन तुंड। पग के नख तीखे सु प्रचंड।
भीखन सटा[5] उठाए टौर[6]। देति त्रास जनु भख्यति दौर ॥ २४ ॥
बडे पखारि[7] गात पर परे। मानहुं गिर[8] पर अहि समसरे।
श्रोणित रंगी आंख मनो हैं। उदर बिसद जिह म्रिदुल घनो है ॥ २५ ।
गुरू उतरि आगै हुइ खरै। सिपर, बाम कर दिढि तबि धरे।
ललकार्यो गीदी 'क्यों खर्यो। कहि इम पाइ रोपिबो कर्यो ॥ २६ ॥

---

1. भैंस। 2 तैयार। 3. भीषण। 4. पीठ। 5. गर्दन के बाल। 6. पूंछ। 7. धारियाँ। 8. गिरि।

सुनति निकटि पिखि वडि भभकार्‌यो। खरे जुभट हय गन डर धार्‌यो।
भाजे आपि आपि को गए। मूत्र, पु रीखि[1] तजत सो भए ।। २७ ।।
एकहि बार फांध करि आयो। तुंड प्रचंड पसारति धायो।
दूरि दूरि थिर पिखहि तमाशा। केचित बाजि होति हैं पासा ।। २८ ।।
निज बल अखिल करे, मुख बाए। चरन सनख जुग उरध[2] उठाए।
ऊपरि पर्‌यो आनि करि ऐसे। तरै दबाइ उठाहि नहिं जैसे ।। २९ ।।
सिर ऊपरि जबि आत्रनि लागा। आड सिपर को, रोकसि आगा।
रह्यो ओज करि. अग्र न आवा। ढाल झंझोरनि बदन चलावा ।। ३० ।।
तिह छिन गुरु शमशेर निकासी। तीखन भीखन चलि चपला सी।
रुपयो पाइ दिढ थंभ समाना। नहीं थान ते चले सु जाना ।। ३१ ।।
कोप गुरू के मुख पर छायो। भ्रिकुटी नचति लाल हुइ आयो।
फरकति अधर अरुन द्रिग भए। सिपर धकेला पूरब दए ।। ३२ ।।
जुग पग मुख ढाले पर तीनि। हटि पीछे तन ऊचे कीनि।
दाहन कर को बल करि सारा। खडग पुलादी गुरू प्रहारा ।। ३३ ।।
कट[3] ते कटि करि दो धर पर्‌यो। कराचोल धरनी महि बर्‌यो[4]।
गेरि शेर शमशेर निकारी। रिसते बहु बल संग प्रहारी ।। ३४ ।।
पिखि सिक्खनि मन मानि अचंभ। कट्‌यो, ब्रिटप जिम काटिय रंभा[5]।
गुरु कर ते मरि सुरग सिधारा। हय पर आप भए असुवारा ।। ३५ ।।
अपर अखेर हेरि बन करे। सिमरति कौलां लखि करि मुरे।
मन महिं जिसके इक लिव लागी। वडभागन अतिशं[6] अनुरागी ।। ३६ ।।
प्रेरति हय हेरति बन आए। पुरि मझार प्रविशे सहिसाए।
कौलां के मंदर को गए। उतरति अंतर को गमनए ।। ३७ ।।
दिवस जाम बाकी जबि रह्यो। तबि कौलां गुर दरशन लह्यो।
बदन पीत जुग पलक मिलाए। गुरमूरति उर ध्यान बसाए ।। ३८ ।।
मन लयलीन गुरू महिं होया। निकटि खरे कहु नांहिन जोया।
दासी म्रिदुल उचारति बोली। पकरि हलाइ समाधी डोली ।। ३९ ।।
खुल्हे बिलोचन दोनहुं ऐसे। कमल पांखरी बिकसति जैसे।
प्रीतम खरे समीप निहारे। बार बार होवति बलिहारे ।। ४० ।।
नीठ नीठ उठि करि पद गहे। हटी न किम हटाए गुर रहे।
निकटि बैठि करि धीरज दीनि। आतुर हेरी प्रिया प्रबीन ।। ४१ ।।

---

1. लीद। 2. ऊपर। 3. कटि, कमर। 4. धरती में प्रविष्टहुआ। 5. केला।
6. अतिशय।

तोहि अनंद देनि के हेतु। चलि आए हम, होहु सुचेत।
चतुरघटी जीवन तुव रह्यो। प्रान निदान समों[1] अबि लह्यो ॥ ४२ ॥
देहि अंत लौ बैठहिं तीर। नहिं उठ जाहिं किते धरि धीर।
देहनि को सनेह बिधि राचा। नहिं इह थिरहि, जानि कच पाचा ॥ ४३ ॥
द्रिशटमान इह सकल बिनाशी। लखहु रूप आपनि अबिनाशी।
जनमहि मरहि न, जो नित नयो। जिह सत्ता करि जग द्रिशटयो। ४४ ॥
जो मिथ्या को देखि लुभावै। अंतकाल बिछुरे दुख पावै।
सच को लगै सु बिछुरे नांही। जिसको आवन जानि न काही ॥ ४५ ॥
इसत्री पुरख कलीव[2] न होई। सति चेतन अनंदमय जोई।
निज सरूप जिन दीनि बिसारी। दुखद सदा तन-हंताधारी[3] ॥ ४६ ॥
से नर जनम मरन को धारैं। सहहिं सीस यम दंड करारै।
यांते निज सरूप ब्रिति जोरि। मिथ्या तन हंता अबि छोरि ॥ ४७ ॥
तन-हंता के कारज सारे। राग द्वैख आदिक जे धारे।
जबि तनहंता बिनसहि नीके। रहै न को, हुइ श्रेय सु जी के ॥ ४८ ॥
जथा मूल को देहिं उखारे। सूकहि तरु दल फूल सु डारे।
तिम तन हंता संग बिकारा। बिनसति बिनसहि एको बारा ॥ ४९ ॥
इम कहि क्रिपा द्रिशटि गुर हेरी। दूर करी तनहंता वेरी[4]।
उर महिं ब्रिति टिकी सुख पावा। ततछिन निज सरूप दरसावा ॥ ५० ॥
गुरू क्रिपा ते भा ब्रह्मग्यान। लेश न राग द्वेश मद मान।
लगी बिचारन जग क्या भयो। मन ते कलप ब्रह्म महि लयो ॥ ५१ ॥
जथा रजू महिं अहि को जानि। डरपति भाजति कंपा ठानि।
तथा भ्रांति ने लोक भरमाए। अनहोव्रति कलप्यो दुख पाए ॥ ५२ ॥
इत्यादिक उर भयो बिचार। ठहिर गई ब्रिति ब्रह्म मझार।
लगी समाधि ग्यानियनिवारी। सकल अविद्या दूर बिदारी ॥ ५३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे केहरि हतन, कौलां प्रति उपदेश प्रसंग बरननं नाम त्रै बिसति अंशु ॥ २३ ॥

---

1. समय। 2. क्लीव, नपुंसक। 3. शरीर का अहंकार करने वाला। 4. वेड़ी बंधन।

अंशु २४

कौलां परलोक, पैंदा ब्याह

दोहरा

जिम मद उतरे होति सुधि तिम अग्यान निवारि ।
जान्यो अपनि सरूप को अद्‌भुत रिदै निहारि ॥ १ ॥

चौपई

इक घटिका लगि बाक सुनाए । सतिगुर ग्यान दियो भ्रम जाए ।
मुद्रित नैन सरूप बिचार्‌यो । द्वै घटिका लगि आनंद धार्‌यो ॥ २ ॥
पुन प्रीतम को हेरनि लागी । 'धंन धंन गुरु मैं बडिभागी ।
जिस पद हेत जती ब्रह्मचारी । जोगी आदि कशट बहु धारी ॥ ३ ॥
सो मोकहु छिन महि दरसायहु । हौमे दीरघ रोग मिटायहु ।
धंन धंन सतिगुरु गति न्यारी । नमो नमो भव भंजनहारी ॥ ४ ॥
गूड़ गुपत ततकाल जनायहु । कोट जनम को कशट मिटायहु ।
हे सतिगुर मैं भई सनाथा । इम कहि धर्‌यो चरन पर माथा ॥ ५ ॥
श्री हरिगोबिंद पुनहु बखाना । 'तव तन अंत समा नियराना ।
होहु कुशासन पर थिर अबै । मनहि टिकाउ छोर दिशि सबै ॥ ६ ॥
ततछिन दासी कुशा डसाई । बिकुलावति उठाइ करि पाई ।
आंख उघारति हेरति गुरु को । बसनहार जो निस दिन उर को ॥ ७ ॥
बोलनि शकति रही पुन नाहि । चखन पलक गुरदरशनि माहीं ।
हेरति हेरति निकसे प्राना । भई धंन पद पाइ महाना ॥ ८ ॥
म्रितक भई गुर दास हकारे । तिस को दासी साथ उचारे ।
'म्रितक क्रिआ कीजहि अबि सारी । ले गमनहु शुभ बाग मझारी' ॥ ९ ॥
कहे गुरू के मिलि नर नारी । करी नुहावनि निरमल बारि[1] ।
बहुत मोल को पाइ दुशाला । गाइ रबाबी शबद बिशाला ॥ १० ॥
ले करि गमने उपबन माही । इम कौलां गय सगरी प्राही[2] ।
सतिगुर बैठे लाइ दिवान । आवति भए लोक सभि जानि ॥ ११ ॥

---

1. पानी । 2. कही ।

शोक ठानि बैठहिं गुर तीर। आयो पैंदेखान बरबीर।
'हाइ! मात' कहि ऊच पुकार। दे धीरज सतिगुर निरवारा ॥ १२ ॥
सभिही सुभट, सिक्ख नर पुरिके। गमने बैठि बैठि ढिग गुरके।
संध्या भई गए गुरू डेरे। निज निज थान सकल चलि हेरे ॥ १३ ॥
सुपति जथा सुख राति बिताई। जागे प्रभू भोर हुइ आई।
इस बिधि केतिक दिवस बताए। गुरु सुधि सुनि करि इत को आए ॥ १४ ॥
चाकर रहनि सुभट चलि आवैं। देखि उचित रण गुरू टिकावैं।
भयो शाहु के संग बखेरा। लर करि लशकर हत्यो घनेरा ॥ १५ ॥
भयो बिदत जसु जहि कहिं सारे। 'अरहि आज को शाहु अगारे।
बिना मवास[1] गिरन के थान। अटकहि कौन प्रान दे हान ॥ १६ ॥
लवपुरि सुधा सरोवर नेरे। तहिं रहि कियी महिद भट भेरे।
रण महि हेरि हेरि उमरावनि। जे सरदार करे सभि घावनि ॥ १७ ॥
जिन को बल पिखि ठटक्यो शाहू। बहुर न कीनि लरनि उतसाहू।
इस बिधि को जोधा इस काला। नहिं महि-मंडल महिं बल वाला ॥ १८ ॥
सकल देश पतिशाहु महाना। तिसको त्रास नैंक नहि माना।
हति लशकर को धूर मिलायो। त्रिभै बास द्राबे अबि आयो' ॥ १९ ॥
इम जहि कहिं प्रगटाइ प्रसंग। सुजमु करहिं जोधा बल अंग।
आइ सुभट रण के उतसाही। चाकर होइ रहति गुर पाही ॥ २० ॥
शसत्रनि की बिद्या नित होवै। करहि परसपर वधि घटि जोवै।
चलहि तुफंग कि तोमर[2] गहैं। तुरंग धवाइ दिखावति अहैं ॥ २१ ॥
बसहि पठान ग्राम जे नेरे। हथ्यारनि को गहति घनेरे।
सो सभि सुनहि 'गुरू के पासि। पैंदेखान बीर बल रासि' ॥ २२ ॥
मिलनि हेत बहुते चलि आवैं। बैठहिं रण की बात चलावें।
'कौन कौन गुर को भट अर्यो। मार गज़ब की लशकर मर्यो' ॥ २३ ॥
तिन मैं पैंदेखान बखानै। 'इक तो गुरू महांबल ठानें।
मै तबि कीनसि निमक हलाल। कर्यो जंग को तबहि कराल ॥ २४ ॥
किनहूं न लीनसि आगा मोहि। मारे ब्रिंद शत्रु करि क्रोह।
मो बिन फते न होति लराई। गन जो धानि कौन इम घाई ॥ २५ ॥
जिस के इक इक खड्ग प्रहारा। सहत तुरंग जुदा करि डारा।
किस को दीनि धकेला मार्यो। को हय पग गहि उलटा डार्यो ॥ २६ ॥

1. विद्रोही, रक्षा स्थान। 2. भाला।

को तीरसि के साथ परोए। भागे रिपु नहि सनमुख जोए।
जौ मैं गुर के निकट न होति। किम संघर की बिजै उदोति ॥ २७ ॥
मुझ को जानि बडो बलवान। राखहि निकट अधिक सनमान।
फते मोहि भुज दंडनि बसै। कौन सकहि सहि देखति नसै' ॥ २८ ॥
इत्यादिक बोलति जहिं कहां। बढ्यो गरब पैंदे उर महां।
सतिगुर जान्यो 'भा मति हीना। जरहि बडाई नहि, मन-पीना ॥ २९ ॥
नहि गंभीर धीर मनमानी। हुइ फल बुरो परहि अस जानी।
नाम मीर छोटा इक ग्राम। जहां पठाननि के गन धाम ॥ ३० ॥
तहि ते आई तबहि सगाई। करिवाई गुर आइसु पाई।
सतिगुर दरब दीनि बहुतेरा। कर्यो निकाह तबहि बिनु देरा ॥ ३१ ॥
दारा संग मिल्यो सुख पाए। बसहि निसा तिस ग्रामहि जाए।
इक दिन गुर सो कहि कर जोरि। 'घर न बन्यो मेरो किस ठोर ॥ ३२ ॥
भयो व्याह अर चहियति सोइ। बिना निकेत नही सुख होइ।
श्री हरिगोविंद साच पछाना। सुनि पुन दीनसि दरब महाना ॥ ३३ ॥
सदन मीर छोटे बनिवाए। सुंदर मंदर कहि चिनवाए।
पुन बीवी के हेत बिभूखन। करिवाए गत दीनि अद्खून[2] ॥ ३४ ॥
ग्रेहि समिग्री दई बनाइ। पैंदे खान पाइ हरखाइ।
रहनि लग्यो बीवी के साथ। बहु सुख लहैं क्रिपा गुरु नाथ ॥ ३५ ॥
कह्यो प्रभू 'अबि सदन बसीजै। कबि कबि इति दिश आवन कीजै।
जबि हम चाहैं लेहिं बुलाइ। नांहि त रहु ग्रिह अनंद उपाइ' ॥ ३६ ॥
मानि बाक तैसे तबि करै। बहु दिन रहै आपने घरै।
इम पैंदा होयहु हंकारी। सतिगुर तिसकी लें सुधिसारी ॥ ३७ ॥
किसू वसतु की कमी न कोई। वसतु अमोलक दै गुरु सोई।
निकटि ग्राम पुरि जेतिक अहैं। गुरु आवनि की सुधि को लहैं ॥ ३८ ॥
लेले बहु वसतुनि उपहारे। आवहिं जिति कित ते दिन सारे।
अरपनि करि करि वसतुनि ब्रिंद। बंदति सुंदर पद अरबिंद ॥ ३९ ॥
करहि मेवरो ढिग अरदास। पूरहिं सिक्खन की सभि आस।
दरशन करैं निसा ढिग रहैं। गमनहिं घर गन खुशीयनि लहैं ॥ ४० ॥
सगरे दिन सतिगुरु के तीर। आइं जाइ सिख होवति भीर।
केतिक जोधा चाकर रहैं। जे हथ्यारनि बिद्या लहैं ॥ ४१ ॥

---

1. बढ़ गया। 2. निर्दोष एवं पवित्र गुरु।

कितिक तुरंग सिक्ख अरपंते। केतिक लेते मोल खरचंते।
कितिक धनुख ले दरब दिवावैं। केतिक तरकश ढिग बनिवावैं॥ ४२॥
खर ततारचे[1] लोहा खरे। पुरि करतार धरावनि करे।
खपरे सेले आदि बनावैं। भांति अनेकनि कौन गिनावैं॥ ४३॥
गुलकां गालब[2] महिं ढलवाइ। करि करि त्यार रखाहिं समुदाइ।
बहुत बरूद अनवानि करै। आछी रीति संभारति धरैं॥ ४४॥
नमसकारनी[3] बिकवे आवैं। लेति मोल को दरब दिवावैं।
बीरनि को बखशति परखंते। हतहिं निशानो नहीं चुकंते॥ ४५॥
दिन प्रति शसत्रनि को अभिआस। होति अधिक सतिगुरू बिलास।
मारि बकारा सिख करेंहैं। 'हतहु तुरक लवपुरी लुटैं हैं॥ ४६॥
लेहु मलेछनि ते अबि राज। महां दुशट इन वध्यो समाज।
करहु गुरू! आइसु अबि ऐसे। परहिं जंग, हति शत्रू जैसे॥ ४७॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे कौलां परलोक, पैंदा व्याह प्रसंग नाम चतुर बिसतो अंशु॥ २४॥

1. तातार देश के तीर। 2. सांचा। 3. बंदूक।

अंशु २५
ख़ान प्रसंग

दोहरा

सतिगुर करहि अखेर नित चढहि सुभट समुदाइ ।
हथ्यारनि विद्या करहि जीव अनिक बन घाइ ॥ १ ॥

चौपई

दुशट जीव बन के बहु मारे । गो महिखनि को त्रास निवारे ।
न्रिभै होइ नर त्रिणन चुगावै । जाहिं प्राति बन, संध्या ल्यावै ॥ २ ॥
चोर जार को त्रास उपंना[1] । पुरि नर उचरहिं 'गुर धंन धना' ।
सतिगुर भा गुर राज मझारा । तजो खुटाई नर डर धारा ॥ ३ ॥
सकल देश द्वावे महि कीरति । पुरि ग्रामनि महिं भी बिसतीरति ।
सुभट ब्रिंद सतिगुर ढिग गए । शसत्रनि विद्या महिं निपुनए ॥ ४ ॥
इक दिन श्री सतिगुर भगवान । ले निज संग सु पैंदे खान ।
उपबन महिं गमने गुन-खानी । देखति शोभा ब्रिछनि महानी ॥ ५ ॥
मनहु नील[2] घटि इह उपडाई । कै नीली मणि गिर[3] समदाई ।
अरण बरण के फूल बिसाला । कतहूं पीति बिसद की माला ॥ ६ ॥
अनिक रंग की धातु मनो है । नीलो परबत इनहि सनो है ।
शेर समान धसे गुरु जाई । परी रैन जनु नैन दिसाई[5] ॥ ७ ॥
उडगनि पुशप प्रकाशति जहां । सतिगुरु चंद प्रकाशे तहां ।
मंद मंद, बिचरति हित सैल । दक्खण दिश आए जित सल ॥ ८ ॥
गन मोरनि को शोर सुनीजै । पुशपनि सोभा अधिक जनीजै ।
निंबू नारंगी रस भरे । जामनु गन रसाल तरु खरे ॥ ९ ॥
आरू, आमरूद, कनि[6] लीनि । लागे दल फल झुकिबो कीनि ।
दारम[7], राइबेल, चंबेली । खिली सेवती सौरभ झेली ॥ १० ॥
सुंदर सथल फरश[8] करिवाइस । बैठे सतिगुरु अनंद उपाइसि ।
गन सुभटनि को लग्यो दिवान । बैठ्यो निकटि सु पैंदे खान ॥ ११ ॥

---

1. उत्पन्न हुआ । 2. घटा, मेघ । 3. गिरि, पहाड़ । 4. श्वेत । 5. दिखाई दी । 6. पीली चमेली । 7. अनार । 8. बिछौने ।

चौपर हित खेलनि मंगवायो। सनमुख अपने खान बिठायो।
धरि धरि दाव परचत्रो करैं। डल डालहि नरदनि को चरैं॥ १२॥
कितिक काल अशटापद[1] खेला। जीतहि गुरु डालनि को मेला।
इक उमराव तबहि चलि आयो। मिलनि हेतु को मन ललचायो॥ १३॥
हित मुहिम कित शाहु पठावा। बहु लशकर तिह साथ पठावा।
किसी गिरेशुर[2] पर चढि गयो। तहां जाइ रण ठानति भयो॥ १४॥
परबतेश तबि कीनि लराई। खड़ग तुफंगनि मार मचाई।
ब्रिंद तुरक संघार भगाए। ठहिर्यो गयो न त्रास उपाए॥ १५॥
भागे मारि खाइ चलि आए। शाह जहां ढिग होइ सुनाए।
कोप्यां। शाहु सुनति रण हारा। बारि बरि उमराव धिकारा॥ १६॥
'बडो निलाज लाज नहिं आवै। अबि मम सनमुख खरो दिखावै।
दूरि होहु गीदी रु गवारे। थिरहु न मेरे नेत्र अगारे'॥ १७॥
लखि काइर को दियो निकासि। रहनि न दियो आपने पास।
सो दुख पाइ निकासि इति आयो। 'गुरु को देखौं जिय ललचायो॥ १८॥
गुर शमशेर सिपर[3] को धरे। आयो निकटि गरब उर भरे।
गरब प्रहारीं गुरु ने जाना। इह काइर अरु मन गरबानी॥ १९॥
जाइ निकटि गुर केरि खरोवा। नहिं प्रभु ने तिस की दिशि जोवा।
अशटापद खेलनि महिं ध्याने। डल डालति अरु नरद प्याने॥ २०॥
खर्यो रह्यो चित चहति विशेखे। 'जबि सतिगुरु मेरी दिशि देखें।
करौं सलाम बैठि हौं फेरे'। हम चितवति चित बिति बहु बेरे॥ २१॥
खरे पठान क्रोध बड जागा। चित महि पुन चितवनि हम लागा।
'इक शमशेर प्रहारौं ऐसे। धरते सिर उतरहि इस जैसे॥ २२॥
आदर अपर करनि तौ रह्यो। नेत्र उठाइ न मम दिशि लह्यो।
चितव्यो जबि शमशेर प्रहारनि। कर्यो खान दिशि गुरू निहारनि॥ २३॥
कह्यो ताहिं 'निज सुभट कहावहु। जहां परहि रण तहां पलावहु।
जहां खड्ग को जंग मचावनि। तहां करहु निज पीठ दिखावनि॥ २४॥
जहां शत्रु के मारनि बनै। तिस थल होति त्रास के सनै।
उचित सेवनि जहि फकर अगारी। तहिं चाहति शमशेर प्रहारी॥ २५॥
शत्रु संघारति रिसि करि तोही। फकर बिना सहि कुटंब जु होही।
रिपु इस लोकहि मुखनि बिनासै। फकर दुहूं लोकनि सुख ग्रासै॥ २६॥

---

1. चौंपड़। 2. गिरीश, पहाड़ी राजा। 3. ढाल।

जहां थान हंकार करनि को। तहिं ते कीनिसि रिदा डरनि को।
निरहंकार होनि थो जहां। फकरनि आगै गरबति महां॥ २७॥
गही हाथ महिं रहि तरवार। फकर प्रान को देहिं निकार।
गुर घर महिं मानी को थांव न। निरमानी नित गुर मन भावनि'॥ २८॥
सुनति खान मन महिं बिसमायो। चित महिं चितवति[1] गुरु लखि पायो।
भयो दीन उर, जोरे हाथ। पर्‌यो अगारी टेक्यो माथ॥ २९॥
'करामात साहिब तुम भारे। सक्यो न जानि रिदे रिस धारे।
छिमहु प्रभू! तुम हो बलदायक। मीरी अरु पीरी के लायक॥ ३०॥
मम अपराध छिमा को धरीअहि। सेवक निज पग पंकज करीअहि।
तजहु अपर, सतिगुरु! सभि गिनती। करहु निहारनि, जो मम बिनती॥ ३१॥
भूलति सदा दास गन आए। पीर छिमां ही करति रहाए'।
देखि दीन गुरु भए क्रिपाला। बैठार्‌यो समीप तिस काला॥ ३२॥
निज सिख करिकै सिख्या दई। 'फकरनि आगै नमता लई।
संतनि ढिग गमनहु तजि मान। सेवा करहु होहिं सुखवान॥ ३४॥
नित सतिगुरु को सिमरनि करो। गरभ जोनि महिं बहुरि न परो'।
भयो सिक्ख गुरु को तबि खान। बाज़ी जीति उठे भगवान॥ ३४॥
चलि करि निज डेरे कहु आए। खान पान तिस खान दिवाए।
दिन दोइक गुरु के ढिग रह्यो। भाउ बिसाल रिदे महि लह्यो॥ ३५॥
उसतति करति रहति निस दिन मैं। गुरु के गुन गन चितवहि मन मैं।
बैठ्यो निकटि बिलोकि क्रिपाला। बिरद संभारि कह्यो तिस काला॥ ३६॥
'जाहु खान! अबि सदन मझारी। बनहि प्रथम सम मनसब भारी।
श्री गुर नानक बखश्यो तोहि। सकल समाज तथा पुन होहि॥ ३७॥
सुनि बर गुरु को हरख्यो खान। बारि बारि पद बंदन ठानि।
मान्यो बचन भाउ को धारा। ले आइसु को सदन सिधारा॥ ३८॥
चारिक दिन घर बैठ्यो रह्यो। शाहु सभा महिं ऐसे कह्यो।
'सो उमराव हुतो बहु दिन को। कहा भयो जे त्याग्यो रन को॥ ३९॥
कई बारि आगै इह लर्‌यो। कारज शाहु सदन को कर्‌यो'।
पठ्यो दूत तिह निकटि हंकारा। पूरब ते बिसाल सतिकारा॥ ४०॥
'भयो अनादर इस को' जाना। मनसब बखश्यो तबहि महाना।
गुरु करुना ते म्रिग भा शेर। सिमरनि करता संझ सुबेर॥ ४१॥

---

1. सोचता।

इम श्री हरिगोविंद पुरि वासे। मन भावति बहु करे बिलासे।
कवि उपबन महि दिवस गुजारें। कबि बन ब्रित्ति अखेर सिधारें।। ४२ ।।
दिन सावण के बरखा होति। बरण बरण के जलद उदोति।
घोखति घन गन इत उत धावें। धरा सजल करि अनंद उपावें।। ४३ ।।
हरिआवल अविनी पर होई। इंदु-बधू[1] विचरति बिच जोई।
मनहु सबिंदू नील उढोनी[2]। ऊपर पहिरी सुंदर छोनी[3]।। ४४ ।।
बह्यो प्रवाह नदी बहु नारे। जित कित बरखहि जलधर धारे।
सतिगुरु पुरि करतार विराजे। जिन के नाम जपे अघ भाजे।। ४५ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे 'खान प्रसंग' बरननं नाम पंचबिसती अंशु ।। २५ ।।

---

1. बीर बहूटी । 2. ओढ़नी । 3. पृथ्वी ।

अंशु २६

श्री सतिगुर प्रसथान प्रसंग

दोहरा

बार बार बर बार[1] को बारद बरसति ब्रिंद।
पिखति बहार उदार को नित श्री हरिगोबिंद ॥ १ ॥

चौपई

बर तरुवरु सरुवरु[2] पर खरे। निरमल जल नवीन सों भरे।
धरा तरावति जहिं कहि पिखियति। हरिआवल मुददायक दिखियति ॥ २ ॥
कुहकति कोकिका उपबन मैं। तड़िता दमकति बहु बिधि घन मैं।
मधुर मधुर उपजति घनघोर। ठोर ठोर मोरनि के शोर ॥ ३ ॥
इक दिन सतिगुर समा सुहाए। सिक्ख मसंद सुभट समुदाए।
जथा सुरनि महिं इंद्र बिराजै। दुति को देखि सुधरमा[3] लाजै ॥ ४ ॥
गुरू बदन को सकल बिलोकैं। चलनि अपर दिशि ते द्रिग रोकैं।
मुसकावति सभि की दिशि हेरैं। क्रिपा कटाखनि ते नित प्रेरैं ॥ ५ ॥
चंद बदन ते सुधा समानी। कबि कबि करति उचारनि बानी।
कहति भए 'पावस रुति नीकी। अबि सरिता तट हुइ रमनीकी ॥ ६ ॥
बहैं प्रवाह बेग के संग। ब्रिंद उठति उतंग तरंग।
तट ऊचे करदम नहि जोइ। तहां अखेर ब्रिती भी होइ ॥ ७ ॥
परखहु थान प्रथम जिनि पिखैं। चढहिं अखेर ब्रिती जिस बिखैं।
नदी बिपासा को अस तीर। बसहिं कित्तक दिन ले भट भीर' ॥ ८ ॥
तबि इक सिख बोल्यो कर बंदि। 'महाराज ! जिम चहहु अनंद।
तीर बिपासा के सभि ग्रामू। तहां दास रावरि के धामू ॥ ९ ॥
घाघे नाम कहैं तिस थाना। उचित आपके जथा बखाना।
करदम अलप होति थल ऊचा। करो अखेर ब्रित्त, है मूचा[4] ॥ १० ॥

---

1. श्रेष्ठ जल। 2. सरोवर। 3. देव सभा। 4. ऊंचा।

बहै समीप प्रवाह बिपासा। करहु बिलोकनि बैसि तमाशा।
बिबिध ब्रिधिन के बहुत बिनोद। बिलसहु रावर, पिखहु पयोद[1] ॥ ११ ॥
क्रिपा करहु सो थान तुमारा। दासनि दिहु दरशन निसतारा।
सिख को बाक सकल सुनि लयो। मोन रहे, नहिं उत्तर दयो ॥ १२ ॥
अपर सिक्ख ने बहुर बखाना। 'एक सथान भलो मैं जाना।
महाराज चाहति चित जैसे। सकल रीति कहि सुंदर तैसे ॥ १३ ॥
ऊचो बहु नित पंक-बिहीना। तरै बिपासा नीर नवीना।
बसहिं लोक थोरे करि मेला। ग्राम नाम तिस कहति रुहेला ॥ १४ ॥
करहु अखेर ब्रित मन भाई। बैठे पिखहु नदी जल जाई।
तिह सम करदम-हीन सथान। तीर बिपासा रुचिर न हान ॥ १५ ॥
उचित आपके करहु बिनोद। अविलोकहु बरखंति पयोद'।
अपर सिक्ख सुनि करि तबि कह्यो। निशचै सुभ सथान सो लह्यो' ॥ १६ ॥
श्री हरिगोबिंद सुनि सभि जाना। गमन तहां के मन महिं भाना[2]।
श्री गुरदित्ता निकटि निहारा। परम प्रेम ते बाक उचारा ॥ १७ ॥
'गोइंदवाल आप चलि जावहु। मिलहु कुटंब मोद मन पावहु।
निज माता अरु भ्रातनि संग। सो तुव हेरनि चाहति अंग ॥ १८ ॥
फिरनि वहिर वरखा रुति मांही। बिखम और सभि बिधि सुख नाही।
अरु तुरकनि सो वध्यो बिखेरा। आइ परहि कित जंग घनेरा ॥ १९ ॥
अलप बैस[3] यांते सुख लीजै। गोइंदवाल वास को कीजै'।
पित आइसु को सिर पर धरिकै। हाथ बंदि वंदन पद करिकै ॥ २० ॥
हय तयार पर भयो अरूढ। समझि गुरु को आशे गूढ।
संगि सऊर इकादश करे। पहुंचनि हित तूरन मग धरे ॥ २१ ॥
गोइंदवाल प्रवेशे जाई। गुर दिशि की सुधि सकल सुनाई।
भ्रातनि साथ खेलिबो करे। मन भावति सुख को नित धरे ॥ २२ ॥
श्री हरिगोबिंद भे तबि त्यार। हेरनि तीर बिपासा बारि।
बजवाइसि तवि कूच नगारा। भयो सनद्ध बद्ध दल सारा ॥ २३ ॥
कितिकनि छोरे तुपक तड़ाके। सुने दूर लगि शबद सु जांके।
तिस छिन गुरु ढिग पैंदे खान। आयो निज घर ते सुधि जान ॥ २४ ॥
तिस को देखति प्रभू बिचारा। 'इस मूरख के उर हंकारा।
'मम भुज अलंब ब्रिजै गुर लेति। शत्रुनि ब्रिंद इतौं रण खेत ॥ २५ ॥

---

1. पानी देने वाला बादल। 2. भाया। 3. बैठ कर।

अबि तहि जंग परहिगो भारी। जेकरि हुइ है संग हमारी।
बहुत गरब को धरि हैं फेरे। 'गुरु की जीति भई बल मेरे'॥ २६॥
यांते इस बिन अबि के लरीयहि। बिजै लेहि गन तुरकनि हरीयहि।
इम बिचारि गुर बाक बखाना। पैंदेखान ! रहहु घर थाना॥ २७॥
अबिहूं तेरो भयो निकाह। बसहु आप बीवी के पाह।
हम हेरहिं हरि[1] तीर बिपासा। 'बरखति बदरा अधिक चुमासा॥ २८॥
केतिक दिन हम तहां बितावैं। बिन करदम सो थान बतावैं।
परे कार तौ लेहिं बुलाई। तबि लौ सदन बसहु सुख पाई'॥ २९॥
हाथ जोरि कहि पैंदेखान। मैं किम बसहु अपन घर थान।
शाहु जहां के संग बिगार। भयो अधिक लशकर को भारि॥ ३०॥
औचक परहि जि आनि लराई। पठहि शाहु सैना समुदाई।
पहुंच्यो जाइ न मोते तबै। किम सतिगुर तजि गननहु अबै॥ ३१॥
जे मैं काज न आइ तुमारे। सकल जगत ही देखि धिकारे।
दीरघ[2] मुरशिद, पिता, खुदाइ। तुमही हो मेरे सुखदाइ॥ ३२॥
मोकहु उचित न छोरों साथ। रण को संग लखहु गुर नाथ।
पुन सुनि करि तिह कह्यो क्रिपाल। ज्यों तूं कहैं अहै सो ढालि॥ ३३॥
तऊ प्रसंन होइ हम कह्यो। बसन समां तुव घर को लह्यो।
रहो चुमासा बनिता तीर। तुन हम सो मिलीअहि बडि बीर॥ ३४॥
क्यो संकति चित, बसहु अवासं। अहैं सदा तू हमरे पास।
मानि बाक नहि फेर करीजै। करहिं हकारनि आनि मिलीजै॥ ३५॥
हाथ जोरि, पुन बोल्यो नाहन। तऊ सु बिछरनि की चित चाह न।
सिर पर आइसु गुर की धारी। रह्यो जबहि, प्रभु सीख उचारी॥ ३६॥
'होहु न पर-त्रिय सो बिभचारी। रिदे प्रीत धारहु निज नारी।
दया धरहु दिहु दीननि दान। किह को दुख नहिं देहु सुजान॥ ३७॥
पर-त्रिय को सनमुख न लिआवहु। शत्रुन सों नहि पीठ दिखावहु'।
नित खुदाइ सिमरहु सुख पावहु। प्रभु भाणा पिखि अनंद उपावहु॥ ३८॥
करि पद बंदन बोल्यो पैंदा। 'नहि मैं त्रास धरहु रिपु।
रावरि के प्रताप करि मोहि। सरब भांति को आनंद होई'॥ ३९॥
गयो आपने सदन मझारा। बिबिध बिलास करे मिलि दारा।
श्री हरिगोविंद चढे तुरंग। दुंदभि बज्यो अधिक धुनि संग॥ ४०॥
मनहुं बिदति ही बिजै बतावै। हने चोब हम शबद उठावैं।
सुभट अरूढ हयनि पर भए। कसी तुफंग त्यार हरि लए॥ ४१॥

1. जल। 2. बड़े गुरु।

सतिगुरु प्रेरति चल्यो तुरंग। जनु गमनति उठि गंग तरंग।
सावण दुती दिवस सुर गुरू[1]। एक मास बसि गमने गुरू॥ ४२॥
श्री करतारपुरा तजि चाले। तुरक बिनासन चहिति बिसाले।
आगे मिले शगुन शुभ होति। रिपु नाशनि गुर बिजै उदोति॥ ४३॥
मिली जोखता[2] बालक गोद। हुती सुहागन सहत प्रमोद।
सुरभी बत्तस[3] चुंधावति ठाढी। चाटति रिदे प्रीति बहु बाढी॥ ४४॥
सुंदर गौन पौन तबि कीनि। म्रिगन सु माल दाहिने लीनि।
म्रिदुल शबद को करहिं बिहंग। जे शुभि होति भए सुख अंग॥ ४५॥
दुंदभि बाजति मारग चाले। मिलहिं ग्राम के मानव जाले।
अरपहि भेट धाइ करि आगे। पद अरबिंद छुवैं वडभागे॥ ४६॥
हेरि हेरि सुधि सभिनि सुनावैं। बडो लाभ लखि दौरति आवैं।
खुशी करति गमनंति क्रिपाला। उलंघे इस बिधि पंथ बिसाला॥ ४७॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे 'श्री सतिगुर प्रसथान' प्रसंग बरननं नाम खशट बिंसती अंशु॥ २६॥

1. वीरवार। 2. स्त्री। 3. बछड़ा।

अंशु २७

श्री गुर नगर बनावन प्रसंग

दोहरा

नदी बिपासा तीर पर थिरें गरीब-निवाज।
चलति प्रवाह सवेग जल खरे देखवे काज ॥ १ ॥

चौपई

देश जु द्वावे को तट नीवा[1]। मद्र देस तट ऊचो थीवा[2]।
करति बिभाग प्रवाह चलंता। दुहि दिशि तट द्वै देश करंता ॥ २ ॥
तीर पार को ऊचे हेरे। केवट आवा तर तिस बेरे।
नौका गन को तूरन ल्याए। हाथ बंदि बहु बिनै अलाए ॥ ३ ॥
चढि तरनी पर पारि परे हैं। तट ऊचे पर जाइ खरे हैं।
अपर सुभट जेहैं समुदाइ। करे पार सभि तरी चढ़ाहि ॥ ४ ॥
हय अरोहि गुरू तहि फिरे। चहुं दिशि ते बल देखनि करे।
सलिता[3] तट पर ऊचो थेह[4]। बैठे बहु बहार को देहि ॥ ५ ॥
इक दिशि बसहिं लोक कुछ थोरे। अपर थेह सूंनो त्रै ओरे।
पुरि के बसनि उचित लखि थाना। रिदे मनोरथ एव उठाना ॥ ६ ॥
डेरा तिसी थेह पर कीनो। पिखति बिपासा जल शुभ चीनो।
उतर्यो दल सभि गुर को आइ। जहिं कहिं तंबू दिए लगाइ ॥ ७ ॥
सुधि पाई नर जे सभि ग्रामू। आइ दरस कीनसि अभिरामू।
देखि देखि गमने निज पासू। तहां बसति इक घेरड़ नामू ॥ ८ ॥
थेहु मालकी धारति सोऊ। तिस की आग्या महि सभि कोऊ।
सुनी कान महि सुधि गुर आए। ऊचे दल डेरे सभि पाए ॥ ९ ॥
संसै भयो बिसाल रिदे तिह। बलि की बात करति अतिशै इह।
शाह जहां ते त्रास न धारा। लर करि लशकर रण महि मारा ॥ १० ॥

---

1. नीचा। 2. हुआ। 3. सरिता, नदी। 4. टीला, खंडहर।

इहां न करै कछुक उतपाता। आयो कौन काज क्या जाता।
एव बिचारति मूरख आवा। जिसको काल होनि नियरावा॥ ११॥
आगै गुर ढिग लग्यो दिवान। बैठे सुभट थिरे सवधान।
घेरड़ उर गरबति चलि आयो। जर्‌यो हेरि मूरख दुख पायो॥ १२॥
आछी रीति न बंदन कीनी। नहीं उपाहन आगे दीनी।
जूझन लग्यो सु 'कारज कौन। निकसे बरखा महि तजि भौन'॥ १३॥
गुरू कह्यो 'थल ऊचि निहारा। तरे प्रवाह नदी जल भारा।
केतिक दिन ठहिरहिं इस थान। खेलहिं ब्रिती अखेर महान॥ १४॥
बिन करदम[1] अविनी तल जाना। इस कारन हम आवन ठाना'।
सुन खुनस्यो मन बक्र[2] बखाने। 'भले अखेर ब्रित्ति को ठाने॥ १५॥
हित शिकार के लीनसि बाज। क्रितिक बिगारे अपने काज।
शाहु संग बांध्यो बड वैर। बहुरि कहा बांछति है खैर॥ १६॥
सदन उजार सुधासर आए। अजहु न त्यागे सहजि सुभाए।
ठोकर लागहि समुझहि स्यानें। हान लाभ को सकल पछानें॥ १७॥
बडे गुरू जबि भए अगारी। संत सरूप परम उपकारी।
शाहु आदि खिलकत सभि आवैं। नित प्रति जिन को सीस झुकावैं॥ १८॥
तुमने रीत नवीन चलाई। शसत्र बंधि करि धूम उठाई।
नीकी बात नहीं उतपाति। करति फिरति लोकनि को घात'॥ १९॥
गुरू कह्यो 'हम अपनि बिगारा। तैं क्यों उर महि संकट धारा।
बिगरे कारज हम दुख होइ। पर्‌यो तोहि सम के सिर सोइ॥ २०॥
जे जे निंदक अहैं हमारे। दिन प्रति दुख बिसाल तन धारे।
गुरु घर को नित सुधरहि काज। तुरकनि छीन लेहिंगे राज'॥ २१॥
गुर को तौर हेरि बिधि औरि। उठि गमन्यो पहुंच्यो निज ठौरि।
खान पान सतिगुर करिवाए। सुभटनि सहत अचे मन भाए॥ २२॥
बिधीचंद सो बूझनि कर्‌यो। 'हम नीको इह थान निहर्‌यो।
तीर बिपासा नगर बसावैं। सदा चुमासा इहां बितावैं॥ २३॥
हाथ जोरि तिह सुनति वखाना। 'श्री जग गुर तुमरे सभि थाना।
हुइ प्रसंनता रावर केरी। परालबध तहि नरन घनेरी॥ २४॥
श्रीमुख कह्यो देर नहि काई। होति प्राति दिहु टक्क लगाई।
बहु नर करति शीघ्र हुइ जाइ। प्रिथम कोट को दिहु चिनवाई॥ २५॥

---

1. कीचड़। 2. विकार।

इम गसलत करि निस महिं सोए। जागति भए समो निज जोए।
सौच सनान ध्यान पठि बानी। दिनकर उद्यो तिमरगन हानी ॥ २६ ॥
कितकि प्रसादि मंगायहु पास। खरे होइ ठानी अरदासी।
श्री नानक, श्री अंगद गुरू। श्री गुर अमर कामना पुरू ॥ २७ ॥
श्री गुर रामदास सुख रास। श्री अरजन सिख पुरवति आस।
श्री हरिगोविंद जी इस थाना। चहति बसायहु नगर महाना ॥ २८ ॥
अंग संगि नित बनहु सहाइक। सरब कला समरथ सुखदाइक।
क्रिपा आपकी कारज सारे। दासन पास सदा रखवारे ॥ २९ ॥
इम कहि सभिहिनि सीस निवायो। फेर प्रसादि तहां बरतायो।
दुंदभि चोब ओज ते हनी। बिजै-सनी उपजी धुनि घनी ॥ ३० ॥
टक्क आप श्री गुरू लगायो। 'नगर कोट कीजहि फुरमायो।
ब्रिंद मिहनती दए लगाई। अधिक शीघ्र करि गुरनि दिखाई ॥ ३१ ॥
भए प्रसंन हेरि करि सरब। बखश्यो तातकाल गन दरब।
बहु ग्रामन के नर बुलवाए। दई दिहारी कार लगाए ॥ ३२ ॥
सुधि सुनि घेरड़ खत्री मंद। चित महि चिंता वधी बिलंद।
भूम दबाइ लीन सभि मेरी। सीने-ज़ोरी करति घनेरी ॥ ३३ ॥
क्या इसने मन महिं अब ठानी। किसकी शंका तनक न मानी।
नर इकठे करि बूझनि लागा। 'इह किस राह सु रोकहि जागा ॥ ३४ ॥
हमहि कि तुमहिं बूझि नहिं लीनि। किस को किस बिधि कुछ नहि दीन।
सुनि कै लोकनि[1] बाक बखानो। 'इह गुरु जानै कै तुम जानो ॥ ३५ ॥
कोट होइ अंतर घर बासहिं। नहि होवहि तौ करहिं न आसहि।
गुर बलबान न मानहि कान। अरहि कौन दे प्रानन हानि ॥ ३६ ॥
संपत हज़ार मारि अबि आवा। फिरहि शेर सम त्रास न पावां।
सभिहिनि करति अनादर बोला। 'मैं करि हौं आछे इस हौला ॥ ३७ ॥
किम परि पाइ सकहि इस थान। चाहति है कि नहीं निज प्रान।
अबि देखहु मैं डर उपजावों। नाहित सैन शाह ते ल्यावों ॥ ३८ ॥
उर हंकारी बकहि कु-बैना। सतिगुर दिशि ते डर उर हैना।
सेल बार[2] सिर मुख पर तांही। तऊ ओज बहु तनके मांही ॥ ३९ ॥
मोटा पेट ओठ भी मोटे। तुंड[3] बडो कुछ लोचन छोटे।
धोती करति रहति जो ढीली। ग्रीवा छोटी जनु धर लीली ॥ ४० ॥

---

1 लोगों ने। 2. श्वेत बाल। 3. मुंह।

ढीली जामे की बहु तनीयां। झगरनि को प्रबीन जनु बनीआं।
पोली[1] बडी पाग सिर धारै। कर सोटी[2] धरि धरि पग डारै ।। ४१ ।।

उर हंकारी घर की ठौर। अपने सम नहिं जानहिं और।
अपनी जाति गुरू की जानै। करै शरीकपनो, हित-हानै ।। ४२ ।।

जरी न जाइ क्रित्त इह गुर की। बिसरति नाहि न चिंता उर की।
कहौं जाइ मैं जे हटि रहै। नाहिं त बहु संकट को सहै ।। ४३ ।।

इम चित ठानि गुरू ढिग चल्यो। अगनि-ईरखा ते मन जल्यो।
क्रोध अहूती परति प्रचंड। गुर यश सुनति हतिय जनु दंड ।। ४४ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रा ो 'श्री गुर नगर बनावन प्रसंग' बरननं नाम सपत बिसती अंशु ।। २७ ।।

1. नर्म। 2. लाठी।

अंशु २६

घेरड़ को बकबाद

दोहरा

सुनि गुर के बच रिस भरे ओज प्रताप समेत।
नहि समुझ्यो निंदक महां प्रभु को लख्यो न भेति ॥ १ ॥

चौपई

बोल्यो वहु कठोर अभिमानी। 'मैं न डरों सुनि कै तुव बानी।
करों तिदारक[1] तो संग ऐसे। सिमरहिं सकल आरबल जैसे ॥ २ ॥
पित अरजन को जस भा हाल। क्यों नहि सिमरति महां कराल।
मर्‌यो कैद महिं हठि नहिं हार्‌यो। तिसी रीति अबि पुत्र विचार्‌यो ॥ ३ ॥
'गुरू गुरू' जग करते फिरैं। नर ब्रिंदनि को बंचन करैं।
धन बहु आइ जर्‌यो नहिं जाई। जहिं कहिं चलि उतपात उठाई ॥ ४ ॥
दियो देश ते वहिर निकारे। अजहुं न समुझि त्रास नहिं धारे।
कहा भयो श्री नानक जोई। श्री अंगद श्री अमर जि होई ॥ ५ ॥
रामदास अरजन क्या भयो। जग ते बंचन करि धन लयो।
अजमतिवंति कहावति कूरे। कहि कहि बनि वैठे गुर पूरे ॥ ६ ॥
चल्यो जाहु जे भलो चहंता। क्यों हुइ हौरो[2] बन्यो महंता'।
इम कहि गारि निकारति लागा। सुनति कोप गुर को उर जागा ॥ ७ ॥
इक तौ श्री नानक ते आदि। बे-मिरजाद[3] कह्यो अपवादि।
दुतीए सनमुख गारि निकारी। यांते गुरु उर महिं रिस भारी ॥ ८ ॥
कर्‌यो हुकम सिक्खनि को धरो[4]। अधिक मारि जूतन की करो।
देखहु इसकी शाहु सहाइ। मारि मारि दिहु अकल गवाइ ॥ ९ ॥
जिस मुख ते गुरु निंदा कहै। तिस पर हतहु तुरत फल लहै।
सुनति हुकम को कोप बिसाले। उठि पकर्‌यो सिक्खन बल वाले ॥ १० ॥
तऊ गवार गारि को देति। अपने पर अपदा को लेति।
लागे जूत ब्रजनि सिर भरे। किनहू डारी पाग उतारे ॥ ११ ॥

---

1. प्रबंध, रोक थाम भा। 2. हलका, अप्रतिष्ठित। 3. मर्यादाहीन। 4. पकड़ो।

पनही हतहि वार नहि पावें। रोडे[1] सिर पर शबद उठावें।
'हाइ हाइ' बहु मूढ उचारति। तऊ गुरू को गारि निकारति ॥ १२ ॥
त्यों त्यों मुख पर पनही मारें। भयो महा दुख ऊच पुकारें।
सुनि सुनि नर आए समुदाइ। राखे दूर भटनि अटकाइ ॥ १३ ॥
ग्रामनि के नर ब्रिंद बिलोकें। निकटि न होनि देति भट रोकें।
ऐसी परी मार इक बारा। करि मूरछ धरनी पर डारा ॥ १४ ॥
बहुर उठ्यो नहि समझ्यो मंद। सिर नांगो दे गारि बिलद।
'रहु बैठा पलटा अबि लेवौं। जिम मार्‌यो तैसे फल देवौं ॥ १५ ॥
सुनति गार अरु गुर की निंदा। जानि पुकारू करि चित चिंदा[2]।
तबि सतिगुर ने हुकम बखाना। 'इह महिखासुर[3] हमने जाना ॥ १६ ॥
मारहु पुरि की भेट चढावहु। देवी रूप बिपासा पावहु।
सगरे सिख सुर ब्रिंद समाना। इस मारे होवें सुख नाना ॥ १७ ॥
नही पुकारू इसे पठावहु। जम के सदन तुरत पहुंचावहु।
सुनि रजाइ गुर की सिख धाए। लात मुशट के घात्र लगाए ॥ १८ ॥
ऐसी परी मार तिस बारा। ततछिन हान्यो प्रान बिदारा।
लगे मुशट सिर महि बलवंते। परति जूत भा तन को अंते ॥ १९ ॥
पकरी टांग घसीट्यो फेर। दीनि बिपासा के बिच गेरि[4]।
बह्यो गयो कित नदर न आयो। नाहक मूरख प्रान गवायो ॥ २० ॥
रतन चंद घेरड़ को नंदन। जबि देख्यो निज पिता निकंदन।
धर्‌यो त्रास बड़वा चढि चाला। दूरि जाइ रुदनंति बिसाला ॥ २१ ॥
'हाइ पिता ! तू क्यों न पलावा। नाहक अर्‌यो, प्रान बिनसावा'।
अपर ग्राम महि बैठि बिचारे। निज नर सगरे निकट हकारे ॥ २२ ॥
इति घेरड़ जबि सरिता डार्‌यो। सभिनि अनंद बिलंदै धार्‌यो।
'बिजै सदा गुर की, अरि मरैं'। ऊचि धुनी इम उचरनि करैं ॥ २३ ॥
गुर के सुभट सदा सवधाने[5]। गुर जैकारा शबद बखाने।
कोट चुगिरदे को बड होति। गन मानव लगि कीनि उदोति ॥ २४ ॥
घेरड़ मर्‌यो सकल तबि जाना। भयो त्रास गुरु ते सभि थाना।
निंदा को नहिं करति उचारन। डरहि ग्राम गन करहिं न मारनि ॥ २५ ॥
ज़िमीदार जहिं कहिं के आइ। आनि अकोरनि[6] को अरपाइं।
दधि अरु दुगध कितिक के आवै। धरि आगै सभि सीस निवावें ॥ २६ ॥

1. गंजे 2. सोचा 3. महिषासुर 4. गिरा दिया 5. सावधान 6. भेंट

पीरी मीरी तेग़ सुधारी। बिदति भई अबि जगति मझारी।
जो जो दुशट बिअदबी करै। सो सो ततछिन फल दुख भरै ॥ २७ ॥
वध्यो तेज सभि बिखै बिसाला। वसहि नंम्रता दंड कराला।
जिमि दधि मथियति इत उत बल ते। तबि सुंदर नवनीत निकलते ॥ २८ ॥
जिम बलते तर लाठ दबावहि। कालू[1] ऊख सुरस निकसावहि।
तथा जगत की रीति सु लागे। पिछहिं दंड कर[2] नंम्रहिं आगे ॥ २९ ॥
रहै भीर सतिगुर के तीर। प्रजा लोक गन बंके बीर।
ब्रिंद मजूर लगे हितकार। करति करावति त्रिबिधि प्रकार ॥ ३० ॥
बनति कोट चौगिरदा पुरि को। नर गन कहैं 'नाम हुइ गुर को'।
करति शीघ्रता कितिक उसारा। पहुंचति ब्रिंद ईंट अरु गारा ॥ ३१ ॥
दोइ समैं फिरि करि गुरु हेरति। 'कीजहि त्यार शीघ्र' कहि प्रेरति।
उत घेरड़ की सुनहु कहानी। रतनचंद तिह सुत जिम ठानी ॥ ३२ ॥
सभि कुटंब मिलि बहु रुदनाए। दे धीरज तिह बाक अलाए।
'मैं पित को पलटा[3] अबि लैहौं। नाहित नीर डूबि मरि जैहौं ॥ ३३ ॥
कै गुर की इम लोथ रुलैहौं। कै जंजीर पाइ गिरवैहौं।
जिम मम पिता नदी महिं डारा। तिम गुर की गति हुइ इस बारा ॥ ३४ ॥
नगर जलंधर सूबा भारा। तिह संग मेरो है बहु प्यारा।
अपर बात आछी इक अहै। चंदू को नंदन तहिं रहै ॥ ३५ ॥
तिस को भी पित गुरु ने मारा। गहि राख्यो चिरकाल चंडारा।
दोनहुं मिलि हम मसलत करैं। ज्यो क्यों करि गुरु गहि करि धरैं ॥ ३६ ॥
रहहु दूरि सभि निकटि न जावहु। कहे सुने नहिं किस पतिआवहु।
इम कहि नर गन संगी कीने। चल्यो पंथ महिं बिलम बिहीने ॥ ३७ ॥
महां दुखिति पित सिमरति गयो। जाइ प्रवेश जलंधर भयो।
करमचंद चंदू को नंदन। तिस को मिल्यो प्रथम करि बंदन ॥ ३८ ॥
बैठि समीप रुदन को ठाना। बूझ्यो तिनहुं प्रसंग बखाना।
'सुनहु भ्रात! जिम तुझ संग कीनि। तिम गुर ने मुझ को दुख दीनि ॥ ३९ ॥
पिता मोहि सूधा चित साधू। नहीं कर्‌यो तिस को अपराधू।
गहि लीनिसि अबिगति[4] करि मारा। खैंचि बिपासा सरिता डारा ॥ ४० ॥
करि मैं त्रास बिसाल पलायो। तक्यो तहां ते तुव ढिग आयो।
हम दोनहुं के पित को मारा। नहिं पलटा हम लीनि संभारा ॥ ४१ ॥
धिक धिक जगत कहै हम ही को। खान पान हमरो नही नीको।
पित को मार निहार उदारा। जबि लौ छलबल कर नहिं मारा ॥ ४२ ॥

1. कोल्हू । 2. हाथ में । 3. बदला । 4. बुरी मौत ।

जहांगीर तौ रखहि अदाइब। हाथ जोरि भाखति गुरु साहिब।
सो तौ मर्यो रह्यो नहि अबै[1]। शाहजहां सो मिलति न कबै॥ ४३॥
जुति उमराव सु लशकर मारा। छीनि बाज इति भाजि संभारा।
सो शत्रू इह महिद महाना। उद्दम धरहु करहिं गुरु हाना॥ ४४॥
करमचंद बोल्यो 'किस रीति। गहहि कि मारहिं गुर को जीत।
दल जिह संग, आप बड जोधा। जान्यो शाहुजहां तजि क्रोधा॥ ४५॥
किस मसलत[2]करि बल ते घालहिं। कै करिबो कुछ कपट करालहिं।
सो बताउ जिम बसि महिं आवहि। नाहिं त शसत्र साथ बिनसावहिं॥ ४६॥
सभि पीरनि को तबहि मनावौं। बहुत शीरनि तबि बरतावौं।
सिर पर पाग बाधिहौं तबै। हतहिं कि पकरहिं गुरु को जबै॥ ४७॥
तबि ही जीवन हुइ सुख भर्यो। नांहि त समैं बितावौं मर्यो।
इस ते अपर न मोकहु आछे। पूरि करहिं पीर मन बांछे॥ ४८॥
धन खरचनि मैं शामल तेरे। करिहौं जितिक शकति है मेरे।
जे कारज हुइ शाहु नजीका। सो मैं करौं लाइ बल नीका॥ ४९॥
मुझ तुझ को सम कारज अहै। पित को पलटा दोनहु लहैं।
हुतो अगनि के सम तिह जारनि। नहिं एकल ते होय उजारनि॥ ५०॥
मिल्यो पौन सम तूं अबि आइ। ज्यों क्यों करि लें बात बनाइ।
मनहुं उडीकति[3] को चलि आयो। करि उद्योग होहि मन भायो॥ ५१॥
करमचंद इम धीरज दीनि। अपने घरि महिं आदर कीनि।
खान पान की ले सभि सार। मिले दुखी दोनो कुरिआर[4]॥ ५२॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे घेरड़ अर चंदू नंदन प्रसंग बरननं एकोनित्रिसंती अंशु॥ २९॥

1. सन्मान 2. परामर्श 3. प्रतीक्षा 4. मक्कार, झूठे

अंशु ३०

अबदुलखान सूबा अरुढन प्रसंग

दोहरा

रह्यो निसा महिं मिलि दुखी गुर निंदक कुड़िआर।
करम चंद सो तबि कह्यो रतन चंद दुख धारि ॥ १ ॥

चौपई

'सुहु प्रसंग पिता जिम मारा। हम बैठे सभि सदन मझारा।
आइ अचानक गुरु तिस ग्रामू। उतर्‌यो थानि जानि अभिरामू ।। २ ॥
दिवस आगले कोट उसारा। नगर बसावौं मैं निरधारा।
सुनि मम पिता गयो तिह कह्यो। मालिक भूमि कौन तैं लह्यो ॥ ३ ॥
बुझयो है कि नहीं कित कोऊ। हाकम प्रजा न राजे दोऊ।
शाह जहां सभि मुलखनि मालिक। लेनि देनि सभि तिस के तालिक ॥ ४ ॥
एक नहीं मम पित को मानी। शाहु नाम ते गारि बखानी।
पकरि मारि सरिता मैं गेरा। त्रास नहीं मानति किस केरा ॥ ५ ॥
अबि तहिं पर्‌यो कोट चिनवावैं। अपनि नाम पर नगर बसावैं।
अबि सुनि मारनि करे उपाऊ। जैसे मैं आयो तकि दाऊ ॥ ६ ॥
इक तौ तेरो होइ सहारा। इहां जु सूबा सैन उदारा[1]।
इसके साथ मोहि मित्राई। अबि लौ काल न कुछ बनि आई ॥ ८ ॥
चलहि प्राति कोइस के पास। मगरी बात सुनावहिं तासि।
सैना सहत चलहि जो आप। तौ गहि लेहि हरहिं गुर दाप[2] ॥ ८ ॥
हम तुम दोनहु करहिं पुकारु। गुर अपराध होई निरधारू।
करम चंद सुनि अनंद वधाओ। हम तुम दोनहुं जबहि सुनायो ॥ ९ ॥
चढहि तुरत कुछ लगहि न देरि। लशकर जिसके निकटि बडेरि।
सकल देश इस न्याउं चुकावैं। जबरी करहि सु बरजि हटावैं ॥ १० ॥

---

1. बहुत अधिक 2. दर्प, घमण्ड

इस तो परै अपर क्या होइ। इम सुनि कै कोपहि सभि काहे।
भूमि पराई लीनि सु मारा। नांहि चढहु हुइ देश उजारा॥ ११॥
गढ पावहि गुर आकी होइ। ग्राम निकटि के रोकहि सोइ।
इम कहि सुनि आपस महि सोए। जागे बहुर प्राति को जोए॥ १२॥
बैठ्यो सूबा अबदुलखान। लगी कचहिरी निकटि महान।
सिर नांगो करि जाइ पुकारा। 'कर्यो कहिर, मरी पित मारा॥ १३॥
गुर ने छीनि लीनि सभि धरनि। बिना त्रास कीनसि अस करनी।
कोटि उसारति तहिं बड गाढो। होहि मवासि गरब उर बाढो॥ १४॥
अबदुलखां सुनि पास हकारा। 'कहु निरनै करि क्यों' करि मारा।
लेनि देनि क्या पिखि अपराधा। क्यों गहि मार्यो देकरि बाधा॥ १५॥
करमचंद पुन सकल सुनाई। 'सो नहिं डरति करहि मन भाई।
जेठ बिखै एतो उतपात। जिसते भयो नरनि गन घात॥ १६॥
लेकरि बाज़ शाहु को आवा। सदन सुधासर ते निकसावा।
ग्राम रुईला तहिं सभि धरनी। हुती इनहुं की देशनि बरनी॥ १७॥
छीनि लीनि गढ़ करहि उसारन। घेरड़ गयो बरजिबे कटारन।
पकरि मार सरिता महिं डारा। शाहजहां को त्रास न धारा॥ १८॥
अबि तुमरो कुछ डर नहि धर्यो। मार दीनि मन भावति कर्यो।
तुमसों बिगरहिगो इक द्योस। तबि तुमरो बस चलै न रोस॥ १९।
अबि पकरहु कै करहु संघारनि। अहै सुखैन न लरिबे कारनि।
बहुर जमां करि लेहि लराई। गढ पाए करि है तकराई॥ २०॥
जे नहि चढहु, बाति दिहु टारि। इस महि औगनि अधिक प्रकार।
अलप संग दल, पुन हुई मारो। अपर समाज संचि ले सारो॥ २१॥
आगै मार्यो मुगलसखान। औचक चलहु गहहु जुति प्रान।
लरहि अगारी तौ दिहु मार। हजरति होइ प्रसंन उदार॥ २२॥
छीनहु बाज आप ले चलो। पातशाहु सों हरखति मिलो।
बखशै मनसब[1] बहुर सवाइ। बाज़ अमोलक जबि लिहु पाइ॥ २३॥
तो ढिग लशकर है अबि मारा। लेहु फते मैदान मझारा।
हरि गोविंद को जो गहि लैहैं। बडो मरातब हज़रत दैहै॥ २४॥
दुशमन शाहजहां को मारो। सुधरहिं सभि कारज, जबि मारो।
अबिदुलखान कानि सभि सुनिकै। हान लाभ नीके मन गुनिकै॥ २५॥

1. पदवी।

निश्चै कीनि गुरु को गहौं। हजरत की प्रसंनता लहौं।
अर मम सरबा काज इह आयो। करौं भले चलिकै मन भायो ॥ २६ ॥
ले करि बाज मिलौं अबि शाहू। पावौं वड मनसब तिस पाहू।
औचक फते मोहि कहु पाई। क्यों न लेउं मैं अलप लराई ॥ २७ ॥
निज समीप के बूझन करे। सभिनि कह्यो 'अबि क्या गुरु लरे।
हते सिक्ख बपुरे कुझ[1] संगि। हते गए सो कीनसि जंग ॥ २८ ॥
दई खुदाइ तोहि बडिआई। अबि औचक बिधिआनि बनाई।
दुशमन हज़रति को अति अहै। करहिं संवारनि कै तिस गहैं ॥ २९ ॥
क्यों न प्रसंग शाहु तबि होइ। तुझ को है सुखेन अबि सोइ।
क्या बूझहु, चढ़ीअहि अबि तूरन। लेहु बिजै हुहि काज संपूरन ॥ ३० ॥
सुनि मसलति को निज साथीनि। हरख्यो गरबति आग्या दीनि।
चढनि हेतु दुंदभि बंजवायौ। गुलकां बहु बरूद बरतायो[2] ॥ ३१ ॥
जो जिस चहीअहि सो अभि दीजहि। सैना सरब त्यार करि लीजहि।
इत उत मानव शीघ्र पलाए। हित त्यारी दुंदभि बजवाए ॥ ३२ ॥
सैनापति सभि निकटि हकारे। सनमानति म्रिदु बाक उचारे।
शसत्र बसत्र बखशो समुदाइ। चढहु सकल ही बिलम मुलाइ ॥ ३३ ॥
तरकश, तोमर, धनुख संभारे। तुपक, तमाचे ग़ज़ब गुजारे।
गुलकां गना, बरूद मन भाई। ले ले सुभट त्यार समुदाई ॥ ३४ ॥
भांति भांति के खड़ग बिलंदे। मुशटनि[3] लिए चामी[4] कर ब्रिंदे।
बहुत मोल की सिपर संभारी। भयो सनद्ध बद्ध दल भारी ॥ ३५ ॥
अबदुलखान अधिक उतसाहू। पिखि सैना उर जंग उमाहू।
दल जुति क्या गुर हमरे आगे। गहैं कि मारहिं जे नहिं भागे ॥ ३६ ॥
निकस्यो वहिर बेब्र बजवाई। चढी बाहिनी हुइ समुदाई।
जथा घटा प्रेरी बड पौन। बादित बजति गरजना तौन ॥ ३७ ॥
चमकहि शसत्र चंचला मानो। गुलका ओरे भरे महानो।
सिक्खनि का दल पाक्यो खेत। दल तहां बरसन के हेतु ॥ ३८ ॥
गुरु के बान ब्रिपर[5] जै वायू। जो सनमुख चलि, देहि उडायू।
चल्यो बेग करि लशकर भारो। उत साहित बोलति 'गुर मारो ॥ ३९ ॥
भए सगुन मंदे अविलोक। स्याने दिल महिं धारति शोक।
समुख बायु, म्रिग माल कुफेरी[6]। हय रोदति दृग अंशू गेरी ॥ ४० ॥

1. कुछ। 2. बांटा। 3. मूठ। 4. सोना। 5. विपर्य, उलटा।
6. उलटी तरफ़ से।

सिर पर बायस गीध भ्रमावैं। शिवा अशिवा पुकारति आवैं।
गिरहिं अचानक चालति घोरे। मन सूरनि के मलिन अथोरे॥ ४१॥
मिल्यो काठ को भार अगारी। खर बोल्यो, म्रितु सूचति भारी।
दुंदभि नादति अलप मलीना। जाति लियो मिरतक सभि चीना॥ ४२॥
रतन चंद ढिग अब्रदुल खान। करमचंद चंदू सुत जान।
बूझति 'कितिक कोट करि लीनि। संग कितिक दल देखनि कीनि॥ ४३॥
कहनि लग्यो 'क्या तुमरे आगे। मैं जानी मन, मिखि गुरु भागे।
आटे बिखै लोन अनुमाना। मिहर खुदाइ आप पर जाना॥ ४४॥
चल्यो बेग ते लशकर भारा। ज्यों सलितापति तज्यो किनारा।
उछर्यो बड तरंग जुति जावै। इस प्रकार सो नदरी आवै॥ ४५॥
जरासिंध, जनु मीत बुलायो। काल जमन दल बड जुति धायो।
हरिगुविंद पर लरनि सिधावा। हरिगुविंद परति इह आवा॥ ४६॥
चले बीर दस पंच हज़ार। पुशट तुरंगनि पर असुवार।
लिए सहंस्र चतुर दश जोधा। खर जनु चढ्यो राम परिकोधा॥ ४७॥
मदरा पान पलेछ करंते। कहि कहि अबुदल खान सुनंते।
कहां गुरू अबि देहु बताइ। गहैं तुरत क्या जंग मचाई॥ ४८॥
को अबि अटकहि लरहि अगारी। छिन महिं शत्रूनि देहिं संघारी।
हमरी सैना बड सवधान। कौन अरहि आगे इन आनि॥ ४९॥
जथा सगर के सुत हंकारे। गिनहिं न काहूं अवनि मझारे।
पलक उधारन ते जरि गए। तथा मूढ चाहति रिसि भए॥ ५०॥
करते मार बकारा चाले। पी शराब केतिक मतवाले॥
हयनि बाग कर गहैं कुदावै। नुपक संभारति कितिक धवावै॥ ५१॥
पटहि भेरि रण सिङ बजे। बसत्र शसत्र जुति जोधा सजे॥
धुनि ऊची ते बाजति ढोल। भट मुद धरति पुकारति बोल॥ ५२॥
चल्यो पंथ लशकर तबि ऐसे। गिर पर बरखे ते हड़[1] जैसे।
दुहरी, चोब दुंदभिनि परी। दूरि दूरि लगि धुनि सुनि परी॥ ५३॥
पहुंचे आनि रुहेले तीर। कलम लाति इकठी भट भीर।
सभि महि सूबा अबदुलखान। पिखि लशकर उर धरि करि मान॥ ५४॥
दयो हुकम मंगवाइसि तरनी। पार सैन सभि तूरन करनी।
तत छिन केवट हुइ समुदाया। लशकर कर्यो मार, धन पाया॥ ५५॥

इति श्री गुर प्रताप ग्रंथे अशटमि रासे 'अबदुलखान सूबा अरूढन' प्रसंग बरननं नाम त्रिसंती अंशु॥ ३०॥

1, बाढ़।

अंशु ३१

अबदुल्लखान आगवन प्रसंग

दोहरा

कोस रुहेला जबि रह्यो ठांढो अवदुलखान ।
करी संभारनि सैन की सैनापति बलवान ॥ १ ॥

चौपई

लरनि जंग को ब्योंत बिचारा। प्रिथक प्रिथक दल भाग सुधारा।
जथेदार इक बैरम खान। शसत्र धरन महिं सुभट महान ॥ २ ॥
बिद्या खड्ग प्रहारनि केरी। पटे बाज़ की रीति वडेरी।
एक हज़ार संग दल कीना। हथ्यारनि महिं जो वल पीना ॥ ३ ॥
दुतिय मुहंमद खान सुजाना। बिद्या बाननि बिखै महाना।
चांप कठोर ऐंच जो फारति। बहु शत्रू आगे जिस हारति ॥ ४ ॥
जीते आगै जंग बिसाला। बली अधिक अरु पिखहि कराला।
एक हज़ार सुभट दल दै कै। सावधान हित लरिबै कै कै ॥ ५ ॥
त्रितिय खान वलवंड[1] प्रचंड। परहि जुद्ध तबि करहि घमंड[2]।
करि महिं तोमर बंबलि आले। एक हज़ार कर्यो जिस नाले[3] ॥ ६ ॥
चौथे अली बखश बडि बीर। तुपक चलावहि जो धरि धीर।
नफर[4] त्यारि करि करि जिस देति। छोरति जितिक शत्रु हति लेति ॥ ७ ॥
चली तुपक जिस छूछन जाइ। बिदति लखहि जोधा समुदाइ।
सुभट इमाम बखश गिनि पंच। आयुध बिद्या जिन वहु संचि ॥ ८ ॥
हय अरू ढिबे विद्या महां। रण महिं फेरति इति उति चहा।
पंच हज़ार पंचि के संग। करि सुचेत दीने हित जंग ॥ ९ ॥
अबुलखां के नंदन दोइ। आयुध बिद्या जानहि जोइ।
नबी बखश जेठा सुत अहै। दुतिय करीम बखश लघु कहैं ॥ १० ॥

---

1. बलवंत बलशाली । 2. घमसान । 3. साथ में । 4. नौकर ।

अलंकार जिन चामीकरे के। जबर जवाहर ज़ेवर ज़र[1] के।
जिन के तरै तुरंग बहु मोले। नट जिम फांदति इत उत डोले ।। ११ ।।
दोइ सहंस्र एक संग करिकै। 'हतहु रिपुनि को ओज संभरिकै।
जुगम हज़ार दुतिय संगि दीनो। सावधान ह्वै कै रिस भीने ।। १२ ।।
खशट सहंस्रा आपने संग। अबदुल खान रखे हित जंग।
इम सुभटन को कर्‌यो बिभाग। हित संग्राम धारि अनुराग ।। १३ ।।
इति सतिगुरु के ढिग सुधि आई। क्या बैठे सोझी नहि काई।
दस अरु पंच सहस्रै जोधा। चढिआयो तुम परे करि कोधा ।। १४ ।।
टोल अशट बांधे समुदाई। चढि आए, अबि परहिं लराई।
हूजहु त्यारि शसत्र संभारो। जीन तुरंगनि तूरन डारो ।। १५ ।।
सुनि सतिगुरु तबि बाक उचारे। 'हनहु शीघ्र ही चोब नगारे'।
सज्जी सुभट सकल हुइ जाओ। गहि गहि शसत्र मोहि ढिग आओ ।। १६ ।।
सुनि गुरु हुकम जंग को जाना। सुभट शसत्र गहि भे सवधाना।
जटू गहि तुफंग तबि आयो। पिखि श्री हरिगोविंद अलायो ।। १७ ।।
'लेहु संगि जुग शत असवार। खरे अगारी होहु संभारु।
राखहु तुपक त्यारि करि सारी। परै नेर दिहु इकि विरि मारी ।। १८ ।।
पुन कल्याने की दिशि हेरा। सौ असुवार दीनि तिस बेरा।
तातकाल तोरेसु लगावहु। हतहु तुफंगैं आप बचावहु ।। १९ ।।
पुन नानो इक आयुध धारी। शत्रु प्रहारनि महिं बलि भारी।
तिस के संग तीन सै कीने। हतहु मलेछनि को बल पीने ।। २० ।।
बहुर पिरागा चलि करि आयो। क्रिपा द्रिसटि ते गुरु दरसायो।
करे पंच सै सूरा संग। कह्यो कि 'रोकहु आगा जंग ।। २१ ।।
सनमुख मथरा देखनि कर्‌यो। महांबीर बडि आयुध धर्‌यो।
तांके संग चार सै घोरा। कह्यो 'हतहु तुरकनि, दिहु मोरा[2] ।। २२ ।।
गुरू निकट पुन जगना खर्‌यो। क्रिपा धारि तिस ओर निहर्‌यो।
तिस के संग सुभट सौ करे। हतहु तुफंग शत्रु अरि परे ।। २३ ।।
परसराम शकतू दुइ आए। तरकश धनुख सरीर सजाए।
जिन के बान गिने भट मांही। 'हतहिं शत्रु सो बाचति नाहीं ।। २४ ।।
परस राम संग दो सै दीनो। शकतू को गुरु निज संग लीनो।
मोलक, जाती मलक, अनंदा। बिधीआ आदिक बीर बिलंदा ।। २५ ।।

1. सोना। 2. लौटा दो।

इह सभि राखे अपने संग। करिवे हेतु रिपुनि सों जंग।
टोल अशट जिम तुरक बनाए। सुनि करि अपने तथा चढाए ॥ २६ ॥
इति सतिगुरु निज कीनसि त्यारी। ज़ाफत[1] तुरकनि देनि अगारी।
सिमरनि के बड होहिं रकेब[2]। तीरनि[3] खपरे मनहुं जलेब ॥ २७ ॥
तरवारन सेवर सम जानि। तोमर के[4] फुल बरफी मानि।
अनगन गुलकां शकर पारे। जोधा ब्रिंद परोसन हारे ॥ २८ ॥
जबि भेज्यो नर अबदुलखान। गुरू! पलावहु तजि करि थान।
सभि अपराध मिटहि, चलि जाओ। भलो न नित उतपात उठाओ ॥ २९ ॥
आयहु दूत गुरु के तीर। देखति भयो त्यार भट भीर।
खरे होइ करि बंदन कीनि। 'अबुलखान संदेसा दीनि ॥ ३० ॥
नाहक तुम घेरड़ को मारा। भूमि छीनि करि कोट उसारा।
किह सो बूझि कीनि इह काज। लीनसि प्रथम शाहु को बाज ॥ ३१ ॥
गादी फकरनि केर तुहारी। क्यों राजनि सम रीती धारी।
त्रास न धरो किसी को मन मैं। सनमुख होति शाहु सों रन मैं ॥ ३२ ॥
छिमै सकल अपराध तुमारे। तजहु ग्राम को जाहु पधारे।
नांहि त मैं आयहु दल जोरि। सुनि अपराध आप की ओर ॥ ३३ ॥
पलटा पूरब को सभि लैहौं। छीन बाज़ हज़रत को दैहौं।
तुम को गहि लै चलिहौ जीवति। कौन वड़ाई मै थिर थीवति ॥ ३४ ॥
दस अर पंच हज़ार सु जोधा। आवति उमड्यो दल करि क्रोधा।
मारे जाहु किधो गहि लैहैं। पुन उपाउ छूटनि नहिं पैहैं ॥ ३५ ॥
सुनि श्री हरि गोविंद रिसाए। संग दूत के वाक अलाए।
'भाजहिं गीदी होहिं गवार। हम जीतहिंगे जंग जुझार ॥ ३६ ॥
शाहुजहां तुमरो है शाहू। हमरो करता पुरख अलाहू।
गह्यो जाइ को मार्यो जाइ। जान्यो जाइ बिलम नहि काइ ॥ ३७ ॥
मीरी अरु पीरी जग दोह। गादी तखत लिए हम सोइ।
जंग संग सद काम हमारा। मारहि शत्रुनि वध्यो अखारा ॥ ३८ ॥
जिस मग भेज्यो मुगलसखान। तहिं को तुम अबि चहि सि पयान।
शत्रु बधन को नहि अपराधू। होति दोश जहि दुख लहि साधू ॥ ३९ ॥
तुमरे हतनि हेतु उतपात। होति आप ही, नहिं मिट जाति।
बहु घेरड़ को हम समुझावा। प्रेर्यो काल, नहीं मनल्यावा ॥ ४० ॥

---

1. अतिथि भोज 2. तश्तरी, रकाब्री 3. चौड़े फल 4. फूल

हमने कौन दुरग अबि पायो। चारि दिवस बिसराम बनायो।
चढि करि आए स्थान न करी। तऊ छिमा हम तुम पर धरी ।। ४१ ।।
चले जाहु जे चहहु जिठाई[1]। नांहि त लखहु म्रितू नियराई।
कहहु दूत! हम अबदुलखान। जे मिलिबो चाह मुगलसखान ।। ४२ ।।
तौ चलि आउ न रोकहि कोई। जे हटि जाहु त जीवन होइ।
दो महिं इक निरनै करि लीजै। लरहि म्रितक हुइ, हटिबै जीजै[2] ।। ४३ ।।
सुनि सिर घुन गमन्यो तबि दूति। देख्यो गुर ढिग जथ कुसूत[3]।
अबदुलखान जाइ समुझायो। कह्यो त्रिभै जिम तथा[4] अलायो ।। ४४ ।।
'सुपने भी जिम डरति न शेर। तिम हेरयो गुर बडो दलेर।
शाहु आदि सूबे उमराए। तनक त्रास किस ते नहि पाए ।। ४५ ।।
त्यार लरन रन को बनि रह्यो। डरति न, टरति न, सभि बिधि कह्यो।
सुनि करि कोप्यो अबदुल खान। जंग करनि को भा सवधान ।। ४६ ।।
चल्यो समुख धौंसे धुंकारे। बादति अपर बजे धुनि भारे।
शलख तुफंगनि समुख चलाई। उठ्यो धूम रज जुति समुदाई ।। ४७ ।।
सैना किधौं घटा चढि आई। धुखहिं पलीते छटा सुहाई।
करकति गाज गिरति बहु बारी। कातुर सरप सुकुचि डर भारी ।। ४८ ।।
मोर सूरमा सुनि हरखाए। गुलकां जन करका[5] बरखाए।
श्री गुरु तीर समीर बहे बिनु। तिसी रीति दीखति हैं बनि ठनि ।। ४९ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे अबदुलखान आगवन प्रसंग बरननं नाम एक त्रिसंती अंशु ।। ३१ ।।

---

1. बड़ाई, ज्येष्ठता 2. जीवन व्यतीत कीजिए 3. विपरीत 4. कहा, अलापा 5. ओले।

अंशु ३२

जट्टू अरु मुहंमदखान बध प्रसंग

दोहरा

श्री गुरु हरिगोविंद जी महां धीर बलवीर।
'भए अरुढनि तुरंग पर लशकर पिख्यो अभीर[1] ॥ १ ॥

चौपई

टोल[2] अशट जिन बंधन करे। कुछ बावैं कुछ दाए धरे।
आगै अरु पाछै निज कीनि। आप बीच आवति बल पीन ॥ २ ॥
तिम टोलनि के आगे टोलि। करे आपने सतिगुरु बोलि।
'डेरा ताजी अहि काहु पिछारी। शलख प्रहारहु होहु आगरी ॥ ३ ॥
निज निज टोलि बिखै घिरि रहीयहि। बधि बहु आगै हतनि न कहीयहि।
सैनापति सभि को समुझाए। आगै चले सूर उमडाए ॥ ४ ॥
श्रीगुरु सभि के बीचि बिराजैं। मनहु सुरनि महिं सुरपति छाजै।
कै जादव महि हरिगोबिंद[3]। तिम सिक्खन महि हरि गोविंद ॥ ५ ॥
धनुख कठोर हाथ महिं धारा। को नहिं ऐंच सकहि बलि भारा।
तीछन भीछन ईछन देखि। खपरे तरकश भर्‌य अशेख ॥ ६ ॥
अपर निखंरा[4] संग उचवाए। जबि चहीअहि ले तुरत चलाए।
श्री करतार पुरै करिवाए। सिख्या को दै दै घरिवाए ॥ ७ ॥
सिपर बिसाल धरी भुजमूल। सवा पांच सिर[5] के जिस फूल।
खड़ग खेत कर बामे धरनी। पद सों फांदनि रिपु ते जरनी[6] ॥ ८ ॥
चंद्रहास चौरा खर[7] धारा। दीरघ हुतो दिपति गर धारा।
एक हाथ महिं बाग उठाए। दुशमन दल दिशि द्रिशटि चलाए ॥ ९ ॥
जट्टू गयो सैंन लै संगि। तुपक प्रहारति छेर्‌यो जंग।
ठहाठही बंदूकनि होई। फेरति हय बड जोधा जोई ॥ १० ॥

---

1. जो भीरु नहीं, अभय। 2. सेना की टुकड़ियाँ। 3. श्री कृष्ण। 4. तीरदान। 5. सेर। 6. खड़ग। 7. तेज़।

निकसि गोल ते लरति अगारी। तुरंग धकाइ तुफंग प्रहारी।
जट्टू कर्‌यो नेर जिस काला। लागति गुलकां रिदे कराला ॥ ११ ॥

पाधड़ी छंद

बहु बध्यो अधिक जट्टू सु बीर। तिह देखि मुहंमद खान पीर।
ले संग सहस्रे अग्र चालि। त्यागंति[1] तुपक नादति कराल ॥ १२ ॥
लगि गिरति सुभट घाइल घुमंति। करि मार मार ऊपर परंति।
किछ ढर्‌यो भानु तबि द्योस[2] मद्ध। भिर परे सूर चहिं जीत जुद्ध ॥ १३ ॥
कड़कंति दीह छुटकंति ज्वाल। कसियंति बहुर वारूद डालि।
छड़कंति लगति गज फेरि फेरि। गुलकानि ठोकि रिपु हेरि हेरि ॥ १४ ॥
धरियंति शिसत तोरा सु जोरि। धुखियंति पलीता ठौरि ठौरि।
बहु शबद तड़ भड़ होनि लागि। छुटि गुलकां ज्वाला जागि जागि ॥ १५ ॥
बडि उठय धूम लिय गगन छाइ। रज चढी उरध, रवि नहि दिखाई।
भट भिरे भेरि ललकार बोलि। इत उत धवाई परि गिरति डोलि ॥ १६ ॥
मिलि गए सूर इम आप मांहि। द्वै नदी बहति इक थान जांहि।
तुरकान सैंन उमडी बिसाल। गुलकान मार गेरे[3] उताल[4] ॥ १७ ॥
जट्टू प्रचंड को घरि लीनि। तुरंगनि धवाइ आगे सु कीनि।
वधिं[5] गत बहुत करि मारि मारि। हुइ निकटि जाइ तुपकनि प्रहार ॥ १८ ॥
तबि कह्यो मुहंमद खान देखि। 'इन लेहु प्रिथक करि जे अशेख।
भट अग्र रोक बहु सावधान। इक बार परहु सभि करहु हानि ॥ १९ ॥
सुनि सैनपती के बाक बीर। फिरि गए अग्र लिए घेर धीर।
जट्टू न त्रास चित तनक कीनि। ललकार सुभट गन धीर दीनि ॥ ५० ॥
इक बार मारि गुलकां गिराइ। भट परे उथल लगि मरति घाइ।
किसहूंनि सीस फूट्यो मरंति। किस केरि बहन गुलकां फुरंति ॥ २१ ॥
किस रिदा बिदीरनि परति भूम। किसी उदर लगी घायल सु घूमि।
किस बांह टूटि, किस टांग टूटि। बहु तुपक छोरि दल अधिक जूटि ॥ २२ ॥
बहु गिरे सिख्य तुरकांन संगि। कित परे मरे दीरघ तुरंग।
कितहूं भजंति छुछे पलांण[6]। कित घाइ सहत दरड़े किकान ॥ २३ ॥
जट्टू सु घिरति बड कीन जुद्ध। गन तुरक मारि मारति सुक्रुद्ध।
पिखि जथेदार कल्यान नाम। सो भयो अग्र बड जंग धाम ॥ २४ ॥

---

1. चलाते हैं। 2. मध्यान दोपहर। 3. गिराए। 4. शीघ्र। 5. बढ़ गए। 6. ज़ीन, पालान।

तुपकं तड़ाक बहु छोरि छोरि। हति करे तुरक तन फोरि फोरि।
जो हुते अग्र कुछ मारि दीनि। कुछ चले भाजि उर त्रास लीनि ॥ २५ ॥
करि हला हूल रोके प्रचंड। फिर हटैं बीर फोरंति तुंड।
तुरकान सैन सभि मोरि[1] दीन। रिसि परे सुभट रण अधिक कीनि ॥ २६ ॥

सवैया

बैरमखां मन कोप भयो, लघु बाहिनी ते किम त्रास को धारे।
जंग निसंग करो हटिकै इक बार तूफंगनि छोरहु सारे।
दौर परे गुरु सैन के ऊपर यौं गुलकां बरखी तिस बारे।
चेत मैं बारद छोर कै धायहु बग करे करका गन डारे ॥ २७ ॥

बैरम खान पर्‌यो जबि आइकै श्री गुरु के भट क्रोधति भारे।
नेर कर्‌यो गहि तोमर तीरनि मारंति बोलनि के ललकारे।
जो तुरकानि की सैन वधी बध कीनि सभी हयतें धर डारे।
यौं उथले रणबीर गिरे जिम गाज ते दीह समूह मुनारे ॥ २८ ॥

टूटि कै जूटि[2] तुफंगनि छूटति फेर अरे करपार निकारे।
ब्रिंद मनो चपला चपकैं लिप श्रोणत सों रंग लाल उघारे।
मोढनि ते कटि बाहुनि को तजि बाहनि[3] भूमि परे ति जुझारे।
ग्रीव कटी किस, जांघ कटी किस, छाती फटी गिर हाइ उचारे ॥ २९ ॥

लोथ पै लोथ गई गिर कै बहु श्रोणत के छुटि चाल पनारे।
बोलति घाव भका भक, ब्रिढ गिरे हुइ घाइल, जाति पुकारे।
हाथनि मैं तरवार गही निकसे तन प्रान पै नाहन डारे।
बायस, गीध, गुमाय[4] महां, बडि कंक[5] अघाति हैं मास अहारे ॥ ३० ॥

हत गुरु को वडि सूरमा जट्टू उचर्‌यो हंकारा।
खान मुहंमद तुरक का दोनहु भिरे जुझार ॥ ३१ ॥

नराज छंद

तबै सु कोप सिक्ख ह्वै करे क्रिपान नंगियां।
प्रहार बार बार ही सुरंग रंग चंगिया।
कड़ा कड़ी मचाइ कै नचाइ काल जीह सी।
उभार मारि मारि कै पुकार गाज सींह सी[6] ॥ ३२ ॥

---

1. फेर दी। 2. जोड़ी, टोली। 3. तलवार का बहना। (चलना) 4. गीदड़। 5. सफेद चील। 6. सिंह।

सधीर बीर बीर कै सरीर काटि डारि ते ।
अभीर पीर न गिनै समूह शत्रु मारते ।
घमंड जंग को पर्यो प्रचंड सूरमानिते ।
गिरंति खंड खंड ह्वै, नपंड[1] तुंड ठानिते ।। ३३ ।।

पाधड़ी छंद

तबि अरयो मुहंमद खान आनि । जट्टू सु बीर जहिं जुद्ध ठानि ।
बरखंति बहुत गुलकां लगंति । पट भरे श्रोण सूरा पगंति ।। ३४ ।।
रिसि भर्यो मुहंमदखानि भाखि । नहिं भाग, खरो रहु जीत कांखि[2] ।
मम हाथ केर इक तीर देखि । नहि जियति जानि दैहौं विशेखि ।। ३५ ।।
सुनि जट्टू बाक तिस नहिं सहार । ललकार पर्यो इक बिर पुकार ।
करि त्यार तुपक तिह तकि लच्छ । गुलकां चली निज देह रच्छ ।। ३६ ।।
ततकाल तुरंगम मारि लीनि । सर[3] चांप[4] ते सु चलिबो न दीनि ।
धर खरो भयो निज को संभारि । धनु खैंचि बान भरि करि प्रहार ।। ३७ ।।
छुटि गयो सरप सम जाइ लाग । जट्टू भुजान के बीचि खाग[5] ।
बिध गयो पारि, गुरु राखि लीनि । पुन अपर तीर मार्यो प्रबीन ।। ३८ ।।
तिह संग तुरंगम दीनि गेरि । जट्टू सु त्यारि भा ठांढि फेरि ।
करि तुपक त्यार ताकी सु बीर । धन, खैंचि मुहंमद ताकि तीर ।। ३९ ।।
छुटि परे दुहनि ते एक बार । इति गुलकां उत ते सर[3] प्रहार ।
दोनहुं सु बीर के वार दोइ । लगि दुहनि अंगि उर बिधति सोइ ।। ४० ।।
जट्टू के रिदे लगि तीर पारि । गिर पर्यो भूमि खै कै भवारि ।
उत लगी जाइ गुलकां प्रचंड । फटि गयो तुंड भट पिखति झुंड ।। ४१ ।।
दोनहु सु बीर जूझे जुझार । दल दुहनि दिशनि ते भट निहारि ।
अरिराइ परे ऊपर सु धाइ । इक बार खैंचि करवार, धाइ ।। ४२ ।।
लरि मरति तुरति नहि अटक होति । तरवार कि तोमर गहि उदोत ।
वारनि प्रहार नहि देरि लाइ । रिस भरे अरे ही कटति भाईं ।। ४३ ।।
दल मर्यो कितिक लोथन बिथारि । परि रहे बीर बंके जुझार ।
इक बारि मारि सिक्खनि सु कीनि । नहिं तुरक अरें बड त्रास लीनि ।। ४४ ।।
गुरु बीर एक दस शत्रु संगि । ठहिरै न अग्र भा भीम जंग ।
बहु करी मार कल्यान बीर । तोमर तुफंग तरवार तीर ।। ४५ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे 'जट्टू अरु मुहंमदखान बध' प्रसंग बरननं नाम द्वै त्रिसंती अंशु ।। ३२ ।।

1. पीला मुंह । 2. आकांक्षी । 3. शर, तीर । 4. कमान । 5. चुभ गया । 6. धरती पर ।

अंशु ३३

बैरमखान अर मथरा सिक्ख बद्ध प्रसंग

दोहरा

तुरक त्रास धरि जवि भजे देखे अबदुलखान ।
बडो क्रोध करि तप गयो बोल्यो दुशट महान ॥ १ ॥

सवैया

बैरमखान को तीर बुलाइ कै कोप को धारि कह्यो समुदाई ।
क्यों न थिरो संग्राम पर्‌यो अवि भाजिकै जाहुगे कौन से थाईं ।
क्या तुम लाज पै गाज परी, बहु बोलति थे मिलिके अगुवाई[1] ।
कौन अरै हम संगि महां भट, थोरे ई सिक्खनि दीनो पलाई ॥ २ ॥
तूरन तूंरन को करि जाहु सभै भट रोकहु दै ललकारा ।
बैरमखान सुने बच वान से, क्रोध भयो नहिं जाइ सहारा ।
लै दल को उमड्‌यों इक वार ही । पीसति दांतनि को बल धारा ।
आइ पर्‌यो गन सिक्खनि पै थिर होति भए बड बीर जुझारा ॥ ३ ॥
मार तुफंगनि माची घनी, न अरे सिख, बैरमखान भजाए ।
तोमर तीरनि सों गुलकानि करी वरखा इकसार धवाए ।
दोनहुं की दिशि ते मरि कै भट हूर बिमान चढ़े मुद पाए ।
देहि तजी सभि पापनि के जुति, पुंन सरीर को धारि सिधाए ॥ ४ ॥
श्री हरि गोविंद बीर बहादुर आदद ते मथरा ढिग हेरा ।
जाहु बली ! इह खांन जु आवति मारति हैं उर क्रोध घनेरा ।
रोकहु अग्र, हतो करि जंग, कहावति है इह बीर बडेरा ।
मारे घने भट, ना अटक्यो कित, काटति हाथ गही शमशेरा[2] ॥ ५ ॥
सादर श्री गुर ते सुनि कै मथुरा मन आनंद को उपजाए ।
'आप सहाइ करो प्रभु पूरन मारति हौं इस को उथलाए ।

---

1. पहले । 2. तलवार ।

क्या इह गीदी गवार अहै गन काल के प्रेरे चले इत आए।
रावर के बल दीह प्रतापते शाहजहां को गहैं हम जाए।। ६ ।।
यौं कहिकै गुरु आइसु ले, करि बंदन को, हय तेज कर्‌यो।
चार सै सूर चले जिह संग सुं मारि ही मार को शेर पर्‌यो।
दीह दममा मनि चोब लगे सुनि बीरनि के उर मोद भर्‌यो।
तेज़ तुरंग संभार तु फंगनि जंग रच्यो उतसाहु धर्‌यो।। ७ ।।

बैरमखान हुतो जिस थान करै भट हान गयो तहिं धाए।
यौं ललकारि पर्‌यो तुरकान मैं, शेर परै म्रिग ब्रिंद मैं जाए।
मारि करी बरखा गुलकानि को ज्यों धन ऊनबकै बरखाए।
सूर दड़ादड़ भूमि परें बन मैं तुरखाती[1] ज्यों काट गिराए।। ८ ।।
लोह मच्यो दुहूं ओरनि ते जनु ओरनि[2] ते क्रिश पाक गिरी।
'हाइ' उचारति घाइल आरत, बीर बंगारति[3] घीर धरी।
आपस मैं उरझे इक बार ही मारि क्रिपानि दीह करी।
श्रोणति भूमि रंगीन भई गन लोथनि पै गन लोथ परी।। ९ ।।
बीर टिके न कटे रन खेत मैं, ओज ते नांहि मिटे लरिकै।
होत भए पट लाल समूहनि चाचर[4] खेलति ज्यो फिरि कै।
काशट-पिशटनि[5] को बड नाद भयो तिस काल रहे अरि कै।
को न मिट्‌यो दुहूं ओरनि ते चपि आपस बीचि गिरे मरि कै।। १० ।।

मार मची, कहिं 'मारि ही मार' सु मार करे हथियारनि संगा।
भीम भयो रण खेत महां पिखि काइ के उर होति अतंगा।
सूरनि के मुख लाली चढी रिपु मारति हैं बिच जंग निसंगा।
सीस कटे गन, बाहु कटे गन, बाह[6] कटे गिरगे[7] बिन अंगा।। ११ ।।
रोकी अगारी जबै मथरा तबि बैरम खान तुफंग चलाए।
'मारहु रे किम ठांढि रहे, भट थोरे अहैं किसने अटकाए।
ले करि संग सहस्र सूरमे आइ पर्‌यो हथिआर उठाए।
मारि तुफंगनि ऐसी करी दिशि दोइन के हय ते उथलाए।। १२ ।।

केतिन केरि तुरंग हते रणि, केतक बीर मरे उर छोरे।
केतिनि की भुज काटि दई अर केतिनि के गुललर्का उर फोरे।
केतिनि की कटि ग्रीव गई सु कबंध डठे पिखि दारून टौरे।
केतिनि की कटि जंघ गई लंगरे सु खरे मुख शत्रुनि ओरे।। १३ ।।

---

1. लकड़ हारा। 2. ओले। 3. ललकारते । 4. होली 5. बंदूक 6. वाहन, घोड़े 7. गिर गए।

रोस भर्‌यो मथुरा हय फेरति मारि तुफंगन शत्रु हटावै।
दुंदभि दीह बजैं दुहं ओरनि तीरनि तोमर ताक चलावै।
'मारहु मारि' पुकारत हैं मुख श्रोण भरे असि को चमकावै।
टूट परे भट जूट[1] गए, अटके न मिटैं, लटकै झटकावै ॥ १४ ॥
यौं जबि मारि मची दुहुं ओर ते, बीर गिरे मरि कै समुदाई।
बैरमखान अर्‌यो तबि आप ही बीर कितेक हैं संग सहाई।
पैंचि लई करवारनि म्यान ते मारति वेग और अगुवाई।
आवति गेरति सूरनि को, ठहिरै नहिं को, अस मार मचाई ॥ १५ ॥

हंसक छंद

बैंरम खाना। कीनि मदाना। खैंचि क्रिपाना। बीरनि हाना ॥ १६ ॥
कोन अरंता। मारि गिरंता। रौर मचंता। जो वलिवंता ॥ १७ ॥
घोर नचावै। वार चलावै। घाहनि घावै। है उथलावै ॥ १८ ॥
जानति बिद्या। श्री असि छिद्या। ना अटकता। सिक्खन हंता ॥ १९ ॥
सूर जु औरे। आवति दौरे। तोमर तीरं। वेधि सरीरं ॥ २० ॥
सिखनि हेरा। बीर बडेरा[2]। मारति खगं। धावति अग्गं ॥ २१ ॥
दीह हंकारी[3]। आह अगारी। सैन संघारी। है बलि भारी ॥ २२ ॥

हरि बोल मना छंद

पिखि कै मथुरा। रण भा सुथरा। भट काटि गिरे। गन देह परे ॥ २३ ॥
जहि खान खरो। तहि आनि अरो। भट ब्रिंद लिए। तहि ठांढ किए ॥ २४ ॥
अगनी[4] उगला। गुलकानि डला[5]। कसि छोरि दई। बहु मारि कई ॥ २५ ॥
भट भूमि गिरे। हय छूछ फिरे। तुरकानि हने। तजि प्रान घने ॥ २६ ॥
जिसि द्वै रिसकै। तुपकां कसिकै। समुदाइ छुटैं। मुख सूर जुटै ॥ २७ ॥
नहि पाछि हटे। तिस थान लिटे। सि फूटि गए। गुलकानि हए ॥ २८ ॥

सवैया

शीघ्र चलाइ कुदाइ तुरंग को रोस भर्‌यो मथुरा मन मैं।
बैंरमखान के नेर ढुक्यो पिखि आवति दीह वध्यो रन मैं।
ऊचि पुकार कह्यो ललकार 'हने भट तैं प्रविश्यो गन मैं।
सूर मिल्यो नहिं को अविलो, थिरता करि बीर अयोधन मैं ॥ २९ ॥

1. व्यस्त हो गए। 2. अधिक बड़ा, श्रेष्ठ। 3. मानी। 4. बंदूक। 5. डालीं।
6. जिनके साथ युद्ध न किया जा सके।

सामुहे मोहि खरो अबि होहु, टरो नहि, तोहि दिखवाहुं हाथा ।
यौं सुनि बैरम खान हस्यो 'तुम जानति क्या हथिआरनि गाथा ।
मैं जबिलौं न कुप्यो तुम पै तबि लौं तुरकानि हनहु बलि साथा ।
देखहु मारति हौं सभि को करि हौं बहु रुंड कटौं गन माथा ।। ३० ।।

बोलति बैरमखान 'खरो', तबि जोरि तुफं को घोर प्रहारी ।
यौं कड़की जन, गाज परी, लखि खानि तुरंग कुदाइ अगारी ।
आप गयो बचि बाहनि के लगि टूट गई तिह टाग पिछारी ।
तूरन ही अविनी गिरगापद तीन ते नांहिनि चालि अगारी ।। ३१ ।।

बैरमखान खरो धरती पैर ढाल क्रिपान को हाथ संभारे ।
ह्वै हुशिआर प्रहारनि लागि कटै गन अंग धरा पर डारे ।
घोरनि कै अरु सूरनि कै असि मारति, आप बचावनि धारे ।
कते गिरे भट नांहि संभारति केतिक आइ परैं ललकारे ।। ३२ ।।

श्री गुरु के भट मारनि के हित बैरमखान को घेरि लयो ।
खाइ प्रहार नहीं किसि ते, करि ब्रिंद उपाइ न घाई घयो ।
चंचलता धरि नाचति है जनु, ढाल ते वार को रोक दियो ।
तेग ते मारति आपि बचाइ कै सूर हिरान भए न ह्यो[1] ।। ३३ ।।

धौं पिखि कै मथुरा सिसि कै हय ते उतर्यो ततकाल तहां ।
दांव तक्यो करवार न खाइ, हतै उत धाइ बचाइ महां ।
तूरनता धरि कै तबि औचक जोर कर्यो हति वार जहां ।
दौन भुजान के बीच गह्यो, छुटि जान चह्यो, छुटिबो न लहा ।। ३४ ।।

बाहिन के बल को करि कै उलटाइ कै बैरमखान गिरायो ।
छीन क्रिपान हनी तिस ग्रीव कट्यो धर ते सिर दूर बगायो ।
देखति ही मथुरा बल को गुरु को दल दीरघ ही हरखायो ।
खान की सैन रिसी अतिशै जिनको सिरदार धरा उथलायो ।। ३५ ।।

आनि परे मथरा सिर ऊपर तोमर तीर हनै तरवारै ।
घेरि लियो बड बीर बहादुर राति को चंद जथा परवारैं ।
ह्वै पुरज़े पुरज़े गिर गा तबि आपि मर्यो बहु शत्रुनि मारै ।। ३६ ।।

1. मारा नहीं गया ।

आपस मैं मिलि सैन गई तजि हाथ तुफंगनि को ललकारे।
तोमर की बड मार मची तलवार नची, चलि लोहू पनारे।
फेरि कटारनि जूटि गए जनु हेरि बरंगनि[1] प्रान दे वारे।
मारि मरे धर[2] बीच परे, धर[3] सीस कटे न हटे पिछवारे ॥ ३७ ॥

दोहरा

इम माच्यो घमसान तवि मरे हजारहु वीर।
पिखि भाजे काइर तबै, सूर रहे धरि धरि ॥ ३८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे 'बैरमखान अर मथरा सिक्ख बद्ध' प्रसंग नाम त्रै त्रिसती अंशु ॥ ३३ ॥

---

1. अप्सरा, हूर। 2. धरती। 3. धड़।

अंशु ३४

बलवंड खान कल्याना सिख बध प्रसंग

दोहरा

बजे जुझाऊ दुहू दिशिनि उमडि चली बड सैन ।
कल्याणा तबि कोप कै तुरकनि को पिखि नैन ।। १ ।।

भुयंग छंद

जहां भेड़ गाड़ो, कराचोल चालें । पर्‌यो धाइ सूरा अनी ब्रिंद हालैं ।
तुफंगानि मैं देइ डालंति गोरी । करयो ढोइ ढूके इंकबार छोरी ।। २ ।।
पलीते धुखे ब्रिंद ज्वाला उगाली । उठै नाद ऊचे दुऊ ओर चाली ।
बही शूक गोरी सड़ाके लगंती । किसू तुंडकै मुंड खंडै धसंती ।। ३ ।।
करैं फेर बारूद डालें शिताबी । लगै सूर घूमैं गिरै ज्यो शराबी ।
छणंकार होवै गजं[1] केर ठोके । कड़ा काड़ छोरैं सभै शत्रु रोके ।। ४ ।।
जहां खान के चुगे[2] बांधे लरंते । करी मार भारी गिरंते मरंते ।
परे जाइ जोधा गुरू सिक्ख बंके । करैं शीघ्रता भूर नाही अतंके ।। ५ ।।
धरैं सूरता श्री गुरू को दिखावैं । वंगारैं मलेछानि सौहें चलावैं ।
गिरे बीर बंके करे मूछ बंकी । प्रहरैं किते कोइ भाजे सशंकी ।। ६ ।।
परी लोथ पे लोथ पोथानि[3] होई । तुफंगैं गिरंती संभारंति कोई ।
उतै खान ढूके इते सिक्ख गाजे । भए संमुखै सूर पीछै न भाजे ।। ७ ।।

दोहरा

मार मची दुहूं ओर ते भट कल्याना धाइ ।
धर्‌यो बीर तुरकान के 'मारि मारि मुख गाइ ।। ८ ।।

पाधड़ी छंद

पिखि अबदुल खां 'रण भा विसाल । गुरु बीर आनि प्रविशंति जाल ।
कटि गई बाहनी बहुत खेति । गन खान अग्र दिढ नहिं सुचेत ।। ९ ।।

---

1. बंदूक । 2. टोली । 3. ढेर ।

उतसाह हीन नहिं लरति धाइ । तबि क्रोध धारि बोल्यो सुनाइ ।
बलवंड खान को ढिग बुलाइ । 'तुम हुतो बीर तोमर अमाइ ।। १० ।।
तन देति क्यो न अबि लरन हेतु । गुर सिक्खनि रोक्यो जंग खेत ।
जे हरिगुबिंद को लिहु न मारि । नहिं पकरहु आपि जि. हौ जि हारि ।। ११ ।।
तुम कहो कहां बैठनि सथान । नहिं बीच सु बोलनि देहिं खान ।
गुर अलप सैंन ते अरहि जंग । पुन लरहु कहां निज़ अधिक संग ।। १२ ।।
इह जथेदार आवति अगाइ । सुरखा तुरंग चंचल कुदाइ ।
इस हतहु अग्रछै कै रिसाइ । पुन गुरु बाहनी दिहु पलाइ ।। १३ ।।
अटकै न कोई हल्ला सु घालि । भट अली बखश तिस लेहु नालि ।
बलवंड खान परचंड बीर । सुनि कै सक्रोध बच गति अभीर[1] ।। १४ ।।
घोरा कुदाइ तोमर संभारि । ढिग अली बखश लीनो हकारि ।
हुइ समुख चल्यो गुर के रिसाइ । भट द्वै हजार जिन संग पाइ ।। १५ ।।
इम भए अग्र गुर समुख दौरि । करि हलाहूल संग्राम ठौर ।
तबि पिख्यो कल्याने क्रोध धारि । तिह समुख होइ ऊचे पुकारि ।। १६ ।।
मैं खरो तोहि को हतनि हार । किम जाति अग्र को हमहु टारि ।
बिन मरे कि मारे जंग मांहि । इत उतहि जाति इह उचित नाहि ।। १७ ।।
इम कहि संभारि तुपकं प्रहार । बलवंड मुर्यो सुनि क्रोध धारि ।
क्यो चहिति न जीवन, प्रान देति । कहि भयो समुख, दोनहु सुचेत ।। १८ ।।

कबित

परयो रौर दौरि करि ठौर ठौर कुपे बीर,
दो दो गोरी ठोंक त्यार तुपक संभारि कै ।
परे अरिराइ, धाइ मिले समुदाइ जाइ,
हयनि कुदाइ कै पलाइ अरि मारि कै ।
ज्वाला[2] उगलाणी ते पठाणी सैण हाणी गण,
मांगि मांगि पाणी प्राण छांरे तन डारिकै ।
आयुध प्रहारिकै सुभटनि बंगारिकै,
मरे हैं अरि मारि कै, गिरे हैं खान हारिकै ।। १९ ।।
खान बलवंड बलिवंड भुजदंडनि ते,
तोमर प्रचंड को भ्रमाइ वारि बारि ते ।
घोरनि को मोरनि मनिंद सो नचाइ करि,
मारै सिक्ख ओर, उर फोरि फोरि डार ते ।।

---

1. निडर । 2. बंदूक ।

बाहुनि को बलकरि बाहनी हिलाइ दई,
बाहनि को प्रेरि बाहु घाउ, बहु मारिते ।
ऊचे सो पुकारते, बंगारते, न हारते हैं,
खरे ललकारते तुफंगनि प्रहारते ।। २० ।।

जबै बलवंड रन मंडि कै घमंड[1] कर्यो,
भए खंड खंड चली चंड जो क्रिपानते ।
सिक्खनि समेत ह्वै कल्याने ने बिलोक्यो,
तबि बाजी को त्रपाइ[2] भयो आगे कोप ठानिते ।
गोरी दोइ डारिकै तुफंग निज त्यार करि,
मेलिकै पलीता को उभारी धरि पानते ।
लगी जाइ ज्वान ते सु प्रान करि हानि ते,
गिरायो है किकानते न उठ्यो तिस थानते ।। २१ ।।

नेज़ा नहि त्याग्यो, अनुराग्यो जंग,
भंग भय देखि कै बखश अली बिसमिओ बिचारिकै ।
बीरनि सों कह्यो 'बलवंड खान गिर्यो मर्यो,
हूजीए अगरी न तु धावैं रिपु मारिकै ।
रोको आग्ग जाइ ब्रिंद तुपक चलाइ धाइ,
बडे भट घाइ, खाइ मारे तन डारिकै ।
आयुध संभारिकै बिसाल धीर धारिकै,
[3]अरीजै अरि मारिकै, सु होश को संभारिकै ।। २२ ।।

रसावल छंद

कहै यौं पुकारी । पयाने अगारी ।
तुफंगै संभारी । बरूदै सुडारी ।। २३ ।।
गजं ठोकि गोरी । करी शत्रु ओरी ।
पलीते मिलाए । सु तोडे धुखाए ।। २४ ।।
समूहे अराती[4] । तकैं ताहि छाती ।
छूटी शूंक[5] जाती । लगी बेग ताती ।। २५ ।।
बडे शत्रु घाती । तुरंगैं पपाती ।
भरे श्रोण झूले । पलासं प्रफूले ।। २६ ।।

1. घमासान । 2. कुदा कर । 3. अड़ जाइए । 4. अरिगण, शत्रु । 5. फुंकार ।

अली बखश धायो। तुरंगै नचायो।
कल्यानै सु हेरा। कह्यो ताहि वेरा ।। २७ ।।
हत्यो खान आगे। अबै जे न भागे।
पठौं तांहि संगा। संभारी तुफंगा ।। २८ ।।
कबै बाम पासे। तुरंग निकासे।
कबै हाथ दाएं। चलाकी[1] दिखाए ।। २९ ।।
चुकै नांहि गोरी। जिसे तकि छोरी।
हत्यो सो निसंसै। बडे वीर ध्वंसै ।। ३० ।।
कल्याना जु धायो। अगाऊ सु आयो।
अली बखश धारी। तुफंगं तयारी ।। ३१ ।।
तक्यो अग्र आवा। सु तोरा झुकावा।
शिताबी पलीता। उठायो नाद कीता[2] ।। ३२ ।।
छुटी आइ गोरी। रिदा दीनि फोरी।
गिर्यो झूम ऐसे। कट्यो रूख जैसे ।। ३३ ।।
मर्यो जे कल्याना। भए मोद खाना।
हला हाल कीने। चड़ी चौंप चीने ।। ३४ ।।
अगाऊ पयाने। भए सावधाने।
रणं रंग राचे। महां रोस माचे ।। ३५ ।।
क्रिपानै निकारी। परे एक बारी।
तछा मुच्छ काटे। किते सिक्ख डाटे ।। ३६ ।।
किते मार नेज़े। परोए करेजे।
किते मुश्ट जुधं। करैं सूर क्रुद्धं ।। ३७ ।।
कराचोल भारे। सु खंडे दुधारे।
तजी ढाल आगे। भिरे शंक त्यागे ।। ३८ ।।
इते सिक्ख कूकैं। उते खान ढूकैं।
सिपाही करारे। नही कोइ हारे ।। ३९ ।।
कटे अग्र ह्वै कै। हतैं कोप कै कै।
बडो श्रोण चाला। सु लोथैं कराला ।। ४० ।।
परी खेत मांही। बिहंगे सु खांही।
फिरैं स्याल माते। भर्ट मास खाते ।। ४१ ।।
गनं कंक आए। थिरे जंग थाएं।
बडी ग्रिज्झ बोलैं। भई ब्रिंद डोलैं ।। ४२ ।।

---

1. चालाकी। 2. किया।

दोहरा

फिरैं जोगनी भीखनां करती श्रोणत पानि।
भूत प्रेत नाचति हसति उठि उठि परति मसान ॥ ४३ ॥
कतल भए सिख गन जबै ओरड़ परे पठान।
लशकर दीरघ जिनहु को करहिं कहां तक हान ॥ ४४ ॥
सिखनि को अरु खान को पर्यो जंग बिकराल।
दोनहुं मरि करि गिरति हैं लोथ लोथ पर जाल ॥ ४५ ॥
केतिक सिर नांगे परे, जंबुक खैंचति मास।
द्रिग उघरे जनु जियति हैं, निकसे प्रान तहांस, ॥ ४६ ॥
तोमर तखारनि तबर[1] तेगे तीर तुफंग।
अंग अंग बिच जंग के श्रोण लाल तन रंग ॥ ४७ ॥
मरे हजारों हय बली छूछे को बिचरंति।
को घायल ह्वै करि खरे घूमति नहिं चलंति ॥ ४८ ॥

इति गुर प्रताप सुरज ग्रंथे खशटमि रासे 'बलवंडखान कल्याना सिख बध' प्रसंग बरननें नाम चतुर त्रिसंती अंशु ॥ ३४ ॥

1. कुल्हाड़ा।

अंशु ३५

इमाम बखश अली बखश नानो बध प्रसंग

दोहरा

अलप सिक्ख आगे रहे घेरे आन पठान।
श्री हरि गोविंद देखि कै कोपे रिदे महान ।। १ ।।

सवैया छंद

अली बखश सभि लशकर आगे हतहि तुफंग भयो हंकार।
सैन सकल तुरकानी उमडी बहु धौंसनि की उठि धुंकारा।
हाथनि गहे पताका आवति फररे छोरि दिए तिस बारि।
भई जीति मनि जानति मूरख तुरंग धवाइ परे इक सार ।। २ ।।
श्री गुर चांप कठोर संभारा बान पनच[1] के विच बगराइ[2]।
ऐंचि कान लगि खपरा छोर्‌यो गयो बीर बंधति अगवाइ।
इक दुइ तीन चार लगि पंचहुं, जो सनमुख तिस भेदति जाइ।
अबदुलखान खरो जहिं पाछे तहिं लौ पहुंच्यो भ्रिदन घाइ ।। ३ ।।
इम करि कोप प्रहारे सर खर, गिरे सैंकरे मुगल पठान।
'को मारति इहु दिखीयति नांहि न हमरे बीर कीनि गन हान'।
ठटक गए भट अटक रहे तहिं, नाहिं आगे पु कीनि पयान।
तबि नानो की दिशा देखि करि दया द्रिशटि ते हुकम बखानि ।। ४ ।।
अली बखश ! इह आगे आवति तोहि हाथ ते अबि म्रितु होइ।
तुपकं अचूक चलावति, चौकर बचहु आप, इस लेहु परोइ।
'सुनि सतिगुरु ते नानो तिह छिन धनुख संभार्‌यो निशठुर जोइ।
घोरा प्रेरति हेरति रिपु को आगै गयो बीर बड सोइ ।। ५ ।।
बीरनि पर तीरनि की बरखा घन समसर करता इक बारि।
संग तीन सै सिक्ख समुख भे छुटी तुफंगनि शलख उदारि।

---

1. चिल्ला। 2. चलाया।

करि हल्ला बडि मेल कुलाहल शबद तड़ाभड़ उठि कड़कार।
वधे पठांन दड़ादड़ गेरे धर ऊपर मरि परे जुझार।। ६।।

अली बखश को ताकि करि नानो तीखन भीखन[1] बान निकारि।
जिसते जीवति रहहि न शत्रू बाग उठाइ दुराइ[2] अगार।
सनमुख ह्वै करि ऐचि कान लगि अली बखश पिखि तुपक संभार।
त्यार करनि लाग्यो तबि तूरन तोरा जर्यो पलीते धारि।। ७।।

त्यारि करति ही रह्यो मंद मति इतने महिं नानो बलवान।
तक्यो तुंड दर खपरा छोर्यो, गयो सरप के होहि समान।
धरी शिसत बंदूक रही कर बरमी जिम प्रविश्यो मुख बान।
गिर्यो तुरंग ते खाइ भवारी औंधो पर्यो जंग के थान।। ८।।

अली बखश को मारि लीनि जबि सभि अविलोकति जियति पठान।
धर्यो त्रास, कुछ पाछे हटिगे, सिख ओरड़े बडि बलवान।
ऐचि क्रिपानैं लई महानै शत्रुनि हानै बड रण ठानि।
हली सैंन को जबहिं बिलोका तबि अबदुल खान।। ९।।

हुतो इमाम बखश तबि नेरे कह्यो क्रोध ते 'कहां पिखंति।
गुर ते तुरक त्रास उर धरि करि धावति आवति आय धवंति।
ले निज लशकर सनुख ह्वै करि मारह सिक्खनि को बलवंत।
भाग कहां जाहुगे मूरख ! मोरहु सकल धीर धरियंति।। १०।।

सुनति इमाम बखश तबि धायहु ले करि संगि सऊर हज़ार।
जहां लरति नानो भट मारति तीर तुफंग चलति हथिआरि।
तहां आनि ज़ूट्यो, बहु छूटैं गोरी, फोरहिं रिदे जुझार।
गिर परहि पवंगम[3] ते भट अंग भंग को करहिं पुकारि।। ११।।

भिरे सिक्ख गुरा के संग तुरकनि मुरे न पीछे इक पग थान।
चमकहिं खड़ग श्रोण सों लिपटे, कटहिं अंग भट धाइ महान।
हतहि सीस पर मुख लगि चीरहिं केतिक के मुख बजहिं क्रिपान।
करन, नासिका छिदे कितिक के केचित करे बिलोचन हान।। १२।।

मोढे लगहि बीच ते चीरति शसत्र गहे हाथनि करि जाति।
केतिक कंठ कटति सिर उतरति, धर गिर परति, कितिक तरफाति।
कट[4] ते कटति न मिटति अटक भट, मारति खरे खड़ग सहिगात।
श्रोणत बहति अनेकनि के तम घाउ भका भक बोलति घाति।। १३।।

---

1. भीषण, भयंकर। 2. दौड़ा कर। 3. घोड़े 4. कटि, कमर।

समुख इमाम बखश तबि होयसि हय चरिबे विद्या वड जानि ।
अधिक फंदावति इत उत फेरति कबहि तुफंग हतहिं ढिग आनि ।
कबि ने जागहिं मारति धावति कबहुं सुभट के घाइ क्रिपाना ।
नानो संग अर्‍यो तबि ह्वै ढिग दोनहु गहे खड़ग खर पान[1] ॥ १४ ॥

फेरि तुरंगम दाव बिलोकहि दोनहु चमकावह शमशेर ।
घेरनि घेरनि की बहु विद्या करति आप महिं ढूके नेर ।
जबि नानो ने खडग प्रहार्‍यो रोक्यो निज करि खड़ग अगेर ।
दुतिय वार पुन कीनसि तूरन बाम हाथ काट्यो बिन देरि ॥ १५ ॥

कुप्यो इमाम बखश कर कटिगा, बल ते मार्‍यो खड़ग उठाइ ।
लगि सिकंध छाती लगि चीर्‍यो गिर्‍यो तुरंग परते उथलाइ ।
सादर देवबधूनि उठायहु नानो लीनि बिमान चढाइ ।
सिक्ख बिलोकि ओरड़े सनमुख तोमर तीर तुफंग चलाइ ॥ १६ ॥

इक कर कट्यो एक कर मांही खड़ग नहि मारति बिचलाइ ।
तुरक हजारहु 'मारि मारि' कहि आइ परे सिक्खनि पर धाइ ।
पर्‍यो रौर तबि उठ्यो शोर बड, दुहरी चोब्र दमामे वाइ[2] ।
तुमक तमाचे, तोमर, तीरनि, तरवारनि, तबरनि तर घाइ ॥ १७ ॥

भागे सिक्ख कितिक हटि पाछे केचित पहुंचे गुरु ढिग दौरि ।
महाराज ! नानो रण मार्‍यो तुमरो सरदार तिस ठौरि ।
परयो जोर उत सिक्खनि ऊपरि भेजहु जथेदार को औरि ।
देखहु करहु बिलोचन उत को वधे[3] तुरक मेल्यो बड रौर ॥ १८ ॥

सुनि श्री हरिगोविंद निहार्‍यो कर्‍यो पिरागे संग बखान ।
तूरन तूं रन को तहिं पहुंचहु जहां लराई ज़ोर महान ।
जगना किशना सुभट अमोलक पिखि ठांढे इन पैठयो सुजान ।
और सूर सभि दौर ठौर तिस जाइ लरे मेल्यो घमसान ।। १९ ।।

चली तुफंग तमाचे तूरन, तोमर तीरनि केर प्रहार ।
हटति न पीछे, थिरे खान तहिं, परे सु जोधा करे सुभारि ।
पर्‍यो संग्राम घोर छिन महिं चहुं दिशि चमकति गन तलवार ।
फिरति इमाम बखश इक कर कटि, जगने मारि दीनि बल धारि ॥ २० ॥

जिस थल महिं गुरु भट दिढ ह्वै कटि लरति रहे सो लियो छुटाइ ।
गाडि पताका तहिं भे गाढे नाहि पाछे पुन पाइ हटाइ ।

---

1. हाथ में । 2. बजाई । 3. बड़े ।

सो बल चहिति छुटाबनि को पुन ले करि सग सुभट समुदाइ।
धर्यो पिरागा ऊपरि तिनके करवारनि की मार मचाइ ॥ २१ ॥

गिरे पठान मुगल ह्वै पुरज़े नहि छोरति निज पाइ जमाइ।
गुरु भट भनै 'सु थान छुरावहु पर्यो ज़ोर रण को तिस थाइ।
बिधीचंद गुर साथ बखानी 'मो प्रति हुकम देहु फुरमाइ।
तहिं संग्राम भयानक मच्यो पहुंचौं शीघ्र सु बनौं सहाइ ॥ २२ ॥

सुनि सतिगुर ने आइसु भाखी तिहं सथान पर जुटिगे बीर।
जाहु छुटाइ तांहि हटि आवहु, ठहिरहु नहिं चिरकाल, सधीर।
सुनति तुरंगम गयो धवावति संग लिए जोधा गन भीर।
मारि मारि करि जाइ परे तब्रि हुते हजारहुं गिरे सरीर ॥ २३ ॥

खड़ग प्रहारति सुभग बडेरे दुहि दिशि ते माच्यो घमसान।
भई लोथ पोथनि अनगन तहिं मारि मरे गिरिगे तिस थान।
बिधीचंद पहुंच्यो तिस थल थिर छीन पताका लीनि सुजानि।
कितिक कटे अर कितिक पलाए निज थल पर सिख भे सवधान ॥ २४ ॥

गए दौर करि, पिखहिं न पाछे, जहां बिलोकति अबदुलखान।
'कतल पठान घने तहिं गिरिगे। भागी चमूं त्रास को ठानि।
लीनी छीनि पताका तुमरी भयो बिसाल तब्रहि घमसान।
अर्यो न कोई, खर्यो न होवा, पर्यो महां रण, थिर्याने थान ॥ २५ ॥

कटे तहां ही हटे न थोरे, जहिं ते भाजे सिख पुन आइ।
ज़ोर पाइ करि छीन लीनि सो, आगे आवति मारि मचाइ'।
अबदुलखान कान इम सुनि करि भयो हिरान मनहि पछुताइ।
औचक जंग पाइ गुर अपने सुभट संग के सभि मरिवाइ ॥ २६ ॥

करमचंद अरु रतन चंद जुग दोनहुं को रिस कहि बुलवाइ।
बूझनि करे 'कहां तुम हेरति प्रेरति चमू अधिक मरिवाइ।
कहति हुते तुम गुरु ढिग जोधा नहिको रंक सिक्ख समुदाइ।
आटे महि जिम लवण बतावति, अबि क्या भयो दिए सभि घाइ ॥ २७ ॥

पंच हज़ार चमूं के संगै पंच चमूपति दिए संघार।
बचे सु भाजे आवति इति को आगे भई गजब की मार।
नबी बखश नंदन बड मेरो तिसके साथ सुदोइ हज़ारि।
और हज़ार दोइ संग लीजहि गमनहु आगैं जहिं बड रार[1] ॥ २८ ॥

---

1. युद्ध।

मैं आयो तुमते कुछ पाछे, जहिं लगि गुरू तहां लगि जाइ।
गहहु कि मारहु बेग सिधारहु, बोल्यो रतनचंद बिसमाइ।
'नहीं सैन कुछ तुम भी जानहु। कौन लर्यो एतो अगुवाइ।
अब हम जैहैं, पिखहु लरैहैं, किम अटकहिं सभि जाहिं पलाइ ॥ २९ ॥

दोहरा

नबी बखश पित सो कह्यो 'क्यों चिंता चित दीन।
जब लौ मैं पहुंच्यो नहीं तबि लौं संधर कीनि ॥ ३० ॥
देखहु कैसे मैं हतौं, कौन लरैगो आनि।
अनिक जाति के रंक नर इकठे करि दल ठानि ॥ ३१ ॥

हंसक छंद

मैं गहि लैहौं। न अटकैहौ।
कौन अरैगो। जंग परैगो ॥ ३२ ॥
आबहु पाछे। आयुध काछे[1]।
कोइ न झालै। जे भजि चालै ॥ ३३ ॥
तौ तुम रोको। ठांढि बिलोको।
छोरि तुफगें। घेरि निसगें ॥ ३४ ॥
काज सुधारो। धाम पधारो।
लाज रखीजै। कीरति लीजै ॥ ३५ ॥
यौं कहि चाला। कोप बिसाला।
लै करवाला। सुंदर ढाला ॥ ३६ ॥
बंब लिआला। तोमर भाला।
रूप कराला। लोचन लाला ॥ ३७ ॥
प्रेरि तुरंगा। चंचल अंगा।
अग्र कुदावा। ज्यों नट जावा ॥ ३८ ॥

दोहरा

अपैर चमूं चाली तबहि जिस जल केर प्रवाह।
रतन चंद भा एक दिशि धाए करति उमाह ॥ ३९ ॥
करम चंद दूसर दिशा धीर देति बडि बीर।
गहि लैहैं अबि गुरू को पहिले हल्ले चीरि ॥ ४० ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रथे खशटमि रासे 'इमाम बखश अली बखश नानो बध'। प्रसंग बरननं नाम पंच त्रिसंती अशु ॥ ३५ ॥

---

1. कस कर सजाए हुए।

अंशु ३६

चंदू सुत गहि कै छोरनि प्रसंग

दोहरा

दुंदभि बजे अनेक ही दस सहस्र बड सैन।
उमडी आवति जंग को बिधीचंद पिखि नैन॥ १॥

निसानी छंद

पिख्यो पिरागा निकट निज तिसको समुझायो।
करहु, शीघ्रता जाहु अबि गुरु के ढिग धाओ।
'आगै आवति बाहनी सभि ज़ोर लगाए।
पाछे अवदुल खान है फरने छुटवाए॥ २॥
जंग अंत को चाहति है प्रेरे सभि काला[1]।
धुर उड्यो पूर्यो गगना जनु, घटा बिसाला।
सूधि दीजै सतिगुरू को 'माचहि घमसाना।
ज्यो रजाइ हुइ रावरी मारहि तुरकानो॥ ३॥
सुनति पिरागा तबि गयो लै दसक रुऊरा।
जिस थल महिं श्री सतिगुरु हरि गोबिंद सूरा।
हाथ बंदि बंदन करी सभि दशा सुनाई।
'अबदुलखां अबि आप ही आयहु अगुवाई॥ ४॥
चढ़ी फौज सभा घटा के आपति उमडाई।
त्यागहु तीर समीर सम जिस ते मिटि जाई'।
सुनि करि श्री गुरु नीर सों कर चरन पखारे।
कर्यो सुचेता सकल बिधि मुछ शमस[2] सुधारे॥ ५॥
पहिरे बसत्र नवीन सभि कलगी बड शोभे।
जिगा बधी हीरे बडे जिन पिखि मन लोभे।

1. महाकाल, मृत्यु। 2. दाढ़ी।

चंद्रहास चौरा रुचिर ले करि गर मायो।
तरकश जर्यो जवाहरनि ज़ाहर दमकायो ।। ६ ।।
तीछन भीछन[1] तीर गन ईछन[2] ते हेरे।
खपरे सरप समान जे भरि लीनि घनेरे।
गर मैं पाइ[3] निखंग अस पुन सिपट संभारी।
शोमति पाह सिकंध धरि बधि लीनि पिछारी ।। ७ ।।
फट्टी द्वै चौरी अधिक दिढ मुशट[4] बिसाला।
चामीकर ते लिपति सभि, दीपति दुति जाला।
गाढे जुग गोशे[5] बडे पै बहु लपटाए।
कारीगर राखे निकटि कहि करि करिवाए ।। ८ ।।
दीरघ घोर कठोर बड जिस खिचै न कोई।
गिनती टंकनि की न कुछ, दिढ जेह,[6] संजोई।
जगत बिखै दूजा न को ऐचंहि बल लाए।
लियो सरासन हाथ अस गुन जाहि सुनाए ।। ९ ।।
सरमोटे, पर कंक के, खपरे बहु तीखे।
जिसते छुटि करि बेगते बड सरप सरीखे।
बेधति हैं गन अरिनि को प्राननि करि हाना।
गहि करि श्री सतिगुरु बली होए सवधाना ।। १० ।।
खंजर जमधर[7], कमर सो पुन धर्यो तमाचा।
आनहुं बली तुरंग मम बोल्यो गुरु साचा।
सुनति हुकम करि शीघ्रता आन्यो शिंगारा।
जाहर जगति जवाहनि जिह ज़ीन सुधारा ।। ११ ।।
लांगुल फेरति आवतो ऊचो करि गाटा[8]।
फुरकति, पग कों धरति है धरनी कहु काटा।
बरण कुमैत[9], सुवरण के भूखन चमकेते।
गज गाहनि जुति शोभतो[10] कवि का चर बेते ।। १२ ।।
मनहुं[11] करम बलि पुशट हैं दुशटनि दरड़ंता।
छाती आयतु चपल बहु मन कर्यो करंता।
पूरब के बड भागते सतिगुरु तर आयो।
वाहिगुरु कहि करि उठे घौरा दरसायो ।। १३ ।।

1. तीक्षण भीक्षण। 2. आंखों। 3. तीर दान। 4. मूठ। 5. कोने। 6. तांत।
7. तलवार। 8. गर्दन। 9. गहरा लाल। 10. लगाम। 11. हाथी का बच्चा।

पग रकाब दे करि तबै गहि ग्रीव सुकेसा ।
आसन आए बाग गहि बलिवंड बिशेशा ।
दीह दमामनि चोब लगि उठि नाद ब्रिसाले ।
सज्जी सभि जोधा चढ गन शसत्र सभाले ।। १४ ।।
समुख भए शत्रनि के करि चहिसि बिनाशा ।
कुछक चले देखत भए बड जंग तमाशा ।
नमसकारनी[1] गन चलैं, बहु शबद उठंते ।
मनहुं म्रिदंगनि बजति बहु उतसाह करंते ।। १५ ।।
मारि मारि मुख करति हैं जन, गावति गीता ।
गुलकां ब्रिंद सड़ाक लगि इह ताल पुरीता[2] ।
रंग अखारा जंग को गुरु महिद निहारा ।
बीच प्रवेशनि होनि को ततकाल बिचारा ।। १६ ।।
परसराम शकतू सुभट दोनहु तबि आए ।
हाथ जोरि आगे खरे इम बाक सुनाए ।
'महाराज ! अविलोकीए संग्राम तमाशा ।
आप रहहु ठांढे प्रभु निज दल के पासा ।। १७ ।।
दासन प्रति आइसु करहु तुरकनि को मारैं ।
रावरि नाक प्रताप ते बल धरि सघारैं ।
अरहिं अगारी अरि कहां ए अलप बिचारे ।
लवपुरि दिल्ली आगरे लुटि करहिं उजारे ।। १८ ।।
पिखि दुनहनि उतसाह को गुरु हुकम वरवाना ।
'पिखहु ज़ोर जहिं जंग को, पावहु घमसाना ।
सनैं सनैं हम आइ हैं जहिं अबदुल खाना ।
आज़ निदान सु करहिंगे गन तुरकनि हाना ।। १९ ।
सुनि हरखे गुर हुकम को ताज़ी तिरपाए[3] ।
ससत्र उघारे हाथ मैं धौंसे बजिवाए ।
ले करि कितिक अनीकनी[4] तुरकनि पर धाए ।
जथा म्रिगनि गन हरि करि केहरि इह धाए ।। २० ।।
परे जाइ तुरकनि चली ऐसी इक बारे ।
नबी बखश के सहित ही आए कुड़िआरे[5] ।

1. बंदूकें । 2. ताल सम्पन्न होता है । 3. घोड़े कुदाए । 4. सेनाएँ । 5. झूठा व्यक्ति ।

हेला घालि बिसाल को दोनहुं दल जूटे।
बाज़, कुही जररे मनो पिखि आमिख टूटे ।। २१ ।।

प्रथम तुफंगै मारि करि गन तीर प्रहारे।
पुन तोमर तरवार पर शसत्रनं कर डारे।
जमधर लै पहुंचे सुभट मारति अरु खाते।
मुशट जुद्ध को भिरि परे संघर रस राते ।। २२ ।।

नहिं पीछे को पग धरति निज लाज निबाही।
मारि मारि मरि मरि गिरे कटि आपस मांहीं।
तुरकनि पर लोहा उलटि हम पर्यो बडेरा।
जियत दिखति कं मरि गए गन दल इक बेरा ।। २३ ।।

होति बुदबुदे ब्रिंद जिम बहु बायु बिनासैं।
तिम मरिगे रिपु शीघ्र ही को भागति त्रासैं।
कोप्यो बिधीआ तबि फिर्यो बिच जंगनि संगै।
तान तान करि कान लगि गन हतहि खतंगै ।। २४ ।।

द्वै द्वै बान संचारि कैं द्वै द्वै तनु पारे[1]।
अनगन तुरकन को हने महिं होति संभारे।
चंचल बली तुरंग को नहिं कहूं टिकाए।
जहि देखैं रिपु वधति हैं, तहिं दे उथलाए ।। २५ ।।

तुरक ब्रिंद भै बरि[2] गयो हनि मुगल पठाना।
मारि मारि घमसान करि बोलि वरन महाना।
जित दिशि को बिचारति बली ह्वइ जाति मदाना[3]।
शत्रु हेरि मार्यो चहित करि दाव सु नाना ।। २६ ।।

किसको जतन न चलति है आप सुमरि जै है।
गरजि बंगारति हरति, जिम केहरि निरभैं है।
ऐंचि चांद को सर तजै तकि तकि रिपु छाती।
लगति धार ही मरति हैं, हय तरैं पपाती[4] ।। २७ ।।

इतने मैं चंदू तनुज चलि सनमुख आवा।
मरी लोथ पर लोथ जहिं श्रोणति बिथरावा।
करति चौंप आगे अर्यो मूरख मति हीना।
बिधीए कीनि चिनारि को बड आनंद लीना ।। २८ ।।

---

1. झाड़े। 2. प्रवेश कर गए। 3. खेत होना। 4, गिर जाते।

कहति भयो मम पित हत्यो तैं गुरु के आगे।
करति प्रतीखन मैं रह्यो सो अबि फल लागे।
जिम चाहति सो बिधि बनी रण महि तुझ हेरे।
पित पलटा इह करज़ सिर उतरहि अबि मेरे।। २९ ।।

पूरब तुम को मारिकै रण खेत मझारे।
हरि गुविंद को पुन गहौ जोधा बरिआरे[1]।
सुनति हस्यो बिधीआ अधिक उत्तर को दीना।
'चहित उतार्यो पित करज़ तूं महां प्रबीना।। ३० ।।

अबि तुझ को मारहिं तुरत रिण कौन उतारे।
इह संसा सभि करति है किस निरणै धारें।
करमचंद इम सुनति ही तकि तीर प्रहारा।
तनि बिधीए केतिक चुभ्यो गहि खैंच निकारा।। ३१ ।।

पुन तूरन ही तीर खर तकि ओर चलायो।
हम कुदाइ बिधीए तबै निज गाति बचायो।
आप चांप गहि दिढ तुरत तान्यो धरि बाना।
सनमुख ह्वै छोरा तबहि तकि शत्रु निशाना।। ३२ ।।

लग्यो बाज के भाल महिं गा पाछल पारा।
झड़[2] अविनी पर गिर पर्यो जनु, गाज संघारा।
पहुंच्यौ बिधीआ निकटि चलि नहिं खड़ग प्रहारा।
दबी टांग हय के तरे, तर उतर निकारा।। ३३ ।।

गहि लीनसि करि शीघ्रता पाछे को चाला।
अपर सिक्ख अर तुरक तहिं रण मच्यो कराला।
परे बहुत अरि गाइ कै तिह चहित छुटायो।
गुरु दल ते शलखैं चली सभि को अटकायो।। ३४ ।।

करो शीघ्रता बल सहत गहि आन्यो बैरी।
श्री गुरु हरि गोविंद पायहु तिन पैरी।
नीच ग्रीव को फरि रह्यो नहिं सनमुख जोवा।
बिधीया बोल्यो प्रभू जी रिण बड सिर होवा।। ३५ ।।

पलटा पित लेबे अयो रिण उतर्यो नाहीं।
बंधहु मुशकैं पाग सों पग[3] श्रिखल पाही।

1. बलवान 2. झट। 3. पांव में ज़ंजीर डाली।

गुरु क्रिपाल हसि करि कह्यो 'क्या इसते लैबो।
छोरि देहु कुडिआर को पुन करहि न ऐबो॥ ३६॥
जथा दुशट पित, सुत तथा, तुरकनि के चेरे।
कुछक जूत सिर मैं हलहु सिमरहि गुन तेरे।
हुकम मानि त्याग्यो तबै पनही कुछ मारे।
नहीं बोल मुख आवतो भाग्यो छुटि हारे॥ ३७॥
जाइ मिल्यो तुरकनि विखै जहिं अबदुलखाना।
पकरति उर बड स्वास ले अस बाक बखाना।
'गह्यो मोहि ले करि गए गुरु जहां खरो है।
छल बल को धरि शीघ्रता मैं छुटनि करो है॥ ३८॥
सिक्खन को मारति अयो, सभि भेद निहारा।
रह्यो अलप दल गुरुन का समुदाइ संघारा।
आप अगारी होइकै हेला अबि घालो।
हरि गुर्विंद को लहिं गहि निज ओज संभालो॥ ३९॥
इम कहि अबदुलखान को कुछ अग्र चलायो।
अपर तुरंग जु संग थो तिस पर चढि धायो।
इम बिधीए की गाथ इति घाल्यो घमसाना।
परस राम शकतू उतै दोनहु रण थाना॥ ४०॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे 'चंदू सुत गहि कै छोरनि' प्रसंग बरननं नम खशट त्रिसंती अंशू॥ ३६॥

---

1. पांव में जंजीर डाली।

अंशु ३७

नबी बखश अर परसराम, शकतू बध

दोहरा

नवी बखश लशकर महां ले करि आयो संग ।
तौमर तरवारनि तबर गहे तुफंग खतंग[1] ॥ १ ॥

पाधड़ी छंद

भरियंति तुपक बारूद संग । छनकंति गजनि धाए तुरंग ।
ठुकियति गुलक तोड़ा संभारि । धुखियंति पलीता बारि बारि ॥ २ ॥
कड़कंति नाद ज्वाला[2]-उगाल । छुटकंति ब्रिंद घाइल उताल ।
इत उत तुरंग सूरे धवाइ । जो बधति अग्र तिस दें गिराइ ॥ ३ ॥
गिरंयति सुभट हय. आइ धाइ । मिलि गए आप मंहि करति ।
मुख मारि मारि जोधा रटंति । बाहैं[3] क्रिपान अंगनि कटंति घाइ ॥ ४ ॥
तबि परसराम शकतू बिसाल । गहि दहनि चाप सर को निकालि ।
प्रेरे तुरंग बड बंग संग । गन सूर सहत पकरे तुफंग ॥ ५ ॥
जहिं नबी बखश बड बंधि टोलि । तित को पहूंचि करि साथि गोल[4] ।
निकसंति बीर घोरा धवाइ । छुटकंति तुपक रिपु नेर जाइ ॥ ६ ॥
बजियंति पटह भेरी बिलंद । ढमकंति ढोल नादति अमंद ।
फररे खुलाइ चमके निशान । करि अग्र रोपि गाढे सथान ॥ ७ ॥
शलखैं तुफंग छूटी बिसाल । मुख सीस फोरि गेरति उताल ।
निकसंति मीझ बिथरंति पास । करि सेत जु मेचक[5] केस पास[6] ॥ ८ ॥
मुख लगहि दंत को तोरि देति । किह आंख फूटि थिर जंग खेति ।
मिल गए सूर पर घोर शेरि । करते पुकार रिपु तोरि फोरि ॥ ९ ॥
की श्रमति भए खड्गनि प्रहार । को करति त्रास को ह्वै सुमारि ।
कित गिरे म्रितक ह्वै कै किकाण । तरफंति किते नहिं निकसि प्राण ॥ १० ॥

---

1. तीर । 2. बंदूक । 3. चलाएं । 4. टोला । 5. काले । 6. जूड़ा ।

बलवंत बीर करि रुंड मुंड। परचंड जुद्ध गिरि खंड खंड।
खिदियंति पकरि आंत्रै गुमाय[1]। बड आइ जौगणी धाय धाय॥ ११॥
भरियंति खप्पर श्रोणति पान। सिर खिडे वार करि नाच गान।
बहु भूत प्रेति बोलैं बकार। करि लहू पान लेते डकार॥ १२॥

गन-कंक[2] नाद चावडि[3] चिकार। बड भीम काक कां कां पुकार।
इय तरै गए दबि सूर सोइ। हांकरति अपर 'कर रच्छ जोइ'॥ १३॥
मुर आप मोरते मरति घोर। भा तुमल जुद्ध बड माचि शोर।
जहिं नबी बखश तहिं अग्र सूर। बहु लरे मरे गिरि परति धूर॥ १४॥

तबि परसराम शकतू महां। भट दुऊ चांप को तानि तानि।
सर सरप सु समसर मारि मारि। चलि जाति समुख ताके जुझार॥ १५॥
इम मची लोह की मारि भूर। बहि चल्यो श्रोण गई लोथ पूर।
तबि तुरक त्रास को धारि भागि। नहिं जमे पांइ बड शसत्र लागि॥ १६॥

गुर बीर एक, दस तुरक संग। करि करि प्रहार मरि मारि जंग।
तवि नबी बखश पिखि भा हिरान। इह भयो कहा नहि जाइ जान॥ १७॥
मरि गई सैन, सिख अलप पास। ठहिरै न अग्र बड पाइ त्रास।
परि गयो लोहु पूठो कराल। जहिं कहां सूर मरि तुरंग जाल॥ १८॥

निज हय धवाइ रोकंति बीर। सभि हटो, थिरो किम तजति धीर।
तुम बड गरूर सो कहति नीति। रण बिखै सदा हम लेति जीति॥ १९॥
अबि अलप सिख नहि इलम[4] जानि। नहिं शसत्र बंधने महिं सुजानि।
तिन पास ते सु तुम त्रास धारि। किनते भज, जिन कहिं गवार॥ २०॥
पुन जियति सभा महिं कहहु काहि। हम बचे भाजि तहि लरिय नाहि।
इम कहि रिसाइ निज सैन मोरि। बिच थिर्‌यो आप करि ज़ोर शोर॥ २१॥

पिखि नबी बखश को परसराम। बड तुरंग धवाइ ऐंचति लगाम।
तन बिखै बिभूखन जरति हीर। बहु चमकति चामीकर सरीर॥ २२॥
सिर बध्यो सु चीरा छोरदार। बड मोल को सुपट शुभति चारु।
कटि संग बंधि खड़गै निखंग। कर मैं कमाल बिचारति निसंग[5]॥ २३॥

बहु चपल चलाकी चारु अंग। बड मोलि बली सुंदर तुरंग।
जिह ज़ीन जराऊ बहु सुहाइ। रण बिखै चौंप सों समुख आइ॥ २४॥
पिखि परसराम चाहति प्रहार। तबि तजे तीर तीखे अगार।
शकतू बुलाइ अपनै समीप। कहि 'इसहि हतहु, है बड महीप॥ २५॥

1. गीदड़। 2. सफ़ेद चील। 3. काली चील। 4. विद्या। 5. शंकाहीन।

पिखि अनंदपाइ दोनहु सु बीर। इत उत धवाइ हय तजित तीर।
गन सुभट संग ललकार लीनि। हेला सु घालि बड शोर कीनि ॥ २६ ॥
गुलकांनि केरि बरखा बिसाल। दुहुं दिश आनि ते बहु भी कराल।
तबि नबी बखश बांको सु बीर। बहु अतर संग जिस के सु चीर ॥ २७ ॥
कर गहि कमान लै बान रोपि। मारे सबेग चित चौंपि कोप।
ललकार सभिनि ते अग्र धाइ। दल को हटाइ निज संग ल्याइ ॥ २८ ॥
शसतर संभारि तोमर तुफंग। चलियंति खड़ग कटियंति अंग।
दरड़ंति सूर, ढरड़ंति ढाल। चरड़ंति चाप अरड़ंति जाल ॥ २९ ॥
खरड़ंति खोल[1] सराड़ंति सेल। तड़कंति तीर, भरडें भगेलि।
रड़कंति घाव बरड़ंति बीर। थिरकंति थकति बरकंति भीरु ॥ ३० ॥
कहिरंति कूक हहिरंति जाति। अहिरंति कोइ कटियंति गाति।
तबि नबी बखश के बान संग। सिख गिरे कितिक हुइ अंग भंग ॥ ३१ ॥
पिखि परसराम उर कोप ठानि। इक हन्यो बानु धनु अधिक तान।
लगि गा तुरंग के तंग थान। बिधि भयो पारि गिरि तबि महान ॥ ३२ ॥
तबि नबी बखश संभारि आप। दिय पांइ रोप, कर धारि चांप।
सर परसराम के मारि अंग। खर परे पारि गिर तजि तुरंग ॥ ३३ ॥
तिह भई मूरछा धनुख गेरि[2]। बहु सिक्ख आइ रच्छयो सु घेरि।
गहि खड़गहि शकतू दिढ बिसाल। तिस की सहाइ महि गहि सुढाल ॥ ३४ ॥
रूप रह्यो सूर आगे खरोइ। उत परे तुरक गन कीनि ढोइ।
हेला सु घालि जुटिगे सु भट्ट। तन काटि काटि केतिक दबट्ट ॥ ३५ ॥
तबि पर्‍यो जोर रण को महान। नहिं तऊ सिक्ख तजि दीनि थान।
जो नेर आह तिस करति घाव। तिह तुपक तोर तोमर चलाव ॥ ३६ ॥
भट परसराम के निकट ठांढ। बहु भई खड़ग सों काट बाढ[3]।
घटिका मझार करि मारि मारि। गिर परे सूर सैंकर हज़ार ॥ ३७ ॥
गन तुरक ओरड़े नेर पाइ। करि शोर घोर चाहसि भजाइ।
तबि खड़ग हतहि शकतू कराल। रिप को प्रहार करि ओट ढाल ॥ ३८ ॥
रण थंभ मनहुं गाढो खरोइ। बहु सिक्ख सहाइक संग जोइ।
गन तुरक मारि अंबार लाइ[4]। जिम दीप पलंगनि परति आइ ॥ ३९ ॥
तबि परसराम सुधि पाइ अंग। हुइ सावधान अविलोकि जंग।
उठि ठांढि होइ शसत्रनि संभालि। पिखि नबी बखश के रिस बिसाल ॥ ४० ॥

1. लोहे की टोपी। 2. गिरा कर। 3. वध। 4. लगाए।

जहिं खरो जाइ भद भेरि कीन। खड़ग निनै हारि बहु दाव लीनि।
सूरे समूह चमकी क्रिपान। शकतू सभेत गन सिक्ख आनि।। ४१।।
बहु चले खड़ग करि करि प्रहार। सिर नबी बखश को काटि डारि।
बिच जुद्ध गिरे कटि कटि महान। तन छुटे प्रान नहि छुटे क्रिपान।। ४२।।
रण भरी लोथ आंखन उघार। बहु परे अरिनि सो अरि[1] जुझार।
गन तुरक बिलोक्यो भा निकंद। रण अबदुल खां नदन बिलंद।। ४३।।
जहिं परसराम शकतू जुझार। कटि गए दोन बहु रिपुनि मारि।
लरि त्रिपति होइ दीने सु प्रान। जे जियति हटे बहु श्रमनि मानि।। ४४।।

दोहरा

दहूं दिशनि ते थकि गए मिटे जंग ते सूरि।
लोथनि पर लोथैं परी[2] करदम श्रोणित धूरि।। ४५।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिथे खशटमि रासे नबी बखश अर परसराम शकतू बद्ध, प्रसंग बरननं नाम सपत त्रिसंती अंशु ।। ३७।।

1. अड पडे। 2. कीचड।

अंशु ३८

हल्ला करन प्रसंग

दोहरा

दौरि गए द्वै दास तबि जहिं थिर अबदुलखान ।
'देखहु कहां नबाब जी ! बिगर्यो काज महान ।। १ ।।

तोटक छंद

तुव नंदन चंद मनिंद हुतो । रिपु ब्रिंदनि कंदति सो पि हतो ।
घमसान घनो करि जंग मही । पिछवाइ हट्यो इक पैर नही ।। २ ।।
अरजे[1] सर ते बरजे तरजे[2] । कटि आपि गिर्यो पुरजे पुरजे ।
बहु बीर परे तिह संग तहां । गन लोथ परी बहि श्रोण महां ।। ३ ।।
सुनि स्रौन[3] नबाब शिताब तबै । सम बान लगे तिस बैंन सबै ।
रुदनंति बडो बिरलाप करै । 'त्रिपत्यो नहिं देखि, लख्यो न मरै ।। ४ ।।
गमन्यों किस थानहि प्रान तजे । मुझ छोरि गयो रण ते न भजे ।
किम जाइ लर्यो, नहि पाछि रह्यों । तुझ जाति बडो समझाइ कह्यो' ।। ५ ।।
लघु नंदन आइ गयो सुनिकै । समुझाइ पिता कहु यौं भनि कै ।
बिरलापति आप नियालक[4] तैं । सभि लोक निहारति नायक तैं ।। ६ ।।
अबि धीर धरो, नहि जोग तुमैं । नहि रोदनि को इह जानि समैं ।
'जबि लौ गुर को गहि लेहुं नहीं । 'रण बीच किधौं हति देहुं तहीं ।। ७ ।।
तबि लौ न हटौं, बड जंग करौं । अबि आइसु मोहि भले उचरौं ।
गहि लयाइं गुरू तबि बात रहै । न तु शाहु-जहां धिधिकार कहे' ।। ८ ।।
लघु नंदन ते सुनि बाक तबै । धरि धीरज को तजि शोक सबै ।
उमड्यो रण को दल संग लियो । हथिआर संभारि अगारि भयो ।। ९ ।।
गन दुंदभि पै दुइ चोब परी । बड नाद वध्यो किलकार करी ।
तुरकान लख्यो सभि अंति भयो । बिसमाइ रहे रण हेरि लयो ।। १० ।।

---

1. उलझे, बेंधे गए । 2. प्रताड़ित हुए । 3. कानों से । 4. तेरे योग्य नहीं ।

दोहरा

लघु सुत अबदुलखान को भ्राता मर्यो बिसाल।
अधिक क्रोध जिसके भयो पिखि पित रोदति हाल ।। ११ ।।
मसु भीजति वांको वडो आयुध विद्या जानि।
कंचन जरे जवाहरनि जबर ज़ेब जिन ठानि ।। १२ ।।

चौपई

नाम करीम बखश बलवंता। अभिमानी नहिं किसे गिनंता।
अधिक मोल को तरे तुरंग। चंचल करति चलाकी अंग ।। १३ ।।
सहत समंले[1] सिर पर चीरा। तुररा धर्यो अपर शुभ चीरा।
तीखन बरछी गहि करि हाथ। बूझति भा निज साथी साथ ।। १४ ।।
'भ्राता नबी बखश किस थान। हन्यो गवारनि करहु बखान।
तिसकी लोथ दिखावहु मोही। हरिगुबिंद अबि तिस मग होही' ।। १५ ।।
सुनि सुभटनि सभि बात बताई। 'पिखहु जहां थिति सिख समुदाई।
गाढे खरे तुफंग संभारे। तिस ते परे पिखहु भट भारे ।। १६ ।।
तिन ते दाहनि ओर निहारो। आप गुरू ठांढो बल भारो।
नबी बखश को जबिहूं मारा। तुरक पलाइ परे बल हारा ।। १७ ।।
रोक्यो थान आनि रिपु ब्रिंद। अबि ठांढे करि गोल[2] बिलंद'।
सुनति करीमबखश सभि गाथा। लाल बिलोचन मुख रिस साथा ।। १८ ।।
नबी बखश जहिं लरि गिर मर्यो। बली सुभट ले चलिबो कर्यो।
कह्यो सभिनि सों ऊचि पुकार। 'अहो नुवाले[3] प्याले यारि ।। १९ ।।
हरिगुबिंद लौ पहुंच्यहि जोइ। जीवन की जिस चाहि न होइ।
सुत बनिता जो सिमरहि नांही। सो मम संग चलहु रण मांही ।। २० ।।
जिस के रिदे त्रास है भारा। निज कुटंब संग राखहि प्यारा।
सो हटि जाहु संग नहि आवहु। पित समीप ठहिरहु तहि जावहु' ।। २१ ।।
सुनि कै काइर इत उति होए। जान्यो आज मरण सभि कोए।
इनि अखिलनि की करहि कुठारी। नहि गुरु छोरहि जोधा भारी ।। २२ ।।
नाहक धारि गरब चढि आए। 'हम पकरहिं गुर को अबि जाए'।
सपत संहस्र अग्र जिन मारा। बचे सु भाजे तुरक हजारा ।। २३ ।।
सो इन के कर महिं किम आवै। करामाति साहिब दरसावै।
श्री नानक सभि पीरनि पीर। तिन गादी पर इह बड बीर ।। २४ ।।

---

1. पगड़ी का पल्लू। 2. बड़ा घेरा। 3. हम निवाला, हम प्याला ; साथी।

गह्यो न जाइ न मार्यो जाइ। हनहिं तुरक सैना समुदाइ।
'इम जिन जाना तिन डर माना। सो टरि गए दाव करि नाना ॥ २५ ॥
नितरे बीर मरन डर जाहिं न। सुत वनिता को सिमरति नाहि न।
बाध्यो चुंग प्रिथक जबि होवा। अबदुलखान दूर ते जोवा ॥ २६ ॥
बूझ्यो सुभट सुनावन ठाना। 'जाति करीम बखश बलिवाना।
कहै कि 'गुर लगि पहुंचहुं जाइ। लीए बीन जोधा समुदाइ' ॥ २७ ॥
बडे पुत्र को सिमरति कह्यो। 'इन क्यों मरनि आपनो चह्यो।
जाहु शिताबी करहु हटावनि'। आयो इक करि तुरंग दुरावनि ॥ २८ ॥
'बरजति है नबाब तुझ खरो। ठहिरहु इहां जंग को करो।
कहां कसूते जाहु मरन को। रिपु ठांढे बहु प्रान हरन को ॥ २९ ॥
सुनि करि पित को कह्यो न मान्यो। 'मैं मारौं जिन भ्राता हान्यो'।
इति श्री हरिगोविंद सभि जानी। हेला[1] त्यार कीनि अभिमानी ॥ ३० ॥
बिधिचंद को हुकम बखाना। 'इह सनमुख जो टोल महाना।
सुत नवाब को लघु अभिमानी। भ्राता मरे ब्रिथा[2] बहुमानी ॥ ३१ ॥
हेला घालनि को अबि चाहति। बीन सूरमे आइ उमाहति।
लिहु आगा अबि ठांढे होइ। तजहु तीर गन बीच परोइ ॥ ३२ ॥
सावधान ह्वै आप बचावहु। लिहु दल संग अग्र को धावहु'।
बिधीचंद हरख्यो सुनि सादर। गरजति बोल्यो वीर बहादुर ॥ ३३ ॥
'महाराज ! क्या गीदी एहू। हतहि स्याल सम, आवनि देहू'।
इम कहि बड धौंसा बजवायो। बजी बंब उनि[3] जनु गरजायो ॥ ३४ ॥
पाइ हुकम गुरु को तबि चाला। ले करि संगै सुभट बिसाला।
तुरकनि जाइ सु कीनि बखान। जहां थिर्यो है अबदुल खान ॥ ३५ ॥
'नही करीमबखश ने माना। कहै 'पहुचिहौं गुरु जिस थाना'।
सुनिकै सिर धुनिकै पछुतावा। 'गयो बंस जगते, अबि पावा ॥ ३६ ॥
औचिक खत्री आनि चढाए। आप मर्यो हमको मरिवाए'।
रतन चंद अरु करमचंद दुइ। तिनकी दिशा देखिकै रिस हुइ ॥ ३७ ॥
कह्यो तरज कै तिन के संगि। 'इहा खरे क्यों भए निसंग।
नबी बखश को जिस थल मारा। तहां करीम बखश पग धारा ॥ ३८ ॥
मिलहु जाइ अबि तिस के संगि। रच्छहु मम सुत को बिच जंग।
जहां करीम बखश चलि जाइ। तिस को साथ छोरि नहिं आइ ॥ ३९ ॥

---

1. हल्ला करने की तैयारी की है। 2. व्यथा, पीड़ा। 3. झुका हुआ बादल।

मैं इत घालौं जोर घनेरा। होइ अंत रण को इस वेरा।
गहहु कि मारो गुर को जाई। नवी बखश को पलटो पाई' ॥ ४० ॥
रिसि को बच नवाब को सुन्यो। गुन्यो[1] सशोक पुत्र जिस हन्यो।
दोनहुं खत्री तूशनि धरिकै। प्रेरे हम तूरनता करिकै ॥ ४१ ॥
कुछक सुभट ले संग सिधारे। मिले करीम बखश बनि प्यारे।
बादत बाजनि लगे जुझाऊ। गमने अग्र टोल समुदाऊ ॥ ४२ ॥
जबै तुरक धौंसे धुंकारे। हक कुदाइ फेरे अगवारे।
बिधीचंद तिह सनमुख होवा। शसत्र संभारति आगे होवा ॥ ४३ ॥
छूटनि लगी तुफंगें ब्रिद। तड़भड़ उठ्यो शबद बिलंद।
तुमल[2] जुद्ध तबि मच्यो घनेरा। दुहि दिशि हेला कीनि वडेरा ॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे 'हल्ला करन' प्रसंग ब्ररननं अशटत्रिसती अंशु ॥ ३८ ॥

---

1. समझा ; 2. घमासान

अंशु ३६

'करीम बखश बध' प्रसंग

दोहरा

लघु सुत तबहि नबाब को करि शिताब उडमंति ।
ज्यों ज्यों आगे होति है त्यों त्यों जंग मचंति ।। १ ।।

पाधड़ी छंद

करि हलाहूल बहु जोर शोर । बड पर्यो रौर चहुं ओर घोर ।
भ्रमंति ग्रिद्ध मुख मास धारि । गन भए काक कूकति पुकारि ।। २ ।।
खप्पर भरंति बहु श्रोण संग । करि पान जोगनी नाचि अंगि ।
सिरखिड झंड[1] झुंडन प्रचंड । हड़ हड़ हसंति बड भीम तुंड ।। ३ ।।
आमिख भखंति गहि रुंड मुंड । गन दंत संग करि खंड खंड ।
ले हयनि पूछ सिर पर धरंति । नर मुंड माल लांबी करंति ।। ४ ।
भटहूंनि हाथ कै पाइ काट । धरि कै सिकंध पिखि आन डाट ।
हय चरन आगले किन उखार । बिचरंति ब्रिंद हाथनि उभार ।। ५ ।।
किनहूं सु आंत्रै ग्रीव डारि । गन भूत प्रेत पावति पसार[2] ।
बहु खाहि मास, करि श्रोण पान । तबि बरन अरुन लिपते महान ।। ६ ।।
रणु खेत दीखि भीखनि विलंद । गन तुरकनि के हुइ ओज मंद ।
शलखैं प्रचंड छूटै तुफंग । पुन करति शीघ्रता फिरति जंग ।। ७ ।।
किनहूं बरूद बिच तुपक डालि । बहु ठोकि ठोकि गज को निकालि ।
गुलकानि डालि आछे टिकाइ । पुन भरति, पलीता दें मिलाइ ।। ८ ।।
तोरा उभारि तोते जडंति । धरि शिसत ताक करते दबंति ।
बहु करति शीघ्र इह सकल कार । छूटैं तुफंग रण वेशुमार ।। ९ ।।
इमि मरति मारते नेर कीनि । तीरन प्रहारि करि घाइ दीनि ।
चरड़ंति चांप, छुटकंति बान । भट को निखंग ते काढ़ि[3] तान ।। १० ।।
जेहनि[4] अरोपि[5] तकि शत्रु गाति । बलते छुटंति करि देति घाति ।
बहु तुमल जुद्ध माच्यि कराल । मिलि गए परी बहु हाल[6] चालि ।। ११ ।।

---

1. बाल । 2. नाच रचते हैं । 3. तीर दान से निकाल कर । 4. तांतों पर । 5. आरोप कर, चढ़ाकर । 6. हल चल ।

तोमर भ्रमाइ मारंति फेरि। तन लगैं शत्रु दे भूमि गेरि।
बहुरो निकासि तक औरि मारि। तरवारि झार दें काट डारि ॥ १२ ॥
बरछीनि तीछना ओज संगि। मारें धसाइ रिपु फोर अंगि।
खर सेल मेल भी रेलि पेलि। छिन बिखैं छैल गिर परति भेलि ॥ १३ ॥
लखि शसत्र चोट हुइ लोट पोट। को धरति ढाल ले समुख ओट।
जमधर निकारि किन उदर मारि। तरवार चलति रण बार बार ॥ १४ ॥
लोहू शनान ते लाल जाल। थहिरति हाथ महिं[1] चालि चालि।
केतिक प्रहार ते खड़ग टूटि। रहि मुशट हाथ मिलि मुशट कूटि ॥ १५ ॥
जियबे निरास हुइ लरति बीर। भागे भगैल भै भूर भीर।
नंदन नबाव के नेर कीनि। जिन साथ बीर ले बीन बीन ॥ १६ ॥
ऊचे पुकार सभि सो कहति। मिलि जाहु हेल करि शत्रु हंति।
इह सिख अलप तुमरे अगारि। करि कतल सभिनि दिहु मारि डारि ॥ १७ ॥
गुरु हरिगुबिंद को घेरि लेहु। मिलि कै समूह, नहिं जानि देहु।
रण करति जियति को गहहु धाइ। नतु देहु मारि, नहि भाज जाइ ॥ १८ ॥
रण फते होइ तुमरी बिसाल। पुन दरब जगीरनि लेहु जाल।
घर करहु खुशी पीवहु शराब। मिलि सभिनि बीच भक्खहु कबाब ॥ १९ ॥
बहु सिफति होइ सभि की जहान। जहिं जाहु तहां दें अधिक मान'।
इम कहति दिलासा अधिक कीनि। ले सभिनि संग आयो प्रबीन ॥ २० ॥
जबि वध्यो अग्र घोरा कुदाइ। तबि बिधिचंद सतिगुर मनाइ।
कर धनुख धारि तीरनि प्रहार। जो[2] वधहि अग्र तिस देति मारि ॥ २१ ॥
अपनो तुरंग तहिं फेरि फेरि। रण तुरक खपावति बेरि बेरि।
तबि क्रीम बखश बरछी संभारि। निज हय नचाइ हनि बारि बारि ॥ २२ ॥
जिसके सहाइ खत्री सु दुंद। इक रतन चंद अरु करम चंद।
बहु सुभट संग करि मारि मारि। हति कै हथ्यार दें अविनि डारि ॥ २३ ॥

भुजंग छंद

घने सिक्ख आए परे दौर ऐसे। पिखे मास को बाज़ धावंति जैसे।
धका धक्क धीरं हथा वत्थ होए। कराचोल बाहैं[3] उटैं[4] ढाल कोए ॥ २४ ॥
तुटैं तीख तेगे लगैं लोह ऊपै। किते अंग काटे गिरैं सूर भूपै।
महा लोथ पोथानि होई कराला। बह्यो श्रोण जातो धरा रंग लाला ॥ २५ ॥

. चंचल चलती। 2. आगे बढ़ें। 3. तलवार चलाएं। 4. ओट लें।

करयो खान हेला गुरू सूर हाले। परे शत्रु ब्रिंद कहा तीक[1] झालें।
छुटाई छितं को तहां तीक आए। नबाबं तनुजं परयो जौन थाएं ॥ २६ ॥
पिख्यो भ्रात जेठा कटे अंग डाला[2]। परयो धूर मैं तुंड मुंडे कराला।
गिरयो नैन ते नीर रोदंति हेरे। पुनं जुद्ध को कोप कीनो घनेरे ॥ २७ ॥
दबाए अगारी, प्रहारे भजाए। नहीं पाइ जामे घने शत्रु आए।
मरे सैंकरे सूर खेतं मझारा। नबाबं तनूजं करयो जंग भारा ॥ २८ ॥
रिदे शोक ते [illegible] जाग्यो बडेरे[3]। भजे सिक्ख थोरे बिधीचंद हेरे।
तबै चांप ते तीर तीखे प्रहारे। लगे शत्रु के अंग पारै पधारे ॥ २९ ॥
लियो रोक आगा जथा दे कपाटे। करे सिख पीछे बडे खान डाटे।
उथल्ले, पथल्ले, लथेरे, पथेरे। परी धूम भारी पुकारैं घनेरे ॥ ३० ॥
लए रोक सारे इसी रीति जानो। हड़ं नीर को सैल जैसे महानो।
जथा जंग थंभा बिधीचंद होवा। करीमू बडो ज़ोर दै कै सु जोवा ॥ ३१ ॥
'खरो होहु गीदी कहां जाति आगे। लरो संग मेरे चहैं प्राण त्यागे'।
सुनी बात कानं करीमू रिसायो। गह्यो सेल तीखो तुरंगैं धवायो ॥ ३२ ॥
बिधीचंद के नेर ढूक्यो सु आई। प्रहारयो तबै सामुहे ओज लाई।
लग्यो जीन बीचं खगीनं परोयो। गुरू जी बचायो, सहाई सु होयो ॥ ३३ ॥
निकास्यो दुधारा सु खंडा प्रचंडं। कटयो सेल गेरयो भए दोइ खंडं।
कह्यो 'जाहु नांही ममं वार दीजै। नही जान दैहौं थिरो जंग कीजै ॥ ३४ ॥
गजंगाह बंधं पुनं भाग जानो। नहीं बाति आछी करी लाज हानो।
करीमू रिस्यो मोरि[4] घोरा सु आयो। मनो पूछ ते नाग काहुं दबायो ॥ ३५ ॥
लयो पैंच तेगा, हतौ, चीत चाह्यो। इते मैं बिधीचंद ने वार बाह्यो।
करी ढाल आगै बच्यो अंग सारो। करीमू रिस्यो फेरकै वार झारो ॥ ३६ ॥
बिधीचंद ने तेग पै तेग लीनी। कुप्यो लाल नैनं पुनं घाति चीनी।
तुरंगे त्रपायो तबै दंत पीसं। प्रहारयो स ज़ोरे, करयो शत्रु सीसं ॥ ३७ ॥
करीमू गिरयो भूमि झूम्यो जुझारा। बिधीचंद गाजा मनो शेर मारा।
हटे खान पीछे जबे म्रितु देखा। नहीं धीर बांधी सु त्रासे विशेखा ॥ ३८ ॥
तबै दोइ खत्री दुखी होइ हाले। हटे पांइ पाछै नही अग्र घाले।
उभै पुत्र सूबै इन्हों मारि दीने। बचै कौन आगे, भए दीन हीने ॥ ३९ ॥

दोहरा

रन के सनमुख होति नहि महां त्रास को पाइ।
उत नबाब ते डरति हैं तिस के निकटि न जाइ ॥ ४० ॥

1. तक। 2. धरती पर पड़ा हुआ। 3. अधिक। 4. मोड़ कर। 5. कुदाया।

बुरी भई चित चितवते, टरे अपर ही थान।
चमूं पलाई सकल ही हति सुत अबदुल खान ॥ ४१ ॥

चौपई

नबी बखश को पूरबि मार्‌यो। पुनहु करीम बखश हनि डार्‌यो।
भागी तुरक बाहनी सारी। बिधीचंद तबि पर्‌यो पिछारी ॥ ४२ ॥
कटहिं खड़ग सों हाहा करिहीं। कितिक दौर ते गिर गिर परिहीं।
चमकी घनी क्रिपानैं नंगी। थहिरति हाथनि श्रोणति रंगी ॥ ४३ ॥
बिधी चंद संग सिक्ख घनेरे। जगना मोलक हय बड प्रेरे।
जमे हाथ कबजिनि[1] के संग। लिपट्यो लहू लाल सरबंग ॥ ४४ ॥
भाजे खान त्रास बहु धारा। तबि नबाब लगि करी पुकारा।
'क्या देखति हो थिरे तमाशा। पुत्र दूसरो भयो बिनाशा ॥ ४५ ॥
आगे वधि एको लरि मर्‌यो। सकल भजाए कोई न अर्‌यो।
इक गुर के दल ते भट आयो। दुहनि खड़ग को जंग मचायो ॥ ४६ ॥
तिस ने सीस काट करि गेरा। लशकर पिखि भाज्यो तबि तेरा'।
सुनति नबाब शोक धरि भारी। बह्यो बिलोचन ते बहु बारी ॥ ४७ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे करीम बखश बद्ध प्रसंग बरननं नाम एकोनचत्वारिसंती अंश ॥ ३९ ॥

---

1. कबज़ मूठ।

अंशु ४०

अबदुलखान रण आगमन प्रसंग

दोहरा

पुत्र मरे ते शोक भा रुदति नबाब बिसाल ।
तिस छिन को पछुतावतो जबि चढि आइ उताल ॥ १ ॥

चौपई

इम देख्यो जबि अबदुलखान । लोक लरनि ते हटे महान ।
आप आपि को थिरे पिछेरे । को को चलहि तुपक तिस बेरे ॥ २ ॥
जंग उझार[1] समान विलोका । पिखि नवाब को सभि को शोका ।
दोनहुं खत्री ढिग चलि आए । जिनहु लरनि को सरब चढ़ाए ॥ ३ ॥
करहि त्रास थिर दूरि रहे हैं । मुरे बहुत लघु जियति लहे हैं ।
कितिक बारि लौ रुदति थिर्यो है । बहुर नबाब बिचार कर्यो है ॥ ४ ॥
सभि लशकर को अहौं अ्रधारा । बिदतहि बात 'गुरू ते हारा' ।
शाहु जहां सुनि देहि निकारा । कहा रहौं मैं खाइ अहारा ॥ ५ ॥
पुत्र गए मरि बीर बिसाले । धिक जीवन मेरो इस काले ।
हरिगुबिंद को गहौं कि मारौं । तौ जीवन को नीक निहारौं ॥ ६ ॥
नतु जहिं पुत्र गए मरि आगे । जाउं आप मैं तिन संग लागै ।
लरिबे हटौं नही मुझ नीकी । बात शाहु दिशि ते हुइ फीकी ॥ ७ ॥
जग महिं निंदा बिथरै मेरी । अस जिय ते आछी म्रितु हेरी ।
इम चितवति पौछ्यो द्रिग बारी । अविलोकति भा जंग उझारी ॥ ८ ॥
घटिका एक रह्यो दिन आई । विना लरे जे निस पर जाई ।
बहुर कहां जानैं क्या होइ । लरिबे समां न प्रापति कोइ ॥ ९ ॥
सेनापति जुति सुत मरि गए । मम आगे प्राननि को दए ।
जिनके बिना लरनि ते सैना । हटि करि थिरी अग्र[2] को है ना ॥ १० ॥

---

1. उजाड़ । 2. प्रमुख व्यक्ति ।

इक मैं रह्यो मरौ कै मारों। द्वै बिन जीवन नही बिचारों।
दोनहुं खत्री जीवति जाने। रिस कै निकटि हकारनि ठाने॥ ११॥
'सदा हैफ सद तुमरे ताईं। नहीं भाए गुरू सनमुख जाइ।
हते पंच सूरे सरदार। दोइ पुत्र रण लीने मारि॥ १२॥
तुम गीदी इत उत हुइ जाते। नहीं शसत्र मारति अरु खाते।
बीच कचहिरी बात बनावहु। रार छेर करि बीर हनावहु॥ १३॥
अबि मुझ संग अगारी चालहु। ज्यों बोलति त्यों शसत्र संभालहु।
भए कूर नहिं बोले बैन। नहीं नबाब दिशा करि नैना॥ १४॥
अबदुलखां तबि हुकम बखाना। बजे दमामे नाद महाना।
आगे भए पताका-वारे। उमड़े बीर क्रोध करि भारे॥ १५॥
चल्यो नबाब आप धरि क्रोधा! लीने सकल सकेल सु जोधा।
जहि रण खेत गुरू भए ठांढे। रोपे पाइ शसत्र गहि गाढे॥ १६॥
मरे तुरक लागे अंबारा। हय पर हय मरि गिरे उदारा।
स्वान स्रिगाल मास को खाते। भूत प्रेत डाकनि डकराते॥ १७॥
भयो रुद्र[1] फिरबे को समों। गण अनेक संग भे करि नमो।
रण बचित्र को हरख्यो हेरति। ग्रिज्झ[2], पिशाच[3], काक गन हेरति॥ १८॥
बहु रण कीन लथेर पथेरा। बिधीचंद सिख बीर बडेरा।
पिखि तुरकनि को गुर ढिग गयो। सगरो भेत सुनावति भयो॥ १९॥
'महांराज! हेरहु रिपु आए। रहे इतिक भे म्रितु समुदाए।
अबि मचहि जंग बड भारी। जियति वाहनी उमडी सारी॥ २०॥
इनके अंत भए रण अंत। होवहिगो अबि, गुरु भगवंत।
श्री हरिगोविंद सुनति उचारे। 'हुते पंच सरदार सु मारे॥ २१॥
द्वै नबाव के सुति हति होए। मुखि भट रह्यो नहीं अबि कोए।
आपे आयहु अबदुलखान। रण की चाहति बिजै महान॥ २२॥
अपर तुरक सभि सिक्खनि मारे। रहै शेश सो आए सारे।
अबहिं संग इस जंग हमारा। देखहु सगरे बल जिम भारा॥ २३॥
करौं निदान[4] तुरक गन केरा। नहीं प्रताप लखति इह मेरा।
प्रान देनि को चाहति मानी। सने सने सभि होवै हानी॥ २४॥
करहि राज सिख सेवक मेरे। दिए सकाम प्रान इस बेरे।
निशकामी कैवल[5] को पावें। सहिकामी सिख राज कमावें॥ २५॥

1. तमोगुणी रुद्र के फिरने का समय; सायंकाल। 2. गीध। 3. कचा मांस खाने वाले। 4. समाप्ति। 5. मुक्ति।

हिंदु धरम को राखहिं जग मैं। चलहिं चलावहिं सिखी मग मैं।
पुन म्रितु होहि मोहि मिलि आए। शुभ गति को प्रापति हुइ जाए॥ २६॥
इम कहि गुरु को बज्यो नगारा। सावधान भे सिक्ख जुझारा।
दोइ पहिर लगि माच्यो जंग। भए श्रमति लरते रिपु संग॥ २७॥
श्री हरिगोविंद चले अगारी। चहति कर्यो पुरशारथ भारी।
हन्यो चहैं तबि अबदुलखान। दुह दिशि के छुटि रहे निशान॥ २८॥
बाजन लगे जुझाऊ बाजे। भयो नेर पुन जोधा गाजे।
छूटनि लगी तुफगें फेरि। फेरति फेर फेर हय छेरि[1]॥ २९॥
निकसि गोल ते तुपक प्रहारें। दूसर आइ बिलोकि बंगारैं।
सिक्ख जाइ तुरकन को गेरहि। तुरक आइ हति आगो घेरहिं॥ ३०॥
श्री सतिगुरु कर चांप कराला। चुटकी फेरहिं बान बिसाला।
कीनसि तेज़ तुरंगम भारा। इति उत सनमुख बली उदारा॥ ३१॥
देखति हैं शत्रुनि दल ब्रिंद। जहां नवाब सशोक बिलंद।
प्रेरे काल अगारी खरे। सतिगुरु तीर प्रहारनि करे॥ ३२॥
तीछन भीछन ईछनि हेरे। चले सरप सभ शूक बडेरे।
शत्रुनि के सरीर इम बरै[2]। बरमी महिं प्रवेश जिम करैं॥ ३३॥
इक तन फोरि पार हुइ जाइं। पुन दूसर के पार सिधाइं।
जोधा कै तुरंग हुइ कोइ। बेधति जाति सरब सर सोइ॥ ३४॥
धर पर परहिं दड़ादड़ जोधे। देखति महां तुरक गन क्रोधे।
'बेधहिं दूर खरे ही तीर। मारि मारि क्यों मरहु न बीर'॥ ३५॥
इम कहि बधे[3] तुरक गन आगे। धरि ज्वाला-वमणी[4] रिस जागे।
कड़ाकड़ी इक बार चलाई। गुरु दल पर गुलकां बरखाई॥ ३६॥
जबहि लगी सिक्खनि तन गोरी। रिस जागि गमने रिपु ओरी।
छोरि तुफगनि घाल्यो जोर। पुन बारूद पाइ करि और॥ ३७॥
गज सो ठोकति पाइ दुगोरी। करति शीघ्रता रिपु दिशि छोरी।
दुहि दिशि माच्यो रण घमसाना। भयो तुमल बड रौर उठाना॥ ३८॥
चांप कठोरनि ते सर चाले। बेधति जोधनि देहि कराले।
हयनि कुदावति तोमर मारति। बेधति शत्रु भूम पर डारति॥ ३९॥
तीछन बरछी छिप्र छुरंती। तन फोरनि करि पार परंती।
बिधे सूर ततछिन धर डारे। सीख बिन्है[5] जनु वड़े[6] उतारे॥ ४०॥

---

1. छेड़कर। 2. प्रवेश किया। 3. बढ़े। 4. बंदूक। 5. बेध कर, पिरोकर। 6. बड़े।

पुंन गहि गहि नंगी शमशेर। सूरा भिरे ओज शमशेर।
बहै परसपर काटति अंग। श्रोणति गिति लाल छित[1] रंग ॥ ४१ ॥
किनहुं निकारी जमधर घारी। निकटि ढुके शत्रुनि तन मारी।
हिहनावति बहु फिरहिं तुरग। छूछ ज़ीन को घाइल अंग ॥ ४२ ॥
दुइ दल मिलिगे मार सु मारी। करदम श्रोण मास छित राची।
गिरे छिनक महिं सुभट हज़ारों। हथियारनि के भए प्रहारों ॥ ४३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे 'अबदुलखान रण आगमन' प्रसंग बरननं नाम चतवारिसती अंशु ॥ ४० ॥

---

1. क्षिति, धरती।

अंशु ४१

सुभट बरननं प्रसंग

दोहरा

बजे जुझारऊ बहुत ही जुटे सुभट सु कटक्क ।
करि कटि झटपट बिकट जे सटपट[1], क्वै न अटक्क ।। १ ।।

रसावल छंद

चले तीर गोरी । मनो खेलि होरी ।
सटासट सेले । मनो मूठ[2] मेले ।। २ ।।
समूहैं तुफंगा । करे घाउ अंगा ।
लगी पीचकारी[3] । खिर्‍यो रंग भारी ।। ३ ।।
पतंगी[4] सुरंगा । चल्यो श्रोण अंगा ।
सु ढाले उछाले । डढैं ज्यों बिसाले ।। ४ ।।
सु 'मारं' अलावैं । मनो गीत गावैं ।
परैं धाइ धाई । क्रिपानै चलाई ।। ५ ।।
कटैं अंग गेरैं । सुलोथैं घनेरैं ।
नबाबं दिखावै । बडे ओज लावैं ।। ६ ।।
नहीं पाइ पाछे । भिरे सूर आछे ।
इतै सिक्ख दौरे । मच्यो भीम रौरे ।। ७ ।।
परैं हूह दै कै । क्रिपानं चलै कै ।
किते ढाल ओडैं । किते हाथ छोडैं ।। ८ ।।
सु बंके सिपाही । मरे जंग मांही ।
बिधीवंद रोसा । बडी जंग[5] होसा ।। ९ ।।

---

1. सटपटाए । 2. गुलाल की मुट्ठी भरी । 3. पिचकारी । 4. लाल लकड़ी ।
5. होश, सुधि ; हवस (लालसा) ।

सु आपं बचावै। घने शत्रु घावै।
तजै तीर तीखे। जु सरपं सरीखे ॥ १० ॥
भटं प्रान हाने। गिरे जग थाने।
मुखं भार केई। सु औंधे परेई ॥ ११ ॥
जहां घाव होहू। भकाभक्क लोहू।
कहूं कंप धारे। भयो त्रास भारे ॥ १२ ॥
कहूं कोप ठाने। गह्यो खग्ग पाने।
झटाझट्ट बाहैं। करें ओज बाहैं ॥ १३ ॥
तच्छा मुच्छ होए। बडी नींद सोए।
कटी जंघ काहू। खरे जंग माहूं ॥ १४ ॥
कटे काहु पासे। सु आत्रें[1] निकासे।
रिदा काहु छेदा। परे जाइ खेदा ॥ १५ ॥
किसू हाथ काटा। दयो त्रास डाटा।
दुधारे जु खंडे। सु तीखे प्रचंडे ॥ १६ ॥
बडे बाढ वारे। पुलादी करारे।
लगें ग्रीव जाहूं। गिरै सीस ताहूं ॥ १७ ॥
भए रुंड मुंडं। परे खंड खडं।
कटे काहुं तुंडं। लिटे सूर झुंडं ॥ १८ ॥
प्रचंडे घुमंडे[2]। कटे बाहु दंडे।
सरोही[3], हलब्बी। सु तेगे जुनब्बी ॥ १९ ॥
कड़ाकाड़ झाड़ै। बने भीम ताड़ें।
बडे सिक्ख क्रोधे। महां जंग जोधे ॥ २० ॥
मलेछान हल्ला। दिढे होइ झल्ला।
घनी कार माची। लहू धूलि राची ॥ २१ ॥

दोहरा

इक इक सिक्ख गुरु सुभट जे दस दस तुरक संघारि।
को शहीद को जियति भा सतिगुरु को बल धारि ॥ २२ ॥

रसावल छंद

गुरू कोप होए। पिखे शत्रु ढोए।
मलेछं समूहा। परे दीनि हूहा[4] ॥ २३ ॥

---

1. आंतें। 2. अभिमान। 3. विशेष स्थानों की बनी तलवारें। 4. हल्ला।

करे लाल नैना। लियो बान पैना।
निखंगैं निकासा। मुखी ते प्रकाशा ॥ २४ ॥

हुतो मोटि काना। सु पंखै महाना।
गुनं चांपं जोरा[1]। कठोरैं जु चौरा[2] ॥ २५ ॥

कर्‌यो तान ताना। लग्यो पान[3] काना।
तक्यो गोल[4] मारा। चल्यो बेग पारा ॥ २६ ॥

लग्यो शूक कैसे। बर्‌यो नाग जैसे।
गयो फोरि छाती। धरा पै पपाती ॥ २७ ॥

दुती जाइ भेदा। तिसै अंग छेदा।
पर्‌यो भूमि जाई। त्रिती फेरि घाई ॥ २८ ॥

भटं चौथ लागे। तने प्रान त्यागै।
पुनं पंच बीधा। गड्यो जाइ सीधा ॥ २९ ॥

धर्‌यो तीर दूवा। महां कोप हूवा।
तज्यो बेग संगा। घने शत्रु अंगा ॥ ३० ॥

इसी रीति फेरे। प्रहारैं घनेरे।
गिरे खान मानी। दिए मान हानी ॥ ३१ ॥

लगैं बान जाए। घने शत्रु घाए।
भरे जो निखंगें। चलाए खतंगै ॥ ३२ ॥

इकं दोस तीनो। करैं प्रान हीनो।
बडे बेग वारे। लगै फोरि पारे ॥ ३३ ॥

धवावैं तुरंगा। प्रहारैं खतंगा।
चलावैं तुफंगा। भट अंग भंगा ॥ ३४ ॥

बडे घाव संगा। लहू लाल रंगा।
बनैं बेस चंगा। मच्यो भीम जंगा ॥ ३५ ॥

दोहरा

कहिं लगि बरनौ जुद्ध को महा घमसान।
प्रथम तुफंगनि ते मरे तुरकनि को अवसान ॥ ३६ ॥

---

1. जोड़ा। 2. चौड़ा। 3. हाथ। 4. टोला।

पाधड़ी छंद

गुलकानि मारि करि प्रान हानि। रण खेत विखै सुपते महांन।
पुन बान संग भा भीम जंग। तबि भए तुरक गन प्रान भंगि॥ ३७॥
खर सेल सकति तोमर प्रहारि। इन साथ घने रण तुरक मारि।
पुन चले खड़ग इक बार ब्रिंद। कटि गए बहुत छिन मै निकंदि॥ ३८॥
रण खेत दूरि लग भा महान। जहिं कवहिं जोगनी श्रोण पान।
खप्पर भरंति बहु बारि बारि। ह्वै त्रिपति बहुति लेती डकार॥ ३९॥
बहु ग्रिज्झ कंक बाइस पुकार। मन भाइ खाइ आमिख अहार।
गन मिले आनि निरभै गुमाय। लखि सज्ञ बोलते धुनि उचाय॥ ४०॥
बहु भूत प्रेत नाचंति गाइ। हड़ह हसंति मन भाय पाय।
डाकनि पिशाच बहु रुधिर राचि। बहु मास खाति रुचि माचि माचि॥ ४१॥
बिथरे सु परे बहु रुंड मुंड। इक गिरे सूर तन खंड खंड।
गन तुपक, धनुख, तोमर, क्रिपान। बहु परे खेत महिं मुल महान॥ ४२॥
मरि गए वीर जे धरनिहार[1]। कुछ रहे आनि थोरे जुझार।
हय मरे परे जहि कहि बिलंद। को तरफि तरफि होवति निकंद॥ ४३॥
जिन ज़ीन रजत अर हेम केरि। को विचरति छूछे हेरि हेरि।
भट परे कितिक घाइल महान। दरड़ंति सभिनि दे प्रान हान॥ ४४॥
किस की संभार नहि कोइ लेति। बहु मरे अलप रहिगे सु खेत।
तिस काल मारि भी कुछक ऐंस। मरि गए तुरक लखियत न कैंस॥ ४५॥
कुछ रहे शेश तजि जियनि आसि। कायर भजंति धरि अधिक त्रास।
पिखि अबदुलखां बिसम्यो विशेश। किम मरी सैन रहि अलप शेश॥ ४६॥
रण बिखै जीत अरु जियनि आस। हुइ गो निरास पिखि सकल नाश।
'अबि मरौं जंग के समुख होइ। कै हतौं गुरू निज द्रिशटि जोइ॥ ४७॥
नहि थिरौं दूर अबि लेउं देखि। किम हतहि शसत्र गुर भा विशेख।
तिह संग जुटों मैं आप जाइ। मो लरे बिना नहि को उपाइ॥ ४८॥
गुर हाथ साथ मरिहौं लरति। कै लेउ मारि रण होइ अंत।
इस बिधि बिचार मन कशट पाइ। हित मरण चल्यो सूबा अगाइ॥ ४९॥
जुग संग कीनि खत्री बिलंद। इक करमचंद अरु रतन चंद।
करि बाम दाहिने दुहनि बीर। गुर समुख चल्यो ह्वै कै अभीर[2]॥ ५०॥

---

1. धारण करने वाले। 2. निर्भय।

बिधी आदि सिख जे लरति और। तज्ञि सुभट तुरक तिन संग ठौरि।
तहिं ते सु टर्‌यो गुर जाहिं थान। पहुंच्यो नबाब तहिं तुरत आनि ॥ ५१ ॥

बहु रिदे धारि गुर पिखनि चाहि। मरि रहौं कि मारों जंग मांहि।
निज बल दिखाइ, तिह देखि लेउ। करिहौं निबेर गुर मारि देउ ॥ ५२ ॥

दोहरा

इस बिधि ठटि करि आइगो जहि थित गुर भगवान।
पिखिनि परसपर होति भा लखि चौंप महान ॥ ५३ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे सुभट बरननं प्रसंग बरननं नाम एक चतवारिंसति अंशु ॥ ४१ ॥

अंशु ४२
जंग प्रसंग

दोहरा

सनमुख भयो नबाव जबि बहु सैना मरिवाइ ।
द्रिशटि परसपर प्रेरि तबि पिखे रूप द्रिग लाइ ॥ १ ॥

चौपई

कर धनु, कट[1] इखधी[2] शमशेर । सिपर सहत श्री गुर सम शेर ।
बडे प्रतापवंति पिखि करि कै । हतनि हेत गन जतन सिमरि कै ॥ २ ॥
तुरंग नचावति जुति गजगाहनि । सिक्खनि को चाहति अविगाहनि ।
चाप हाथ महि तीर निकारति । ऐंचि कान लगि बल करि मारति ॥ ३ ॥
कंचन केर बिभूखन अंग । जबर जवाहरि जरती संग ।
बली चपल बड मोल तुरंग । ठहिरति नहिं थरकति बिच जंग ॥ ४ ॥
तिम दोनहुं खत्री चलि आए । गुरु को हेरि रिदे तपताए ।
तिनहुं बिलोकति सतिगुर बोले । 'अबहि काल, पलटा पित को ले ॥ ५ ॥
किम काइर बनि समुख न आवहु । रचि उपाधि बडि तुरक हनावहु ।
बैठि कचहिरी बाति बनैहै । 'पित पलटा गुरु ते हम लैहैं ॥ ६ ॥
तुम कहिबे कहु महिद धिकारू । नहिं ढिग होवति जंग मझारू' ।
सुनि करि जरे, जरे नहि बैन । रिस ते करे लाल जुग नैन ॥ ७ ॥
दोनहुं खत्री सहत नबाब । चंचल करे तुरंग शताब ।
ढुके निकटि गुरु चाहसि मारा । चांपन महिं करि बान संचारा ॥ ८ ॥
ऐंचि ऐंचि तीनहुं बल पीन । सतिगुरु सनमुख छोरनि कीनि ।
श्री हरिगोबिंद हय चपलावैं । इत उत फेरति अंग बचावैं ॥ ९ ॥

---

1. कटि, कमर । 2 तीर दान ।

अपनो धनुख कठोर संभारा । खर खपरा धरि गुन संचारा ।
तान कान लगि मारसि बाना । गयो बेग-जुति[1] सरप समाना ॥ १० ॥
रतन चंद को ताकि चलावा । सो हलि गयो तुरंग को घावा ।
उछरति की छाती बिधि गइऊ । पाछल दिशा पार सर भइऊ ॥ ११ ॥
गिर्यो उथल असु हेरति खरे । खान बान की सिफती[2] करे ।
'मो सर की एती नहि मारि । पर्यो पार हय को धरि डारि' ॥ १२ ॥
रतनचंद गिर पर्यो संभारा । करम चंद तबि भयो अगारा ।
हत्यो तीर गुर के हय लागा । घाव ग्रीव महिं गिर्यो न आगा ॥ १३ ॥
एंचि गुरू ने तीर निकारा । हय छोर्यो जिस महिं बल भारा ।
प्रथम समान उठ्यो करि छाल । जाति ग्रीव ते रुधर बिसाल ॥ १४ ॥
सतिगुर के रिसि उपजी महां । निज वाहन के श्रोणत लहा ।
धनुख सिकंध धर्यो तिस काला । ऐंच्यो तूरन खड़ग कराला ॥ १५ ॥
दड़बड़ाइ घोरा तबि छेरा । करम चंद को ततछिन घेरा ।
दारुन गुरु सरूप जबि हेरा । जीवन ते निरास तिस बेरा ॥ १६ ॥
प्रेरि तुरंग सिपर गहि हाथ । खैंच्यो खड़ग कोप के साथ ।
गुरु ने फिर चौगिरद दबायो । जान्यो तबै काल नियरायो ॥ १७ ॥
रतनचंद अरु बली नबाब । कीनसि तिन ते प्रिथक शिताब ।
बलि करि गुरु ने खड़ग प्रहारा । करी सिपर आगै तिस बारा ॥ १८ ॥
जबहि वार ते अंग बचावा । तबि तुरंग सिर काटि गिरावा ।
गिर करि करमचंद हुइ खर्यो । रतनचंद ढिग आवनि कर्यो ॥ १९ ॥
दोनहुं बिन हय ते हुइ खरे । पिखि नबाब आयहु रिसि धरे ।
तीनहुं तीर चलावति आगे । गुरु तुरंग कौ बहुते लागे ॥ २० ॥
अंग अंग बीध्यो जिस केरा । रिसि धरि गुरु नबाब को हेरा ।
खर खपरा धनु ऐंच चलायो । गयो बेग ते जनु अहि धायो ॥ २१ ॥
बिचरति सूबे को हय भारा । लग्यो जाइ तिह भाल मझारा ।
दड़ अविनीपर गिर्यो तुरंग । खरो नबाब संभार्यो अंग ॥ २२ ॥
तबि तीनहु के रिसि बहु छाई । चहति 'गुरु को हय दें घाई' ।
जोरि जोरि तीनहु सर मारे । बीधे अंग तुरंगम सारे ॥ २३ ॥
तबि तीनहुं ते छुटि करि तीर । लगे भाल हय के बढि पीर ।
गिरि धरनी पर सुरग सिधारा । गुरु तर रह्यो भाग जिस भारा ॥ २४ ॥

---

1. तेजी से । 2. प्रशंसा ।

श्री हरि गोविंद बडि बल जोधा। पद के भार खरो उर क्रोधा।
मनो दाहबो जगत अशेख। बन्यो रुद्रको रुद्रहि वेख[1] ॥ २५ ॥
बिधीचंद आदिक भट भारे। लरनि तुरक कुछ अंतर धारे।
लख्यो न, गुरु को हय मरि गयो। रुके तिसी दिशि रण बहु कियो ॥ २६ ॥
कुछक तिमर जग पसरनि लाग्यो। अथ्यो सूर, सूरनि रिसि जाग्यो।
उत नवाब जुति चाहति सारे। निस ते प्रथम लेहि गुरु मारे ॥ २७ ॥
इत सतिगुरु उर इह अभिलाशा। प्रथम तिमर ते रिपुनि बिनाशा।
हति कै शत्रु चिंत को खोइ। रैन बिखै सुख सों पुन सोइ ॥ २८ ॥
दुनहुनि की सैना उति लरै। शसत्र प्रहरति मारति मरैं।
इत सैना के मुख सिरदार। माच्यो जंग महां बिकरार ॥ २९ ॥
तबि तीनहुं ने रिदे बिचारे। मिलि आपस महिं बाक उचारे।
'करनी बिलम न आछी हमैं। गुरु इक, हम तीनहुं इह समैं ॥ ३० ॥
करहु नेर को खड़ग प्रहारहु। गुर के अंग तुरत कटि डारहु।
नांहित घेर गहहु गुरु जीवति। तबि मुराद पूरनि तुम थीवति'[2] ॥ ३१ ॥
रतन चंद ते सुनि इम कान। गमन्यो सूबा बनि सवधान।
दोनहुं खत्री ले निज साथ। भए अग्र गहि ढालनि हाथ ॥ ३२ ॥
निकटि आनि गुरु को बंगार्यो। 'तैं बहु लशकर तुरकनि मार्यो।
प्रथम छिनाइ बाज़ को आना। नहीं शाहु ते डर उर माना ॥ ३३ ॥
अबि भी निरभै कारज कीना। कर्यो जुद्ध कुछ बल नहि चीना।
घने सुभट के प्रान बिदारे। अबि आयो हैं अग्र हमारे ॥ ३४ ॥
ले सभि को पलटा तुव मारि। तबि सुपतहिंगे लात पसारि'।
सुनि करि बोले सतिगुरु साचे। 'अरे मूढ क्या कहि मति काचे ॥ ३५ ॥
प्रथम मरे तिन पलटा लेति। अबि तूं मरि जैहैं रण खेति।
को पलटा लैहैं पुन तेरे। द्वै सुत सो मरिवाइ अगेरे ॥ ३६ ॥
जिस मग महिं अगले चलि गए। सो नहिं बंद भयो, प्रगटए[3]।
तुरकनि जराँ[4] उखेरन-हार। मुझ को जानो बली उदार ॥ ३७ ॥
तुम तीनों मैं एकल खरो। लरो मरो कुछ त्रास न करो।
अबि इह जुद्ध मूल उपजायो। सने सने जग मैं वधि जायो ॥ ३८ ॥
हमरे सिक्ख सदा बल संग। तुरकनि साथ करहिं बड जंग।
छीनहिं राज तेज हम सारे। कहां बाज की बात उचारे ॥ ३९ ॥

---

1. वेष, रूप। 2. हो। 3. स्पष्ट। 4. जड़ें।

अबदुलखान दिखावनि हेतु। करमचंद हुइ सनमुख खेत।
ढाल खड़ग दोनहुं कर धारे। फांधि चरन सों गुरु ललकारे ॥ ४० ॥
बनि सुचेत अबि मैं तुम मारों। पित हति को रिण सकल उतारों।
चंदू को सुत मोकहु जान। पित पलटे हित तुम किय जानि ॥ ४१ ॥
तैसी बनी बात मुहि आइ। ऐसो समो नहीं कबि[1] पाइ।
करति प्रतीखनि प्रापति होवा। हम कहि उछरति को गुर जोवा ॥ ४२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे 'जंग प्रसंग' बरननं नाम दोइ चत्तवारिंसती अंशु ॥ ४२ ॥

1. कभी।

अंशु ४३

अबदलखान रतनचंद करमचंद बद्ध प्रसंग

दोहरा

जबहि चंद नंदन भयो गुर के सनमुख आइ।
रतन चंद सूबा दुऊ आए तिस पिछवाइ।। १ ।।

चौपई

खड़ग उभारि गुरू पर आयो। करि बाहुन बल तबहि चलायो।
सिर पर आवति वार निहारा। सतिगुर ढाला तुरत संभारा।। २ ।।
लियो वार तहि को क्यो आगा। फूलनि लागि चिणग गन जागा।
पुन सतिगुर कुछ फांदनं करि कै। बाम हाथ ते बल संभरि कै।। ३ ।।
दूसर वार प्रहारति जाना। हती बदन पर सिपर महाना।
गिर्‌यो धरा पर मूरछा पाई। को सहि सकहि, थिरहि अगुवाई।। ४ ।।
रतन चंद दिढ दूजी ओर। खड़ग उभारि आइ करि जोर।
नट जिम फांदति आनि चलायो। गुरु टरि बाएं वार बचायो।। ५ ।।
ऊपर को उछरति पुन आवा। दुतिय वार को चहति चलावा।
तावत शीघ्र धार गुर साचा। काढ कमर ते हतिसि तमाचा।। ६ ।।
किसू विलाइत ते सिख ल्यायो। बचहि न क्यो हूं जिह नर खायो।
रतन चंद के लागसि छाती। उछरति ऊचो अवनि पपाती[1]।। ७ ।।
उगलति श्रोणत बदन पसारे। प्राण गऐ, नहि हाइ उचारे।
अबदुलखान विलोकनि क्रोधा। जान्यो रिदे 'गुरू बडि जोधा'।। ८ ।।
फांदति ललकारति मुख बोला। खरे रहो, नही कीजहि ओला[2]।
कहे ताहि के सिपर जि हाथ। पाइ सिकंध शीघ्रता साथ।। ९ ।।
नांगो खड़ग गहे गुरु फिरैं। इत उत दाव ताकबो करैं।
पुन गोमूत्राकार फिरंते। समुख परामुख कवि बिचरंते।। १० ।।

---

1. धरती पर गिरता है। 2. ओट।

पटे बाज़ बिद्या अभ्यास। अबदुलखां बहु करति उपास[1]।
जिम गुरु करति खान तिम करै। खान करति जिम गुरु तिम फिरै॥ ११॥
दुऊ चहति हैं वार चलायो। जै होवनि दोनहु मन भायो।
सैना दोनहुं के मुखि अहै। दोनहु दाव खड़ग निरबहै॥ १२॥
ओट सिपर[2] की दोनहुं त्यागी। दोनहुं बीर बीर-रस पागी।
दोनहुं शसत्रनि [illegible] करता। लरन हटनि के दोनहुं भरता[3]। १३॥
दोनहुं वंके बीर जुझारे। दोनहुं अरे मरनि कै मारे।
दोनहुं के बहु भा उतसाहू। दोनहुं अरुण बरण रन मांहू॥ १४॥
दोनहुं करहिं वार को नाना। दोनहुं धरहिं आवनो जाना।
गुर को रण लखि सुर समुदाए। उतलावति अविलोकनि आए॥ १५॥
थिरे गगन 'महिं हेरति जुद्धा। दोनहुं बीर भरे उर क्रुद्धा।
कबहुं खान गुरु ऊपर आवै। कबहुं खान पर श्री गुरु जावैं॥ १६॥
कबि बावें निकसहिं कबि दाएं। बिचरति उछरति खड़ग उठाए।
अबदुलखां तबि वार प्रहारा। खड़क अग्र करि गुरू सहारा॥ १७॥
बहुर हट्यो लखि छूछो वारि। सति गुरू फांदति हाथ उभारि।
ऊचे बोलि कर्यो रिपु डाटनि। तक्यो तरे को जंघन काटनि॥ १८॥
जान्यो खान सु तरे प्रहारहिं। वार बचावनि हित संभारहि।
तरे जंघ दिशि जबि बिरमायो। करि बलको गुर खड़ग चलायो॥ १९॥
तरे बचावति मूरख रह्यो। चंद्रहास ग्रीवा पर बह्यो।
तत छिन धरते सीस उतारा। बही साफ बहू तीखन धारा॥ २०॥
चक पर बासन करि जिम त्यारू। तूरन लेत कुलाल उतारू।
गन साबन महिं अय[4] की तारे। जिम प्रहार करि कुछक उतारे॥ २१॥
साखा मनो पाक फल रह्यो। गिर्यो सबेग वायु के वह्यो।
तिम सिर गिरिगा अबदुल खान। लोचन पसरे रहे महान॥ २२॥
मनहुं गाज ने मंडप डारा[5]। कै भूचाल ते गिर्यो मुनारा।
श्री हरिगोविंद शत्रु बिलोका। पर्यो प्रिथी पर प्राननि फोका॥ २३॥
भा प्रब्रित तम तोम कराला। म्रितक खान ढिग गुरु तिस काला।
'पर्यो दुशट हम पर चढि आयो। तुरक मूढमति चित गरवायो[6]॥ २४॥
जै सतिगुर की सदा अनंद'। कह्यो जबहि श्री हरिगोविंद।
करमचंद को सुधि तबि आई। जबि गुरु गिरा श्रवन सुनि पाई॥ २५॥

1. धनुर्विद्या की तपस्या। 2. ढाल। 3. निपुण। 4. लोहा। 5. गिरा डाला। 6. गर्व किया।

चितवति म्रितु नबाव की कहीयति। रतनचंद की सुधि नहिं लहीयति।
मैं ढिग पर्यो, आइं सिक्ख इसके। हेरति हतहि शत्रु लखि रिसके ॥ २६ ॥

अबि इह एकल है मम तीर। लरति रह्यो बहु श्रमति सरीर।
उठि मैं हतों महां जस पाऊ। शाह समीप सु जाइ सुनाऊं ॥ २७ ॥

इम बिचारि करि उठि ललकारा। ठाढों रहु, नवाव तै मारा।
निज करतूतनि को फल लीजै। जम सथान को देखनि कीजै' ॥ २८ ॥

नंदन चंदू स्वाही केरा। महां क्रोध ते श्री गुरु हेरा।
'अबि लौ जीवति हैं रण मांही। निज संगनि संग गमन्यो नाहीं ॥ २९ ॥

तोहि उडीकति[1] होहि अगारी। किम बिलंब तिन पीछै धारी।
निकटि आऊ तिन साथ मिलावैं। बहुर इकाकी जमपुरि जावैं' ॥ ३० ॥

इम कहिते गुरु ऊपर आयो। नांगो चंद्रहास चमकायो।
जिम दीपक पर जाइ पतंग। करहि बिनाशन अपने अंग ॥ ३१ ॥

मूरख जाइ नेर तबि ठाना। सतिगुरु बोले 'बन सवधाना।
करि लिहु वार प्रथम बल धरिकै। नतु पछुतैहैं पीछे मरिकै' ॥ ३२ ॥

सुनति वार कीनसि तबि आइ। सिर को किधौं सिकंध तकाइ।
खड़ग चलायहु गुरु अविलोका। अपन खड़ग पर तिस को रोका ॥ ३३ ॥

रिसते बल ते तिनहि प्रहारा। बज्यो खड़ग पर खड़ग करारा।
दोनहुं ठूट धरा पर परे। दोनहुं मुशट रहे कर धरे ॥ ३४ ॥

पिखि श्री हरिगोबिंद बिचारे। अबि जमधर सों जे इस मारें।
शसत्र मौत ते दुशट मरै है। यांते हाथन साथ हते हैं ॥ ३५ ॥

इह भी खर्यो निरायुध रह्यो। हतनि शसत्र नहि आछो लह्यो।
बल करि गही बाहुं गुरु तबै। जतन छुटनि हित ठानति सबै ॥ ३६ ॥

जिम गज सुंड बिखै गहिवावै। बहुर अंग निज भसा छुडावै।
जोर मरोर तोर करि कह्यो। मोचनि हाथ न क्योंहूं लह्यो ॥ ३७ ॥

दुतिय हाथ ते ओज दिखावति। शेर अंक ज्यो म्रिग उतलावति।
तबि सतिगुरु गहिकै कर दाएं। अलप भार लखि लीनि उठाए ॥ ३८ ॥

कर्यो भ्रमावनि केतिक फेरे। छित पछार करि दीनसि गेरे।
फूटि गयो सिर, चूरन अंग। तन की संधि छुटी सरबंग ॥ ३९ ॥

इम बिनास गन शत्रु करिकै। पुन चहुं दिशि महिं भले निहरिकै।
रह्यो न कोई लरिबे जोग। हुते जियत्ति कुछ, भागे लोग ॥ ४० ॥

---

1. प्रतीक्षा करते।

भयो अंधेरा द्रिशटि न परै। जहिं कहिं तुरक त्रास को धरैं।
सूबा मर्यो जानि सभि लीनो। जियति शेख भागे डर चीनो ॥ ४१ ॥

सनै सनै काइर जबि भागे। बिधीआ देखति नहिं रिपु आगे।
गुरु सुधि हित पावे कहु मुर्यो। सनै सनै आवति है तुर्यो ॥ ४२ ॥

इत सतिगुरु श्रम को कुछ ठानि। बैठि गए तिसही रण थान।
तीनहुं मरे निकटि ही परे। तिनके बीच सतिगुरू थिरे ॥ ४३ ॥

अविनि गगन महिं तम बिसतारा। नहीं निकटि ही धरहि निहारा।
चलनि तुफंग सकल हटि रही। तुरक त्रास करि बोलति नहीं ॥ ४४ ॥

हटे सकल निज निज पसचात। रौरा मचति भयो सभि शांति।
जान्यो परै नहीं कित कोइ। दूरि दूरि लौ हटि थिर होइ ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे अबदल खान रतन चंद करम चंद बध प्रसंग बरननं नाम तीन चत्वारिसंती अंशु ॥ ४३ ॥

अंशु ४४

लोथन नदी गेरनि प्रसंग

दोहरा

बिधीचंद ते परे सिख फते गुरू की जानि।
तिमर बिखै करि हेल को मेलि दियो घमसान ।। १ ।।

चौपई

एक दिशि ते ज्यों बाढनि[1] लागे। तम महिं तुरक त्रास करि भागे।
जिनके रण महिं तुरंग मरे हैं। इत उत बिथरे जाइ दुरे हैं।। २ ।।
अरति जाति को भागति जाति। पीछे सिक्ख खड़ग करि घाति।
जाति पिछारी काटति जबै। गुरू दुहाई बोले तबै ।। ३ ।।
सुनति सिक्ख पीछे हटि आए। नहिं मारनि हित हाथ उठाए।
जहि सतिगुरु डेरो निज डारा। तजि दास तहिं राखि सुधारा ।। ४ ।।
तिनहुं बिचार कीनि मन मांही। 'तिमर भयो गुरु आगम नांही'।
संध्या परी जानि तिस काला। द्वै मशालची जारि मसाला ।। ५ ।।
तूरण ही रण को दिश आए। खोजन लगे नहीं गुरु पाए।
बिधीचंद जुग देखि मसाल। हय धवाइ आयसि ततकाल ।। ६ ।।
गुरु सुधि बूझति आपस मांही। सकल कहति 'देखे हम नांही'।
चिंता अधिक सभिनि के होई। खोजन लगे खेत सभि कोई ।। ७ ।।
इत उत महिं बिचरति असुवार। 'कहां गुरू जी' करति पुकार।
सभि कै मन संदेह वधेरा। गुरू नहीं हेरे इस बेरा ।। ८ ।।
खोजति पटी लोथ समुदाए। पसर्यो श्रोणति पग फिसलाए।
दारुण जंग भूमका भारी। मरे परे भट हयनि हज़ारी ।। ९ ।।
रले मिले[2] सिख तुरक घनेरे। इत उत बिचरति भे सभि हेरे।
करहिं मसालनि केर प्रकाश। इस बिधि गए गुरू के पास ।। १० ।।

---

1. काटने। 2. मिले जुले।

अबदुलखान मारि ढिग थिरे। निकटि अपर मारे बहु परे।
संघर घाइ घने लगि घोरे। सो भी मर्‌यो खेत रण घोरे ॥ ११ ॥
थिरे इकाकी बीर बिसाला। करे बिलोकनि गुरु जिस काला।
भए प्रफुल्यत पाइन परे। हेरि हेरि सभि धीरज धरे ॥ १२ ॥
बिधी चंद कर जोरि बखाना। 'किम थिर रहे प्रभु रण ठाना।
दास न पास इकाकी अहो। 'कहो प्रभू अबि क्या चित चहो' ॥ १३ ॥
सुनि श्री हरिगोविंद उचारा। जो चित चहैं करनि हम कारा।
सो भुनसार भए ते होइ। अबि डेरे गमनहु सभि कोइ ॥ १४ ॥
को सिख घाइल हो रण बिसै। करहु संभारनि आनहु तिसै'।
अस कहि सतिगुर ने हय लीनि। भए अरूढ़नि प्यानो कीनि ॥ १५ ॥
निज डेरे कहु चलि करि आए। बिधीए घाइल सिख उठवाए।
सभि रणखेत खोज करि आछे। सनै सनै आवति भा पाछे ॥ १६ ॥
आइ सिवर महिं आनंद बधाए। दुंदभि फते केर बजवाए।
सभि की करी संभारनि डेरे। खान पान को दीनि घनेरे ॥ १७ ॥
भए नचिंत शत्रुगन मारे। सुपति जथा सुख भैं तबि सारे।
पाछलि निसा उठे गुन खानी। नित की सौच सकल तबि ठानी ॥ १८ ॥
करि मज्जन, सुख ध्यान लगायो। प्राची दिशि प्रकाश हुइ आयो।
सभिनि शनान कीनि जिस काल। भए अरूढनि गुरू क्रिपाल ॥ १९ ॥
बिधीचंद को लेकरि संग। देखी जाइ भूमिका जंग।
तुरक सहस्र चतुरदस मरे। केतिक सिक्ख बीच तिन परे ॥ २० ॥
कहि सतिगुर ने गरत खनावा। अबदुलखान उठाइ[1] पुवावा।
पुन तिस के सुत खोजि उठाए। तिसी गरत महिं आनि सु भाए ॥ २१ ॥
पुन पंचहु सरदार अनाए। पाइ गरत महिं सभि दफनाए।
ऊपर रच्यो दमदमा तुंग। तिस पर बैठे गुरु अरि-भंग ॥ २२ ॥
बिधीचंद सो कहि मुसकावति। 'जिस विद्या को सदा कमावति।
सो अबि आई काम हमारे। अरे रिपुनि गन को रण मारे ॥ २३ ॥
अबदुलखान अर्‌यो बहु लर्‌यो। खड़ग जंग को करि करि मर्‌यो।
घने घाइ घाले अरु खाए। दोनहुं खत्री मारि गिराए ॥ २४ ॥
पित पलटर चाहति नित रहे। अबि सभिहां पूरे करि दहे।
संघर घोर घनो घमसान। तुरक हज़ारनि को अवसान ॥ २५ ॥

1. डलवा दिया। 2.

सुनि सादर बिधीए तबि कह्यो। 'जिनहुं प्रताप न रावरि लह्यो।
से मतिमंद हान ही पावैं। तुम ते कवनि जीवतो जावैं ॥ २६ ॥
तीन लोक मैं बली न कोई। अरहिं आपके सनमुख होई।
तुरक बापुरे कहां अगारी। समता चहति मरे रण हारी ॥ २७ ॥
पुन सतिगुर ने हुकम बखाना। 'नर इकठे कीजहि इस थाना।
जेतिक अहैं ग्राम के आनहु। सकल मिहनती साथ बखानहु ॥ २८ ॥
सैना के नर इकठे होइ। करहु कार मिलि कै सभि कोइ।
परे म्रितक जेतिक दरसाहीं। डारहु सकल ब्रिपासा मांही ॥ २९ ॥
प्रिथम आपने सिक्ख उठावहु। हमहि नाम तिनि केर सुनावहु।
बीच ब्रिपासा देहु प्रवाह। हम बैठहि चल करि तर पाहा ॥ ३० ॥
इम कहि श्री हरिगोविंद चंद। उठि करि चले संग सिख ब्रिंद।
देकरि हुकम आइ तिस काला। थिरे बिपासा पास क्रिपाला ॥ ३१ ॥
बिजना चमर होइ फिर फेरे। बैठे पूर[1] बिपासा हेरे।
बीन बीन सिक्खनि के देहि। आनहिं, नाम सुनाइसु देहिं ॥ ३२ ॥
पुन सरिता महि करहिं प्रवाहू। वहे अधिक ही जलि के मांहू।
सिक्खनि को प्रवाह करि सारे। बैठे श्री गुरु पिखहिं क्रिनारे ॥ ३३ ॥
सहिकामी निशकामी जाने। भोग मोख बखशी तिस थाने।
सहिकामी को प्रिथवीराज। बखश्यो संग ही सकल समाज ॥ ३४ ॥
निशकामी के बंध निवारे। दई मुकति जाने अति प्यारे।
सकल सिख जबि दिए बहाए। पुन तुरकनि की लोथनि ल्याए ॥ ३५ ॥
हुते सहंस्र पंचदस त्रेई। बचे हज़ार पलाइ सु तेई।
अपर मरे सभि ले ले आवैं। बहुर टांग को गहैं बगावैं[2] ॥ ३६ ॥
जल के जंतु हज़ारहुं आए। आमिख काटि काटि शव खाए।
ब्रिंद मनुज लागे तहिं ल्यावनि। तूरनि करहिं नदी महि पावनि ॥ ३७ ॥
सकल खेत रण के जे मरे। नरगन आनि आनि बल करे।
कोऊ स्याल के हैं अधि खाए। अंग भंग करवारनि धाए ॥ ३८ ॥
धरि धरि सभि को बीच बगावैं। उछरहि नीर लीनि हुइ जावैं।
सभि उचवाइ नदी गिरवाए। सकल सथान भलो करिवाए ॥ ३९ ॥
उठे गुरू पुन गमने डेरे। संग सिक्ख परमुदंति घनेरे।
रण की बात अनेक करंते। कहति सुनावैं गुरु भगवंते ॥ ४० ॥

---

1. प्रवाह। 2. फेंकते हैं।

'बडी मार तुरकनि को होई। बिदतहि जगत लखहि सभि कोई।
शाहु जहां भी जानहि नीके। लगे हाथ गुरु सिक्खनि हीके ॥ ४१ ॥
आनि आपने सिवर बिराजे। जिनके नाम जपे जम भाजे।
देश दुआबे माझे सारे। सतिगुर को जस करति उचारे ॥ ४२ ॥
जहि कहि फैल्यो जुद्ध ब्रितांत। 'भयो महिद तुरकनि को घात।
आयुध धरिबे गुरु सफलाए। अनगन दोखी दुशट खपाए ॥ ४३ ॥
प्रथम हुती गुरु घर महि पीरी। लखी परति लैहैं अबि मीरी।
पातिशाहित को गरद[1] मिलावैं। निज सिक्खनि ते राज करावैं ॥ ४४ ॥
इम जे करि नित रखहिं लराई। सभि तुरकानो दहिं खपाई'।
सज्जन सुनि सुनि अनंद धरंते। दुरजन जरहिं, न रिदे जरंते[2] ॥ ४५ ॥
पूरब, दच्छन, पच्छम, उतर। फैल्यो जहिं कहि सुजस पवित्तर।
'धंन धंन' श्री सतिगुर पूरन। जोधा महद बली, अरिचूरन' ॥ ४६ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे, लोथन नदी गेरनि प्रसंग बरननं नाम चतुराचतवारिसंती अंशु ॥ ४४ ॥

1. धूल। 2. सह नहीं सकते।

अंशु ४५

तुरंग संगत ल्यावन प्रसंग

दोहरा

सुनहु सिंघ सिख गन सकल सतिगुरु कथा रसाल।
भयो युद्ध इस भांति इह बरन्यो सुजस क्रिपाल ।। १ ।।

चौपई

बैठ्यो श्री हरिगोविंद जोधा। मनहुं रूप इह धर्यो प्रवोध[1]।
हुकम ससंदनि संग बखाना। करो कोट चौगिरद महाना ।। २ ।।
बसहि नगर सुंदर जिस बीचि। परहिं महल गन ऊच रु नीचि।
राखहु पंच पौर पुरि केरे। कारीगरनि लगाइ घनेरे ।। ३ ।।
करहु शीघ्रता लेहु वनाइ। दिहु धन मिहनति ब्रिद लगाइ।
सुनति मसंदनि कीनसि तैसे। श्री मुख ते फुरमायहु जैसे ।। ४ ।।
दियो दरब सभि को मन भाए। ब्रिंद पचावे कहि चढिवाए।
पाकी ईंटनि त्यारी करैं। आइ मिहनती जिह सुनि परैं ।। ५ ।।
कारीगर समूह मंगवाए। दे दे दरब सु सरब लगाए।
चिनिबे लगे शीघ्रता धारी। पाकी इंट करी बहु त्यारी ।। ६ ।।
हरखति होइ कार को करिहीं। धन गन लीन भाउ पुन धरिहीं।
अंदर मंदिर लगे उसारनि। ग़ली गरीब वासिबे कारन ।। ७ ।।
बहुर उणक[2] तबि होवति भई। मिले लोक लखि नगरी नई।
तबि सतिगुर ने रिदे बिचारा। घर घरेड़ को जहां निहारा ।। ८ ।।
चहति उखार्यो रिपु को मूल। गरबति जो होयसि प्रतिकूल।
नीव न उखरहि जे इस केरी। तऊ मालिकी करिहै फेरी ।। ९ ।।
पुर महिं अविनी अपनी जानि। घरेड़ केरि संबंधी आनि।
तुरकनि की सहाइ को पाइ। बहुर लेहिंगे से अपनाइ ।। १० ।।

---

1. ज्ञान 2. रौनक, शोभा

इम लखि करि गुरु हुकम बखाना। 'घर घेरड़ को है जिस थाना।
दूर करहु तिस की बुनिआदि[1]। नीव उखेरहु होइ न बादि ॥ ११ ॥
करिवे उचित हुती ध्रमसाला। तुरकनि को बल हुइ जिस काला।
कर्राहि बाद मतिमंद ढहावहिं। घर घेरड़ को बहुर बनावहि ॥ १२ ॥
हम ने करी बाद बुनियाद। ह्वै न बिबाद तिज्यों अहिलादि।
याते इहां मसीत बनावहु। सुंदर दर तिमही रखवावहु ॥ १३ ॥
धरहि प्रीति गन तुरक मसीत। कथि नहिं करिहैं पुन बिपरीति।
सुनति मसंदनि तथा बनाई। अब लौ बिदति अहै तिस थाईं ॥ १४ ॥
सति गुर तहां बिराजति रहे। रुति बरखा के अनंद लहे।
बिदते जलधर गगन मझारी। ज्यो तन धरहिं संत उपकारी ॥ १५ ॥
कल्लर खेत, सकल थल बरखैं। देखि देखि करि जन गन हरखैं।
जिम गुरु गिरा सुनहि सभि कोई। प्रेम बीज कहुं उतपति होई ॥ १६ ॥
मधुर मधुर धुनि सुनि सुनि मोर। ठौर ठौर बोलति करि शोर।
जथा कीरतन सुनि जग्यासी। बसहि रिदे पुन गाइ प्रकाशी ॥ १७ ॥
दादर टेरति हैं चहूं ओर। जिम सिख पर्ढाहं गिरा गुर जोर।
बहु जल धइ मुदति भे मीन। जथा सिक्ख गुरु प्रेम प्रबीन ॥ १८ ॥
जर्यो जवासा, जर्यो न जलको। सुनि निंदक जसु गुरू बिमल को।
हरिआवलि सगरे जग होई। गुर सिक्खी जिम सभि थल जोई ॥ १९ ॥
सरिता को प्रवाह बहु बाढा। जुग कंठनि[2] ते जल कहु काढा।
जिम भगतनि के प्रेम प्रवाहू। रस को लैवे वधहिं उमाहू ॥ २० ॥
पावस पाइ बीज बहु उपजै। जिम सिक्खी ते गुन गन निपजै।
सतिगुरु सलिता के तटि जाइ। बैठि बिलोकहिं जल समुदाइ ॥ २१ ॥
बडे बेग ते बगहि प्रवाहू। काशट बहे जाइ गन माहूं।
नीर नवीन मलीन सु मीन[3]। तरु जुति तट को ढाहनि कीनि ॥ २२ ॥
सहत अनेक बिकार अशेखू। हतहि ग्यान जिम राग रु द्वैखू।
कबि कबि लागहि तहां दिवान। करहि रबाबी शबद सु गानि ॥ २३ ॥
दे दे लोक मिलहि उपहारा। जानहिं गुरू प्रताप उदारा।
ग्राम ग्राम घर घर तिस देश। वध्यो नित प्रति तेज विशेश ॥ २४ ॥
बहुत घाव बिधीए के घोरे। म्रितक भयो सो भी तिस ठौरे।
अपर सुभट के मरे तुरंग। केतिक जोधा घाइल अंग ॥ २५ ॥

1. नींव 2. किनारा 3. गाढ़ा

सभि की खान पान सुधि सारी। लेति सदा गुरु करुनाधारी।
लगे खरीदनि हय बडि मोल। धाइ अधिक, बल जति अरु लोल ॥ २६ ॥
देति भए सिक्खन के तरै। लै लै सुभट सराहति चहैं।
बहु कीमत्ति को हय नहिं पावै। जिस पर गुरू चढैं हरखावै[1] ॥ २७ ॥
बडो[2] चलाक नली तन होइ। सतिगुरु भार ऊचावहि सोइ।
इक तौ बल जुति डील बिसाला। दुतिय अरूढनि तेज क्रिपाला ॥ २८ ॥
नहिं पसंत महिं को हय आवै। गुरु असवारी जो निबहावै।
सिमरति हैं नित प्रथम तरंग। गुन गन सरब हुते जिस अंग ॥ २९ ॥
'लव पुरि ते बहु करे उपाय। तबि के हम ल्याए हरखाय।
निरंकाल दीनसि असवारी। लगे घाव गन म्रितु को धारी ॥ ३० ॥
सभि महिं कहि कहि बाक सुनावैं। 'बली तुरंग कहूं जो पावैं।
मुख मांग्यो धन देवनि करै। अपर खुशी हम तिस पर धरैं ॥ ३१ ॥
निकटि न पय्यति है इस देश। कहां बतावहि को अस बेस।
अतर सुभटि सिख रहनि जु ऐहैं। तिन को सतिगुरु राखति जैहैं ॥ ३२ ॥
हमही कितिक काल जबि बीत। हम को चाहति चीत सु जीता।
पशचम दिशि संगति समुदाई। गुरु दरशन हित भी इक ठाई ॥ ३३ ॥
तिस संगति महिं सिक्ख सभागा। धनी बडो अरु नाम सभागा।
गुरु की कार सकेलनि करि कै। हय लीने गुरु खुशी बिचारिकै ॥ ३४ ॥
लाख लाख की कीमत भारे। पंच तुरंग लिये बल भारे।
लोक हज़ारहुं संगति जानि। मिल तिन महिं तबि कीनि पयान ॥ ३५ ॥
बहु बिधि तें करि करि चतुराई। तुरकनि ते नित लेत छपाई।
सेवा करति अनिक परकार। आइ पहुंचे गुर दरबार ॥ ३६ ॥
निसा भई लखि, दरसे नांही। डेरा करति भए पुरि मांही।
भई प्रभाति लग्यो दीवान। दई मेवड़े तबि सुधि आनि ॥ ३७ ॥
'अबि दरशन को समो[3] जनीजै। श्री सतिगुर ते खुशी सुलीजै।
लै लै संगति सभि उपहार। भूखन बसत्र अनेक प्रकार ॥ ३८ ॥
शसत्र तुरंग दरब समुदाई। धरि धरि भाउ रिदे अधिकाई।
जाइ गुरू को दरशन कीनि। बैठे तखत शुभति बल पीन ॥ ३९ ॥
बारि बारि सिर चामर ढुरै। ढिग अमरदास मेवरो करै।
आगै सरल उपाइन धरि धरि। बारि बारि पद बंदन करि करि ॥ ४० ॥

---

1. हर्षावे 2. चालाक, चुस्त 3. जानिए

संगत महा मोद मन पायो। जग गुर पावनि का दरसायो।
श्री हरिगोबिंद शसत्र निहारे। पुन घोरे आए बलि भारे।: ४१।।
रूप रंग तिनको सभि हेरे। सुंदद आक्रिति बली बडेरे।
खुशी अधिक ही सिख पर कीनि। जनम मरन बंधन करि दीन।। ४२।।
अपर सिक्ख संगत गन सारे। जस इच्छा धरि गुरू निहारे।
सभि की तबि पूरन करि दई। अधिक प्रीति आगे उपजई।। ४३।।
सुंदर बदन चंद पार्निट। मुदति देखि श्री हरिगोबिंद।
हरखे मन बांछति को पाइ। नर तन अपने को सफलाइ।। ४४।।
केतिक तिन दरशन को करिकै। संगति गमनी मुर उर धरिकै।
अनिक प्रकार गुरू जस कहिते। दिन महिं चलति, निसा महिं रहिते।। ४५।।
तुरक बिनायक गुरु अवतारी। चहुं दिशि की संगति सुख कारी।
इत्यादिक कीरति को भाखति। सुनहि अपर सो दरशन कारंबति।। ४६।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे तुरंग संगत ल्यावन प्रसंग बरननं नाम पंचचतवारिंसती अंशु।। ४५।।

अंशु ४६

तरंगन प्रसंग

दोहरा

श्री गुरु हरिगोविंद जी प्रभु जोधा बलवान।
शौक बिलंद तुरंग को चढहिं प्रीति को ठानि ॥ १ ॥

चौपई

पंच यवंगम लगे तबेले। सेवक लागे करनि सुहेले।
पानि सतिगुरु इक इकि फिरवायो। फांधनि चंचल वेग धवायो ॥ २ ॥
तिन पंचहुं मैं एक भलेरो। चंचल बल मैं वेग बडेरो।
श्री हरि गोविंद आप चर्हनि को। रखवायहु कहि, सुशट बरन को ॥ ३ ॥
ज़ीन जराउ जरे जवाहिरि। जबर ज़ेब जगमग जिस ज़ाहर।
सुंदर कोरदार बर हीरे। जागे थान के जानति चीरे ॥ ४ ॥
अपर अजाइब जुकति बन्यौ है। सुवरन शोभति स्वरन सन्यो है।
ऐसी तुरंग सुगम नहि आवै। जो सतिगुर के मन माहभावै ॥ ५ ॥
कर्यो हुकम आनहु करि त्यार। दासन ततछिन मांहि शिकार।
रेशम डोर गहे कर आन्यो। धंन भाग जुति सभि ने जान्यो ॥ ६ ॥

तन को बरन दिपंति इस भांती। मनहुं ताफता सुंदर कांती।
जुगम श्रोन लघु सुंदर खरे[1]। आयुत छाती लोचन खरे[2] ॥ ७ ॥
अलप गामची, सुंभ बडेरे। वंकी ग्रीव चलहि जिस बेरे।
सिमरि गुरू श्री नानक आदि। चढे शसत्र धरि अहिलाद ॥ ८ ॥

सुंदर चाल पाइ करि फेरा। रोकति चाहति बेग बडेरा[3]।
बहुरो लारा[4] छैरनि कीनि। करति ओज गुरु धीरज दीनि ॥ ९ ॥

छोटी छाल उछालनि करे। गिन गिन चरन मनहुं धरि धरे।
बहुर धवाई बेग को हेरा। भाखति कवि तिह सुजस बडेरा ॥ १० ॥

---

1. खड़े 2. सुंदर 3. अत्यंत 4. दुलकी

जनु बाजी मेली बड बाजी। नट बाजी जिस देखति लाजी।
पौन गौन को कीनि पिछेरैं। बपुरे म्रिग कहा सब दौरैं।। ११ ।।
मनके साथ सखापन धारै। जनु चपला को चपल सिखारै।
नयन नागरी ते हुइ आगर[1]। किधौं जूप को दाव उजगर।। १२ ।।
छांती छुवै छाल पग दौन। छित लगि पाछलि पाइ सु औन[2]।
थरकति मनहुं थार महिं मोती। जनु जल मछली इत उत होती ।। १३ ।।
सभि बिधि पिखि श्री हरिगोविंद। चढि करि भए अनंद बिलंद।
करि पसंद इक राख्यो आप। जिह अरूढि पापी नर खापि।। १४ ।।
अपर पिख्यो सुंदर बल पीन। बिधीचंद को बाज़ी दीनि।
हुइ अरूढ तिन फेरि दिखायो। मनहुं पौन को पूत सुहायो।। १५ ।।
ले करि भयो अनंदति भाई। श्री गुरु पाइन सीस झुकाई।
पुन त्रितीआ घोरा मंगवाइ। ऊपर सुंदर ज़ीन सुहाइ।। १६ ।।
श्री गुरदित्ते हेतु पुचायो। ले करि सेवक ततछिन आयो।
गोइंदवाल पहूच्यो जाइ। देकरि गुरु सुधि सकल सुनाइ।। १७ ।।
चौथो तुरंग हज़ूर हकारा। ज़ी बिभूखन जुकति शिंगारा।
पैंदेखान समीप पठायो। सो लै करि उर महि हरखायो।। १८ ।।
एक तुरंग शेख[3] रहि गयो। खास तबेले महि रखि लायो।
इक दिन बैठि दिवान मझारा। सुभट सिक्ख तहिं सुभति हज़ारा।। १९ ।।
सभिनि सुनाइ मुकंद बखानी। 'को सिख सुद्ध पठहि गुरु बानी।
जथा जोग मात्रा अरु बरण। पठहि संभारि सुनावहि करण[4] ।। २० ।।
सुनि गन सिक्ख हाथ को जोरि। कहै 'गुरू हम तुमरे जोर।
नित ही पाठ करहि गुरबानी। कंठ हमारे अहै महानी।। २१ ।।
छेम हेत हम नेम समेता। रटहि प्रभाते कटहिं कुहेता[5]।
सुनि पुन गुरू भन्यो 'है नीको। गुरबानी सगि प्रीति हीकी।। २२ ।।
तऊ सिक्ख जो हुइ बुधिवंता। करति प्रेम लखि शुद्ध पठंता।
सो अबि सनमुख थिरहि हमारे। जपु जी पाठ करहि निरधारे।। २३ ।।
शुद्ध सुनाइ रिझावहि मांही। मन बांछति फल प्रापति होही।
नहि अदेय वसतू पुन कौन। जिम जाचहि हम दैहैं तौन।। २४ ।।
इस विधि पुना जबि सतिगुरु कह्यो। सभिनि बिचारि गुरू रुख लह्यो।
इक सिख गुरु मुम नाम 'गुपाल'। हाथ जोरि कहि 'सुनहु क्रिपाल।। २५ ।।

---

1. श्रेष्ठ 2. लगते आते हैं 3. शेष 4. कान 5. विहल

जो सेवक प्रति आइसु करीयहि। अपनि क्रिपा बल मो पर धरीयहि।
करहौं सुनावनि मैं थिर होइ। शुद्ध पाठ जिम जपु को जोइ ॥ २६ ॥
सुनति गरीब निवाज बखाना। 'आछी बाति थिरहु इस थाना'।
निज सनमुख आसन डसिवावा। करि आइसु तिस पर बैठावा ॥ २७ ॥
करहु सुनावनि शुद्ध जपु मोही। जाचहि कहैं जु देवो तोही।
बैठ्यो सनमुख लग्यो उचारनि। सिमर्यो श्री नानक सुख कारनि ॥ २८ ॥
पूरब कहि 'इकि ओ अंकारा'। सतिनाम को बहुर उचारा।
श्री हरिगोविंद सुनि कर[1] जोरि। नमसकार कीनी सिख ओरि ॥ २९ ॥
पठ्यो मंगलाचरन बहोरी। बरवनि कीनसि जो खट पौरी।
'जे जुग चारे' जुति अनुराग। पठी, कह्यो जिमहि बैराग ॥ ३० ॥
बहुर चतुर पठि[2] 'श्रवण' महातम। करिबे श्रवण ब्रह्म अनंदातम।
बहुर 'मनन' की पवरी चार। करी सुनावनि शुद्ध उचारि ॥ ३१ ॥
पुनह पठति भा 'पंच प्रवान'। निध्यासन[3] जहि कीनि बखान।
'तू सदा सलामति निरंकार'। सख्यात कार पर तुक इह चार ॥ ३२ ॥
पठी 'असंखन' पवरी फेर। शकति शांतकी प्रथम सु हेरि।
बहुर तामसी शकति बखानी। जिन को अंत न किनहूं जानी ॥ ३३ ॥
चार प्रकारनि ब्रह्म जु ग्यान। सकल सुनावन कीनि बखान।
पुन बिअंतता[4] कही ब्रह्म की। जीव ईश इकता करि सम की ॥ ३४ ॥
सनै सनै सभि कीनि संभार। माता बरण भले निरधारि।
सुनि सतिगुरु तबि रिदे बिचारी। जपु के सम क्या वसतु उदारी ॥ ३५ ॥
जो इसको अबि दैबों करैं। कोइ न समता क्यों हूं धरै।
जो सगरे जग की गुरिआई। इह दैहैं, निश्चै ठहिराई ॥ ३६ ॥

'नानक नदरी नदरि निहाल'। इह तुक पठी प्रीति के नाल[5]।
तबि सतिगुर मन मोट उपायो। जानू उठिबे हेत उठायो ॥ ३७ ॥

तिकिक देनि को चाह्यो रिदै। सिख ने कर्यो मनोरथ तबै।
'रह्यो पंचमों हय बड मोल। सो मैं लेऊ गुरू ते बोल ॥ ३८ ॥

ज़ीन समेत पाइ करि सोऊ। चढों तिसी पर मन मुद होऊ।
अस अस्व[6] पर होवनि असुवार। पाइ प्रिथी पर सुरग बहार[7] ॥ ३९ ॥

जिसको देखि सिहावति नैन। सो मो मोकहु गुरु करिहैं देनि।
'मुख मांग्यो दैहैं' कहि लीन। एव मनोरथ को मन कीनि ॥ ४० ॥

---

1. हाथ जोड़ कर 2. चार पउड़ियाँ 3. निदिध्यासन, ध्यान 4. अनंतता 5. साथ 6. अश्व, घोड़ा 7. स्वर्गानंद

जबहि पिख्यो गुरु चरन उठायो। प्रभु माया नै तबि बिचलायो।
समझ्यो रिदे 'गुरू अबि चलैं। सुनहिं सलोक न सभि फल फलै ॥ ४१ ॥

विफल मनोरथ होवति दीखा। रह्यो छूछ मैं प्रथम सरीखा।
लखि उर की गुरु अंतरजामी। बोले 'कहां कौन तैं कामी ॥ ४२ ॥

बिना मरनोथ जपुजी सारो। पूरब सम जे सकल उचारो।
श्री नानक गादी बडिआई[1]। सगरे जग की बर गुरिआई ॥ ४३ ॥

सो हम दैनि उठति इस समें। जिसके अग्र त्रिलोकी नमे।
कहा करहिं, बस तोहि न कोई। जहां उचित हुइ पहुचै सोई ॥ ४४ ॥

अबि भी धंन जनम तुव भयो। जलम मरन दुख सभि मिटि गयो।
कर्यो मनोरथ जो अबि जैसे। सो लीजहु नहि बिलमहुं जैसे ॥ ४५ ॥

कहि करि सो घोरा मंगवायो। सुंदर जिस पर ज़ीन सुहायो।
सवा लाख की कीमत जांही। हुइ प्रसंन बखशति भे ताही ॥ ४६ ॥

बसत्र बिभूखन धन कुछ और। देति भए सोढी सिरमौर।
लए गुपाले अनंद उपायो। श्री गुर ते सुनि करि पछुतायो ॥ ४७ ॥

मात्रा बरण संभारहिं सारे। श्री गुरु बानी सिक्ख उचारें।
महा महातम करि दिखरायो। 'नहिं त्रिलोक मैं सम कुछ पायो' ॥ ४८ ॥

इम सतिगुरु बहु करे बिलासा। घने सुभट राखहिं निज पासा।
तुरंग बिकनि आवैं सो लेति। सैनां महिं बरताइसु[2] देति ॥ ४९ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे तुरंगन प्रसंग बरननं नाम खशटचतवारिंसती अंशु ॥ ४६ ॥

---

1. बड़ाई 2. बांटे

अंशु ४७

भाई ब्रिद्ध प्रसंग

दोहरा

हय अकोर गन देय करि संगति गई बिसाल।
जाइ शनाने सुधासर देखति भए निहाल ॥ १ ॥

चौपई

तीरथ तरन तारन पुन गए। तहां शनान करति सभि भए।
तहिं संगति ने रिदे बिचारा। 'ब्रिध साहिब गुरु सिक्ख उदारा ॥ २ ॥
जिस को बचन पाइ गुरु जनमे। श्री हरिगोबिंद बिदति सभिनि में।
इहां निकटि तिस दरशन करो। जानहु तिसै गुरू समसरो' ॥ ३ ॥
इम मसलत करि संगति गई। बीड़ गुरू के जहिं सुधि लई।
आगै ब्रिध भाई गुरु दासि। दोनहु बैठे ग्यान प्रकाश* ॥ ४ ॥
सभिनि उपाइन धरि धरि बंदे। दरशन ले करि रिदे अनंदे।
दई प्रदछना सनमुख बैसे। तबि भाई बूझे सभि ऐसे ॥ ५ ॥
'कहिं ते आए, कहां पयाने'। सुनि संगति शुभ वाक बखाने।
तीर बिपासा ग्राम रुहेला। श्री हरिगोबिंद गुरू सुहेला ॥ ६ ॥
तिह नां मच्यो अधिक संग्रामू। तुटक हज़ारों गे जम धामू।
तिन दरशन करि इति दिशि आए। रावर के दरशन अबि पाए' ॥ ७ ॥
सरब प्रसंग सुन्यो हरखाए। संगति को बर दे त्रिपताए।
पुन संगति निज थान पयानी। ब्रिध ने बहुरो गिरा बखानी ॥ ८ ॥
सुनि गुरदास! बिती बहु बेरे। श्री हरिगोबिंद दरशन हेरे।
कर्‌यो सुधासर रण रिपु मारे। तहा जाइ पुन अधिक संघारे ॥ ९ ॥
अबि दरशन करनो बनि आवै। मिलि करि सुधि सगरी को पावै'।
सुनि गुरु दास रिदे बहु भाई। पंथ चले सभि बिलम बिहाई ॥ १० ॥

---

*, ज्ञान चर्चा

प्रिथम सुधासर आनि शनाने। श्री हरि मंदर दरशन ठाने।
तीन सिक्ख तहिं अपर मिले हैं। सुनि सुधि गुरु के दरस चले हैं॥ ११॥
जोध, अजित्ता, तीसर जीवा। पंचहु चले प्रेम की सेवा।
तीर बिपासा के चलि आए। सतिगुरु जसु घर घर सुनि पाए॥ १२॥
मुगल मार गुरु भयो बडेरा। रण घाल्यो घमसान घनेरा।
ग्राम ग्राम मैं कहहि सुनावैं। सुनि सुनि सिक्ख मोद उपजावैं॥ १३॥
आगै सतिगुर कथा सुनीजै। जिसते सकल कामना लीजै।
सुंदर सगरो कोट चिनावा। नगर बसावनि मन ललचावा॥ १४॥
तबि बिशकरमा नरतन धरिकै। गुरु कारज को चितवनि करिकै।
हाथ जोरि करि दरशन लीना। पद अरबिंदन बंदन कीना॥ १५॥
मेधात्री निज नाम धरायो। गुर सनमुख हुइ बाक अलायो।
अपनि सफलता करिबे कारनि। आयो तुम हित नगर उसारनि॥ १६॥
इस विद्या महि महां प्रबीना। आइसु दीजहि रचौ नवीना।
तबि सतिगुर सगरी बिधि जानि। कह्यो भले निज करुना ठानि॥ १७॥
सभि कारीगर मैं मुखि होवहु। रचहु नगर नीकी बिधि होवहु।
सभि को निज कर देहु मजूरी। तूरन करहु संपूरन रूरी॥ १८॥
आइसु पाइ करी सभि कार। रच्यो नगर बीधी रु बजार*।
आदि मसीत सदन तबि सारे। करिवावनि लागसि तबि त्यारे॥ १९॥
बैठे सतिगुरु लाइ दिवान। गावति शबद रबाबी ग्यान।
आइ सिक्ख ने तबहि सुनायो। 'ब्रिध साहिब गुरदासहि आयो॥ २०॥
सुनति मुदति श्री हरिगोविंद। निकटि हकार्यो ब्रिधीआचंद।
लेकरि ब्रिंद सिक्ख चलि जावहु। सादर बंदन करि इत ल्यावहु॥ २१॥
सुनि बिधीआ सिख गन ले गयो। जाइ ब्रिद्ध को दरसति भयो।
नमो करी सभि ने सनमान। आए गुरु ढिग करि अगवान॥ २२॥
देख दूर ते हरिगोविंद उठे तुरत ही जुति सिख ब्रिंद।
दरशन करति अनंद बिलंदे। पब्र बंदति दुहु दिशि कर बंदे॥ २३॥
बुड्ढे चरन गुरू के गहे। गुरु ब्रिध पद कर धरि रहे।
श्री नानक सम जानहि तुम को। लखहु आपने सेवक हम को'॥ २४॥
तिम गुरदास संग गुर मिले। कुशल प्रशन करि हित सो भले।
तीनहुं सिक्खनि गुरु पद बंदे। खुशी करि सभि बैठि अनंदे॥ २५॥

---

*. बाज़ार

श्री गुरु ब्रिध को गहि करि हाथ। इक आसन बैठे ले साथ।
मनो देव गुरु बिशनु मिले हैं। उग्र सैन जिम क्रिशन रले हैं॥ २६॥
वचन बिलास मुदति हुइ आयो। 'रण महिं तुरक ब्रिंद ही मरे।
बैठे जबहि तिमर हुइ आयो। वर नवीन जो गुरु बनवायों॥ २७॥
तिस महि डेरा ब्रिद्ध उतारा। सादर जुति गुरु दास उदारा।
दासन प्रति आइसु फुरमाई। 'सेवा करहु सकल मन भाई'॥ २८॥
सुँदर पलंघ पठे ततकाला। खान पान हित असल रसाला।
हाथ जोरि सेवक भे ठांढे। जिम जिम कह्यो कर्‌यो हित गाढे॥ २९॥
सादर सभि सेवा करिवाई। सुरति जथा सुख निसा बिताई।
प्रानि भए सलिता के तीर। जाइ शनाने सौच सरीर॥ ३०॥
जपु आदिक नित नेम जु बानी। पढि करि नदी कूल मन भानी।
आए वहुर गुरू गुन गावति। अदभुति लीला जग दिखरावति॥ ३१॥
सने सने चलि आए तहां। लग्यो दिवान बिराजति जहां।
गहि कर को गुरु निकटि बिठाए। शबद बिलावल आदि जिगाए॥ ३२॥
सुनहि रबाब्री ते आनंदहि। आइ अनिक नर गुर पग बंदहि।
कितिक समां जवि बैठि बितावा। मेधावी कारीगर आवा॥ ३३॥
हाथ जोरि करि बाक उचारा। 'महाराज! बहु कार सुधारा।
फिरहु नगर अवलोकनि कीजै। सिक्खनि की सेवा सफलीजै॥ ३४॥
ब्रिध गुरदास लिए निज साथ। गमने अपर संग सभि नाथ।
पुरि प्रवेश हुइ हेरनि लग्गे। सतिगुर[1] जाति बतावति आगे॥ ३५॥
लघु दीरघ बीथी जि बनाई। मेधावी तबि सरब दिखाई।
मंदर जिस बिधि के शुभ कीनि। सनै सनै गमने सभि चीन॥ ३६॥
सकल बीथिका महिं फिरि आए। खरे मसीत मई जिस थाएं।
तबि गुरु दास पूछिओ कर्‌यो। 'इह तौ अदभुत करम निहर्‌यो॥ ३७॥
रावर ने मसीत चिनवाई। इह क्या कारन देहु बुझाई।
तबि घेरड़ को सकल प्रसंग। कर्‌यो सुनावनि सो सरबग॥ ३८॥
ब्रिद्ध आदिक हरखे सभि सुनि करि। वहु चातुरता गुरु की उर धरि।
कारण रण को इस ते भयो। जिनते ब्रिंद तुरक रिपु छयो॥ ३९॥
सकल नगर को फिरे निहारा। बहु जसु तबि गुरु दास उचारा।
ब्रिध आदिक पुरि अधिक सराहा। 'रच्यो रुचिर शुभ सलिता पाहा[2]॥ ४०॥

---

1. सद्‌गुरु को 2. पास

ऊचे थल बड सैल हुवंती। बसहि प्रजा बहु मोद भवंती।
करति सराहनि को चलि आइ। बैठे सतिगुरु हरख उपाए ॥ ४१ ॥

बिधीचंद बोल्यो तिस काल। 'इह गुरु पुरि नित बसहि बिसाला।
अबि लौ नाम नही कुछ धर्यो। प्रथम नाम को नाशन कर्यो ॥ ४२ ॥

बात समें सिर भाखनि करी। गुरू खुशी बहु तिसि पर धरी।
मुसकावति मुख वाक बखाना। ब्रिध साहिब जी बडे सुजाना ॥ ४३ ॥

धुरि को नाम धरहिंगे एही। जग महिं बिथर हि सदा रहेही।
सुनि ब्रिध ने सभि बिखै सुनायो। श्री अंम्रित सर प्रथम बसायो ॥ ४४ ॥

रावर केर पितामा जोई। जिसको जसं गावति सभि कोई।
श्री अरजन तुम पिता सु जाना। तिनहु नाम पर नाम बखाना ॥ ४५ ॥

रामदास पुरि नाम धर्यो है। गुरू ग्रंथ महि लिखन कर्यो है।
बिदति जगत महिं जानहिं सारे। कर्यो आपने तिसी प्रकारे ॥ ४६ ॥

तिसी रीति ही हुइ अभिरामू। श्री हरि गोविंद पुरि शुभ नामू।
श्री नानक रचि पुरि करतारा। बिब[1] गुरु करी खड्र उदारा ॥ ४७ ॥

गोइंदवाल बसावहु तीजे। राम दास पुरि चतुरथ[2] थीजे।
श्री करतार पुरा विच द्वाबे। श्री गुरु अरजन कीनि अजावे[3] ॥ ४८ ॥

श्री हरिगोबिंद पुरि तुम कीनो। मैं निज मन महिं इस बिधि चीनो।
सुनि गुरु आदि सभा जे सारी। ब्रिध को 'धेनहि[4] धेन' उचारी ॥ ४९ ॥

सभि महिं प्रगट नाम तबि होवा। सगरे अनंद धारि करि जोवा।
इम सतिगुरु पुरि नाम धरायो। अबि लौ सगरे जग प्रगटायो ॥ ५० ॥

खास महिल गुरु के बरचिने। ब्रिंद खचे नग कंचन सने।
रुचिर रीति के दर रखवाए। जिस को देखति देव लुभाए ॥ ५१ ॥

इम केतिक दिन करे गुजारनि। सिक्ख अनेकं करति उधारनि।
जहि कहिं जग महिं जसु बहु फैला। जिस आगै[5] निसपति लगि मैला ॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे भाई ब्रिध प्रसंग बरननं नाम सपत चतवारंसती अंशु ॥ ४७ ॥

---

1. दूसरा 2. चौथे गुरु द्वारा हुआ 3. अजीब, निराला 4. धन्य 5. चाँद

अंशु ४८

ख्वाजे अते जानी सय्यद को प्रसंग

दोहरा

श्री गुरु हरि गोविंद जी वीर धीर गंभीर।
दासन करहिं निहाल गन जो सेवति हुइ तीर ॥ १ ॥

चौपई

इक कशमीरी ख्वाजा नाम। पूरब भाग जगे अभिराम।
नित सतिगुर की सेवा गही। सावधान सद आलस नहीं ॥ २ ॥
श्री हरि गोविंद केरि तुरंग। मलहि सुधारहि सगरे अंग।
जबि अरूढ करि पंथ पधारहिं। आगै असु को सदा सिधारहि ॥ ३ ॥
इक सरूप सो चित बिरमायो। कहनि सुननि किह संग न भायो।
रहे इकांकी मेलि न ठानि। गुरु सेवा महि रहि सवधान ॥ ४ ॥
क्रिपा ब्रिशटि इक दिन पिखि धारी। दौर्यो गमनति तुरंग अगारी।
स्वेद अंग ते चलहि बिसाला। तन को श्रम न पिखहि तिस काला ॥ ५ ॥
इक सेवा के ततपर होवा। सुख दुख आदि दुंद सम जोवा।
अतरि गुरू ने निकटि हकारा। कहो क्या इच्छा रिदे मझारा ॥ ६ ॥
सुनि करि हाथ जोरि बच भाखा। इक रावरि दरशन अभिलाखा।
अपर चाहि नहिं मेरे कोई। सदा समीपी तुमरे होई ॥ ७ ॥
सेवा करति रहा निशकाम। पिखौं बंदन रावरि सुख धामा।
सुनति प्रसीदे क्रिपा निधाना। 'भयो निहाल' सु बाक बखाना ॥ ८ ॥
तिस दिन ते प्रसंन मन रहै। किह सों कैसे कबहुं न कहै।
इक सय्यद जानी जिस नामू। बेख फकीर भयो तजि धामू ॥ ९ ॥
खोजहि मग जिम हुइ कल्यान। निस दिन चहति फिर्यो बहु थान।
हिंदु तरक बहु बिध सों खोजे। पंच निवाज करहि सभि रोजे ॥ १० ॥
जुहद[2] करति, खोजति बहु थाई। कछू न मौला की सुधि पाई।
किते फकीर तुरक की सेवा। हिंदू साधनि ते चहि भेवा ॥ ११ ॥

---

1 पसीना 2. तपस्या 3. भगवान्

कहूं न होई पूरन आसा। खोजति फिरति मनो म्रिग प्यासा।
पूरन संत मिल्यो नहिं कोई। प्रभु को पंथ दिखावहि जोई॥ १२॥
अति व्याकुल चित बहु दुख पावा। किस करुना करि तांहि बतावा।
'श्री नानक की गादी महां। सिक्खी पसरी जगर्जाहि कहां॥ १३॥
तिनके सेवक सभि किछू पायो। प्रभु मिलिबे को पंथ बतायो।
सिद्धां जिनहुं अगारी खरी। अंगीकार न तिन जन करी॥ १४॥
अबि श्री हरिगोविंद वड जोधा। बध्यो शाहु धर संग विरोधा।
सो अंतरजामी गुर पूरा। मिलि सेवहि प्रापति मगरूरा॥ १५॥
महां क्रिपाल मनिंद खुदाइ। जिम चाहति तिम लेति बनाइ।
दास निहाल करहि ततकालू। शरधा प्रेम बिलोकि बिसालू॥ १६॥
सुनि जसु को मन महि हरखायो। खोजति पारस मनहुं बतायो।
चलि आयहु उतलावति सोऊ। चित महिं चितवति, किस बिधि जोऊ॥ १७॥
संकति आइ सु ख्वाजे मिल्यो। जो गुरु प्रेम बिखै ढुलि रल्यो।
सगरो अपनी ब्रिथा सुनाई। 'मैं खोज तिने बैस बिताई॥ १८॥
तू मम मेली तुरक सरीर। गुरु को भेव बतावहु, बीर[2]।
किम प्रसंन हुइ करुना धारैं। मोहि दीन को पंथ दिखारैं॥ १९॥
तबि ख्वाजे ने सभि विधि कही। 'इन सम सम अपर नही[2] महिमही।
गुरु समरथ सभि अंतरजामी। प्रेम पिखहि दासनि के स्वामी॥ २०॥
करहिं उधारनि बिलम न लावैं। जिस दिन करुना रस दिलि आवैं।
श्री सतिगुरु के द्वारे बहो[4]। किसते सुनहु ने किह सों कहों॥ २१॥
रिदे अराधहु तूशनि ठानो। निज प्रसंग किह सों न बखानो।
जबि जानहि तेरो अहिवाल। कसहिं कसौटी, रहो संभाल॥ २२॥
दए ताउ ते उतरहिं पूरा। क्रिपा करहि हुइ तव उर रूरा।
जिम कंचन को आगा देता। खोट निकारि सुद्ध कर लेता॥ २३॥
भली प्रकार लेहिं अबि सोधे। तबि खुदाइ मग तोहि प्रबोधे।
सफलहि कहनि हनहु ततकालू। सुनहिं पीर जी होहिं निहालू॥ २४॥
सुन जानी सय्यद अस गाथा। मन करि तहीं निवाइसि गाथा।
भयो सथिर गुर द्वार अगारी। भूख पियास सहि दुख भारी॥ २५॥
श्री गुर को हेरहि जि समो। महां दीन हुइ धारति नमो।
अपर कछू किम सुनहि न कहै। आतप छांव दिवस निस सहै॥ २६॥

---

1. जोहूं, देखूं 2. भाई 3. धरती में 4. बैठा

नीच ग्रीव बैठ्यो इक थान। मन महिं राखहि सतिगुरु ध्यान।
कितिक दिवस महिं कह्यो गुसाईं। 'इह को बैठ्यो ! बूझहु जाई' ॥ २७ ॥
पठ्यो सिक्ख, इम पूछ पठायहु। 'कौन अरथ धूंआ[1] तुम पायहु।
बसत्र दरब ते आदिक आन[2]। सो मुख ते प्रारथना ठानि ॥ २८ ॥
'कहि गुरु घर ते लीजहि पाइ। करि कारज को सदन सिधाइ'।
गयो सिक्ख ने सरब सुनाई। निज अभिलाखा देहु जनाई ॥ २९ ॥
सतिगुरु कै परवाह न कोई। तोहि भाग महिं प्रापति सोई।
सुनी सिक्ख ते सय्यद जानी। होइ नंम्रि कर जोरि बखानी ॥ ३० ॥
'नस्वर अहैं पदारथ सारे। तिन को लोभ न रिदे हमारे।
मैं तालिब[3] मौला को तक। देहिं क्रिपा करि जलधि बिबेक ॥ ३१ ॥
सिक्खनि सुनि कै जाइ सुनाई। करी मौन तबि गुरु गोसाईं।
कितिक काल महिं आग्या दीनि। 'करहु ओट इस दिशि ते चीन ॥ ३२ ॥
भीत उचेरी दिहु चिनवाई। आवति जाति नहीं दरसाई।
तबि सुनि सिक्खनि तैसे कीनसि। तिस के अग्र चिनाइ सु दीनसि ॥ ३३ ॥
जानी बैठि रह्यो गहि सेवा। दरस नहीं ह्वै तबि गुरु देवा।
निस दिन नाम गुरू को जपै। आतम, छुध्या आदि ते तपै ॥ ३४ ॥
मन महिं प्रेम ब्रिधाइ[4] बिसाला। धरहि ध्यान हसयि रु सभि काला।
गुरु को सेवक ख्वाजा जोई। कुछ सुधि खान पान ले सोई ॥ ३५ ॥
जानी को इक जानां[5] बिना। कछु न सुहावति उर इक छिना।
भयो प्रेम ते चित मसताना। दिन प्रति ब्रधतो जाति महाना ॥ ३६ ॥
गुरु प्यारे की लागी लगन। सकल काल महिं प्रीति निमगन।
दरशन बिना दरस करि नीत। बिना सुनाइ सु सुनतो चीत ॥ ३७ ॥
बिन अहार ते त्रिपत्यो रहे। मन महिं मसत मौन सुख लहे।
इस प्रकार बीत्यो चिर काल। श्री सतिगुर नहिं करी संभाल ॥ ३८ ॥
तिस उर प्रीति घटी नहिं क्यों हूं। दिन प्रति बधति जाति सुख त्यों हूं।
दरशन की अभिलाख बिसाला। करहि क्रिपा सतिगुरु किस काला ॥ ३९ ॥
इक दिन बैठे सभा मझार। तबि सिक्खनि कर जोरि उचार।
'बड सेवा महिं सय्यद जानी। गुर दरशन मन प्रीती ठानी ॥ ४० ॥

1. तपस्या की धूनी लगाए हो 2. अन्य 3. अन्वेषक 4. बढ़ती है
5. प्रियतम

सहज सुभाइक सुनि गुर कह्यो। जे करि दिढ हठ ऐसे गह्यो।
तौ अबि जाइ डुबहु दरिआउ। हम ढिग ते तिह देहु सुनाउ॥ ४१॥
इक सिख ने तिह जाइ सुनावा। 'हुकम गुरू ने हम फुरमावा'।
जानी सुनि हरख्यो अस बच को। 'कहिओ अहै मोहि प्रति सचु को॥ ४२॥
दौर्यो जाइ नदी महिं पर्यो। तूरन सि गुरु पठवनि कर्यो।
डूबति जानी वहिर निकासा। आनि बिठाइ दीनि थल तासा॥ ४३॥
बहुर सिक्ख्य बहु करहि सपारश*। 'तुमरी आग्या महि बिन आरस।
उठै नही तिस थल महिं जैहै। नातुर रावरि दरशन पैहै'॥ ४४॥
कस्या कसौटी श्री गुर देखा। जानी जाना प्रेम विशेखा।
पुन कहि पठ्यो 'रिद्ध सिद्ध लेहु। जिम चाहहु तिम किस करि देहू॥ ४५॥
कहि जानी 'इक जाना बिनां। अपर न जानों कुछ हुइ घना।
जबि इनको भी भी त्याग बखाना। दरशन लागी प्रीति महाना॥ ४६॥
तबि जानी को निकटि बुलाइव। दे दरशन प्रभु पंथ बताइव।
सुनति समायहु परमानंद। पर्यो चरन पर कर जुग बंदि॥ ४७॥
तबि अंतरगति लगी समाधि। मिट गई ब्याध रु आधि उपाधि।
तबि ख्वाजा सतिगुरु बुलवायो। दोनहुं प्रति अस हुकम अलायो॥ ४८॥
पूरी परी तुमारी सेवा। करे प्रसंन भले गुरदेवा।
अबि किस थल हुइ रहो इकंत। जिस रहिनी महि संत महंत॥ ४९॥
मान्यो बाक 'करहि हम ऐसे। रहे कितिक दिन पूरब जैसे।
टहिल करहिं निज हाथनि साथ। चरन सपरसहिं श्री गुरु नाथ॥ ५०॥
बे परवाह मगन मन रहैं। गुरु शरधा को उर निरबहैं।
मन संकलप सु जथा उठाइ। नंद लाल तिन के ढिग आइ॥ ५१॥
दोइन अपना चेला कीनसि। प्रभु को पंथ तांहि को दीनसि।
करि उपदेश कह्यो तिस ताईं। 'सेवा कीजहि गुरु गोसाईं॥ ५२॥
निज बदले महिं सेवा हेतु। छोर्यो सो सतिगुरू निकेत।
नंद लाल कै प्रेम बिसाला। गुरु ढिग करहि घालना घाला॥ ५३॥
सुंदर तिह सरूप गुर हेरा। जिस कै मन अनुराग घनेरा।
होइ प्रसंन 'सोहिणा नाम। तिस को भाखति भे सुख धाम॥ ५४॥
तिस दिन ते प्रसिद्ध सभि महीआ। नाम सोहिणा जिस किस कहीआ।
सतिगुरु को सेवे निशकाम। मन धावति पायहु बिसराम॥ ५५॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे 'ख्वाजे अते जानी सय्यद को प्रसंग' बरननं नाम अशट चत्वारिसंती अंशु॥ ४८॥

---

* सिफ़ारिश, अनुमोदन

अंशु ४९

भाई ब्रिद्ध प्रसंग

दोहरा

श्री गुरु हरिगोबिंद जी करति दास कल्यान।
एक दिन बैठे सभा महिं उडगन चंद समान ।। १ ।।

चौपई

दरशन करहिं सिख सुख पावहिं। महां प्रेम ते बलि बलि जावहिं।
श्री हरिगोविंद आनंद धारा। साहिब वुड्ढे समुख निहारा ।। २ ।।
सुंदर बाक विलास बखाना। 'हे भाई ! तुम' बैस महाना।
श्री नानक कीनी सेवा। सेवे श्री अंगद गुर देवा ।। ३ ।।
तिनको जुगति अपर शुभ करनी। करी निहारनि दुरमति दरनी।
जथा चरित्र कीए श्री नानक। बाल अमोल मनो गनि मानक ।। ४ ।।
भुकति मुकति सभि हाजर जिनके। करे करम हेरे तुम तिनके।
श्री अंगद गुर अमर गुसाईं। सभि लीला जिम कीनि सुहाई ।। ५ ।।
सुखद करी जस तीनहु करनी। हमहि सुनावहु तिम दुख हरनी।
सुनी अपर ने किस ते कान। तुम बिदमान बिलोकनि ठानि ।। ६ ।।
अहो पुरातन परम पबीना। गुर सिक्खी शरधा तन भीना।
श्री हरिगोविंद के बच सुने। मुसकावति वुड्ढा बच भने ।। ७ ।।
अंतरजामि तुम सभि जानो। भूत भविखत नाहिन छानो।
तुम सूरज मैं दीपक समायो। क्या मैं करौं प्रकाश बखानो ।। ८ ।।
सतिगुर के गुन कहद महाने। मम मति लघु कैस तिस जानो।
किम सुकता[2] ते सिंध उलीचों। किम करि छादौं भानु भरीचो ।। ९ ।।
सुनि सतिगुर बोले 'इनजानै। जिम तुम भाखह[3] तथा पशानै।
सभि किछ हमरे ग्यात जदामी। सुन्यो चहैं तुव बदन तदापी ।। १० ।।

---

1. आयु 2. सीपी 3. किरणें

सति गुर के नित सनमुख रह्यो। करनी जुगति सुभावस लह्यो।
यांते सभिहूं बरननं करीऐ। हमरे उर प्रसंनता धरीए॥ ११॥
सुन भाई ब्रिध परम सिआना। लह्यो बिचारनि करि भरि ध्याना।
को को जुगति गुरू की कहौं। मैं अजान गति सभि किम लहौं॥ १२॥
इम चितवन करि करि मनि[1] मथा। रिदे प्रकाशी अमृत कथा।
श्री हरिगोविंद दिशा निहारा। 'सुनहु गुरू इम बाक उचारा॥ १३॥
श्री बाबा नानक अवतार। सतहि प्रकाशी करनी सार।
जनमति ही अजमत बिदताई। सगरे जग महिं महिमा छाई॥ १४॥
मति मंदनि को पंथ बतायो। संतन को उपदेश द्रिड़ायो।
मीर, पीर तुरकन के सारे। परे शरन उर शरधा धारे॥ १५॥
जोरी, सिद्ध, नाथ, ब्रह्मचारी। तपी, दिगंबर, जे पट धारी।
संन्यासी आदिक को गनै। साध बेख बड लघु जे घने॥ १६॥
कलजुग महिं तिनकी वड माने। गुरू सकल जग ने करि जाने।
तीन लोक महिं बध्यो प्रतापे। सुर नर असुर सिक्ख निज थापे॥ १७॥
अधिक दरब सति नाम बटेरा। जिसहि अहं मम[2] लगै न चोरा।
प्रेम भगति के भरे भंडारे। भरि सतिनाम खजाने सारे॥ १८॥
श्री अंगद को को सौंपनि करे। निखुटहिं[3] छेना रहैं सदभरे।
नित प्रति खरचे[4] ब्रिधता लहे। दारिद जनम मरन को दहें॥ १९॥
दुतीए पातिशाह ने लीनसि। राखे गुहज बिदति नहि कीनसि।
किसको हित करि नहिं दिखराए। मुखते कहिं नहिं काहू सुनाए॥ २०॥
पल पल बधहि अधिक अधिकाई। अति अपार गति लखी न जाई।
भाउ दिखाइ परम अवधूत। निरविकलप निरलेब, सपूत॥ २१॥
सिद्धि शकति नहिं बिदतनि पावै। परमानंद निमगन बिहावै।
अंतरगती अखंड समाधि। इक रस पुंन न पाप बयापि॥ २२॥
अजर जरन गति अस दिखराई। भूत भविख न किसहुं पाई।
सतिगुर के घर बिना न आन। सुनी न हेरी कितहुं जहान॥ २३॥
अमर दास सतिगुरू प्रबीन। सकल ख़ज़ानो तिनको दीनी।
ले करि नाम भगति भंडार। जिन गन अंत न पारावार॥ २४॥
तिनहुं नवीन जुगति बिदताई। आए शरनजि नर समुदाई।
बखश्यो सभि को नाम खज़ाना। नौं निधि रिधि सिधि दीनी महाना॥ २५।

---

1. मंथन किया 2. ममता 3. समाप्त होते हैं 4. वृद्धि

सौ हरि धन दुहूं हाथ लुटायो। जो शरनागत सभि ने पायो।
चहुं दिशि बिदिशिनि महिं पसरायो। जहिं कहिं जग महिं नाम जपाओ॥ २६॥
गुर सम दाता कहूं न अहे। वडभागी सभिहिनि तबि लहे।
जिन सेवे ह्वै करि निहकाम। तिसने लयो नकद हरि नाम॥ २७॥
जिन सकाम गुंर सेवनि कीना। रिधि सिधि सहत नाम प्रभु दीना।
इक कर भयो 'भगति' गुर सेवा। दुतिय हाथ 'करुना' गुर देवा॥ २८॥
इन दुऊ हाथनि नाम खजाना। प्रगट तुटायहु सभि जग जानां।
दिन प्रति करति रहे अस लीला। बखशति बखशिश अधिक सुशीला॥ २६॥
तबि मैं देखे धरि करि ध्याना। किस प्रकार है नाम खज़ाना।
रंचक हरि धन घट्यो न होई। अदभुत गति अविलोकी सोई॥ ३०॥
बध्यो अनंत गुना भंडार। जिस निसतारे लोक हज़ार।
पिखि चरित्र मैं बहु बिसमायो। निज मति करि कुछ जडन पायो॥ ३१॥
तबि मैं तिन के होइ अगारी। बहुत भांति की सतुति उचारी।
श्री गुरु अमरदास बख्याता। धनं[1] धनं सभि ते बड दाता॥ ३२॥
सम पारस की परसति रहे। नर लोहा कंचनता गहे।
बावन चंदन सम जग थिरे। तरुवर स्रीखंड[2] सभि करे॥ ३३॥
गंगा जल पावनं सम होए। आइ अपावन भी मिलि कोए।
इक सम सो सगरे करि दए। मोख उचित सेवक सभि किए॥ ३४॥
जिम समुंद्र महि जल चलि आयो। तिन सरूप सो अपनि बनायो।
इस प्रकार के चलित तुमारे। अनगन अपने दास उधारे॥ ३५॥
कहति ब्रिद्ध 'मैं ऐसे देखे। तीन गुरुनि के करम विशेखे।
अपर बात क्या बरनन करौं। सभि कहिबे की शकति न धरौं॥ ३६॥
तुम स्रबग्ग कुछ नांहनि छानो[3]। जो जो कीनि आप ही जानो'।
सुनि ब्रिध ते श्री हरिगोविंद। निज समाधि महिं थिरे बिलंद॥ ३७॥
अचल सरीर सरीर सकल हुइ पयो। को न सभा महिं बोलति भयो।
रहे निमगन जामा पुन जागे। बहुर ब्रिद्ध दिशि देखनि लागे॥ ३८॥
'वाहु वाहु श्री मुखहु उचारा। हे भाई तुम सिक्ख उदारा।
सभि सतिगुर को नित बहु प्यारो। तो सम सिक्खी अपर न धारो॥ ३९॥
अदभुत कथा सुनावनि कीनि। हमरे मन आनंद वड दीनि।
ऐसी गाथा तुम सभि जानो। सतिगुर घर को भेत्र[4] पछानो॥ ४०॥

1. धन्य 2. चंदन 3. छिपा 4. भेद

थांही ते हम बूझ सु लीनो। जथा जोग तुम भाखनि कीनो'।
सुनि करि सरब सिक्ख हरखाए। 'धनं धन' ब्रिध के प्रति गाए ।। ४१ ।।
महिमा महां जानि सभि लीनि। सिर निवाइ करि वंदन कीनि।
इस प्रकार गुर करे बिलासा। संत उधारति दुशट बिनासा ।। ४२ ।।
बीर, अरिंदम[1], धीरज धारी। रण महिं अचल बली, भुज भारी।
महां धनुख निशठुर धरि हाथ। सरप समान बान खर साथ ।। ४३ ।।
हतहि शत्रु गन अरहि न कोई। बचै सु रण तजि भाजहि जोई।
करामात को राखहि गोई। करहिं क्रित नर अनुहर[2] होई ।। ४४ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे भाई ब्रिद्ध प्रसंग वरननं नाम एक उनपंचासती अंशु ।। ४९ ।।

1. शत्रु नाशक 2. अनुसार

अंशु ५०

संगति प्रसंग

दोहरा

रहे कितिक दिन गुरू ढिग ब्रिध साहिब बड धीर ।
ब्रिद्ध अवसथा परम भी निरबल भयो सरीर ।। १ ।।

चौपई

चह्यो चलनि चित अपनि सथानी । तजनि मरीर दशा नियरानी ।
श्री नानक गुरु ते सिख होयो । खशटम हरिगोविंद गुर जोयो ।। २ ।।
खशटम गुरनि को चलित निहारे । रह्यो समीपी ग्यान उदारे ।
जिउके करते निकसहि टीका[1] । सो गुर बनहि सभिनि सो टीका[2] ।। ३ ।।
गुर घर महिं जिसके सम आनन[3] । फुरहि बाक जिम निकसहि आनन ।
इक दिन बैठे बिनै बखानी । 'बिना भजे सभि की तुम जानी ।। ४ ।।
अबि मैं गमन चहों निज नगरी । बीत गई अवरदा[4] सगरी ।
क्रिपा सिंधु इक बर अबि दीजै । मोहि मनोरथ को सफलीजै ।। ५ ।।
सुनि श्री हरिगोबिंद बखाना । तुम ते नहिं आदेय हम जाना ।
तन मन धन जेतिक है मेरे । क्रिपा आपकी ते नित हेरे ।। ६ ।।
मोकहु सेवक अपनि पछानहु । जिम चाहति तिम हुकम बखानहु' ।
सुनति ब्रिद्ध के किय वडिआई । 'इही रीति रावरी बनि आई ।। ७ ।।
अबि कुछ नहीं, सनातन अहै । बेद पुरान संत सभि कहैं ।
जन की अपने ते अधिकाई । करति क्रिपा करि, सभि लखि पाई ।। ८ ।।
अपनो प्रण रण महिं करि काचा । भीखम[5] को निरबाह्यो साचा ।
इत्यादिक केतिक थल भनीयहि । अंत न पाइ सकहि जे गनीअहि ।। ९ ।।
मन मेरे महि बसहु गुसाईं । सथिर सुमेर समान सदाई ।
जब मेरो कबि आइ संदेसा । सुनहु गरीब निवाज अशेशा ।। १० ।।

1. तिलक 2. शिरोमणि 3. अन्य 4. आयु 5. भीष्म पितामह

तबि ज्यों क्यों करि दरशन दीजै। इह बिनती मेरी सुनि लीजै।
'इम ही होइ कह्यो गुर जबै। दुहु दिशि पद बदन करि तबै ॥ ११ ।'
जोध, अजित्ता, जीवा तीन। तिनहुं गुरू को बंदन कीनि।
चारो चले खुशी को पाइ। सिमरति श्री नानक सुखदाइ ॥ १२ ॥
लखि कै रुख़[1] गुर को गुरदास। कर्‌यो बास सुख रासहि पास।
ब्रिध को बिदा करनि तिस वेरे। चले गुरू संग सिक्ख घनेरे ॥ १३ ॥
गए दूर लगि ब्रिध थिर होयो। सतिगुर पाइन आवति जोयो।
करति परसपर बंदन भले। गुर को मोरि[2] अगारी चले ॥ १४ ॥

दोहरा

ग्राम नाम रमदास के ब्रिध के सदन सदाइ।
तहि को पहुंचे जाइ करि गुर गुन भनि समुदाइ ॥ १५ ॥

चौपई

श्री हरिगोबिंद सभि सुख साजैं। श्री हरिगोबिंद पुरे बिराजैं।
संग विदेश बिदेशनि आवैं। अनिक अकोरन को अरपावैं ॥ १६ ॥
मनोकामना पाइ सिधारैं। जहि कहि सतिगुर सुजस उचारैं।
इक आवति इक जाति सदन को। पिखि गुर सारद चंद बदन को ॥ १७ ॥
इक दिन चढ़े अखेर करनि को। ले करि जुररे-बाज़ नरनि को।
चते स्वान संग बहु लीनि। कानन महि वड बिचरन कीनि ॥ १८ ॥
सुभट संग गन चड़े तुरंग। हते ब्रिंद ही छोरि तुफंग।
म्रिगनि बिहंगनि सूकर घने। खोजि खोजि करि जित कित हने ॥ १९ ॥
पुन उचे थल आनि सुहाए। नाम दमदमा जहा सुहाए।
कांशी ते चलि संगति आई। दरशन करिबे चाहव धाई ॥ २० ॥
एक सिक्ख तिन महि मतिवंता। दरशन को तूरन ललचंता।
संगति छोरि बिपासा पासी। सुनि सुधि गयो जहां सुख रासी ॥ २१ ॥
आमिख[3] मद नहि अंगीकारै। धरहि सुमति परलोक सुधारै।
शीघ्र पहूंच्यो धरी उपायन। बंदन कीनि कमल से पाइन ॥ २२ ॥
तबि गुर के कर बाज बडेरा। दुतिय हाथ सों गहे बटेरा।
आमिख तहां खुवावनि करे। दोनहुं कर श्रोणत सों भरे ॥ २३ ॥
हेरति सिख ने तरक बिचारी। गादी श्री नानक की भारी।
दया बिहीन करति इह काजा। जिन को काम ग़रीब निवाजा ॥ २४ ॥
काशी तजि करि दूर घनेरे। आए इहां रीति अस हेरे।
इन गिनती मन गिनति महानी। श्री गुर हरिगोविंद सभि जानी ॥ २५ ॥

1. झुकाव 2. मोड़ कर, लौटा कर 3. आमिष, मांस

क्या चितवति चित महिं बहु तरका। भे वन जान सकहि तूं धुरका।
सुनति सिक्ख गुरते विमायहु। होइ दीन करि बिनै अलायहु ॥ २६ ॥
'क्रिपा निधान ! आप सभि जानहु। घट घट को ब्रितांत नहि छानहु।
मैं क्या कहों न समरथ कोई। वहिर क्रिआ पिखि शंका होई ॥ २७ ॥
तबि सतिगुर तिन पिख की गाथा। प्रथम जनम की कहि सिख साथा।
'हुतो बटेरा केवट सरिता। लेति मजूरी पार उतरिता ॥ २८ ॥
चतुरथ श्री सतिगुर के तीर। हुतो बाज इह सिक्ख सरीर।
किस कारज को जवहि पठायो। चलि मारग इसके ढिग आयो ॥ २९ ॥
कह्यो कि 'मो को पार उतार। गुर को काज करन बिन[1] बार।
चढि बैठ्यो तरनी पइ जबै। सरिता बीच चली तर तबै ॥ ३० ॥
सभि ते लई मजूरी जाचि। सिख के पास सु पैसे पांच।
सो सभि देइ रह्यो नहि लीनि। रिस धरि अधिक ताड़ना कीनि ॥ ३१ ॥
तुरक जे जीअ अधिक लगायहु। इनते चौगुन देहित जायहु।
सुनि सिख, बिनती करि बहु कह्यो। अबि मम पास वही कछु रह्यो ॥ ३२ ॥
कारज गुर के उलंघन पार। लीजै इह न करहु तकरार।
कहि बहु रह्यो न मूरख मानी। लीनि उठाइ गह्यो दिढ पानी[2] ॥ ३३ ॥
बल ते सिख को दीनि धकेला। हुइ निरदै सलिता[3] महिं मेला।
सहत क्रोप सिख चाहित ऐसे। आमिख काट खाउं इस जैसे ॥ ३४ ॥
गुर को अदब न करुना कीनि। इम जितवति प्रानन तजि दीनि।
सिख ने देहि बाज को पायो। दैव जोग ते हम कर आयो ॥ ३५ ॥
मरि केवट इह भयो बढेरा। ले पलटा अबि पूरब केरा।
त्याग देहिंगे तन को दोऊ। जनम धरनि अन काज न कोऊ' ॥ ३६ ॥
इम कहि ते दोनहुं त्यागा। नभ प्रकाश कुछ दीखनि लागा।
गुर कर लगे सु आइ बियान। गए सुरग को बहु सुख पठानि ॥ ३७ ॥
तबि सिख ने बूझे कर जोरि। 'कस प्रकाश भा नभ की ओरा।
इनके मरति तुरत ही भयो। पलक फुरन महिं इति सभि गयो ॥ ३८ ॥
सतिगुर कह्यो 'सुरग इह गए। बिदति प्रकाश बिमानन किए।
सुनि कर जोरि बंदना करिकै। गयो सिक्ख सभि चलित निहरि कै ॥ ३९ ॥
संगति संग मिल्यो तबि जाइ। सभि प्रसंग को दयो सुनाइ।
धरि शरधा[1] को तबि हरखाए। सगरे सिख दरशन को आए ॥ ४० ॥

1. देर 2. हाथ 3. सरिता 4. नदी

इत सतिगुर अपने थल आए। बैठे बडो दिवान लगाए।
शबद रबाबी गावनि लागे। सुनहिं सिक्ख गुर पग अनुरागे ॥ ४१ ॥
जो जो संगति ल्याइ अकोर। सो लेकरि आए गुर ओर।
आगै धरि धरि करि करि नमो। पिखि पिखि दरशन मुद तिह समो ॥ ४२ ॥
सतिगुर दया द्रिशटि सों हेरैं। कीनि कामना पूर घनेरैं।
सभि को कुशल बूझि सनमाने। बैठे अति अनंद को ठाने ॥ ४३ ॥
जो जो तिसी देश की गाथा। बूझन करी कही गुर साथा।
संध्या लगि बैठे तिस थान। सोदर भोग पर्यो सुनि कान ॥ ४४ ॥
गए गुरू निज मंदिर फेरे। संगति सभ गमनी निज डोरे।
केतिक द्योस[2] बसे गुर दरशैं। बाक सुनहिं सभि ही उर हरशैं ॥ ४५ ॥
बहुरो बिदा होइ करि गए। जाइ सुधासर मज्जन किए।
अपर तीरथनि के इशनाने। मन भावत कर सदन प्याने ॥ ४६ ॥
इम सतिगुर तहिं करति विलास। रहैं हज़ारों सेवक पास।
भुगति मुकति की बखशिश होति। नित प्रति सिक्खी अधिक उदोति ॥ ४७ ॥

इति गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे। 'संगति' प्रसंग बननं नाम 'पंचासती' अंशु ॥ ५० ॥

---

1. श्रद्धा 2. दिवस

अंशु ५१
भाई गढ़ीए प्रसंग

दोहरा

सिक्ख हुतो गढ़ीआ महां रहि हजूर लहि ग्यान ।
चरन कमल सेवति सदा करि करि प्रेम महान ।। १ ।।

चौपई

श्री हरिगोविंद बली बिलंग । सिख्य चकोरनि को नित चंद ।
गढ़ीए प्रति आग्या फुरमाई । 'अब कशमीर पुरी कहु जाई ।। २ ।।
तहिं की कार सकेलि बिसाला । ले आवहु इत, रहिं कित काला ।
सुनि गढ़ीए करि रिदे अनंद । मानी आग्या द्वै कर बंदि ।। ३ ।।
बंदन करिकै पय अरबिंद । गमन्यो मारग प्रेम बिलंद ।
नित प्रति चित मूरति गुर राखे । रसना · सत्य नाम को भाखे ।। ४ ।।
सनै सनै धलिकै गुजरात । पहुंचति भयो हुतो बख्यात[1] ।
बसहिं गुरू के सिख समुदाइ । तिनहुं सुनी 'गढीआ पुरि आइ' ।। ५ ।।
सभि संगति इकठी हुइ करिकै । हित सनमान भाउ बहु धरिकै ।
मिले जाइ करि निंम्री होए । मनहुं गुरू को दरशन जोए ।। ६ ।।
अपनो ग्रिह महिं आनि उतारे । ताते जल ते चरन पखारे ।
सुंदर सिहजा[2] तबै डसाई । अधिक भाउ करि दिए बिठाइ ।। ७ ।।
सभि सिक्खनि चरनाम्रित लीना । अपर सेव सभि ही बिधि कीना ।
स्वादल बहु अहार करिवाए । बिनती करि आछे त्रिपताए ।। ८ ।।
इक मीआ दौला तिस थान । सहिब[3] को प्रेमी सु महान ।
संत संग की नित अभिलाखा । मौला के दरशन की कांखा ।। ९ ।।
गढ़ीए को आवनि सुनि पायो । प्रेम धारि बहु मिलिबे आयो ।
जिस महिं महां संत के लच्छन । पर उपकारी सदा बिचच्छन[4] ।। १० ।।
सेख्यो जाइ न दुखीआ कबै । करि अति जतन हतै दुख सबै ।
मन ते, तन ते, धन ते सदा । दुख को हरहि दुखी पिखि जदा ।। ११ ।।

---

1. विख्यात 2. शय्या 3. साहिब, प्रभु 4. विचक्षण

रंक ब्रिंद को जबिहू लहै। छुधित रु बसन रहति जे रहै।
तिन सभि को मिहनती लगावै। ढह कूम कै पुल बनवावै ॥ १२ ॥
बिखम पंथ को सम करवावै। मारग पर तरुवर लगवावै।
जबहि मजूरी बहु चढि जाइ। जाचहिं निकटि रंक समुदाइ ॥ १३ ॥
अविनी को खनिकै ततकाला। दरब निकासहि तहां बिसाला।
जथा जोग सभि ही को दैकै। प्रतिपालति इम रंक दिखैकै ॥ १४ ॥
हिंदू तुरक कोइ दुखु मांहि। सभि मीआ दौले ढिग जाहिं।
अरज़ गुज़ारहिं होइ हज़ूरी। करहि मुराद सभिनि की पूरी ॥ १५ ॥
सहिज सुभाइ हुतो इम रीति। संत प्रीत नित चीत सुमीत।
भाई गढ़ीऐ को लखि संत। आयो मिलनि हेतु हितवंति ॥ १६ ॥
निकटि होइ जबि दिखे परसपर। करि बहु भाउ सु रहे हरखि भरि।
खरे होइ भरि अंक मिले हैं। बूझि कुशल को प्रीति ढुलेहैं ॥ १७ ॥
पुन सतिगुरू महातम कहैं। दोनों महिमा महां सुलहैं।
लाखहुं सेवक करे निहाल। जिह बड भाग सु मिलहि क्रिपाल ॥ १८ ॥
तबि मीआ दौला हरखाए। सहत बेनती बैन अलाए।
गुर अरजन जी कीनि जु बानी। सुननि सुखमनी चाहि महानी ॥ १९ ॥
क्रिपा धारि अबि मोहि सुनावो। कहि गुरबाक रिदा हरखावो।
जिस के बिखै सिफत बहु मौला। इम जबि प्रेम धारि कह दौला ॥ २० ॥
सुनि गढ़ीअ तबि लग्यो सुनावनि। मीआ भये मगन रस पावन।
इक शलोक पौरि जुति गायो। पुन रहाउ को पाठ सुनायो ॥ २१ ॥
सुखमनी सुख अंम्रित प्रभु नामु। भगत जना कै मनि बिस्राम।
सुनि दौला मन भयो अनंद। लग्यो बिचारनि अरथ बिलंद ॥ २२ ॥
उर प्रसंन हुइ बाक उचारा। 'हासल भो मखसूद[1] हमारा।
इह गुरबाक रिदै लखि लीन। मैं जानी महिमा इस पीन ॥ २३ ॥
मुख बिलंद है स्री प्रभु नामू। बिना संत नहिं पूरन कामू।
इस ते खातर-जश[2] हमारी। अपर सुननि की चाहि निवारी ॥ २४ ॥
गुरबानी सम अपर न बानी। इक तुक सुने परम गति जानी।
तुक रहाउ की दोइन मांहि। जग भोग सभि पायो जाहि' ॥ २५ ॥
सुनि करि गढ़ीआ भयो प्रसंन। कर्यो बिहसि 'दौला तुम धनं।
इम चरचा करि हरखे दोऊ। सतिगुर प्रेम महा मन सोऊ ॥ २६ ॥

1. मंतव्य, प्रयोजन 2. संतोष

दिन दो इक रहि गढीआ चल्यो। तबहि आनि पुन दौला मिल्यो।
सभि सों बिदा होइ चलि पर्‌यो। मीआं ने या को संग कर्‌यो॥ २७॥
नगर वहिर पहुंचावनि गयो। गुर जसु बूझति सुनतो भयो।
वहिर नगर ते केतिक चाला। देख्यो[1] सिकता, आइ बिसाला॥ २८॥
टूटी पनही गड़ीए चरन। बारू परहि धरहि जबि धरनि।
जबहि उठावहि उडहि बिसाले। जानू लगि जंधन के नाले[2]॥ २९॥
देखति दौले मन ठहिराई! मुनही अपर न कितहूं पाई।
रिदे बिचारति संग सु जाइ। बिन धनते इह अस दुख पाइ॥ ३०॥
के निधि सिधि गडीए को दे हैं। दे सुख संत पुन मलेवें।
जे दौले चित चितवन ठानी। सभि गढीए ततछिन पहिचानी॥ ३१॥
मुझ गुर सिख को निरधन जाना। शकति हीन मन महि पहिचाना।
अपनी कला कुछक दिखरावौं। तबि इसकी सभि शक मिटावौं॥ ३२॥
तउि ठाढे हुइ द्रिशटि निहारी। चहुं दिश बिखै हेम छित सारी।
सभि सिकता भी कंचन किनके। वडे रोर सम दिपहि रतन के॥ ३३॥
दौले परि हेरि करि सिधि को। जानति भा पूरन सभि विधि को।
लछमी की प्रवाह इस नाही। शाहन शाह, शकति सभि पासी॥ ३४॥
अजर जरन उर धीरज धारी। अति त्यागी, नांहिन[3] हितकारी।
हाथ जोरि कदमनि पर पर्‌यो। रहिनी देखि सुजसु बहु कर्‌यो॥ ३५॥
धंन तुमहि गुर धंन तुमारो। इती शकति सभि रिदे सहारो।
गढ़ीए कह्‌यो 'न गुर वर कभी। वल दीरव ते होवति छमी॥ ३६॥
इम कहि दौले ते हुइ बिदा। मग कशमीर पयान्यो तदा।
जबि पहूंच्यो संगति सभि आई। करे भाउ को सीस निवाई॥ ३७॥
पदरज सों मुख पर कर फिर्‌यो। लयो हुकम नाम सिर धर्‌यो।
पढि करि सभि उर आनंद भर्‌यो। गुरू पूरब संगति ने कर्‌यो॥ ३८॥
करि इकठी गुर कार तगीद। दे कै सरब लिखाइ रसीद।
गड़ीए दरब पाइ गुर केरे। नाना भोजन कीनि घनेरे॥ ३९॥
सति संगति को करि भोगाए। दियो रंक जो मांगनि आए।
कर्‌यो खरच जेतिक गुर दरबा। पुरि कश्मीर बिखे सो सो सरना॥ ४०॥
हटि आयहु गुर दरशन कीना। पर्‌यो चरन पर प्रेम प्रवीना।
बूझ्यो सतिगुर कहु क्या ल्यायहु। क्या संगति ने तुव अरपायहु॥ ४१॥

---

1. रेत 2. साथ 3. स्वार्थी

कहति भयो 'सुनि श्री गुर स्वामी। सभि जानति तुव अंतरजामी।
गुर पूजा जो सिक्खनि दीनि। सो मैं तुम को अरपन कीनि ।। ४२ ।।
करि गुर पुरब सिक्ख त्रिपताए। तुम सभि घट भोगी सुख पाए।
सुनि करि सतिगुर बिगसन कीना। 'भली करी तैं, सिक्ख प्रबीना ।। ४३ ।।
सरब मसंद जि गुर अगुवाई। सभिहिनि सों कहिकै समुझाई।
जो कशमीर कार धन भारी। हम गढ़ीए ते लीनि संभारी ।। ४४ ।।
भए प्रसंन बिसाल क्रिपाला। अस आइसु दीनि तिस काला।
अथि तुम ग्रिह बैठहु सुख पावहु। सिक्खी जगत बिखै बिदतावहु ।। ४५ ।।
परी थाइं सभि घाल तुमारी। ग्रिह महिं सिमरहु नाम मुरारी।
गुर ते बिदा होइ ग्रिह आइव। चरन प्रेम करि तैसे ल्याइव ।। ४६ ।।
जो जाचन जावहि तिसु पासु। दे तत काल निकास* अवास।
जबि खरची तिसते थुरि जाइ। जाचन हार आइ समुदाइ ।। ४७ ।।
तबि इह बात पुकार कहता। 'जो सुत चाहैं बिन सुतवेता।
पंच रजत पण आनि चढावहि। सो ततकाल पुत्र को पांवहि ।। ४८ ।।
इम ले करि भूखे कउ देवहि। सिखर नाम सतिगुर को सेवहि।
सदा रहै मन ते उपकारी। करुना करहि हेरि नर नारी।। ४९ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे भाई गढ़ीए प्रसंग बरननं नाम एक पंचासति अंशु ।। ५१ ।।

*. आवास, घर

अंशु ५२

बिप्र प्रसंग

दोहरा

इक दिन श्री सतिगुर कह्यो 'कथा सुनहि अबि कोई'।
पठ्यो वटाले नगर को एक सिक्ख छिन सोइ॥ १ ॥

चौपई

नितानंद दिज पंडित महां। आन हकारि, बसहि पुरि तहां।
सुनति सिक्ख तूरन चलि गयो। पंडत संग कहति इम भयो॥ २ ॥
तुम ते कथा सुनि गुर चाहैं। पुसतक लेहु चलहु तिन पाहैं'।
सुनि मद धरि होयहु त्यारी। पर्यो पंथ हुइ सिक्ख संगारी*॥ ३ ॥
आइ मिल्यो सतिगुर के संग। सनमान्यो बहु लखि दिज अंग।
अगले दिवस कथा करिवाई। बहु राजनि की गाथ सुनाई॥ ४ ॥
लगहि दिवान आनि करि भारा। सुनहि गुरू जुति सिक्ख हज़ारा।
चिर लौ बैठहिं कथा सुनंते। अनिक प्रसंगन को बरनंते॥ ५ ॥
केतिक दिवस कथा मन लायो। इक प्रसंग तबि ऐसो आयो।
जम की पुरी दूर मग जाइ। एक बरख महि नर पहुंचाइ॥ ६ ॥
इह सुनि सिक्खनि मन महि धर्यो। कथा कहनि ते जबि हटि पर्यो।
चार सिक्ख तबि आपस महीआ। तिस प्रसंग पर ऐसे कहीआ॥ ७ ॥
सुंदर नाम सिक्ख तबि लह्यो। 'पंथ बरख को पंडित कह्यो।
मैं गुर करुना ते चलि जैहौं। चार पहिर के विखै सिधैहौ॥ ८ ॥
सुनि लाला सिख बोल्या तबै। 'गुरु दया ते उलंघो सबै।
दोइ पहिर को मारग मेरो। पहुचों, अपर बिलम नहि हेरों॥ ९ ॥

---

*. साथी

पुन मय्या सिख बाक बखाने। उलंघौं जाम दया गुर ठाने'।
बहुर निहाले बाक उचारे। 'गुर करुना ते निमख* मझारे ।। १० ।।
जाउं प्रलोक सु पंडित भनिओ। इम आपस महिं कहिओ सुनिओ।
इन रीतन के कहे वाक जबि। पंडित इनकी दिशा देखि तबि ।। ११ ।।
बिसम्यो मन महि गुर संग बूझा। सिक्ख किम कहति कहा इन सूझा।
बेद ब्यास के करे पुराना। तुम ही जानहु क्रिपा निधाना ।। १२ ।।
लख्यो पुरान बिखै कै कूर। कै सिख बोलति कूर हजूर।
चारि जान कै निमख मझारा। पंथ बडो किम उलंघहि सगरा' ।। १३ ।।
तबि सतिगुर गुरदास निहारा। दिहु पंडित को संसै टारा।
जथा जोग उत्तर को दीजै। दिज बर के शांती उर कीजै ।। १४ ।।
गुर रुख पाइ कह्यो गुरदास। 'सुनहु बिप्प सच कहि तुम पास।
करे ब्यास के सकल पुरान। हैं साचे सभि सुनहि जहान ।। १५ ।।
सतिगुर के सिख सोभी साचे। सदा उपासन गुर की राचे।
करम कांड मैं जो जग जीवा। करहिं शुभाशुभ सरब सदीवा ।। १६ ।।
तिन को पंथ तथा ही जाना। पंनी को असवारी नाना।
तऊ बरख दिन महिं तहि जाइ। लेखा धरम राइ ढिग पाइ ।। १७ ।।
जे पापी तिन मारति जाते। दुख को पाइ सु पाइ प्रयाते।
सो भी जाहिं बरख दिन मांही। लहैं सजाइनि अंतक पाही ।। १८ ।।
तिन को जानै भनहि पुरान। गुर सिक्ख को नहिंन बखान।
इन के निकटि नहीं जम आवै। रहै दूर दीरघ डरपावै ।। १९ ।।
धरम राइ आदर करि मिलै। साध साध सभि कहि जब चलें।
स्री नानक की सिक्खी महां। महां महातम है जहिं कहां ।। २० ।।
जेतिक बल जिस महिं हुइ आवै। तेतिक कहै न कूर अलावै।
इन सिक्खन महि शकती ऐसे। दई गुरू की भाखति जैसे ।। २१ ।।
जे श्री गुर करुना फल पैहैं। निमख न लागहि तहि पहुंचैहैं।
श्री ग्रंथ महिं बहु थल कह्यो। जम नहि पिखहि गुरू जिन लह्यो ।। २२ ।।
यांते गुर महिमा बहु भारी। नहीं महातम जाइ उचारी।
सुनि पंडित चितवति चित मांही। 'कहा कथा उचरौ गुर पाही' ।। २३ ।।
भूत भविक्खति के इह ग्याता। सगरे जगत पूज बख्याता।
देश बिदेशन सिक्ख करोरा। जो सिमरहिं हजार तिस ओरा ।। २४ ।।

---

*. पल-भर

कारज पूरहिं होहिं सहाइ। इह सभि महिं अथि जानी जाइ।
तथा सहाइक बनहि अगारी। जानी परहि भले निरधारी ॥ २५ ॥
करता रहता सभि जग केरा। गहौं शरन काटहिं दुख मेरा।
इम बिचारि करि पाइन पर्यो। छिमहु जाति को मद मैं कर्यो ॥ २६ ॥
लग्यो सुनावनि कथा अगारी। सरब कला समरथ गुन कारी।
महिमा जानी नहीं तुमारी। पर्यो शरन दिहु कुमति बिदारी ॥ २७ ॥
नही जाति को अबि कुछ मान। करहु सिक्ख सभि बंधन हानि'।
सुनि बिनती सतिगुर मुसकाए। दिज के जागे भाग सुहाए ॥ २८ ॥
कर्यो सिक्ख चरनांस्रित लीना। भयो मानते ब्रिद्ध बिहीना।
क्रिपा द्रिशटि गुर ऐसी करी। सरब बात की सोझी परी ॥ २९ ॥
पंथ बरख दिन को जो कह्यो। निमख मात्र को दिज बर लह्यो।
भयो अनंद बिलंदै दीखा। देनि जु आयो आप ली सीखा ॥ ३० ॥
पुन गुर आइसु कहि बहु बारी। सभि पुरान की कथा उचारी।
सिक्ख सुभट सभि सुनहि बिचारहिं। सतिगुर महिमा महां उचारहिं ॥ ३१ ॥
पर्यो भोग धन दीनि बिसाला। हलति पलति दिज कीनि निहाला।
पुन सभि संगति दरब बढायो। अति अनंद को रिदे उपायो ॥ ३२ ॥
रहनि लग्यो सतिगुर के पास। धन को भेज्यो अपनि अवास।
नित श्री हरिगोबिंद निहारैं। चलित अनिक असचरज बिचारैं ॥ ३३ ॥
संगति दूर दूर ते आवैं। मन बांछति सगले बर पावैं।
अनगन धन नित आइ उपाइन। जग पूजहि कमलन से पाइन ॥ ३४ ॥
करहिं अखेर ब्रित्त मन भाई। बिचरहिं कानन महिं सुखदाई।
नित ही नवें बिलास हुवंते। अनगन नरन उधार करंते ॥ ३५ ॥
शसत्रन बिद्या को अभ्यास। करहिं आप अरु सुभट जि पास।
अधिक तुफंगन मिलहिं चलावहिं। हतहिं निशानो तुरंग धवावहि ॥ ३६ ॥
तीरन की बिद्या बड होइ। करहिं प्रहारनि धारति जोइ।
रण प्रसंग नित सुनहिं सुनावहिं। बखशहि मौज* अनंद उपावहि ॥ ३७ ॥
तुरकन मारन की रन गाथा। करहि आपने सुभटन साथा।
'इस प्रकार मारे मति हीने। आए ब्रिद राज मद कीने ॥ ३८ ॥
रण ब्रितांत जै सिक तबि भयो। सगरे जगत बिखै प्रगट्यो।
सभिहिनि के भा इस बिध बोधा। 'गरसमान जग अपर न जोधा ॥ ३९ ॥

---

*. सम्पत्ति का सुख

अति दीरघ पर सैन न गिनै। एकल होइ त इक ही हनै।
बहु थोरनि की नही बिचार। जटहि से लीनसि मारि ।। ४० ।।
तीरन की बिद्या बड ठानै। बहुतन के बिच पार सु हानै*।
जिन को धनुख कठोर बिसाला। को नहिं ऐंच सकहि इस काला ।। ४१ ।।
जो सनमुख भा ततछिन मार्यो। जीवति रह्यो भाजि सो हार्यो।
इत्यादिक जसु जग महिं ज़ाहिर। कहति मिलै नर घर कै बाहरि ।। ४२ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटमि रासे बिप्र प्रसंग बरननं नाम दोइ पंचासती अंशु ।। ५२ ।।

---

*. मारे

अंशु ५३

भाई बुड्ढे तन तजन प्रसंग

दोहरा

ग्राम नाम रमदास के तहाँ ब्रिद्ध को धाम।
करे बितावन दिन कितिक ब्रह्मनंद बिस्राम ॥ १ ॥

चौपई

तजनि सरीर समा नियरावा। सकल भेव बुड्ढे लखि पावा।
रिदे मनोरथ ऐसे कीनि। अंत समो अपनो ढिग चीनि ॥ २ ॥
श्री हरिगोविंद होवहिं तीर। जबि मैं त्यागनि लगौं सरीर।
देखति आगै रूप मुकंदा। जिन को चाहति मुनि जन ब्रिंदा ॥ ३ ॥
अपर काज इक और लखाऊं। निज सुत को अबि कर पकराऊँ।
उचित अहै मोकहु इहु करनी। हम सगरे सतिगुरु की शरनी ॥ ४ ॥
लोक पलोक आदि अरु अंत। हमरो नहिं को बिन भगवंतु।
हम बिचारि करि सिक्ख हकारा। भाउ सुमति जिस बहु उर धारा ॥ ५ ॥
निकटि बिठाइ सकल समुझाई। 'गुर ढिग गमनहु बिलम बिहाई।
मम दिशि ते इह बिनै सुनावहु। दास कदीमी लखि करि आवहु ॥ ६ ॥
जिम कुर खेत बिखै रण ठाने। क्रिशन हसतना पुरी पयाने।
सभि पांडन को ले करि सत्य। अभिरोच्यो[1] धरमज नरनाथ ॥ ७ ॥
सर[2] सिहजा पर भीशम पर्‍यो। धरम निबाह आपनो कर्‍यो।
अंत समों अपनो तिन जाना। क्रिशन हकारे धरि करि ध्याना ॥ ८ ॥
तत छिन अपनो सिमरन चीना। सभि कुछ तजि प्रसथानो कीना।
अंत समें महि दरशन दयो। तैसो समों आनि अबि भयो ॥ ९ ॥
क्रिपा करहु आवहु हित धारे। जिम जटायु तन तजति निहारे
सीता खोजति इत उत धाए। निज जानि तुरत ही आए ॥ १० ॥
तिम अबि बिरद संभारति आवहु। अघ हरनी निज दरस दिखवाहु।
बिध को नमो करति सिख चल्यो। तूरन आइ गुरू संग मिल्यो ॥ ११ ॥

---

1. राज-तिलक 2. शर-शय्या

नमसकार करि ब्रिद्ध संदेसा। बैठ्यो भाखि सुनाइ अशेशा।
सुनि सतिगुर निज प्रिय की बात। त्यारी करी शीघ्र सभि भांति ॥ १२ ॥
बिधीआ अरु भाई गुदरास। 'ब्रिद्ध तन अंत' कह्यो सभि पास।
पुरि महिं जथेदार इक छोरा। कितिक सैन देकरि तिस ठौरा ॥ १३ ॥
पुरि जन सभि को धीरज दीनि। चढिबे तुरंग हकारनि कीनि।
चंदू सकल छै करि तबि त्यार। चढे संग गुर भे असवार ॥ १४ ॥
कुछक सैन दे संग निहाले। सौप्यो पुरि को राखि संभाले।
चढि सतिगुर तबि पंथ प्याने। करी शीघ्रता नहिं ठहिराने ॥ १५ ।
बडे बंग ते तुरंग चलाए। तूरन पंथ संपूरन आए।
नाम देव को हुतो सथान। रुचिर देहुरा करियो ठानि ॥ १६ ॥
बित्त कबीर भगत जो और। सभि के बिजै लख्यो सिरमौर।
उतरि तुरंग ते बंदन कीनि। प्रभू की भगत लख्यो रसनी ॥ १७ ॥
जथा मतंग मुनी के आश्रम पहुंचे। रघुपति धारि महाश्रम।
मुनि सथान को बंदन कीनी। तथा रीति इह सभि चीनी ॥ १८ ॥
करति शीघ्रता पंथ मझारी। बसे निसा इक गयो अगारी।
ग्राम समीप जबे पहुंच्यो। देखि दूर ते इक नर गयो ॥ १९ ॥
'ब्रिध जी ! श्री हरिगोबिंद आए। सुनति प्रेम उमग्यो अधिकाए।
सभि तन महिं रुमंच हुइ आवा। रुचिर बिलोचन महि जल छावा ॥ २० ॥
गदगद बानी जाइ न बोला। मनहुं प्रेम पूरन भरि तोला।
उठि करि गमन्यो भयो सथंभा। चलति न पग मन मानि अचंभा ॥ २१ ॥
थकति होइ करि तहि ही बैसा। सकल शरीर पनस* फल जैसा।
मुंदि बिलोचन ले रस ध्याना। भयो प्रेम ते बिबस महाना ॥ २२ ॥
इतने महिं गुर गए अवास। संग लिए बिधिआ गुरदास।
अचल समाधि मनहुं चिरकाला। बैठ्यो जोगी कोइ बिसाला ॥ २३ ॥
देखति रहि गए ठांढे स्वामी। लखी रिदै गति अंतरजामी।
अधिक प्रेम गुर के उर आवा। दौन बिलोचन जल भरि आवा ॥ २४ ॥
नहि कुछ कह्यो गयो रहि खरे। तबि गुर दास ब्रिद्धि पग परे।
करि बंदन को कुछक हिलाए। पंकज से लोचन बिकसाए ॥ २५ ॥
प्रेम बिबस जबि सतिगुर हेरे। तूरन गहे पाइ तिस बेरे।
नंम्र भए श्री हरिगोविंद। गहे ब्रिद्ध के पद अरबिंद ॥ २६ ॥

*, कांटे दार कटहर की भांति रोमांचित

बैठनि के सथान ले गए। सभि सिख ब्रिध को वंदति भए।
तहिं के सिख गुर को किय नमो। बैठति भए ब्रिद तिह समों ॥ २७ ॥
ब्रिध साहिब कर जोरि उचारी। इह कुछ रीति नई न तुमारी।
दासन बसि हुइ करुना करिहौ। कछू न लोक लाज को धरिहौ ॥ २८ ॥
बिरद संभारि आपनो आए। मेरो अंत समां नियराए।
क्रिपा धारि दरशन को दीना। नित सिक्खनि बसि गुरू प्रबीना' ॥ २९ ॥
सुनि श्री गुर शुभ उत्तर दीना। 'तुम सिक्खी मग उज्जल कीना।
रावर को आचरण गहैंगे। सो सिक्ख अघ-बंन्ही[1] न दहैंगे ॥ ३० ॥
तोर नाम ले सिक्खी धरैं। कहो क्यों न भव सागर तरैं'।
इत्यादिक बहु आपस माही। कही सुनी महिमा थित पाही ॥ ३१ ॥
सुंदर मंदिर अंदर डेरा। करिवायहु सादर तिस बेरा।
जथा जोग सभि को सुख दयो। देग प्रसाद त्यार तबि भयो ॥ ३२ ॥
भांति भांति के भोजन करे। मधुर तुरश बहु स्वादनि भरे।
निकटि बैठि गुर को अचवायो। पुन सभि सैना को बरतायो ॥ ३३ ॥
सुपतन समैं जानि ब्रिध भाई। म्रिदु सिहजा सुंदर डसिवाई।
भूमासन अपनो तबि कीनि। श्री हरिगोविंद सभि बिधि चीनि ॥ ३४ ॥
तजि सिहजा भूमासन करे। ब्रिध साहिब के ढिग गुर थिरे।
निस महिं बचन बिलास करंति। भनति भए श्री गुर भगवंत ॥ ३५ ॥
श्री नानक आदिक गुर सारे। रहे निकटि सभि रीति निहारे।
हान लाभ सभि बिधि ही जानहु। मुझ प्रति कुछ उपदेश बखानहु ॥ ३६ ॥
सेवक जानि दया रस ढरीअहि। सीछा[2] भली बतावनि करीअहि।
सुनि ब्रिध कह्यो 'आप नाराइन। छदम रूप तुम धर्यो सुहाइन ॥ ३७ ॥
गन सिक्खनि गो दिज अरु धरनी। धर्यो देह रच्छाइन करनी।
ध्यान बिखै आराधति जोगी। भोगन हित सेवति सभि भोगी ॥ ३८ ॥
ब्रह्म आतमानंद सरूप। ठानति अचरज चलित[3] अनूप।
सभि को सीखक[4] रावर अहो। कहा सीख मैं तुम सो कहों ॥ ३९ ॥
मम सुत की अबि भुजा गहीजै। मम समान ही नित निबहीजै।
श्री नानक गुर अंगद और। पुन कुल भल्यनि के सिर मौर ॥ ४० ॥

1. अग्नि 2. शिक्षा 3. चरित्र 4. शिक्षक

श्री गुर रामदास, गुर अरजन। करी सु बहु सिक्खी जग सिरजन।
मेरी बात जथा निरबाही। तिम मम सुत रहि तुमरे पाही ॥ ४१ ॥
इम कहि अपनो सुत बुलवायो। चरन पाइ गुर निकटि बिठायो।
भाना हाथ गह्यो निज हाथ। गहिवाई तबिही पिखि नाथ ॥ ४२ ॥
श्री हरिगोविंद गहि कर साथे। राखी बाहु तांहि, निज माथे।
कहि बहु विधि सो धीरज दीना। अपर करी चरचा रस भीना ॥ ४३ ॥
तीन पहिर जागति ही रहे। ब्रिध के वाक सुने अरु कहे।
आइसु गुर की ले उठि खर्यो। जल सीतल सों मज्जन कर्यो ॥ ४४ ॥
पुन श्री हरिगोविंद ढिग आयो। बैठ्यो सनमुख उर हरखायो।
इक चित ह्वै करि जपुजी सारा। सने सने संभारि उचारा ॥ ४५ ॥
पठि करि गुर दिशि बंदन कीनि। निज दासनि को आइसु दीन।
'पावन कुशा करहु छितु पावन। बैठ शबद को कीजै गावन ॥ ४६ ॥
सभि सुगंधिता करि छिरकावनि। सत्तिनाम सिमरहु हरिखावन।
दीपक ब्रिंद बार करि धरीअहि। संगति सगल इकत्तर करीअहि' ॥ ४७ ॥
सुनि ब्रिध हुकम दास गन आए। कर्यो जथा सभि काज बनाए।
श्री हरिगोविंद केर अगारी। हाथ जोरि बहु बिनै उचारी ॥ ४८ ॥
'आइसु दीजै अग्र सिधाऊं। पदवी परम आप की पाऊं'।
सतिगुर कह्यो 'बिराजहु प्यारे!। गगन समान विआपहु सारे ॥ ४९ ॥
सुनि पौढ्यो कुश आसन ऊपर। सेत बसत्र को लीनि तनू* पर।
खुल्हे बिलोचन सनमुख हेरति। सतिगुर क्रिपा द्रिशटि सो प्रेरति ॥ ५० ॥
तन को त्यागि प्रान जबि गयो। गुरू बिखै लै होवति भयो।
तजी रही तहिं कांयां खाली। जनु गज फूल माल को डाली ॥ ५१ ॥
सुगम देहि ते होयो भिन। जो गुरु सों नित रह्यो अभिन्न।
धंन जनम नित परउपकारी। जनु सिखी की नीव उसारी ॥ ५२ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथे खशटम रासे 'भाई बुड्ढे तन तजन' प्रसंग बरननं नाम तीन पंचासती अंशु ॥ ५३ ॥

---

*, शरीर

अंशु ५४

देसां जट्टी प्रसंग

दोहरा

ब्रिध साहिब जी महां सिख जैसे भगत कबीर।
देहि अंत सुर जानि कै आइ बिमाननि भीर ॥ १ ॥

चौपई

अरण वरण भा गगन मझारा। मिलि सुर जै जै कार उचारा।
बैठे श्री हरि गोविंद चंद। अभिवंदन कीनसि कर बंदि ॥ २ ॥
उतसव रचिति कुलाहल होवा। नभ अवनी महिं अचरज जोवा।
आसावार रबाबी गावहिं। बहु बिराग के शबद सुनावहिं ॥ ३ ॥
शबद सुनति प्रभाति हुइ आई। कहि सति गुर त्यारी करिवाई।
जरी बादला सहत सहत बिमान। फूलन माला छाह महान ॥ ४ ॥
ब्रिध को तबि शनान करिवायो। नरन उचाइ बीच पौढायो।
ऊपर सुंदर माह दुशाले। सति गुरु आप बिमान उठाले ॥ ५ ॥
भाना, बिधीचंद, गुरदास। संगति घनी लगी चहुं पास।
ब्रिध होता तबि चवर ढुरावै। आगै गमन शबद को गावैं ॥ ६ ॥
अतर गुलाब महिक छिरकावा। लघु दीरघ बादत[1] बजवावा।
धर बरखावति छत्ते अगारी। धन, घर की नर प्रीति विसारी ॥ ७ ॥
सगरे सिमरति मरन कराला। विशय विरागी भए बिसाला।
ब्रिध को अस प्रताप तहिं छावा। सिक्खनि मन निरमल हुइ आवा ॥ ८ ॥
चंदनं चिखा रची तिस काला। ऊपर धरि जब तिल घ्रित डाला।
भाना ले कर लांबू लायो। शबद रुदन को तबहि उठायो ॥ ९ ॥
लखि प्रिय अति श्री हरि गोविंद। तजे बिलोचन ते जल बुंद।
गुर को पिखि सभि कीनी विरागा। करि कपालक्रिया मनु रागा[2] ॥ १० ॥

1. वाद्य, बाजे 2. अनुराग 3. विचित्र अचंभा

करि शनान गुर जुति समुदाय। सने सने डेरे कउ आए।
बैठि लगायो अधिक दिवान। मिली सकल ही संगति आनि ॥ ११ ॥
सिक्ख अजिते चरित निहारा। ब्रिध प्रताप जस, चाहति बियारा।
हाथ जोरि सभि बिखै बखाना। 'श्री गुर संसै दिहु मम हाना ॥ १२ ॥
जबि ससकारनि को ले चाले। पिख्यो सभिनि सिर छत्र बिसाले।
करि कै दाहु जबै हटि आए। तुम पर ही इक छत्र सुहाए ॥ १३ ॥
कहो क्रिपा करि क्या हह भायो। सुनि सतिगुरु तिह उत्तर दयो।
'जबहि गए सिमरति सभि मरना। जग विराग धार्यो रस करुना ॥ १४ ॥
तहि ते जबि पुरि दिशि हटि आए। सुत त्रिय धन संकलप उठाए।
फसे मोह मन प्रथम समाने। यांते छत्र भए सभि हाने ॥ १५ ॥
पुन भाने साहिब को धीर। देति भए बहु बिधि बर बीर।
'होनहार की चिंत न करीयहि। सभि जग की इह रीति निहरीअहि ॥ १६ ॥
जनम धारि जग करम कमावैं। आइ काल सभि तन बिनसावैं।
साधि लीनि जिनहु परलोक। जस बिसतारहि पुरि पुनि ओक* ॥ १७ ॥
सेनहिं मरे जियति सभि काला। अपर मरे दुख ललहि बिसाला।
ब्रिध जी आप तरे जग सागर। तारे सिक्ख समूह उजागर ॥ १८ ॥
इन की समता नहिं किस मांही। सद अटल्ल जसु मिटहि सु नाही।
गुर के सिक्ख भाउ उर धारी। इन की कीरति करहि उचारी ॥ १९ ॥
इत्यादिक सतिगुरू बखाना। करि उपदेश द्रिढ़ाइ सु ग्याना।
सुनि ग्रामनि ते संगति आवैं। सभि भाने को आनि बुलावैं ॥ २० ॥
सति गुर कहि करि दंग कराई। सभि संगति को दीन ब्रताई।
भाने सहत आप पुन खायो। जथा जोग सभि काज करायो ॥ २१ ॥
म्रितक क्रिआ सगरी करिवाए। दिन चौथे महिं असथि चुनाए।
परे संग मानव समुदाए। श्री गंगा महिं दीनि पुचाए ॥ २२ ॥
पाठ ग्रिंथ को सभि करिवायो। श्री गुरदास पढ्यो मन लायो।
नित नवीन संगति बहु आवै। कितिक कहैं ढिग कितिक सिधावैं ॥ २३ ॥
दिवस त्र्योदशी को जबि आयो। दैठे गुरु दिवान लगायो।
भोग पवाइ ग्रंथ को जबै। पग भाने को दी गुर तबैं ॥ २४ ॥
श्री ब्रिध की गादी पर थिर्यो। दे नर भेट प्रनाम सु कर्यो।
शबद बिलावल आनंद गायो। ब्रिंद रबाबी धन गन पायो ॥ २५

*घर

जथा जोग सभि को धन दीना। कीनि मंगलाचार नवीना।
बहु संगति ले पुज उपाइन। दे भाने को बंदहि पाइन ॥ २६ ॥
जिम गुर हुकम जथोचित दीना। तिम भाने अर संगति कीना।
इक दिन माहं श्री हरिगोविंद। बेठै दिपति संगता ब्रिंद ॥ २७ ॥
एक अंगना निह छिन आई। ऊची धुनि सों बिनै सुनाई।
सुनहु गुरू! हम बसते पट्टी। देसां नाम जाति की जट्टी ॥ २८ ॥
कुलसिद्ध महिं मो कहु ब्याही। सुनि जसु बहु आई तुम पाही।
आसा वंत न की नित आसा। पुरवति हो, रावरि भरवासा ॥ २९ ॥
पुत्र नहीं पुपजति है मेरे। हारी करि उपचार घनेरे।
अबि समीप तुमरे चलि आई। दिहु सुत मोकहु लखि शरनाई ॥ ३० ॥
श्री हरि गोविंद सुनति उचारा। लिख्यो नहीं सुत तोहि लिलारा।
सुनति उदास भई सहि चिंता। 'लख्यो, भाग मम नहि सुतवंता ॥ ३१ ॥
बहुत बिसूरति किस थल बैसी। दिखी चलति गुरदासहि तैसी।
दुखी जानि बूझी 'क्या भयो। क्यो सचिंत मन अपनो कियो ॥ ३२ ॥
तिय ने सगरी कथा सुनाई। 'सुत हित मम सतिगुर ढिग आई।
मुसकावति मुख ते फुरमायो। 'लिख्यो न तव मसतक द्रिशटायो ॥ ३३ ॥
दीन बात सुनिकै तबि भाई। पुत्र लेनि की सीख सिखाई।
'अबि के जाहु धारि सुत आस। लेहु कलम रुशनाई[1] पास ॥ ३४ ॥
जबि गुर कहै 'लिख्यो नहि तेरें। तबि इम कहु करि कलम अगेरे।
लिखनहार इत उत तुम सारे। तहिं न लिख्यो जे भाग हमारे ॥ ३५ ॥
क्रिपा करहु तबि अबि लिखि दीजै। शरनागति लगि आस पुरीजै[2]।
सुनि त्रिय हित की सिख्या धरी। अगले दिवस तथा बिधि करि ॥ ३६ ॥
बीती निस प्रभाति हुइ आई। हित अखेर त्यारी करिवाई।
बसत्र शसत्र सतिगुर सभि धारे। हय स-जीन के लीनि हकारे ॥ ३७ ॥
चढे सुभट शुभ आयुध धारी। बाज, कुही, स्वानन करि त्यारी।
हय अरूढि श्री हरि गोविंद। चले, पिछारी जोधा ब्रिंद ॥ ३८ ॥
सने सने तबि प्रेरि तुरंग। निकसन लगे ग्राम भट संग।
सो त्रिय तबि पहुंची उतलावति। आगै भई प्रभू जित जावति ॥ ३९ ॥
गुरू गरीब निवाज, क्रिपाला। पुरवहु सुत की आस बिसाला।
जस सुनि चली दूर ते आई। तुम समरथ की मैं शरनाई ॥ ४० ॥

1. सियाही 2. पूरी कीजिए

मुसकावति सतिगुर तबि पिख्यो। तोहि भाग महि नहि सुत लिख्यो।
तबि त्रिय अवसर पायहु नीका। चलि आगे हुइ प्रभू नजीका[1] ॥ ४१ ॥
कर महि लिए कलम रुशनाई। भनी बिनै सो करि अगवाई।
इत उत लिखनहार हो रावर। जे न लिखहिं इम से नर बाबर ॥ ४२ ॥
तहि नहिं लिख्यो आप ने जेई। क्रिया धारि अबि लिख दिहु सेई।
बिकसे प्रभू जुगति को जाना। 'हुइ सुत तेरे' बाक बखाना ॥ ४३ ॥
सुनि देसां कहि 'देहु प्रतीत। लिखहु गुरू तबि हुइ थिर चीत।
भे प्रसंन गुर लिखनि सु लागे। गही कलम हय चालति आगे ॥ ४४ ॥
करनि इकांक चह्यो, कर हाला। साता लिख्यो गयो तिस काला।
भयो अंक सतिगुर ढिग हेरी। बहु प्रसंन बोले तिस बेरा ॥ ४५ ॥
'इक सुत हेतु गही शरनाई। अंक सपत को भा बरिआई।
अबि घर जाहु सपत सुत पावहि। भई आस पूरी जित आवहि ॥ ४६ ॥
सुनि देसां उर अनंद बिलंद। धंन गुरू कहि नमहिं सु बंदि।
लेकरि बरको घरहि सिधारी। जहिं कहिं कहि कहि कित बिसतारी ॥ ४७ ॥
श्री हरि गोविंद चंद बिलंदे। गए अखेर ब्रिती आनंद।
ऊबट[2] जित दिशि घनी निहारी। गई तहां प्रभु की असुवारी ॥ ४८ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे खशटमि रासे, 'देसां जट्टी' प्रसंग बरननं नाम चतर पंचासती अंशु ॥ ५४ ॥

---

1. चाहे अन चाहे 2. उद्‌वाट, अवढ़ और कठिन स्थान

अंशु ५५

'श्री नानक देहुरे को' प्रसंग

दोहरा

वहि सलिता ऐरावती तिस ते उरे कितेक।
बिचरति हेत शिकार के श्री गुरु जलधि बिबेक ॥ १ ॥

चौपई

देखी जबि उद्यान महान। मिल्यो एक मानव तहिं आनि।
हिंदू हुतो हेरि गुर पूरन। चरन कमल बंदे तिन तूरन ॥ २।
प्रन कर जोरि बताइसि बाति। 'निकट दुशट गे करते घाति।
तिनके बस नहिं आवति सोई। करति ओज को मैं तहिं जोई ॥ ३ ॥
सुनि सतिगुरु सो आगे कर्यो। हय धवाइ चाले रिस धर्यो।
हुते निकट ही जाइ निहारे। खड़ग निकास्यो ततछिन मारो ॥ ४ ॥
भाज चले कुछ घेरि प्रहारे। खंड खंड करि धर पर डारे।
ग्राम समीपि हुतो तिन केरा। सुन्यो रौर धाए तिस बेरा ॥ ५ ॥
चाप बंदूक संभारति आए। मरे देखि करि समुख चलाए।
सभि सैना गुरु की तबि धाई। तजी तुफंग शलख समुदाई ॥ ६ ॥
गुलकां लगि मरे इक बारी। भाजे जियति त्रास को धारी।
ग्राम छापरी को गन घाले। बसहिं जमन* जे अछी बिसाले ॥ ७ ॥
सुभट पहुंचि तिन आग लगाई। जर करि छार भई समुदाई।
पापी तुरक जिति तहिं हेरे। काटे खड़गनि सों तिस बेरे ॥ ८ ॥
धरनी धेनु हुती तन और। धरि सुर जुति आई तिस ठौर।
इक सतिगुर को परहि दिखाई। अपर न पिखहि खरे समुदाई ॥ ९ ॥
सुर जुति अविनि बिनै उचारी। तुरकनि मोकहु कीनि दुखारी।
अनिरीति के पाप करंति। मैं नहिं तिन को भारि सहंति ॥ १० ॥

---

*यवन, मुसलमान

जिस हित आप लीनि अवतारा। राज मलेछ बिनासहु सारा।
बिप्र, धेनु, संतनि सुख दीजै। तुरकराज को दूर करीजै ॥ ११ ॥
सुनि सतिगुरु तबि दीन दीलासा। 'किति काल महि होइ बिनासा।
पौत्र हमारो हुइ जिस काला। करहि खलनि संग जंग कराला ॥ १२ ॥
उपजावौं तबि पंथ विशाला। अविनि राज करहिं चिरकाला।
सभि तुरकनि को राज उठावैं। सने सने इह सभि खपि जावैं ॥ १३ ॥
सुनि गुरु ते सुर धरनी सारे। करि करि बंदन सदन सिधारे।
खल हति हति ग्राम छार करि दीना। फिरे अखेर ब्रित्त कुछ कीना ॥ १४ ॥
निज डेरे को पुन हटि आए! करति बाति जिम दुशट खपाए।
भाना साहिब जिस असथान। उतरे आइ गुरू भगवान ॥ १५ ॥'
तजि आसन तिन गुरु बिठाए। बूझे 'कित अखेर करि आए।
बिधीचंद तबि सरब उचारे। आज शिकार दुशट बड मारे ॥ १६ ॥
जार्‍यो ग्राम उजार कर्‍यो है। पाप बिलोकति कोप धर्‍यो।
सुनि भाने जुति नर समुदाय। धंन धंन गुर सभिनि अलाए' ॥ १७ ॥
शसत्र धरनि को कारन एही। जित कित हतन मलेछिन केही।
सुजसु गुरू को पसर्‍यो सारे। संत उधारति दोखी मारे ॥ १८ ॥
हम सतिगुरु तहि दिवस बिताए। ब्रिध प्रसंग गुर निकट सुनाए।
श्री करतार पुरे श्री नानक। जगे भाग इह गए अचानक ॥ १९ ॥
भए निहाल बडो पद पाए। संग उधारे सिख समुदाए।
सुनि गुर कह्यो 'तहां हम जाइ। श्री करतार पुरा दरसाइ ॥ २० ॥
इम कहि श्री गुर कीनि पयाना। अपने संग लीनि तबि भाना।
बिधीचंद आदिक भट जेई। नाथ साथ प्रसथाने तेई ॥ २१ ॥
ऐरावती उलंघति गए। श्री करतारपुरा दरसाए।
जहि श्री नानक को असथान। हय ते उतरि नमो तिह ठानि ॥ २२ ॥
करी प्रकरमा फिर करि चार। पंचांम्रत करवा इसि त्यार।
श्री नानक सिमरे अरदास। कर्‍यो ब्रतावनि* सभि के पास ॥ २३ ॥
श्री अंगद को गादी दीनि। तिस थल जाइ दरस को कीनि।
बार बार करि बंदन थिरे। तिह के नर पुन बूझन करे ॥ २४ ॥
'नहीं देहुरा अबि इस थान। सकल भेव तबि कीन बखानि।
'रावी इहां बेग करि आई। सो अविनी जल बिखै हवाई ॥ २५ ॥

*वितरण, बांटने का काम

पार सथान जाइ अबि कर्‌यो। गुरु को बस तहां ही थिर्‌यो।
करि दरशन सुनि कै सभि गाथा। चढे प्रभु सैना गन साथा॥ २६॥
रावी लांघति ततछिन गए। पहुंचि देहुरा दरशन किए।
हय ते उतरि गए प्रभु नेरे। कर्‌यो प्रणाम दरस को हेरे॥ २७॥
बहुर प्रकरमा फिरि करि दीनि। बैठि गए पुत अग्र प्रबीन।
धरमचंद श्री नानक पोता। जिस ते बेदनि बंस उदोता॥ २८॥
तिह सुधि भई गुरू चलि आए। सभि कुटंब जुति आनंद पाए।
दोह पुत्र को ले करि साथ। आइसि तुरत जहां गुरु नाथ॥ २९॥
तिन को मान राखिबे हेतु। खरे भए सोढी कुल केत।
श्री नानक महिमा बड जानि। प्रथम बंदना श्री गुरु ठानि॥ ३०॥
सादर बहुर बैठिबो करे। कुशल प्रशन करि आनंद भरे।
बहु प्रसादि सति गुरु मंगवायो। श्री नानक को अरपि ब्रतायो॥ ३१॥
एक सहस्र रजतपन लयो। अग्र देहुरे के धरि दयो।
कंचन के कंकन मंगवाइ। कोशप[1] तवि आने सहि साहा॥ ३२॥
मिहर चंद माणकचंद दोऊ। पहिराए कहि सादर सोऊ।
धरम चंद करिवायहु डेरा। जथा जोग थल दीनि बसेरा॥ ३३॥
जथा शक्ति सेवा करिवाई। तहिं श्री सति गुरु निसा बिताई।
भई प्रभाति धरम चंद आए। गुरु प्रथम के चलित सुनाए॥ ३४॥
बूझन करे श्री चंद जेई। किस सथान तप तापति तेई।
चलहु संग तिन दरशन करीयहि। परम ब्रिद्ध पद परसनि धरीयहि॥ ३५॥
इम कहि लए धरम ससि संग। गमने सति गुरु चढ़े तुरंग।
श्री नानक के रुचिर बिलास। मग महिं करते जालि प्रकाश॥ ३६॥
पहुंचे थित टालही के तेरे। परम ब्रिद्ध शुभ आसन करे।
हय ते उतरि दूर ते आए। श्री हरि गोविंद सिख समुदाए॥ ३७॥
धरम चंद को लै करि साथ। बंदन करी जोरि जुग हाथ।
अपर सकल ही करहिं प्रणाम। बैठे गुरु सुत तप के धाम॥ ३८॥
बैठे सनमुख मोद उपाइ। सिरीचंद बोले सति[2] भाइ।
कह, पुरखा! है कुशल तुमारे। कर्‌यो जंग गन दुशमन मारे॥ ३९॥
सुनि श्री हरि गोविंद उचारी। 'कुशल हमारे क्रिपा तुमारी।
पाइ आप को बलि दिपु घाए। रण बिसाल महिं करी सहाए॥ ४०॥

1. खजांची, कोषाध्यक्ष 2. सात्विक स्वभाव से

इत्यादिक करि बाक बिलास। केतिक काल बैठि करि पास।
बहुर बंदि करि आइसु लीनि। उठे गुरु पग वंदन कीनि ॥ ४१ ॥
धरम चंद को लेकरि साथ। आए निज निवेस कहु नाथ।
तीन जागनी बसि करि स्वामी। पुन त्यारी करि अंतरजामी ॥ ४२ ॥
बंदन करी देहुरे जाइ। चतुर प्रकरमां दे गुरु थाइ।
धरचंद सो मिलि करि चढे। संग सुभट गन मन मुद बढ़े ॥ ४३ ।
ततछिन आइ ब्रिद्ध के ग्रामू। डेरा करति भय सुख धामू।
दिन प्रति करति बिलास नवीन। श्री हरि गोविंद बीर प्रबीन ॥ ४४ ॥
कबि चढहिं अखेर बिहारैं। बन के दुशट जीव गन मारैं।
भाना रहै संग जहिं जावैं। सति गुरु सेव परम सुख पावैं ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे खशटमि रासे, 'श्री नानक देहुरे को' प्रसंग बरननं नाम पंच पंचासती अंशु ॥ ५५ ॥

अंशु ५६

सुधासर आगवनि प्रसंग

दोहरा

दीपमाल को दिवस तबि आइ समीप पछानि ।
श्री अंम्रितसर दरस को इच्छा भई महान ॥ १ ॥

चौपई

बिधी चंद भाई गुरदास । इत्यादिक सिख अपर जि पास ।
हाथ जोरि सभिहुंनि सुनायो । 'श्री गुरु सुनहु सभिनि मन भायो ॥ २ ॥
दरशन सबै सुधासर चाहति । चहुंदिशि को नर मेल उमाहति ।
दीप माल का दिन नियरावा । यांते अधिक रिदे लचावा ॥ ३ ॥
श्री हरि गोविंद सुनि करि बानी । आछी बात कही तबि मानी ।
'होति प्रभाति करहिं प्रसथाना । सभिनि भयो मन अनंद महाना ॥ ४ ॥
इम कहि दिन अरु निसा विताई । भई प्राति त्यारी करिवाई ।
भाने कह्यो 'सुनहु प्रभु नाथ । मैं अबि चलौ आपके साथ ॥ ५ ॥
इह उपदेश पिता ने दीना । गुरु संगति नित करहु प्रवीना ।
सो मैं करौं न त्यागों कबै । दिहु आइसु होवौं संग अबै ॥ ६ ॥
श्री गुरु तिस को धीरज दयो । बिध साहिब प्रलोक अबि भयो ।
इहो रहनि ही अबि बनि आवै । बहुरो संग रहनि ही भावै ॥ ७ ॥
इम कहि हय आरूढ़े स्वामी । भए सुधासर मारग गामी ।
दिवस ढरे लगि पहुंचे जाइ । चमूं संग आई समुदाइ ॥ ८ ॥
इक सेवक को अग्र पठायो । पंचाम्रित रास करिवायो ।
प्रथम बैठि करि चरन पखारे । कर्यो शनान कूप के बारे* ॥ ९ ॥
पुनह सुधासर गमने तीर । करि कै नमो नहाने धीर ।
तखत अकाल भई अरदास । संगि समूह सुभट अरु दास ॥ १० ॥

---

*जल

पौर दरशनी पुनि चलि गए। हाथ जोरि करि नंम्री भए।
फेर पहुंचि दरबारि अगारी। हाथ जोरि करि बंदन धारी ॥ ११ ।
चतुर प्रकरमा दे करि बरे[1]। नमो करी अंतर गुरु थिरे।
पंचांम्रित सु तहां बरताए। बहुर अकाल तखत को आए ॥ १२ ॥
बैठि बिसाल लगाइ दिवान। पुनि जन सुनि सुनि देखहि आनि।
अरपि अरपि करि गन उपहार। बारि बारि पिखि करि बलिहार ॥ १३ ॥
बंदन करहिं अनंद बिलंदहिं। अविलोकहिं श्री हरि गोबिंदहिं।
'हमरो गुरु स्वामी सुख धामा। जदा अजुध्या को श्री रामा ॥ १४ ॥
निसा भई मंदिर महिं आए। खान पान करि सभि सुपताए।
भई प्रभाति पठ्यो इक दास। कर्‌यो 'जाहु पैंदे खां पास ॥ १५ ॥
आनहु हमरे निकटि बुलाइ। दीपमालि ते प्रथमे आइ'।
दुतियो गोइंदवाल पठावा। सभि कुटंब को तबहि बुलावा ॥ १६ ॥
दोनहुं दिशि दोनहुं चलि गए। गुरू संदेसा भाखति भए।
कहि दमोदरी संग सुनाए। सुंदर को लिहु संग बुलाए ॥ १७ ॥
चलहु सुधासर करे बुलावनि। सुनि सगरे उर भे हरखावनि।
सभि कुटंब ले सुंदर संग। गमने मारग चढे तुरंग ॥ १८ ॥
आइ सुधासर विखे प्रवेशे। उतरे अपने सदन विशेशे।
सुंदर चलि गुर के ढिग आयो। पद अरबिंदनि को लपटायो ॥ १९ ॥
सतिगुरु कुशल बूझि करि सारी। निकटि बिठायो म्रिदुल उचारी।
पुन उठि करि गुरु मंदिर गए। सभि के संग मिले सुख दए ॥ २० ॥
श्री गुरदित्ते बंदन कीनि। सूरज मल, अणिराइ प्रबीन।
अटंलराइ थित करि करि नमो। प्रिय सुत चतुर पिखे तिह समो ॥ २१ ॥
तेग बहादर अंक उठाइ। पिख्यो पिता वीरो तवि आइ।
सुता अंक ते सुत को लीन। श्री गुरु प्रिय दुलार बहु कीनि ॥ २२ ॥
इम सभिहिनि को दरस दिखावा। देखि देखि सभि मोद उमावा।
इतने महिं संगति बहु आई। अनिक अकोर पदारथ ल्याई ॥ २३ ॥
तखत अकाल बिराजे आनि। दरसहि सिख गन गुरु भगवान।
पैंदेखांन पहुंचि दिन मेले। संग भारजा ल्याइ सुहेले[2] ॥ २४ ॥
मिल्यो गुरू सन करि पग नमो। बूझि कुशल सादर तिह समों।
साथ भारजा सुनि दुरन-कंदनि। कौलां को दीनसि तिहि सदनि ॥ २५ ॥

---

1. प्रवेश किया 2. सुख से

बस्यो तहां आनंद उपजाए। गुरु घर ते सभि ही कुछ पाए।
चारहुं दिशि ते आयो मेला। करि शनान ते जनम सुहेला ॥ २६ ॥
दरशन करहिं गुरु बरबीर। होइ बहुत संगति की भीर।
अरपि अकोरनि लगहि अंबारा। बसत्र बिभूखन हय हथिआरा ॥ २७ ॥
धनं अनगन आनहि गुरु आगे। अरपि अरपि सगरे सुख मांगे।
सति गुर खुशि सभिनि पर धरी। संगति सकल बिसरजन करी ॥ २८ ॥
पुन गुरु सुख जुति दिवस बिताए। पैंदेखां नित निकटि रहाए।
बूझयो गुरू 'तुरंगम जोई। तो हित पठ्यो कहहु कस सोई ॥ २९ ॥
हाथ जोरि करि खान बखाना। हय हथि आर नीक जो जाना।
करहु मिहर सो मोकहु दैहो। हम हय कहां सकल सुख पैहो ॥ ३० ॥
महाराज ! रावर के संग। भयो अगारी ते बडि जंग।
नहीं दास को निकटि बुलायो। पूरब सम मैं काम न आयो ॥ ३१ ॥
सुनि गुरु कह्यो 'काज कुछ थोरा। चहति हकारनि नहि मन मोरा।
तुरक सहस्र पंच दस आए। औचक निकटि जंग को धाए ॥ ३२ ॥
पिखि करि सिख तिन पर हम गए। खग पर बाज छुधिति जिम भए।
सुभटनि हम पुरशारथ कीनि। केहरि हतहिं हेरि गज पीन ॥ ३३ ।
खानि फते लई बहु मारे। एक सहस्र बचे भजि हारे !
सुनि पैंदे निज रिदे बिचारी। पूरन पुरख गुरु बलि भारी ॥ ३४ ॥
मम गरबनि डर भा सभिकूरे। किधों लख्यो सौ सभि गुरु पूरे।
इत्यादिक लखि करि पछुताए। धंन गुरू तुम मुखहुं अलाए ॥ ३५ ॥
चहहु जया तिम ठटहु गुसाईं। करामात साहिब अधिकाइ।
इत्यादिक कबि छिरहि प्रसंग। जिम जिम ठाने पूरब जंग ॥ ३६ ॥
बिन हंकार भयो तबि पैंदा। गुरु न गरब रहनि दे कैंदा।
कितिक मास जबि एव बिताए। श्री अंम्रितसर सुख बहु पाए ॥ ३८ ॥
पैंदे खान के कंन्या भई। गुरु ढिग आनि तबै सुधि दई।
श्री हरि गोविंद धीरज दीना। पारहु निज संतति को चीना ॥ ३८ ॥
सुनि करि सदन आपनो गयो। सुन सम जानि मोद मन लयो।
पीछे हसति गुरु जबि हेरे। बोल्यो जेठा होइ अगेरे ॥ ३९ ॥
पैंदे खान के कंन्या होई। बिकसनि हेतु लख्यो* नहिं कोई'।
सुनि गुरु कह्यो जंग को कारन। उपजी, बनहिं तुरक गन मारनि ॥ ४० ॥
कुछक भेद जेठा समुझायो। सुनि सतिगुरु ते उर बिसमायो।

*हंसने का कारण

संगति सिक्ख अनेक उधारै। सतिनाम दे कुमति बिदारैं।
इक दिन ढिग दमोदरी होइ। बोली हाथ बंदि करि दोइ ॥ ४२ ॥
प्रौता निज घर बखशन करीअहि। क्रिपा दिश्टि इह मो पर धरीअहि।
हेरनि को चित चाव घनेरा। करहु मनोरथ पूरन मेरा ॥ ४३ ॥
सुनि करुना करि गिरा बखानी। हुह पोत्रे जुगि लिहु मन जानी।
गुरू पिता को बाक न खाली। वधी* वेल बहु पीढ़ी चाली ॥ ४४ ॥
श्री गुरदित्ते के सुत दोइ। उपजहिं केतिक चिर महि सोइ।
पूरन होइं मनोरथ तेरे। करहु प्रमोद पौत्र को हेरे ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे खशटमि रासे 'सुधासर आगवनि' प्रसंग बरननं नाम खश पंचासती अंशु ॥ ५६ ॥

*वंश की बेल बढ़ गई

अंशु ५५

धीरमल जनम अर अटलराइ खेलनि प्रसंग

दोहरा

श्री सतिगुरु वड पुत्र को निकटि बुलाइ बिठाइ।
होयहु तुरन बिसाल बलि अस आइसु फुरमाइ ॥ १ ॥

चौपई

श्री करतारपुरा निज थान। हमरे पित को रुचिति महान।
भा चिरकाल न गमने तहां। प्रजा बसति है अपनी जहां ॥ २ ॥
तहां समीप संगता ब्रिंद। दिवस पुरब के चहति बिलंद।
दरशन करनि उपाइन दैबे। रिदे कामना बांछति लैबे ॥ ३ ॥
तुम सभार जा बसीअहि जाइ। कबि हम मिलहिं, कबहि तुम आइ'।
श्री गुरदित्ते सुनि पित बाति। मानी सिर धरि करि मुदगाति[1] ॥ ४ ॥
माता को बिधि सकल सुनाई। कहि दासनि त्यारी करिवाई।
प्रथम बिमातनि[2] को करि नमो। मिलि दमोदरी सो तिस समो ॥ ५ ॥
सहत सनूखा[3] सुत को हेरे। आशिख[4] देति दुलार घनेरे।
शुभ सिख्या दोनहु कहु कही। रिदे बिछुरिबो चाहति नहीं ॥ ६ ॥
तउ पिता की आइसु जानि। श्री हरिमंदर बंदन ठानि।
श्री हरि गोबिंद को करि नमो। मारग चलत भए तिह समो ॥ ७ ॥
इक निस को बिताइ मग मांही। श्री करतार पुरा थल जांही।
हेरि प्रवेशे बासो ठानि। आयो मेल विसोआ[5] जानि ॥ ८ ॥
दिवस विसाखी के तहिं जाइ। बहु सिख संगति भेट चढ़ाइ।
जिम गुरु कह्यो मान पित बैन। बस्यो सदारा करि तहि एन[6] ॥ ९ ॥
सोलसत[7] तिरासीआ साल। माघ मास त्रौदसवी काल।

---

1. प्रसन्न शरीर 2. सौतेली माताओं को 3. बहू 4. आशीर्वाद 5. वैशाखी त्योहार 6. घर 7. माघ १३, १६८३ बि०

वार सनिशचर जबि ही आयो। नत्ती[1] ते प्रसूत सिस भयो ॥ १० ॥
सुनि सभि महि बड आनंद होवा। दरन दारन दे मंगल जोवा।
सुनि सुनि गन मांगन को आए। श्री गुरदित्ते उर हरखाए ॥ ११ ॥
जथा जोग धन गन वरतायो। सुधि[2] हित सेवक तुरत पठायो
आइ सुधासर सतिगुर पासी। पौत जनम की बात प्रकाशी ॥ १२ ॥
श्री हरि गोविंद मंगल कीना। जाचक गन को धन बहु दीना।
सुनि दमोदरी अनंद करंती। होति वधाई दरब दिवंती ॥ १३ ॥
जथा जोग भा मंगल चार। हरख पाइ सगरो परवार।
श्री सतिगुरु ढिग संगति आवै। पाइ कामना भेट चढावै ॥ १४ ॥
दिवस पुरब के आवहिं मेला। चहुं दिशि के नर होंहि सकेला।
चारों साहिबजादे पास। खेलहिं बिरधहिं महद प्रकाश ॥ १५ ।
केतिक चिर पित के ढिग आवैं। मिलि बालक संग खेल मचावैं।
पुरि की बीथनि बिखै पलावैं। कंचन भूखन शबद उठावैं ॥ १६ ॥
सेवक संग संग तिन जाइ। अलप बैस ते[3] रखि चुकसाइ।
बनक सिक्ख जे पुरी के वासी। तिन से सिस आवैं नित पासी ॥ १७ ॥
अटल राइ नव बरखनि केरे। फिरि बीथनि महिं हसति घनेरे।
अधिक प्रसंन बदन सो रहैं। जिन महि जोति जगत जग लहै ॥ १८ ॥
निकसि जाइ मुख ते जिम बानी। हुइ प्रसंन कै रिस उर ठानी।
ततछिन सफल सिक्ख पतिआवैं। यांते अदब करहिं डरपावैं ॥ १९ ॥
खेलनि खान पान ते आदि। सभि महिं तिनहुं धरहिं अहिलाद।
नहिं प्रतिकूल करहि कबि कोई। तेज सुभाव जानिकरि सोई ॥ २० ॥
सुंदर बसत्र बिभूखन धरैं। खेलनि महिं चंचलता करैं।
जो सिख चहै कामना कोऊ। अटल राइ संग बिचरति सोऊ ॥ २१ ॥
जथा कहहिं, सेवा तिम ठानहि। खान मान हित स्वादल आनहि।
हाथ जोरि कै तबि कहि पावै। करहिं बाक तिम ही हुइ जावै ॥ २२ ॥
ऊपर नहीं को तैसे करति। है जि शकति सो गुरु ते डरति।
नहिं बिदताहं, गोप करि राखी। गुरु अनुसारी उर अभिलाखी ॥ २३ ॥
अटलराइ कहि टलहि कहनि ते। टहिल बिलोकहिं देति बचनते।
तऊ कहै नहि गुरु किस भांति। जानहि' अजमत[4] जुति मम तात ॥ २४ ॥
मन उदार है, दासनि देति। सेवा करहिं रिआवति लेति।
नहीं वासतव आछी जानहिं। 'करति अधिक नहि निबहि' पछानहि[5] ॥ २५ ॥

---

1 गुरदित्ता की पत्नी का नाम 2. सूचना 3. अवस्था 4. शोभाशाली 5. पहचानते हैं

हम बहु अजमति दासनि मांहि। करहि बचन, सो निफलै नांहि।
संगति देश विदेशनि केरी। सभि महि महिमा हनहुं बडेरी ॥ २६ ॥
जानहि महां[1] जोति को धनी। करहि कामना पूरन घनी।
गुर ते प्रिथक दरस को करै। बसत्र बिभूखन भेटा धरैं ॥ २७ ॥
खान पान की वसतू आछे। दे करि लेते बर, जिम बांछे।
कबि गुरु एकल को समुझावैं। समुझि समुझि बरतहु, सुख पावै ॥ २८ ॥
तऊ सुभाइ उदार बिसाला। देखि सिक्ख को करहिं निहाला।
सुकचहिं अलप गुरू ते सोइ। अजमति बिदति लखी सभि कोइ ॥ २९ ॥
सुहत्री खत्री इक विवाहारी। हुतो निकेत बिखै धना भारी।
गुरमुख नाम तिसी को कहैं। तिस के इक सुंदर सुत अहै ॥ ३० ॥
नाम धर्यो मोहन तिस केरो। अट लराइ सभ नैस भलेरो।
सो खेलनि नित प्रति ही आवै। गुरू सुतनि को बहु परचावै[2] ॥ ३१ ॥
सगरे दिन मिलि खेलति रहै। सोवनि समैं अपनि घर लहै।
इसी रीति बहु धनीअनि बाल। खेलति हैं गन मिलि मिलि जाल ॥ ३२ ॥
इक दिन सिस मोहन के साथि। अटलराइ खूंडी गहि हाथ।
किंदक[4] संगहि खेल मचाई। बदहिं सीड[5] इत उत को धाई ॥ ३३ ॥
निज निज दिशि को पेलि धकेलैं। दौरि दौरि गन बालिक खेलैं।
सीड बंध मोहन के साथि। अटलराइ खूंडी ले हाथ ॥ ३४ ॥
खेलति जीतहिं, कबहूं हारैं। बहिस बहिस बहु बल को धारैं।
संध्या समैं भई हम खेलति। सोहिनि ते किंदक को पेलति ॥ ३५ ॥
भयो अंधेरा श्रमति बिसाले। तज्यो खेल घर निज निज चाले।
अटलराइ मोहन सों कह्यो। 'अबि तो अधिक अंधेरे लह्यो ॥ ३६ ॥
खेलनि ते सकले हटि रहे। मेरी जीत भई, सभि लहे।
धरी सीड पीछे मम साथि। जीत लीन मैं बलि करि हाथ ॥ ३७ ॥
रही तोहि सिर, अबि घर चाले। राखहु याद, लेऊ मैं काले।
मोहन कह्यो 'प्रात को देऊं। अपर सीड बदि जीत धरेऊं ॥ ३८ ॥
इम कहि आयहु अपने धामू। जाइ कर्यो बालनि बिसरामू।
दैव जोग ते ऐसे भयो। सरप निकासि मोहन डसि लयो ॥ ३९ ॥
करति रहो जेतिक उपचारा। बालिक मर्यो होति भुनसारा।
मात पिता के नंदन एक। करते भए ब्रिलाप अनेक ॥ ४० ॥

---

1. आध्यात्मिक ज्योति 2. बहलाए 3. चौगान 4. गेंद 5. बाजी की शर्त 6. विलाप

'हे सुत ! कित हम छोरि सिधारा। तुव बिन क्या हुइ हाल हमारा।
देखति रहति बदन शुभ तेरा। उघो पाप फल आनि बडेरा'॥ ४१ ॥
रोदति ऊचे शबद पुकारति। पीटति बल ते बहु शोकारति।
सुनति परोसी दौरति आवै। 'हाइ हाइ' कहि सो बिललावैं॥ ४२ ॥
'बडा कशट तुस को इह पर्‌यो। इक सुत, डस्यो सरप ते मर्‌यो।
इक सुनि दुतीय निकटि सुनावै। जो जो सुनहि शोक बिरधावै॥ ४३ ॥
धनी शाहु को इक सुत जोइ। म्रितू अचानक तांकी होइ।
रामदास पुरि महिं ब्रिरतांत। जहिं कहिं भयो सकल *बख्यात॥ ४४ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे खशटमि रासे धीर मल्ल जनम अर अटल राइ खेलनि प्रसंग बरननं नाम सपत पंचासति अंशु॥ ५७ ॥

---

*विख्यात

अंशु ५८

श्री अटल राइ प्रलोक गमन प्रसंग

दोहरा

अटल राइ जबि प्राति भी जागे होइ सुचेत ।
करि नित की किरिआ भले त्याग्यो तबहि निकेत ।। १ ।।

चौपई

खेलनि के सथान चलि आए । सेवक साथ बाल समुदाय ।
पिखि सभि को मन आने कै कैं । इत उत बिचरति संगी लै लै ।। २ ।।
संध्या समैं खेल जो त्यागी । सो सिमरी दीरध अनुरागी ।
'अबि लौ मोहन नहि चलि आयो । दाउ सीड को सीस चढायो ।। ३ ।।
दैबे हेतु टर्‌यो, घर रह्यो । इम लखि निज सेवक सो कह्यो ।
जाहि तांहि को आनि बुलाइ । सिर है सीड, न अबि लौ आइ ।। ४ ।।
सुनति दास तिह सदन सिधायहु । मर्‌यो पर्‌यो मोहन दरसायहु ।
सकल कुटंब सशोक पुकारति । हाथ उसारति सिर पर मारति ।। ५ ।।
बडो बिलाप हेरि तिस बेरे । मिलति नाति[1] नर नारि घनेरे ।
अटल राइ के निकटि सु आयो । 'मोहन मरिग । सरप डसायो ।। ६ ।।
सुन्यो अचानक मोहन मरना । अटलराह नहि कीनसि जरना ।
सभि लरकनि के होइ समेत । गए धाइ तिस बनक[2] निकेत ।। ७ ।।
हेरनि हेत धाइ उतलावति । सुन्यो दूरते बहु बिललावति ।
आगै मिले हुते समुदाया । सभिनि बिलोक्यो गुर सुत आया ।। ८ ।।
मोहन के रोदति पित मात । कहनि लगे तुम गुरु के तात ।
साथी खेलनि केर तुमारा । पर्‌यो मर्‌यो डसिगा अहि कारा[3] ।। ९ ।।
नहि उपचार लगयो करि रहे । अबि चाहति इसको तन दहे ।
तुम गुरु सुत हो चहहु सु करहु । अज़मति[4] को बिसाल उर धरहु' ।। १० ।।
मोहन मात पिता जे अहे । सकल नरनि जुति बिनती कहे ।
तबि श्री अटलराइ पिखि कह्यो । 'इस सिर दाव सीड को रह्यो ।। ११ ।।

1. सम्बन्धी 2. व्यापारी 3. काला 4. महत्ता, महिमा

कर खूंडी को चंचल करते। मेर बोल को बदन निहारते।
उठि न्यारे ! दिहु सीड हमारी। नहीं समो, किम सुपत्यो भारी ॥ १२ ॥
इम कहि खूंडी सिस गर पाई। करि बाहुनि बल दीनि उठाई।
बैठ्यो मोहन आँख उधारी। बिकसति उठ्यो हरख नर नारी ॥ १३ ॥
धंन गुरू, गुरू नंदन धंन। देति प्रान लगि भए प्रसंन।
कै तो हुतो रुदन को रौरा। कै भा हरख शोर तिस ठौरा ॥ १४ ॥
जहि कहि अटलराइ की कीरति। पुरि महिं होति भई बिसतीरति।
'धनी पुत्र को मर्यो जिवायो। कर खूंडी को छुवाइ उठायो ॥ १५ ॥
सभि मातनि को सुधि तबि होई। मुदति कहति जित कित सभि कोई।
श्री हरि गोविंद तखत अकाला। बैठे हुते सहत सिख जाला ॥ १६ ॥
मुदति रिदे ते बाक बिलासा। बिगसति करति थिरे जे पास।
तहिं इक सिख ने आनि सुनाई। 'अटलराइ बडि कीरति पाई ॥ १७ ॥
गुरमुख खत्री को सुत एक। मिलि खेलति सिस ऊपर अनेक।
राति बिखे डसिगा अहि सारा। मर्यो तुरत न लग्यो उपचारा ॥ १८ ॥
अटल राइ तिस सदन सिधारे। संगी पर्यो सुभ्रि तकनिहारे।
खूंडी हाथ सु छुवाइ उठायो। 'हम सो खेलहु' भाखि जिआयो ॥ १९ ॥
श्री सतिगुरु सुनिकै बिसमाए। कितिक देर लौ नहीं अलाए।
पुन चित नहिं रिस भई घनेरे। 'इह क्या कर्यो निकटि ही मेरे ॥ २० ॥
दुशटनि राज तेज अबि अहै। शाहु कि शाहु पुत्र मितु लहैं।
आनि परहि सो गरे हमारे। दीन होहिं कै ओज दिखारैं ॥ २१ ॥
हम ते चहहिं जियावहु सोई। प्रभु के संग शरीकी* होई।
परमेशुर कामनि फल देय। हम जिवाइ कर तांहि मिटेय ॥ २२ ॥
इह तौ बात न नीकी अहैं। मरहि जु फेर जियनि को लहै।
हम ने नहिं करिईं इह कैसे। देने प्रान बनहि बिधि ऐसे ॥ २३ ॥
इत्यादिक बहु गटी बिचारैं। अटलराइ सुत पर रिस धारैं।
धरी मौन मुख भनैं न बैन। किसि की दिशा न करते नैन ॥ २४ ॥
बैठे रहे रिदे रिस छाई। मन महिं गिनैं न इह भलि आई।
अबि अमोह हुइ जौ न हटावै। टरहिं न इहु पुन अपर जिवावै ॥ २५ ॥
दुह लोकनि को वधहि कलेश। भलिआई को नाहि न लेश।
रिस महिं बैठे घटिक चारी। गुरु रुख लखि नहिं किनहु उचारी ॥ २६ ॥

*समता

खेलति अटल राइ तबि आए। कंचन के भूखन तन पाए।
खूंडी कर महिं धारन करी। धूल अधि उडि जिस तन परी॥ २७॥
इस बिधि आगै नंदन जोवा। बिना सनेह कोप उर होवा।
नमो करति को बाक बखाना। 'निज अज़मति बिदताइ जहाना॥ २८॥
जर नहि सकहु ओज निज अंतर। करहु दिखावनि लाइ निरंतर।
करामात को कहिर कहंते। सो तैं करति न समुझि रहंते॥ २९॥
इस करिबे को फल अबि इही। जे तूं रहैं त हम जग नहीं।
हम जे रहैं त तुम नहि रहो। इही बाक अबि साचो लहो॥ ३०॥
सुनि श्री अटल राइ गुरु बच को। मान्यो रिदें, कर्यो चहि सचु को।
हाथ जोरि जिम सनमुख खरे। सिर निवाइ तहिं बंदन करे॥ ३१॥
हटत्यों नहीं पीठ दिखराई। पाछल पाइनि चलि सहि साई।
नकी निकेत गमनि को कीना। सुन्यो न किछु नहिं कह्यो प्रबीना॥३२॥
धरे मौनि कौला के ताल। प्रापति भए जाइ ततकाल।
तहि इसस कटि जपुजी पाठ। दरभ[1] डसाइ सु आसन ठाठि॥ ३३॥
कर खूंडी सिर नीचे धरिकै। बसत्र सरीर अछाद्यो परिकै।
ततछिन तन को त्यागि सिधारे। ज्यो उदार नर कर त्रिण डारे॥ ३४।
तजि सुखेन तन बैकुंठ गए। जहि मद काम क्रोध नहि भए।
उत्तम पद महिं जाइ समाए। जिसको जोगी जन नित ध्याए॥ ३५॥
दास रह्यो देखति तिस थान। नाहिन जानी त्यागति प्रान।
जबि म्रित भयो देखि बिसमायो। दौरति गुर मों जाइ बतायो॥ ३६॥
'थिरे जाइ तर कौला ताल'। तन को त्यागि गए ततकाल'।
सुनि सुधि उठे गरीब निवाज़। चले तहां संग सिक्ख समाज॥ ३७॥
गई सदन सुधि सुनि करि माता। सभि रोदति छोरति जलताता[2]।
मात नानकी महत पुकारी। 'कहा कर्यो हे सुत अवतारी॥ ३८॥
म्रितक जिवावनि समरथ तेरी। पित बचते कितगा इस बेरी।
सभि परवार गुरू को आयो। तहिं मिलि रोदनि शबद उठायो॥ ३९॥
माता पिता नानकी जोऊ। हरी चंद हरदेई दोऊ।
सुनि सुधि बहु नर नारि समेता। हेर्यो अविनी पर्यो अचेता॥ ४०॥
सकल करहिं बिरलाप घनेरे। गुरू देति धीरज तिस बेरे।
दैव गती ऐसे ही जानो। नहिं किस बसि महिं बली महानो॥ ४१॥

---

1. दुर्वा बिछा कर 2. अश्रु

चंदन के बहु भार मंगाए। करति भए ससकार तिथाएं।
भने बचन ते जिन तन त्यागा। दीनसि बर करि सुत अनुरागा ।। ४२ ।।
'रामदास पुर बसहि बडेरा। सगरे मान करहिंगे तेरा।
इक हरि मंदर की हुइ पूजा। पुन पूजहि तेरो थल दूजा ।। ४३ ।।
सभि नर नारी मानहिं तोही. दससहि पूर कामना होही।
मंदर कंचन के हुइ सनै। सभि ते ऊच अधिक ही बनै ।। ४४ ।।
जीवति इते नही बिदतावैं। जिते जगत महि तूं प्रगटावैं।
इस थुरि को सूबा बड होयो। तो सम नहिं प्रताप किसि जेयो ।। ४५ ।।
बिधी चंद तबि कह्यो बनाइ। थान इकांकी इह लखि पाइ।
नही निकटि तिह अपर सथाना'। सुनि श्री हरि गोविंद बखाना ।। ४६ ।।
दुरलभ होइ पाइ है कोई। ब्रिंद म्रितक को थल हुइ सोई।
जो इह ठां शव दाहि कराइ। अटल राइ तिन बनहि सहाइ' ।। ४७ ।।
इत्यादिक बर कहि करि ब्रिंद। सभि ध्रिति दे श्री हरि गोविंद।
म्रितक क्रिया करिवाइजु सबै। शब्द रबाबी गायहु तबै ।। ४८ ।।
सोरहि सत पचासीआ जानि। बदी असौज सु दसमी मानि।
अटल राइ निज सदन प्याने। अबिलौ महिमा थान महाने ।। ४९ ।।

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे खशटमि रासे 'श्री अटल राइ प्रलोक गमन' प्रसंग बरननं नाम अशट पंचासति अंशु ।। ५८ ।।

अंशु ५६

सुधासर मैं श्री गुर बिराजमान

दोहरा

करि शनान सतिगुरु अए बैठे लाइ दिवान।
सुनि सुनि सुधि अचरज करति 'क्या हुइ गई महान' ॥ १ ॥

चौपई

पुरि जन ऊच नीच तवि आए। सभि बोलति बहु शोक वधाए।
महां राज इह गति क्या करी। बाल अवसथा अजहुं न टरी ॥ २ ॥
महां शकति जुति साहिब जादे। सभि पुर जननि देति अहिलादे।
सकल बाक के संग फिरंते। निस महिं नीठि नीठि बिछुरंते ॥ ३ ॥
इत्यादिक बच कहति सुनावै। गुरु सभिनि को शुभ समुझावैं।
दैव गती कुछ लखी न जाई। जिसके बसि त्रै लोक सदाई ॥ ४ ॥
बालक तुरन ब्रिध नहि जानै। बली निबली एक सम मानैं।
सो किम मिटहि दैव मति न्यारी। राग द्वैख नहिं कि सों धारी ॥ ५ ॥
तिस को जानि शोक क्या धरीअहि। बुधि अरु बल करि जेन प्रहरीअहिं।
दुखी नानकी अधिक सभिनि ते। प्यारो परम पुत्र गुन भनते ॥ ६ ॥
प्रतिपारति नित हेरति रहै। करति दुलार मोद को लहै।
बहु दुख पाइ रुदति बिरलापहि। सभि त्रिय महिंगन सिमरि कलापहि ॥ ७ ॥
सभि दमोदरी आदिक जेई। कहि कहि धीर देति बहु तेई।
तऊ सनेह महां दुखवंती। सुत को सिमर शोक वधंती* ॥ ८ ॥
निस महि सति गुरु सुनि सुधि सारी। हित धीरज के गिरा उचारी।
हे सुमते ! नहिं संकट पावहु। हुती इसी विधि, नई पछुतावहु ॥ ९ ॥
जथा प्रताप जियत कियत को होति। तिस ते अबहि बिसाल उदोति।
अटलराइ है अटल सदाई। दिन प्रति वधहि अधिक बडिआई ॥ १० ॥
इत्यादिक कहि बहु समुझाई। मन बंधनि कै सुधि पहुंचाई।
सहत भारजा तेहण आए। गोइंदवाल जिते समुदाए ॥ ११ ॥

*बढ़ता है

आइ नराइण दास सदारा। त्रिया सहत मिल आयहु द्वारा।
ले रामो संग साईंदास। रामा आइ भारजा पास ॥ १२ ॥
जित कित ते सुनि सभि चलि आए। श्री गुर दित्ता जबि सुधि पाए।
शोक करति चाले सहिसाए। अंम्रितसर के पंथ सिधाए ॥ १३ ॥
नित्ती लिए धीरमल गोद। आइ सुधासर हीन प्रमोद।
गुर धर महिं भा रुदन बिसाल। पीटति मिलीं जाल ही बाला ॥ १४ ॥
म्रितु, कारन को सुनि नर नारी। अजमतवंत जानि करि भारी।
महां वली होवति जग मांही। कहीयहि कहा जियो सो नांही ॥ १५ ॥
अधिक शोक घर महिं जबि भयो। तबि गुरदास गुरु पठि दयो।
जाइ सभिनि को धीरज दीना। 'नहिं रुदन हुं करि बदन मलीना ॥ १६ ॥
जग खेती इह प्रभू करी है। काची गदरी[1] पाक खरी है।
जिस को चहै बाढ करि लेति। इस को शोक करहि किस हेतु ॥ १७ ॥
सगरे आपो अपनी वारी। जाति मले को धीर न धारी।
गुर के घर महिं शोक बिसाला। चहियति नहीं, रहै चिर काला ॥ १८ ॥
नाम प्रताप सुजस, सद काला। रह्यो अटल जग बिदति बिसाला ॥ १९ ॥
म्रिदुल बाक कहि गुरदास। धीर धराई शोक बिनाशि।
दिवसि तेइवी को तबि आयो। पंचाम्रित बहुत करिवायो ॥ २० ॥
भोग ग्रिथ साहिब को पाइ। बहुर रबाबी चौकी गाइ।
पोशिश बहु मोली बनिवाई। पुत्र हेतु अरदास कराई ॥ २१ ॥
सभि महिं पंचाम्रित बरतायो। शोक सदन ते सकल नसायो।
गुर घर की मरजादा जेती। सति गुरु करवाइसि तबि तेती ॥ २२ ॥
अगले दिवस बिसरजन करे। अटलारइ हित आइ जु बरे[2]।
त्रिय जुति दास नराइण गयो। पुरि डल्ले जस उचरति भयो ॥ २३ ॥
द्वारा भागण सहत सिधारा। गुरु अमर को बंस पधारा।
तेहण गए खडूर मझारी। रामा गमन्यो ले निज नारी ॥ २४ ॥
इन ते आदि जु आवति भए। गुर सो मिलि निज घर गए।
सभि ही सुनि सुनि अचरज गाथा। 'सिस जीवायसि अज़मत साथा ॥ २५ ॥
पिता रिस्यो जबि हेरति कीना। अपनी तन तबि त्यागनि कीना।
महां पुरख पूरन अस कोई। बाल बैस अस अज़मत होई ॥ २६ ॥
कहहि सुनहिं बिसमहिं हम सारे। निज निज पुरि अरु ग्राम उचारे।
केतिक कहैं 'सभिनि ते भारी। गादी श्री नानक सुखकारी ॥ २७ ॥

---

1. दाने वाली 2. प्रवेश किया

जिनके सम जग भयो न कोई। आस [illegible] अजमति जुति होई।
लाखहुं भगति ग्यान जुति ह्वै कै। लह्यो परम पद गुरुमति पै कै ॥ २८ ॥
दास दास के दास बिसाले। तिस घर के भे अजमति वाले।
करामात[1] साहिब सुत होवा। इस महिं क्या अचरज तुम जोवा ॥ २९ ॥
शाहजहां जगपति इस काला। कर्‌यो तांहि सो जंग कराला।
आज कौन तिह संग बिगारे। ऐसे शाहु, जिन हुते हारे ॥ ३० ॥
पंच गुरु बरते बिच पीर। अबि द्वै धरि पीरी अरु मीरी।
अज़मत जुति को पीर न अरै। को अरू मीर जित्रास न धरै ॥ ३१ ॥
तिस घर को बंदन ही बनैं। इम जग सगरो गुरु जस भनैं।
श्री सतिगुर हरिगोविंद चंद। बैठे तखत अकाल बिलंद ॥ ३२ ॥
बडो कुटंब भयो जिन केर। सुत पोत्रा सनबंध बडेर।
सभि महिं बरतहिं सहिज सुभाइ। जिम अरबिंदन जल लिपताइ ॥ ३३ ॥
हरख शोक उपजहि बहु बार। मिटहिं सु किम जु वध्यो परवार।
दुख सुख सदा संग ही रहैं। कबि प्रिय कबि अप्रिय हुइ चहैं ॥ ३४ ॥
इम ते हरख शोक उपजंते। राग द्वेख को बहुर बधंते।
तिन ते उपजहिं ब्रिंद बिकारा। फसे सकल ही जीव संसार ॥ ३५ ॥
सभि को मूल लखहु तन हेता। पुन ममता इस ते उपजंता।
इव ते आगै उतपति जानहु। राग द्वेख आदिक जे मानहु ॥ ३६ ॥
सो हेता ममता बड दोई। गुर कै तीन काल नहि होई।
जहि कारन को लेश न जानि। क्यों कारज उपजहिं तिस थान ॥ ३७ ॥
जिस धरनी महिं वीरज[2] बोवहु। दल फल सहत तहां तरु जोवहु।
जिस अविनी महिं बीज न पर्‌यो। क्यों दल फल जुति हुइ तरु हर्‌यो ॥ ३८ ॥
सदा एक रस महिं ब्रिति रहै। उथिति न कबहुं. समाधी अहै।
निस दिन जो बिचरहि बहु बारी। पोशिश शुशक[3] राखि करि सारी ॥ ३९ ॥
अंजन-कोशट बसिवो हुवै। बसत्र श्यामला कबहुं न छुवै।
ग्रिहसत बिखै दिन रैन गुज़ारनि। हरख शोक के बहु जंहि काटनि ॥ ४० ॥
सो नहि होनि देति मन मांही। गुरु बिन आनि पिखै इह नाहीं।
जिस पर क्रिपा करहिं दे सीखा। तिसहूं अस कौतक उर दीखा ॥ ४१ ॥
याते सदा गुरु की शरनी। रहो शरधा उर धरनी।
जबहि क्रिपाल क्रिपा करि देखहिं। मन बिकार हरि देहिं अशेखंहि ॥ ४२ ॥

---

1. चमत्कार 2. बीज 3. शुष्क, सूखी

भगति ग्यान को दें उपजाइ। जिसमें परम सुकति की पाइ।
जिस गुर ने कई कोटि उधारे। सो गुरि होहिं सहाइ हमारे ॥ ४३ ॥

चौपई

जो इह कथा सुनै मनि लाइ। जनम मरन संकट मिट जाइ।
जो गुरु दे उपदेश महान। सोऊ करति अब महि कल्यान ॥ ४४ ॥
सतिनाम सिमरहि दिन रैन। मन शांती तन उपजहि चैन।
सिक्ख पद निज धारन कीनि। अतिशै मरन मुकति तिस लीनि ॥ ४५ ॥

इति श्री गुर प्रताप सूरज ग्रिंथे खशटमि रासे कवि संतोख सिंह भाखायां विरचतायां श्री गुरु हरि गोबिंद दुशट दमन करन अते श्री हरि गोबिंद पुरु बनावन और श्री अटल राइ की चढ़ाई औ सिखां को उपदेश देवन अर सुधासर मैं श्री गुर बिराजमान इत्यादिक प्रसंग बरननं नाम एक ऊन सशटी अंशु ॥ ५९ ॥

छटी रासि संपूरण

संज्ञा-कोश

अकाल तखत	हरि मन्दिर के सामने गुरु मंच जो 1608 ई० में बना ।
अटल राइ	गुरु हरिगोविन्द के सपुत्र ने श्री माता नानकी के उदर से जन्म 1619 ई० में, अपने साथी मोहन को साँप के डसने के कारण मरा देखकर अपनी आत्मशक्ति से जीवित कर दिया । 1626 में निधन ।
अणी राइ	छठे गुरु जी के सुपुत्र, जन्म माता दामोदरी के उदर से ।
अनवर खान	मुग़ल सेना का अधिनायक, करतारपुर में हुई लड़ाई के समय भाई विधी चंद के हाथों मारा गया ।
अनाहत उल्ला एज़दी	1630 ई० में पंजाब का सूबेदार नियुक्त हुआ ।
अब्दुल्ला खान नवाब	जालन्धर का सूबेदार जो हरिगोविन्दपुर के युद्ध में गुरु जी के हाथों मारा गया ।
अमृतसर	हरि मंदिर का सरोवर और प्रसिद्ध नगर जो गुरु अमरदास के समय में 'चक गुरु' था ।
अरजन देव, गुरु	(1563-1606 ई०), गुरु राम दास के छोटे सुपुत्र, पाँचवे गुरु, गुरु हरिगोबिन्द के पिता ।
अलमस्त	गुरु नानक के समय का सिक्ख जिसने नानक मता (पीली भीत) को नाथों के अधिकार से मुक्त करने के लिए व्रत रखे । उनकी संवेदना छठे गुरु को वहाँ खींच कर ले गई ।
अली मुहम्मद	मुग़लों का योधा जिसने सिंघा पुरोहित को लोहगढ़ युद्ध में मार दिया था ।
इमाम बखश	हरि गोविंदपुर की लड़ाई में मारा गया ।
उसमान खान	खान का दामाद जिसने बाबा गुरुदित्ता का श्वेत बाज़ चुरा लिया था । वह करतारपुर के युद्ध में बाबा गुरुदित्ता के हाथों मारा गया ।
कबूशाह, भाई	काशमीर निवासी श्रद्धालु सिख ।
कटारु भाई	काबुल का दुकानदार, गुरु भक्त ।
करतारपुर	यहाँ गुरुजी ने 26 पठान सेना के लिए भरती किए । पैंदा खान भी ।

करम चंद — चंदू का पुत्र जो 1619 ई० में लाहौर आकर षड्यंत्र करता रहा। हरिगोविंदपुर के युद्ध में गुरु जी के विरुद्ध लड़ा था।

करम चंद भाई — हाफ़िज़ाबाद का सिख जिस को छठे गुरु जी ने जपुजी के अर्थ समझाए।

कर्रा — एक गांव जहां इस्माईल खान ने पैंदा खान को गुरु जी की सेवा में नौकर रखवाया।

करीम बख्श — मुगल योधा जो हरिगोबिन्दपुर के युद्ध में मारा गया।

कल्याण (कल्याणा), भाई योधा, जिसने बलवंड खान को हरिगोबिन्दपुर के युद्ध में मार डाला था। परन्तु स्वयं अली बख्श के हाथों शहीद हो गया।

काले खान — फ़ौजदार, कर्तारपुर के युद्ध में छठे गुरु के हाथों मारा गया।

कीरतपुर — हंडूर की वनस्थली। यहाँ गुरु जी ने नगर बसाने के लिए बाबा गुरु दित्ता को आदेश दिया था।

कुलीज खान — लाहौर का सूबेदार जो सिख सेना से 1630 ई० में हार गया था।

कौला — रुसतम खान काज़ी की लड़की (बांदी) गुरु जी को पति परमेश्वर मानती थी। कौलसर उसके नाम पर बनाया गया था।

खलील बेग — अटक का मनसबदार जिस ने गुरु जी के एक भक्त से घोड़े छीन लिए थे। जहांगीर ने इस अपराध में उसे मरवा डाला।

ख्वाजा रोशन (काश्मीरी) वह गुरु जी के घोड़ों की सेवा करता था। प्रचार भी करता था। मऊ गांव में उसकी कब्र है।

गंगा देवी माता — गुरु हरिगोबिन्द की माता, देहांत 1627 ई० में।

ग्वालियर — यहां के किले में गुरु हरिगोबिन्द कैद रहे।

गढ़ीआ, भाई — वह काश्मीर में प्रचारक था। शाह दौला ने जो धन दिया वह गुरु जी के यहाँ भेज दिया। उसके कपड़े भी फटे पुराने होते थे। वह त्याग की मूर्ति था।

गुजरात — पंजाब का एक नगर जहाँ सिख रामचन्द छिब्बर रहता था।

गुजरी, माता — लाल चंद की सुपुत्री, कर्तारपुर में तेग बहादुर (गुरु) के साथ उन का विवाह।

गुपाला, भाई — जपुजी का सुंदर पाठ करने वाला भक्त। छठे गुरु तो उससे प्रसन्न होकर गुरु गद्दी भी देने लगे थे।

गुरु ताला — शिकार के लिए वन-स्थली लाहौर एवं अमृतसर के बीच। यहाँ सिखों ने शाही बाज़ पकड़ लिया था।

गुरदास, भाई जीवन काल 1557-1630 ई०, इनकी रचनाएं (वारां एवं कब्बित्त) गुरबानी कुंजी (व्याख्या) मानी जाती हैं।

गुरदित्ता, बाबा गुरु हरिगोविन्द के पुत्र. जन्म 1613 ई० में माता दमोदरी के उदर से। विवाह 1625 ई०। बाबा श्री चन्द को जीवन दान दिया। देहांत 1638 ई० में।

गिआस बेग, इतमाद उद्दौला नूरजहान का पिता, 1617 ई० में पंजाब का सूबेदार।

गोइंदवाल अमृतसर के पास वह गांव जहाँ गुरुजन रहते रहे।

गोबिन्दगढ़ अमृतसर का किला जिसके लिए मुखलिस खान ने 1469 ई० में आक्रमण किया था और हार गया था।

गोबिन्दगढ़ के योधा पैंदा खान, सिंधाजी, भाई बिधी चंद, नतीमल, भाई नंदा, पिरागा, भीमा भीखन, भाई अमीरा, भाई जैता, भाई तोता, भाई कृष्ण दास, भाई गोपाल, भाई तखतू, भाई महता, भाई बाबक आदि।

गोबिन्दगढ़ पर मुग़ल आक्रमण मुखलिस खान, अलीबेग, बरादर खान, दीदार अली, इसाईल खान, मिहर अली, करीम बेग, सलामत खान, जंग बेग, आदि।

घुमाण बटाला के पास एक गाँव, जहाँ बंसी और सोका वैरागी सिख बने।

चंदमल गुरु अमरदास के भतीजे, सावन मल के पुत्र चंदू—जो गोइंदवाल रहा करते थे। भक्त कान्हा के चचेरे भाई, लाहौर के दीवान। इसकी लड़की की सगाई गुरु हरिगोबिन्द के साथ न हो सकी। इसी अपमान के कारण वह गुरु कुल का विरोध करता रहा। अंत में लाहौर की गलियों में घसीट-घसीट कर मारा गया।

चूहड़ भाई 100 सवारों का नायक था किन्तु उसने अपने हाथों लंगर की दीवार बनाई।

जगत सिंह पहाड़ी राजा जिसने जहांगीर के विरुद्ध सेना खड़ी की परतु अंत में दक्षिण को भाग गया।

जट्टू भाई जानपुर निवासी, तपस्वी। हरिगोबिंद पुर के युद्ध में प्रथम शहीद सेना नायक जिसकी गोली ने तीर मारने वाले वैरी मुहम्मद खान को मार दिया था।

जमाल, बाबा जिसने गुरु के लंगर में सहभोजन का दृश्य देखकर प्रसन्नता प्राप्त की।

जालन्धर उस समय यह अलग सूबा था, 1628 ई० में वहाँ का सूबेदार अब्दुल्ला खान था।

जवंदा बाबा हुरमची वाला जो गुरु हरिगोबिन्द को लाहौर में मिलने आया था।

जहांगीर मुग़ल बादशाह (1605-1627 ई०) उसने गुरु अर्जुन देव को शहीद करवाया। गुरु गोबिन्द सिंह को गवालियर में कैद करवाया। मीयां मीर के सुझाव पर उन्हें छोड़ दिया और अपना मनसबदार बनाया।

जानी सैयद शाह अनेक प्रकार की तपस्या करके गुरु जी को मिला, और सिख मत का प्रचारक बना।

जेठा, भाई जिसने चंदू शाह को घसीट घसीट कर मरवाया। नथाना के युद्ध में काफी वृद्ध था, परन्तु उसने कासम बेग को मार डाला, फिर मुग़ल फौजियों ने उसे घेर कर बचा किया।

जैले, भाई जिसने मिराज वालों को भुल्लरो की जमीन छीन कर दी। मालगुजार जैंद पिराण ने जो सेना भेजी उसने उसे भगा दिया।

झबाल अमृतसर से 8 कोस दक्षिण की ओर एक गाँव जहाँ भाई लंगाह रहता था। गुरु जी का परिवार 1626 ई० के आक्रमण के समय यहीं शरणागत हुआ और सुपुत्री अमरो का विवाह हुआ।

डरोली मोगा तहसील में माता दामोदरी के जीजा, भाई सांई दास का गाँव जहाँ गुरु जी 1613 ई० में आए थे। बाबा गुरदित्ता यहीं जन्मे थे, माता दमोदरी का देहांत यहीं हुआ।

तरनतारन गुरुद्वारा और सरोवर गुरु अर्जुन देव ने यहाँ बनवाया था। अब प्रसिद्ध नगर अमृतसर से कोई 13 मील।

तारा चंद, राजा कहलूर का राजा जिसको ग्वालियर की कैद से छठे गुरु जी ने मुक्त करवाया था।

तिलोका, भाई दोआबा का प्रसिद्ध योधा था।

थानेसर कुरुक्षेत्र के पास ही एक पुरातन नगर। पुराना नाम थाणेश्वर था।

दामोदरी माता डल्ल निवासी नाराइण दास की पुत्री। गुरु हरिगोबिन्द के साथ 1604 ई० में विवाह हुआ। निधन 1631 ई० में देहरा डरोली में।

दिदार अली	(दीदार अली) मुग़लों का फ़ौजदार जो पैंदाखान के हाथों लोहगढ़ में मारा गया।
दिल्ली	ग्वालियर से चलकर गुरु जी यहाँ जहाँगीर को मिले थे।
देसा, भाई	जाट स्त्री, संतानहीन थी। वह श्रद्धापूर्वक गुरु जी से कर्म लेख लिखाने आई। उसके सात पुत्र हुए।
धर्मदास	चंदू शाह का पुत्र।
धीरमल	बाबा गुरुदित्ता का पुत्र, जन्म 1630 ई० में।
नबी बखश	मुगलों का योधा जो हरिगोविन्द पुर के युद्ध में मारा गया।
नानक मता	पीली भीत में गुरु नानक का पुरातन मठ जो उन्होंने जोगियों का परास्त करने के लिए स्थापित किया था।
नानक, माता	बकाला निवासी, हरिचंद की सुपुत्री इनका विपाह गुरु हरिगोबिन्द के साथ 1613 ई० में हुआ।
मानू, भाई	सिख सेनानी जिसने अलीबखश को हरिगोबिन्द पुर के युद्ध में मार डाला था। इमाम बखश का बायां बाजू काट दिया था। यह उसके हाथों स्वयं शहीद हो गया।
निहालू, भाई	हाफ़िजाबाद निवासी, गुरुबाणी का व्याख्याता।
नितानंद पंडित	(नित्यानंद) बटाला का अहंकारी विद्वान् जो गुरु जी के साथ वार्तालाप करके सिख बन गया।
नूरजहान	जहांगीर की बेगम। मियाँ मीर की मुरीद और गुरुओं की श्रद्धालु।
परमा खोसला	गुरु हरिगोबिंद की पुत्री वीरो का पति।
पिआरा, भाई	खाद्य सामग्री एवं शस्त्रों का प्रबन्धक।
पैंदा खान	जन्म स्थान आलम पुरा गिलजीआ। विधवा पठानी का पुत्र था जिसे गुरु जी ने चाव से पाला पोसा और उसे युद्ध विद्या में निपुण किया। वह हाथ से मल कर रुपये के अक्षर मिटा देता था और भैंस को उठा लेता था।
पृथ्वी चंद	गुरु अर्जुन देव का बड़ा भाई जो गुरु गद्दी से वंचित रहकर सदा ईर्ष्या करता रहा।
बादा शाह, भाई	लाहौर के शाह आलमी दरवाज़े में रहा करता था, एक संत।
बाबक	गुरु जी का रबाबी जो सिंधा पुरोहित के साथ लोहगढ़ में शत्रुओं

का घेरा तोड़ कर गुरु पुत्री वीरो को सुरक्षित निकाल लाया था ।

बाबा बुड्ढा	भाई बुड्ढा जी (1506-1631) जो गुरु नानक देव के सिख बने और गुरु हरिगोबिन्द के समय में स्वर्गवासी हुए । पिता भाई सुधा रंधावा । माता गंगा । जन्म स्थान कथू नंगल ज़िला होशियारपुर । इनका पुत्र भाई भाणा था ।
बुल्ला भाई	हाफ़िज़ाबाद का सिख ।
बिधी चंद, भाई	सिंहवाला (मोगा) का निवासी जिस की वीरता ने पहले उसे डाकू बना दिया था । फिर गुरु अर्जुन देव का सिख बना । गुरु हरिगोबिंद का अनन्य सेवक रहा, करीम बखश को हरिगोबिन्दपुर के युद्ध में मार डाला था । घसियारा बन कर लाहौर के शाही अस्तबल में से सिखों के छीने घोड़े निकाल लाया था । कर्तारपुर के युद्ध में अनवर खान का वध किया । अयोध्या में पाँच वर्ष तक सिख धर्म का प्रचार किया । वहीं 1641 ई० में निधन हुआ ।
विवेकसर	अमृतसर में विवेक सरोवर को गुरु हरिगोबिन्द ने पक्का करवाया ।
भगवान दास घेरड़	परगना जालंधर का मालगुजार । चंदूशाह का सम्बन्धी । वह हरिगोबिन्दपुर का स्थान अपने अधिकार में लाना चाहता था । गुरु के दरबार में बार बार दुर्वचन कहने पर एक सिख के हाथों मारा गया ।
भाग भरी	श्रीनगर की अनन्य भक्त-महिला जिसने गुरु जी के लिए चोलासी रखा था और इच्छा की थी कि गुरु जी इसे लेने आएं । जब गुरु जी उसके यहां पहुंचे तो कुछ दिनों में उसका निर्वाण हो गया । गुरु जी ने स्वयं उसका दाह संस्कार किया ।
भाना, भाई	योधा, जिसने शमस खान को अमृत करके युद्ध में कृपाण से मार डाला था । परन्तु थोड़ी देर में वह स्वयं भी शहीद हो गया । पिपली साहब के पास उसका देहान्त हुआ ।
भानू बहल	एक श्रद्धालु सिख जिसे सत्य नाम में स्थिर रहने का उपदेश मिला था ।
भैरो नाथ (भेख)	एक जोगी जो गुरु जी को लाहौर में मिला था ।

महादेवी, माता — गडियाली निवासी दया राम की सुपुत्री छठे गुरु के साथ इनका विवाह 1615 ई० को हुआ।

महाबत खान — जहांगीर का सेनापति।

मजनूं — लाहौर का एक प्रेमी जो दिल्ली की राजकुमारी लैला के प्रेम में खड़ा खड़ा जड़वत् हो गया था। दिल्ली में उस स्थान को मजनूं का टिल्ला कहते हैं।

मथुरा, भाई — एक योधा, जिसने बैरम खान को हरिगोबिन्दपुर के युद्ध में मार डाला था।

मरवाही, माता — महादेवी, मडिआली निवासी दया राम की सुपुत्री जिसका विवाह छठे गुरु हरिगोबिन्द के साथ 1615 ई० में हुआ।

माधो, भाई — एक प्रसिद्ध सिख प्रचारक।

मिहरा, भाई — बकाला निवासी प्रेमी सिख जिसकी इच्छानुसार गुरु जी उसके नए घर में पधारे थे। माता गंगा का वहीं देहांत हुआ था।

मिहरवान (मिहरबान), बाबा — पृथ्वी चंद का पुत्र, गुरु अर्जुन का भतीजा जो अच्छा विद्वान् था, पर अपने पिता की भाँति देर तक गुरु जी का विरोधी रहा।

मियाँ मीर — (मुईनुल इस्लाम) जिसके हाथों हरि मंदिर की नींव रखी गई थी और जो गुरु अर्जुन देव के प्रिय मित्र थे। लाहौर के निकट गाँव मियाँ मीर स्थित है।

मिहराज — इसके निकट कमर बेग के साथ 16:1 ई० में युद्ध हुआ था।

मुसलमान श्रद्धालु — पैंदा खान, अनवर खान, लगाह, खाजा रोशन, जानी शाह, आदि गुरु हरिगोबिन्द के श्रद्धालु थे।

मुझंग — लाहौर के निकट गाँव था जहाँ मियाँमीर को मिलने के लिए गुरु हरिगोबिन्द ठहरे थे।

मुगलिस खान — (मुख लिस खान) लाहौर का फौजदार जो सिख सेना का नाश करना चाहता था। 15 मई, 1629 को उसने अमृतसर पर आक्रमण किया था किन्तु गुरु जी के हाथों मारा गया।

मुर्तजा खान, फ़रीद — लाहौर का सूबेदार जिसने गुरु अर्जुन देव को असह्य कष्ट दिए थे। वह 1617 ई० में मारा गया।

मोहन, बालक — अटलराइ का मित्र जो साँप के डसने से मर गया था, किन्तु

	अटलराइ की आवाज़ से जीवित हो गया।
मोहन, भाई	ढाका निवासी सिख।
मोहरी, तरखान (बढ़ई)	खेमकरन निवासी जिसने सूखे वृक्ष की कोख से पत्थर फेंकने वाली तोप बनाई थी और गोबिन्दगढ़ में 1629 ई० में इसका सफल प्रयोग किया।
रामदास, समरथ	महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत।
राम प्रताप	जैसलमेर का राजा जो गद्‌दी से उतर जाने पर गुरु हरिगोबिन्द के पास आ गया था और असीम प्रेम के कारण 1644 में गुरु जी की चिता में कूद कर प्राण त्याग गया।
रामा, भाई	बटाला निवासी जिसकी कन्या अनंती का विवाह गुरु पुत्र गुर-दित्ता के साथ 1624 ई० में हुआ।
रामो	गुरु हरिगोबिन्द की साली, माता दामोदरी की बहन और डरोली निवासी भाई साईं दास की पत्नी।
रुस्तम खान	कहते हैं इसकी लड़की अथवा बांदी कौला गुरु जी की श्रद्धालु होकर शरण में आई थी। काज़ी ने जहाँगीर के पास फर्याद की। उसने यह कहकर टाल दिया कि समय पर विवाह कर देना चाहिए था।
लंगाह भाई	सिख सेनानी जिसने लाहौर में गुरु अर्जुन देव का स्मारक बनवाया था।
लवपुरि	लाहौर का पुरातन नाम जिसे महाराज रामचंद्र जी के पुत्र लव ने बसाया था।
लाल चंद	चंदू का भाई जो जालंधर में पेशकार था।
लाहौर	प्रसिद्ध नगर जो सूबेदार का गढ़ था। बावली साहब एवं गुरु अर्जुन देव का देहरा वहीं है।
लोहगढ़	अमृतसर के पास किला पूर्व को कच्ची गढ़ी।
लोहगढ़ के शहीद	भाई तोता, तिलोका, अनंता, सिंधा, निहालू आदि।
वज़ीर खान	(अलीमुद्‌दीन चनियोरी) जो लाहौर में मनसबदार था। उसकी बनाई मस्जिद आज भी मौजूद है जिसके साथ सराय, लंगर और मदरसा भी था। निधन 1634 ई० में।
वडाली	अमृतसर के निकट एक गाँव जहाँ गुरु हरिगोबिन्द का जन्म हुआ था।

वीरो	गुरु हरिगोबिन्द की सुपुत्री । जन्म 1615 में माता दामोदरी के उदर से हुआ ।
शकतू, भाई	सेना नायक, जिसने हरिगोबिन्द पुर के युद्ध में भाई परस राम को बचाया और नबी बख़श को मार डाला किन्तु मुगल सैनिकों के हाथों स्वयं शहीद हो गया ।
शमस खान	मुखलिस खान का सेना पति ।
शाह जहान	राज कुमार खुर्रम जो 1628 ई० में बादशाह बना । आरम्भ में में उसने मंदिर गिरवाए । लाहौर की बावली भी उसने गिरवा दी थी ।
शाह दौल	गुजरात नगर (पंजाब) का एक दानी फकीर ।
संगराणा साहब	वह स्थान जहाँ 1629 ई० के शहीदों का दाह संस्कार किया ।
सन्ता	गुरु जी का रबाबी ।
सभागा, भाई	पेशावर का सिख जिसने पांच कीमती घोड़े काबुल से हरिगोबिन्द पुर में गुरु जी की सेवा में भेंट किए ।
साईंदास वैरागी	लाहौर में गुरु जी के दर्शन को आया था ।
साईंदास, भाई	डरोली निवासी, माता दामोदरी का जीजा, निधन 1631 ई० में ।
सादक खान	पंजाब का सूबेदार, 1624 ई० में ।
साध, भाई	काबुल का व्यापारी जो सुंदर घोड़े काबुल से लाया था ।
सिआलकोट	स्यालकोट नगर जहाँ मौलवी अब्दुलहकीम गुरु जी को मिला था ।
सिंधा, भाई पुरोहित	लोहगढ़ युद्ध का सेनानी जिसने मुहम्मद अली मुगल सेनापति को मार डाला था । किले में रह गई गुरु-पुत्री अमरो को वही सुरक्षित निकाल लाया था ।
सुंदर चड्ढा	आगरा निवासी एक सिख ।
सेवा दास, भाई	श्री नगर का श्रद्धालु सिख जिसकी माता का नाम भागभरी था ।
हमीदा, भाई	खान छापरी (सरहाली) का निवासी श्रद्धालु सिख ।
हरिगोबिन्द, गुरु	मीरी पीरी के छठे गुरु (1565-1644) बंदी छोड़ । पिता गुरु अर्जुन देव, माता गंगा देवी, जन्म स्थान वडाली ।
हरिगोबिन्दपुर	छठे गुरु ने 1620 में इस नगर की नींव रखी, साथ में सराए, कोट, धर्मशाला एवं मस्जिद का निर्माण किया । यहाँ इसमाईल-

खान, भाई अमीओ, भाई बूला, भाई जेठा, भाई लालो और भाई कल्याणा ने बहुत काम किया। 1630 ई० में यहाँ युद्ध हुआ था।

हरिगोबिन्दपुर पर मुगल आक्रमणकारी	सूबेदार अबदुल्ला, फौजदार बैरमखान, मुहम्मद खान, बलबउ-खान, इमाम बखश, नबी बखश, चराग दीन, अकबर खान, शेर मुहम्मद।
हरिगोबिन्दपुर के जोधा	भाई जट्टू, कल्याण, काल्हा, पिरागा, परस राम, मलूका।
हरिराय गुरु	बाबा गुरुदित्ता के छोटे सुपुत्र।